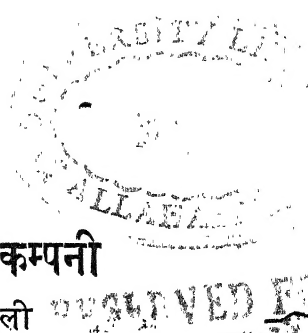
आधुनिक आर्थिक
वाणिज्य भूगोल

लेखक :
ए० दास गुप्ता, एम० ए०, बी० कॉम, एफ० आर० जी० एस० (लन्दन),
अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, दिल्ली पॉलीटेकनिक, दिल्ली ।
भूतपूर्व भूगोल-अध्यापक, विद्यासागर कालेज, कलकत्ता ।
विभिन्न विश्वविद्यालयों के भूगोल परीक्षक और लेखक
'Economic and Commercial Geography' तथा
Economic and Commercial Geo-
graphy of India and Pakistan'.
और
अमरनाथ कपूर, एम० ए०, डी० फिल, अध्यापक, वाणिज्य विभाग, दिल्ली
पॉलीटेकनिक, दिल्ली । भूतपूर्व अध्यापक, एस० एम० कॉलेज
चन्दौसी (यू० पी०) लेखक—'भारत का आर्थिक व
वाणिज्य भूगोल' तथा 'भूमण्डल का आर्थिक व
वाणिज्य भूगोल' ।



प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी
फव्वारा : दिल्ली

प्रकाशक :
गौरीशंकर शर्मा,
प्रीमियर पब्लिशिंग कम्पनी
फव्वारा, दिल्ली

इन्हीं लेखकों द्वारा :

(१) भारत व पाकिस्तान—आर्थिक व वाणिज्य भूगोल मूल्य ५॥)
(२) Principles of Physical Geography 7/8/-
(३) भूगोल के भौतिक सिद्धान्त मूल्य ७॥)

—तृतीय संशोधित व परिवर्द्धित संस्करण—

१ ९ ५ ६

मूल्य
६॥) रुपये

मुद्रक :
हकूमतलाल
विश्व भारती प्रेस
पहाड़गंज, नई दिल्ली

तृतीय संस्करण का वक्तव्य

प्रस्तुत संस्करण में 'आधुनिक आर्थिक व वाणिज्य भूगोल' को एक नया रूप प्रदान कर दिया गया है। संसार के विभिन्न प्रदेशों के विवरण में वहाँ के औद्योगिक तथा आर्थिक विकास सम्बन्धी तथ्यों का समुचित समावेश करके सामग्री को काफी बढ़ा दिया गया है। हाल में हुए राजनीतिक परिवर्तनों के आर्थिक महत्व व दिशा का भी यथास्थान विवरण दिया गया है। इस प्रकार पिछले संस्करण की अपेक्षा प्रस्तुत संस्करण की पृष्ठ संख्या में कोई १०० पृष्ठों की वृद्धि हो गई है और इस नवीन संस्करण को सब प्रकार से एक सर्वथा नई पुस्तक ही कहा जा सकता है।

यथा सम्भव सन् १९५४-५५ तक के आंकड़ों को दिया गया है। कुछ विषयों में अब तक उपलब्ध आँकड़े केवल सन् १९५२-५३ तक के ही हैं। उन्हें वैसे ही रहने दिया गया है। सच तो यह है कि वास्तविक आँकड़े सम्बन्धित वर्ष के दो साल बाद ही विज्ञापित हो पाते हैं। इससे पहले तो केवल अनुमानित संख्याएँ ही मिलती हैं। लेखकों का प्रयत्न यही रहा है कि केवल वास्तविक आँकड़ों को ही दिया जाय—व्यापार और उत्पादन सम्बन्धी विश्वसनीय तथ्यों को ही प्रस्तुत किया जाय। इसलिए कहीं पर भी अनुमानित तथ्यों या आँकड़ों को नहीं दिया गया है। पुस्तक में दिये गये आँकड़े सरकारी विज्ञप्तियों, संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्टों और विश्वसनीय पत्र पत्रिकाओं से उद्धृत हैं।

पुस्तक के मानचित्रों तथा रेखाचित्रों में भी काफी परिवर्तन कर दिया गया है। बहुत से रेखाचित्र युद्धपूर्व की दशा से सम्बन्ध रखते थे। उन्हें हटाकर नये रेखाचित्रों को स्थान दिया गया है। विवरण के सहायक रूप में प्रस्तुत करने के लिए इन रेखाचित्रों को खास तौर पर संयोजित करके बनाया गया है। यह इनकी अपनी विशेषता है।

पुस्तक के संशोधन और परिवर्द्धन में अनेक सज्जनों व सूत्रों से सहायता मिली है। उन सभी के प्रति हम अनुगृहीत हैं।

दिल्ली :
१६ मार्च, १९५६

ए० दास गुप्ता
अमरनाथ कपूर

पाठकों के प्रति

आज समस्त संसार औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशी है। मनुष्य का पूरा जीवन आर्थिक व व्यवसायिक वातावरण से ओतप्रोत है। प्रत्ये राष्ट्र के सामने अपने प्राकृतिक साधनों से पूरा लाभ उठाने, बने हुए सामान के लि नई मंडियां खोजने और अपना उत्पादन बढ़ाने के प्रश्न उपस्थित हैं। ऐसी दशा आर्थिक व वाणिज्य भूगोल के अध्ययन का महत्व बहुत बढ़ जाता है और इसी तथ को ध्यान में रखते हुए हमारे शिक्षा-शास्त्रियों ने विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्य-क्र में इस विषय को स्थान दिया है।

किन्तु यह खेद का विषय है कि अभी तक अपनी भाषा में इस विषय प कोई भी उपयुक्त पाठ्य पुस्तक नहीं थी। फलतः विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा और विदेशी आर्थिक परिस्थितियों के दृष्टिकोण से लिखी हुई बेंगटसन (Bengtson) चिजोल्हम (Chisholm), स्टाम्प (Stamp), जोन्स (Jones), जिमरमे (Zimmerman), विटबेक (Whitbeck), फिंच (Finch), क्लि (Climm), और रसल स्मथ (Russel Smith) प्रभृति विशेषज्ञों की विस्तृ पुस्तकों का ही सहारा लेना पड़ता था। ऐसा करने में कभी-कभी बड़ी असुविध होती थी। बहुधा विद्यार्थियों को यही नहीं समझ पड़ता था कि उन पुस्तकों से अप काम का ज्ञान किस प्रकार निकालें। इसी कमी को पूरा करने के लिए यह पुस्त लिखी गई है।

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न विश्वविद्यालयों के हायर सेकन्डरी, इंटरमीडियट बी० ए० और बी० काम परीक्षाओं में आर्थिक भूगोल के पाठ्य-क्रम के अनुसार तथ इन विभिन्न परीक्षाओं के परीक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। वैसे तो विविध भारतीय लेखकों द्वारा तैयार की हुई अनेक पुस्तकें मिलती हैं पर उनमें बहुत-सी विवेचनात्मक कमियां हैं। वाणिज्य भूगोल के दृष्टिकोण से वे पुस्तकें अधूरी-सी हैं। या तो उनमें भौगोलिक तथ्यों की अपेक्षा आर्थिक तथ्यों को अधिक महत्व दिया गया है या भौगोलिक परिस्थितियों के निरूपण को प्रथम स्थान दे कर आर्थिक तत्वों को गौण स्थान दिया है। ये दोनों ही दृष्टिकोण गलत हैं। वास्तव में प्रस्तुत पुस्तक का ध्येय—"मनुष्य के आर्थिक प्रयत्नों—उत्पादन, यातायात व वितरण—तथा वाणिज्य पर उसकी स्थिति, जलवायु, वनस्पति आदि भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन" करना है और इसीलिए हम इसे सम्पूर्ण, व्यापक व सार्वभौमिक कह सकते हैं।

इस पुस्तक को तैयार करने में आधुनिक भूगोल विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत भौगोलिक निरूपण के सिद्धान्तों को बराबर ध्यान में रखा गया है। इस पुस्तक में दिए हुए आंकड़े विश्वसनीय सूत्रों से लिये गए हैं और कहीं भी बेकार आंकड़े नहीं दिये गये हैं। केवल उन्हीं आंकड़ों को दिया गया है जो इस पुस्तक में लिखित विविध विषयों से सम्बन्धित हैं या विषय-सम्बन्धी आर्थिक दशाओं के द्योतक हैं। विद्यार्थियों को विषय का पूर्ण ज्ञान कराने के लिए प्रस्तुत पुस्तक में अनेकों चित्र, चार्ट व नक्शे भी दे दिये गये हैं।

पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पहले भाग में मनुष्य की परिस्थितियां और उसके आर्थिक प्रयत्नों का सामान्य विवरण है और दूसरे भाग में मनुष्य के आर्थिक, व्यापारिक व व्यवसायिक जीवन का प्रादेशिक अध्ययन। पुस्तक के अन्त में अनेक भौगोलिक शब्दों की सूची भी दी गई है और उनमें केवल भाषान्तर ही नहीं है बल्कि वे व्याख्यायें भी दी गई हैं जिन्हें British Association की Geographical Glossary Committee ने स्वीकार कर लिया है। यह भी अपने ढंग की नई चीज है जो आर्थिक भूगोल के विद्यार्थियों को विषय-ज्ञान कराने में बड़ी सहायक होगी। हमें पूर्ण आशा है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों तथा साधारण योग्यता के शिक्षित व्यक्तियों के लिए यह पुस्तक बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्त में हम निम्नलिखित सज्जनों को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते, जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचारों व आदेशों द्वारा इस पुस्तक के तैयार करने में बड़ी सहायता दी है :—श्री बलवन्तसिंह, डी० ए० वी० कालेज, कानपुर; श्री एम० पी० ठाकुर, कैम्प कालेज, नई दिल्ली; डा० विश्वम्भरनाथ, योजना कमीशन, नई दिल्ली; श्री डी० एन० मेहता, कमर्शियल हायर सेकन्डरी स्कूल, दिल्ली; श्री एस० पी० श्रीवास्तव, अग्रवाल विद्यालय इण्टर कालेज, प्रयाग।

उत्पादन व क्षेत्रफल के आंकड़ों केलिए हमने संयुक्तराष्ट्र संघ की विविध रिपोर्टों, सरकारी विज्ञप्तियों तथा अन्य बहुत-सी विश्वसनीय पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली है। उन सभी के प्रति हम अनुग्रहीत हैं।

दिल्ली,
ता० २२ जनवरी, १९५३

ए० दास गुप्ता
अमरनाथ कपूर

अध्याय

विषय प्रवेश

से इसका सम्बन्ध ।

१. मनुष्य तथा उसकी परिस्थिति—

प्राकृतिक और मानवी परिस्थितियां । प्राकृतिक परिस्थिति—भौगोलिक स्थिति, तट-रेखा, नदियां, मैदान, खनिज सम्पत्ति, वन सम्पत्ति, मछलियाँ—जलवायु और भूमि । मानवी परिस्थितियाँ—जाति, धर्म, शासन-प्रबन्ध, जनसंख्या का घनत्व ।

२. जलवायु तथा भौगोलिक प्रदेश—

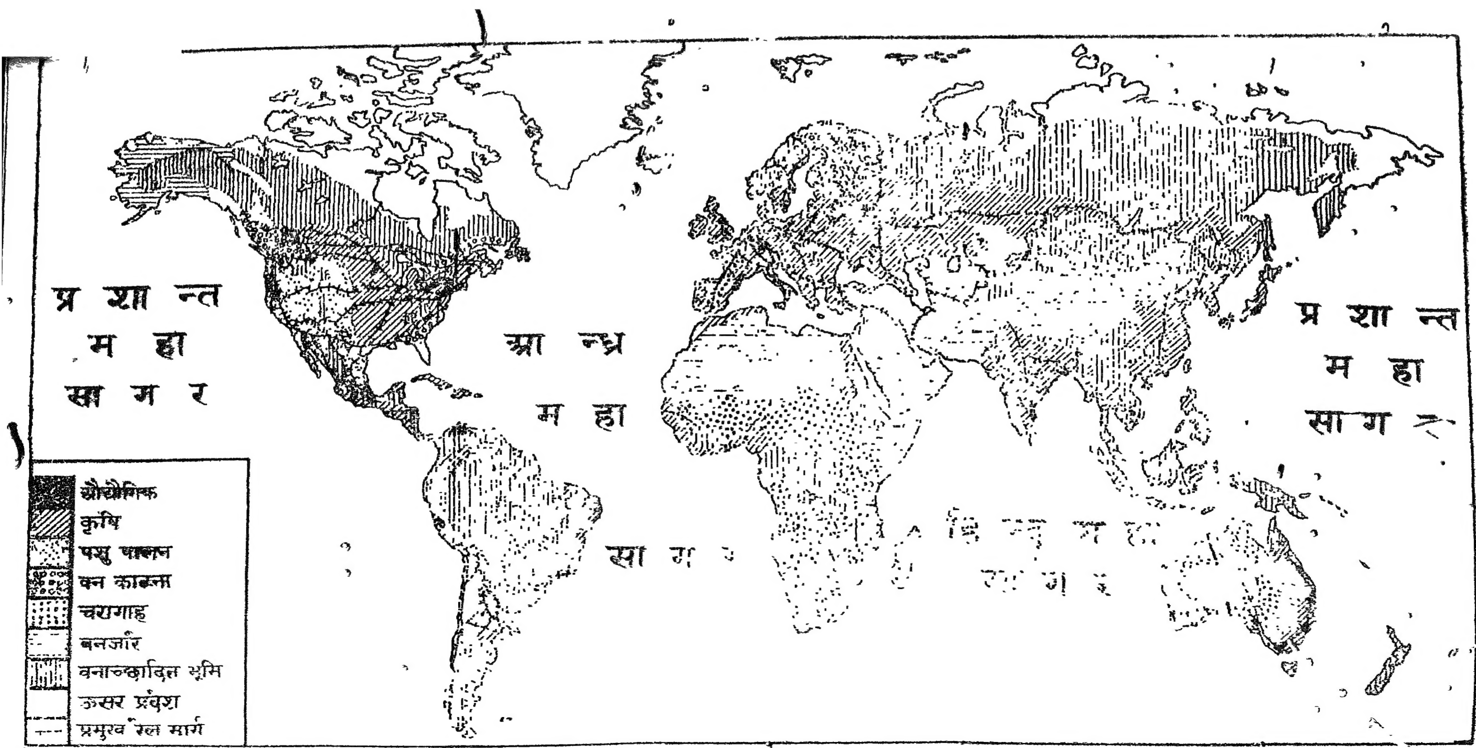
परिभाषा तथा सीमायें—प्रदेशों के भेद—भूमध्यसागरीय आर्द्र वन प्रदेश, मानसून प्रदेश, चीन-तुल्य प्रदेश, तूरान-तुल्य प्रदेश, ईरान-तुल्य प्रदेश, समशीतोष्ण महासागरीय प्रदेश—सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेश, साइबेरिया-तुल्य प्रदेश, अलटाई-तुल्य प्रदेश और ध्रुवीय प्रदेश ।

३. कृषि-उद्योग—

खेती का उद्देश्य तथा विचित्र प्रकृति—सयत्न तथा व्यापक खेती—खेती के विभिन्न प्रकार—आर्द्र, शुष्क तथा संचित कृषि । खेती से प्राप्त प्रमुख वस्तुएं—भोज्य व पेय पदार्थ—गेहूँ, मक्का, राई, जई, बाजरा, जौ, चाय, कहवा, तम्बाकू, ईख (गन्ना), चुकन्दर, फल, मसाले । औद्योगिक फसलें—कपास, पटसन, सन, पटुआ, रेशम, रबर, तिलहन ।

४. खान खोदना—

इसका अर्थ—एक प्रकार का अपहरण । वर्गीकरण—धातु तथा अधातु खनिज । लोहा, ताँबा, सीसा, टीन, जस्ता, अल्युमीनियम, प्लेटिनम, चाँदी, सोना, पारा, कोयला, खनिज, तेल, जलविद्युत, प्राकृतिक गैस, अभ्रक, नमक, एस्बस्टोस, ग्रेफाइट, हीरे, इमारती पत्थर ।



चित्र १—पृथ्वी पर मनुष्य के व्यवसाय और प्राकृतिक परिस्थितियाँ

विषय-प्रवेश

परिभाषा और क्षेत्र—आर्थिक-भूगोल की परिभाषा के विषय म भूगाल-शास्त्र के भिन्न-भिन्न विद्वानों में मतभेद हैं । अनेक विद्वानों के मतानुसार आर्थिक भूगोल किसी प्रदेश के उत्पादन-वितरण के वर्णन के साथ-साथ उन विशेष सिद्धान्तों का भी अध्ययन करता है जिनके द्वारा एक प्रदेश-विशेष में किसी वस्तु का उत्पादन या वितरण होता है । परन्तु हम इसी बात को इस प्रकार समझ सकते हैं कि मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं पर प्राकृतिक परिस्थितियों के प्रभाव का अध्ययन ही आर्थिक भूगोल का विषय है । इसके अन्तर्गत हम यह अध्ययन करते हैं कि मनुष्य के आर्थिक प्रयत्नों—वस्तुओं के उत्पादन, यातायात और वितरण—तथा वाणिज्य पर उसकी स्थिति, जलवायु और वनस्पति आदि प्राकृतिक परिस्थितियों का क्या प्रभाव पड़ता है । इस प्रकार सभी भौगोलिक दशाओं व तथ्यों का, जो मनुष्य के आर्थिक जीवन से सम्बन्ध रखते हैं—अध्ययन आर्थिक-भूगोल के क्षेत्र में स्वभावतः आ जाता है । इनके अलावा देशों के प्राकृतिक विभागों व राजनीतिक सीमाओं के भीतर जनसंख्या का विन्यास, नगर और वहाँ के लोगों का रहन-सहन, उनके व्यवसाय और उद्योग-धन्धों आदि का वर्णन और व्याख्या भी आर्थिक-भूगोल के अन्तर्गत होते हैं ।

आर्थिक-भूगोल के कार्य—आर्थिक-भूगोल के दो मुख्य कार्य हैं । पहले तो इसके अध्ययन से हमें भूमंडल के विभिन्न आर्थिक साधनों की स्थिति का पता चलता है और दूसरे हम यह जान लेते हैं कि पृथ्वी पर स्थित विभिन्न प्रकृति-दत्त सुविधाओं व साधनों को किस प्रकार मनुष्य के आर्थिक उपयोग में लाया जा सकता है । आर्थिक-भूगोल से हमें विश्व-व्यापार तथा देशों के परस्पर वाणिज्य का ज्ञान होता है और सच तो यह है कि आर्थिक-भूगोल के उचित अध्ययन व मनन के द्वारा हमारी बहुत-सी समस्याओं का हल खोजा जा सकता है—संसार में बहुत-सी वस्तुओं की वर्तमान कमी को दूर किया जा सकता है ।

आर्थिक-भूगोल का अन्य विषयों से सम्बन्ध—जैसा ऊपर कहा गया है, आर्थिक-भूगोल का उचित अध्ययन बहुत जरूरी है । इस प्रकार के विधिवत् अध्ययन के लिये यह समझ लेना बहुत ज़रूरी है कि आर्थिक भूगोल स्वतः पूर्ण ज्ञान नहीं है । भूगोल-शास्त्र के विभिन्न अंगों, प्राकृतिक भूगोल, गणित भूगोल, राजनीतिक भूगोल तथा खगोल और भूगर्भ विद्या जैसे अन्य सहयोगी विषयों से भी इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

किसी देश के व्यापार और वाणिज्य पर वहाँ की भौगोलिक प्रकृति व बनावट, जलवायु तथा स्थिति का बड़ा असर पड़ता है । इन बातों के द्वारा आर्थिक-भूगोल प्राकृतिक भूगोल से सम्बन्ध स्थापित करता है । इसी प्रकार राजनीतिक भूगोल से ज्ञात होता है कि प्राचीन इतिहास की गति तथा भविष्य की प्रगति पर भौतिक [illegible]

का क्या प्रभाव पड़ता है। अतः देश के निवासियों का रहन-सहन, शासन-प्रबन्ध, विधान व रीति-नीति के अध्ययन के क्षेत्र में आर्थिक भूगोल राजनीतिक भूगोल से सम्पर्क स्थापित करता है। पृथ्वी के धरातल की रचना, चट्टानें, मिट्टी आदि का स्वभाव व वितरण भी मनुष्य के जीवन पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। इन बातों का ज्ञान भूगर्भ विद्या से होता है और इस ज्ञान के सहारे आर्थिक-भूगोल का विद्यार्थी यह समझ लेता है कि किसी स्थान-विशेष पर खान खोदना, जलविद्युत् उत्पन्न करना या कृषि-कार्य करना सम्भव है या नहीं, और यदि है तो क्यों व कैसे ? गणित सम्वन्धी भूगोल पृथ्वी का ग्रहरूप में अध्ययन करता है पृथ्वी के आकार-विस्तार, ज्वार-भाटा, समुद्री-धाराओं आदि विषयों में ज्ञान देता है। इन विषयों का जलवायु, वनस्पति व यातायात के साधनों पर बड़ा असर पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो गया कि आर्थिक-भूगोल भूगोल-शास्त्र के अध्ययन का ही एक अंग है। नीचे दिये हुए चित्र से भूगोल के चार विभागों में आर्थिक-भूगोल का स्थान स्पष्ट हो जायगा :—

प्राकृतिक भूगोल	गणित सम्वन्धी ज्योतिष भूगोल	राजनीतिक भूगोल	आर्थिक तथा वाणिज्य भूगोल
(१) देश की स्थिति, रचना व आकार	(१) सौर परिवार में पृथ्वी की स्थिति	(१) शासन-प्रबन्ध व विधान	(१) मनुष्य की आर्थिक क्रियायें व व्यापार
(२) जलवायु व वनस्पति	(२) ज्वारभाटा व समुद्री धारायें	(२) जातियां, आबादी व लोगों का रहन-सहन और रीति-रिवाज	(२) इन पर प्रभाव डालने वाली प्राकृतिक व मानवी परि-स्थितियाँ

भूगोल शास्त्र के इन सभी अंगों में गणित सम्बन्धी तथ्य निश्चित, अटल व मौलिक होते हैं। कुछ हद तक प्राकृतिक भूगोल सम्बन्धी तथ्य भी इसी प्रकार के होते हैं। परन्तु राजनीतिक भूगोल परिवर्तनशील है और इसके द्वारा पाये गये तथ्य शीघ्र बदल जाते हैं। पर इन सबसे जल्दी बदलने वाली रूपरेखा आर्थिक व वाणिज्य भूगोल के तथ्यों की है। अतः किसी देश की उपज, व्यापार व आर्थिक-प्रगति का वर्णन देते समय उसका काल केवल वर्षों की संख्या में दिया जाता है।

इस सबके अलावा, अर्थ-शास्त्र, मानव-शास्त्र, समाज-शास्त्र, इतिहास, वनस्पति-विज्ञान, जीव-शास्त्र, रसायन-शास्त्र और भौतिक विज्ञान आदि के अध्ययन से भी आर्थिक भूगोल को समझने में सहायता मिलती है। सारांश में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन व तथ्यों का सामंजस्य ही आर्थिक भूगोल है।

अध्याय : : एक

मनुष्य तथा उसकी परिस्थिति

विभिन्न प्रदेशों के जीवन में विभिन्नता—किसी देश के निवासियों के रहन-सहन का ढंग केवल संयोग की बात नहीं है, बल्कि वहाँ की परिस्थितियों की देन व परिणाम है। मनुष्य की आवश्यकताएँ, उपज, स्वभाव और रहन-सहन का ढंग एवं आर्थिक प्रकृति उसकी परिस्थितियों पर निर्भर करती हैं। भूमंडल पर स्थित विभिन्न देशों ने अलग-अलग उन्नति की है। कुछ भागों के निवासी क्रियाशील, प्रगतिशील, उद्यमशील तथा कुशल व्यापारी हैं तो कहीं के निवासी अकर्मण्य व पिछड़े हुए हैं। यदि कुछ देश कृषि-प्रधान हैं तो कुछ व्यवसाय-प्रधान। आर्थिक क्रियाओं व उन्नति की यह भिन्नता मनुष्य और उसकी परिस्थिति के पारस्परिक अध्ययन से समझ में आ सकती है। पर एक विशेष बात और भी है कि समान परिस्थितियों में निवास करने वाले भिन्न-भिन्न लोगों का जीवन-प्रवाह एक-सा होना जरूरी नहीं है। वास्तव में सच बात तो यह है कि परिस्थितियाँ मनुष्य को आर्थिक उन्नति करने के लिये केवल अवसर प्रदान करती हैं। उस अवसर का उपयोग करना या न करना, प्रकृति-दत्त साधनों से लाभ उठाना न उठाना, वहाँ के निवासियों की प्रतिभा, बुद्धि, संस्कृति और ज्ञान पर निर्भर करता है।

परिस्थिति के प्रकार—परिस्थितियां दो प्रकार की होती हैं—(१) प्राकृतिक (Physical)। (२) मानवी या सामाजिक (Non-Physical)। आर्थिक-भूगोल का सम्बन्ध केवल प्राकृतिक अथवा भौगोलिक परिस्थितियों से ही नहीं है बल्कि उन मानवी परिस्थितियों से भी है, जो किसी देश के आर्थिक-साधनों के वितरण व विकास को निर्धारित करती हैं।

अ—वाणिज्य को प्रभावित करने वाली प्राकृतिक परिस्थितियाँ

१. भौगोलिक स्थिति—किसी देश के वाणिज्य विकास में वहाँ की भौगोलिक स्थिति का विशेष महत्त्व होता है। एक प्रदेश-विशेष की स्थिति निम्नलिखित किसी एक प्रकार की हो सकती है। (१) महाद्वीपीय (Continental), (२) तटवर्त्ती (Littoral), (३) थलसंयोजकवर्त्ती (Isthunian), (४) द्वीपवर्त्ती (Insular), (५) प्रायद्वीपवर्त्ती (Peninsular)। रूस, पोलैण्ड, बोलीविया और चेकोस्लोवाकिया महाद्वीपीय स्थिति के उदाहरण हैं। संसार के मुख्य व्यापारी मार्गों से ये देश बहुत दूर हैं, अतः सुगम नहीं हैं। नार्वे, स्वीडन तथा बाल्टिक रियासतों की स्थिति तटवर्त्ती है। इसलिए वहां से संसार के व्यापारिक मार्ग बहुत अंशों में सुगम हैं। ब्रिटिश द्वीप, जापान व न्यूफाऊंडलैण्ड की स्थिति द्वीपवर्त्ती है और इटली व भारतवर्ष प्रायद्वीपवर्त्ती स्थिति के उदाहरण हैं। इन प्रदेशों के चारों ओर अथवा

तीन ओर जल-समूह होने से ये प्रदेश संसार के व्यापारिक मार्गों के अत्यन्त समीप हैं।

इसलिए किसी देश की स्थिति तभी अनुकूल मानी जाती है जबकि वहां की सीमान्त रेखाएँ प्राकृतिक हों, जलवायु सम हो, संसार के व्यापारिक देश सन्निकट हों और वहाँ माल के यातायात की सुविधायें वर्तमान हों। भौगोलिक स्थिति का ज्ञान बहुत कुछ अपेक्षाकृत होता है। अधिकतर दशाओं में भौगोलिक स्थिति का अर्थ केवल यह होता है कि विशेष क्षेत्र का आसपास के क्षेत्र के साथ क्या संबंध है। किस प्रकार के मार्ग उसे सम्बन्धित करते हैं। जैसे ही मार्गों में या आसपास के क्षेत्रों की आर्थिक दशा में परिवर्त्तन होता है, भौगोलिक स्थिति के प्रभाव भी भिन्न हो जाते हैं।

सीमांत रेखाएं—सुरक्षा, वाणिज्य व राष्ट्रीयता के विचार से सीमाओं का बड़ा महत्त्व होता है। सीमांत रेखायें प्रायः दो प्रकार की होती हैं:—

१. प्राकृतिक और २. मनुष्यकृत।

सागर, पर्वत, मरुभूमि, दलदल और नदियाँ विभिन्न देशों के बीच प्राकृतिक सीमायें बनाती हैं। इनसे शत्रु से आक्रमण के प्रति निश्चिन्तता एवं स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न होती है। समुद्र से घिरे होने के कारण ब्रिटिश द्वीप की सीमान्त रेखाओं में युद्ध अथवा राजनीतिक क्रान्ति द्वारा होने वाले परिवर्तनों की आशंका नहीं है और इसीलिए यहाँ की आर्थिक दशा सीमा-परिवर्तन द्वारा होने वाले प्रभावों से मुक्त है।

यूरोप में जहाँ पर रेगिस्तानी सीमाओं का अभाव है, नदियों को राजनीतिक सीमाओं के रूप में लिया गया है। मध्य राइन फ्रांस को जर्मनी से अलग करती है; मध्य डैन्यूब हंगरी और चेकोस्लोवाकिया के बीच सीमा बनाती है। हंगरी और यूगोस्लाविया के बीच सीमा ड्रेव बनाती है। निम्न डैन्यूब रूमानिया और बलगारिया को अलग करती है। परन्तु ध्यान में रखने की बात तो यह है कि जिन नदियों को आसानी से पार किया जा सकता है, वे अच्छी सीमाएँ नहीं बनातीं। इसी कारण राइन आदर्श सीमा नहीं है।

मनुष्यकृत सीमांत रेखायें—प्रायः स्थली होती हैं। इनमें पर्वतों, मरुभूमियों आदि प्राकृतिक स्पष्ट विभाजक रेखाओं का अभाव होता है। ये ऐतिहासिक परिस्थितियों, संधियों, युद्धों अथवा स्वीकृति-पत्रों द्वारा निर्धारित की जाती हैं। पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, रूमानिया आदि की ऐसी ही सीमायें हैं। अतः इन पर राजनीतिक परिवर्तनो आदि का असर पड़ता है। सन् १९३८ से १९४८ तक जर्मनी, पोलैण्ड, रूस और इटली आदि कितने ही यूरोपीय देशों की सीमान्त रेखाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो चुके हैं। वर्तमान पोलैण्ड की सीमायें सन् १९३८ की सीमाओं से नितान्त भिन्न हो गई हैं क्योंकि इसका ७०,००० वर्गमील पूर्वी प्रदेश रूस में मिला दिया गया है और जर्मनी का ३९,००० वर्गमील प्रदेश इसके पश्चिमी भाग में मिला दिया गया है। जर्मनी का यह भाग खनिज पदार्थों, उद्योगधंधों तथा कृषि-सम्पत्ति

स सम्पन्न व परिपूर्ण है। अतः इसके द्वारा पोलैण्ड की व्यवसायिक व आर्थिक उन्नति अवश्यम्भावी है। इसी प्रकार दूसरी लड़ाई के बाद रूस ने उत्तर-पश्चिम में बाल्टिक राज्यों को मिलाकर, पूर्वी एशिया पर अधिकार करके तथा संधि द्वारा फिनलैण्ड, पोलैण्ड और चैकोस्लोवाकिया द्वारा प्रदत्त प्रदेशों को सम्मिलित करके अपनी सीमाओं को अत्यन्त विस्तृत कर लिया है। इस सीमा-परिवर्तन के परिणाम-स्वरूप इन देशों के व्यापार तथा व्यवसाय में अनेक हेर-फेर हो गए हैं।

व्यापारिक केन्द्रों के मध्य स्थिति का प्रभाव—किसी देश की स्थिति संसार के व्यापारिक केन्द्र के बीच में होने से वहां के वैदेशिक व्यापार में कितनी महत्त्वपूर्ण उन्नति हो सकती है, ब्रिटेन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। संसार का कोई भी व्यवसायी देश इससे अधिक दूर नहीं तथा यातायात और आवागमन की सभी सुविधायें इसको प्राप्त हैं। इसी प्रकार पूर्वी गोलार्द्ध के मध्य भाग में स्थित होने तथा तीन ओर समुद्री व्यापार की सुविधाओं के कारण भारतवर्ष की स्थिति भी व्यापार तथा वाणिज्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रशान्त महासागर में होने के कारण जापान की भी आदर्श स्थिति है।

सांस्कृतिक सम्पर्क का प्रभाव— मानव-विकास के लिये सब से महत्त्वपूर्ण साधन भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के साथ सम्पर्क होना है। अतः ऐसी स्थिति जिसमें अन्य देशों के साथ सम्पर्क व गमनागमन की सुविधा हो, देश की भौतिक समृद्धि तथा साँस्कृतिक उन्नति में सहायक होती हैं। व्यवसायी क्षेत्रों के समीपवर्ती देश भी वाणिज्य और व्यापार में शीघ्र उन्नत हो जाते हैं। इटली पहले अवनत दशा में था परन्तु १९वीं सदी में निकटवर्ती व्यवसायिक देशों से उसकी उद्योग-सम्बन्धी भावनाओं तथा कला-सम्बन्धी व्यापारों को प्रेरणा मिली। फलतः इटली एक समृद्धिशाली उद्योगशील देश बन गया। इसके विपरीत वह देश, जिसको बाह्य संसार से सम्बन्ध स्थापित करने में बाधायें हों, सीमित ही रह जाता है और विदेशों में व्यापारिक सम्पर्क स्थापित नहीं कर पाता। १९वीं शताब्दी तक चीन देश विशाल पर्वतों, विस्तृत मरुस्थलों तथा महासागरों की बाधाओं के कारण ही अन्य देशों से अलग रहा। इसी प्रकार साइबेरिया, चिली, ग्रीनलैंड तथा अलास्का की स्थिति भी विचार-विनिमय तथा व्यापारिक उन्नति में बाधक रही है।

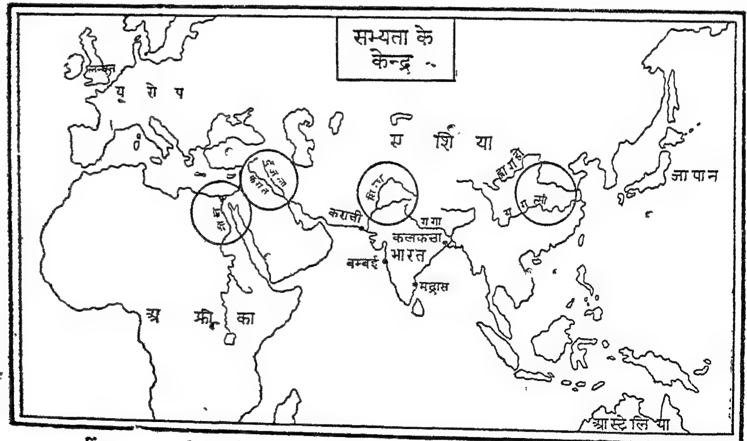
२. **तट-रेखा**—मनुष्य के आर्थिक व्यापारों पर दूसरा प्रभाव तट-रेखा की आकृति का पड़ता है। केवल कुछ देशों—अफगानिस्तान, स्वीजरलैंड, बोलीविया आदि को छोड़कर प्रायः सभी देशों के तट हैं। वास्तव में समुद्र-तट का देश की उन्नति-अवनति पर विशेष प्रभाव पड़ता है। तट-रेखा कई प्रकार की हो सकती है—सपाट या कटी-फटी, ऊंची या नीची। व्यापारिक सुविधाओं के दृष्टिकोण से तट का कटा-फटा होना जरूरी है, जिससे समुद्र देश के भीतर तक प्रविष्ट हो सके। तरंगों के वेग को मन्द करने, जलयानों को सुरक्षा प्रदान करने तथा देश के भीतरी भागों तक उनका मार्ग सुगम बनाने के कारण, कटी-फटी तट-रेखा बन्दरगाहों और पोताश्रयों की उन्नति में सहायक होती है। इसके फलस्वरूप आयात-निर्यात, व्यापार

की सुविधा और उद्योग धन्धों की उन्नति होती है। ब्रिटेन का तट अधिक कटा-फटा है। और उसका भीतरी से भीतरी भाग समुद्र से केवल १०० मील दूर है। इस कारण निर्यात की जाने वाली वस्तुओं को समुद्र तक ले जाने और आयात वस्तुओं को पोत द्वारा भीतर के किसी भाग तक पहुंचाने में अल्पतम व्यय होता है। इंग्लैंड की व्यापारिक महत्ता वहाँ के कटे किनारों का ही परिणाम है।

कटी-फटी तट-रेखा और उसका प्रभाव—समुद्र तटों के कारण ही डच लोग इतने कुशल व्यापारी हो सके। समुद्र के निरन्तर सम्पर्क में रहने से ही वे निर्भीक, उत्साही तथा वीर नाविक बन सके हैं। परन्तु केवल तट-रेखा का सुविधाजनक होना ही किसी देश को उन्नत नहीं कर सकता। या यूं कहा जा सकता है कि तट-रेखा केवल अन्य सुविधाओं को फलीभूत कर देती है। अक्सर कटे-फटे तट सम्बन्धी लाभ अन्य अवगुणों के कारण निरर्थक भी हो जाया करते हैं। यूनान का तट कटा-फटा है पर फिर भी अन्य असुविधाओं के कारण प्राचीन काल में यूनानी लोग इससे लाभ उठाने में असफल रहे। अब वे न तो कुशल नाविक ही हैं और न व्यापारी ही।

जिस देश की तट-रेखा सपाट अथवा ऊँची होती है वहाँ पोताश्रय कठिनता से बनते हैं अतः वहां पर व्यापार या उद्योग-धन्धों की उन्नति नहीं हो पाती। भारत के तट पर इसी कारण अधिक पोताश्रय नहीं बन सकते।

सपाट तट-रेखा का प्रभाव— इसका पश्चिमी तट सपाट है और मानसून हवाओं के वेग से सुरक्षित नहीं है। इसके पूर्वी तट पर प्रबल तरंगों का जोर रहता है। अतः बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और विजीगापटम को छोड़कर बड़े-बड़े व्यापारी बन्दरगाह थोड़े ही हैं। अफ्रीका के तट की भी यही दशा है। नार्वे का तट यद्यपि कटा-फटा है परन्तु ढालू और पहाड़ी है। ऊँची पर्वत श्रेणियों के कारण निर्यात



चित्र २—नील, गंगा ह्वांगहो, और दजला व फरात की घाटियों में सभ्यता के विकास के लिए अनुकूल भौगोलिक दशायें है जैसे उर्वरा भूमि, स्वास्थ्यप्रद जलवायु और प्राकृतिक सुरक्षा।

वस्तुओं को इकट्ठी करने तथा आयात पदार्थों को भीतरी भागों तक पहुँचाने की सुविधाएं भी नहीं हैं।

३. **नदियाँ**— मनुष्य की प्रगति और सभ्यता के विकास में भौगोलिक परिस्थितियों का बहुत बड़ा हाथ है और उनमें नदियों का काम सबसे महत्वपूर्ण है। नील, फरात, दजला; गंगा, सिन्धु तथा ह्वागहो आदि चार नदियों की घाटियां ही सभ्यता की जन्मभूमि रही हैं। एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान ले जाने के लिये भी नदियां प्राकृतिक साधन प्रदान करती हैं। परन्तु विपरीत और अनावश्यक दशा में बहने वाली नदियां उपयोगी नहीं होतीं। कनाडा या रूस की अनेक नदियां या तो भीतरी समुद्रों में गिरती हैं या शीत प्रधान देशों की ओर बहती हैं। अतः वे साल के अधिकतर भाग में बेकार-सी रहती हैं।

यातायात की सुविधा के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है :—

(१) हिम से मुक्ति—नहीं तो कनाडा तथा रूस की नदियों की भांति उनमें यातायात का कार्य असम्भव हो जाता है।

(२) पर्याप्त गहराई—ताकि बड़े जहाज भी चलाये जा सकें। कांगो,जेम्बीसी और अमेजन काफी गहरी नहीं हैं। इससे उनमें यातायात की कठिनाई है।

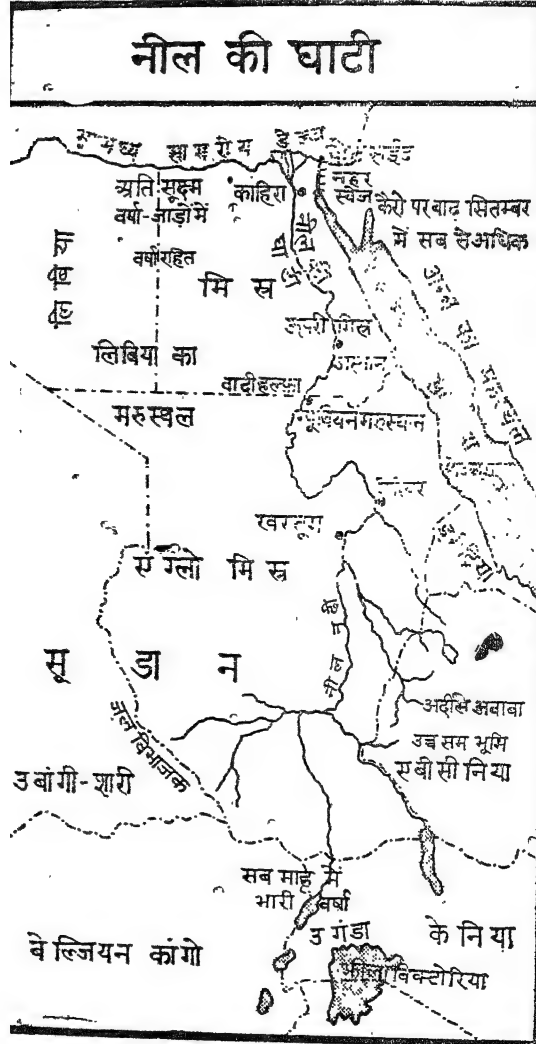
(३) जल काफी होना चाहिये और तीव्र धारा से मुक्त होना चाहिए।

(४) नदियां हिमपोषित होनी चाहिएं ताकि साल भर उनमें लबालब जल रहे।

हिमपोषित व वर्षा पूरितनदियाँ—हिमपोषित और वर्षापूरित नदियों का अन्तर भली-भांति समझ लेना चाहिए। हिमपोषित नदियां सदैव जलपूर्ण रहती ह परन्तु वर्षापूरित नदियां केवल वर्षाऋतु में ही। उत्तर भारत की गंगा, सिन्धु, ब्रह्म-पुत्र नदियां नौका-संचालन के लिए बड़ी सुगम हैं। वे माल ले जाने के लिए उत्तम जलमार्ग है तथा जिन विशाल भागों में से होकर बहती हैं उन्हें धनवान और समृद्ध बनाती हैं। इन नदियों पर बाँध बनाकर हजारों मील लम्बी नहरें व नालियाँ बनाई गई हैं। जिनसे लाखों एकड़ भूमि की सिंचाई होती हैं। इसके विपरीत दक्षिण भारत की नदियां ग्रीष्मकाल में सूख जाती हैं, उनमें जलप्रपात है तथा उनकी धारा तेज है अतः यातायात के सर्वथा अयोग्य हैं। ब्राजील, चीन, कोलम्बिया तथा रूस में रेलमार्गों की कमी के कारण यातायात कार्य नदियों पर ही निर्भर हैं। फ्रांस, जर्मनी, संयुक्त राष्ट्र अमरीका आदि उन्नत देशों में रेलों के साथ-साथ नदियों द्वारा भी यातायात होता है।

नदियों के अन्य लाभ— यातायात के उत्तम साधन होने के अतिरिक्त नदियों के और भी अनेक लाभ हैं। जिन घाटियों से होकर वे बहती हैं उन्हें उर्वरा बनाती हैं। नदियों के किनारे की समतल भूमि में सभी प्रकार की वनस्पति व व्यापारिक और खाद्य फसलें होती हैं। उत्तरी भारत की नदियां मैदानों के लिए उत्तम भूमि, खाद,जल तथा जलमार्ग प्रदान करके उसे समृद्धिशाली बनाती हैं। यदि ये उत्तम नदियां न होतीं तो संसार के अनेक देश कृषि-उद्योग में अवनत ही रह जाते। मिश्र देश को "नील नदी का वरदान" कहा जाता है। यदि नील न होती तो मिश्र भी सहारा

प्रदेश की तरह मरुस्थल होता। परन्तु आज इसी नदी के कारण मिश्र सम्पूर्ण अफ्रीका का अन्न भंडार बन गया है। यहाँ गेहूँ, कपास, फल और जौ आदि प्रचुर मात्रा में पैदा होते हैं। नील नदी ऐबीसेनिया के पर्वतों से उर्वरा मिट्टी लाती है और सिंचाई का भी उत्तम साधन है। वर्षा ऋतु में नील नदी बहुत बढ़ जाती है। इस बाढ़ को रोकने के लिए बांध बना दिये गये हैं जिनसे नहरें निकाल कर सारे प्रदेश में सिंचाई का स्थायी प्रबन्ध कर दिया गया है।



चित्र ३—मरुभूमि के बीच यहाँ लोग स्थायी जीवन व्यतीत करते हैं।

४. प्राकृतिक बनावट का नियंत्रण—साधारणतया ऐसा देखा जाता है कि नगरों के बसने में पहाड़ों के कारण अनेक बाधायें पड़ती हैं। ऊंचे विषम पर्वत मनुष्यों के गमनागमन, जनसंख्या के वितरण तथा रेलों व सड़कों के निर्माण में अत्यन्त बाधक होते हैं। पर्वत-प्रधान देशों में मनुष्य के व्यापारों में भी कठिनाई पड़ती है अतः इन प्रदेशों के निवासी निर्धन व पिछड़े हुए होते हैं। जनसंख्या भी अधिक नहीं होती है। समतल भूमि की कमी; भूमि का कटाव (Soil erosion), विशाल यन्त्रों के उपयोग में कठिनाई तथा खेतों की बिखरी हुई स्थिति के कारण कृषि-कार्य में बाधा पड़ती है।

यातायात की कठिनाई के कारण कुशल कारीगरों की कमी और बाजारों से दूरी के कारण उद्योग-धन्धों में भी अनेक बाधायें पड़ती हैं। यही वजह है कि पर्वतीय प्रदेशों के निवासयों का जीवन-स्तर मैदानों के निवासियों की अपेक्षा कहीं पिछड़ा हुआ होता है।

पर्वतों से लाभ—परन्तु पर्वतो से अनेक लाभ भी हैं। उनमें कुछ तो प्रत्यक्ष हैं पर अधिकतर अप्रत्यक्ष ही होते हैं।

(१) वहुत से देशों मे पर्वतों के होने से ही वर्षा होती है या वर्षा की मात्रा बढ़ जाती है। वे हवाओं को रोककर या उनमें द्रवीभवन की क्रिया को शीघ्रतर करके जलवायु पर असर डालते हैं। यह बात हिमालय को देखने से स्पष्ट हो जाती है। हिमालय शीत ऋतु में उत्तर की ठंडी हवाओं को भारत आने से न केवल रोकता ही है बल्कि वर्षा ऋतु में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाएं इसकी श्रेणियों से टकरा कर वर्षा करती हैं। (२) दूसरे, प्रायः पर्वतों से ही नदियों का निकास होता है क्योंकि पर्वतों पर अधिक वर्षा होती है और संसार की सभी बड़ी बड़ी नदियां पहाड़ों से ही निकलती हैं। यूरोप की सभी बड़ी बडी नदियां आल्पस से निकलती हैं। राइन नदी २३५ मील तक स्विटजरलैंड में बहने के बाद उत्तर सागर में जा गिरती है। रोन नदी अपने स्रोत से १६५ मील तक बहने के बाद फ्रांस की सीमा पर पहुँच कर दक्षिण की ओर भूमध्यसागर की तरफ मुड़ जाती है। इसान नदी डैन्यूब में जा मिलती है। यूरोप में केवल डैन्यूब ही एक ऐसी नदी है जो पूर्व की ओर प्रवाहित होकर काले सागर में जा गिरती है। गटार्ड से निकलकर टिसिनो पो नदी में मिल जाती है और फिर एड्रियाटिक सागर में जा गिरती है। भारत की नदियां भी पर्वतों से निकलती हैं। (३) पर्वतीय प्रदेश चराई के उत्तम साधन हैं। समशीत कटिबन्ध स्थित पर्वतीय प्रदेशों में पशुपालन करने वाले हजारों निवासियों के जीवन का एकमात्र आधार वहां के मैदान व चारागाह हैं। (४) पर्वतों के ढालों पर सघन वन होते हैं जिनसे अनेक उद्योगों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का कच्चा माल प्राप्त होता है। (५) पांचवीं बात यह है कि पर्वतों में खनिज पदार्थों का भंडार होता है। पर्वतों की पुरानी चट्टानों के बीच तांबा, सोना, चांदी, सीसा, जस्त और अन्य वस्तुएं होती है। अपेक्षाकृत नवीन चट्टानों में खनिज तेल, कोयला, खड़ियां तथा बालू पाई जाती है। कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, मेक्सिको और रूस में अनेक खानें पर्वतीय प्रदेशों मे पाई जाती हैं। इन प्रदेशों में हवाई रस्सी के मार्ग का प्रयोग किया जाता है। (६) फिर इन पर्वतीय प्रदेशों की स्वास्थ्यवर्धक वायु और मनोहर दृश्यों से आकर्षित होकर हजारों की संख्या में लोग वहाँ पर आमोद-प्रमोद के लिए जाते हैं। अतः इन प्रदेशों में बहुत से विहार-स्थल और स्वास्थ्य-केन्द्र बन जाते हैं। (७) सातवां और अन्तिम लाभ यह है कि उनमें जलप्रपात होते हैं जिनसे जल-विद्युत् उत्पन्न की जाती है और उससे उद्योग-धन्धों को शक्ति मिलती है। नार्वे, स्वीडन, स्पेन, स्विट्जरलैण्ड और इटली में ऐसे बहुत से जल-प्रपातों से बिजली पैदा की जाती है—

यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य और उसके कार्यों पर असर डालने वाली सभी भौगोलिक परिस्थितियों में पर्वतों का प्रभाव सबसे महत्वपूर्ण है। पर्वतों की जल-वायु स्वास्थ्यप्रद व पाचक होने से वहाँ के निवासियों का स्वास्थ्य उत्तम और कार्य-शक्ति मैदान के निवासियों से कहीं बढ़कर होती है। परन्तु पहाड़ी लोग अधिकतर रूढ़िवादी और उद्यमी होते हैं। बाह्य संसार के प्रभावों से अलग होने के कारण वे अपनी परम्पराओं के भक्त होते हैं। अतः स्वभावतः ये लोग सच्चे और ईमानदार होते हैं। परन्तु अब धीरे-धीरे मैदानों से पृथक्ता कम होती जा रही है और दोनों प्रदेशों के निवासियों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होता जा रहा है।

मैदानों का प्रभाव व लाभ—यद्यपि मैदान पृथ्वी के धरातल के केवल आधे भाग में ही फैले हुए हैं, परन्तु संसार की ९० प्रतिशत जनसंख्या इन्हीं मैदानों में निवास करती है। जिन स्थानों में मरुस्थल या दलदल नहीं होते उनमें अधिक मनुष्य रहते हैं और सारे भाग में घनी आबादी हो जाती है। अनेक सुविधाओं के कारण लोगों के आर्थिक व्यापार अधिकतर मैदानों में ही केन्द्रित हैं। धरातल की समता के कारण कृषि-कार्य और यातायात की सुगमता होती है। संसार के ८५ प्रतिशत रेलमार्ग मैदानों में ही बने हैं। मंद प्रवाह के कारण मैदानी नदियाँ भी नाव चलाने योग्य होती हैं। यूरोप की राइन, ऐल्ब, रोन, डैन्यूब, नीपर तथा डौन; संयुक्त राष्ट्र अमरीका की मिसीसीपी; भारत की गंगा और ब्रह्मपुत्र तथा पाकिस्तान की सिंधु नदियाँ समतल भूमि पर बहने के कारण ही नाव चलाने योग्य है। जलवायु व भूमि की समता के कारण संसार के मुख्य कृषि-प्रधान देश मैदानों में ही स्थित हैं। मैदानों में गमनागमन की सुविधा के कारण माल तथा विचारों का आदान-प्रदान सुविधापूर्वक हो सकता है। अतः मैदानों से कृषि, व्यवसाय, उद्योग-धन्धों, यातायात और व्यापार का महत्त्वपूर्ण विकास हुआ है और संसार के सभी मुख्य नगर मैदानों में ही बसे हुए हैं।

परन्तु सभी मैदानों में मनुष्य के लिए समान सुविधाएँ प्राप्त नहीं होतीं। नीची भूमि में जहाँ जलवायु अस्वास्थ्यकर, पानी के निकास की असुविधा और भूमि बंजर होती है, वहाँ मनुष्य बसना नहीं चाहता। सच तो यह है कि जलवायु की प्रतिकूलता मैदानों की अन्य सभी सुविधाओं को निरर्थक कर देती है। अत्यन्त शुष्क अत्यन्त उष्ण या अत्यन्त शीत मैदानों में मनुष्य नहीं रह सकता। इसलिए कांगो नदी की घाटी, अमेजन का बेसिन, सहारा और टुन्ड्रा प्रदेश मैदान होते हुए भी बहुत कम बसे हुए हैं।

५. प्राकृतिक साधनों की उपस्थिति—खनिज-सम्पत्ति, वन-सम्पत्ति और मछलियाँ किसी प्रदेश के मुख्य प्राकृतिक साधन होते हैं। इसमें जरा भी अत्युक्ति नहीं कि किसी जाति के आर्थिक जीवन को नियंत्रित करने में इन प्राकृतिक साधनों का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। **खनिज सम्पत्ति** का जीवन के ढंग पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। खनिज क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय खान खोदना होता। मेहनत और हिम्मत से एक प्रदेश-विशेष की खनिज सम्पत्ति को प्राप्त करके अनेक प्रदेशों ने उद्योग-धन्

को विकसित किया है। दक्षिणी अफ्रीका इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है। वहाँ सोना अधिक पाया जाता है। जिसके विकास से अनेक सहयोगी उद्योग-धंधों की स्थापना हुई है। जिस प्रकार दक्षिणी अफ्रीका के विकास का आधार-स्तम्भ वहाँ की सोने की खानें हैं, उसी प्रकार आस्ट्रेलिया के उद्योगों की प्रगति का आधार भी वहाँ की खनिज सम्पत्ति ही है।

वन-सम्पत्ति—वन प्रदेशों के निवासियों का प्रमुख धन्धा लकड़ी काटना है। अन्य उद्योग भी इसी पर आश्रित होते हैं। नार्वे और स्वीडन में विशाल वन-प्रदेश हैं : वृक्षों की अधिकता के कारण वहां नौका-निर्माण, कागज. दियासलाई और मेज-कुर्सी आदि बनाने के उद्योग-धंधे स्थापित हो गये हैं। वन-पशुओं की खाल से चमड़ा तथा ऊन प्राप्त होते हैं। कनाडा में हडसन के समीप असंख्य कोमल रोम (Fur) वाले पशुओं का शिकार खाल के लिये किया जाता है। इसके अलावा वनों का जलवायु पर भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण असर पड़ता हैं। वे पानी से भरी हवाओं को आकृष्ट करके वर्षा में सहायक होते हैं। कृषि-प्रधान देशों के लिए बन बड़े ही उपयोगी हैं क्योंकि न केवल वर्षा की मात्रा ही बढ़ जाती है बल्कि भूमि का कटना (soil erosion) भी रुक जाता है।

जल-सम्पत्ति—किसी देश के जीवन, उद्योग-व्यवसाय और वाणिज्य पर समुद्र का बड़ा प्रभाव पड़ता है। शीतोष्ण कटिबन्ध में महासागरों के मध्य स्थित देशों में मछली पकड़ना मुख्य उद्योग हो जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, नार्वे, नोवास्कोशिया न्यूजीलैंड और जापान में इस धंधे ने विशेष प्रगति की है। गहरे समुद्रों में मछली पकड़ने से पोत-संचालन की शिक्षा भी मिलती है और इसीलिए इन देशों के लोग साहसी व सामुद्रिक व्यवसाय में प्रधान हैं। मछली पकड़ने का व्यवसाय कुछ नदियों व झीलों में भी होता है पर उसका कोई विशेष अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व नहीं है।

६. जलवायु का प्रभाव—मनुष्य तथा उसके व्यापारों पर जलवायु का विशेष प्रभाव पड़ता है। मनुष्य की दो प्रधान आवश्यकताएँ हैं—भोजन और घर। दोनों ही पर जलवायु का नियन्त्रण है। जलवायु के अनुसार ही प्राकृतिक वनस्पति होती है और किसी प्रदेश विशेष में मनुष्य के कार्य-व्यापार वहाँ की प्राकृतिक वनस्पति पर ही निर्भर होते हैं। इसी प्रकार कुछ प्रदेश तो मानव-विकास के सर्वथा अयोग्य होते हैं, जैसे गर्म और शुष्क मरुभूमि और अति ठंडे हिमाच्छादित ध्रुव प्रदेश। मनुष्य का रहन-सहन, वेश-भूषा, घर की बनावट और भोजन करने का ढंग व वस्तुएँ जलवायु के अनुसार ही होती हैं।

जलवायु और उद्योग धन्धे—कुछ विशेष उद्योग-धन्धों के विकास के लिए उपयुक्त जलवायु का होना जरूरी है। कुछ व्यवसायों का स्थानीकरण जलवायु पर निर्भर रहता है। सूती वस्त्र व्यवसाय के स्थानीकरण के लिए आर्द्र वायु की आवश्यकता होती है, शुष्क वायु में कातने से सूत टूट जाता है। मैनचेस्टर, बम्बई, अहमदाबाद और ओसाका में वहाँ की आर्द्र जलवायु के कारण ही सूती-वस्त्र व्यवसाय की प्रधानता है। इसके विपरीत आटा पीसने का कार्य शुष्क जलवायु में ही

सम्भव है। इसलिए यह उद्योग बुडापेस्ट, सेंटपाल, मिनियापोलिस और कराची में पाया जाता है। सिनेमा फिल्म के उद्योग के लिए स्वच्छ धूप और उज्ज्वल प्रकाश की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार रस्सी बनाना, मुद्रण-कार्य व कागज़ के धंधों पर भी जलवायु का नियन्त्रण रहता है। परन्तु वर्तमान समय में विज्ञान की प्रगति व नए-नए आविष्कारों की सहायता से उद्योग-धन्धों में जलवायु के नियन्त्रण की अवहेलना भी की जा सकती है। फिर भी यह सर्वथा सत्य है कि किसी देश या प्रदेश में कोई उद्योग उसी समय उन्नत होता है जब उसके अनुकूल दशा और परिस्थिति मौजूद हों। भौगोलिक दशाओं व परिस्थितियों का किसी उद्योग के अनुकूल या प्रतिकूल होना जलवायु के आधीन है। भारतवर्ष की जलवायु गर्म व तर है, इसीलिए यहाँ सूती वस्त्र का उद्योग इतना प्रगति कर सका है। यहाँ के निवासियों को पहनने के लिए हल्के वस्त्रों की ही आवश्यकता होती है। काश्मीर में कठिन शीत के कारण ऊनी-वस्त्र व्यवसाय ने विशेष प्रगति की है।

जलवायु और यातायात—यातायात पर भी वायु, तापक्रम और वर्षा का प्रभाव पड़ता है। भारी हिम-वर्षा के कारण सड़कें और रेलमार्ग कुछ समय के लिए बन्द हो जाते हैं और अति निम्न तापक्रम से नदियों तथा समुद्रों का पानी जम जाता है। बाल्टिक सागर शीतकाल में इसी कारण व्यापार के लिए बिल्कुल अयोग्य हो जाता है। उत्तरी रूस और कनाडा की नदियां भी कठिन शीत में जम जाती हैं। वायु-यातायात भी जलवायु की दशाओं पर निर्भर रहता है, क्योंकि आँधी तथा कुहरे में उड़ान भय से खाली नहीं होती। मरुभूमि में रेत के ढेर तथा आँधियाँ रेल मार्गों के निर्माण में बाधक होती हैं।

जलवायु और शारीरिक व मानसिक शक्ति—शरीर और मस्तिष्क की कार्य-क्षमता पर तापक्रम का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि कुछ प्रदेशों के निवासी शारीरिक और मानसिक शक्ति में अधिक बढ़े-चढ़े हैं और संसार पर अधिकार जमाए हुए हैं। शीतोष्ण कटिबन्धों के उद्यमशील जीवन में वहाँ की जलवायु लोगों को काम करने के लिए प्रेरित करती है। इसके विपरीत उष्ण कटिबन्ध की जलवायु लोगों को शिथिल व आलसी बनाती है और इसीलिए उन प्रदेशों का जीवन पिछड़ा हुआ है। इससे स्पष्ट है कि किसी प्रदेश के निवासियों के स्वास्थ्य, कार्य-क्षमता, उत्पादन शक्ति और सभ्यता पर जलवायु का बड़ा गहरा असर पड़ता है। वाणिज्य पर जलवायु का क्या प्रभाव पड़ता है, यह बात शीतोष्ण और उष्ण प्रदेशों के कच्चे माल की उपज पर दृष्टि डालने से भली-भाँति समझ में आ सकती है।

उपज	उष्ण-कटिबंध	शीतोष्ण-कटिबंध
वन	भूमध्यरेखीय तथा मानसूनी वनों से प्राप्त साल, सागौन, महोगनी, रबर, सिनकोना	पतझड़ तथा कोणधारी वनों से प्राप्त ओक, बीच, चीड़, फर।
घास के मैदान	सेवाना की उपज—कपास मक्का, कहवा	प्रेरीज, पम्पास और स्टेपे मैदानों की उपज गेहूँ।
कृषि	चावल, मोटे अनाज, पटसन, सन, केला, चाय, कहवा, गन्ना, अनन्नास	गेहूं, जौ, जई, राई, सन, अंगूर सेब, बेर, नींबू, चुकंदर, आलू, नाशपाती।

७. **भूमि व मिट्टी का प्रभाव**—प्राकृतिक साधनों में सबसे महत्त्वपूर्ण साधन उपजाऊ मिट्टी है। हमारे भोजन, वस्त्र तथा आश्रय की अधिकतर वस्तुएँ भूमि से ही प्राप्त होती हैं। जहाँ भूमि उर्वरा होती है, वहाँ कृषि-उद्योग की संभावना के कारण जन-संख्या घनी होती है। उपजाऊ प्रदेशों में कृषि-उद्योग ही मुख्य धंधा होता है। भारतवर्ष, चीन और संयुक्त राष्ट्र में भूमि के गुणों के कारण कृषि उद्योग ही धनोपार्जन का मुख्य साधन है। वही भूमि उर्वरा समझी जाती है जिसमें पौधों के लिए उचित आहार प्रचुर मात्रा में विद्यमान हो ताकि जरूरत के अनुसार पौधे उसे ग्रहण कर सकें। मिट्टी कई प्रकार की होती है। रेतीली भूमि वह है जिसमें तीन चौथाई रेत हो। चिकनी (Clay) मिट्टी में चिकनी मिट्टी का अंश आधा होता है। चूने की मिट्टी में कुल मिट्टी का पांचवाँ अंश चूने का होता है। किसी मिट्टी में सड़ी हुई वनस्पति (Humus) का भी अंश मौजूद रहता है। पर सबसे अच्छी मिट्टी दोमट (Loam) होती है। इसमें कीचड़ (चिकनी मिट्टी), रेत, चूना और सड़ी हुई वनस्पति का सम्मिश्रण होता है।

८. **आकार व विस्तार का प्रभाव**—किसी देश के आर्थिक साधनों में उसके आकार व विस्तार का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है, जो देश १० लाख वर्ग मील क्षेत्रफल में फैले होते हैं उन्हें **विशाल** कहते हैं। जिन देशों का क्षेत्रफल एक लाख वर्ग मील से अधिक पर १० लाख वर्गमील से कम होता है उन्हें **बड़े देश** कहते हैं और १ लाख वर्ग मील से कम पर ४०००० वर्गमील से अधिक क्षेत्रफल वाले भागों को **मध्यम** विस्तार का देश कहते हैं। इससे कम क्षेत्रफल के अन्य सभी देश **छोटे देशों** में गिने जाते हैं। देश का आकार कई प्रकार का होता है—सघनाकार, छिन्नाकार और लम्बाकार। रूस, रूमानिया, भारतवर्ष आदि देशों का सघनाकार यातायात की सुविधा और राजनीतिक एकता में सहायक होता है इसके विपरीत यूनान सदृश देशों का छिन्नाकार माल वितरण और विचार विनिमय में कठिनाई उत्पन्न

करता है और चीली के समान लम्बाकार खेती के कार्य में बाधक होता है क्योंकि अधिक लम्बाई के कारण जलवायु में विषम भिन्नता हो जाती है।

देश का विस्तार छोटा या बड़ा हो सकता है परन्तु विस्तार का प्रभाव जनसंख्या के प्रश्न से सम्बन्धित है। बढ़ती हुई जनसंख्या वाले छोटे देशों के निवासी केवल भूमि-कृषि पर निर्भर नहीं रह सकते क्योंकि भूमि सीमित होती है। इन प्रदेशों में चाहे गहरी खेती (Intensive Cultivation) की जाय, चाहे वैज्ञानिक खाद दिया जाय और चाहे भूमि-सम्बन्धी अन्य सुधार किये जायँ पर उत्पादन और भूमि की उर्वरा शक्ति की एक सीमा होती है। अतः ऐसे देशों में लोग अन्य धन्धे अपनाने के लिए बाध्य होते हैं। फलतः आन्तरिक व्यापार या कृषि व्यवसाय की अपेक्षा वैदेशिक व्यापार अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम और जापान इस प्रकार के देशों के ज्वलन्त उदाहरण हैं, जहाँ कृषि की अपेक्षा उद्योग-धन्धों और वैदेशिक व्यापार की विशेष उन्नति हुई है। छोटे देशों में अधिक जनसंख्या बढ़ जाने से अक्सर देशान्तर प्रवास तक आवश्यक हो जाता है। १९वीं शताब्दी में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति होने पर यूरोपियन लोगों का विदेश को निरन्तर प्रवास आरम्भ हो गया। इस प्रकार कनाडा, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, मैक्सिको, ब्राजील, अर्जेन्टाइना, दक्षिणी अफ्रीका, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में उपनिवेश स्थापित हो गए। उपनिवेश और बस्ती या निवास के बीच बड़ा अन्तर है। उपनिवेश ऐसा अधीन राज्य है जहाँ पर शासक राज्य के लोग अपने घर से आकर बस जाते हैं। इस प्रकार के लोग पूरी तरह या प्रधानतया उपनिवेश में बस जाते हैं।

इन उपनिवेशों में विस्तार तो काफी होता है पर आबादी कम। अतः इन प्रदेशों में या सभी कम बसे हुए बड़े देशों के निवासियों का उद्यम अधिकतर पशु-पालन ही होता है। इसी प्रकार के अन्य देश मध्य एशिया और युरुगवे भी हैं। हाँ बड़ी जनसंख्या वाले बड़े देशों में—जैसे भारत और चीन में कृषि ही मुख्य उद्यम रहा है परंतु भौगोलिक साधनों व परिस्थितियों के अनुसार अन्य उद्योग-धन्धों की भी उन्नति हो सकती है। परन्तु इन भागों में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की अधिक वृद्धि नहीं हो सकती क्योंकि यहाँ की उपज का अधिकतर भाग यहीं के निवासियों द्वारा उपभोग कर लिया जाता है।

आ—वाणिज्य को प्रभावित करने वाली मानवीय परिस्थितियाँ

मनुष्य के आर्थिक कार्य व्यापार पर उसकी जाति, धर्म और शासन-प्रणाली का भी बहुत बड़ा असर पड़ता है और इन्हें हम सामाजिक या मानवी परिस्थितियों के नाम से पुकार सकते हैं।

संसार की प्रमुख जातियां—मानव जातियां वर्णभेद के अनुसार ३ वर्गों में विभक्त हैं।—(१) श्वेत वर्ण (white), (२) पीत वर्ण (yellow) तथा (३) श्याम वर्ण (black)। संसार के वाणिज्य पर इन जातियों का प्रभाव समान रूप से नहीं है। **श्वेत वर्ण की जाति के** लोगों का चेहरा गोल, आकृति सुन्दर, आँखें सीधी, नाक सुन्दर और खाल पतली व श्वेत रंग की होती है। प्रायः देखा जाता है कि श्वेत

जाति के प्रदेशों में वाणिज्य, व्यापार तथा राजनीतिक विषयों में विशेष उन्नति हुई है। विश्व-व्यापार इन्हीं के हाथों में है। उत्तम जलवायु के कारण इस जाति के लोग मेहनती, धैर्यवान, उत्साही और प्रतिभाशाली होते हैं। इस जाति ने सभ्यता के विकास, सुदृढ़ सामाजिक संस्थाओं के स्थापन और राजनीतिक व आर्थिक जीवन के नियमन पर बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला है। कला-कौशल और विज्ञान के क्षेत्र में भी इनका स्थान काफी महत्त्वपूर्ण है। इस जाति के लोग यूरोप के अधिकतर भागों में, उत्तरी अफ्रीका, भारत, मध्य व निकट पूर्व में रहते हैं।

पीत वर्ण की जाति के लोग अधिकतर उत्तर-पूर्वी और मध्य एशिया में बसे हुए हैं। चीन और जापान तो इनके प्रमुख केन्द्र हैं। इनकी सभ्यता भी ऊँची है और ये लोग विशेषकर व्यापारशील हैं यद्यपि इनको व्यापार-कुशल बनाने का श्रेय पश्चिम की श्वेत वर्ण की जातियों को ही है। इस समय चीन व जापान में उद्योग-धन्धे, शिल्पकला-प्रधान उद्योगों में, कच्चे तथा पक्के माल के उत्पादन क्षेत्र में तीव्र उन्नति हो रही है, नये समुद्री मार्ग स्थापित हो रहे हैं और बाजारों की उन्नति हो रही है। प्रशान्त महासागर का महत्त्व दिन-पर-दिन अधिक बढ़ रहा है और अभी ही आन्ध्र महासागर का बहुत-सा व्यापार प्रशान्त महासागर में आ गया है। इन लोगों का कद नाटा, खाल पीली, मुंह चपटा और आँखें पतली तिरछी होती हैं।

श्याम वर्ण की जाति के लोग उष्णकटिबन्धीय प्रदेशों में रहते हैं। यह जाति सब से कम सभ्य और वाणिज्य व्यापार की दृष्टि से बहुत पिछड़ी हुई है। उष्ण-कटिबन्ध की गर्मतर जलवायु और भोज्य पदार्थों की बहुलता ने इन लोगों को आलसी व अकर्मण्य बना दिया है। हबशियों के विषय में यह कहा जाता है कि जलवायु विशेष और भोजन की अत्यन्तता से इनके सिर की हड्डियों के बीच का अन्तर समय से पूर्व ही जुड़ जाता है और फलतः उनका मानसिक विकास रुक जाता है। इन लोगों की खाल काली, मुंह चपटा, नाक चौड़ी व मोटी तथा होंठ मोटे व भद्दे होते हैं। इन जातियों को क्रमशः काकेशियन, मंगोलियन तथा हब्शी भी कहते हैं।

विभिन्न धर्म तथा उनके प्रभाव—मानव जाति के विभिन्न समुदायों के विचारों व रहन-सहन पर भिन्न-भिन्न धर्मों का गहरा प्रभाव पड़ता है। इसका भौगोलिक परिणाम यह होता है कि विभिन्न जातियों की गतिविधि विभिन्न प्रकार की हो जाती है। कुछ कार्यों को निषिद्ध ठहराकर तथा कुछ पर प्रतिबन्ध लगाकर धर्म के आदेश मानव-जीवन के दृष्टिकोण को नियमित ही नहीं करते वरन् उसकी आर्थिक गतिविधि और आदर्शों की प्रकृति को भी प्रभावित करते हैं। निश्चय ही मनुष्य के आर्थिक जीवन पर धर्म-सम्बन्धी भावों की अवहेलना नहीं की जा सकती। संसार के मुख्य धर्म चार है—(१) ईसाई धर्म, (२) बौद्ध धर्म, (३) इस्लाम धर्म, (४) हिंदू धर्म।

ईसाई धर्म में कोई विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। इसके सिद्धान्तों की उदारता के ही फलस्वरूप यूरोप और अमरीका में इतनी उन्नति हुई है। ईसाई मत के ३ भेद हैं—रोमन कैथोलिक (Roman Catholic), प्रोटेस्टेन्ट (Protestant)

और यूनानी एपोस्टोलिक (Greek Apostolic)। रोमन कैथोलिकों की संख्या ३३ करोड़ के लगभग है और दक्षिणी-पश्चिमी व मध्य यूरोप, दक्षिणी अमरीका, मैक्सिको तथा संयुक्तराष्ट्र के उत्तरी-पश्चिमी भागों में उनकी प्रधानता है। पृथ्वी पर ईसाइयों के बढ़ते हुए आधिपत्य, उनकी सभ्यता तथा वर्तमान शिक्षा और संस्कृति की प्रगति ने मनुष्य के आर्थिक जीवन पर धार्मिक प्रभाव को निर्बल कर दिया है।

बौद्ध-धर्म को मानने वाले चीन, लंका, ब्रह्मा, इण्डोचीन और जापान में रहते हैं। इस मत को मानने वाले अहिंसा सिद्धान्त को मानते हैं और इसलिए मांस तथा ऊन के लिए पशु-पालन का धन्धा नहीं करते।

इस्लाम धर्म के अनुयायी ३० करोड़ से अधिक हैं और उत्तरी अफ्रीका, पश्चिमी तथा मध्य एशिया, पाकिस्तान, उत्तरी-पश्चिमी चीन, डच गायना, अलबानिया, तुर्किस्तान और रूस के खिरजीचिया प्रदेश में फैले हुए हैं। इनके यहां मद्यपान धर्म विरुद्ध माना जाता है। इसीलिए भूमध्यसागर के पूर्वी तटवर्ती मुस्लिम-प्रधान देशों में अंगूर के अनुकूल जलवायु होने पर भी शराब बनाने का व्यवसाय अधिक बढ़ नहीं पाया है। हाँ, इन देशों में कहवे की अधिक मांग है और इसीलिए कहवा (Coffee) उगाया जाता है। मुसलमानों में ब्याज लेना धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार निषिद्ध माना जाता है। इसीलिए इन देशों में बैंकों का भी अभाव सा रहा है। धार्मिक कारणों से इनमें सूअरों का भी अभाव है। मुस्लिम प्रधानता के कारण पाकिस्तान में तो सूअरों की संख्या कम है परन्तु चीन में मुसलमानों की संख्या कम होने से अधिक सूअर पाले जाते हैं। संसार में ३००० लाख से अधिक मुसलमान हैं जो उत्तरी-अफ्रीका, दक्षिणी पश्चिमी एशिया, पाकिस्तान, उत्तरी-पश्चिमी चीन, इण्डोनीशिया, डचगिनी, अल्बानिया, तुर्की तथा खिरजीचिया (रूस) में पाये जाते हैं।

हिंदू धर्म के अनुयायियों की संख्या २५ करोड़ से भी अधिक है और वे भिन्न-भिन्न जातियों में विभक्त हैं। प्रत्येक जाति के कर्तव्यों की धार्मिक व्यवस्था है। प्रत्येक जाति के उद्यम पृथक्-पृथक् निश्चित हो जाने से बड़े पैमाने पर उत्पादन के विकास में कठिनता पड़ती है परन्तु आजकल पश्चिमी विचारों तथा आर्थिक संगठन की आवश्यकताओं ने जाति-बन्धन को इतना ढीला कर दिया है कि आर्थिक दृष्टिकोण से इसका अस्तित्व शून्य के बराबर रह गया है।

शासन-प्रणाली का प्रभाव—किसी देश के शासन-प्रबन्ध का भी वहाँ के वाणिज्य की प्रगति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। बुरे शासन में उद्योग-धन्धों तथा व्यापार की अवनति और अच्छे शासन में इनकी उन्नति होती है। मैक्सिको में प्राकृतिक सम्पत्ति की प्रचुरता है परन्तु स्थायी तथा सुदृढ़ शासन-प्रबन्ध के अभाव के कारण यहाँ पर क्रान्ति तथा लूटमार होती रहती है और वाणिज्य व्यवसाय का विकास नहीं होने पाता। प्राकृतिक साधनों की अधिकता होते हुए भी शक्तिशाली शासन के अभाव से सन् १९५१ से पहिले चीन एक निर्धन देश था। जापान सरकार द्वारा आदर्श कारखाने तथा उद्योगशालाएँ स्थापित करने की प्रेरणा के कारण ही जापान

पूर्णरूप से उद्योगशील तथा व्यवसाय-प्रधान देश बन गया है। प्रथम विश्व-युद्ध के पहले जर्मनी ने शासन की सक्रिय सहायता द्वारा ही अपने वाणिज्य तथा व्यापार को बढ़ाया।

जनसंख्या का वितरण—किसी प्रदेश की जनसंख्या के आकार तथा घनत्व का भी व्यापार पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जनसंख्या का घनत्व इसलिए महत्त्व-पूर्ण है क्योंकि किसी भी प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति का उपभोग वहाँ के रहने वालों पर ही निर्भर रहता है। साधारणतया यह देखा जाता है कि वहाँ जनसंख्या का घनत्व एक मनुष्य प्रति वर्ग मील है, वहाँ के प्रधान धन्धे शिकार करना या मछली पकड़ना होता है। पाँच से कम घनत्व वाले भागों मेंपशुपालन भी होता है और दस से कम घनत्व वाले प्रदेशों में विस्तृत खेती की प्रणाली से प्रकृति-उपलब्ध सामग्री का उपभोग किया जाता है। हां, जहाँ प्रति वर्ग मील में दस से अधिक लोग निवास करते हैं वहां खेती या उद्योग-धन्धे उन्नति कर पाये हैं।

परन्तु एक बात साथ-साथ और भी ध्यान में रखने की है। जनसंख्या के घनत्व से हमेशा अधिक उन्नति का ज्ञान नहीं हो पाता। चीन में संख्या का घनत्व कहीं अधिक है परन्तु फिर भी आर्थिक दृष्टिकोण से वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका से बहुत पीछे है। इसके विपरीत बेल्जियम में पोलैण्ड या रूमानिया की अपेक्षा जनसंख्या कहीं अधिक घनी है परन्तु साथ-साथ आर्थिक उन्नति में भी बेल्जियम इन दोनों देशों से बहुत आगे है।

साधारणतया यूँ कहा जा सकता है कि घने बसे भागों में वाणिज्य के विकास की अधिक सम्भावना होती है क्योंकि कम बसे भागों में न तो बेचने के लिए कुछ होता ही है और न बाहर से खरीदने के लिए अधिक मांग ही दिखलाई पड़ती है। इसलिए किसी प्रदेश में प्राकृतिक सम्पत्ति चाहे कितनी ही अधिक क्यों न हो परन्तु जब तक वहां पर जनसंख्या का घनत्व काफी न होगा, उस प्राकृतिक सम्पत्ति का उपभोग नहीं हो सकेगा। कारण यह कि जनसंख्या के बिना पूँजी और मजदूर दोनों की ही कमी बनी रहेगी। संसार की जनसंख्या का वितरण साधारणतया आहार की सुविधा के अनुसार होता है। वाणिज्य का विस्तार व विकास भी प्रायः घने बसे हुए देशों में ही हुआ करता है। कम आबादी के देशों में क्रय-विक्रय की आवश्यकता नहीं होती। संसार के घने बसे हुए भाग प्रायः निम्नलिखित तीन प्रकार के क्षेत्रों में पाये जाते हैं:—

(१) शिल्प-उद्योगों के आधार पर—लोहे, कोयले की खानों के निकट।

(२) व्यापारिक मार्गों की सुविधा के अनुसार—समुद्र तट पर।

(३) खेती व अन्य साधनों की विद्यमानता में—जैसे दक्षिणी-पूर्वी एशिया के मानसूनी भागों में।

इनके विपरीत उत्तरी अफ्रीका, अरब तथा आस्ट्रेलिया के विस्तीर्ण मरुस्थल, एशिया और अमरीका के भीतरी शुष्क मैदान व कछार; उत्तर के विस्तीर्ण कोणधारी वन और टुण्ड्रा देश, सवाना के मैदान और आस्ट्रेलिया के मानसूनी वन प्रदेश तथा भूमध्यरेखीय वनों में जनसंख्या बहुत कम और बिखरी हुई है।

इस समय संसार की कुल जनसंख्या २४५० लाख है। इनमें से आधी से अधिक संख्या एशिया महाद्वीप (रूस को छोड़कर) म पायी जाती है। यूरोप महाद्वीप में जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक है। वहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर में ८० मनुष्य निवास करते हैं। इसके बाद घनत्व के दृष्टिकोण से एशिया का स्थान है। वहाँ प्रतिवर्ग किलोमीटर में ४८ मनुष्य निवास करते हैं। इसके विपरीत ओसीनिया में घनत्व सबसे कम है। वहां प्रति वर्ग किलोमीटर में २ मनुष्य से अधिक जनसंख्या नहीं पायी जाती। उत्तरी अमरीका में भी जनसंख्या का घनत्व कोई विशेष अधिक नहीं है। प्रति वर्ग किलोमीटर में ९ मनुष्य निवास करते हैं। उत्तरी अमरीका के विभिन्न प्रदेशों में जनसंख्या का घनत्व इस प्रकार है—संयुक्त राष्ट्र अमरीका २० मनुष्य प्रतिवर्ग किलोमीटर; मैक्सिको १३ मनुष्य और कनाडा केवल एक मनुष्य संसार में सबसे घना बसा भाग हांगकाग है, जहाँ पर जनसंख्या का प्रति किलोमीटर औसत १९८७ है। इसके बाद सार का स्थान आता है जहाँ जनसंख्या का प्रति वर्ग मील घनत्व ३७२ है। अन्य प्रदेशों का जनसंख्या घनत्व इस प्रकार है—

प्रदेश	घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर
हालैण्ड	३१७
इंग्लैण्ड और वेल्स	२९१
बेल्जियम	२८४
जापान	२२९
भारत	११७
पाकिस्तान	८०

इस प्रकार औसत से संसार में जनसंख्या का घनत्व १८ मनुष्य प्रति वर्गमील है।

संसार की जनसंख्या व उसका घनत्व

(१९५२–५३)

प्रदेश	जनसंख्या (हजार में)	घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर
संसार	२,४९९,०००	१८
अफ्रीका	२०८,०००	६·७
नाइजीरिया	२५,०००	२९
मिस्र	२०,७२९	२१
इथोपिया	१५,०००	१४
दक्षिणी अफ्रीका संघ	१२,६८३	१०
बेल्जइअन कांगो	११,४६३	५
अलजीरिया	८,९३०	४
सूडान	८,७४०	३
मरक्को	८,५००	२२
टन्गानाइका	७,८२७	८

मोजाम्बिक	५,७८१	७
कीनया	५,६८०	१०
यूगान्डा	५,१८७	२१
मरीका (उत्तरी व दक्षिणी)	३४१,००	८
संयुक्तराष्ट्र	१५४,३५३	१०
मैक्सिको	२६,३३२	१३
कनाडा	१४००९	१
क्यूबा	५,४६९	४८
कोमिनकन	२,११७	५४
गूटेमाला	२,८८७	२७
पूर्टोरिको	२,२५६	२५३
ब्राजील	५३,६७७	६
अर्जेन्टाइना	१७,६४४	६
कोलम्बिया	११,२६६	१०
पीरू	८,५५८	७
चिली	५,९१२	८
वेनेजुला	५,०७१	६
शिया (रूस को छोड़कर)	१,३४६,०००	५०
चीन	४६३,५००	४८
भारत	३५६,८२९	११७
जापान	८४,३००	२२९
पाकिस्तान	७५,८४२	८०
इन्डोनीशिया	७६,५००	५१
तुर्की	२०,९३५	—
फिलीपाइन	२०,२४६	६८
रोप (रूस को छोड़कर)	३९८,०००	८१
जर्मनी	६९,०००	१९५
पश्चिमी जर्मनी	४८,११७	१९६
संयुक्त राज्य	५०,५५८	२०७
इटली	४६,५९८	१५५
फ्रांस	४२,२३९	७७
स्पेन	२८,०८६	५६
पोलैण्ड	२४,९७७	—
रूमानिया	१६,२००	६८
चेकोस्लोवाकिया	१२,३४०	—
हालैण्ड	१०,२६४	३१७

ओसीनिया	१३,५००	२
आस्ट्रेलिय	८,४३१	१
न्यूजीलैंड	१,९४७	७
रूस	१९३,०००	९

इस प्रकार यूरेशिया के पश्चिमी भाग, एशिया के मानसून प्रदेशों तथा उत्तरी अमरीका के पूर्वी भाग में संसार की तीन चौथाई जनसंख्या पाई जाती है। इन प्रदेशों में उपजाऊ तथा खेतिहर भूमि की भी अधिकता है, शिल्प उद्योग के लिए काफी प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं, व्यापार के लिए सुविधाजनक स्थिति है तथा मानव विकास के लिए अन्य प्रेरक तत्त्व मौजूद हैं। परन्तु इन आबाद क्षेत्रों में विकास की दशा समान नहीं है। कम विकसित देशों की आर्थिक दशा अभी भी कृषि प्रधान है। इस प्रकार के देश के ५० प्रतिशत लोग खेती, शिकार करने या वन काटने में लगे हुए हैं। औद्योगिक शक्ति के विकास तथा मशीनों के प्रयोग द्वारा ऐसे देशों का विकास किया जा सकता है और वहाँ के लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो सकता है। अनुमान है कि कम उन्नत देशों में खेती में लगे हुए मर्दों की जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग मील खेतिहर भूमि पर ११३ होता है जबकि उन्नत देशों में यह औसत ३२ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है।

संसार की जनसंख्या का तीन चौथाई भाग भूखंड के एक अष्टमांश पर रहता है। यद्यपि ध्रुवीय प्रदेशों और पर्वत शिखरों को छोड़कर मनुष्य संसार में कहीं भी रह सकता है परन्तु फिर भी जलवायु के कारण कई बाधाएँ उपस्थित हो जाती हैं। सर्दी या गर्मी की अधिकता तथा कम वर्षा के कारण उपज सीमित हो जाती है। बहुत अधिक वर्षा या वर्ष में वर्षा के खराब वितरण से भी बाढ़ आ जाने या भूमि कटाव होने का भय रहता है। ऐसे प्रदेशों में कीड़े-मकोड़े तथा रोगों के कारण भी विकास में रुकावट पड़ती है तथा जनसंख्या बहुत कम रहती है।

संसार की इस जनसंख्या में दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। नारिस ई० डाड, जो भोजन व कृषि की अन्तर्राष्ट्रीय समिति के प्रधान थे, उन्होंने एक बार कहा था कि कल सुबह इस दुनिया में ५५००० और लोग बढ़ जायेंगे। और इस प्रकार ५५००० प्रतिदिन की दर से प्रति वर्ष २०० से २५० लाख आदमी अधिक हो जाते हैं। परन्तु इस नवजात जनसंख्या के लिये पर्याप्त भोजन की वृद्धि नहीं हो पाती। यही कारण है कि संसार के सम्मुख आज नयी समस्यायें व कमी के दृष्य उठ खड़े हुए हैं। इस समय संसार के अधिकतर लोगों को जीवन की मौलिक आवश्यकतायें भी उपलब्ध नहीं हैं। इस समस्या पर इस समय तीन विचारधारायें प्रचलित हैं:—

(१) जैसे-जैसे संसार की जन्मसंख्या बढ़ती जायेगी, स्वभावतः प्रत्येक मनुष्य के लिए उपलब्ध सुविधाओं में कमी होती जायेगी क्योंकि जब जनसंख्या में वृद्धि होती है, संसार के प्रकृतिदत्त साधन क्षीण होते जाते हैं। इसलिये उत्पत्ति नियन्त्रण द्वारा जनसंख्या की वृद्धि को रोकना चाहिये।

वाणिज्य पर प्रभाव डालने वाली भौगोलिक परिस्थितियाँ

प्राकृतिक							मानवी व सामाजिक			
जलवायु	स्थिति व अकार	बनावट	मिट्टी	नदियां	तटरेखा	प्राकृतिक सम्पत्ति	जाति	धर्म	शासन-प्रणाली	जनसंख्या
उत्पादन, यातायात, श्रम, उद्योग, व्यवसाय, भोजन व घर पर प्रभाव डालती है।	वाणिज्य तथा व्यापार सम्बन्धी प्रगति को नियंत्रित करते हैं।	मैदानों में घनी आबादी-कृषि यातायात और वाणिज्य की सुविधायें। पर्वतों पर अल्प जन-संख्या पर खनिज सम्पत्ति, वन-सम्पत्ति और जल-शक्ति।	वनस्पति का रूप और प्रकार इसी पर निर्भर रहता है।	यातायात के प्राकृतिक साधन। घाटियों को उर्वरा बनाने वाली जल विद्युत् के साधन नगरों के स्थापन की सुवि-धायें।	सपाट — बन्दरगाहों के लिये अयोग्य। कटीफटी-बन्दरगाहों के लिये सुविधा-जनक।	मछली पकड़ना, खान खोदना, लकड़ी काटना-	श्वेत जाति व्यापार-कुशल। पीत वर्ण जातियां प्रगति-शील। श्याम वर्ण जातियाँ कम सभ्य व अव-नत।	कुछ धंधों को प्रोत्साहन कुछ को निषेध। भक्ष्याभक्ष्य वस्तुओं का नियम। वस्तुओं के उपयोग पर नियंत्रण।	अच्छे शासन से व्यापार तथा उद्योगों-की प्रगति। बुरे शासन से व्यापार तथा उद्योग धंधों में कठिनाइयां।	कम संख्या वाले देशों में पशु-पालन। अधिक संख्या वाले देशों में कृषि व अन्य उद्योग-धंधे और शिल्प-व्यवसाय।

(२) दूसरे मतावलम्बी विचारकों के अनुसार संसार की जनसंख्या का उचित वितरण व वैज्ञानिक उपायों द्वारा भोज्य-पदार्थों का उत्पादन बढ़ाकर बढ़ती हुई जनसंख्या को खाना, कपड़ा व रहने का स्थान दिया जा सकता है।

(३) तीसरा समुदाय उन विचारकों का है, जो मनुष्य और विज्ञान की गुप्त शक्ति में विश्वास रखते हैं और कहते हैं कि भविष्य में सहारा व आर्कटिक प्रदेश उपजाऊ बन सकते हैं। कुछ लोगों का ख्याल है कि प्राकृतिक ईश्वरीय कृत्य द्वारा जनसंख्या का लोप हो सकता है। अतएव वे लोग इस समस्या के हल को ईश्वर पर छोड़ कर अलग बैठ जाते हैं।

परन्तु जनसंख्या की समस्या के विषय में चाहे कितने ही मतभेद क्यों न हों, एक बात नितांत सत्य है कि यदि इस जनसंख्या की बढोतरी का कोई हल न निकल सका तो संसार में प्रतिस्पर्धा, प्रवास व प्राकृतिक साधनों से पूर्ण कमजोर राष्ट्रों पर युद्ध के गहरे बादल हमेशा ही छाये रहेंगे। यही कारण है कि स्वीडन और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में रहन-सहन का स्तर बहुत ऊँचा है, जबकि भारत व चीन जैसे राष्ट्रों में जनता की दयनीय दशा है।

जनसंख्या की बढ़ोतरी ही एक समस्या नहीं है। दूसरी ओर उससे भी बड़ी समस्या इस वृद्धि में भेद का होना है। कहीं जनसंख्या की वृद्धि की दर कम है तो कहीं अधिक। एक ही देश में कुछ जातियों में जनसंख्या की बढ़ोतरी दूसरों की अपेक्षा अधिक रहती है। इससे आपस की प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और नये आर्थिक प्रश्न उठ खड़े होते हैं। अतएव इसका सर्वसम्मत व वैज्ञानिक हल खोज निकालना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्नावली

१. "किसी देश का रहन-सहन संयोग की बात नहीं, वरन् भौगोलिक परिस्थितियों का परिणाम है।" इस कथन को समझाइये।

२. "किसी देश के तट की रूपरेखा का वहाँ की व्यापारिक व औद्योगिक उन्नति पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है।" उदाहरण देते हुए इस उक्ति को स्पष्ट लिखिये।

३. 'उद्योग-धन्धों पर जलवायु का प्रभाव'—इस विषय पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

४. किसी देश के व्यवसाय व उद्योग-धन्धों पर जलवायु का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष क्या प्रभाव पड़ता है, इसे उदाहरण सहित समझाइये।

५. "किसी देश के व्यापार पर जाति, शासन-व्यवस्था और धर्म का बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ता है।" उदाहरण देते हुए इस वक्तव्य का समर्थन कीजिये।

६. "भारत की तीन प्रमुख नदियां खाद, जल व यातायात के साधन प्रदान करके मैदान को समृद्धिशाली बनाती हैं।" इस कथन को समझाइये और उन तीनों नदियों के नाम लिखिये।

७. जलवायु को निर्धारित करने वाली मुख्य दशाओं का निरूपण कीजिये और लिखिये कि भूमंडल के विभिन्न महाद्वीपों में वे बातें कहां तक लागू हैं ?

८. भौगोलिक परिस्थितियाँ जिनके मध्य मनुष्य रहता है, उसके चरित्र व व्यवसाय को निर्धारित करती हैं । भारत व जापान को उदाहरण रूप लेते हुए इस कथन को समझाइये ।

९. किसी देश की प्राकृतिक बनावट का वहां के व्यापार व खेती-व्यवसाय पर क्या असर पड़ता है ? समझाकर लिखिये ।

१०. निम्नलिखित पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये—

(१) आर्थिक भूगोल में प्राकृतिक बनावट का स्थान ।

(२) भौगोलिक स्थिति ।

११. "मनुष्य की परिस्थितियों में जलवायु के समान व्यापक असर और किसी का नहीं है ।" यह कथन कहाँ तक सत्य है ? उदाहरण सहित उत्तर लिखिये ।

१२. मानव-जीवन पर भूमि और जलवायु के प्रभाव को समझाकर लिखिये ।

१३. किसी देश या प्रदेश में जनसंख्या का घनत्व किन बातों पर निर्भर रहता है ? समझाकर लिखिये ।

अध्याय :: दो

जलवायु तथा भौगोलिक प्रदेश

संसार के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की जलवायु विभिन्न है। कुछ देशों की जलवायु शुष्क तो कुछ की तर है; कुछ की सम, तो बहुत से देशों की समुद्र के प्रभाव से दूर होने के कारण अति विषम है; कहीं गर्मी अधिक पड़ती है तो कहीं अति शीत। इसी विभिन्नता के कारण आर्थिक उत्पादन भी प्रभावित होता है। और यह स्पष्ट है कि अच्छी जलवायु के ही कारण कुछ प्रदेश अन्य देशों की अपेक्षा अधिक उन्नति कर गये हैं। फिर भी यह देखा जाता है कि संसार के एक भाग की जलवायु, पशु-पक्षी, वनस्पति और उद्योग-धंधे तुलना करने पर किसी अन्य दूरस्थ प्रदेश के समान पाये जाते हैं और उसी के आधार पर उनका नाम भी पड़ जाता है। अतः जलवायु और उत्पादन के विचार से समस्त भूमण्डल को कुछ प्राकृतिक अथवा भौगोलिक प्रदेशों (Natural Regions) में विभाजित किया जा सकता है।

भौगोलिक प्रदेश का आशय—जलवायु और जलवायु सम्बन्धी प्रभोगों के वर्गीकरण की एक योजना डा० वाल्डीमीर कोपेन ने निकाली थी, वही आज भी प्रयोग में आ रही है। कोपेन के अनुसार संसार को जलवायु के अनुसार ५ प्रदेशों में बांटा जा सकता है। ये प्रदेश वनस्पति प्रभागों से मिलते-जुलते हैं। पांच जलवायु प्रदेश निम्नलिखित हैं—

(१) उष्ण कटिबंधीय तर जलवायु जिसमें जाड़े के मौसम का अभाव रहता है।

(२) शुष्क जलवायु जिसने खेती के लिए वर्षा अपर्याप्त रहती है।

(३) अधिक ताप जलवायु जिसमें जाड़े का मौसम कम सर्द तथा वर्षा काफी होती है।

(४) निम्न ताप जलवायु जिसमें जाड़े का मौसम खूब सर्द तथा वर्षा काफी होती है।

(५) ध्रुवीय जलवायु जिसमें गर्मी के मौसम का अभाव रहता है।

इन पाँच प्रधान प्रदेशों को निम्नलिखित उपविभागों में बांटा जा सकता है।

उष्ण कटिबंधीय— (अ) उष्ण कटिबंधीय वनप्रदेश।

(ब) उष्ण कटिबंधीय सवाना प्रदेश।

शुष्क—(अ) स्टेपी प्रदेश (निम्न अक्षांशीय और मध्य अक्षांशीय)।

(ब) रेगिस्तान (निम्न अक्षांशीय और मध्य अक्षांशीय)।

अधिक ताप—(अ) भूमध्यसागरीय।

(ब) तर उपोष्णीय।

(स) पश्चिमी समुद्रतटीय।

निम्नताप— (अ) तर महाद्वीपीय (लम्बी और छोटी गर्मी की ऋतु वाली)
(ब) अर्द्ध आर्कटिक।
ध्रुवीय— (अ) ध्रुवीय बर्फिस्तान।
(ब) टुन्ड्रा।

प्रोफेसर हर्बर्टसन का मत है कि भौगोलिक प्रदेश पृथ्वी के धरातल के वे भाग हैं जिनमें मानव-जीवन पर प्रभाव डालने वाली भौगोलिक विशेषतायें एक ही प्रकार की होती हैं और इसके फल-स्वरूप प्रत्येक भौगोलिक प्रदेश की जलवायु, वनस्पति और रहन-सहन का ढंग एक ही समान होता है। परन्तु इसका यह आशय नहीं कि भौगोलिक प्रदेशों के एक ही वर्ग में रखे जाने से उनकी सभी बातें एक समान होंगी।

सच तो यह है कि दूरस्थ दो पृथक्-पृथक् क्षेत्रों की भौगोलिक दशाये पूर्णतया एक-सी तो हो ही नहीं सकतीं। इसलिए भौगोलिक प्रदेशों का वर्गीकरण, जिसका मुख्य आधार जलवायु है, केवल अधिक-से-अधिक समानता का द्योतक है। दो प्रदेशों को एक ही वर्ग में रखने का आशय केवल यह है कि उनमें भेदों की अपेक्षा पारस्परिक समानता अधिक है। इस सिलसिले में एक और बात ध्यान देने योग्य है। किसी भौगोलिक प्रदेश की सीमायें न तो निश्चित ही होती हैं और न देशों की राजनीतिक सीमाओं पर ही आश्रित होती हैं। एक प्रदेश से दूसरे में अन्तर क्रमशः होता है, न कि एकदम।

इसलिए, प्राकृतिक विभागों के बारे में चर्चा करते समय निम्नलिखित चार बातों का ध्यान रखना चाहिये:—

(१) दो दूर स्थित प्रदेशों में प्राकृतिक दशायें कभी भी एक-सी नहीं हो सकतीं। इसलिए एक वर्ग में रक्खे गये विभिन्न भागों की सभी बातें समान नहीं हो सकतीं।

(२) प्राकृतिक विभागों के वर्गीकरण में विशेषकर जलवायु के आधार पर किये गये विभाजन में विभिन्न प्रदेशों के शामिल करने का मतलब केवल इतना ही है कि उनके बीच अन्तर की अपेक्षा समानताएँ अधिक हैं।

(३) किसी प्राकृतिक विभाग की सीमाएं कभी भी दृढ़ या स्थायी नहीं हो सकतीं। वास्तविक सीमायें केवल अनुमान मात्र होती हैं क्योंकि एक प्राकृतिक विभाग से दूसरे विभाग में अन्तर क्रमशः होता है। ऐसा कभी भी नहीं होता कि एक प्राकृतिक विभाग की विशेषताएँ उसकी सीमा पर बिल्कुल खतम हो जायें और दूसरे विभाग की विशेषताएँ एकदम से शुरू हो जायें।

(४) प्राकृतिक विभागों का विस्तार राजनीतिक सीमाओं से बिल्कुल भिन्न होता है। इस प्रकार एक ही राजनीतिक इकाई में कई प्राकृतिक विभाग हो सकते हैं।

भौगोलिक प्रदेशों का महत्त्व—भौगोलिक प्रदेशों का अध्ययन बड़े महत्त्व का है। इसके द्वारा हमें यह पता चलता है कि एक ही प्रकार के प्रदेशों में समान आर्थिक उन्नति व उपज होनी चाहिए। इस ज्ञान के आधार पर अविकसित प्रदेशों

का विकास किया जा सकता है। इण्डोनेशिया, ब्राजील, कोलम्बिया आदि इसी तरह के भौगोलिक प्रदेश के अन्तर्गत आते हैं। अतः स्पष्ट है कि यदि ब्राजील में रबर होता है तो इण्डोनेशिया में भी हो सकता है। वास्तव में ३० वर्ष पूर्व ब्राजील और कांगो बेसिन ही रबर के मुख्य केन्द्र थे, पर इसी ज्ञान के आधार पर इण्डोनेशिया और मलाया में भी रबर के पौधे लगाये गये और आज संसार का ९० प्रतिशत रबर वहीं से आता है। यह है भौगोलिक प्रदेशों के ज्ञान व अध्ययन से लाभ।

भूमंडल के प्रमुख भौगोलिक प्रदेश—संसार के प्रमुख भौगोलिक प्रदेश निम्नलिखित हैं :—

१. उष्ण कटिबंधीय भूभागों में—

(अ) भूमध्यरेखीय आर्द्रवन अथवा अमेजन प्रदेश।

(ब) मानसूनी अथवा सूडान-तुल्य प्रदेश।

(स) पश्चिमी मरुस्थल अथवा सहारा-तुल्य प्रदेश।

(द) उच्च समभूमि अथवा बोलीविया-तुल्य प्रदेश।

२. उष्णतर शीतोष्ण कटिबंधीय भागों में—

(अ) पश्चिमी तटवर्ती अथवा भूमध्यसागरीय प्रदेश।

(ब) पूर्वी तटवर्ती अथवा चीन-तुल्य प्रदेश।

(स) आन्तरिक निम्न प्रदेश अथवा तूरान-तुल्य प्रदेश।

(द) आन्तरिक उच्च प्रदेश अथवा ईरान-तुल्य प्रदेश।

३. शीत्र-शीतोष्ण कटिबंधीय भागों में—

(अ) शीतोष्ण महासागरीय अथवा पश्चिमी योरोप-तुल्य प्रदेश।

(ब) पूर्वी तटवर्ती अथवा सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेश।

(स) आन्तरिक निम्न प्रदेश अथवा साईबेरिया-तुल्य प्रदेश।

(द) आन्तरिक उच्च प्रदेश अथवा अल्टाई-तुल्य प्रदेश।

४. शीत कटिबंधीय अथवा ध्रुवीय भूभाग।

१. (अ) **भूमध्यरेखीय आर्द्रवन अथवा अमेजन तुल्य प्रदेश**—यहाँ की **जलवायु की विशेषता है**—उच्च तापक्रम, न्यून तापांतर और वर्ष भर घोर जलवृष्टि। आकाश में सूर्य का स्थान ऊँचा रहने से तापक्रम भी उच्च रहता है। अधिक ताप के कारण वायु फैलकर ऊपर उठती है और ठंढी हो जाती है। इस प्रकार द्रवीभवन बराबर होता रहता है और इसी क्रिया के फलस्वरूप जलवृष्टि भी होती रहती है। फलतः हवा में आर्द्रता रहती है और दिन-रात ताप का अन्तर वार्षिक तापांतर से कहीं अधिक रहता है। इस प्रकार की जलवायु भूमध्यरेखा के दोनों ओर १०° तक पाई जाती है। इसमें अमेजन और कांगो की तलहटियाँ, मलाया, इण्डोनेशिया और दक्षिणी अमरीका में कोलम्बिया के तटीय मैदान सम्मिलित हैं। इन प्रदेशों में **सघन वनस्पति** पाई जाती है और भाँति-भाँति के विशाल वृक्षों की शाखायें फैली

रहने से नीचे अँधेरा छाया रहता है। इसलिए इन प्रदेशों को संध्या के प्रकाश का प्रदेश (Land of Twilight) भी कहते हैं।

पिनांग (द०° पू० एशिया) ऊँचाई २३ फीट

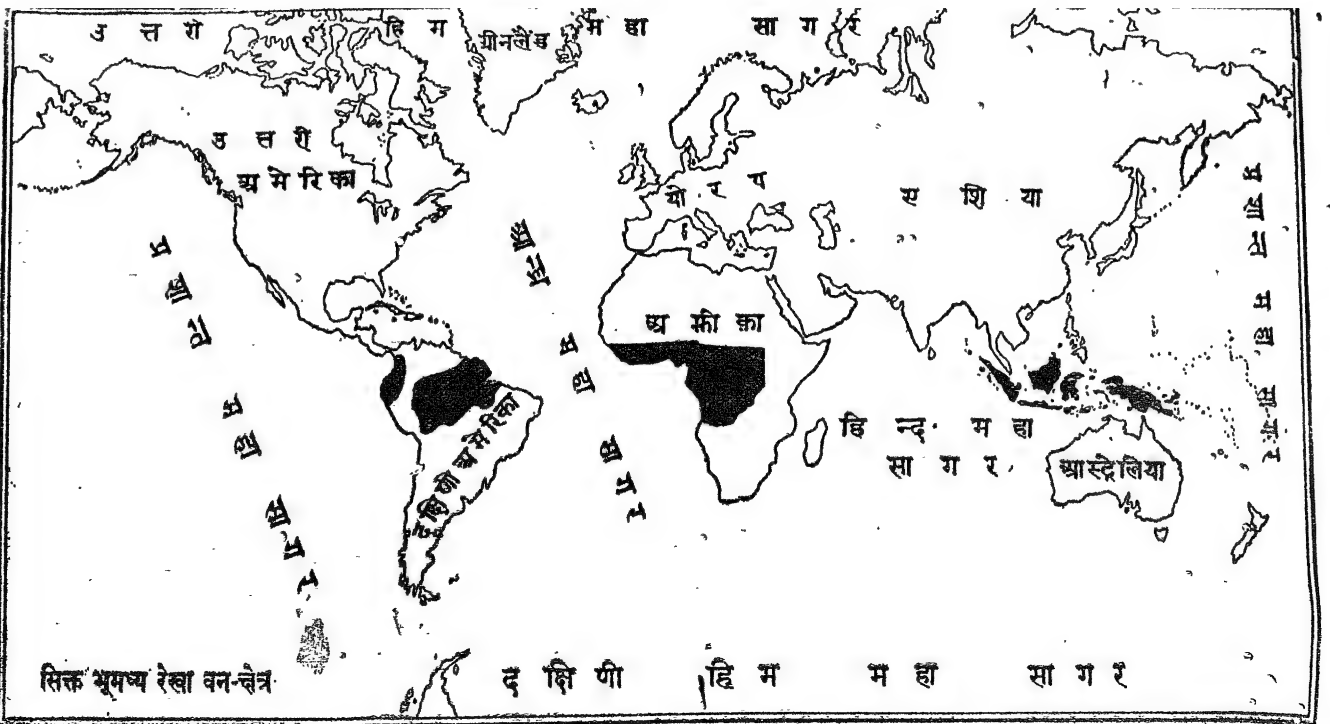
	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून
ताप	७९·७°	८०·१°	८१·३°	८१·७°	८१·५°	८०·६०
वर्षा	३·९"	३·०"	४·७"	७·८"	११·०"	७·२"

	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर	दिसम्बर
ताप	८०·२"	७९·९°	७९·५°	७९·७°	७९·२°	७८·८°
वर्षा	८·९"	१२·८"	१९·०"	१६·१"	१०·९"	४·८"

खनिज पदार्थ, वनस्पति व पशु-पक्षी—इन भागों में वैसे तो प्रायः जंगल ही पाये जाते हैं पर कहीं-कहीं बहुमूल्य खनिज पदार्थ भी उपलब्ध होते हैं। मलाया प्रायद्वीप और इण्डोनेशिया में टीन; मेडागास्कर और लंका में ग्रेफाइट; गोल्ड-कोस्ट में बॉक्साइट और उत्तरी रोडेशिया में ताँबा पाया जाता है। केले, काठ, मसाले, रबर, कोको, कई प्रकार की लकड़ी और हाथीदांत इन प्रदेशों की मुख्य उपज हैं। बांस के वृक्ष भी खूब पाये जाते हैं। परन्तु इन जंगलों से अन्य बहुत-सी वस्तुएँ प्राप्त की जाती हैं जिनमें मुख्य मसाले, गटापार्चा, ताड़, नारियल, कहवा, साबूदाना, केला, राल, लाख, हड़, बहेड़ा-आंवला तथा कई तरह की गोंद है। आज, कल कुछ दिनों से इन सभी वस्तुओं में व्यापार शुरू हो गया है।

इन प्रदेशों के जंगल घने होने के कारण और जमीन पर कीचड़ व सड़ी-गली वनस्पति होने के कारण यहाँ पर पाये जाने वाले अधिकतर पशु उड़ने या पेड़ों के ऊपर कूदने-फाँदने की योग्यता रखते हैं। इनमें बन्दर व साँप मुख्य हैं। इनके अलावा हाथी, चीते, बाघ और गेंडे भी पाये जाते हैं। जहरीले कीड़े-मकोड़े भी बहुलता से पाये जाते हैं।

निवासी व रहन-सहन—इन प्रदेशों के विकास में बड़ी गम्भीर बाधायें हैं और इसीलिए सभ्यता के विकास का प्रभाव यहाँ के निवासियों पर नहीं पड़ा है और उनके रहन-सहन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। यहाँ की आवश्यकतायें



चित्र ४—भूमध्यरेखीय प्रदेशों का विस्तार—अमेजन का बेसिन मुख्य है ।

भी कम हैं और फिर बिना प्रयास ही भोजन की वस्तुएँ प्रचुरता से प्राप्त हो जाती हैं। गर्मी के अधिक होने से वस्त्र और घर की भी कोई विशेश चिन्ता नहीं है। फलतः यहाँ के निवासी स्वभावतया आलसी होते हैं। उनका कद नाटा व बुद्धि मन्द होती है। कष्टप्रद व खराब जलवायु के कारण इन प्रदेशों में रोग बहुत होते हैं। साथ-साथ सघन-वन, खाद्य-पदार्थों का अभाव और अनुपयोगी पशुओं के कारण इन प्रदेशों का जीवन पिछड़ा हुआ है। ये लोग भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं और शिकारी होते हैं। गमनागमन के साधनों का भी अभाव है। दलदली भूमि तथा घने वनों के कारण सड़कों व रेलों का बनना नामुमकिन है। केवल नदियों के द्वारा ही आना-जाना होता है।

सुदूरपूर्व के भागों में यातायात के उन्नत साधन हैं। भूमध्यरेखीय प्रान्तों में केवल यहीं की तटरेखा लम्बी है। सुमात्रा और जावा में नाव चलाने योग्य नदियाँ हैं जो समुद्र से आंतरिक भागों के मिलाती हैं। मलाया और जावा में रेलों व सड़कों का अच्छा विकास हुआ है। इस प्रकार अनुकूल परिस्थिति के कारण इन प्रदेशों के व्यापार और उद्योग-धन्धों में बड़ी उन्नति हुई है। यहाँ गन्ना और रबर का बहुत उत्पादन होता है।

भूमध्यरेखीय वन-प्रदेशों की प्रमुख निर्यात वस्तुएँ

क्षेत्र व प्रदेश	प्रमुख निर्यात वस्तुएँ	निर्यात के बन्दरगाह
दक्षिणी अमरीका	रबर, लकड़ी, चीनी, केला, कहवा, नारियल, तांबा।	पारा, वाहिया, परनम्बुको, पारामेरिवो, जार्जटाउन।
अफ्रीका	तांबा, सोना, रबर, लकड़ी, नारियल का तेल, गोला।	लागोस, अकरा, फ्री टाउन।
एशिया	रांगा, रबर, मिर्च, गोला, अनन्नास, कहवा, चीनी।	सिंगापुर।

१. (ब) **मानसूनी तथा सूडान-तुल्य जलवायु के प्रदेश**—इस जलवायु के प्रमुख क्षेत्र हैं—भारतवर्ष, पूर्वी पाकिस्तान, ब्रह्मा, थाइलैण्ड, इण्डोचीन, फिलीपाईन द्वीप, दक्षिणी चीन, मध्य अमरीका, पश्चिमी द्वीपसमूह, कैरिबियन सागर के तटीय प्रदेश (वेनेजुला और कोलम्बिया), पूर्वी अफ्रीका का तटीय प्रदेश, मैडागास्कर, क्वीन्सलैण्ड और उत्तरी आस्ट्रेलिया के तटीय प्रदेश। साधारणतया यह देखा जाता है कि इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश प्रायः महाद्वीपों के पूर्वी भागों में स्थित हैं।

जलवायु—वर्षभर उच्च तापक्रम और गर्मी के मौसम में भारी जलवृष्टि इस प्रदेश की विशेषतायें हैं। गर्मी के मौसम में ये प्रदेश गर्म हो जाते हैं और वायु

हल्की होकर ऊपर को उठती है। इनके स्थान को भरने के लिये समुद्र की ओर से ठंडी हवायें आती हैं और वर्षा करती हैं। इन्हें मानसून या मौसमी हवायें कहते हैं। जाड़े में हवायें थल से समुद्र की ओर चलने लगती हैं और शुष्क होने के कारण वर्षा नहीं करतीं।

वर्षा का वितरण भू-प्रकृति पर निर्भर रहता है। जहाँ मानसून हवाओं के मार्ग पर पर्वत श्रेणियाँ स्थित हैं वहाँ उनसे टकरा कर अधिक जलवृष्टि करते हैं। चेरापूँजी, आसाम के शिलांग श्रेणी की तलहटी में स्थित है और वहाँ संसार में सबसे अधिक वर्षा—करीब ५०० इंच होती है।

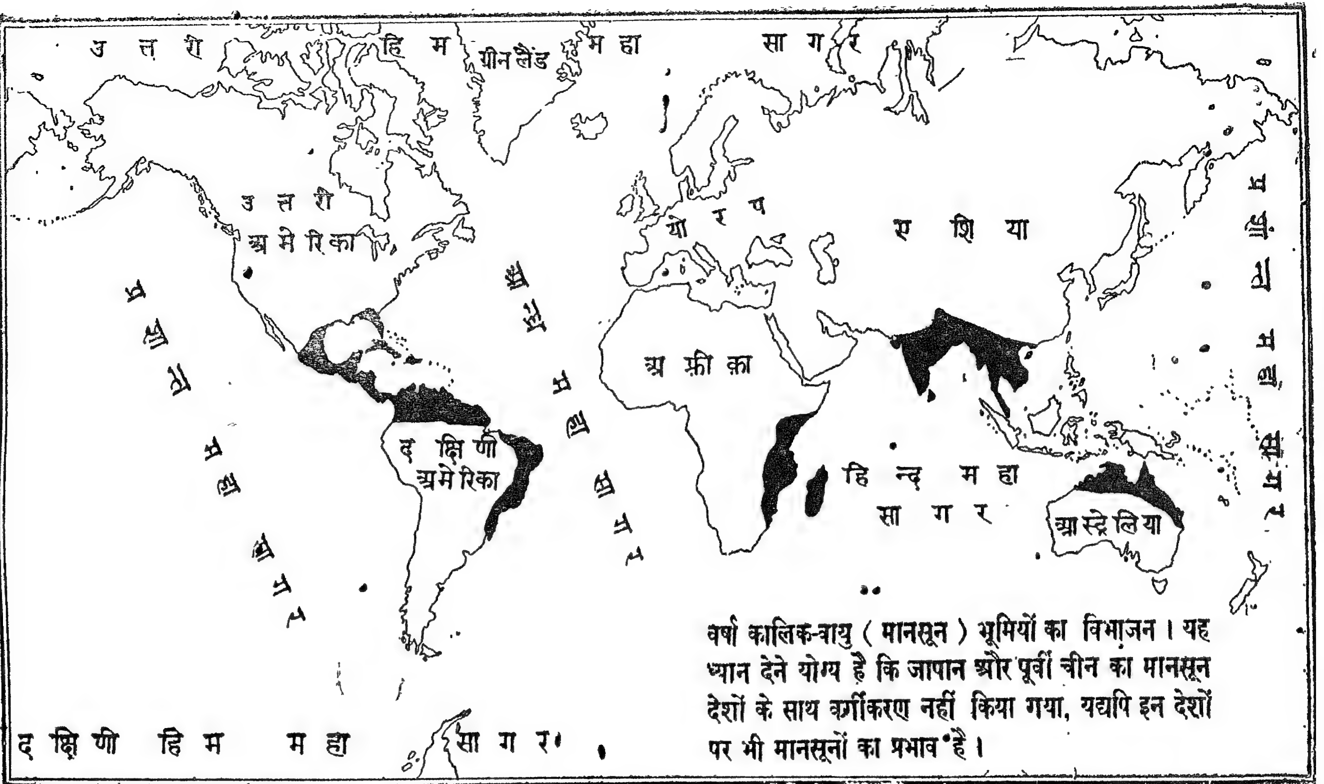
वनस्पति—यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति में ज्यादा वर्षा वाले भागों में वन और कम वर्षा वाले भागों में घास के मैदान पाये जाते हैं। इन वनों के पत्ते गर्मी की ऋतु में झड़ जाते हैं पर खूब वर्षा वाले भागों में ये साल भर हरे-भरे रहते हैं। इनमें पाये जाने वाले वृक्षों में सागौन, साल, चन्दन के वृक्ष मुख्य हैं। इसके अलावा लाख, गोंद और कपूर इन वनों की अन्य महत्त्वपूर्ण उपज हैं। बाँस भी इन प्रदेशों में बहुतायत से पाया जाता है। सागौन और साल ब्रह्मा, इण्डोचीन, थाइलैण्ड और जावा में तथा लाख व गोंद वाले वृक्ष भारत में पाये जाते हैं।

निवासी व रहन-सहन—इन प्रदेशों के निवासियों का मुख्य उद्यम कृषि-कार्य है। ताड़, बांस, कठोर काठ, चावल, मक्का, बाजरा, गन्ना और कपास सारे ही प्रदेश में उत्पन्न होते हैं। कहवा, चाय, कोको, तम्बाकू, नील, सिनकोना, जूट, रबर, तिलहन और दालें इस प्रदेश की अन्य मुख्य फसलें हैं। **परन्तु इन प्रदेशों में मनुष्य की उन्नति वर्षा पर निर्भर है।** यदि जलवृष्टि न हो तो कृषि-कार्य नहीं हो पाता। उपज मारी जाती है, अकाल पड़ जाते हैं। वर्षा का समय व मात्रा दोनों ही इतनी अनिश्चित हैं कि भारतवासी नितान्त भाग्यवादी हो गये हैं।

मानसूनी जलवायु प्रदेश (इलाहाबाद)
आन्तरिक स्थिति; ऊँचाई—३०९ फीट—२५·२८ अक्षांश और ९१·४५° देशांतर

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	५९·५°	·७″	जुलाई	८४·५°	११·४″
फरवरी	६४·९°	·५″	अगस्त	८५·२°	११·२″
मार्च	७६·८°	·३″	सितम्बर	८३·३°	६·०″
अप्रैल	८७·६°	·१″	अक्तूबर	७७·६°	२·२″
मई	९२·५°	·३″	नवम्बर	६७·५°	·२″
जून	९०·८°	४·५″	दिसम्बर	५९·८°	·२″

सालाना : ताप ७७·३° वर्षा : ३७·५″



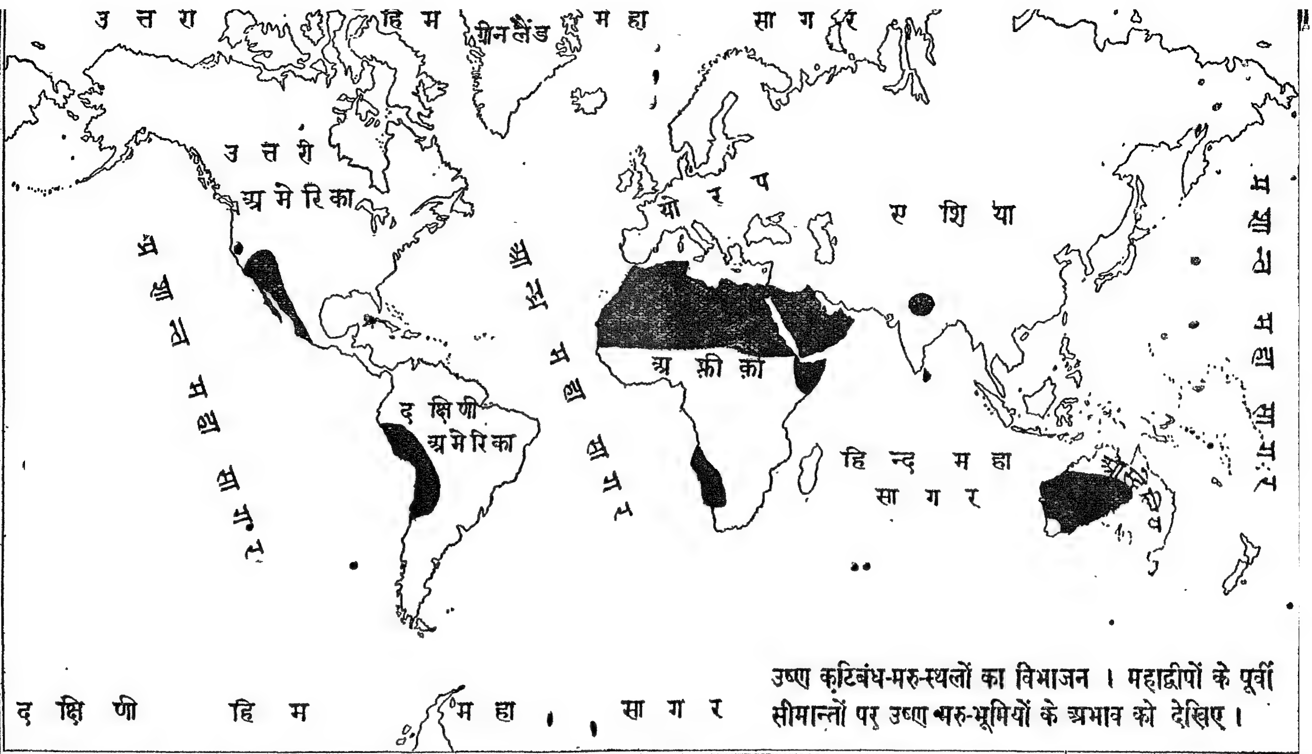
चित्र ५—मानसूनी प्रदेश—जापान और उत्तरी पूर्वी चीन मानसूनी पवनों के प्रभाव में होते हुए भी मानसूनी प्रदेश नहीं हैं। कारण उत्तरी अक्षांशों में होने के कारण शीत की अधिकता है।

जनसंख्या की अधिकता के कारण इन देशों में पशुचरण उद्योग का विकास नहीं हुआ है, कारण इसके लिए विस्तृत भूमि की आवश्यकता होती है। अभी कुछ थोड़े समय से ब्रह्मा, भारत और चीन में लोगों का ध्यान खनिज पदार्थों की ओर गया है। रही उत्तरी आस्ट्रेलिया की बात, सो वहाँ की उपज हैं—नारियल, चावल, केला और कपास। इस भाग में कृषि-कार्य का विकास किया जा सकता है। परन्तु जलवायु अनुकूल न होने से श्वेत जातियाँ वहाँ निवास नहीं कर सकतीं। दूसरे आस्ट्रेलिया सरकार की White Australia नीति के फलस्वरूप एशियाई श्रमजीवी व मजदूर भी नहीं जा सकते।

१. (स) **पश्चिमी मरुस्थल अथवा सहारा-तुल्य प्रदेश**—भूमंडल के उष्ण मरुस्थल उष्ण कटिबन्ध में कर्क और मकर रेखाओं के समीप महाद्वीपों के पश्चिमी भाग में फैले हुए हैं। इन मरुस्थलों में अफ्रीका का सहारा, अरब, भारतवर्ष का थार, संयुक्त राष्ट्र अमरीका का कोलोरैडो, दक्षिणी अमरीका का पीरूवियन और अटाकामा और पश्चिमी आस्ट्रेलिया का विशाल मरुस्थल शामिल हैं। इस प्रकार देखा जाय तो पता चलेगा कि पृथ्वी के धरातल का एक-चौथाई भाग मरुस्थल से घिरा हुआ है।

जलवायु—इन प्रदेशों की मुख्य विशेषता है जलवृष्टि की कमी। वर्षभर में औसतन केवल दो इंच वर्षा होती है। आसमान में बादल तो दिखाई ही नहीं पड़ते और बराबर सूर्य का तीव्र प्रकाश रहता है। गर्मी के मौसम में घोर गर्मी और जाड़े के मौसम में तापक्रम बहुत नीचा रहता है। दिन की अपेक्षा रातें ज्यादा ठंडी होती हैं। परन्तु समुद्र तट के मरुस्थलों में दशायें इतनी कठिन नहीं होतीं। पीरू, उत्तरी चिली, कालाहारी (पश्चिमी अफ्रीका), सहारा के मोरक्को प्रान्त, सोमालीलैण्ड और उत्तरी पश्चिमी मैक्सिको के मरुस्थलों पर तटीय ठंडी जलधाराओं का गहरा प्रभाव पड़ता है। तटवर्ती प्रदेशों में औरों की अपेक्षाकृत १०° की कमी हो जाती है।

आर्थिक महत्त्व व विशेष उपज—इन प्रदेशों की जलवायु तो अस्वास्थ्यकर नहीं होती परन्तु रेत की आंधियों के कारण यात्रा में बाधा पड़ती है। अतः मरुस्थलों का कोई विशेष महत्त्व नहीं—वे न केवल स्वयं अगम्य होते हैं बल्कि अपने सन्निकट देशों की उन्नति में भी बाधक होते हैं। पानी की कमी के कारण कोई विशेष वनस्पति नहीं होती। कांटेदार झड़ियाँ ही प्रायः कहीं-कहीं पायी जाती हैं। ताड़, खजूर और अंजीर के वृक्षों के सहारे ही यहां के लोग अपना बसर करते हैं। जहां सिंचाई हो सकती है वहाँ कपास, गन्ना, गेहूँ, बाजरा, लम्बी जड़ और मोटा पत्ती वाले फलों की खेती की जाती है। पशुपालन और खजूर, नमक और चमड़े की वस्तुओं में व्यापार यहाँ के लोगों के अन्य धंधे हैं। ये प्रदेश कमी के कारण बड़े ही कष्टप्रद हैं और यहाँ के निवासी दूर-दूर पर छितरे मरुद्यानों में ही रहते हैं और ऊँट, घोड़े व बकरी पालते हैं। परन्तु इन प्रदेशों के निवासी निर्भीक, चिन्ता-रहित और अतिथि-सेवक होते हैं।



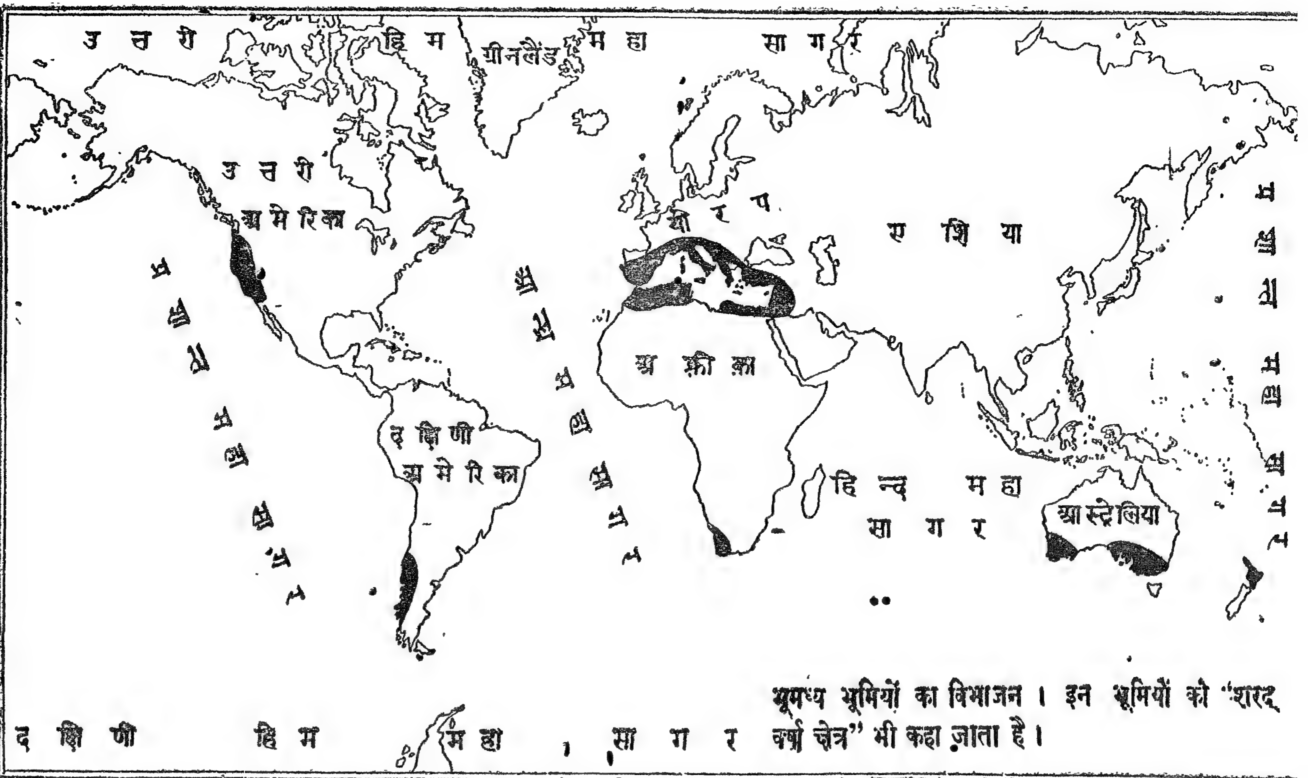
चित्र ६—कर्क रेखाओं के अन्तर्गत मरुस्थलों का वितरण—महाद्वीपों के पूर्वी भाग में गर्म रेगिस्तानों का अभाव है

कुछ मरुस्थलों में—विशेषकर दक्षिणी गोलार्द्ध में—बहुमूल्य खनिज पाये जाते हैं। पीरू की पतली तटीय पट्टी में तेल, चिली के अटकामा मरुस्थल में शोरा और तांबा, अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल में हीरे, पश्चिमी आस्ट्रेलिया की कालगूर्ली और कूलगार्डी में सोना तथा न्यू-साउथ-वेल्स के मरुस्थल में सीसा और जस्त पाया जाता है। इसी प्रकार सहारा में नमक, कोलेरैडो में सोना और ईराक में तेल निकाला जाता है। इन सभी स्थानों पर इंगलैण्ड व अमरीका की पूंजी की सहायता से विकास हो रहा है और सबसे पहला ध्येय जल की कठिन समस्या को हल करना है। पश्चिमी आस्ट्रेलिया की खानों के लिये पानी पर्थ बन्दरगाह से नलों द्वारा लाया जाता है और चिली के अटाकामा मरुस्थलों में भी पानी ऐंडीज पर्वत के जलाशयों से नलों द्वारा लाया जाता है।

१. (द) **उच्च समभूमि अथवा बोलीविया-तुल्य प्रदेश**—इस प्रकार की जलवायु बोलीविया और तिब्बत के पठारों पर पाई जाती है। यद्यपि ऊंचाई के अनुसार विभिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायु पायी जाती है, अतएव खेती की उपज में भी भिन्नता पाई जाती है। ऐंडीज पर्वत के ढालों पर गेहूं, गन्ना, मक्का तथा फल उगते हैं और हिमालय के ढालों पर चाय की उपज होती है। तिब्बत का अधिकतर भाग हिमाच्छादित है परन्तु नदियों की उपत्यकाओं में कृषि-कार्य और फलों का उत्पादन होता है। निम्न भागों में याक, बैल, गधे, भेड़ आदि पशु पाले जाते हैं।

शीतोष्ण कटिबंधीय जलवायु

२. (अ) **भूमध्यसागरीय प्रदेश**—इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश भूमध्यसागर के तटवर्ती भागों में पाये जाते हैं। स्पेन, पुर्तगाल, दक्षिण फ्रांस, इटली, यूगोस्लाविया, बाल्कान प्रदेश, सीरिया और उत्तरी अफ्रीका की जलवायु के केन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के प्रशान्त महासागर के तटवर्ती प्रदेश (कैलिफोर्निया और मध्य चिली), दक्षिणी अफ्रीका का धुर दक्षिण-पश्चिमी भाग और दक्षिण-पश्चिमी व दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड का उत्तरी भाग इसी प्रकार के अन्य प्रदेश हैं। महाद्वीपों के पूर्व में जिन अक्षांशों के बीच मानसूनी प्रदेश स्थित हैं, उन्हीं अक्षांशों के भीतर पश्चिमी भागों में भूमध्यसागरीय जलवायु पाई जाती है।



चित्र ७—भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रमुख प्रदेश—इन्हें शीतकालीन वर्षा के प्रदेश भी कहते हैं

जिब्राल्टर (भूमध्यसागरीय)—तटीय स्थिति—ऊँचाई ५३ फीट

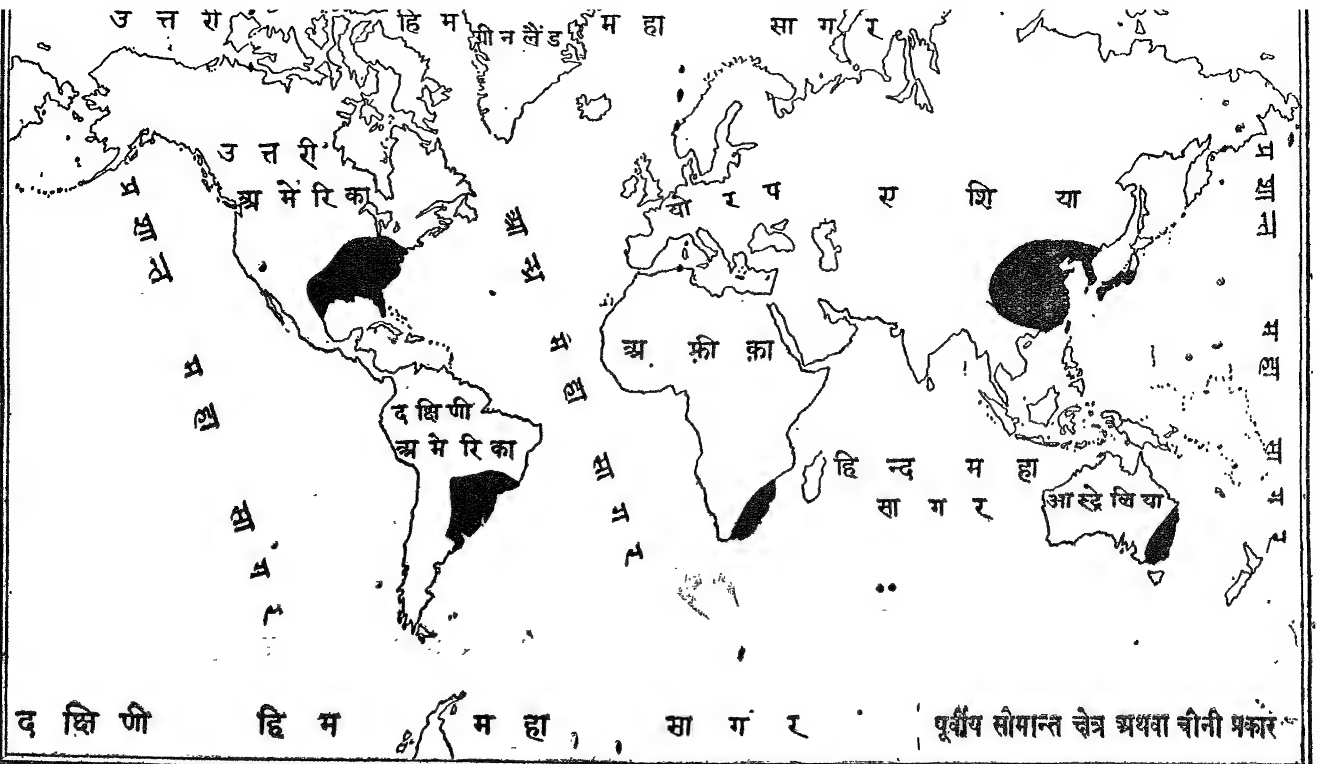
मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	५५°	५·१″	जुलाई	७३·४°	०·४″
फरवरी	५५·९°	४·२″	अगस्त	७४·९°	०·१″
मार्च	५७·४°	४·८″	सितम्बर	७२·०°	१·४″
अप्रैल	६०·६°	२·७″	अक्तूबर	६५·७°	३·३″
मई	६४·७°	१·७″	नवम्बर	६०·५°	६·४″
जून	६९·५°	०·५″	दिसम्बर	५६·२°	५·५″
सालाना		ताप : ६३·७°		वर्षा : ३५·७″	

जलवायु—इन प्रदेशों में जाड़े का मौसम कम ठण्डा व जलवृष्टिपूर्ण होता है और गर्मी का मौसम गर्म व सूखा होता है। गर्मी में आकाश साफ व मेघ-रहित होता है। सालाना वर्षा करीब-करीब २०″-३०″ तक होती है। एक और ध्यान देने योग्य बात है। प्रायः इन प्रदेशों के एक ओर पहाड़ हैं। इसलिए जहाँ पहाड़ नहीं होते वहाँ जलवृष्टि का अभाव-सा होता है और मरुस्थल के समान दशायें पाई जाती हैं।

वास्तव में यहाँ की जलवायु, विशेषकर शीतकाल में, बड़ी रमणीक होती है और इसका आनन्द लेने के लिये बहुत से यात्री आते हैं।

वनस्पति और उपज—यहाँ पर वनस्पति साल भर उगती रहती है। जैतून (Olive) यहाँ का विशेष पौधा होता है जो साल भर उगता रहता है। बलूत, अखरोट और शहतूत के पेड़ यहाँ के अन्य मुख्य पेड़ हैं। पर यह प्रदेश फलों के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध है। नारंगी, नीबू, आडू, खुबानी, अंजीर आदि फल यहाँ पर बहुतायत से होते हैं और इनकी संसार के भिन्न-भिन्न देशों में बड़ी माँग रहती है। खाद्य अनाजों में गेहूँ और जौ मुख्य हैं जो शीतकाल में उत्पन्न होते हैं। प्रायः सभी भूमध्यसागराय प्रदेशों में अंगूर की उपज होती है परन्तु केवल फ्राँस, इटली, पुर्तगाल और स्पेन में ही शराब बनाने का काम होता है। स्पेन और कैलिफोर्निया से ताजे अंगूर बाहर भेजे आते हैं। एशिया माईनर और कैलिफोर्निया से अंगूरों को सुखा कर मुनक्का और किशमिश के रूप में बाहर भेजा जाता है। एशिया माईनर अंजीर के लिये भी प्रसिद्ध है।

पशु-पालन और रेशम-उद्योग—यहाँ की जलवायु खाद्यानों के लिये अनुकूल है। इसलिये जीविका के लिये कठोर संघर्ष नहीं करना पड़ता, साधारण परिश्रम से ही पेट भर जाता है। अनुकूल परिस्थिति में घोड़े, चौपाये, भेड़, सूअर, गधे, खच्चर और बकरियाँ आदि जानवर पाले जाते हैं। फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में कल-कारखानों का बड़ा विकास हुआ है। शहतूत के वृक्षों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं और रेशम का उद्योग बहुत उन्नत है।



चित्र ८—उष्ण शीतोष्ण पूर्व-तटीय जलवायु वाले प्रदेश

२. (ब) **पूर्वीय तटवर्ती अथवा चीन-तुल्य-प्रदेश**—इस प्रदेश के मुख्य भाग महाद्वीपों के पूर्वी तटों पर उन्हीं अक्षांशों के बीच स्थित है जिनके मध्य पश्चिमी तटों पर भूमध्यरेखीय जलवायु के प्रदेश पाये जाते हैं। उत्तरी और मध्य चीन, पश्चिमी कोरिया, दक्षिणी जापान, संयुक्त राष्ट्र का पूर्वी भाग (आयोवा, मिसौरी, अरकसांस, पूर्वी टेक्सास, और गल्फ तट), दक्षिणी-पूर्वी ब्राजील, युरुगवे, दक्षिण अफ्रीका संघ का दक्षिण-पूर्वी तटीय भाग, न्यूसाउथवेल्स का तटीय भाग और दक्षिणी क्वींसलैण्ड इस प्रकार की जलवायु के प्रदेश हैं।

जलवायु—जाड़े के मौसम में कड़ी सर्दी और गर्मी के मौसम में जलवृष्टि इन प्रदेशों की जलवायु की मुख्य विशेषता है।

वनस्पति, उपज और जीवन—यहाँ के मूल्यवान वृक्ष हैं—पोपलार, चीड़, अखरोट, वालनट, बीच, मेगनोलिया और ओक। प्रमुख खेतिहर उपजें हैं—मक्का, बाजरा, दालें, चावल, ट्रील, तम्बाकू, कपास, कपूर, चाय, केला, नारंगी और कहवा।

एशियाई देशों में जनसंख्या घनी है और पशु-संख्या थोड़ी है। इसलिये वहाँ खेती ही मुख्य उद्यम है। परन्तु युरुगवे, ब्राजील और दक्षिणी अफ्रीका में पशु-पालन उद्योग का महत्वपूर्ण विकास हुआ है। इसके विपरीत जापान तथा दक्षिण संयुक्तराष्ट्र में मिलों व फैक्टरियों की विशेष उन्नति हुई है।

हैंकाउ (चीन) आन्तरिक स्थिति—ऊँचाई ११८ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३०·६°	२·१″	जुलाई	८२·९°	८·६″
फरवरी	४१·५°	१·१″	अगस्त	८३·३°	४·६″
मार्च	४८·२°	२·८″	सितम्बर	७४·८°	२·२″
अप्रैल	६१·२°	४·८″	अक्तूबर	६५·१°	३·९″
मई	७०·९°	५·०″	नवम्बर	५३·१°	१·१″
जून	७७·९°	७·०″	दिसम्बर	४२·६°	०·६″

वार्षिक योग- ताप : ६१·९° वर्षा : ४३·८″

२. (स)—**तूरान-तुल्य जलवायु के प्रदेश**—इन्हें आन्तरिक निम्न प्रदेश भी कहते हैं और तूरान, रूस के कैस्पियन और ट्रांस कैस्पियन प्रान्त, डैन्यूब के मैदान (रूमानिया और हंगरी), मंचूरिया, संयुक्त राष्ट्र के मध्य-पश्चिमी भाग, उत्तरी अर्जेन्टाइना, न्यूसाउथवेल्स के आंतरिक भाग, विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

इन प्रदेशों की जलवायु विषम और वर्षा की मात्रा बहुत थोड़ी होती है। इसीलिये मुख्य उद्यम पशु-पालन है और घोड़े, ऊँट भेड़, बकरी आदि जानवर पाले



चित्र ९—शीत-शीतोष्ण कटिबन्ध के पूर्व-तटवर्ती प्रदेश, जहाँ सेंट लारेन्स-तुल्य जलवायु पाई जाती है। इस प्रकार के प्रदेश अफ्रीका व आस्ट्रेलिया में नहीं हैं।

जाते हैं। जहाँ कहीं सिंचाई का प्रबन्ध है वहाँ मक्का, जौ, फल और कपास उगाई जाती है।

२. (द) आन्तरिक उच्च-प्रदेश अथवा ईरान-तुल्य प्रदेश—इस प्रदेश के मुख्य भाग हैं—ईरान, आन्तरिक एशिया माईनर, अफगानिस्तान, पाकिस्तान का पश्चिमी भाग, संयुक्त राष्ट्र की दक्षिणी रियासतों का भीतरी भाग, मैक्सिको और दक्षिणी अफ्रीका का भीतरी पठारी प्रदेश।

इन उच्च प्रदेशों की जलवायु विषम है। सालाना वर्षा बहुत कम और भूमि अनुपजाऊ होने से इन प्रदेशों में केवल घास के मैदान या रेगिस्तान पाये जाते हैं। साधारणतया कृषि का अभाव है परन्तु नदियों के आसपास कृषि-उद्योग होता है और अनाज, फल, कपास, तम्बाकू, गन्ना, चुकन्दर आदि फसलें उगाई जाती हैं। घास के मैदानों में भेड़, घोड़े और ऊँट चराये जाते हैं। खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं पर श्रम व पूँजी के अभाव के कारण उनका विकास नहीं हो पाया है फिर भी थोड़े-बहुत शिल्प-उद्योग होते हैं।

शीत-शीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेश

३. (अ) शीतोष्ण महासागरीय या पश्चिमी यूरोप-तुल्य प्रदेश—ब्रिटिश द्वीप-समूह, दक्षिणी पश्चिमी स्कैण्डिनेविया, डेनमार्क, पश्चिमी जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, उत्तरी स्पेन, दक्षिणी-पश्चिमी कनाडा, उत्तर-पश्चिमी संयुक्त राष्ट्र, दक्षिणी चिली, तस्मानिया और न्यूजीलैण्ड ऐसे प्रदेश हैं जहाँ इस प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

जलवायु—इन भागों में समुद्र के प्रभाव के कारण जलवायु सम रहती है और साल भर बराबर वर्षा होती रहती है। प्रायः इन सभी भागों के तट से गर्म जलधाराएँ प्रवाहित होती रहती हैं। इसके फलस्वरूप पश्चिमी तट की ओर से आने वाली पवन गर्म व तर हो जाती है।

लंदन—अक्षांश ५१°२८, ऊँचाई २८ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३८·९°	१·८"	जुलाई	६२·७°	२·२"
फरवरी	४०·१°	१·५"	अगस्त	६१·६°	२·२"
मार्च	४२·४°	१·७"	सितम्बर	५७·१°	१·९"
अप्रैल	४७·३°	१·५"	अक्तूबर	४९·९°	२·७"
मई	५३·४°	१·७"	नवम्बर	४४·०°	२·२"
जून	५९·२°	२·२"	दिसम्बर	४०·३°	२·३"

सालाना ताप : ४९·७° वर्षा : २३·८"

वनस्पति व उपज—निचले भागों में मेपिल, ओक, ऐल्म और बीच वृक्षों के पतझड़ वन पाये जाते हैं पर ऊँचे पहाड़ी प्रदेशों में पाईन, फर आदि कोणधारी वृक्षों के सदाबहार वन पाये जाते हैं। जई, राई, आलू, चुकन्दर और हरी साग-सब्जी ही यहाँ की मुख्य फसलें हैं, परन्तु कुछ कम तर व अधिक धूप वाले प्रान्तों में गेहूं की भी अच्छी उपज होती है। गाय, बैल, घोड़े व भेड़ें भी पाली जाती हैं। बाजारों के निकट होने से दूध, पनीर और मक्खन बनाने का व्यवसाय भी बहुत उन्नति कर गया है। स्कैण्डीनेविया और ब्रिटिश कोलम्बिया में मछली पकड़ने का व्यवसाय प्रमुख है।

निवासी व रहन-सहन—वास्तव में अच्छी जलवायु के कारण इन भागों ने व्यापार और उद्योग-धंधों के क्षेत्र में बड़ी उन्नति कर ली है। इन प्रदेशों में प्रायः सभी सुविधाएँ वर्तमान हैं। खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता यातायात के साधनों की सुविधा, जलवायु की अनुकूलता और व्यापार के दृष्टिकोण से आदर्श स्थिति की वजह से पश्चिमी यूरोप में महत्त्वपूर्ण औद्योगिक उन्नति हुई है। व्यापार और उपनिवेश-स्थापना में ब्रिटेन, भावनापूर्ण साहित्य व कला में फ्रांस, और शिल्प-सम्बन्धी अन्वेषणों में जर्मनी, संसार में सबसे आगे हैं। ऊँचे वैज्ञानिक ढंग की खेती व कल-कारखानों के काम और व्यापार में ये प्रदेश सबसे ज्यादा उन्नति कर गये हैं। कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड में भी उद्योग-धन्धों, यातायात के साधनों और वैज्ञानिक क्रियाओं ने आश्चर्यजनक उन्नति की है और बराबर आगे बढ़ रहे हैं।

३. (ब) **पूर्वी तटवर्ती अथवा सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेश**—इसी प्रकार की जलवायु का केन्द्र पूर्वी कनाडा में सेण्ट-लारेंस नदी की तलहटी है। परन्तु इसका विस्तार काफी है और आमूर नदी की घाटी, अर्मीनिया, कोरिया, उत्तरी जापान, लैब्रेडोर, टुण्ड्रा का निचला भाग, पूर्वी प्रेरीज, न्यूफाउण्डलैण्ड, संयुक्त राष्ट्र अमरीका में उत्तरी-पूर्वी अपेलशियन और दक्षिणी-पूर्वी आस्ट्रेलिया के भाग भी इसी के अन्तर्गत आते हैं।

जलवायु—यहां वर्षा बहुत कम और गर्मी के मौसम में होती है। गर्मियां कम गर्म और जाड़े बहुत ठण्डे होते हैं। जाड़े के मौसम में सभी नदियां व बन्दरगाह बर्फ से ढके रहते हैं।

वनस्पति, उद्योग और व्यवसाय—इस प्रदेश में व्यापारिक बहुमूल्य वनों की अधिकता है। उत्तर-पूर्वी अमरीका और एशिया में कोणधारी और पतझड़ के वन हैं। इनमें कोमल रोम वाले पशु पाये जाते हैं। वनों को काट कर कृषि और दूध के लिए पशुपालन के उद्योग स्थापित किये गए हैं। उत्तरी अमरीका में लकड़ी काटने का धंधा प्रधान है और कनाडा तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका में मछली पकड़ना, खान खोदना, कृषि व शिल्प की उन्नति हो रही है। एशिया में जापान देश ने सबसे अधिक औद्योगिक उन्नति की है। मंचूरिया में जापान के निरीक्षण में कृषि और खनिज सम्बन्धी उद्योगों में महत्त्वपूर्ण प्रगति हुई है।

चित्र १०—साइबेरिया-तुल्य प्रदेशों का वितरण—दक्षिणी गोलार्द्ध में इस प्रदेश का नितांत अभाव है।

३. (स) आन्तरिक मैदानी प्रदेश अथवा साइबेरिया-तुल्य प्रदेश—इन प्रदेशों का विस्तार केवल उत्तरी गोलार्द्ध में है। दक्षिणी गोलार्द्ध में इस प्रकार के प्रदेश हैं ही नहीं। मध्य एशिया के निचले मैदान, पोलैण्ड, यूरोपीय रूस, पश्चिमी साइबेरिया, जर्मनी तथा स्वीडन के कुछ भाग और उत्तरी अमरीका के उत्तरी प्रेरीज के भागों में इसी प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

जलवायु—इन भागों की जलवायु विषम है। जाड़े के मौसम में कड़ाके की सर्दी पड़ती है और जाड़े का मौसम काफी लम्बा रहता है। इसके विपरीत गर्मी का मौसम छोटा व कम गर्म होता है। वर्षा हल्की और विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में होती है।

वनस्पति, जीव-जन्तु व निवासियों का जीवन—इस प्रदेश के उत्तरी भागों में कोणधारी वृक्षों—पाइन, स्प्रूस और फर—के सदाबहार बन पाये जाते हैं। दक्षिणी भागों में वृक्षों का अभाव है परन्तु विस्तृत घास के मैदान पाये जाते हैं। इन घास के मैदानों को अलग-अलग नाम से पुकारते हैं—साइबेरिया में 'स्टेप' और अमरीका में 'प्रेरीज' कहते हैं। इन घास के मैदानों में कृषि-उद्योग महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। खुश्क भागों में पशुपालन होता है। यूरेशिया के पश्चिमी स्टेप बड़े उपजाऊ हैं परन्तु पूर्वी स्टेप मैदान यूरोप के उन्नत प्रदेशों से बहुत दूर होने के कारण अवनत दशा में हैं। फिर भी ट्रांससाइबेरियन रेल के निकल आने से इस भाग में कुछ प्रगति होने लगी है।

३. (द) आंतरिक उच्च प्रदेश अथवा अल्टाई-तुल्य प्रदेश—इस प्रदेश का विस्तार सीमित-सा है। इस प्रकार के प्रमुख क्षेत्र हैं—अल्टाई श्रेणी और उसके करीब के एशियाई देश, राकी पर्वत श्रेणी का उत्तरी भाग, कनाडा का उत्तरी-पश्चिमी भाग और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की उत्तरी पश्चिमी रियासतें।

यद्यपि ऊँचाई के अनुसार जलवायु में विभिन्नता पाई जाती है फिर भी इन प्रदेशों की जलवायु सर्वत्र ही विषम है। यहाँ की वनस्पति वन हैं जिनमें स्प्रूस, फर, डगलस, लार्च आदि मुलायम लकड़ी वाले सदाबहार वृक्षों की अधिकता है।

इन वनों में खनिज सम्पत्ति भी पाई जाती है परन्तु खान खोदने के उद्यम में विशेष उन्नत्ति नहीं हुई है। केवल कनाडा में ही थोड़ा-बहुत खान खोदने का काम होता है। नदियों के मैदानों में सिंचाई द्वारा खेती की जाती है। फिर भी एशिया में शिकार करना और उत्तरी अमरीका में लकड़ी काटना ही यहाँ के लोगों का प्रमुख धंधा है।

४. शीत कटिबंधीय अथवा ध्रुवीय प्रदेश

शीत-शीतोष्ण कटिबन्ध के उत्तर में पृथ्वी के चारों ओर ध्रुव प्रदेश का विस्तृत क्षेत्र फैला हुआ है। इस प्रदेश के तीन विभाग हैं—(१) टैगा (Taiga) अथवा शीत वन-प्रदेश, (२) टुण्ड्रा (Tundra) अथवा हिमाच्छादित समतल भूमि, (३) हिमाच्छादित उच्च-प्रदेश (The Polar Highlands)। साधारणतया

इन भागों की जलवायु कैसी होती है इसका ज्ञान नीचे दी हुई तालिका से हो जाएगा।

स्पिट्सबर्जन—ध्रुव प्रदेशीय—अक्षांश ८२° उत्तर, देशांतर १४°१४′ पूर्व
ऊँचाई ३७ फीट

मास	ताप	वर्षा	मास	ताप	वर्षा
जनवरी	३·७°	१·४″	जुलाई	४१·७°	०·६″
फरवरी	—२·४°	१·३″	अगस्त	४०·१°	०·९″
मार्च	—१·५°	१·१″	सितम्बर	३२·२°	१·०″
अप्रैल	७·५°	०·९″	अक्तूबर	२१·६°	१·२″
मई	२३·२°	०·५″	नवम्बर	१०·९°	१·०″
जून	३५·४°	०·६″	दिसम्बर	६·१°	१·५″
वार्षिक		ताप : १८°			वर्षा : १२०″

१. टैगा प्रदेश—शीत-शातोष्ण प्रदेश से लगा हुआ उत्तर में शीत-वन-प्रदेश फैला हुआ है। यहाँ की शीत ऋतु अत्यन्त लम्बी व कठोर होती है—दिन छोटे और रातें बड़ी होती हैं। गर्मी का मौसम छोटा और ठंडा होता है। इसमें दिन लम्बे और रातें छोटी होती हैं। पाइन, फर, लार्च तथा अन्य कोणधारी वृक्षों की बहुलता है परन्तु जलवायु तथा यातायात की कठिनाई के कारण इन वनों की काठ सम्पत्ति का सम्यक् उपयोग नहीं हो सका है। इन वनों में कोमल रोम वाले पशुओं की भी अधिकता है। संसार के बहुमूल्य फर का अधिक भाग इसी प्रदेश से प्राप्त होता है। कृषि असम्भव तो नहीं परन्तु विकसित ही नहीं हुई है। शिकार करना और फर वाले पशुओं को फंसाना ही लोगों का मुख्य उद्यम है। इसी कारण जन-संख्या भी कम है। पालतू पशुओं में रेनडियर (बारहसिघा) ही महत्त्वपूर्ण है और अलास्का में बहुत पाये जाते हैं।

२. टुण्ड्रा प्रदेश—टैगा प्रदेश के उत्तर में एक पट्टी-सी फैली हुई है और यूरेशिया और अमरीका के उत्तर में ध्रुवीय वृत्त में स्थित है। यहाँ का तापक्रम टैगा प्रदेश से भी न्यून है। वर्ष में दस महीने तक भूमि बर्फ से ढकी रहती है और इसलिये किसी प्रकार की भी खेती बिल्कुल असम्भव है। गर्मी की ऋतु में जब कुछ समय के लिए बर्फ पिघलती है तो घास व काई आदि पौधे शीघ्रता से उग आते हैं।

अलास्का और उत्तरी कनाडा के ध्रुवीय मैदानों में रेनडियर, कारिबाऊ और कस्तूरी बैल बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। सील, वालरस और व्हेल मछलियों की भी बहुलता है।

टुण्ड्रा संसार का सबसे विशाल और निर्जन शीत मरुस्थल है; जनसंख्या बहुत थोड़ी है। प्रति वर्ग मील में एक मनुष्य से अधिक की औसत नहीं है। जीविकोपार्जन के साधनों के अभाव से निवासी खानाबदोश हैं। भोजन और वस्त्र की आवश्यकताएँ अधिकतर पशुओं से ही पूरी हो जाती हैं। मांस इनका भोजन है और खाल के ये लोग वस्त्र बनाते हैं। मनुष्य सरल प्रकृति के पर रूढ़िवादी होते हैं। जीवन कठिनाईपूर्ण होने से लोग बौद्धिक उद्यम करने में असमर्थ हैं। जाड़े में कोई कार्य ही नहीं हो सकता और यहाँ के लोग कुत्ते को पालते हैं जिससे यातायात का भी काम लेते हैं। टुण्ड्रा का कोई विशेष आर्थिक महत्त्व नहीं है, फिर भी ऐसा ख्याल किया जाता है कि इस प्रदेश में कुछ खनिज पदार्थ हैं, जिनको अभी तक छुआ तक नहीं गया है। इस प्रकार टुण्ड्रा कठिनाई व अभाव का प्रदेश है।

३. **हिमाच्छादित उच्च प्रदेश** (The Polar Highlands)—उत्तरी अलास्का, उत्तरी ग्रीनलैंड, ऐन्टार्टिका, कमच्छटका और इसके समीपवर्ती देशों में तापक्रम साल भर इतना कम रहता है कि वहाँ कोई वनस्पति ही नहीं उग सकती। इस समस्त प्रदेश पर बर्फ की मोटी चादर की गहराई १००० से ३००० फीट तक है। हिम की इस मोटी तह से हिमशिलाखंडों (Icebergs) का जन्म होता है, जो समुद्र पर बहते-बहते काफी दूर तक चले जाते है। यहाँ पर न कोई रह सकता है और न कोई उद्यम ही सम्भव है।

प्रश्नावली

१. भूमध्यसागरीय जलवायु से आप क्या समझते हैं ? इसके कारणों को समझाते हुए इसकी तुलना मानसूनी जलवायु के प्रदेशों से कीजिए और प्रत्येक प्रदेश की मुख्य उपज का विवरण दीजिये।

२. 'मानसून' का क्या अर्थ है ? भारत के आर्थिक जीवन पर मानसूनी हवाओं का क्या प्रभाव पड़ता है ? समझाकर लिखिए।

३. प्राकृतिक प्रदेश से आप क्या समझते हैं ? भूमण्डल को कितने प्राकृतिक भागों में बाँटा जा सकता है ? संसार का चित्र बनाकर दिखलाइये।

४. निम्नलिखित विशेषताओं के कारण बतलाइये:—

(१) भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में वर्षा जाड़े में होती है।

(२) शीतोष्ण कटिबन्ध के मैदानी भागों में सभ्य मनुष्यों का निवास है।

५. उष्ण-कटिबन्ध में स्थित प्रमुख मरुस्थलों का विवरण दीजिये और बतलाइये कि उनसे व्यापार की कौन-कौन-सी वस्तुएँ प्राप्त होती है ?

६. "भारतीय मानसून के समान व्यापक अन्य कोई जलवायु का अंग नहीं है," इस उक्ति को समझाइये।

७. मानसूनी जलवायु से आप क्या समझते हैं ? इस प्रकार के प्रदेशों की मुख्य उपज का वर्णन कीजिए।

८. स्टेप प्रदेशों की जलवायु व वनस्पति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

९. भूमध्यरेखीय वन-प्रदेशों के विषय में एक लेख लिखिए।

१०. मानसूनी जलवायु के प्रदेशों में जनसंख्या के घनत्व का क्या कारण है ? समझाकर लिखिये।

११. शीतोष्ण वन-प्रदेशों की जलवायु और वनस्पति वन-उष्ण प्रदेशों की जलवायु व वनस्पति से किस प्रकार भिन्न है ? यह भी बताइये कि शीतोष्ण-वन-प्रदेश अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं ?

१२. शीतोष्ण प्रदेशों के घास के मैदान और उष्ण कटिबन्ध के वन-प्रदेशों का आर्थिक महत्त्व क्या है ? भारत, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका से उदाहरण देते हुए समझाकर लिखिये।

१३. यूरोप के उदाहरण लेते हुए निम्नलिखित प्रकार की जलवायु के प्रदेशों की विशेषताएँ बतलाइये:—

(१) द्वीपीय जलवायु (Insular Climate)
(२) भूमध्यसागरीय जलवायु (Mediterranean Climate)
(३) महाद्वीपीय जलवायु (Continental Climate).

१४. उष्ण कटिबन्ध में पाये जाने वाले विविध प्रकार के वनों की विशेषताएँ बतलाइये और उनके वितरण के भौगोलिक कारण स्पष्ट कीजिये।

१५. भूमध्यरेखा के १०° और २०° उत्तर व दक्षिण के प्रदेश में पाई जाने वाली जलवायु की दशाओं का वर्णन कीजिये।

१६. भूमंडल पर किन प्रदेशों में "वर्षा के जंगल" पाये जाते हैं ? कारण देते हुए उनका वितरण समझाइये और बतलाइये कि आजकल उनका आर्थिक उपयोग क्या है ?

१७. मुख्य प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति के वितरण का भौगोलिक कारणों सहित विस्तार से निरूपण कीजिये।

१८. मानसूनी वर्षा की क्या विशेषताएँ हैं और उनका मानव-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? समझाकर उत्तर दीजिए।

१९. भूमध्यरेखीय व मानसूनी जलवायु के प्रदेशों में क्या अन्तर है ? उनके विभिन्न विशेषताओं का वहाँ के लोगों के जीवन पर क्या असर पड़ता है ? विस्तार से उत्तर दीजिये।

२०. पश्चिमी यूरोप-तुल्य जलवायु के प्रदेशों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ? यह मनचूरिया या सेंट लारेंस-तुल्य प्रदेशों से किस प्रकार भिन्न हैं ? समझाकर उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

२१. "एक ही अक्षांश में स्थित होने पर भी महाद्वीपों के पूर्वी व पश्चिम-तटीय प्रदेशों की जलवायु में बहुधा बड़ा अन्तर पाया जाता है।" इस कथन से

आप कहां तक सहमत हैं ? उत्तरी गोलार्द्ध के शीतोष्ण कटिबन्ध से उदाहरण देते हुए बतलाइये कि इस अन्तर का विभिन्न प्रदेशों के लोगों के जीवन व रहन-सहन पर क्या असर पड़ता है ?

२२. स्टेप देशों की भौगोलिक परिस्थितियों का वर्णन करिये, उनके स्थान बताइये, और उनके वर्तमान आर्थिक महत्त्व का अनुमान लगाइये।

२३. उष्ण और शीत दोनों भांति की मरुभूमि के क्या विशेष लक्षण हैं ? उनका व्यापार पर क्या प्रभाव है ?

अध्याय :: तीन

कृषि-उद्योग (AGRICULTURE)

कृषि का उद्देश्य—साधारणतया वनस्पति दो प्रकार की होती है। एक वह जो अपने आप ही उगती है और दूसरी वह जिसको उगाने के लिए मनुष्य को कुछ परिश्रम करना पड़ता है। मनुष्य के लिए धरती से वनस्पति उत्पन्न करने की क्रिया को कृषि-कार्य कहते हैं। विभिन्न प्रकार की फसलें उत्पन्न करना तथा धरती को सुधार कर या आवश्यकतानुसार सिंचाई द्वारा पानी पहुंचाकर उसकी उर्वरा शक्ति को बढ़ाना कृषि-उद्योग के ही अंग हैं। कभी-कभी कृषि के साथ-साथ पशु-पालन का भी कार्य होता है। इस प्रकार के मिले-जुले काम को मिश्रित कृषि (Mixed Farming) कहते हैं। सच तो यह है कि उन सभी उद्योगों में जिन पर जलवायु या भूमि का निर्णयात्मक प्रभाव पड़ता है, कृषि-उद्योग सबसे महत्त्वपूर्ण है।

कृषि सम्बन्धी कुछ समस्याएँ—अनुकूल परिस्थितियों के होते हुए भी अन्य सहायक साधनों के अभाव में कृषि-उद्योग लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकता। यदि कोई प्रदेश मंडी से अधिक दूर है तथा उसमें यातायात की सुविधाओं का अभाव है तो खेती से वहां की स्थानीय माँग के पूरा होने के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। अतएव कृषि द्वारा आर्थिक लाभ उठाने के लिए मंडी का समीप होना तथा यातायात की सुविधाओं का होना आवश्यक है। समीप होने से यह तात्पर्य नहीं कि उत्पादन क्षेत्र से मंडी निकट ही हो। सच तो यह है कि उत्पादन क्षेत्र से मंडी हजारों मील की दूरी पर हो सकती है, केवल यातायात की सुविधा होनी चाहिए। अर्जेन्टाइना में गेहूँ का उत्पादन यूरोप की मंडियों के लिए होता है और बंगाल में जूट का माल यूरोप और अमरीका के लिए उत्पन्न किया जाता है। इसलिये मंडी के पास होने का यह मतलब है कि कृषि-उत्पादन को मंडी में उचित मूल्य पर बेचने के लिये सभी प्रकार की सुविधाएँ होनी चाहिएँ। इस दृष्टिकोण से श्रमिक व्यय अथवा सस्ती मजदूरी की भी बड़ी महत्त्वपूर्ण समस्या है। उत्पादन की कुछ वस्तुओं के लिये अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। इसलिए उन वस्तुओं की उपज के लिए सस्ती मजदूरी का होना बहुत आवश्यक है।

कृषि-उत्पादन के विषय में एक महत्त्वपूर्ण बात और है कि धरती की उर्वरा शक्ति प्रत्येक फसल के बाद क्रमशः क्षीण होती जाती है। इसलिए प्रति वर्ष उपज भी घटती जाती है। इस कमी को उत्तम खाद तथा फसलों के हेर-फेर के द्वारा कुछ रोका जा सकता है। इसके अलावा भिन्न-भिन्न देशों में, कृषकों की कुशलता, वैज्ञानिक विधियों तथा अन्य कारणों से प्रति एकड़ उपज में भी भिन्नता हो जाती है।

कृषि और खाद—संसार की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनता के लिये भोजन का प्रश्न हल करने के लिये वर्तमान युग के किसान पहिले से कहीं अधिक मात्रा में खाद का प्रयोग करने लगे हैं। सन् १९४५ से लेकर अब तक इन खादों का उपभोग बराबर बढ़ता जा रहा है। सन् १९५२-५३ में संसार के खेतों पर, सन् १९३८ की अपेक्षा ६९ प्रतिशत अधिक फॉस्फेट का प्रयोग किया गया। इसी काल में पोटाश और नाइट्रोजन की खाद का प्रयोग क्रमश: ७२ और ७५ प्रतिशत की दर से अधिक हो गया। संसार के अन्य सभी भागों की अपेक्षा संयुक्त राष्ट्र अमरीका में खाद का उपभोग बहुत अधिक बढ़ गया है। सन् १९३८ और सन् १९५२ के बीच के समय में विभिन्न प्रकार के खादों के उपभोग में बढ़ोतरी इस प्रकार थी—

फास्फेट	२००	प्रतिशत
नाइट्रोजन देने वाली खाद	२६८	,,
पोटाश	२८५	,,

फलतः संसार के द्वारा खाद उपभोग में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का भाग १९ प्रतिशत (१९३८) से ३४ प्रतिशत (१९५२) हो गया है। संसार में प्रमुख प्रकार की खादों का उपभोग इस प्रकार है—

खादों का उपभोग १९५२
(हजार मीट्रिक टन)

प्रदेश	फॉस्फेट	नाइट्रोजन	पोटाश
संसार	५९००	४२००	४३००
मिस्र	१२·९	१३०·१	०·४
कनाडा	१०५·३	३२·७	५६·८
क्यूबा	२६·६	२५·७	१८·१
मैक्सिको	८·५	१६·०	२·०
संयुक्त राष्ट्र	२०२३·०	१२७५·०	१३७४·०
चिली	१४·०	१०·०	४·५
पीरू	२५·४	३९·६	६·५
लंका	२·५	१३·५	१२·५
भारत	१३·०	६२·९	—
इन्डोनेशिया	१·२	११·४	२·५
जापान	२४२·५	४४२·०	११६·५
फिलीपाईन	—	२२·५	२·२
फ्रांस	४२०·०	२८०·०	४२०·०
पश्चिमी जर्मनी	४४०·०	३८०·०	७००·०
इटली	२९०·०	१५८·०	२०·०
हालैण्ड	१०९·०	१६०·०	१५८·०
संयुक्त राज्य	२७६·४	१७५·०	१६५·०
आस्ट्रेलिया	३७९·१	१५·६	८·४

कृषि और मशीनें—कृषि के उद्यम में कम-से-कम परिश्रम द्वारा अधिक-से-अधिक उपज प्राप्त करने के इरादे से खेती में मशीनों को स्थान दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में मजदूरी की ऊँची दर के कारण कृषि में यन्त्रों का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। ट्रैक्टर, हल तथा जोतने, बोने और फसल काटने की अन्य मशीनों के अलावा अब वायुयानों का प्रयोग भी कृषि में बराबर बढ़ता जा रहा है। वायुयानों की सहायता से यन्त्र व मशीनों के प्रमुख भाग दूर-दूर पर स्थित खेतों को पहुँचाये जाते हैं। सन् १९४७ में केवल कैलीफोर्निया में ७५ कृषि ठेकेदार हवाई जहाजों का प्रयोग कर रहे थे। इन हवाई जहाजों की सहायता से खड़ी फसल वाले खेतों में रसायनों का छिड़काव किया जाता है ताकि फसलों की बीमारी व हानिकारक कीड़े नष्ट हो जावें। जहां कहीं आवश्यकता मालूम पड़ी है हवाई जहाजों की सहायता से बीज भी बोये गये हैं। नमी उत्पन्न करने वाले यन्त्र से फिट हवाई जहाज द्वारा शुष्क प्रदेशों के खेतों में नमी भी पहुँचाई गई है। अतएव ऐसा समझा जाने लगा है कि छिड़काव, बोने, नम करने और फैलाने वाली मशीनों से फिट हेलिकोप्टर जहाज से कृषि में विशेष सहायता मिल सकती है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बाद कृषि में मशीनों के प्रयोग के दृष्टिकोण से रूस का स्थान आता है। रूस की भूमि, जलवायु, विस्तार और शक्ति के स्रोतों की उपलब्धता के कारण मशीनों द्वारा संचालित कृषि को विशेष प्रोत्साहन मिला है।

अर्जेन्टाइना में उत्तरी अमरीका की अपेक्षा बड़ी कठिनाइयाँ हैं। शक्ति के स्रोत मंहगे हैं और उसकी अपेक्षा घोड़ों का रखना सस्ता पड़ता है। १९३१ तक काफी ट्रैक्टर मशीनें बाहर और विशेषकर संयुक्त राष्ट्र से मंगवाई गयीं परन्तु गेहूँ की माँग में कमी होने पर इन मशीनों का सहारा छोड़कर फिर घोड़ों द्वारा खेती की जाने लगी। हाँ, जलवायु और खेती की प्रणाली के अनुसार काटने वाली मशीनें अधिक सुविधाजनक पायी गई हैं। अतएव उन्हीं का प्रयोग अभी भी किया जाता है। यद्यपि यह देश गेहूँ के प्रधान निर्यातक देशों में है परन्तु यहाँ गेहूँ का विक्रय वैसा व्यवस्थित नहीं है जैसा कनाडा में। इसलिए नवीन भंडार व एलीवेटर केवल बन्दरगाहों पर ही पाये जाते हैं।

आस्ट्रेलिया में भी बहुत कुछ वही दशा है जो अर्जेन्टाइना में। कृषि के क्षेत्र में गेहूँ उगाना और भेड़ चराना प्रधान उद्यम है। चूंकि घोड़ों को चारा आसानी से मिल जाता है, इसलिये मशीनों द्वारा खेती की प्रणाली बहुत अधिक प्रगति नहीं कर पाई है। केवल बड़े-बड़े खेतों पर ही ट्रैक्टर प्रयोग में लाये जाते हैं। हां, वहाँ कुछ नये प्रकार के यन्त्र अवश्य प्रयोग में लाये जाते हैं।

पुरानी दुनिया में यान्त्रिक खेती ने इजराइल में बड़ी प्रगति की है। वहाँ पर ८००० यान्त्रिक खेती वाले खेत बना दिये गये हैं और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सहायता से वहाँ की खेती यन्त्रों के सहारे होने लगी है।

यूरोप के अधिकतर भाग में दशा कुछ भिन्न है। वहाँ के खेत छोटे और इस प्रकार बँटे हुए हैं कि बड़ी मशीनों का प्रयोग सम्भव ही नहीं है। वहाँ पर मजदूरों

की भी कोई कमी नहीं है और मिश्रित कृषि-प्रणाली द्वारा एक ही खेत से कई प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। फिर अधिकतर देशों में कृषि और उद्योग-धन्धों के बीच संतुलन रखने के लिए यह आवश्यक समझा जाता है कि अधिकतर लोग कृषि में ही लगे रहें। वहाँ पर कृषि का ध्येय एक परिवार को काम व भोजन देना है, न कि निर्यात के लिये उत्पादन बढ़ाना।

उष्ण कटिबन्धीय अफ्रीका और पूर्व के देशों में अभी भी पुराने औजार इस्तेमाल किये जाते हैं। यहाँ के अधिकतर किसान बेपढ़े-लिखे, दकियानूसी और पुराने विचारों के हैं। खेत छोटे-छोटे और दूर-दूर पर फैले हुए हैं। इसलिए इनमें यांत्रिक कृषि ने कोई विशेष प्रगति नहीं की है।

विश्वव्यापी कृषि-उत्पादन में बढ़ोतरी का प्रतिशत (१९५४--५५)

देश	१९३४--३८ पर बढ़ोतरी	१९४६--४७ पर बढ़ोतरी
पश्चिमी यूरोप	२४	६१
निकट पूर्व	४३	४१
अफ्रीका	४५	३४
ओसीनिया	२२	२९
दूरपूर्व	९	२४
दक्षिणी अमरीका	३५	२२
उत्तरी अमरीका	४८	१०
उपर्युक्त सभी प्रदेशों में	२७	२६
चीन, रूस और पूर्वी यूरोप को शामिल करके सम्पूर्ण विश्व में	२०	३०

खेती के ढंग—भूमि पर खेती की दो रीतियाँ हैं—(१) सयत्न खेती (Intensive Farming) और (२) व्यापक खेती (Extensive Farming)। जिन देशों में आबादी कम, उद्योग-धन्धे अवनत, व्यापार का अभाव और खेती से उत्पन्न वस्तुओं की माँग सीमित होती है वहां पर व्यापक खेती उपयुक्त होती। इसके विपरीत सयत्न खेती में पूँजी तथा श्रम के द्वारा अधिक-से-अधिक उपज प्राप्त की जाती है। कृत्रिम साधनों द्वारा पानी निकालकर तथा खाद डालकर भूमि की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि की जाती है। सयत्न खेती वहाँ पर की जाती है जहाँ कृषि से उत्पन्न पदार्थों की मांग अधिक हो और आबादी ज्यादा होने से भूमि कम। परंतु इसका सबसे अच्छा उपयोग प्रगतिशील देशों मे ही सम्भव है।

भिन्न-भिन्न देशों में फसलों के उत्पादन की रीतियाँ भी भिन्न होती हैं। संयुक्त राष्ट्र में एक क्षेत्र से एक वर्ष में एक ही उपज पैदा की जाती है परन्तु जापान आदि अधिक बसे हुए प्रदेशों में दो उपज उगाई जाती हैं। एक फसले

काटने पर दूसरी बो दी जाती है। कहीं-कहीं एक ही क्षेत्र से वर्ष भर में कई फसलें उगाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त खेती की रीतियाँ जलवायु के अनुसार विभिन्न होती हैं। परन्तु तीन रीतियाँ मुख्य हैं—

१. सिंचित कृषि (Irrigation Farming)—उष्ण प्रदेशों के उन भागों में, जहाँ वर्षा की ऋतु नियत होती है वहाँ सिंचाई द्वारा खेती की जाती है। विशेषकर भारतवर्ष और चीन में। खेतों में पानी देने के लिये नहरें, कुएं और तालाब खोदे जाते हैं। वनस्पति प्रदेशों के अनेक भागों में सिंचाई की ही कृपा से लाखों एकड़ बंजर भूमि लहलहाते खेतों में परिणत हो गई हैं।

२. आर्द्र कृषि (Humid Farming)—साधारण वर्षा वाले भागों में सिंचाई के बिना ही खेती की जाती है। इस प्रकार की खेती में वही फसलें उगाई जाती हैं जो प्राकृतिक वर्षा के सहारे उग सकती हैं।

३. शुष्क कृषि (Dry Farming)—संसार के कुछ प्रदेशों में वर्षा भी कम होती है, और सिंचाई की सुविधाएँ भी नहीं हैं। वे वर्ष भर शुष्क रहते हैं। जो थोड़ी बहुत जलवृष्टि होती है, उसी पर यह प्रदेश निर्भर रहते हैं। शुष्क कृषि-विधि सबसे पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उन प्रदेशों में अपनाई गई है जहां वर्ष भर में २० इंच से भी कम वर्षा होती थी और सिंचाई के साधन भी उपलब्ध नहीं थे। इस प्रकार की खेती में ये विशेषतायें होती हैं—

(अ) धरती को गहरा जोतते हैं, (ब) वर्षा के जल पर नियन्त्रण रखने के लिये खेतों में क्यारियाँ व नालियाँ बना देते हैं, (स) धरती की नमी बनाये रखने तथा खर-पतवार को नष्ट करने के लिये बीज बोने से पहले बार-बार पाटा (Harrow) चलाते हैं।

कृषि-उद्योग के अध्ययन में 'लगाये हुए बगीचों' का विशेष महत्त्व है। उष्ण कटिबन्धीय या उपोष्ण कटिबन्धीय कृषि में जब खास तौर पर लाकर और लगाकर पौधे या पेड़ उगाये जाते हैं तो उन्हें 'लगाये हुए बगीचे' (Plantation) और उस प्रकार की कृषि को 'लगाये हुए बगीचों की कृषि' कहते हैं। इसका ध्येय विस्तृत आधार पर केवल एक ही फसल को उगाना होता है पर उसमें अच्छे-से-अच्छे तरीकों को प्रयोग में लाकर उचित प्रकार की फसल उगाने का प्रयत्न किया जाता है। आजकल इस प्रणाली का उपयोग एक सीमित अर्थ में किया जाता है और इसके अन्तर्गत उष्ण कटिबन्ध के उन बगीचों को लेते हैं जहाँ पर पूँजी, सीखे हुए मजदूर, मशीनें और कभी-कभी साधारण मजदूरों तक को बाहर से लाया जाता है। इस प्रकार पश्चिमी बंगाल और आसाम में स्थानीय मजदूरों की सहायता से यूरोपियनों द्वारा संचालित चाय की खेती इसी श्रेणी में आती है।

कृषि का वितरण—सारे संसार के लिए खाद्यान्न और उद्योग-धन्धों के लिए कृषि से प्राप्त कच्चे माल की पूर्ति पृथ्वी के धरातल के केवल ७·५ प्रतिशत भाग से ही हो जाती है। और दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि समस्त भूमण्डल की

कृषि-योग्य भूमि का तीन-चौथाई भाग उन १५ देशों व भागों में स्थित है जहाँ संसार की ६२ प्रतिशत जनसंख्या का निवास है। उन १५ देशों की कृषि-योग्य भूमि का वितरण नीचे दी हुई तालिका से ज्ञात हो सकता है।

देश	कृषि-योग्य भूमि का क्षेत्रफल (१००० एक)	देश की समस्त भूमि में कृषि-भूमि का प्रतिशतांश	कृषि-योग्य भूमि प्रति व्यक्ति के अनुसार (एकड़ों में)	समस्त संसार की कृषि भूमि का प्रतिशतांश
संयुक्तराष्ट्र	४,३५,०००	२२·८	३·१३	१७·६
सोवियत रूस	४,१४,०००	७·९	२·४३	१६·८
भारतवर्ष	३,८२,६१०	३७·९	·९८	१५·५
चीन (२२प्रांत)	१,७७,७१८	१३·८	·२९	७·२
अर्जेन्टाइना	६४,३९५	९·३	५·५६	२·६
कनाडा	६३,३८५	२·९	५·२९	२·५
जर्मनी	४३,९१८	४२·८	·७२	२·०
फ्रांस	४९,३३८	३६·३	१·२२	२·०
पोलैण्ड	४७,२१९	४९·२	१·४७	१·९
स्पेन	४४,५५६	३५·६	१·६५	१·८
ईरान	४०,७९५	१०·२	२·४७	१·६
मंचूरिया	३८,३८६	११·९	·८९	१·५
इटली	३५,६१०	४९·९	·७७	१·४
आस्ट्रेलिया	३४,८६४	१·७	४·७१	१·४
योग	१८,७७,७९९	—	—	७५·८

मांग तथा पूर्ति का सम्बन्ध—अनेक कच्ची वस्तुओं की मांग तथा उनकी पूर्ति में सुव्यवस्था का प्रायः अभाव रहता है। इसलिये कच्ची वस्तुओं के उत्पादन को नियमित करने की बड़ी आवश्यकता है। कच्ची वस्तुओं के उत्पादन को नियमित करने का उद्देश्य और प्रभाव मूल्य को उचित स्तर पर लाना है।

संसार में भूखण्ड का विस्तार ३,६०,००० लाख एकड़ है परन्तु इसके १० प्रतिशत से कम भाग पर ही खेती हो सकती है। और केवल १९००० लाख एकड़ पर ही खाद्यान्न उगाये जाते हैं। इतने क्षेत्र से संसार की २०,००० लाख जनसंख्या का पेट भरना बहुत ही कठिन है।

कृषि की विविध फसलें

(अ) **खाद्य फसलें** (Food crops)—

१. खाद्यान्न (Cereal crops)—गेहूँ, चावल, मक्का, राई, जौ, जई, ज्वार, बाजरा।

२. पेय फसलें (Beverage crops)—चाय, कहवा, कोको, तम्बाकू।

३. अन्य फसलें (Other crops)—गन्ना, चुकन्दर, आलू, मसाले, फल, तरकारी आदि ।

(ब) व्यवसायिक फसलें (Commercial crops)—

१. कपास, जूट, सन, पटसन ।

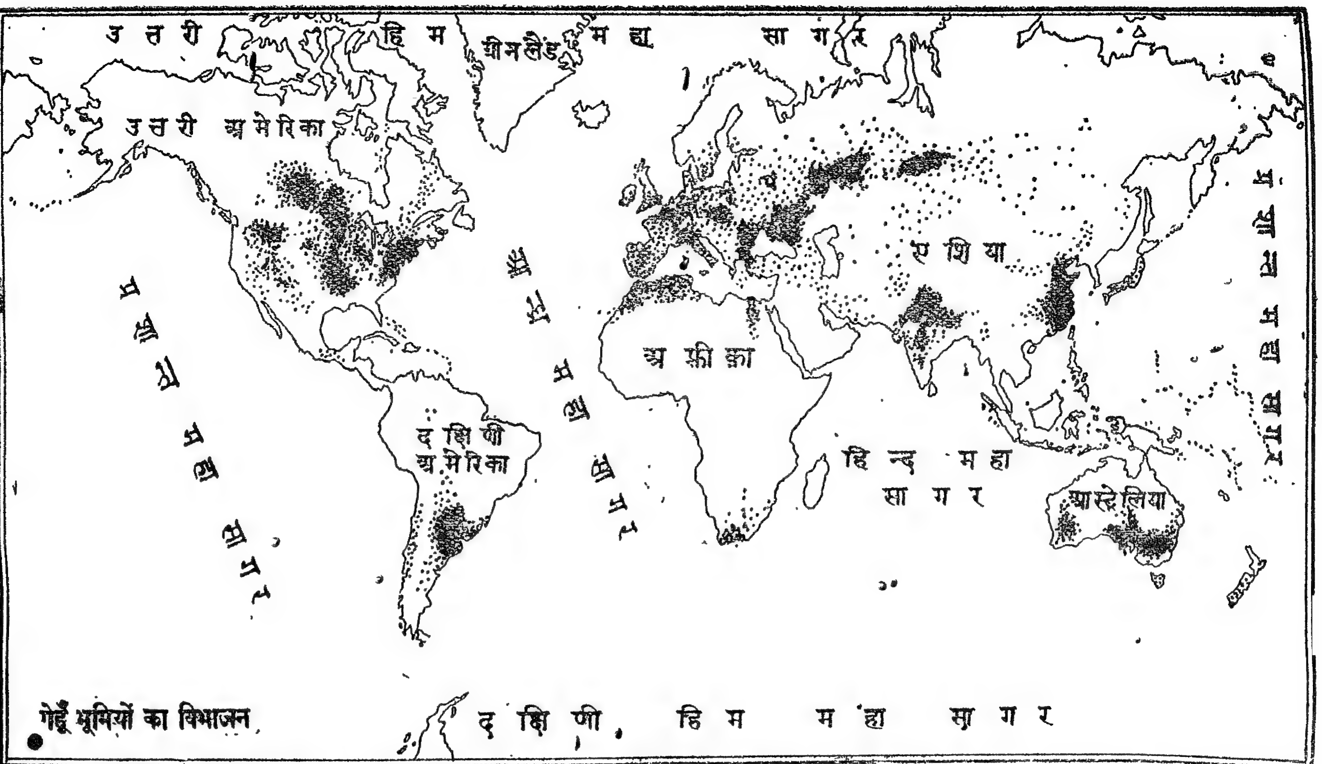
२. विविध फसलें—रबर, तिलहन ।

खेतिहर वस्तुओं का विश्व-उत्पादन

वस्तु विशेष	तोल की मात्रा की इकाई	विश्व-उत्पादन		
		युद्ध पूर्व	१९५०	१९५३--५४
गेहूँ	दस लाख बुशल	६२०२५	६३२०	७१५०
मक्का	,,	४७६०	५२१०	५७७५
जई	,,	४३६५	४१६५	४०२५
जौ	,,	२३६२	२४२५	२७४५
मोटा चावल	दस लाख टन	१४९	१५०	१६२
चर्बी और तेल	हजार टन	२१२४०	२२९००	२३८६०
चीनी	,,	२९०६१	३५३२५	३८८८९
चाय	दस लाख पौंड	८८२	८७५	१०३०
कहवा	लाख बोरे (१३२ पौंड)	४१६	३०१	४०६
कोको	हजार टन	७०६	७७४	६९४
तम्बाकू	दस लाख पौंड	६५२०	७१४०	७३३६
कपास	लाख गांठ (४७८ पौंड)	३१७	२८२	३७९
ऊनी वस्त्र और ऊन (कुल)	दस लाख पौंड	१६६०	१८७१	२०५०
पटसन	,,	२०७०	२२८३	२५२०
सीसल पटुवा	हजार टन	१५८५	१७२०	१२१०
रबड़ (प्राकृ-	,,	५२७	५२५	५८०
तिक)	,,	९९७	१८६०	१७२५
रबड़ (कृत्रिम)	,,	—	५३५	९३६

(अ) खाद्य फसलें (Food crops)—१. खाद्यान्न (Cereal crops)

गेहूँ (Wheat)—यह श्वेत जाति के लोगों के भोजन की प्रधान वस्तु है



चित्र ११—गेहूँ का वितरण—ध्यान देने योग्य बात यह है कि इसकी उपज की सीमा ६०° उत्तरी अक्षांश तक है।

इसको पीसकर आटा व मैदा बनाया जाता है। इसका भूसा पशुओं को खिलाने व पशुशालाओं में बिछाने के काम आता है। इसके भूसे से पट्ठा (गत्ता) और लपेटने का बादामी कागज भी बनता है।

उपज की दशायें—गेहूँ का पौधा घास की जाति का होता है। यह लगभग तीन फीट ऊँचा होता है। पौधे की जड़ से अनेक सीधे तने व नाल निकलते हैं और इनके छोर पर अनाज की बालियाँ लगती हैं। साधारणतया यह पौधा शीतोष्ण कटिबन्ध की उपज है। इसकी उत्पत्ति के लिये उचित जलवायु की आवश्यकता होती है। शुरू में इसके लिए काफी नमी और शीत की आवश्यकता होती है परन्तु बाद में शुष्क, उष्ण और साफ मौसम लाभकारी होता है। हां, पकने से कुछ समय पहले थोड़ी जलवृष्टि सहायक होती है। परन्तु पकते समय मेघ-रहित—स्वच्छ उज्ज्वल प्रकाश चाहिये। इसलिये गेहूँ अधिकतर उन्हीं प्रदेशों में उत्पन्न होता है, जहां ३० इंच से अधिक जलवृष्टि नहीं होती है।

गेहूँ की सर्वोत्तम उपज के लिये मिट्टी भारी, गहरी और खूब उपजाऊ होनी चाहिए। इसकी विस्तृत और व्यापक खेती के लिए समतल भूमि सर्वोत्तम होती है।

भूमि और जलवायु के अलावा कुछ अन्य बातें भी आवश्यक होती हैं। आर्थिक परिस्थितियों का भी असर पड़ता है और इधर कुछ शताब्दी से आर्थिक साधनों द्वारा गेहूँ की उपज में महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन हो गया है। फार्म की मशीनों, वैज्ञानिक विधियों तथा यातायात की सुविधाओं के कारण मध्य उत्तरी अमरीका, दक्षिणी-अमरीका और आस्ट्रेलिया जैसे अल्प संख्या वाले प्रदेशों मे गेहूँ की उपज में तीव्र उन्नति हो गई है। परन्तु आर्थिक साधनों का स्तर सभी देशों में समान नहीं है और न सभी देशों में उनका आधार ही समान होता है।

उपज के क्षेत्र—संसार के प्रमुख गेहूँ उत्पादक क्षेत्रों में गेहूँ की उपज का अन्दाज नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जायगा। इसमें प्रति एकड़ की पैदावार बुशलों में दी गई है और एक बुशल ३२ सेर के बराबर होता है।

संसार के प्रमुख गेहूँ उत्पादक देशों में प्रति एकड़ उपज (बुशल में)

देश	१९४७	१९५०
अर्जेन्टाइना	१४	१५
आस्ट्रेलिया	१७	१६
कनाडा	१४	१७
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१९	१७
फ्रांस	१६	२६
न्यूजीलैण्ड	—	४१
इटली	१७	२४
रूमानिया	१६	१६
रूस	१४	१४
चीन	१६	१६
भारत	९	१०

संसार के भिन्न-भिन्न भागों में गेहूँ बोने व काटने का समय

देश	उपज	बोने का समय	काटने का समय
अर्जेन्टाइना	१	अप्रैल से अगस्त	नवम्बर से जनवरी
आस्ट्रेलिया	१	अप्रैल से जून	अक्तूबर से जनवरी
कनाडा	२	(१) अगस्त-सितम्बर (२) अप्रैल-मई	(१) जुलाई-अगस्त (२) अगस्त-सितम्बर
रूस	२	(१) अगस्त से नवम्बर (२) मार्च से मई	(१) जुलाई-सितम्बर (२) अगस्त-सितम्बर
संयुक्त राष्ट्र	२	(१) सितम्बर-अक्तूबर (२) अप्रैल से मई	(१) मई से जुलाई (२) अगस्त-सितम्बर
भारत	१	अक्तूबर से सितम्बर	मार्च से मई
पाकिस्तान	१	अक्तूबर से सितम्बर	मार्च से मई

संसार के भिन्न-भिन्न देशों की भौगोलिक स्थिति में भिन्नता होने के कारण प्रत्येक मास में किसी-न-किसी देश में गेहूं कटता ही रहता है। इस कारण से और दूसरे संसार के यातायात के साधनों में उल्लेखनीय विकास हो जाने के कारण संसार की सभी मंडियों में गेहूँ का मूल्य आमतौर से समान ही रहता है।

भिन्न-भिन्न प्रदेशों में गेहूँ की कुल उपज की मात्रा भी विभिन्न होती है। गेहूँ की उत्पत्ति के विचार से भिन्न-भिन्न देशों की तुलनात्मक स्थिति निम्नलिखित है:—

गेहूँ : क्षेत्रफल और उत्पादन

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
देश	१९३४-३८	१९५२-५३	१९३४-३८	१९५२-५३
बल्गारिया	१३५३	—	१६९०	—
फ्रांस	५२२४	४२८७	८१४३	८३९८
हंगरी	१५८९	—	२२२०	—
इटली	५०४०	४६७९	७२५४	७७८१
रूमानिया	२५३७	—	२६००	—
संयुक्त राज्य	७५४	१००३	१७४३	२६४८
रूस	४०,९२०	—	३८,०९०	—
कनाडा	१०,०४३	१०,९३५	७,१७०	१२,५६५

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
देश	१९३४-३८	१९५२-५३	१९३४-३८	१९५२-५३
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२२,४३१	२८,४९२	१९४७६	३५,३३४
अर्जेन्टाइना	६७८३	५६१६	६६३४	७३८६
चीन	२०,१५४	—	२१,७४३	२१,६९५
भारत	१०३१२	९७५९	७१३९	५८६१
आस्ट्रेलिया	५२५३	४०९०	४२००	५२५२
रूस को छोड़कर विश्वयोग	१२७,८००	१३६,५००	१२८,६००	१६४,४००

संसार के गेहूँ उत्पन्न करने वाले क्षेत्र दो वर्गों में विभक्त है। एक तो केवल घरेलू उपभोग के लिए गेहूँ की फसल पैदा करते हैं और दूसरे घरेलू माँग को पूरा करने के साथ-साथ विदेशों को निर्यात भी करते हैं।

गेहूँ का व्यापार—रूस, चीन, भारतवर्ष जैसे घने बसे हुए भागों में गेहूँ की उपज बड़ी महत्त्वपूर्ण है। पर आबादी अधिक होने के कारण समस्त उपज की खपत देश में हो जाती है। कनाडा, आस्ट्रेलिया और अर्जेंटाइना आदि कम बसे हुए देशों का १९३९ के पहले गेहूँ के ८२ प्रतिशत व्यापार पर अधिकार था। यद्यपि ये तीनों देश मिलाकर संसार की समस्त उपज के केवल ९२ प्रतिशत गेहूँ की उपज करते हैं।

दूसरे महासमर के बाद गेहूँ के व्यापार में कुछ परिवर्तन हो गया है। यूरोप की मंडियों में अब अमरीकन गेहूँ की अधिक माँग है। शांतिकाल में बलगारिया, रूमानिया, हंगरी और सोवियत रूस में गेहूँ की पैदावार जरूरत से ज्यादा होती थी और ये देश यूरोप की मंडियों में गेहूँ की माँग की पूर्ति करते थे। परन्तु युद्धकालीन विनाश के कारण ये देश अभी तक भी उत्पादन की युद्धपूर्व अवस्था को प्राप्त नहीं कर सके हैं। आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना से गेहूँ निर्यात की मात्रा घट गई है। फलतः अब संसार में गेहूँ निर्यात करने वाले देशों में संयुक्त राष्ट्र सर्वप्रथम है। नीचे दी हुई तुलनात्मक तालिका से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

गेहूँ का निर्यात (लाख मीट्रिक टनों में)

स्रोत देश	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२
संयुक्त राष्ट्र	१३८०	८६५	१०२५
कनाडा	६०४	६४३	६१४
आस्ट्रेलिया	३४२	३१३	३४६
अर्जेन्टाइना	१६५	२४२	२८१
अन्य देश	२०९	२३९	२७३
	२७००	२३०२	२५३९

देश	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२
यूरोप	१७१८	१२८१	१३९०
एशिया	५८६	५६६	५४४
दक्षिणी अमरीका	१३९	१५९	२३५
उत्तरी व मध्य अमरीका	१११	१५६	१७३
अफ्रीका	११७	११६	१५९
ओसीनिया	२८	२२	२०
अव्यक्त प्रदेश	१	२	१८
	२८००	२३०२	२५३९

सन् १९५१-५२ में गेहूँ के विश्व-निर्यात का ५१ प्रतिशत गेहूँ केवल संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने निर्यात किया। बाकी ४९ प्रतिशत का ब्योरा इस प्रकार है—कनाडा २३ प्रतिशत, अर्जेन्टाइना ११ प्रतिशत; आस्ट्रेलिया १३ प्रतिशत और सोवियत रूस से ३ प्रतिशत।

ग्रेट ब्रिटेन में सबसे अधिक गेहूँ आयात होता है। संसार की मंडियों में आने वाले गेहूँ के ४० प्रतिशत से भी अधिक भाग इस देश में मँगाया जाता है।

(अ) संयुक्त राष्ट्र अमरीका— संयुक्त राष्ट्र में सबसे अधिक गेहूँ उत्पन्न होता है। कंसास, उत्तरी डकोटा, नेब्रस्का, ओकलाहामा, इलिनाय, वाशिंगटन, मिसौरी, मिनेसोटा, ओहिओ गेहूँ के उत्पादन की दृष्टि से मुख्य रियासतें हैं। १९४२ में केवल १०,००० लाख बुशल पैदा हुआ था परन्तु इसके विपरीत १९४७ में १४,००० लाख बुशल से भी अधिक गेहूं उत्पन्न हुआ। सन् १९५० में समस्त संयुक्त राष्ट्र अमरीका में २८० लख टन गेहूं उत्पन्न हुआ। यह मात्रा १९३९ की उपज से ९० लाख टन अधिक थी। उत्तरी डकोटा और कंसास के प्रदेश अलग-अलग २५०० लाख बुशल से भी अधिक गेहूं उत्पन्न करते हैं। उत्तरी डकोटा और मिनेसोटा के मध्य कनाडा की रेड रिवर की घाटी है। इसमें गेहूं की इतनी अधिक उपज होती है कि इसे 'संसार की रोटी की डलिया' (Bread basket of the world) कहते हैं। मिनिआपोलिस, ड्यूलथ, शिकागो और बफैलो गेहूँ के मुख्य केन्द्र हैं। पहले प्रशांत महासागर की तटीय रियासतें भी गेहूँ उत्पादन में प्रमुख थीं परन्तु फल उत्पादन अधिक लाभप्रद होने के कारण, गेहूँ का उत्पादन कम कर दिया गया है। इस क्षेत्र के विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि संयुक्त राष्ट्र में कनाडा से १३ गुनी ज्यादा जनसंख्या है और इसलिए इसकी निर्यात प्रगति सदैव वैसी नहीं रह सकती जैसी आजकल है।

(ब) सोवियत रूस में भी बहुत अधिक गेहूँ उत्पन्न होता है। रूस में गेहूँ का उत्पादन क्षेत्र यूक्रेन की काली मिट्टी वाले भाग तक ही सीमित नहीं रहा

हैं। उत्तरी रूस, पश्चिमी साइबेरिया, पूर्वी साइबेरिया और ओरेनवर्ग प्रदेश में भी गेहूँ की खेती होने लगी है। रूस में मशीनों के प्रयोग और एकचक (Collective) खेतों में कार्यक्षमता की सुविधाओं के कारण गेहूँ का क्षेत्र-विस्तार काफ़ी बढ़ गया है। साधारणतया रूस में करीब एक हजार लाख एकड़ भूमि से प्रतिवर्ष ३८० लाख टन गेहूँ उत्पन्न होता है। गेहूँ की खेती जाड़े और वसंत दोनों ही मौसम में होती है। गेहूँ के कुल खेतों मे ६५-प्रतिशत भाग पर वसन्त ऋतु का गेहूँ उत्पन्न किया जाता है। वसन्त ऋतु के गेहूँ के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र बाल्गा प्रदेश, यूराल्स के आरपार का प्रदेश, कजाक और यूक्रेन हैं। जाड़े की ऋतु का गेहूँ यूक्रेन, उत्तरी काकेशस और क्रीमिया में उगाया जाता है। काले सागर परस्थित ओडेसा और खरसन से गेहूँ का निर्यात होता है। मास्को, गोरकी और ओरेनवर्ग गेहूँ के अन्य क्षेत्र व केन्द्र हैं।

(स) **कनाडा**—कनाडा भी संसार के प्रमुख गेहूं उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। यद्यपि लड़ाई के दिनों कनाडा में गेहूं का उत्पादन कम हो गया था परंतु इसका कारण यह था कि वहाँ के लोग व सरकार गेहूं की अपेक्षा युद्ध-सम्बन्धी धन्धों पर अधिक ध्यान देने लगे थे। फलतः १९४३ में कनाडा की कुल उपज केवल ३,००० लाख बुशल थी जबकि १९४२ में ६,००० लाख बुशल उत्पन्न हुआ था। लेकिन यह कमी केवल कुछ समय के लिए ही थी। सन् १९५० में कनाडा में १३०० लाख टन गेहूं उत्पन्न हुआ। उत्पादन में इस वृद्धि का महत्त्व उस समय स्पष्ट होता है जब हम देखते हैं कि सन् १९३९ में कुल ७० लाख टन उपज हुई थी। मेनिटोवा, सस्केचवान, अलवुर्टा तथा ओन्टेरियो गेहूं के प्रधान क्षेत्र हैं। विनिपेग और पोर्ट आर्थर गेहूं उत्पादन के प्रमुख केन्द्र हैं। इधर कुछ दिनों से मेनिटोवा और सस्केचवान में भूमि की उत्पादन क्षमता कम हो गई है। उधर रेल यातायात की सुविधा हो जाने से पश्चिमी भागों में आना-जाना सरल होगया है। इसलिए गेहूं उत्पादन क्षेत्र हटकर पश्चिम में अलवर्टा में प्रमुख रूप से होगया है। आबादी कम होने से यहां का गेहूं अधिकतर निर्यात कर दिया जाता है। ८८ प्रतिशत से अधिक गेहूं यूरोप की मंडियों को भेजा जाता है और इसमें का लगभग ६० प्रतिशत भाग अकेला ब्रिटिश द्वीपसमूह ही ले लेता है। कनाडा से गेहूं के मुख्य निर्यात-केन्द्र निम्नलिखित हैं :—

न्यूयार्क	——	४० प्रतिशत	हैलीफैक्स	——	⎫
वैनक्यूवर	——	२५ प्रतिशत	सेंटजान	——	⎬ २० प्रतिशत
मानट्रियल	——	१५ प्रतिशत	पौर्टलैंड	——	⎭

(द) **भारतवर्ष**—भारत में पूर्वी पंजाब, मध्य प्रदेश और बरार, मध्यभारत, बंबई और बिहार राज्यों में गेहूं बोया जाता है। पाकिस्तान में सिंध, पश्चिमी पंजाब, उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त प्रदेश में ९० लाख एकड़ भूमि पर गेहूं की खेती होती है। संसार की समस्त उपज का दसवाँ भाग पश्चिमी पाकिस्तान व भारत में उत्पन्न होता है और गेहूं के उत्पादन में इसका चौथा स्थान है। भारतवर्ष में गेहूं घरेलू उपभोग के लिए ही बोया जाता है और दूसरी लड़ाई के बाद से तो भारत काफ़ी

मात्रा में गेहूं का आयात करता है। फिर भी भारत का गेहूं लड़ाई के पहले अन्तर्राष्ट्रीय मंडियों में काफी असर डालता था। जब कभी भी थोड़ा-बहुत निर्यात हो जाता था, अन्तर्राष्ट्रीय मण्डी के भाव पर प्रभाव पड़ जाता था।

यद्यपि संसार की बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ-साथ उपभोग में भी वृद्धि होती जा रही है। परन्तु सयत्न खेती प्रणाली व मशीनों द्वारा उत्पादन की उन्नत विधियों और साइबेरिया चीन और दक्षिणी अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में बेकार भूमि को उपयोग में लाने से गेहूं की उपज इतनी अधिक बढ़ गई है कि उपभोग स उपज अधिक होगई। ऐसा अनुमान किया जाता है कि आस्ट्रेलिया में लगभग २,००० लाख एकड़ भूमि गेहूं के उत्पादन के योग्य है। कुछ भी हो आस्ट्रेलिया, रूस, चीन और दक्षिणी अमेरिका में गेहूं की उपज के विकास के लिए पर्याप्त अवसर है।

सन् १९४९ में वाशिंगटन में 'विश्व गेहूं समिति' (World Wheat Conference) का अधिवेशन हुआ जिसमें आयात करने वाले राष्ट्रों को गेहूं की भरसक माँग-पूर्ति का आश्वासन दिलाने के लिए और निर्यात करने वाले देशों को संसार की माँग का यथोचित भाग देने लिए एक स्वीकृति-पत्र लिखा गया। यह पत्र संसार के ३६ आयात करने वाले और ५ निर्यात करने वाले देशों के बीच एक चारसाला व्यापारिक समझौता है। निर्यात करने वाले देश हैं—कनाडा, संयुक्त राष्ट्र, आस्ट्रेलिया, फ्रांस और युरुगुवे। अभी तक रूस और अर्जेन्टाइना इसमें सम्मिलित नहीं हुए हैं। निर्यात करने वाले इन देशों ने प्रति वर्ष ४,५६० लाख बुशल गेहूं निर्यात करने का वादा किया है। इनमें प्रत्येक का भाग क्रमशः नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जायगा—

कनाडा—२,०३० लाख बुशल, संयुक्त राष्ट्र अमरीका—१,६८० लाख बुशल; आस्ट्रेलिया ८०० लाख बुशल; फ्रांस—३० लाख बुशल; युरुगुवे—२० लाख बुशल।

सन् १९५३ में इस समझौते को ३ वर्ष के लिए और बढ़ा दिया गया है। नये समझौते में संसार के सभी देशों ने हस्ताक्षर किये हैं। आयातक देशों में केवल संयुक्त राज्य और निर्यातक दशों म अकेले युरुगुवे ने इस समझौते मे भाग नहीं लिया। चारु प्रमुख निर्यातक राष्ट्रों—संयुक्त राष्ट्र, कनाडा, आस्ट्रेलिया और फ्रांस—को १६२१ लाख मीट्रिक टन निर्यात करने का अधिकार है। आयातक देशों ने ११२९ लाख टन आयात करने का वादा किया है। ४८ लाख टन का अन्तर संयुक्त राज्य के आयात मात्रा के कारण है। एशिया और मध्य-पूर्व देशों के द्वारा गेहूं की वार्षिक क्रय-मात्रा इस प्रकार है—

भारत	१५ लाख टन
मिश्र	४ " "
इजराइल	२ लाख १५ हजार टन
लेबनान	७५ हजार टन
लाइबेरिया	२ हजार टन

साउदी अरब	६९ हजार टन
लंका	२ लाख ५५ हजार टन

निर्यातक देशों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और कनाडा का स्थान सर्व प्रधान है।

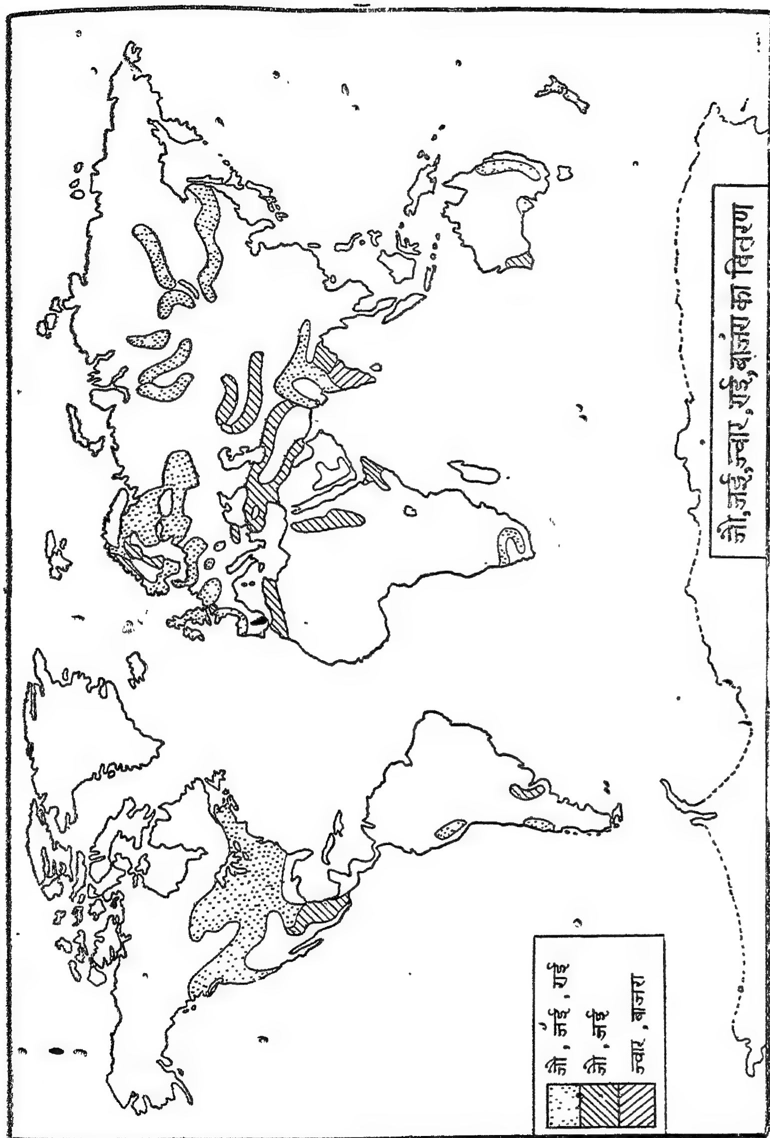
राई—गेहूं के वाद इसका महत्त्व है। इसका पौधा पहले-पहल साइबेरिया में पाया गया और इसीलिए अन्य अनाज के पौधों की अपेक्षा यह अधिक उत्तर में भी उगाया जा सकता है। एशिया और यूरोप में बहुत समय से—सैकड़ों वर्षों से—यह सबसे महत्त्वपूर्ण खाद्यान्न रहा है। इससे जिन (Gin) शराब भी बनाई जाती है। इसके भूसे और सूखी नालों से घोड़ों के कालर, चटाई, टोकरी गद्दे और टोप बनाये जाते हैं।

उपज की दशायें—विशेषकर यह ठंडे और आर्द्र भागों का पौधा है। यह उपजाऊ व अनुपजाऊ सभी प्रकार की भूमि पर उगाया जा सकता है। सोवियत रूस, जर्मनी, पोलैंड, रूमानिया हालैण्ड, स्कैंडिनेविया, हंगरी, ब्रिटिश द्वीपसमूह, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, अर्जेन्टाइना और कनाडा इसके मुख्य उपज क्षेत्र हैं।

राई का उत्पादन

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
देश	१९३८-३९	१९५२-५३	१९३८-३९	१९५२-५३
अर्जेन्टाइना	४३४	१३०५	२५४	१३३५
तुर्की	३५०	५८७	३३६	६६९
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१३४३	५६०	१०२८	४०४
कनाडा	२९७	५०९	१८०	६२४
रूस	२५, ८७०	—	२५,५००	—
फ्रांस	६६३	४३०	७६९	४८२
जर्मनी	२८७८	२७४०	५१५६	५१५४
हालैंड	२१८	१८४	४९६	४९७
पोलैंड	५३५२	५१३६	६८५४	६५०२
विश्व योग (रूस को छोड़ कर)	१६०००	१५२००	२१९००	२१२००

उत्पादन क्षेत्र व व्यापार—समस्त संसार की उपज का ५० प्रतिशत भाग रूस में होता है। चूंकि गेहूँ की अपेक्षा राई का काम मामूली भूमि और अधिक अनियंत्रित जलवायु में भी चल जाता है इसलिए रूस में इसकी खेती बड़ी दूर-दूर तक होती है। वहाँ करीब ६०० लाख एकड़ भूमि पर राई की खेती होती है और यूक्रेन, विलीरूस, ट्रान्स काकेशिया और कजाक के प्रदेश इस दृष्टिकोण से विशेष उल्लेखनीय हैं। राई की औसत प्रति एकड़ उपज २० बुशल तक होती है। संसार



चित्र १२—जौ, राई, जई और ज्वार-बाजरे का वितरण।

की कुल उपज का छठवाँ हिस्सा जर्मनी में होता है। वास्तव में इसकी उपज घरेलू उपभोग के लिए होती है और इसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बहुत कम है। फिर भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका, कनाडा, अर्जेन्टाइना अपनी सीमित उपज का बहुत बड़ा

जौ का उत्पादन और क्षेत्रफल

क्षेत्रफल
लाख हेक्टार
१०० ९० ८० ७० ६० ५० ४० ३० २० १०
१९३४-३८
१९५२-५३
रूस
चीन
संयुक्त राष्ट्र अमरीका
स्पेन
टर्की
कनाडा
जापान
फ्रांसीसी मराक्को
फ्रांस
डेनमार्क

उत्पादन
लाख मीट्रिक टन
१०० ९० ८० ७० ६० ५० ४० ३० २० १०
डेनमार्क
फ्रांसीसी मराक्को
जापान
कनाडा
टर्की
भारत
स्पेन
संयुक्त राष्ट्र अमरीका
चीन
रूस

चित्र १२--जौ की उपज और उसके क्षेत्र।

भाग निर्यात कर देते हैं । स्केन्डिनेविया और अन्य यूरोपीय देशों से भी जहाँ इसकी उपज अधिक होती है वहां से इसको निर्यात कर दिया जाता है ।

जौ (Barley)—यह भी एक खाद्यान्न है । इसकी रोटी बनाई जाती है और पशुओं, घोड़ों तथा सुअरों को खिलाने के काम आती है । इसकी सहायता से रसीली वस्तुओं जैसे खीर आदि को गाढ़ा किया जाता है । इससे बीयर (Beer) और ह्विस्की (Whisky) नामक शराब भी बनाई जाती है ।

उपज की दशायें— इसके पौधे का रूप-रंग व उपज का ढंग बहुत-कुछ गेहूं से मिलता-जुलता है । यह कई प्रकार का होता है । कुछ प्रकार का जौ गर्म शीतोष्ण प्रदेशों में और कुछ प्रकार का उत्तरी प्रदेशों में जहाँ और कोई अन्न नहीं उग सकता, उगाया जाता है । परन्तु साधारणतः यह भूमध्यसागरीय जलवायु में अच्छा उगता है ।

उत्पादन क्षेत्र—संसार में जौ की समस्त उपज गेहूं की एक-तिहाई है और कुल उपज का आधा भाग यूरोप में उत्पन्न होता है । विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों में रूस का सर्वप्रथम स्थान है और संसार की समस्त उपज का एक-तिहाई भाग रूस में ही होता है । सन् १९३९ के बाद के वर्षों में रूस की उपज के आँकड़े अज्ञात हैं । सन् १९३९ में रूस की २१० लाख एकड़ भूमि पर जौ की खेती होती थी और यूक्रेन व उत्तरी काकेशस इसके लिए विशेष महत्त्वपूर्ण थे । रूस में जौ की प्रति एकड़ उपज २१ बुशल थी । सन् १९५०—५१ में जौ का कुल उत्पादन ४,६४० लाख मीट्रिक टन से कुछ अधिक ही था । रूस, संयुक्त राष्ट्र और चीन का प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों में क्रमशः महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

सन् १९५२ में जौ का विश्वव्यापी उत्पादन महायुद्ध के पूर्व के औसत से २० प्रतिशत अधिक था । इस बढ़ोतरी के आधे से अधिक भाग का श्रेय कनाडा को है । कनाडा में जौ का उत्पादन सन् १९५१ की अपेक्षा ४३ प्रतिशत अधिक हुआ । सन् १९५२ की जौ की फसल १९३४ और १९३८ के बीच के सालों की वार्षिक उपज से तिगुनी होगई । इस प्रकार जौ के उत्पादन में कनाडा ने बड़ा ही प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया है ।

उपज व व्यापार—विभिन्न उत्पादक क्षेत्रों में उपज के तरीके अलग-अलग हैं । इसीलिए उपज प्रति एकड़ विभिन्न है । डेनमार्क में उपज सबसे अधिक—प्रति एकड़ में २,६५६ पौंड होती है । जर्मनी, ब्रिटेन और जापान भी बहुत अधिक पीछे नहीं हैं । फ्रांस, संयुक्त राष्ट्र, हंगरी, चीन, कनाडा और पोलैण्ड में उपज प्रति एकड़ १,००० और १,२०० पौंड तक है । भारत, रूस और रूमानिया में प्रति एकड़ उपज बहुत कम है—केवल ५०० से ८०० पौंड तक । वास्तव में जौ की प्रति एकड़ उपज भूमि, नमी, बीज की किस्म और उगाने के तरीकों पर निर्भर रहती है । कनाडा के प्रत्येक प्रान्त में जौ उत्पन्न किया जाता है, पर मनीटोबा और आन्टरियो में सब अधिक जौ पैदा होता है ।

जौ (क्षेत्रफल और उत्पादन)

	क्षेत्रफल	(हजार हेक्टर)	उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
देश	१९३८-३९	१९५३-५४	१९३८-३९	१९५३-५४
कनाडा	१६७७	३४३१	१७६४	६३४३
चीन	६७३९	६२६५	७८७१	६९९७
डेनमार्क	३७०	५६७	११०३	२१३१
भारत	२६१९	३१५६	२११३	२१७०
जापान	७६४	९३०	१७५८	२८७८
तुर्की	१७७२	२३१२	१९३०	३१८९
संयुक्त राज्य	३७४	९२३	७८२	२२५२
संयुक्त राष्ट्र	३८७९	३३४४	४४९५	४९४२
रूस	१०,९६०	——	१०,२२०	——
विश्वयोग	३५,७००	४०,४००	४१,०००	५३,०००

रूमानियाँ, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, रूस, अर्जेन्टाइना, पोलैंड, कनाडा और ईराक जौ का निर्यात करते हैं। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, हालैण्ड, बेल्जियम और फ्रांस का स्थान आयात की दृष्टि से क्रमशः महत्त्वपूर्ण है। ब्रिटिश साम्राज्य में कनाडा निर्यात करता है और ग्रेट ब्रिटेन आयात।

जई (Oats)—यह संसार का सबसे विस्तृत उपज वाला खाद्यान्न है। परन्तु अधिकतर इसे घरेलू उपयोग के लिये ही उगाया जाता है और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है। प्रधानतः इसका उपयोग जानवरों व घोड़ों को खिलाने में होता है पर मनुष्य भी खाते हैं।

उपज की दशायें—जई के लिये ठंडी व तर जलवायु की आवश्यकता होती है। इसीलिये इसकी खेती यूरोप और उत्तरी अमरीका के उत्तरी अक्षांशों में अधिक होती है। इसका वार्षिक उत्पादन लगभग गेहूं के बराबर है। आगे की तालिका से इसकी वार्षिक उपज व वितरण का अनुमान हो सकेगा:—

जई का विश्व उत्पादन

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
देश	१९३४–३८	१९५२–५३	१९३४-३८	१९५२–५३
कनाडा	५,४३७	४,४७७	५,०१८	७,१९९
फ्रांस	३,२७८	२,२७५	४,५७२	३,३५५
संयुक्तराज्य	९८९	१,१६६	२,०१९	२,८१६
संयुक्तराष्ट्र	१४,१४८	१५,६३८	१३,९७३	१८,४०९
रूस	१९,९७०	—	२०,०३०	——
अर्जेन्टाइना	७९४	८५४	७४८	१,१०६
विश्व	३८,१००	३७,१००	४५,१००	५०,२००

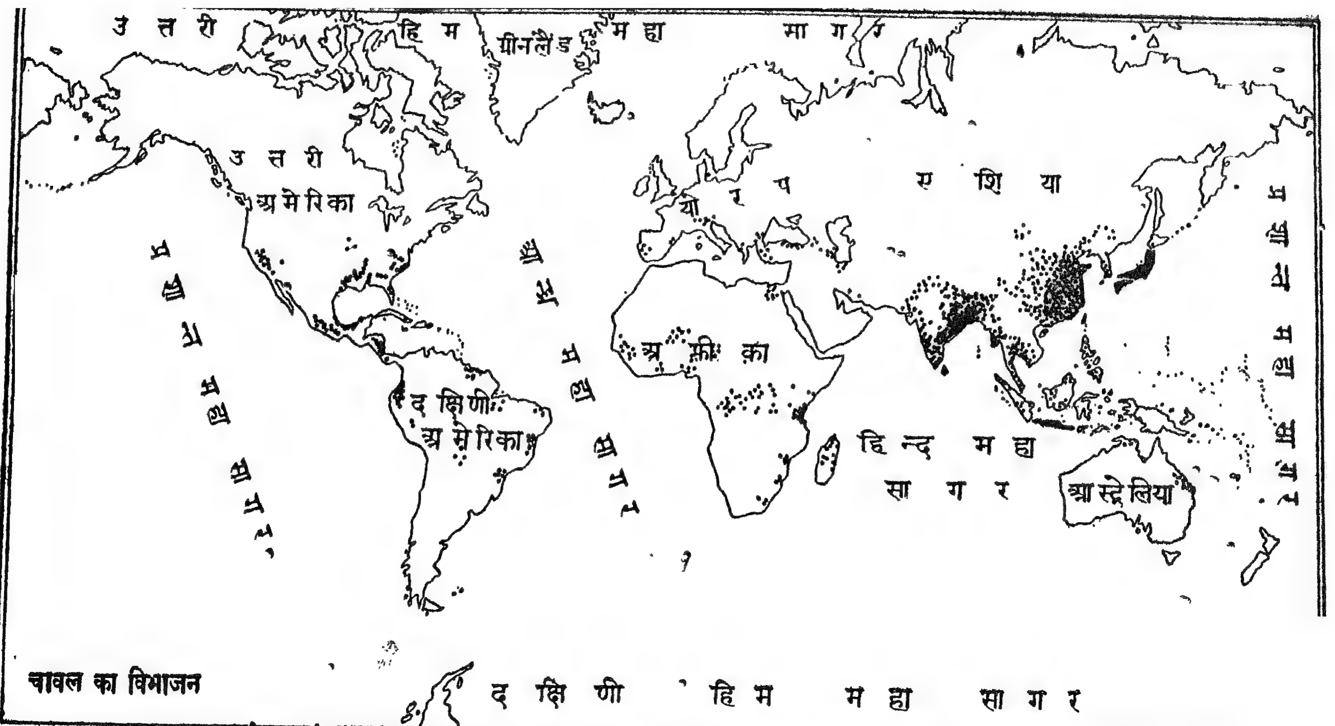
सन् १९५०--५१ में जई का कुल उत्पादन ५१०लाख मीट्रिक टन था जबकि सन् १९३८ में समस्त विश्व की जई कुल ४५० लाख टन ही थी। सन् १९५२-५३ में जई का कुल उत्पादन १९३४—३८ के औसत से १२ प्रतिशत अधिक था। उपज में बढ़ोतरी का श्रेय एकमात्र संयुक्त राष्ट्र अमरीका को ही है, क्योंकि संसार के अन्य देशों का औसत उत्पादन महायुद्ध के पूर्व जैसा ही रहा।

उपज क्षेत्र व अंतर्राष्ट्रीय व्यापार—संयुक्त राष्ट्र व रूस में संसार की आधी जई उत्पन्न की जाती है। इसमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बहुत ही कम है। अर्जेन्टाइना व चिली को छोड़कर प्रायः सभी अन्य उत्पादक देश इसे घरेलू उपभोग के लिये उत्पन्न करते हैं। फिर भी पिछले थोड़े दिनों से रूस, जर्मनी, संयुक्तराष्ट्र, कनाडा और डैन्यूब के देशों ने जई को पर्याप्त मात्रा में विदेशी मंडियों को भेजा है। आयात करने वाले प्रमुख देश ग्रेट ब्रिटेन, इटली, स्वीट्जरलैण्ड, बेल्जियम, हालैण्ड, फ्रांस और डेनमार्क हैं।

चावल—(Rice)—चावल संसार की आधी जनसंख्या का मुख्य भोजन है। भारत में इससे एक प्रकार की शराब भी बनायी जाती है और चीन, जापान में अनेक प्रकार के मादक पदार्थ बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है। इसकेपुआल व डंठल से चप्पलें, हैट और विभिन्न प्रकार की अनेक वस्तुएं बनाई जाती हैं। इसके भूसे को गद्दे-तकिये भरने व सामान सुरक्षित रूप से भेजन में प्रयोग करते हैं। इसको सीमेंट में मिलाकर ध्वनि-निरोधक दीवालें (Sound-proof walls) बनाने में उपयोग करते हैं।

उपज की दशायें—चावल का पौधा यों तो कई प्रकार की भूमि पर उग सकता है परन्तु सबसे अनुकूल भूमि दोमट मिट्टी होती है। इसमें जड़ों का पूरा विकास हो सकता है, साथ-साथ अगर नीचे की परत भारी चिकनी मिट्टी की हो जिसमें पानी इकट्ठा हो सकें तो और भी अच्छा है। उच्च तापक्रम और भारी वर्षा के प्रदेशों में यह खूब बढ़ता है। उगने व बढ़वार के समय तापक्रम ७५° से कम नहीं होना चाहिए। ४५ इंच से कम वार्षिक जलवृष्टि के प्रदेशों में चावल नहीं बोया जा सकता है। इसे दलदली दशायें चाहिएं और उपज के काल में यदि अधिकतर भाग में पानी भरा रहे तो और भी अच्छा है। अतः चावल के उत्पादन के लिए नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी से बनी हुई घाटियों व डेल्टा प्रदेशों की समतल भूमि सबसे अच्छी रहती है।

चावल उगाने तथा छोटा अंकुर निकल जाने पर उसे एक स्थान से दूसरे खेत में ले जाकर बोने में हाथ की मेहनत की जरूरत पड़ती है अतः सस्ते मजदूरों की उपलब्धता से इसकी खेती को विशेष सहायता मिलती है। प्रायः चावल को उगाने से सम्बन्धित सभी काम हाथ से ही करने पड़ते हैं। हाल में इटली में चावल के अंकुर उखाड़ कर फिर से बोने के लिए मशीनों का प्रयोग किया जाने लगा है। दक्षिणी-पूर्वी एशिया में लंका ही सर्वप्रथम देश है जहाँ इन मशीनों का प्रयोग किया गया है। ये मशीनें इटली से आती हैं और इनके द्वारा ७० आदमियों का काम



चित्र १४—चावल के उत्पादन का वितरण—इसका प्रधान प्रदेश दक्षिणी-पूर्वी एशिया है।

किया जा सकता है तथा चावल के दस एकड़ खेतों को ८ घंटे में फिर से बोया जा सकता है।

चावल के प्रकार और उगाने के तरीके—साधारण तथाचावल उपज की रीति व दशाओं के अनुसार निम्नलिखित दो प्रकार का होता है:—

(१) उच्च भूमि का चावल (Hill Rice); (२) दलदली निचली भूमि का चावल (Swamp Rice)। इन्हें अक्सर जैपोनिका और इंडिका चावल भी कहते हैं। प्रथम प्रकार का चावल उच्च अक्षांशों में तथा दूसरे प्रकार का चावल भूमध्यरेखीय और उष्ण कटिबंधीय भागों में होता है। उच्च भूमि के चावल को दलदली भूमि के चावल की अपेक्षा कम पानी की आवश्यकता होती है और जहाँ पानी काफी बरसता है वहां बिना सिंचाई के यही चावल उगाया जा सकता है। इसे अक्सर पहाड़ी चावल भी कहते हैं। पहाड़ी चावल की प्रति एकड़ उपज आमतौर से दलदली चावल की उपज की आधी होती है। इसीलिए पहाड़ी चावल महँगा होता है और कम उगाया जाता है। दलदली चावल को उपज काल में पानी के नीचे डूबा रहना चाहिये और इसीलिए समतल भूमि में सिंचाई की सुविधा वाले प्रदेशों में दलदली चावल ही उगाया जाता है।

उच्च भूमि का चावल अधिकतर मलाया प्रायद्वीप तथा इसके समीप के द्वीपों, उष्णकटिबन्धीय अमरीका और भूमध्यरेखीय अमरीका के आदि निवासी उत्पन्न करते हैं। पूर्वी व दक्षिणी एशिया के मानसून प्रदेश दलदली चावल के लिए बहुत उपयुक्त हैं।

भिन्न-भिन्न देशों में चावल की प्रति एकड़ उपज (पौंडों में)

जैपोनिका		इण्डिका	
		जावा	१,०३४
जापान	२,३५२	थाईलैंड	८८८
मिस्र	१,८९०	बर्मा	८१६
कोरिया	१,५९३	भारत	७७२
चीन	१,५४९	हिन्दचीन	७१६
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१,३९०	फिलिपाइन	७०३

यद्यपि प्रति एकड़ उपज में यह अन्तर खेती के तरीकों से भी उत्पन्न होता है परन्तु ऊपर की तालिका से एक बात तो बिल्कुल सिद्ध है कि जैपोनिका किस्म के चावल को कुछ विशेष स्वाभाविक सुविधायें अवश्य प्राप्त है। यही कारण है कि जैपोनिका किस्म के चावल की खेती करने वाले देशों की उपज (प्रति एकड़) इण्डिका उगाने वाले प्रदेशों से कहीं अधिक है।

जैपोनिका चावल उच्च अक्षांश वाले देशों का चावल है और इण्डिका उष्ण कटिबंधीय तथा भूमध्यरेखीय एशिया का। अतएव इन दोनों के बीच स्थानान्तरण कदापि सम्भव नहीं है। केवल इन दोनों किस्मों को मिलाकर एक नई किस्म ही निकाली जा सकती है। फिर दोनों किस्मों को मिलाना भी कोई आसान नहीं है।

जैपोनिका और इण्डिका की उपज दशाओं में बड़ा अन्तर है। जपानिका तो उच्च अक्षांशों के लम्बे दिन के प्रकाश में केवल १०० दिन में तैयार हो जाता है जबकि कम दैनिक प्रकाश के क्षेत्रों में इण्डिका को ४ से, ६ महीने तक लगते हैं।

उपज के क्षेत्र—भारत, चीन, बर्मा, मलाया, लंका, इंडोनेशिया, इन्डोचीन, स्याम, कोरिया, फ़ारमोसा, जापान और फिलीपाइन द्वीपसमूह में चावल की खेती प्रधान है। मिश्र, इटली, स्पेन, संयुक्त राष्ट्र और ब्राजील में चावल की थोड़ी-बहुत खेती होती है। प्राकृतिक बाधाओं के कारण चावल के उत्पादन के क्षेत्र में यूरोप, एशिया की अपेक्षा बहुत काफी पीछे है। केवल भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में गर्म व तर मैदानों पर चावल की खेती की अनुकूल दशायें पाई जाती हैं परन्तु वहाँ भी सिंचाई की आवश्यकता रहती है। चावल के विश्व-उत्पादन में इटली का भाग नगण्य है परन्तु इटली में चावल की प्रति एकड़ उपज बहुत अधिक है। इटली के उत्तरी प्रान्तों—पीडमान्ट, लम्बार्डी, वैनीशिया, इमिलिया और टस्कैनी—में नदी की घाटियों में चावल उगाया जाता है।

भारत और चीन संसार में चावल उत्पन्न करने वाले सबसे महत्त्वपूर्ण देश हैं। यहाँ संसार का सबसे अधिक चावल उत्पन्न होता है। वैसे तो सभी मानसूनी जलवायु वाले प्रदेशों में—जापान, इंडोचीन, इंडोनेशिया, स्याम, कोरिया और पूर्वी पाकिस्तान में चावल की उपज बहुत अधिक है पर भारत और चीन का इस क्षेत्र में विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। सन् १९५३ में समस्त संसार में चावल का कुल उत्पादन १६८० लाख टन था। निम्न तालिका से भिन्न-भिन्न महाद्वीपों में चावल की उपज की मात्रा स्पष्ट हो जायेगी—

चावल का क्षेत्रफल और उत्पादन (१९५३)

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)	उत्पादन (हजार टन)
यूरोप	३५०	१६७०
उत्तरी और मध्य अमरीका	१३००	३०५०
दक्षिणी अमरीका	२८००	४४१०
अफ्रीका	२८००	३४००
एशिया	९१०००	१,५६,०००
विश्वयोग	९८,४००	१६८,०००

इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रमुख देशों में चावल का उत्पादन मिलाकर संसार का कुल उत्पादन प्रायः उतना ही है जितना कि महायुद्ध से पूर्व था। ऊपर की तालिका को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि महायुद्ध से पूर्व के उत्पादन की अपेक्षा बर्मा, चीन, भारत और कोरिया में उपज की मात्रा कम हो गई परन्तु साथ-साथ थाईलैण्ड, ब्राजील तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका में उपज की मात्रा बढ़ी। फिर भी कुल उत्पादन करीब-करीब स्थायी ही बना रहा।

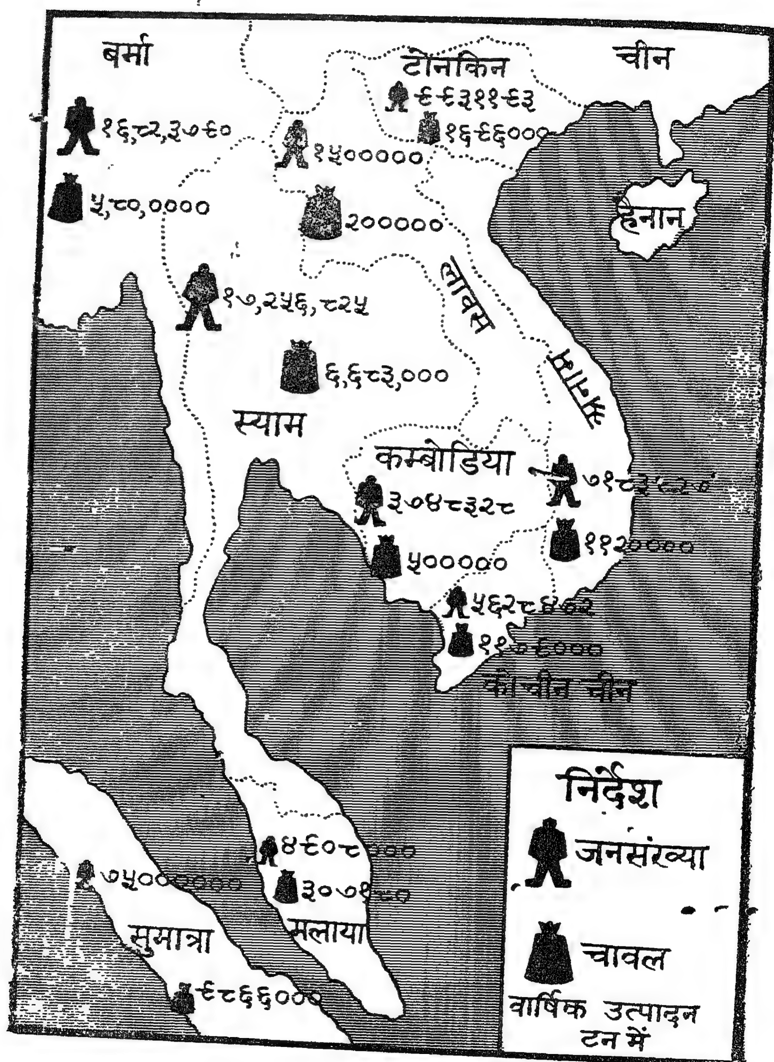
चावल : क्षेत्रफल और उत्पादन

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
	१९३४-३८	१९५२-५३	१९३४-३८	१९५२-५३
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	३८७	७९८	९५६	२२०७
ब्राजील	९५६	१९८०	१३६५	३१५०
बर्मा	४९३१	४०००	६७९१	५८३०
चीन	१९७७१	१९०००	५०,०६५	४४,५९९
भारत	२२३०७	३०२१२	२९६४५	३५,६९८
हिन्दचीन	५५९०	—	६४९८	—
जावा और मदूरा	३८४३	—	६०८१	६७९०
जापान	३१६९	३००४	११५०१	१२४०४
पाकिस्तान	७५६२	९१३६	११,६९	१२,२११
फिलीपाइन	१९९०	२३५८	२१७९	२९४२
थैलैण्ड	३३७०	५१३०	४३५७	६६०२

इधर कुछ दिनों से सोवियत रूस में चावल का उत्पादन बढ़ रहा है और अजरवेजान, उत्तरी काकेशिया, कजाक और सुदूपूर्व के भागों में करीब पांच लाख एकड़ भूमि पर चावल की खेती की जा रही है। औसत प्रति एकड़ उपज भी काफी है—लगभग ४२ बुशल, परन्तु साधारणतया भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में चावल की प्रति एकड़ उपज विभिन्न हैं। जापान में चावल की प्रति एकड़ उपज २,३५२ पौंड है और इसके विपरीत भारत की औसत प्रति एकड़ उपज इसकी एक-तिहाई भी नहीं है। भारत में चावल के खेतों का विस्तार संसार में सबसे अधिक है परन्तुसाथ-साथ प्रति एकड़ उपज सबसे कम है। जापान और दक्षिणी-पूर्वी एशिया के अन्य देशों के बीच प्रति एकड़ उपज के भारी अन्तर का प्रमुख कारण यह है कि दोनों जगह पर उत्पन्न किये जाने वाले चावल की किस्म अलग-अलग है। जापान में उगाये जाने वाला चावल जैपोनिका किस्म का है और दक्षिणी-पूर्वी एशिया व भारत का चावल इण्डिका किस्म का।

चावल का व्यापार—भारत, चीन, जापान, पूर्वी पाकिस्तान, जावा तथा फिलीपाइन में आबादी अधिक होने से चावल का घरेलू उपभोग बहुत अधिक है। इसलिए उपज अधिक होने पर भी निर्यात के लिए चावल बचता ही नहीं है। इसलिए बर्मा, स्याम और इंडोचीन जैसे कम बसे हुए भागों की उपज संसार की मंडियों में व्यापार के लिए आती है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के विनाशकारी प्रभावों के कारण एशिया के अनेक देश अभी तक भी पर्याप्त मात्रा में चावल का निर्यात करने में सफल नहीं हुए हैं। बर्मा और इंडोचीन में राजनैतिक उथल-पुथल के कारण छोड़ी हुई भूमि पर अभी तक खेती फिर से शुरू नहीं की जा सकी है। इन्हीं कारणों से उत्पादन व निर्यात दोनों ही दशाओं में रुकावटें आती रही हैं। फिर भा स्याम में अपेक्षतः दशाएं अधिक अनुकूल हैं।



चित्र १५—चावल की खेती और जनसंख्या का घनत्व

चावल : अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

(हजार मीट्रिक टन)

निर्यात	१९४९	१९५३	आयात	१९४९	१९५३
थैलैण्ड	१११९	१३४२	भारत	८०१	२२१
बर्मा	११९४	९७१	मलाया	५०३	५३८
संयुक्त राष्ट्र	५१६	४९२	लंका	४०३	४१०
मिस्र	३३९	१७३	इण्डोनीशिया	२७६	३३०
हिन्दचीन	१०५	२१५	जापान	१३६	५९६
अन्य देश	२२५	२५८	अन्यदेश	११३०	१५५०
कुल योग	३७५२	३६०५	कुल योग	३५२०	३६४५

चावल सम्बंधी मुख्य समस्याएँ—आज की चावल समस्या द्विमुखी है। अल्पकालीन समस्या तो यह है कि चावल की उपज को शीघ्र बढ़ाया जावे ताकि चावल खाने वाली जनसंख्या को भूख का शिकार न होना पड़े और चावल की माँग व पूर्ति में अधिक अन्तर न रहे। सन् १९४८--४९ में धान (बगैर साफ किए हुए चावल) का विश्व-उत्पादन १,४५० लाख टन था परन्तु फिर भी लड़ाई के पहले के उत्पादन की अपेक्षा यह २९ लाख टन कम था। इसी कालान्तर में जनसंख्या की वृद्धि पर ध्यान दिया जाय तो यह कमी बड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। चावल का उपभोग करने वाले प्रदेशों में सन् १९३९ से १९४९ तक दस वर्षों के भीतर लगभग १० करोड़ की वृद्धि हो गयी। फलतः युद्ध के पहले के उपभोग से अब माँग दस प्रतिशत बढ़ गई है। दीर्घकालीन समस्या यह है कि जनसंख्या तो उत्तरोत्तर बढ़ रही है परन्तु उपज का तल बहुत कुछ स्थिर-सा है। अतएव उत्तरोत्तर बढ़ती हुई जनसंख्या और बहुत कुछ स्थिर उपज में संतुलन स्थापित करना बड़ा ही आवश्यक है। एशिया के ७० प्रतिशत लोगों का मुख्य भोजन चावल ही है और यद्यपि इधर १२ वर्षों में जनसंख्या में १० प्रतिशत से अधिक वृद्धि हो गई है, चावल की उपज की मात्रा बहुत कुछ स्थायी सी है। इस समय चावल की उपज उतनी ही है जितनी कि सन १९४० के पहले थी। फलतः दक्षिण-पूर्वी एशिया निर्यात की अपेक्षा आयात करने लगा है और अपने यहां की भोजन-सम्बन्धी कमी को उत्तरी अमरीका से रोटी बनाने वाले अनाज तथा मिश्र और ब्राजील से चावल मंगवा कर पूरा करता है।

वास्तव में सच तो यह है कि चावल की खेती और उपज उन तरीकों पर निर्भर है जिन्हें बदलना नामुमकिन है। चाहे चावल के किसान अपने तरीकों को बदलने के महत्व को समझ भी लें तो भी नयी प्रणाली से परिचित होते-होते काफी समय लग जायेगा। इसके विपरीत यदि अच्छे किस्म के बीज उपलब्ध कर दिये जायें तो यह समस्या हल हो सकती है। अतएव इस प्रदेश में स्थित विभिन्न राष्ट्रीय सरकारों ने अच्छे किस्म के बीज निकालने की ओर ध्यान देना शुरू किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ की भोजन व कृषि संस्था तथा भारत सरकारने मिलकर एक चावल

अनुसंधानशाला खोली है और इस योजना के अन्तर्गत भारत, पाकिस्तान, वर्मा, लंका, इंडोनेशिया, हिन्दचीन, थाइलैंड, मलाया, फिलीपाइन और जापान मिलकर काम कर रहे हैं।

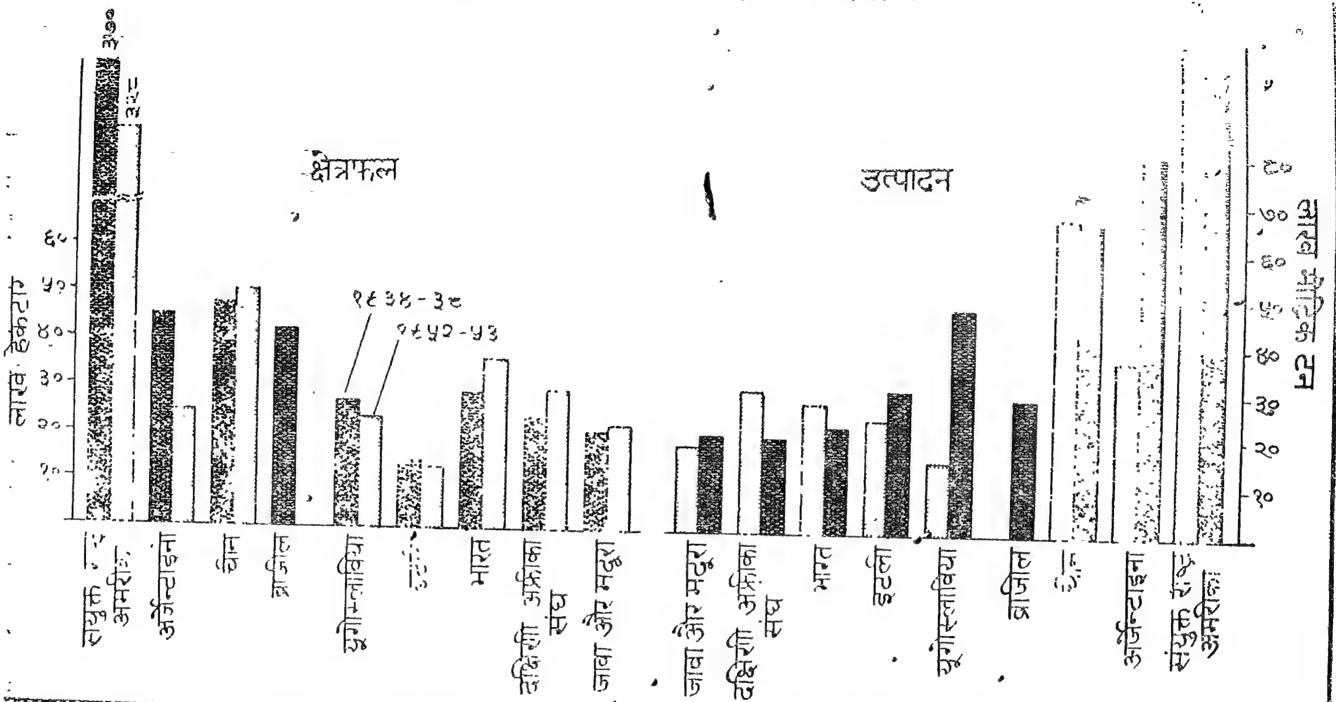
चावल सम्वन्धी इन्हीं समस्याओं को सुलझाने के लिए एशिया में चावल भोगी व उत्पादक राष्ट्रों की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था स्थापित कर दी गई है। इस संस्था ने चावल के मूल्य व उपज भंडार पर नियन्त्रण रखने और अन्तर्राष्ट्रीय वितरण के कार्यों को संभाल लिया है।

मक्का (maize)—यह दक्षिणी अमरीका का आदि पौधा है और इस समय संसार के प्रमुख खाद्यान्नों में से एक है। इसका प्रयोग, शराब, मैदा, माड़ी व ग्लूकोज वनाने में अधिक होता है। इसमें मोटा करने का गुण है और इसकी उपज भी वहुत अधिक होती है इसीलिए इसे जानवरों को पालने व मोटा करने के लिए दिया जाता है। मनुष्य भी इसे बहुत रूप में खाते हैं। इसके भुट्टा, आटा या मैदा से वहुत से भोज्य पदार्थ तैयार किये जाते हैं।

उपज की दशाएं - मक्का को गेहूँ की अपेक्षा अधिक तापक्रम चाहिए। गर्मी के मौसम की वर्षा भी इसके लिए काफी होनी चाहिए। भूमि उपजाऊ और ऐसी होनी चाहिए जिसमें पानी न टिक सके। कोहरा हानिकर होता है। काफी धूप इसे लाभ पहुँचाती है। आठ इंच से कम वार्षिक जलवृष्टि के प्रदेशों में मक्का का पौधा मुश्किल से पनप पाता है। इसकी खेती के लिए सबसे अनुकूल बर्षा की मात्रा २० इंच चाहिए।

उपज के क्षेत्र—संयुक्तराष्ट्र अमरीका में संसार का चार पंचमांश मक्का उत्पन्न होता है। अर्जेन्टाइना, रूस, रूमानिया, ब्राजील, यूगोस्लाविया, भारत, मैक्सिको और इटली उत्पादन की दृष्टि से क्रमशः महत्त्वपूर्ण हैं।

उत्पादन और निर्यात दोनों ही दृष्टिकोणों से **संयुक्तराष्ट्र अमरीका** संसार का प्रमुख प्रदेश है। मिसौरी, इंडियाना, नेब्रास्का और ओहियो में मक्का को जानवरों के भोजन के वास्ते उगाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र का मांस व्यवसाय भी इसी क्षेत्र में केन्द्रित है और शिकागो, सेंट लुइस, इण्डियानापोलिस तथा सिनसिनाटी इस उद्योग के मुख्य केन्द्र हैं। उत्पादन की दृष्टि से **अर्जेन्टाइना** का दूसरा स्थान है। दक्षिणी अफ्रीका में भी मक्का की खेती एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है और पिछले चालीस वर्षों में इस ओर बड़ी तरक्की हुई है। भारत में **मानव-भोजन** के लिए ही मक्का की खेती की जाती है।



चित्र १६—मक्का उत्पादक प्रदेश

मक्का का विश्व व्यापी उत्पादन

(हजार मीट्रिक टनों में)

क्षेत्र	महायुद्ध के पूर्व का औसत	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२
अर्जेन्टाइना	७,८९२	८३६	९,६७०	१,९९०
ब्राजील	५,७७७	६,१६२	६,०००	६,३००
इटली	३,०००	९,२११	१,९२३	२,७५०
रूमानिया	४,०३२	५,२७९	——	——
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	५३,०६६	८५,८४१	७७,६७१	७४,७१५
यूगोस्लाविया	४,७०८	३,७१८	२,०८५	४,०३३

सन् १९५१-५२ में संसार में मक्का का कुल उत्पादन १३२० लाख मीट्रिक टन था। सन् १९३४-३८ के उत्पादन की अपेक्षा यह मात्रा २० प्रतिशत अधिक थी। इस बढ़ोत्तरी का श्रेय संयुक्तराष्ट्र अमरीका को है जहाँ मक्का का उत्पादन युद्धपूर्व की अपेक्षा ४१ प्रतिशत अधिक था। संसार के प्रमुख मक्का उत्पादकों में संयुक्तराष्ट्र का स्थान सर्वप्रथम है। वहाँ से संसार का ५६ प्रतिशत मक्का प्राप्त हुआ। इसके बाद ब्राजील का स्थान आता है। पहिले अर्जेन्टाइना का स्थान द्वितीय था परन्तु सन् १९५१-५२ में अर्जेन्टाइना का उत्पादन महायुद्ध से पूर्व की अपेक्षा ७५ प्रतिशत कम हो गया। इसलिए अब क्रमशः ब्राजील, यूगोस्लाविया और इटली का स्थान है। इन सबके बाद अर्जेन्टाइना का स्थान आता है।

व्यापार—मक्का निर्यात करने वाले मुख्य देश संयुक्तराष्ट्र अमरीका अर्जेन्टाइना, रूमानिया, यूगोस्लाविया और दक्षिणी अफ्रीका हैं। ग्रेट ब्रिटेन में मक्का का सबसे अधिक आयात होता है और विशेषकर दक्षिणी अफ्रीका, संयुक्त-राष्ट्र, अर्जेन्टाइना और रूमानिया से।

ज्वार-बाजरा (Millets)—मानसूनी जलवायु के प्रदेशों का यह प्रमुख खाद्यान्न है। मानव-भोजन अथवा जानवरों के चारे के लिए इसे उगाया जाता है।

उपज की दशाएँ—यह विशेषकर उन गर्म देशों में उगता है जहां की वार्षिक वर्षा कम व अनिश्चित होती है। काफी शुष्क प्रदेशों में बिना सिंचाई के भी इसे उगाया जा सकता है।

उपज के क्षेत्र व व्यापार—भारत, चीन, जापान, संयुक्तराष्ट्र व सूडान इसकी उपज के मुख्य क्षेत्र हैं। इसमें व्यापार कम होता है और प्रायः स्थानीय उपभोग के लिए ही इसको उगाया जाता है। भारत में मद्रास, बम्बई और हैदरा-बाद राज्यों की यह खास फसल है।

२. पेय पदार्थ (Beverage Crops)

चाय (Tea)—यह एक सदाबहार वृक्ष की सुखाई हुई पत्तियों का नाम है। सभ्य जनता में इसका प्रचार इतना लोकप्रिय हो गया है कि अब यह मनुष्य की आवश्यकताओं में से एक हो गई है। चीन, ग्रेट ब्रिटेन, रूस, हालैण्ड, आस्ट्रे-लिया और दक्षिणी अमरीका के लोग चाय के विशेष आदी है।

उपज की दशाएँ—चाय की खेती के लिए गहरी मिट्टी वाली उपजाऊ भूमि चाहिए। इसकी भूमि पर पानी नहीं टिकना चाहिए। इसलिए ढालू भूमि सबसे अच्छी होती है और इसकी खेती विशेषकर पहाड़ों के ढालों पर या घाटियों के ढालू भूमि पर होती है। गर्मी के मौसम में कड़ी गर्मी अत्यावश्यक है।

यह तो हुई प्राकृतिक दशाओं की बात। चाय के उत्पादन के लिए एक आर्थिक आवश्यकता भी जरूरी है– सस्ते मजदूर काफी संख्या में उपलब्ध होने चाहिएँ। चाय की पत्तियों को हाथ से ही तोड़ा जा सकता है। इसलिए काफी श्रम की आवश्यकता होती है। अतएव चाय का खेती उष्णकटिबन्धीय भागों में की जाती है जहाँ सस्ते दाम पर काफी मजदूर मिल सकें या यूं कहा जा सकता है कि ऐसे ही प्रदेशों में चाय की खेती लाभप्रद होती है।

उपज के क्षेत्र—चीन, भारत, लंका, जावा और जापान चाय उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश हैं। नैटाल और फिजी में भी कुछ चाय उगाई जाती है। चाय का निर्यात प्रधानतः भारत, लंका, चीन, जापान और फारमोसा से होता है।

चाय का क्षेत्रफल तथा उत्पादन

	क्षेत्रफल (हजार हेक्टर)		उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)	
	१९३४-३८	१९५३-५४	१९३४-३८	१९५३-५४
भारत	२९४	३१४	१६७	२७५
लंका	२२६	२३२	१०३	१५६
इन्डोनीशिया	२००	७६	७५	४६
जापान	३९	२८	४९	४४
पाकिस्तान	४४	३०	२५	२५

यद्यपि चीन में सबसे अधिक क्षेत्र में चाय की खेती होती है पर घरलू उपभोग की मात्रा अधिक होने से निर्यात के लिए बहुत थोड़ी चाय बचती है। इस समय चाय का निर्यात करने वाला मुख्य देश भारत है जो कि संसार की मांग का आधे से अधिक भाग पूरा करता है। भारत में चाय का मुख्य उत्पादन क्षेत्र उत्तर-पर्व में उत्तरी बंगाल और आसाम के पहाड़ी ढालों पर है। थोड़ी चाय, करीब पंचमांश दक्षिण में नीलगिरि की पहाड़ियों पर भी होती है। भारत में चाय की खेती की एक विशेषता यह है कि यहाँ अधिकतर बाग विदेशियों के हाथों में हैं। पूर्वी पाकिस्तान में भी कुछ चाय के बाग हैं जो सिलहट व चिटगांव के प्रदेश में सीमित हैं।

चाय के व्यापार की समस्याएँ—भारतवर्ष से सबसे अधिक चाय निर्यात की जाती है। निर्यात करने वाले अन्य प्रमुख देश लंका, पाकिस्तान और इन्डोनेशिया हैं। सन् १९४९-५० के प्रथम नौ महीनों में भारत से ३२२,९३७ हजार पौंड चाय बाहर भेजी गई। भारत से चाय मंगाने वाले प्रमुख देश ग्रेट ब्रिटेन, रूस,

फ्रांस, संयुक्तराष्ट्र, कनाडा और आस्ट्रेलिया हैं। सन् १९४९-५० में लंका ने २९७, २५९, पाकिस्तान ने ३४,००८ और इण्डोनेशिया ने ४७,२२७ हजार पौंड चाय निर्यात की।

चाय : प्रधान निर्यातक देशों का निर्यात

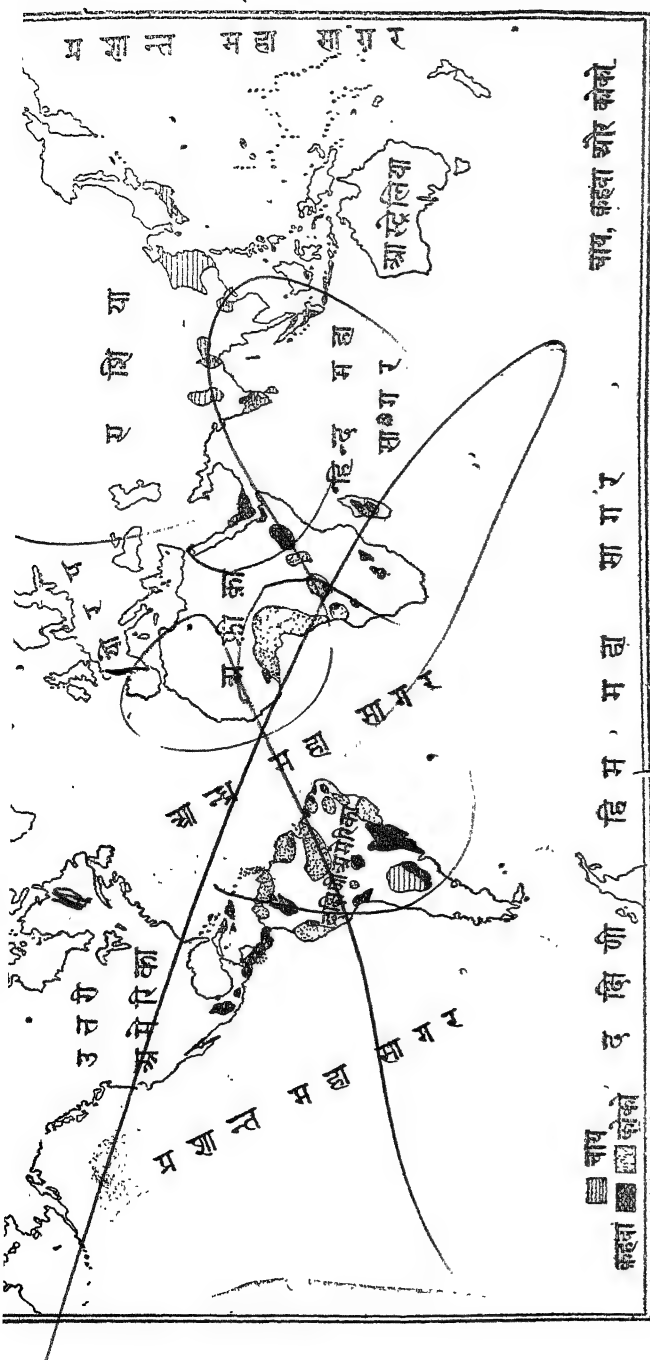
(हजार मीट्रिक टन)

निर्यातक देश	१९३४-३८	१९४९	१९५०	१९५३
भारत	१५२	२२१	१७८	२२४
पाकिस्तान		१२	७	१२
लंका	१००	१३५	१३५	१५२
इन्डोनेशिया	६८	२२	२८	२८
ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका	७	१०	१३	—
जापान	१८	७	७	—
अन्य देश	५२	२४	२३	—
कुल योग	३९७	४३३	३९२	५००

संसार में चाय वितरण का सबसे बड़ा केन्द्र लन्दन है। और केवल ग्रेट ब्रिटेन में समस्त संसार की निर्यात का आधे से अधिक भाग खप जाता है। एशिया से निर्यात की गई चाय का एक-चौथाई भाग रूस को ~~जाता~~ है। इधर कुछ दिनों से रूस में चाय उगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। रूस में चाय का कुल उत्पादन बहुत कम है। रूस में चाय की वार्षिक खपत करीब ३० लाख पौंड है पर वहाँ का कुल उत्पादन केवल कुछ हजार पौंड ही है। इसलिए इसे चाय बाहर से आयात करनी पड़ती है।

सन् १९२१ के बाद चाय का उत्पादन बहुत अधिक हुआ और इसीलिए चाय के दाम गिर गये। बड़ी-बड़ी फर्मों का दिवाला निकल गया और चाय के व्यवसाय को भारी धक्का लगा। अतः सन् १९३२ में चाय के उत्पादन और निर्यात की मात्रा नियमित करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना सन् १९३३ के अप्रैल मास से तथा सन् १९३८ से ऐसी ही दूसरी प्रतिबन्ध योजना ५ साल के लिए चालू कर दी गई।

सन् १९३२ की योजना में एक बड़ी कमजोरी यह थी कि इसमें चाय उत्पन्न करने वाले सभी देश सम्मिलित नहीं हुए थे। केवल भारत, लंका और इन्डोनेशिया पर ही इस के प्रतिबन्ध लगे। फलतः इस योजना में भाग न लेने वाले देशों को एक फायदा हुआ। सन् १९३२ में ऐसे देशों से चाय का निर्यात समस्त विश्व का षष्ठांश था पर सन् १९३७ में यही देश कुल निर्यात व्यापार का एक चौथाई हिस्सा निर्यात करने लगे। इस त्रुटि को दूर करने के लिए सन् १९४८ में एक नवीन अन्तर्राष्ट्रीय चाय समझौता हुआ जिसके सदस्य भारत, पाकिस्तान, लंका, इन्डोनेशिया थे। यह समझौता दो साल के लिए हुआ था।



चित्र १७—विश्व में पेय पदार्थों का वितरण

चाय की लोकप्रियता और खपत बढ़ाने के वास्ते अन्तर्राष्ट्रीय चाय प्रसार संघ (Tea Expansion Board) विभिन्न देशों में प्रयत्नशील है। केवल संयुक्तराष्ट्र अमरीका में प्रति वर्ष प्रचार के लिए करीब १० लाख डालर खर्च किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप संयुक्तराष्ट्र में चाय की खपत बढ़ रही है। यही हाल कनाडा का भी है।

चाय का आयात व्यापार (१९५०-५१)

(हजार मीट्रिक टनों में)

	निर्यातक देश				
आयातक देश	पूर्वी अफ्रीका	लंका	भारत व पाकिस्तान	इण्डोनेशिया	अन्य देश
आस्ट्रेलिया	६·४	१६·९	८·१	१·९	०·४
कनाडा	१·७	९·७	१२·७	०·२	०·७
मिस्र	—	९·८	३·०	२·७	०·५
ईरान	—	०.३	६.२	—	१·८
आयरलैंड	—	०·५	९.८	०.६	—
हालैंड	—	०·४	०·७	७.५	०·४
दक्षिणी अफ्रीकी संघ	०·६	८·१	—	०·१	०·४
संयुक्त राज्य	४.७	४२.५	११६·७	१·७	१·६
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१·५	२०·२	१८·४	४·२	७·६

इधर कुछ दिनों से संयुक्तराष्ट्र और कनाडा में चाय का आयात बढ़ गया है। सन् १९५३ में ४८००० मीट्रिक टन चाय संयुक्तराष्ट्र गई और इसी समय में कनाडा ने २०,००० मीट्रिक टन चाय आयात की। इन दोनों देशों में रहन-सहन का स्तर ऊंचा होने से यदि ठीक तरह से प्रचार किया जाय चाय की मांग काफी बढ़ सकती है। परन्तु प्रचार के कार्य में कोको, कहवा तथा अन्य इसी प्रकार के पेय पदार्थों से स्पर्धा के कारण रुकावटें हैं। इन अन्य पेय पदार्थों की स्पर्धा के कारण संयुक्त राष्ट्र में चाय की प्रति मनुष्य खपत बहुत कम है। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका में चाय का वार्षिक उपयोग १२५० लाख पौंड है। कहवा का उपभोग इससे कहीं अधिक है—२५९६० लाख पौंड प्रति वर्ष। वास्तव में सन् १७७३ में बोस्टन चाय पार्टी के दिनों से अमरीका के लोगों ने चाय का बहिष्कार कर दिया है क्योंकि अंग्रेजों ने इस पर कर लेना चाहा था। तभी से अमरीका में लोग कहवा को अधिक पसन्द करने लगे। फिर भी चाय की खपत बढ़ने की संभावना है क्योंकि सस्ती होने के कारण अब भी बहुत अधिक लोग इस ओर आकर्षित होते हैं। अमरीका में गर्म चाय की अपेक्षा बर्फ डाली हुई चाय की मांग अधिक है। साधारणतया कहा जा सकता है कि चाय की मांग बराबर बढ़ रही है।

इस समय चाय की मांग की अपेक्षा उत्पादन बहुत कम है। लड़ाई के दिनों में इंडोनेशिया, जापान और फारमोसा में चाय की खेती को काफी धक्का पहुँचा। अभी तक ये देश युद्ध के पूर्व की स्थिति को नहीं पहुँच पाये हैं। फलतः भारतीय चाय की मांग काफी बढ़ गई है परन्तु कहवा की खपत बढ़ जाने से चाय का भविष्य उज्ज्वल नहीं रह गया है।

कोको (Cocoa)—यह दक्षिणी अमरीका का पौदा है। यहाँ से यह भूमध्य-रेखीय आर्द्र प्रदेशों में ले जाया गया और वहाँ के बागों में बड़ा ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

उपज की दशाएँ—कोको का पौधा ऊँचा तापक्रम और भारी वर्षा चाहता है। इसके लिए गहरी उपजाऊ भूमि चाहिए। इसके लिए अधिक वर्षा या काफी दिनों तक पानी की कमी दोनों ही हानिकर हैं। इसके पौधे को सूर्य की रोशनी से छाया और तेज हवा से रक्षा की आवश्यकता होती है। इसलिए भूमध्यरेखीय जलवायु के प्रदेश कोको की खेती के लिए सबसे उपयुक्त हैं।

उपज के क्षेत्र—भूमध्यरेखा से २०° उत्तर और दक्षिण के भीतर के प्रदेशों में कोको की खेती होती है। गोल्डकोस्ट, नाइजीरिया, ब्राजील, ब्रिटिश पश्चिमी द्वीपसमूह और लंका कोको उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश हैं।

संसार के कोको उत्पन करने वाले मुख्य प्रदेश (१९५०)

(प्रतिशत में)

गोल्डकोस्ट	३२	फ्रांसीसी कैमीरून	६
ब्राजील	१८	इक्वेडर	४
नाइजीरिया	१२	अन्य देश	१६
फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका	८		
डामिनियन प्रजातन्त्र	४		

सन् १९४८-४९ से सन् १९५०-५१ तक समस्त संसार के कुल उत्पादन का ५० प्रतिशत भाग केवल गोल्डकोस्ट और नाइजीरिया से प्राप्त हुआ। इसी कालान्तर में अन्य देशों का कुल उपज में भाग इस प्रकार था—ब्राजील १८ प्र० श०, फ्रांसीसी पश्चिमी अफ्रीका और केमेरून प्रदेश १२ प्रतिशत।

कोको के बाग प्रधानतः विदेशियों के हाथ में हैं यद्यपि पश्चिमी अफ्रीका में वहाँ के आदि निवासियों ने अपने आप बाग लगाये हैं।

गोल्डकोस्ट में कोको की बहुत बड़ी उपज होती है। संसार की मांग पूर्ति का बहुत बड़ा भाग गोल्डकोस्ट से आता है। यद्यपि यहाँ की भूमि व जलवायु अन्य देशों की तरह ही है परन्तु भूमि के कुशल प्रयोग तथा श्वेत पुरुषों के अनुभवी प्रबन्ध के कारण यह प्रदेश औरों की अपेक्षा विशेष प्रमुख हो गया है। यहाँ पर कोको को आय की प्रधान फसल बना लिया गया है और इसीलिए इसकी ओर विशेष ध्यान दिया

जाता है। इस प्रदेश में कोको की खेती के इतना उन्नत होने के अन्य कारण हैं इसका महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर स्थित होना और उपज के क्षेत्रों व बन्दरगाहों के बीच यातायात की सुविधाओं का वर्तमान होना। इन्हीं कारणों से यह प्रदेश इक्वेडर जैसे अन्य पुराने क्षेत्रों से अधिक उन्नति कर गया है।

व्यापार—इस समय संयुक्तराष्ट्र में कोको की सबसे अधिक खपत होती है। संसार की समस्त उपज का ४० प्रतिशत संयुक्तराष्ट्र को जाता है और बाकी उपज का अधिकतर भाग उत्तरी-पश्चिमी योरोप के देशों में खप जाता है। संयुक्त राज्य विश्व-उत्पादन का २० प्रतिशत आयात करता है। फ्रांस १० प्रतिशत तथा हालैंड ८ प्रतिशत मँगाता है। स्पेन में कोको को मानव जीवन की आवश्यकताओं में गिना जाता है। स्विजरलैंड और हालैंड में कोको का आयात चाकलेट (Chocolate) तैयार करने के लिए किया जाता है।

कोको : आयात-निर्यात व्यापार १९५०-५१

(हजार मीट्रिक टन)

	(निर्यातक देश)			
आयातक देश	**ब्राजील**	**पश्चिमी अफ्रीका**	**अन्य देश**	**कुल योग**
कनाडा	२·९	१२·६	२·५	१७·९
पश्चिमी जर्मनी	१·५	३९·६	१३·८	५५·०
हालैंड	७·४	३१·६	२७·०	६६·०
संयुक्त राज्य	२४·६	९४·९	१३·०	१३२·४
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	७३·६	१४३·४	८२·०	२९८·९

कहवा (Coffee)—कहवा अबीसीनिया और अरब का आदि पौधा है। परन्तु अब इसका उत्पादन विभिन्न देशों में होने लगा है और संसार के विभिन्न भागों में इसका उपभोग भी बढ़ गया है।

उपज की दशाएँ—कहवा के पौधे को उपजाऊ ढालू भूमि जिस पर पानी न टिक सके, गर्म जलवायु और मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है। इसीलिए इसके बाग उष्णकटिबन्ध में पाये जाते हैं। यद्यपि यह उष्णकटिबन्ध का पौधा है, परन्तु अधिक गर्मी हानिकर होती है। ८६° से अधिक तापमान में इसकी उपज कम हो जाती है और फिर लम्बी गर्मियाँ भी यह सहन नहीं कर सकता। बाढ़ के समय जब इसका पौधा छोटा होता है तेज धूप से इसकी रक्षा करनी पड़ती है। इसीलिए कहवा के बगीचों में केले के व अन्य छायादार वृक्ष लगाये जाते हैं। भूमि की आवश्यकतानुसार इसे उच्च पहाड़ियों व पहाड़ी ढालों पर उगाया जाता है जहाँ पानी के निकास के लिए नदियों की धाराएँ व जलप्रपात होते हैं।

कहवा के पौधे के लिए जलवृष्टि का बड़ा महत्त्व है। भूमध्यरेखीय प्रदेशों में साधारणतया पानी साल भर लगातार बरसता है परन्तु समुद्र-तल से ऊँचाई के अनुसार शुष्क मौसम छोटा या लम्बा होता है। बीजों के बोने से लेकर फल आने तक इसे कम-से-कम ५०"–६०" वर्षा की आवश्यकता होती है। जहाँ वर्षा इतनी नहीं

होती वहाँ सिंचाई द्वारा कमी पूरी की जाती है। जहाँ आवश्यकता से अधिक पानी गिरता है वहाँ पानी के निकास का प्रबन्ध करना पड़ता है।

कहवा के पौधे को पूरी तरह तैयार होने में कम-से-कम ३ से ५ साल तक लगते हैं और फिर लगभग ३० साल तक इस पर फल आते रहते हैं। इसके फल के गूदे को हटा कर अन्दर की गिरी निकाल दी जाती है और इस गिरी के अन्दर की गुठलियों से कहवा प्राप्त किया जाता है।

कहवा उष्णकटिबन्धीय पौधा है और प्रधानतः निर्यात के लिए उगाया जाता है। माल को मंडी के लिये तैयार करने में हाथ से ही अधिक कार्य करना पड़ता है इसलिए सस्ते मजदूरों का बहु संख्या में होना इसकी उपज के लिए सुविधाजनक होता है।

उपज के क्षेत्र—संसार के कहवा उत्पन्न करने वाले मुख्य देश ब्राजील, पश्चिमी द्वीपसमूह, मध्य अमरीका, वेनेजुला, कोलम्बिया, एंडीज के पठार, दक्षिणी भारत, लंका, इंडोनेशिया और अरब हैं। कई कारणों से कहवा की प्रति एकड़ उपज भिन्न-भिन्न देशों में विभिन्न होती है। भूमि का उपजाऊपन, जलवायु की दशाएँ, कहवा के पौधे की जाति प्रकार, अन्य खेती के तरीके और माल को मंडी के लिए तैयार करने की रीति के अनुसार ही कहवा की उपज कम या ज्यादा होती है।

कहवा की औसत प्रति एकड़ उपज

(पौंडों में)

ब्राजील	३६५·८	कीनिया	४७२·८
कोलम्बिया	५६२·८	डोमिनिकन	~~३२५·२~~
इण्डोनेशिया	४७२·७	मैडागास्कर	२३२
सेलवेडर	५५३	बेल्जियन कांगो	२७३·६
वेनेजुला	५१७	अंगोला	४१०·४
गेटेमाला	४४६·१	भारत	१९६·३
मेक्सिको	४१९·३	प्यूर्टोरिको	११६
क्यूबा	४४६·१		

अरब—मोका (Moka) नामक कहवा की जन्मभूमि व उपज क्षेत्र है। यह कहवा अपनी सुगन्धि और स्वाद के लिए जग-प्रसिद्ध है। अरब में सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में ऐथिओपिया से कहवा का पौधा लाया गया। अरब की जलवायु अति गर्म व शुष्क होने के कारण कहवा की उपज के लिए अनुकूल दशाएँ केवल एमन (Yemen) प्रान्त में ही पाई जाती हैं। यह प्रान्त पहाड़ी है और यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है। अतएव २००० फीट से लेकर ६,५०० फीट तक की ऊंचाई तक पर्वतीय ढालों पर कहवा की खेती की जाती है। यहाँ पर प्रधान रूप से अरबी कहवा की ही उपज होती है जिसे मोका भी कहते हैं। यद्यपि यहाँ पर भूमि और जलवायु बहुत अनुकूल है परन्तु सिंचाई की कठिनाई, खराब सड़कों, भारी राजकरों और

राज-प्रबन्ध के कारण प्रति एकड़ उपज बहुत कम है। अतः निर्यात की मात्रा भी बहुत कम है।

ब्राजील—केवल ब्राजील में ही संसार का आधा कहवा उत्पन्न होता है और इस देश की समृद्धि यहां के कहवा पर ही निर्भर है। अपनी उपजाऊ लावा भूमि के कारण साओपोलो का प्रान्त इसके लिए विशेष रूपसे उपयुक्त है। कहवा उत्पन्न करने वाले अन्य प्रान्त रिओडि जैनिरो ऐस्पिरिटो और मिनास जरायस हैं। साओपोलो का प्रदेश संसार भर में अपने कहवा के लिए प्रसिद्ध है। यहां सन् १८०० में कहवा की खेती शुरू हुई पर उन्नीसवीं सदी के पिछले भाग में इसकी विशेष उन्नति हुई। साओपोलो का भीतरी विशाल पठार बहुत ही विस्तृत है और कहवे की खेती के लिए बहुत उपयुक्त है।

एक ही उद्योग पर निर्भर रहने से लोगों को आर्थिक विकास में कितनी हानि हो सकती है इसका उदाहरण ब्राजील के कहवा उद्योग से मिल सकता है। सन् १८९७-में ब्राजील में कहवे की उपज बहुत अधिक हुई। फलतः दामों में भारी कमी हो गयी और कहवा की खेती करने वाले असंख्य किसानों को भारी नुकसान सहन करना पड़ा। दामों को उचित स्तर पर लाने के लिये ब्राजील सरकार को कुछ साहसपूर्ण कदम उठाने पड़े। इसने विशाल परिमाण में कहवा को खरीद लिया और जब तक दाम उचित स्तर पर नहीं आये उस समय तक माल को रोके रही। फिर माल को धीरे-धीरे निकालना शुरू किया। उस समय से सरकार की ओर से इस प्रकार की नीति ब्राजील के कहवा व्यापार का एक अंग-सा बन गई है।

भारत में कहवा उत्पन्न करने वाले मुख्य क्षेत्र मैसूर, मद्रास, कुर्ग, कोचीन ट्रावनकोर और बम्बई हैं। इनमें से कुछ क्षेत्रों में कहवा के स्थान पर चाय की खेती होने लगी है। भारत से कहवा फ्रांस और ब्रिटिश द्वीपसमूह को निर्यात किया जाता है।

कहवा उत्पादन करने वाले मुख्य प्रदेश

(सहस्त्र मीट्रिक क्विटल)

ब्राजील	१२,५००	ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका	३८३
कोलम्बिया	२,६७०	हेटी	२५०
उत्तरी-पूर्वी द्वीपसमूह	१,०७१	क्यूबा	३२०
मेक्सिको	५००	कोस्टारिका	२४०
वेनेजुला	६५०	मैडागास्कर	३००
सेलवेडर	५४०	बेल्जियन कांगो	२३०
गेटमाला	५५०		

सन् १९५०-५१ में विश्वव्यापी उत्पादन २१० लाख टन था।

कहवा का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—सन् १९५१ में कहवा का विश्व उत्पादन २,३००,००० टन था। इसका ८८ प्रतिशत भाग निर्यात कर दिया गया। ब्राजील

से ४७ प्र.श. निर्यात किया गया और कोलम्बिया से २० प्र.श.। दक्षिणी अमरीका के बहुत से देशों के निर्यात में कहवा का स्थान सर्वप्रथम है। सन् १९५१ के निर्यात व्यापार में कहवा का स्थान निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा :

ब्राजील	६४ प्र.श.
कोलम्बिया	७८ प्र.श.
कोस्टारिका	५२ प्र.श.
एल सैलवेडर	८९ प्र.श.
गैटेमाला	७८ प्र.श.
हेटी	५३ प्र.श.
निकारागुआ	६५ प्र.श.
अंगोला	३४ प्र.श.
इक्वेडर	३० प्र.श.
युगैन्डा	२८ प्र.श.

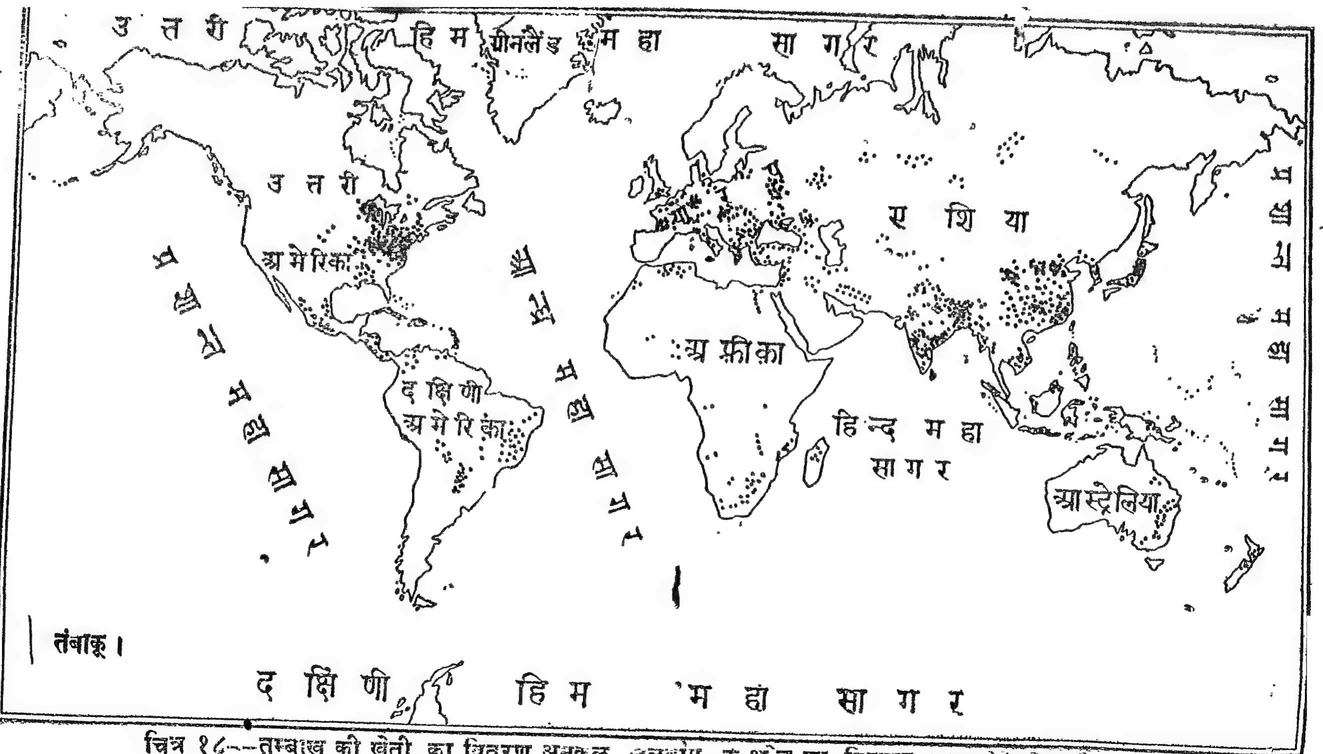
अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में कहवा का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। आनन्द-विलास और शौक की वस्तुओं के व्यापार में चाय, तम्बाकू और शराब आदि मादक वस्तुओं की अपेक्षा कहवे का अधिक महत्त्व है। पिछले दो महायुद्धों के मध्यकाल में कहवे के उत्पादन और विक्रय को अधिक उपज के कारण बड़ा धक्का पहुँचा है। ऐसी विकट परिस्थिति को रोकने के लिए अनेक प्रयत्न किये गए। सन् १९४१ में अमरीकी देशों के बीच एक समझौता हुआ जिसके अनुसार अमरीका के कहवा उत्पादक देशों को संयुक्तराष्ट्र के बाजार में नियमित व समान रूप से क्रय-विक्रय की सुविधा प्रदान करने का आश्वासन दिया गया। सन् १९४३ में अखिल अमरीकी कहवा बोर्ड ने अपने सदस्य राष्ट्रों से आग्रह किया कि वे युद्धकालीन प्रभाव से पीड़ित देशों के लोगों के मध्य कहवा का प्रचार बढ़ाने की चेष्टा करें। सन् १९४६ में कहवा बोर्ड ने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करने के लिए विश्वव्यापी स्थिति की जांच की।

कहवा उद्योग को सबसे बड़ा धक्का दूसरे महायुद्ध मे लगा। ब्राजील में लगभग २५ लाख एकड़ भूमि कहवा की खेती के लिए बेकार हो गई। पूर्वी द्वीपसमूह पर जापानियों का कब्जा हो जाने से भी हानि हुई और अफ्रीका व ओसीनिया जैसे प्रदेशों में मजदूरी के प्रश्न से कहवा उद्योग को हानि पहुँची। यद्यपि ये सब कठिनाइयाँ अब खत्म हो चुकी हैं परन्तु अन्य कुछ समस्याएँ अब भी बाकी हैं। कहवे के उपभोग के विकास व विस्तार में निम्निलिखित बाधाएं हैं :

(१) करोड़ों मनुष्यों के अन्दर रहन-सहन के नीचे स्तर के कारण क्रय-शक्ति का ह्रास हो गया है।

(२) यातायात के साधनों की कमी हो जाने से भाड़े की दर में अपेक्षतः वृद्धि हो गई है।

(३) विनिमय दर और मुद्रा की अस्थिरता के कारण अनेक योरोपीय देशों में



चित्र १८—तम्बाखू की खेती का वितरण अनुकूल जलवायु के क्षेत्र का विस्तार ध्यान देने योग्य है।

आर्थिक संतुलन का अभाव हो गया है।

(४) विभिन्न देशोंमें, विशेष कर यूरोप में आयात के नियत भागों में सरकारी विरोधक नीति, चुंगी और देशीय करों के कारण कहवे के आयात, वितरण और उपभोग को विशेष धक्का पहुंचा है।

(५) चाय जैसी अन्य मादक वस्तुओं की प्रतिस्पर्धा से भी कहवे को हानि हुई है।

(६) साथ-साथ सस्ते दामों की दूसरी इसी प्रकार की वस्तुएं निकल आने से भी कहवे को धक्का लगा है।

तम्बाकू (Tobacco)—अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से तम्बाकू एक महत्त्वपूर्ण पदार्थ है। उत्तरी अमेरिका के उष्णकटिबन्धीय भागों में उत्पन्न होने वाले एक पौधे की पत्तियों से तम्बाकू बनता है। उष्णकटिबन्धीय पौधा होते हुए भी इसका क्षेत्र इतना विस्तृत है कि संसार के सभी भागों में यह उगाया जाता है। भूमध्यरेखीय भागों, कनाडा, स्काटलैंड तथा उत्तरी पोलैंड तक में भी इसकी उपज होती है।

उपज की दशाएँ—इसका पौधा चूना, वनस्पति का अंश तथा पोटाश मिश्रित हल्की भूमि में बढ़ता है। पाला इसके लिए बहुत हानिकर है। तम्बाकू की खेती व इसके बाद मंडियों के लिए तैयार करने में काफी मेहनत की आवश्यकता होती है। इसलिए सस्ते मजदूरों का पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होना नितान्त आवश्यक है।

तम्बाकू का विश्वव्यापी उत्पादन (१९४९ से १९५२)
(हजार मीट्रिक टन)

देश	१९४९-५०	१९५०-५१	१९५१-५२
ब्राजील	११५·०	१०६·४	११०·०
कनाडा	६३·४	५४·६	६८·५
क्यूबा	४२·५	३४·५	—
ग्रीस	४६·०	५८·४	६३·०
भारत	२५७·१	२४९·९	—
पाकिस्तान	६६·८	—	—
इन्डोनेशिया	—	—	—
दक्षिणी रोडेशिया	४८·५	४०·१	५०·०
तुर्की	९९·४	८५·०	८९·८
सयुक्तराष्ट्र अमरीका	८९४·७	९२१·९	१०१०·०

उपज के क्षेत्र—संसार में तम्बाकू उत्पन्न करने वाले प्रमुख देश संयुक्त-राष्ट्र, भारत, चीन, रूस, और जापान हैं। फिलीपाइन द्वीपसमूह, इंडोनेशिया, ब्राजील, पाकिस्तान तथा मध्य व पश्चिमी योरोप के देशों में भी तम्बाकू बहुत काफी होता है। संयुक्तराष्ट्र, सुमात्रा, क्यूबा, ब्राजील, बलगारिया और तुर्की तम्बाकू

का निर्यात करने वाले प्रमुख देश हैं। तम्बाकू का सबसे अधिक आयात पश्चिमी योरोप में, विशेषकर ब्रिटिश द्वीपसमूह, जर्मनी और फ्रांस में होता है।

संयुक्तराष्ट्र—तम्बाकू के उत्पादक देशों में सबसे महत्त्वपूर्ण है। सन् १९५२ में संयुक्तराष्ट्र में कुल विश्व की ३३ प्र.श. तम्बाकू पैदा हुई। उत्तरी केरोलीना केन्टकी, वरजीनिया, टनींसी, दक्षिणी केरोलीना, जार्जिया, पेन्सलवेनिया, विसकान्सिन और ओहियो राज्य तम्बाकू की खेती के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं। सस्ते होने के कारण तम्बाकू के बागों में काले मजदूरों से काम लिया जाता है। लूसविले रिचमान्ड, पीटरवर्ग और विन्सटम सलेम इस उद्योग के प्रमुख केन्द्र हैं।

यद्यपि **चीन** में तम्बाकू के उत्पादन के विषय में विश्वसनीय आँकड़े प्राप्त नहीं हैं परन्तु १९४८-५० के औसत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विश्व उत्पादन का २० प्रतिशत तम्बाकू चीन में उत्पन्न होता है। मध्य तथा उत्तरी-पूर्वी चीन में तम्बाकू की विस्तृत खेती होती है।

पश्चिमी द्वीपसमूह—क्यूबा की तम्बाकू अपनी उत्तम सुगन्धि के कारण जगतप्रसिद्ध है और सिगार बनाने में विशेषकर इस्तेमाल की जाती है। हैवाना सिगार बनाने का सबसे बड़ा केन्द्र है।

इंडोनेशिया—जावा, सुमात्रा तथा अन्य द्वीपों पर काफी मात्रा में तम्बाकू उगाई जाती है। इन बागीचों का प्रबन्ध योरोपीय करते हैं परन्तु मजदूर अधिकतर चीनी होते हैं। पिछले कुछ वर्षों से इंडोनेशिया में तम्बाकू की खेती ने इतनी उन्नति की है कि इस समय निर्यातक देशों में संयुक्तराष्ट्र के बाद इसका दूसरा स्थान है।

भारत—की मुख्य फसलों में तम्बाकू का स्थान है और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के समान ही तम्बाकू का निर्यात किया जाता है। **पाकिस्तान** में भारत की एक-तिहाई उपज होती है। भारत में पीने वाली फसलों में तम्बाकू बड़ी ही महत्त्वपूर्ण फसल है। विश्व उत्पादन का ८ प्रतिशत यहाँ उत्पन्न होता है। परन्तु केवल ५ प्र.श. भारतीय तम्बाकू ही बरजीनिया की बढ़िया तम्बाकू की तरह होती है। दक्षिणी भारत की तम्बाकू से सिगरेट, सिगार और चुरूट बनाये जाते हैं और उत्तरी भारत की तम्बाकू चबाने तथा नसवार के रूपमें प्रयोग की जाती है। तम्बाकू के विश्व व्यापार का ५ प्र.श. भाग भारत द्वारा होता है। तम्बाकू उत्पादन में **ब्राजील** का पाँचवा स्थान है। वाहिया से अधिकतर निर्यात किया जाता है। **योरोप** में हंगरी, वलगारिया, यूगोस्लाविया तथा यूनान में तम्बाकू की विस्तृत खेती होती है।

ग्रेट ब्रिटेन में तम्बाकू की खपत बहुत अधिक है और संयुक्तराष्ट्र, भारत, सुमात्रा तथा फिलीपाइन द्वीपसमूह से तम्बाकू आयात की जाती है।

तम्बाकू का निर्यात व्यापार (१९४९-१९५१)
(हजार मीट्रिक टन)

देश	१९४९-५०	१९५०-५१
ब्राजील	२७.२	३५.८
कनाडा	७.३	१२.१
क्यूबा	१२.०	१२.४
ग्रीस	२७.७	२५.५
भारत	३२.८	४५.१
पाकिस्तान	—	
इंडोनेशिया	८.३	१२.४
दक्षिणी रोडेशिया	३०.८	४०.५
तुर्की	७७.६	५०.७
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	२२६.०	२१६.०
विश्वयोग	५७०.०	५६०.०

इस समय खपत के दृष्टिकोण से संयुक्तराष्ट्र का स्थान सर्वप्रथम है। संसार के कुल उपभोग का २० प्रतिशत अकेले संयुक्तराष्ट्र द्वारा ले लिया जाता है। इसके बाद भारत का स्थान आता है जहाँ संसार के कुल उपभोग का ७ प्रतिशत अंश खप जाता है।

३—अन्य फसलें (Other Crops)

चीनी (Sugar)—खाद्य पदार्थों में संभवतः सबसे व्यापक उपभोग की वस्तु चीनी है। समस्त चीनी केवल दो पदार्थों के रस से प्राप्त होती है—गन्ना (Sugar Cane) और चुकन्दर (Sugar Beet)। गन्ना उष्णकटिबन्ध का पौधा है और चुकन्दर समशीतोष्ण कटिबन्ध का।

गन्ना और उसकी उपज की दशाएँ—गन्ना वास्तव में उष्णकटिबन्ध या उसके आसपास के प्रदेशों का पौधा है। इसकी उपज के लिए उच्च तापक्रम और भारी वर्षा की आवश्यकता होती है। भूमि पर पानी नहीं टिकना चाहिए तथा नमक व चूना मिला हो तो बहुत ही अच्छा है। इसलिए समुद्रतटीय प्रदेशों में इसकी उपज सर्वोत्तम होती है। बढ़वार के समय पौधे को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु फसल काटने के समय काफी मजदूरों की आवश्यकता होती है जो इसको काटकर, रस निकाल कर व चीनी तैयार करके बाहर की मंडियों को निर्यात कर सकें।

उपज के क्षेत्र—गन्ना उत्पन्न करने वाले मुख्य देश भारत, क्यूबा, इन्डोनेशिया, ब्राजील, हवाई, मारीशस, फिलीपाइन द्वीपसमूह, डोमिनिकन, ब्रिटिश गायना, फारमोसा, पोर्टोरिको और आस्ट्रेलिया हैं। मुख्य आयात करने वाले देश

संयुक्तराष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन हैं। यद्यपि गन्ने से चीनी उत्पन्न करने वाले देशों में भारत का स्थान प्रमुख है फिर भी यहाँ काफी मात्रा में चीनी बाहर से आयात की जाती है।

गन्ने से बनी चीनी का विश्वव्यापी उत्पादन
(हजार टनों में)

देश	१९५१-५२	१९५२-५३	देश	१९५१-५२	१९५२-५३
भारत	१७,००	१,६००	पोर्टोरिको	१,२१४	९८२
क्यूबा	७,११०	५,०७०	आस्ट्रेलिया	७२०	९.०
जावा	४८०	४६०	अर्जेन्टाइना	६३०	५५०
ब्राजील	१,७००	१,९००	पीरू	४७५	४७५
फिलीपाइन्स	९३०	१,०९२	मारीशस	४७६	४९०
हवाई	६४०	९४०	संयुक्तराष्ट्र अमरीका	३८८	५००
फारमोसा	५०७	७००	ब्रिटिश गायना	२२३	६८५

सन् १९४७-४८ में चीनी का कुल उत्पादन ३३० लाख टन था जबकि प्रत्येक टन भार छोटा था—केवल २००० पौंड का। सन् १९५१-५२ में संसार में गन्ने से निकाली जाने वाली चीनी का कुल उत्पादन २४,२३१ हजार टन था। सन् १९५२-५३ में यह उत्पादन घटकर २३,०१६ हजार टन ही रह गया।

सन् १९३८ से पहले संसार में चीनी का उत्पादन माँग से कहीं अधिक होता था इसलिए सन् १९३७ में अन्तर्राष्ट्रीय चीनी संस्था बनाई गई, जिसका ध्येय था कि अत्यधिक उत्पादन से होने वाली हानि से बचाव के उपाय निकाले जायँ। संसार के सभी चीनी उत्पादक देशों ने इस संस्था में भाग लिया और यह प्रयत्न किया कि चीनी की माँग व पूर्ति में एक सामंजस्य उत्पन्न हो जाय और चीनी तथा गन्ना उत्पन्न करने वालों को पर्याप्त लाभ मिल सके। इस संस्था को पूरा अधिकार है कि यह विभिन्न देशों के लिए निर्यात की नियमित मात्रा (Quota) निश्चित करे। गन्ने से बनी चीनी का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। क्यूबा, मारीशस और बारबाडास का सम्पूर्ण निर्यात व्यापार चीनी और चीनी से बनी चीजों पर निर्भर रहता है। फिजी, डोमिनकन राज्य और पोर्टोरिको में आधे से अधिक निर्यात व्यापार चीनी में ही होता है। क्यूबा व जमाइका द्वीपों से युद्ध-पूर्व की अपेक्षा चीनी का निर्यात बढ़ गया है। युद्ध के पहले कुल निर्यात का १७ प्रतिशत भाग ही चीनी होती थी परन्तु अब केवल जमाइका में कुल निर्यात का ७० प्रतिशत अंश से भी अधिक चीनी होती है। ब्रिटिश गायना में चीनी के अलावा अन्य वस्तुओं की खेती की जाने लगी है ताकि एक ही वस्तु पर निर्भरता न रहे। केवल फिलीपाइन ही एक देश है जहाँ पर युद्ध-पूर्व की स्थिति को प्राप्त नहीं किया जा सका है। यद्यपि पहले से हालत बहुत सुधर गई है परन्तु फिर भी चीनी का निर्यात व्यापार में अंश केवल २० प्रतिशत से अधिक नहीं हो सका है। युद्ध से पूर्व यहाँ के निर्यात व्यापार का ४० प्रतिशत भाग केवल चीनी का निर्यात होता था।

आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीकी संघ का स्थान इस दृष्टि कोण में नगण्य-सा है ।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दूसरे महायुद्ध से लगे धक्के से चीनी उत्पादक देश अब बहुत अधिक संभल चुके हैं और पुनः आर्थिक संगठन द्वारा वे युद्ध-पूर्व के स्तर पर पहुंचने में सफल हुए हैं । यदि एक दो देश यहाँ तक नहीं पहुंच पाये हैं तो कई देश ऐसे भी हैं जो उस औसत से आगे बढ़ गये हैं । अतएव सम्पूर्ण संसार में चीनी की स्थिति अब बहुत काफी संतोषजनक हो गई है ।

क्यूबा—चीनी का उद्योग क्यूबा में राष्ट्रीय आय का मुख्य साधन है। संसार की समस्त चीनी का $\frac{1}{5}$वां हिस्सा क्यूबा से ही प्राप्त होता है। इसका मतलब यह है कि एक ही पदार्थ की उपज से, उसके उत्पादन में अत्यधिक उन्नति व वृद्धि करके तथा उसमें असीम पूंजी लगाकर यहाँ के निवासी सुखी व समृद्ध हो गये हैं। दूसरे महायुद्ध काल में चीनी उत्पादन बहुत बढ़ गया। सन् १९४१ में उत्पादन ३७ लाख टन था, पर सन् १९४७ में ६४ लाख टन हो गया। वास्तव में वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय चीनी व्यापार क्यूबा की उत्पादन शक्ति से बहुत कुछ सम्बद्ध है।

भारत का गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान है। वैसे तो गन्ने की खेती उत्तरी भारत में सभी जगह होती है परन्तु विशेषतया इसका उपज क्षेत्र गंगानदी के मैदान के मध्य व ऊपरी भागों तक सीमित है। **पाकिस्तान** में २५००० टन चीनी उत्पन्न होती है।

जावा—के आर्थिक जीवन में चीनी व्यवसाय का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस व्यवसाय में अधिक लाभ के कारण किसानों ने गन्ने की खती विस्तृत रूप से अपना ली है। इसी कारण जहां पहले चावल की खेती होती थीवहाँ अब गन्ने की खेती होने लगी है। वहां की सरकार भी इस बात की कड़ी देख-रेख रखती है कि एक-तिहाई भूमि से अधिक गन्ने की खेती में न लाई जाये परन्तु जावा में चीनी की खपत अधिक नहीं है। इसलिए अपने उत्पादन के चार-पचमांश की खपत के लिए जावा को विदेशी मंडियों पर निर्भर रहना पड़ता है।

मारीशस भी चीनी के निर्यातक देशों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। वास्तव में द्वीप के निवासी चीनी उद्योग की आय पर हा निर्भर रहते हैं। सिंचाई की सहायता से गन्ने की जाति व मात्रा दोनों में ही परिवर्तन हो गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय चीनी समझौता—चीनी का आयात निर्यात व्यापार करने वाले ५१ देशों ने लन्दन में मिलकर सन् १९५३ के अगस्त महीने में एक समझौता किया और एक योजना बनाई ताकि चीनी का व्यापार आसानी से चलाया जा सके। इस प्रकार चीनी की एक स्वतंत्र व्यापार मंडी बनी। अब संसार में चीनी की दो मंडियाँ बन गईं, एक तो जहाँ संरक्षण रहता है तथा दाम ऊँचे रहते हैं और दूसरे जहाँ पर कोई संरक्षण नहीं होता तथा व्यापार की स्वतंत्रता होने से दाम कम हैं, परन्तु विश्व-व्यापार में दूसरे प्रकार की मंडी का स्थान बराबर गिरता जा रहा है। स्वतंत्र अरक्षित मंडियों को केवल ५० लाख टन चीनी ही निर्यात की जाती है जबकि विश्व का वार्षिक चीनी निर्यात १२० लाख टन है और विश्व उत्पादन ३५०

लख टन प्रतिवर्ष है। दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं कि विश्व निर्यात के आधे से अधिक भाग और विश्व-उत्पादन का ⅙ भाग एक या अन्य प्रकार के व्यापारिक समझौते द्वारा विक्रय होता है। चीनी का सबसे बड़ा आयतक देश संयुक्त राष्ट्र अमरीका स्वतंत्र मंडी के पास फटकता तक नहीं। अपने आयात की पूरी मात्रा यह अनुकूल समझौतों की सहायता से क्यूबा, फिलीपाइन, पोर्टो रिको और हवाई द्वीप से प्राप्त होता है।

इस प्रकार स्वतंत्र मंडी आखिरी चारा है जहाँ से अन्त में ग्राहक खरीदता है। कुल निर्यात की मात्रा ५,३९०,००० निश्चित की गई है। इस मेंसे २,२२५,००० अकेला क्यूबा निर्यात करता है। इस समझोते से दाम की एक निश्चित दर तैकर दी गई और ऊपरी सीमा ४·३५ सेंट प्रति पौंड है और निम्न सीमा ३·२५ सेण्ट है।

चीनी क अलावा गन्ने के और भी अनेकों उपयोग हैं। प्रायः प्रत्येक एक सौ टन सूखे गन्ने से ९,९८६ गैलन गैसौलीन; ३,४३० गैलन मध्यम श्रेणी का तेल; १,२१० गैलन चिकनाने का तेल और ८४५ टन कच्ची खांड प्राप्त की जा सकती है। सन् १९२९ से अब तक २०० से अधिक पेटेण्ट जारी किये जा चुके हैं और चीनी व उससे प्राप्त गौण पदार्थों से प्लास्टिक आदि वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं। वर्तमान विज्ञान की सहायता से गन्ने व चीनी से रबड़, प्लास्टिक, गैसोलीन वारनिश, गोश्त के स्थान पर उसकी जैसी चीजें आदि बनाना सरल हो गया है परन्तु अभी तक इसने औद्योगिक रूप धारण नहीं किया है।

चुकन्दर (Sugarbeet)—संसार में चीनी के कुल उत्पादन का एक-तिहाई अंश चुकन्दर से प्राप्त होता है।

उपज की दशाएँ—समशीतोष्ण जलवायु इसके अनुकूल है। इसके लिए उपजाऊ दोमट भूमि की आवश्यकता होती हैं जिसमें पानी न ठहर सके। चुकन्दर की फसल को बार-बार उगाते रहने से भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती हैं इसलिए इसके खेतों में बराबर खाद का प्रयोग होना बहुत जरूरी है। चुकन्दर का पौधा १६० से १७० दिन के भीतर वढ़कर तैयार हो जाता है, पर पौधे में चीनी का अंश इस बात पर निर्भर रहता है कि इनमें से कितने दिन तक सूर्य की रोशनी तेज रही व आसमान साफ रहा। यह महाद्वीपीय जलवायु के प्रदेशों में सबसे अधिक उगता है जहाँ तापक्रम की विषमता रहती है परन्तु इसकी सफल उपज के लिए जलवृष्टि बहुत कम नहीं होनी चाहिए।

चुकन्दर का उत्पादन
(लाख क्विंटल में)

रूस	२४०	इटली	४०
जर्मनी	२१०	पोलैंड	४०
फ्रांस	९०	संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१५०
चेकोस्लोवाकिया	५०	विश्वव्यापी उत्पादन	१,०५०
ग्रेट ब्रिटेन	५०		

उपज के क्षेत्र—चुकन्दर के मुख्य उपज क्षेत्र जर्मनी, रूस, फ्रांस, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, चैकोस्लोवाकिया और पोलैंड हैं। इनमें से जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया और पोलैंड तो निर्यात भी करते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका ही एक ऐसा देश है जहाँ चुकन्दर और गन्ना दोनों ही उत्पन्न किये जाते हैं। पर गन्ने से चीनी नहीं बनाई जाती। इसके अलावा संयुक्तराष्ट्र में उपज के दोनों क्षेत्र सीमित व एक दूसरे से काफी दूर हैं। चुकन्दर की खेती मुख्यत: मोन्टाना से दक्षिणी कोलेरेडो तक विस्तृत मैदानों में सिंचाई की सहायता से की जाती है। इडाहो (Idaho) यूटाह (Utah) और कैलीफोर्निया का समुद्रतटीय मैदान इसके उत्पादन के लिए उल्लेखनीय हैं।

सोवियत रूस का इस समय चुकन्दर उत्पन्न करने वाले सभी देशों में बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। इस देश में करीब ३० लाख एकड़ भूमि पर चुकन्दर की खेती होती है। इस प्रकार समस्त संसार की चुकन्दर की उत्पादक भूमि का ३५ प्रतिशत केवल रूस में ही है, और संसार की कुल उपज का एक-चौथाई भाग यहीं से प्राप्त होता है। ट्रांस-काकेशिया, पश्चिमी साइबेरिया, दक्षिणी व मध्य यूरोपीय रूस इसके मुख्य प्रदेश हैं। हाल में चुकन्दर की खेती कजाक, खीरगिजिया और सुदूरपूर्व में भी फैल गई है। चुकन्दर की औसत उपज करीब ७ टन प्रति एकड़ है। सन् १९५२ में ३३ लाख टन चीनी उत्पन्न की गई।

कुछ साल पहले संसार में चीनी की मंडियों में चुकन्दर की चीनी अधिक महत्वपूर्ण होती थी परन्तु आजकल गन्ने की चीनी से ही संसार की दो-तिहाई मांग पूरी होती है। वास्तव में सच तो यह है कि चुकन्दर की अपेक्षा गन्ने की खेती सरल व प्रति एकड़ उपज अधिक होती है। गन्ना उष्णकटिबन्धीय भागों में उत्पन्न होता है जहाँ सस्ते मजदूर आसानी से मिल जाते हैं। साथ-साथ चुकन्दर की खेती की कुछ लाभकारी विशेषताएं हैं। चुकन्दर उन प्रदेशों में पैदा होता है जहाँ आबादी घनी है, धन काफी है और अच्छे औजार व मशीनें आसानी से प्रयोग किये जा सकते हैं। इसके अलावा इसकी अवशिष्ट सामग्री तथा इससे प्राप्त अन्य उपज की आर्थिक महत्ता अधिक होती है। सन् १९५१-५२ में चुकन्दर से बनी चीनी का विश्वव्यापी उत्पादन १२,९०६ हजार टन था और अनुमान है कि सन् १९५२-५३ में यह मात्रा बहुत कुछ स्थायी रही है। पिछले कुछ सालों के विस्तृत आँकड़े नीचे दिये गये हैं।

चुकन्दर से बनी चीनी का विश्वव्यापी उत्पादन (हजार टनों में)

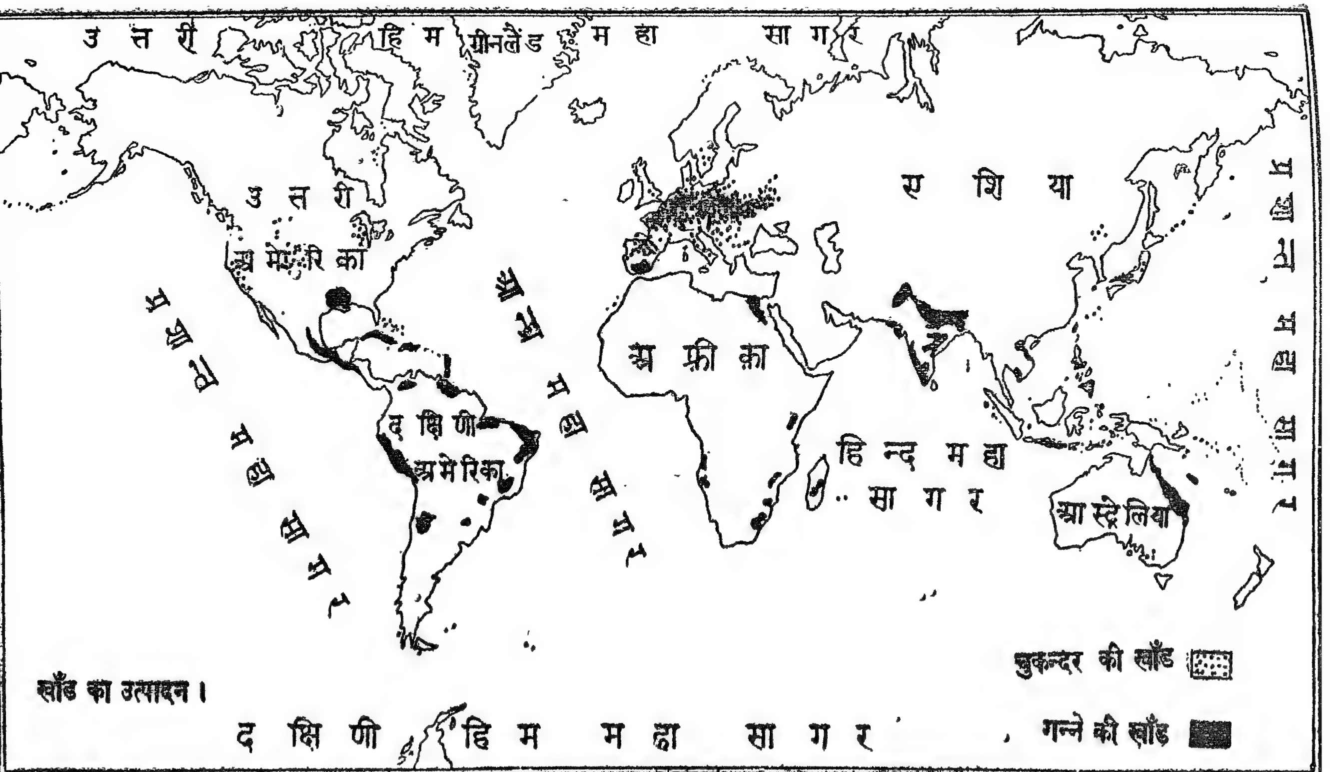
	१९४७-४८	१९४८-४९	१९४९-५०
जर्मनी	७७०	१,२८३	१,११०
चेकोस्लोवाकिया	३४५	६२५	७००
पोलैण्ड	५४१	६८२	८००
आस्ट्रिया	३६	४८	८०
फ्रांस	६५०	९५०	९२५
बेल्जियम	१३६	२५५	२५०
हालैण्ड	२१७	२८०	३८०
डेन्मार्क	२२१	२६०	३००
स्वीडन	२४०	२८७	२७५
इटली	२३५	४४८	४६०
ग्रेट ब्रिटेन	४६३	६१५	४७५
सोवियत रूस	१,५९५	१,९५०	२,३५०
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१,६८४	१,१८०	१,३००
कुल योग	७,९४५	१०,०६५	१०,५५०

आजकल कुछ आर्थिक व राजनीतिक कारणों से चुकन्दर का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है। शीतोष्ण कटिबन्ध के अनेक देश जैसे जर्मनी व फ्राँस चीनी की आवश्यकता पूर्ति के लिए उष्णकटिबन्धीय प्रदेशों पर निर्भर रहना सुरक्षित नहीं समझते। इसके अलावा चुकन्दर से बनी चीनी के उद्योग से वहाँ के लोगों को जीविका मिलती है। अतः उन देशों ने आर्थिक सहायता, उदारता एवं संरक्षण करों द्वारा चुकन्दर उत्पादन को प्रोत्साहन दिया है। सामान्य दिनों में जर्मनी, रूस व फ्रांस चीनी के लिए आत्म निर्भर रहते थे पर ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्तराष्ट्र, इटली और जापान के सम्बन्ध में यह बात नहीं है।

फल (Fruits)—व्यापार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वस्तु होने के कारण आजकल फल हर देश में ही उगाये जाने लगे हैं। पहले फलों की माँग केवल उत्पादक क्षेत्रों के समीपस्थ प्रदेशों तक ही सीमित थी क्योंकि अधिक दूर ले जाने या अधिक दिनों तक रखने से फल बिगड़ जाते थे। लेकिन यातायात के वेगशील साधनों तथा शीत भण्डार रीति के आविष्कार से अब फल भिन्न-भिन्न स्थानों को भेजे जा सकते हैं। फलतः आजकल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में फल बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। व्यापार की दृष्टि से उष्ण व शीतोष्ण कटिबंध के फल बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

उष्ण कटिबंधीय फल—केला, आम, खजूर, अमरूद, अनन्नास और तरबूज या खरबूजा उष्णकटिबन्ध के मुख्य फल हैं।

इन सब में केला विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। बहुत से भूमध्यरेखीय प्रदेशों



चित्र १९—चीनी का उत्पादन—शीतोष्ण कटिबन्ध में चुकन्दर और उष्णकटिबन्ध में गन्ने का वितरण ध्यान देने योग्य है।

में लोगों का भोजन ही केले का फल है। आजकल इसकी मांग भी बहुत बढ़ गई है। केले के पौधों को गर्मी और अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है। इसलिए पश्चिमी द्वीपसमूह, मध्यअमरीका, दक्षिणी अमरीका के उत्तरी भाग, जमायिका, कोस्टारिका, कोलम्बिया, हूण्ड्रास, गेटेमाला में केला उत्पन्न किया जाता है और वहां से यूरोप व संयुक्त राष्ट्र को निर्यात होता है। सन् १९४९ में इन देशों से ९४० लाख केले के पौधे निर्यात किये गये। संयुक्तराष्ट्र अमरीका में केले का आयात अधिक होता है और संसार के कुल निर्यात का दो-तिहाई भाग केवल इसी देश में आता है। पश्चिमी गोलार्द्ध से करीब ८५ प्रतिशत केला बाहर भेजा जाता। बाकी १५ प्रतिशत अफ्रीका से प्राप्त किया जाता है। कोस्टारिका, हूंड्रास, पनामा और गेटेमाला से संसार में निर्यात होने वाले कुल केलों का आधा भाग निर्यात किया जाता है। सन् १९४९ में निर्यात की गई केले की कुल मात्रा में से ६७ प्रतिशत उत्तरी अमरीका ने आयात किया, २४ प्रतिशत यूरोप ने और ८ प्रतिशत दक्षिणी अमरीका ने।

अनन्नास को हवाई, क्यूबा, मेक्सिको, फिलीपाइन, पुर्टोरिको, मलाया, फारमोसा, और आस्ट्रेलिया मेंउगाते हैं। इसके पौधे को गर्मी में उच्च तापक्रम और पाले से रक्षा की आवश्यकता होती है। हवाई, क्यूबा, मेक्सिको इनको निर्यात करनेवाले प्रधान देश हैं। सन् १९५० में विश्व उत्पादन अनुमानतः १३ लाख टन था जिसका ६१ प्रतिशत निर्यात कर दिया गया।

आम भी एक बड़ा स्वादिष्ट फल है पर इसका निर्यात व्यापार बहुत कम है। भारत की चेष्टाओं के फलस्वरूप इंगलैण्ड और अन्य योरोपीय देशों में इसकी कुछ मांग हुई है।

खजूर रेगिस्तान की उपज है और अल्जीरिया, ईराक, ईरान और उत्तरी पश्चिमी पाकिस्तान में उत्पन्न होता है। देश-विदेश में इसकी काफी मांग है और यह यूरोप व संयुक्तराष्ट्र में काफी मात्रा में आयात किया जाता है। सन् १९५० में विश्व उत्पादन अनुमानतः ११ लाख टन था परन्तु इसका २४ प्रतिशत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में आया।

नारियल भी उष्णकटिबन्ध का फल है पर फल की अपेक्षा इसकी गिरी की मांग अधिक है।

शीतोष्ण कटिबंधीय फल—यह फल दो प्रकार के होते हैं—गर्म शीतोष्ण कटिबंध के फल और ठंडे शीतोष्ण कटिबंध के फल।

भूमध्यसागरीय प्रदेश गर्म शीतोष्ण हैं। यहाँ की जलवायु की विशेषता यह है कि गर्मी का मौसम गर्म, सर्दियाँ हल्की और वर्षा जाड़े में होती है। इन क्षेत्रों में जैतून, अंजीर, अंगूर, खूबानी, नारंगी, नीबू और बादाम खूब होते हैं। ये फल प्रधानतः रसीले होते हैं। सन् १९४९ में इस प्रकार के रसीले (Citrus) फलों का विश्वव्यापी उत्पादन ३,५२० लाख बक्स था जब कि प्रत्येक बक्स की

तोल ८०—९० पौंड थी। सन् १९४९ में अंगूर के फल का विश्वव्यापी उत्पादन ४०० लाख बक्स था।

जैतून का फल खाने व तेल निकालने दोनों ही कामों में आता है। यह एशिया माइनर का पौधा है और केवल भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेशों में होता है। जैतून को हाथ से चुना जाता है। इसलिए काफी संख्या में सस्ते मजदूरों की आवश्यकता होती है। जैतून को उत्पन्न करने वाले मुख्य देश स्पेन, इटली, ग्रीस, पोर्तगाल और ट्यूनिस हैं। जैतून का तेल साबुन बनाने में प्रयोग किया जाता है। इसको खाना पकाने, जलाने व दवाई बनाने में भी प्रयोग करते हैं। इटली, ग्रीस, ट्यूनिस और अलजीरिया से इसका निर्यात होता है।

अंगूर की उपज के वास्ते उपजाऊ, ढालू जमीन चाहिए जिस पर पानी न टिक सके। धूपदार गर्मी का मौसम इसके लिए बड़ा अनुकूल होता है। इसीलिए भूमध्यसागरीय जलवायु इसके लिए सबसे ठीक रहती है। फ्रांस, इटली, स्पेन, दक्षिणी रूस, अलजीरिया, ग्रीस, पश्चिमी एशिया, केलीफोर्निया, अर्जेन्टाइना, केप आफ गुड होप, चिली और दक्षिणी आस्ट्रेलिया इसके मुख्य उपज क्षेत्र हैं। अंगूर का विक्रय और निर्यात तीन रूपों में होता है—(१) ताजे फल, (२) सुखाकर मुनक्का के रूप में, (३) रस और मदिरा के रूप में।

सेब (Apples) अधिकतर संयुक्तराष्ट्र, कनाडा, उत्तरी अफ्रीका, दक्षिणी आस्ट्रेलिया, चिली तथा इंगलैण्ड में उत्पन्न होता है परन्तु उत्पादन और निर्यात में संयुक्तराष्ट्र का स्थान सर्वप्रथम है।

संतरा भूमध्यसागरीय प्रदेश का प्रधान फल है। इसका उत्पादन उष्णकटिबन्ध तथा शीतोष्ण कटिबन्ध दोनों में ही होता है। सन्तरा उत्पन्न करने में प्रधान देश स्पेन है। केलिफोर्निया और इटली भी प्रधान उत्पादक देश हैं।

नींबू लगभग सभी प्रदेशों में उगाया जाता है, परन्तु भूमध्यसागरीय प्रदेशों में इसकी उपज सबसे अधिक होती है।

अन्य उष्णशीतोष्ण कटिबन्धीय फल जैसे खूबानी, बादाम, अंजीर इत्यादि की इनके उत्पादक देशों से बाहर के क्षेत्रों में काफी मांग रहती है।

ठंडे शीतोष्ण कटिबन्ध के फलों मे सेब, नाशपाती, चेरी और आड़ू प्रमुख हैं। सेव कनाडा, तस्मानिया, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और नोवास्कोशिया में विशेषतया उगाये जाते हैं। ब्रिटिश द्वीप समूह में भी अच्छी किस्म के सेब उगाये जाते हैं पर इनकी मात्रा बहुत कम होती है। आड़ू और अखरोट साईबेरिया में बहुत उगते हैं।

शीतोष्ण कटिबन्ध के शीत फलों के निर्यात के लिये संयुक्तराष्ट्र, इटली, तुर्की, स्पेन, ग्रीस, ईरान, और अलजीरिया प्रधान हैं। हाल में रूमानिया और तस्मानिया ने भी फलों का निर्यात शुरू कर दिया है।

मसाले (Spices)—बहुत ही प्राचीन काल से मसालों में व्यापार होता रहा है। इनसे केवल भोजन रुचिकर व स्वादिष्ट ही नहीं हो जाता बल्कि कई तरह

का सुगन्धित तेल बनाने में भी इनका प्रयोग होता है। कई प्रकार के मसालों को उगाने के लिए उच्च तापक्रम व भारी वर्षा की आवश्यकता होती है।

उष्ण कटिबन्ध के विविध मसालों में काली मिर्च, अदरख, लौंग और दालचीनी का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है।

काली मिर्च (Pepper) अंगूर की बेल की भांति एक पौधे पर लगने वाला एक गोल व छोटा फल है। इसकी विस्तृत खेती जावा, सुमात्रा, मलाया, बोर्नियो, थाईलैण्ड और भारत में मलाबार तट पर होती है। मंडियों में यह दो रूप में नजर आती है, काली व सफेद। जब पूरे फल को पीस लेते हैं तो इसे कालीमिर्च कहते हैं और जब ऊपर का छिलका उतार कर पीसते हैं तो सफेद मिर्च कहलाती है। ग्रेट ब्रिटेन संसार में सबसे अधिक मिर्च मंगवाने वाला देश है परन्तु वहाँ से यह फिर दूसरे देशों को भेज दी जाती है।

लाल मिर्च (Chilli) उष्ण कटिबन्धीय अमरीका के एक पौधे का फल है। यह एक छोटी-सी फली होती है जिसे मंडी में लाने से पहले सुखा लेते हैं। यह एशिया, अफ्रीका और अमरीका के उष्णकटिबन्धीय भागों में बहुत होती है।

अदरख (Ginger) भूमि के नीचे पैदा होने वाले एक लाल पौधे का डण्ठल है जो दक्षिणी एशिया के देशों में बहुत पाया जाता है। इसे मंडियों में ताजा व सूखा दोनों ही रूपों में विक्रय किया जाता है। दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी अफ्रीका, चीन, भारत और पश्चिमी द्वीपसमूह में इसकी विस्तृत खेती होती है।

लौंग (Cloves) एक कोमल पौधे की अविकसित कलियाँ होती हैं। इनका प्रयोग न केवल भोजन बनाने में होता है बल्कि शराब बनाने व तेल निकालने में भी प्रयोग किया जाता है। इसके तेल को सुगन्धि के तरीके से प्रयोग करते हैं। जंजीबार और अफ्रीका के पूर्वी तट पर पेम्बा नामक स्थान से संसार की कुल उपज का चार पंचमांश प्राप्त होता है। पेनांग व भारत में भी लौंग उत्पन्न होती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतः मद्रास राज्य म होती है।

दाल चीनी (Cinnamon)—लंका में पाए जाने वाले एक छोटे सदाबहार वृक्ष की सूखी छाल है। अब इसकी खेती जावा, ब्राजील, पश्चिमी द्वीपसमूह, इंडोनेशिया और चीन में भी होती है। मसाले के रूप में होने के अलावा, ः तेल भी निकाला जाता है और इस तेल में दवाई के गुण पाए जाते हैं। द क्षणी भारत में यह काफी मात्रा में उगाई जाती है।

इनके अलावा जायफल (Nutmegs), जावित्री (Mace), सौंठ (Vanilla), पीपल (All-spice) और इलायची (Cardamoms) इत्यादि अन्य अनेक प्रकार के मसाले होते हैं।

ये सब तो उष्ण कटिबन्ध के मसाले हैं परन्तु शीतोष्ण कटिबंध में भी कई प्रकार के पौधे पाए जाते हैं जिनके फलों व छाल को अनेक प्रकार के मसालों के रूप में प्रयोग करते हैं। राई, सोया, विलायती जीरा, धनियाँ, सौंफ इत्यादि शीतोष्ण कटिबन्ध के मसाले हैं। राई शलजम की जाति के एक पौधे का बीज है जो जमान

के अन्दर पाया जाता है और यूरोप में अनेक स्थानों पर होता है। धनियाँ भोजन को स्वादिष्ट व सुगन्धित बनाने के काम आता है। चावल जैसे फीके भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए सोये की चटनी की जापान व मंचूरिया में बड़ी मांग रहती है।

साबूदाना (Sago)—यह बड़ा ही पौष्टिक व शीघ्र हजम हो जाने वाला भोजन है। इसके पौधे को भारी वर्षा व काफी गर्मी की आवश्यकता होती है और यह दलदली भूमि में पैदा होता है। इस पौधे की ऊँचाई करीब ३० फीट होती है और इसके पत्ते बहुत लम्बे होते हैं। इण्डोनेशिया और मलाया में काफी ऐसे बाग हैं जहाँ इसके वृक्ष उगाए जाते हैं।

अरारूट (Arrowroot)—यह दो तीन फीट ऊँचे एक पौधे की जड़ों से प्राप्त होता है। यह पौधा पश्चिमी द्वीपसमूह, इण्डोनेशिया, बंगाल और अन्य उष्ण-कटिबन्धीय प्रदेशों में उगाया जाता है।

खाद्य पदार्थ और विभिन्न देशों की आत्मनिर्भरता—यद्यपि संसार में भोज्य पदार्थों की स्थित सुदृढ़ बनी हुई है फिर भी कुछ देशों में जनसंख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि और कम उत्पादन के कारण आहार की कमी हो गई है। सुदूरपूर्व के देशों में युद्ध के बाद के काल में खाद्यान्नों के उत्पादन में ५० लाख मीट्रिक टनों से भी अधिक की कमी हो गई है। खाद्यान्न निर्यातक देशों में खपत की मात्रा बढ़ जाने से निर्यात की मात्रा में भारी कमी हो गई है। तथापि सन् १९४८-४९ में मुख्य खाद्यान्नों का विश्वव्यापी उत्पादन युद्ध के पूर्व के औसत उत्पादन के बराबर या कुछ बढ़कर ही था। सन् १९३८-३९ में उपज की औसत से तुलना करने पर सन् १९४८-४९ की स्थिति इस प्रकार थी :

गेहूँ	१०५	जौ	१००
मक्का	१२५	चावल	९८
जई	१००	आलू	१०५

इसलिए स्पष्ट है कि अन्न की वर्तमान कमी बढ़ी हुई और बराबर बढ़ती हुई आबादी के कारण है। अविकसित देशों में बढ़ी हुई तथा बराबर बढ़ती हुई आबादी के कारण भोजन की बराबर कमी रहती है। सन् १९४७-४८ से सन् १९५३ तक दक्षिणी पूर्वी एशिया में भोजन की कमी थी परन्तु सन् १९५४ में यह पुनः आत्मनिर्भर हो गया है। बर्मा, हिन्दचीन और थाइलैण्ड से चावल का निर्यात बढ़ गया है और फिलीपाइन, इण्डोनेशिया, मलाया, लंका, भारत और पाकिस्तान में भोजन का आयात कम हो गया है। सन् १९५१ में दक्षिणी पूर्वी एशिया ने ४ लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न आयात किया था परन्तु सन् १९५४ में हालत इतनी सुधर गई कि इस प्रदेश से १० हजार मीट्रिक टन अनाज निर्यात किया जा सका।

साधारणतया ऐसा देखा जाता है कि उन्नतिशील औद्योगिक देशों में भोज्य-पदार्थों की सदा कमी रहती है और अपनी भोजन की माँग की पूर्ति के लिए उन्हें उन खेतिहर देशों पर निर्भर रहना पड़ता है जहाँ की आबादी कम है।

उत्तरी और दक्षिणी अमरीका की बात पश्चिमी यूरोप से बिल्कुल ही भिन्न है। उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के सभी देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हैं। चिली में आत्मनिर्भरता का प्रतिशत ९० है और अर्जेण्टाइना में २६४ है। पूर्वी यूरोप के देश भी भोजन के मामले में आत्मनिर्भर हैं। निम्नलिखित तालिका से विभिन्न देशों की भोज्य पदार्थों सम्बन्धी आत्म-निर्भरता की सीमा स्पष्ट हो जायगी:—

आत्मनिर्भरता का अंश

	प्रतिशत
कमी के प्रदेश	
ग्रेट ब्रिटेन	४५
नार्वे	४३
स्विटजरलैंड	४७
बेल्जियम	५१
हॉलैंड	६७
फिनलैंड	७८
यूनान	८०
जर्मनी	७५
फ्रांस	८०
स्वीडन	९१
चिली	६०
पुर्त्तगाल	९४
इटली	९०
जापान	८०
भारत	९८
अधिक उत्पादन के प्रदेश	
पाकिस्तान	१००
ब्राजील	१००
स्पेन	९०
चीन	१००
रूस	१०१
डेन्मार्क	१०३
बल्गेरिया	१०९
रूमानिया	११०
हंगरी	१२१
न्यूजीलैण्ड	१२०
कनाडा	१९०
आस्ट्रेलिया	२१४
अर्जेण्टाइना	२६४

उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट हो जाता है कि बढ़ती हुई आबादी के कारण विश्व में खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ना चाहिए। संसार में खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए दो सुझाव रखे गये हैं। एक दृष्टिकोण से खाद्यान्नों में तीन-चौथाई या ७५ प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है, यदि संसार में ४००० लाख एकड़ बेकार भूमि को खेती में ले आया जाय और प्रति एकड़ उपज को ड्योढ़ा कर दिया जाये। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार यह अनुमान किया जाता है कि वर्तमान खेतिहर भूमि से २० प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है अगर नई वैज्ञानिक रीतियों को अपनाया जावे। इसके अलावा ऐसा ख्याल किया जाता है कि १३,००० लाख एकड़ नई भूमि खेती के काम में लाई जा सकती है। इस नई भूमि का ब्योरा इस प्रकार है:—

दक्षिणी अमरीका और अफ्रीका	९००० लाख एकड़
सुमात्रा, बोर्नियो, न्यूगायना और मैडागास्कर	१००० लाख एकड़
संयुक्तराष्ट्र, कनाडा और रूस	३००० लाख एकड़
कुल योग	१३,००० लाख एकड़

ब—व्यवसायिक फसलें (Commercial Crops)

कपास (Cotton)—सभ्य संसार के वस्त्रों की आवश्यकता की अधिकतर पूर्ति कपास से होती है। सभ्य समाज के सम्पर्क में व उनके दैनिक प्रयोग में आने वाला इससे अधिक उपयोगी और कोई पौधा नहीं है।

उपज की दशाएँ—यह भिन्न-भिन्न जलवायु में उत्पन्न हो सकता है। परन्तु गर्म तर व सम जलवायु जहाँ गर्मी का मौसम लम्बा और ऐसी जमीन जहाँ भूमि में नमक मिला हो इसके लिए सबसे अनुकूल रहती है। रेशे की वृद्धि और किस्म के लिए समुद्री पवन सबसे लाभकारी होता है। इसलिए कपास की खेती के लिए सबसे उपयुक्त प्रदेश समुद्रतटीय मैदान और वे द्वीप हैं जो उष्ण कटिबन्ध में स्थित हैं।

उपज के क्षेत्र—कच्ची कपास के उत्पदान में संयुक्तराष्ट्र अमरीका सबसे प्रथम है। उसके बाद क्रमशः भारत, चीन व रूस का स्थान है। इन चारों देशों में संसार की उपज का अधिकतर भाग पैदा होता है। ब्राजील, सूडान, ईरान, मेक्सिको, पीरू, पश्चिमी अफ्रीका, युगेण्डा और जापान कपास उत्पन्न करने वाले अन्य देश हैं।

सन् १९५१-५२ में कपास का विश्व-व्यापी उत्पादन सन् १९३७-३८ से अब तक के काल में सबसे अधिक था। सन् १९५१-५२ में सम्पूर्ण संसार मे कुल ६,८३० हजार मीट्रिक टन कपास उत्पन्न हुई। यह मात्रा सन् १९५०-५१ की अपेक्षा २६ प्रतिशत अधिक थी और युद्धपूर्व के औसत से १४ प्रतिशत ज्यादा। उत्पादन में बढ़ोतरी का पूरा श्रेय संयुक्तराष्ट्र अमरीका को है। सन् १९५१-५२ में विश्व-व्यापी कपास उत्पादन का ४८ प्रतिशत भाग संयुक्तराष्ट्र से ही प्राप्त हुआ था। संयुक्त-

राष्ट्र का यह उत्पादन सन् १९५०-५१ के अपने ही उत्पादन की अपेक्षा ५१ प्रतिशत अधिक रहा और महायुद्ध से पूर्व के औसत से १९ प्रतिशत ज्यादा था।

कपास का विश्व व्यापी उत्पादन
(४७८ पौंड की हजार गांठें)

देश	१९३८-३९	१९४९-५०	१९५२-५३
मैक्सिको	२९३	९१७	१२५०
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	११,६१७	१५,९७३	१५,१६६
चीन	२,३०१	१,७००	२,८००
भारत	५,१५१	२,३९०	२,९७५
पाकिस्तान	३	१,०२०	१५४०
रूस	३८००	२७,००	४०००
अर्जेण्टाइना	२६०	५१५	५००
पीरू	३७८	३७८	४००
ब्राजील	१९८९	१,३५०	१६००
सूडान	२६३	३०५	४००
मिश्र	१७२८	१,७८६	२०५६
युगाण्डा	२५४	२८७	२६५
विश्व योग	२९,५३२	३१,१४४	३५,८४०

सन् १९५३-५४ और ५४-५५ में कपास का विश्व-व्यापी उत्पादन इस प्रकार था :—

कपास का उत्पादन
(लाख पौंड में)

देश	१९५३-५४	१९५४-५५
भारत	१८,०२०	१८,६४०
पाकिस्तान	५,६२०	५,८६०
कामनवेल्थ का कुल योग	२८११०	२६,४२०
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	७८७६०	६५०१०
मिश्र	६८५०	७१७०
ब्राजील	७०००	७१७०
मेक्सिको	५८००	८३७०
रूस	२३०००	२३०००
चीन	२६०००	२४०००
रूमानिया	४००	४००
बल्गारिया	१६०	१६०
सोवियत प्रभाव के राष्ट्रों का कुल योग	४९,५६०	४७,५६०
विश्व योग	१,९२,३९०	१,८१,४४०

इस समय कपास के उत्पादन के विषय में ध्यान देने योग्य बात यह है कि दूसरे प्रमुख उत्पादन देश—ब्राजील, चीन, मिस्र, भारत और पाकिस्तान में कपास का उत्पादन घटता जा रहा है। इसके विपरीत छोटे-छोटे देशों में कपास की उपज अधिक हो गई है। इस दृष्टिकोण से मेक्सिको, अर्जेन्टाइना और तुर्की का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

कपास के प्रकार और उपज के क्षेत्र—कपास मुख्यतः चार प्रकार की होती है। (१) समुद्रद्वीपीय (The Sea Island) (२) मिस्री कपास (The Egyptian) (३) पीरू की कपास (The Peruvian) (४) उच्च भूमि की कपास (The Upland)।

समुद्रद्वीपीय कपास का रेशा सबसे लम्बा, पतला और रेशमी-सा होता है। इस का पौधा केवल निचली भूमि पर ही उगाया जा सकता है और सर्वप्रथम इसकी खेती संयुक्तराष्ट्र के दक्षिणी केरोलीना, फ्लोरिडा और जार्जिया राज्यों में की गई थी। इसको कभी-कभी लम्बे रेशों वाली कपास भी कहते हैं।

मिस्री कपास को मध्यम रेशे वाली कपास भी कहते हैं और इसका प्रयोग मुलायम कपड़े बनाने में किया जाता है। समुद्रद्वीपीय कपास की अपेक्षा यह सस्ती होती है।

पीरू की कपास का रेशा ऊन के समान मजबूत और खुरखुरा होता। ऊन के साथ मिलाकर ~~कपड़ा~~ तैयार करने में यह सबसे अच्छा रहता है। इसके बनियान, मोजे, अण्डरवीयर बनाये जाते हैं।

उच्च भूमीय कपास का उपयोग बहुत अधिक है और इसका उत्पादन भी सबसे अधिक होता है।

आजकल संसार के सभी देशों में उच्चकोटि के कपास के उत्पादन में वृद्धि करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका—संसार के कुल उत्पादन की आधी कपास केवल संयुक्तराष्ट्र में होती है। उत्तरी केरोलीना से टेक्सास तक एक लम्बी पट्टी में कपास का क्षेत्र फैला हुआ है। टेक्सास, मिसीसिपी, आरकान्सस, अल्बामा, जार्जिया, उत्तरी व दक्षिणी केरोलीना, लूयसाना और टेनीसी कपास उत्पन्न करने वाले मुख्य राष्ट्र हैं। यहाँ समुद्रद्वीपीय व उच्च भूमीय दोनों ही प्रकार की कपास पैदा की जाती है। इस उपज का बहुत बड़ा भाग ग्रेट ब्रिटेन को चला जाता है और रूई के निर्यात के मुख्य बन्दरगाह गेल्वेस्टन, न्यूआरलियन्स और सेवाना हैं।

भारत में कपास की खेती मुख्यतः दक्षिण की उपजाऊ काली मिट्टी में होती है। यहाँ की कपास कड़ी व छोटी रेशों वाली होती है। पाकिस्तान में अमरीका के प्रकार की कपास उगाई जाती है। हाल में भारत व पाकिस्तान दोनों ही देशों में ७-८ इंच लम्बाई के रेशों वाली कपास बहुलता से उगाई जाने लगी है परन्तु फिर भी यहाँ की कपास के रेशों की लम्बाई एक इंच से कम होती है।

मिस्र में रूई की खेती नील की घाटी में होती है और अलेक्जण्डरिया के बन्दरगाह से निर्यात की जाती है। मिस्र की कपास नील की घाटी में फरवरी से अप्रैल तक उगाई जाती है और अगस्त से अक्तूबर तक चुनाई होती है। मिस्र के डेल्टा प्रदेश में उपजाऊ भूमि तथा अनुकूल जलवायु के कारण मिस्री कपास की किस्म संसार में सबसे बढ़िया होती है। कपास के निर्यात की बन्दरगाह अलेक्जेण्ड-रिया है।

ब्राजील की कपास तटीय मैदान में उगाई जाती है और इसका निर्यात बाहिया और परनामबुकों से किया जाता है। भारत को छोड़कर कामनवेल्थ में कपास का सबसे प्रधान उत्पादक देश युगैण्डा है। वास्तव में युगैण्डा की समृद्धि कपास पर ही निर्भर है। पिछले बीस वर्षों में कपास उद्योग के प्रसार के साथ-साथ नये नगरों, सड़कों और रेलों का निर्माण होता गया है। इस समय विश्व उत्पादन की दो प्रतिशत कपास युगैण्डा से प्राप्त होती है। बेल्जियन कांगो में भी कपास का उत्पादन बढ़ रहा है। सन् १९५२-५३ में बेल्जियन कांगो में कपास का उत्पादन ४७८ पौंड की २,२५,००० गाँठें था।

कपास की प्रति एकड़ उपज विभिन्न स्थानों पर विभिन्न है जैसा निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा।

कपास की प्रति एकड़ उपज (१९५०-५१)
(पौंडों में)

मिस्र	३९२	रूस	३२२
पीरू	४५४	संयुक्तराष्ट्र	२६९
सूडान	३८८	ब्राजील	१३९
अर्जेण्टाइना	२३१	युगेण्डा	८६
पाकिस्तान	१४९	भारत	८३

प्रति एकड़ उपज की इस विभिन्नता का कारण है उपज की दशाओं की विभिन्नता।

कपास के रेशे की लम्बाई के अनुसार विश्व उत्पादन
(४७८ पौंड वाली हजार गाँठों में)

	१९५३-५४	१९५४-५५
$1\frac{1}{2}$" या उससे लम्बी		
मिस्र	५०७	५३१
पीरू	४०	७०
सूडान	३४५	३४०
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	३२	१५
अन्य	२२	३६
कुल योग	९४६	९९२

१ १/८" से १ १/२" तक		
ब्राजील	२००	३२०
मिस्र	९६०	१०७४
पीरू	५०७	३८०
सूडान	५५	७०
यूगेण्डा	३००	२४५
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	४२०	४६०
अन्य	१५०	१५५
कुल योग	२,५९२	२,७०४
७/८" से १ १/८" तक		
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१५९४७	१३,१२५
मेक्सिको	१२१५	१,७५०
भारत	३०७०	३,३५०
पाकिस्तान	१०५५	१०६५
ब्राजील	१२६५	११८०
तुर्की	६२०	५९५
अर्जेण्टाइना	६१८	५२३
अन्य	१९५२	२३९६
कुल योग	२५,७१२	२३,९८४
७/८" से कम	१०००	१०००
रूस को छोड़कर विश्व योग	३०,२८०	२८,६८०

कपास का व्यापार—कपास अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में एक प्रधान वस्तु है। कपास का आयात करने वाले मुख्य देश हैं ग्रेट ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली और चीन। सन् १९४२ से पहिले जापान सबसे अधिक कपास आयात करता था।

कपास के आयात के आँकड़े
(हजार मीट्रिक टनों में)

देश	
जापान	३५८.५
ग्रेट ब्रिटेन	३५४ ८
जर्मनी	१८८
फ्रांस	१७६
इटली	२०२
चीन	३९
भारत	११३·८
विश्व योग	२०७४·१

संयुक्तराष्ट्र, भारत और मिस्र कपास निर्यात करने वाले मुख्य देश हैं। केवल संयुक्तराष्ट्र से प्रति वर्ष १५ लाख मीट्रिक टन से अधिक कपास निर्यात होती है। निकट भविष्य मे पाकिस्तान भी कच्ची कपास की माँग की पूर्ति का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन जायेगा।

कपास का निर्यात
(हजार मीट्रिक टनों में)

देश	१९५०-५१
संयुक्त राष्ट्र	९३२
पाकिस्तान	२२६·१
ब्राजील	१४८
मिस्र	३३४
मेक्सिको	२०८
सूडान	८१
तुर्की	७९
विश्व योग	२०७४·१

इसके अलावा अन्य निर्यातक देश व उनके आँकड़े इस प्रकार हैं—

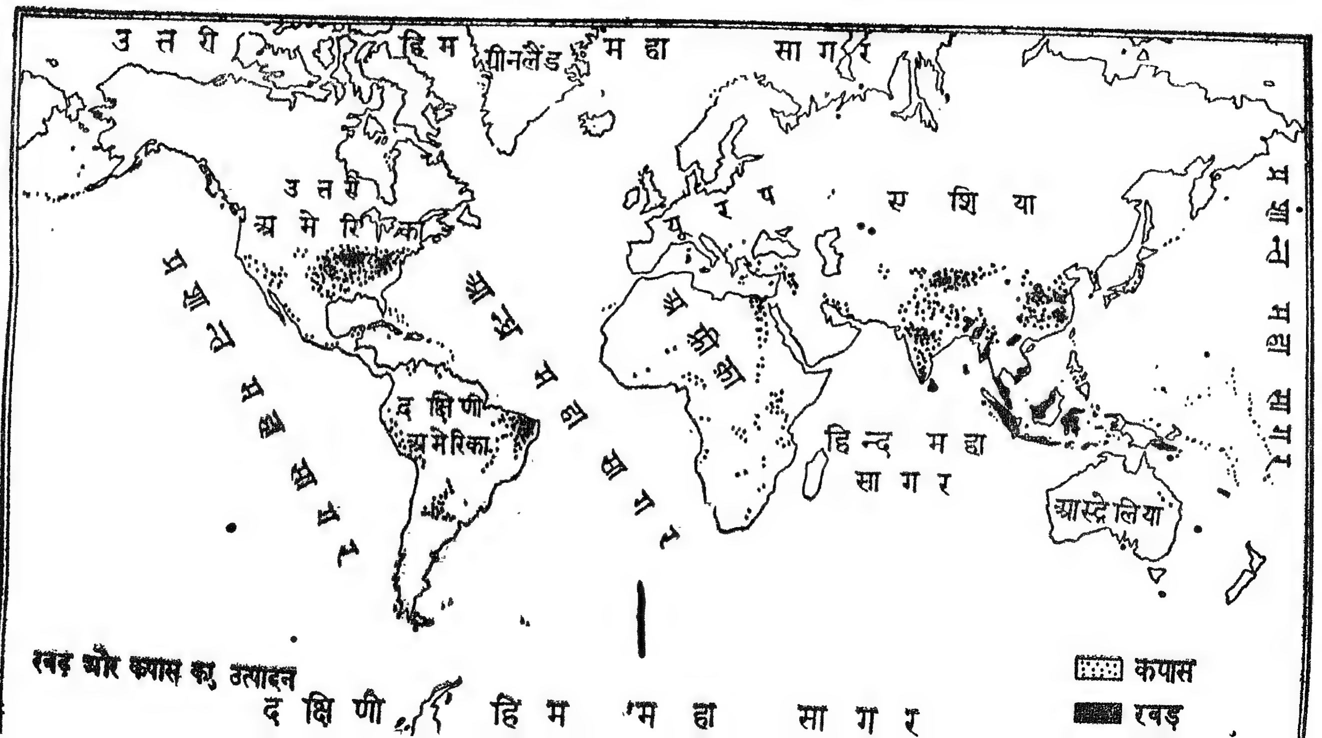
निर्यातक देश	मात्रा (टनों में)	आयात करने वाले देश
रूस	१८५,०००	पूर्वी यूरोप
भारत	३३,०००	संयुक्त राष्ट्र अमरीका जापान और संयुक्त राज्य

निर्यातक देश	मात्रा (टनों में)	आयात करने वाले देश
ईरान	२३,०००	इटली, संयुक्त राज्य, पश्चिमी जर्मनी
सीरिया	२८,०,००	फ्रांस, संयुक्त राज्य, स्विट्जरलैंड, जापान
बेलजियन कांगो	४७,०००	बेल्जियम, संयुक्त राज्य
फ्रेंच भूमध्यरेखीय अफ्रीका	२६,०००	फ्रांस
मोजम्बीक	२६,०००	पोर्तुगाल
यूगाण्डा	६६,०००	भारत और संयुक्त राज्य
अर्जेण्टाइना	५४,०००	इटली, जापान, संयुक्तराज्य

ब्रिटिश कामनवेल्थ में कपास की कमी ही रहती है यद्यपि यहाँ संसार की कुल उपज की ३४ प्रतिशत कपास उत्पन्न होती है। कामनवेल्थ में कपास की माँग यहाँ के निवासियों की वास्तविक आवश्यकता से कहीं ज्यादा है। इसका कारण यह है कि ग्रेट ब्रिटेन से विदेशों के लिए रूई के कपड़े तैयार किये जाते हैं। कामनवेल्थ में कच्ची कपास भारत व यूगेण्डा से प्राप्त होती है और हल्की किस्म की होती है, अत: लंकाशायर के मिल वाले इसे कम पसंद करते हैं और संयुक्तराष्ट्र व मिस्र से कच्चा माल आयात करते हैं। लंकाशायर में प्रयोग की जाने वाली कुल कपास का तीन चौथाई भाग संयुक्तराष्ट्र से आता है।

ब्रिटिश कामनवेल्थ को रूई के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्न हो रहे हैं। उत्तरी नाइजीरिया, न्यासालैण्ड, टैन्गनाइका और कीनिया में कपास की विस्तृत खेती हो सकती है। सूडान में कपास की खेती ने काफी उन्नति कर ली है। जजीरा प्रान्त में कपास के खेतों में सिंचाई करने के लिए नीली नील नदी पर सेन्नार नामक स्थान पर एक बांध बनाया गया है। पाकिस्तान में सिंध व पंजाब प्रान्तों में सिंचाई की सहायता से बढ़िया मेल की अमरीकन कपास उगाई जाती है।

वास्तव में सभ्यता के विकास व प्रसार के साथ-साथ मनुष्य का जीवन अधिक आराम-पसंद हो गया है और कपास की माँग भी उसी प्रकार बढ़ गई है। इसलिए यह आवश्यक है कि कपास के उत्पादन क्षेत्रों को बढ़ाया जाये। भाग्यवश ऐसे बहुत से क्षेत्र मौजूद हैं। ब्रिटिश कामनवेल्थ के बाहर पश्चिमी द्वीपसमूह में लम्बे रेशे वाली रूई और अधिक मात्रा में उगाई जा सकती है। सन् १९४१ से पूर्व रूस में सस्ते मजदूरों की सहायता से उसके विस्तृत भूमिखंड पर कपास की खेती की अच्छी प्रगति हो रही थी और धीरे-धीरे निर्यातक देशों में भी उसका महत्त्व बढ़ रहा था। पहले रूस में कपास की खेती ट्रांस काकेशिया और तुर्किस्तान तक ही सीमित थी परन्तु अब हाल में ही क्रीमिया, कालेसागर का तटीय प्रदेश, यूक्रेन और एजोव सागर के तटवर्ती भागों में भी कपास की खेती होने लगी है। इन प्रदेशों के अलावा मेक्सिको, कोरिया और मनचूरिया में भी कपास की वृद्धि होने की काफी सम्भावना है।



रबड़ और कपास का उत्पादन

जूट या पटसन (Jute)—कपास के बाद उष्णकटिबन्धीय रेशेदार पौधों में पटसन का स्थान आता है। इसका मुख्य योग रस्सी, दरी, टाट और बोरे व थैले बनाने में होता है। संसार की मंडियों में जूट की महत्त्वपूर्ण माँग का कारण यही है कि खेती की उपज को भरने के लिए बोरे बनाने के वास्ते इससे अधिक सस्ता रेशा और कोई नहीं होता है। यद्यपि व्यापारिक उपयोग के लिए अब और प्रकार के रेशे भी प्राप्त होने लगे हैं परन्तु अभी तक ऐसा कोई भी रेशा प्राप्त नहीं हो सका है जो जूट के समान सस्ता हो और इतने अधिक विभिन्न उपयोग में आ सके।

उपज की दशायें—पटसन उष्णकटिबन्ध का पौधा है और ५ से १० फीट तक ऊँचा होता है। परन्तु इसकी खेती भारत में गंगा की निचली तलहटी और पूर्वी पाकिस्तान में बिलकुल सीमित है। भारत व पाकिस्तान में जूट की कुल उपज का ७४ प्रतिशत केवल पूर्वी बंगाल से प्राप्त होता है। पटसन की सफल खेती के लिए निम्नलिखित दशाओं का वर्तमान होना आवश्यक है :

(१) बढ़वार के समय उच्च तापक्रम—कम से कम ८८° तक।
(२) उपजाऊ भूमि।
(३) काफी वर्षा।
(४) बढ़वार के समय काफी विस्तृत वर्षा।
(५) पौधों को सड़ाकर व उनको पीट कर रेशे निकालने के वास्ते काफी पानी।
(६) उचित समय पर काम करने के लिए कुशल मजदूरों की पर्याप्त संख्या
(७) रेशों को मंडी में पहुँचाने के लिए यातायात की सुविधाएँ।

पटसन का पौधा तीन प्रकार की भूमि पर अच्छा उग सकता है :

(अ) रेत मिली हुई उपजाऊ उच्च भूमि।
(ब) बाढ़ की भूमि—नदियों के उन किनारों पर जहाँ नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी हो और नमी के दिनों में बाढ़ आती हो।
(स) नदियों के तट व डेल्टा की निचली उपजाऊ भूमि।

उपज के क्षेत्र—उपज की ये सभी प्राकृतिक, मानवी व आर्थिक दशायें पूर्वी पाकिस्तान व गंगा की निचली तलहटी में वर्त्तमान हैं। पटसन के रेशे की विशेषता व उपज प्रति एकड़ भूमि की तैयारी पर निर्भर होती है। पूर्वी बंगाल का पटसन मजबूत व कठोर होता है और इससे बढ़िया किस्म का मजबूत टाट तैयार किया जाता है। इसमें करीब ४८ प्रतिशत जूट खप जाता है। ब्राजील, लंका, फारमोसा, चीन, मलाया में भी कुछ पटसन उत्पन्न किया जाता है। ब्राजील ने एक पंचवर्षीय योजना तैयार की है जिसका ध्येय है कि सन् १९५३ तक पटसन की उपज पंचगुनी हो जाय। इस योजना का लक्ष्य ५०,००० टन रखा गया है और आशा की जाती है कि ऐसा होने के बाद ब्राजील को विदेशों से जूट नहीं मँगाना पड़ेगा। मिस्र, ईरान, स्याम, इण्डोचीन, जापान, मेक्सिको और पेरागुये में भी पटसन की खेती की जा सकती है।

जूट का विश्वव्यापी उत्पादन
(हजार मैट्रिक टनों में)

काल (औसत)	भारत	पाकिस्तान	अन्य देश	योग
१९३५-३९	३६०	१,१२५	२५	१,५१०
१९४०-४४	३५४	१,२५७	२४	१,६३५
१९४७	२३९	७४९	६४	१,०५२
१९४८-४९	३०१	१,२४२	३५	१,५७८
१९५०-५१	५९९	१०,९०	४३	१,७३०

भारत व पाकिस्तान का पटसन अधिकतर ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, संयुक्तराष्ट्र व फ्रांस को निर्यात कर दिया जाता है। कनाडा, जापान, इटली व अर्जेण्टाइना भी काफी मात्रा में पटसन का आयात करते हैं।

पटसन का उद्योग—जूट से बनने वाली चीजों को चार भागों में बाँटा जा सकता है—(अ) टाट के बोरे जिनमें चावल, गेहूँ, तिलहन आदि रखे जाते हैं, (ब) टाट का कपड़ा, (स) दरियां व मोटे किस्म के बिछाने की वस्तुएं, (द) रस्सियाँ, रस्से इत्यादि।

भारत में पटसन से विभिन्न वस्तुएँ निर्माण करने के कारखाने हुगली नदी के किनारों पर, कलकत्ते के पास केन्द्रित हैं। यह प्रदेश पटसन उद्योग के लिए बड़ा ही उपयुक्त है, क्योंकि पास में ही कच्चा माल, सस्ते मजदूर, नम जलवायु, नाव चलाने योग्य नदी तथा कलकत्ते का बन्दरगाह आदि सब साधन उपस्थित हैं।

भारत के बाहर पटसन उद्योग का केन्द्र स्काटलैण्ड में डण्डी प्रदेश है। कलकत्ता व डन्डी से पटसन का तैयार माल संसार के कोने-कोने को निर्यात किया जाता है और इन दोनों केन्द्रों के बीच बड़ी स्पर्धा है। सन् १९०८ तक डन्डी पटसन के तैयार माल में सबसे आगे था पर तब से कलकत्ता इस व्यवसाय में प्रधान हो गया है।

भारत व पाकिस्तान के जूट व्यवसाय में एक विशेषता है। पूर्वी बंगाल में चावल की खेती को त्याग कर जूट की खेती होने लगी है। अतः एक ही फसल पर निर्भर रहने से बहुत हानि की संभावना है। दूसरी बात यह है कि यद्यपि पूर्वी बंगाल में सम्पूर्ण भारत का ७४ प्रतिशत जूट उत्पन्न होता है, परन्तु जूट की सभी मिलें भारत में ही स्थित हैं। संसार में इस समय मशीनों का मिलना दुभर है और फिर नये सिरे से व्यवसाय शुरू करने के लिए पाकिस्तान में पर्याप्त पूँजी भी नहीं है। इसलिए पूर्वी पाकिस्तान में शीघ्र ही जूट मिलें स्थापित नहीं हो सकती हैं। ऐसी दशा में पटसन का निर्यात भारत व पाकिस्तान दोनों के ही लिए अनिवार्य है क्योंकि पाकिस्तान में न तो कच्चे पटसन की इतनी खपत है और न भारत में पटसन के बने माल की ही इतनी माँग है। अतः दोनों के लिए जूट के निर्यात की प्राथमिक महत्ता है।

पटसन के व्यवसाय की समस्याएँ—आजकल अनेक देशों में ऐलीवेटर्स (Elevators) के प्रयोग तथा जहाजों में ढेर लादे जाने की रीति से पटसन के बोरों की मांग बहुत कम हो गयी है। कुछ देशों ने विश्वव्यापार में जूट की स्पर्धा करने के लिए अनेकों अन्य वस्तुएँ निकाल ली हैं। भारतीय जूट के मुकाबले पर रूस में सन का व्यापार बढ़ रहा है और भारतीभ जूट की खपत की मंडियों में रूसी सन की अधिक बिक्री होने लगी है। संयुक्तराष्ट्र में भी सीमेंट भरने के लिए पटसन के बोरों के स्थान पर कागज के थैले प्रयोग होने लगे हैं। संयुक्तराष्ट्र, जर्मनी और अन्य योरोपीय देशों में बिजली के तारों के अन्दर पटसन के धागे के स्थान पर लकड़ी के गूदे से बना हुआ धागा इस्तेमाल होने लगा है। दूसरे, आजकल सभी देश जूट उत्पादन के लिए प्रयत्नशील हैं। अबीसीनिया में असली पटसन को उगाने के लिए अनेक यत्न हो रहे हैं। जावा में भी जूट के समान रेशों वाला Rosella नाम का एक पौधा उगाया जाने लगा है। आशा है कि बहुत शीघ्र ही जावा चीनी के बोरों के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर हो जायगा। दक्षिणी अफ्रीका में जंगली स्टोकरूस (Wild StocKroos) नामक पौधे को उगाने के प्रयोग हो रहे हैं और यदि इसकी खेती के प्रयत्न सफल हो गये तो इसके रेशे से गेहूँ भरने के बोरे बन सकेंगे। यह पौधा इस समय पूर्वी ट्राँसवाल में होता है।

सन् १९३९ से १९४५ तक जब दूसरा महायुद्ध चल रहा था, जूट का अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय बहुत कुछ रुक गया था और कपड़े कागज व अन्य वस्तुओं के थैले सामान भरने व भेजने में प्रयोग होने लगे थे। फलतः जूट की मंडियों में इन वस्तुओं की खपत भी बहुत बढ़ गई थी। परन्तु १९४६ से फिर लोगों का प्रवृत्ति जूट की तरफ बढ़ रही है। असल में युद्ध के दिनों में इन अन्य पदार्थों की खपत उनके गुणों के कारण नही बढ़ी थी बल्कि जूट के न मिलने के कारण। कागज के थैलों के प्रयोग में उन्नति तो इस कारण हुई है कि सामान भर कर बन्द करने की प्रणाली ही कुछ बदल-सी गई है और इसीलिए केवल कनाडा व संयुक्तराष्ट्र में इनकी खपत ज्यादा है। परन्तु कागज की अपेक्षा जूट के थैलों के लाभ कहीं अधिक हैं क्योंकि जूट सस्ता होता है, ज्यादा मजबूत होता है और कई बार इस्तेमाल किया जा सकता है।

यह सर्वथा सम्भव है कि जूट की तरह अन्य रेशेदार पौधे बोये जायें और उनकी खेती भी सफल हो जाय। परन्तु यह बात शंकायुक्त है कि वे जूट की स्पर्धा कर सकें। दूसरी बात यह है कि भारत व पाकिस्तान की तरह सस्ते मजदूरों व उत्पादन की दूसरी प्राकृतिक सुविधायें अन्य किसी देश में नहीं हैं।

पटुआ (Hemp)—इस पौधे को रेशे व बीज दोनों ही के लिए उगाया जाता है। इसके रेशे से रस्सियाँ, बोरे का कपड़ा, मोटे डोरे, जहाज के पाल व मोटे रस्से आदि चीजें बनाई जाती हैं। इसके बीज मुर्गियों को खिलाने व तेल निकालकर रंग व वार्निश बनाने के काम आते हैं।

उपज की दशायें—इसके उत्पादन का क्षेत्र बड़ा विस्तृत तथा दशायें बड़ी व्यापक हैं। यह उष्ण व शीतोष्ण कटिबन्ध के सभी प्रदेशों में उत्पन्न होता है। फूल

आने पर पौधे खेत में से उखाड़ लिए जाते हैं और फिर धूप में सुखाकर दो सप्ताह तक पानी में डुबो दिए जाते हैं। इसके पश्चात् इनको पीटकर रेशों को अलग कर लिया जाता है। रूस, इटली, चीन, हंगरी, भारत और संयुक्तराष्ट्र अमरीका पटुआ के प्रधान उत्पादक देश हैं। पटुआ का ८० प्रतिशत उत्पादन यूरोप के देशों में होता है।

सन् १९५० में विश्व उत्पादन अनुमानतः ६ लाख टन था जिसमें विभिन्न देशों का भाग इस प्रकार था:—

रूस	५२ प्रतिशत
इटली	१५ प्रतिशत
यूगोस्लाविया	८ प्रतिशत
रूमानिया	५ प्रतिशत

इटली में प्रति एकड़ उपज सबसे अधिक (१००० पौंड) है और रूस में सब से कम (३०० पौंड) है।

उपज के क्षेत्र—रूस, इटली, चीन, हंगरी, भारत और संयुक्तराष्ट्र पटुए को उगाने वाले मुख्य क्षेत्रहैं। उपज के क्षेत्रफल व मात्रा दोनों में ही रूस का स्थान सर्वप्रथम है। रूस के कुर्स्क, ओरेल, ओवलास्क, युकरेन और मोरगोबिया क्षेत्रों में पटुआ की खेती प्रधान रूप से की जाती है। इटली में पटुआ सर्वोत्तम श्रेणी का होता है, यद्यपि इसकी उपज की मात्रा रूस की अपेक्षा बहुत कम होती है। संयुक्त-राष्ट्र के ओहियो, विसकोन्सिन और केनटेके राज्यों मे पटुआ की खेती है। फिली-पाईन द्वीपसमूह में भी बहुत बढ़िया किस्म का पटुआ उत्पन्न किया जाता है जिसे मैनीला हेम्प के नाम से पुकारते हैं और इससे रस्सियां व डोरियाँ बनाई जाती हैं।

मेक्सिको, टेगान्यायिका और कीनिया में कड़े रेशे वाला पटुआ होता है जिसे सीसल हेम्प (Sisal Hemp) कहते हैं। इसका मुख्य प्रयोग बटे हुए रस्से तैयार करने में होता है।

भारत में भी पटुआ की काफी खेती होती है और मद्रास, बम्बई, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के राज्य इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। भारत का पटुआ ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम, इटली, फ्रांस, जर्मनी और डेनमार्क को निर्यात किया जाता है।

सन (Flax)—सन के पौधे को रेशे व बीज दोनों के ही लिए उगाया जाता है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है और इस तेल का रंग व वार्निश तैयार करने में प्रयोग होता है। इसके रेशे से डोरी, बटे हुए रस्से, टाट तथा बहुत प्रकार के मोटे कपड़े तैयार किए जाते हैं।

साधारणतया रेशे व बीज एक ही प्रकार के पौधे से नहीं मिलते। उष्ण-कटिबन्ध में सन का पौधा बीज के लिए उगाया जाता है और शीतोष्ण कटिबन्ध में रेशे के लिए। प्रायः सन की खेती उन प्रदेशों में होती है जहाँ आबादी घनी होती है और रहन-सहन का स्तर निम्न। इसकी खेती में काफी मजदूरों की आवश्यकता

होती है। पौधों को उखाड़ने व कंघे द्वारा बीज को अलग करने, या पौधे को पानी में सड़ाकर रेशों को अलग करने के लिए हाथ की मेहनत ही पड़ती है। इसलिए इसकी खेती भारत, रूस, इटली, आयरलैण्ड और अर्जेण्टाइना में विशेष रूप से प्रचलित है।

सन के उत्पादन में रूस का प्रधान स्थान है। संसार में सन की खेती ६० लाख एकड़ भूमि पर की जाती है। इसमें से ५० लाख एकड़ अकेले रूस में है। रूस में सन की खेती के प्रधान क्षेत्र कालिनिन, लेनिनग्रेड, व्रेल रूस, तथा किराव है। इन सभी प्रदेशों में सन की खेती में मशीनों का प्रयोग किया जाता है।

सन् १९५० में अनुमानित विश्व उत्पादन १० लाख टन था जिसमें से रूस ने ८० प्रतिशत उगाया था।

पश्चिमी रूस, पोलैण्ड, फ्रांस, आयरलैंड और बेल्जियम में सन से रेशे निकालते हैं। भारत, संयुक्तराष्ट्र और अर्जेन्टाइना में इसका मुख्य उपयोग बीज निकाल कर करते हैं। संसार के मुख्य सन-निर्यातक देश रूस, बेल्जियम, अर्जेण्टाइना और भारत हैं।

रेशम (Silk)—रूई की कमी को पूरा करने के लिए रेशम एक उपयोगी पदार्थ है। वस्त्रों के अलावा इसका उपयोग बिजली के प्रवाह-अवरोधन (Insulation) और चीरफाड़ की सामग्री में होता है। टाइप की मशीनों के फीते भी बनते हैं। रेशम का उपयोग पैराशूट, फीते, डोरियाँ तथा धूम्रहीन विस्फोटक वस्त्र बनाने में भी होता है।

उपज की दशायें—यद्यपि रेशम कीड़ों से प्राप्त होने वाला रेशा है परन्तु इसका उत्पादन कुछ वृक्षों पर निर्भर है। इनमें शहतूत का वृक्ष प्रमुख है। रेशम के कीड़े इन वृक्षों की पत्तियों को खाते हैं। ये कीड़े कोये (cocoons) बनाते हैं जिनमें रेशम तैयार किया जाता है।

शहतूत का पेड़ मोरस (morus) जाति का होता है और इस जाति के कई प्रकार के पेड़ विभिन्न देशों में पाए जाते हैं। **सफेद शहतूत** चीन में पाया जाता है और छठी शताब्दी में दक्षिणी यूरोप में लाया गया। अब यह सभी रेशम उत्पन्न करने वाले क्षेत्रों मे महत्वपूर्ण वृक्ष है। **असली शहतूत** का वृक्ष उत्तरी अमरीका में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ रेशम के कीड़ों के लायक नहीं होती हैं और इस पर पाले हुए कीड़ों के कोये प्रायः मामूली किस्म के होते हैं।—शहतूत का वृक्ष साधारणतया उस भूमि पर उगाया जाता है जो अन्य किसी प्रकार की खेती के लिए सर्वथा अनुपयुक्त होती हैं। इसके वृक्ष नदियों के किनारों या सड़कों के अगल बगल लगाये जाते हैं।

उपज के क्षेत्र—चीन, जापान और इटली रेशम उत्पन्न करने वाले मुख्य देश हैं। भारत, फ्रांस, स्पेन और एशिया माइनर में भी थोड़ी बहुत मात्रा में रेशम उत्पन्न किया जाता है। चीन में सबसे अधिक रेशम पैदा होता है और संसार की कुल माँग का १८ प्रतिशत चीन से ही प्राप्त होता है। चीन में यह एक

घरेलू धंधा है। दूसरे महायुद्ध से पहले जापान से सबसे अधिक रेशम निर्यात होता था। जापान हमेशा से कच्चे रेशम का सबसे प्रधान उत्पादक राष्ट्र रहा है। परन्तु दूसरे महायुद्ध के बाद इसका उत्पादन केवल एक पंचमांश ही रह गया है। फिर भी इस समय विश्व उत्पादन का ६८ प्र० श० कच्चा रेशम जापान से ही प्राप्त होता है। यूरोप में कच्चे रेशम का उत्पादन केवल फ्रांस और इटली में ही होता है। यूरोप का ९० प्रतिशत रेशम इटली की पो घाटी से प्राप्त होता है।

कच्चे रेशम का उत्पादन (१९५०) (हजार टनों में)

जापान	चीन	इटली	फ्रांस	भारत
८.८९	—	१.३७	०.०५	१.०३

अमरीका के देशों में केवल ब्राजील ऐसा है जहाँ रेशम के कीड़ों को पाला जाता है। साओ पोलो, इसपीरिटो सेण्टो, मीनास गेरास में वारवेसेना का प्रदेश और अमेजन व पारा इसके प्रधान केन्द्र हैं। ब्राजील के अटलांटिक सागर तट पर भी रेशम के उद्योग के छोटे-मोटे केन्द्र हैं।

व्यापार—रेशम की प्रमुख मण्डियाँ फ्रांस, संयुक्तराष्ट्र, जापान, ग्रेट ब्रिटेन जर्मनी, कनाडा और भारत हैं। संयुक्तराष्ट्र में संसार के कुल निर्यात का ६६ प्रतिशत रेशम आयात किया जाता है। फ्रांस में ७ प्रतिशत, जापान में ६ प्रतिशत, ग्रेट ब्रिटेन मे ५ प्रतिशत और भारत में ४ प्रतिशत रेशम आयात किया जाता है।

रेशम का निर्यात करने वाले मुख्य देश जापान, चीन कोरिया, इटली और मनचूरिया हैं। जापान से ७३ प्रतिशत रेशम निर्यात किया जाता है। चीन से १० प्रतिशत कोरिया से ६ प्रतिशत, इटली से ६ प्रतिशत और मनचूरिया से ४ प्रतिशत रेशम निर्यात किया जाता है।

कच्चे रेशम का आयात-निर्यात व्यापार १९५०-५१
(हजार मैट्रिक टनों में)

निर्यातक देश	**मात्रा**
जापान	५.६८
इटली	०.५९
आयातक देश	**मात्रा**
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	४.२८
संयुक्त राज्य	०.७८
फ्रांस	०.९५
स्विटजरलैंड	०.५३

कृत्रिम रेशम (Rayon)—पिछले कुछ दिनों से कृत्रिम रेशम का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। कृत्रिम रेशम उन सभी रेशों या धागों का नाम है जो रासायनिक क्रिया द्वारा गूदे या लुगदी से बनाए जाते हैं। रद्दी कपास या लकड़ी की लुग्दी तैयार कर ली जाती है और फिर इस रासायनिक क्रियाओं द्वारा तैयार की गई लुगदी को वारीक छेद वाली काँच की नलियों मे से दबाकर निकाला जाता है।

इस प्रकार रेशे तैयार हो जाते हैं। इन रेशों को सिल्क मिलों की वर्तमान मशीनों द्वारा काता व बुना जा सकता है।

आजकल वस्त्र व्यवसायियों में इसकी बड़ी माँग है क्योंकि इसे सूत, रेशम, सन तथा ऊन के साथ मिलाया जा सकता है। यद्यपि असली रेशम इससे हल्का, कोमल, चमकदार और लचीला होता है फिर भी कृत्रिम रेशम की माँग व अधिकाधिक उपयोग के कारण असली रेशम के दामों पर बड़ा असर पड़ा है। कृत्रिम रेशम को उत्पन्न करने वाले मुख्य देश क्रमशः संयुक्तराष्ट्र, जापान, इटली, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस व हालैंड हैं।

कृत्रिम रेशम का विश्वव्यापी उत्पादन

(हजार मैट्रिक टनों में)

धागा			रेशा		
प्रदेश	१९३७-३८	१९५१-५२	प्रदेश	१९३७-३८	१९५१-५२
फ्रांस	३०·१	५७.१	फ्रांस	५·१	४९·६
जर्मनी	५६·७	६९.९	जर्मनी	१००	१८४
इटली	४८·४	६५.१	इटली	७·८	६५·६
जापान	१५२·४	६२.६	जापान	७९·६	१०४·७
हालैंड	—	२४.४	हालैंड	०·१	११·८
ग्रेट ब्रिटेन	५२·१	९८.३	ग्रेट ब्रिटेन	१५·२	७५·८
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१४५·४	४३४·६	संयुक्त राष्ट्र अमरीका	९·२	१५२·४
विश्व योग	५४२·७	९६१·३	विश्व योग	२८३·९	८३३·७

युद्ध-पश्चात् काल में कृत्रिम रेशम की माँग बराबर बढ़ती रही है। साथ-साथ उत्पादन भी बराबर बढ़ रहा है। यूरोप कृत्रिम रेशम का घर है। कृत्रिम रेशम का धंधा सबसे पहले फ्रांस में प्रारम्भ हुआ था। आजकल सबसे अधिक कृत्रिम रेशम संयुक्त राष्ट्र में होता है। सन् १९५१-५२ में विश्वव्यापी उत्पादन का ४५ प्र० श० धागा और १८ प्रतिशत रेशा संयुक्तराष्ट्र से ही प्राप्त हुआ। उत्पादन के इतना बढ़ जाने पर भी कृत्रिम रेशम की मांग पूर्ति अभी तक संतोषजनक नहीं है। पिछले १० वर्षों से मिस्र, क्यूबा, मेक्सिको, अर्जेन्टाइना, चिली, कोलम्बिया, पीरू, भारत और तुर्की में भी कृत्रिम रेशम का उत्पादन शुरू हो गया है। ब्राजील में पहले भी कृत्रिम रेशम का उत्पादन होता था, परन्तु सन् १९५१-५२ में वहाँ पर कृत्रिम रेशम का उत्पादन २२,००० मीट्रिक टन था जबकि सन् १९३२ और १९३७ में उत्पादन की मात्रा क्रमशः केवल ७०० और ३,२९० टन थी।

परन्तु पिछले एक वर्ष से उत्पादन में फिर से कमी दिखलाई पड़ने लगी है। कपास आयात करने वाले १० प्रधान देशों में कृत्रिम रेशम के उत्पादन की मात्रा सन् १९५२-५३ में केवल ३५० लाख गाँठ कपास के बराबर थी जबकि इन्ही देशों

ने सन् १९५१-५२ में ४३३,००० गांठ कपास के बराबर कृत्रिम रेशम तैयार किया था। इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व का उत्पादन भी कुछ घट गया है। सन् १९५१-५२ के ८,०६९,००० गाँठ के मुकाबले सन् १९५२-५३ में कृत्रिम रेशम का उत्पादन केवल ६,८५५,००० गाँठ ही था। यह उत्पादन विभिन्न देशों की उत्पादन क्षमता से भी कम है।

फिर भी संयुक्तराष्ट्र अमरीका, जर्मनी और जापान में कृत्रिम रेशम के उत्पादन ने विशेष प्रगति की है।

रबर (Rubber)—तर विषुवतरेखीय प्रदेशों में रबर की खेती एक महत्त्वपूर्ण उद्यम है और संसार की सबसे मूल्यवान उपज हो गई है। ५० साल पूर्व इसकी व्यापार व उद्योग-धंधे में कोई भी महत्त्व नहीं था परन्तु आजकल इसका बड़ा महत्त्व है। सर्वप्रथम इसका प्रयोग केवल मिटाने व खुरचने में होता था। इसीलिए इसका नाम 'रगड़ने वाला,' (Rubber) पड़ गया। जैसे-जैसे इसकी विशेषताओं का ज्ञान बढ़ा यह भिन्न-भिन्न प्रयोगों में आने लगा। आजकल इससे जूतों के तले, बरसाती, खेल के सामान, मोटर व साइकलों के टायर आदि बनाए जाते हैं। २०वीं सदी के शुरू से मोटर व्यवसाय की तीव्र उन्नति के साथ-साथ रबर की माँग बराबर बढ़ती रही है।

उपज की दशायें—रबर या तो लगाए हुए बगीचों या जंगली वृक्षों से प्राप्त होती है। रबर के वृक्ष उन प्रदेशों में अधिक होते हैं जहाँ भारी जलवृष्टि होती है और जहाँ गहरी उपजाऊ दोमट मिट्टी होती है। इसकी भूमि पर पानी नहीं ठहरना चाहिए। इसलिए इस वृक्ष को भूमध्यरेखीय प्रदेशों में उगाया जाता है जैसे कांगो-बेसिन, अमेजन बेसिन और इण्डोनेशिया।

रबर के वृक्षों के बगीचे लगाने का आजकल व्यवसाय-सा हो गया है और इन बगीचों से अधिक उपज होने के कारण रबर का व्यवसाय बड़ा महत्वपूर्ण हो गया है। सन् १८९८ तक संसार का कुल रबर दक्षिणी और मध्य अमरीका के जंगली वृक्षों से प्राप्त किया जाता था। सन् १९०० में रबर का विश्वव्यापी उत्पादन ५४,००० टन था और इनमें से केवल ४ टन ऐसा रबर था जो लगाये हुए बगीचों से प्राप्त हुआ था। परन्तु सन् १९२९ में संसार की कुल उपज का १५ प्रतिशत रबर लगाये हुए बगीचों से प्राप्त किया गया।

उपज के क्षेत्र—जंगली रबर प्रधानतः ब्राजील, कोलम्बिया, वेनेजुला और बेल्जियन कांगो से प्राप्त किया जाता है। ब्राजील में रबर के पेड़ एकड़ प्रदेश, अमेजन और पारा में पाये जाते हैं। सन् १९३९ से १९४५ तक दूसरे महायुद्ध के कारण ब्राजील में रबर का उत्पादन काफी बढ़ गया और सन् १९४३ में ३५ ००० टन रबर इकट्ठा किया गया। मलाया की रियासतों पर जापान का कब्जा हो जाने के बाद वेनेजूला में फिर से सन् १९४२ में रबर का व्यवसाय शुरू किया गया। सन् १९४२ में बेल्जियन कांगो में १,८०० मीट्रिक टन रबर इकट्ठा किया गया।

जंगली रबर को इकट्ठा करने में बड़ी कठिनाइयाँ हैं। रबर के इकट्ठा

करने वालों को बड़ी मेहनत करके जंगल के बीच से लम्बे रास्ते साफ करने पड़ते हैं। हर दिन इन लोगों को मीलों का रास्ता तय करने के बाद मुश्किल से कुछ पेड़ मिलते हैं और फिर बहुत थोड़ा-सा रस (रबर) इकट्ठा हो पाता है। बहुधा इन लोगों को मच्छरों से घिरे हुए दलदली मैदानों से होकर गुजरना पड़ता है। इसके अलावा जंगली रबर के उपज क्षेत्र जैसे कांगो और अमेजन के बेसिन व्यापारिक मार्गों से सैंकड़ों व हजारों मील अन्दर की तरफ स्थित हैं। इनके विपरीत रबर के सभी मुख्य बगीचे एशिया में भूमध्यरेखा पर समुद्र के किनारे स्थित हैं और प्रायः सभी बगीचे संसार के एक प्रमुख समुद्री व्यापारिक मार्ग पर पड़ते हैं। अतः इन बगीचों में रबर इकट्ठा करने का खर्च कम पड़ता है। इन प्रदेशों की आवादी घनी होने के कारण मजदूर काफी संख्या में और सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। इसके अलावा उत्तम सुगम जलमार्गों के समीप रबर व्यवसाय स्थापित करने की सुविधा है।

रबर के बगीचे—अधिकतर इण्डोनेशिया तथा मलाया प्रायद्वीप के तटों पर या उनके समीप के प्रदेशों में पाये जाते हैं। संसार की ९५ प्रतिशत रबर यहीं से प्राप्त होती है। अन्य उत्पादन क्षेत्र लंका, भारत, ब्राजील और कांगो हैं। दूसरे महायुद्ध में काफी हानि होने पर भी मलाया प्रायद्वीप इस समय संसार में सबसे प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। इस समय मलाया में ३३,००,००० एकड़ से भी अधिक भूमि पर रबर के बगीचे लगाये गये हैं और मलाया राज्य में २० से ५० लाख लोगों की जीविका का यही एक मात्र सहारा है।

संसार के बगीचों की कुल उपज का ६० प्रतिशत भाग केवल ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों से प्राप्त होता है और बाकी भाग डच लोगों के द्वारा संचालित अथवा अधिकृत बगीचों से। संयुक्तराष्ट्र का रबर के उत्पादन में नहीं के बराबर हिस्सा है पर वह संसार की कुल उपज का $\frac{3}{5}$ भाग आयात करता है।

प्राकृतिक रबड़ का विश्व उत्पादन

(हजार टन)

प्रदेश	१९४८	१९४९	१९५३
मलाया	६९८	७००	५९०
इण्डोनेशिया	४३२	५००	७४०
लंका	९५	९०	९६
हिन्दचीन	४४	४५	६९
ब्रिटिश बोर्नियो	६२	६२	५०
बर्मा	९	१२	१०
लाइबेरिया	२५	२७	३७
अन्यदश	१५५	१३९	—
विश्वयोग	१५२०	१५७५	१७८८

रबर का व्यापार—रबर के व्यवसाय के प्रारम्भ में माँग व पूर्ति का कोई भी

सम्बन्ध नहीं था। फलत: रबर के दामों में भारी हेरफेर होता रहता था और उगाने वालों को भारी हानि होती थी। जब कभी दाम बढ़ते थे, लोग रबर की खेती का विस्तार कर देते थे यद्यपि माँग में बिल्कुल भी अन्तर नहीं होता था। फलत: माँग व पूर्ति का असामञ्जस्य और भी प्रखर हो जाता था। माँग की अपेक्षा उत्पादन बढ़ जाता था और फलस्वरूप दाम गिर जाते थे। इसलिए उत्पादन को नियंत्रण में रखने के लिए एक योजना निकाली गई। इसे 'स्टीवेंसन योजना' (Stevenson Scheme) के नाम से पुकारते हैं। इसके अनुसार रबर के उत्पादकों को उपज की मात्रा कम करके उस स्तर पर लाने पर बाध्य किया गया जो माँग के अनुरूप हो और जिससे रबर का उचित मूल्य स्थिर हो सके। लेकिन इस योजना का सबसे बड़ा दोष यह था कि यह केवल अंग्रेज बगीचों पर ही यह लागू थी। इसके सहारे दक्षिण-पूर्वी एशिया में ब्रिटिश बगीचों की रबर की उपज नियमित हो गई और इतनी अच्छी तरह नियमित रही कि दाम एकदम आकाश में चढ़ गये। अत: न तो उत्पादकों को ही विशेष लाभ हुआ और न ग्राहकों को ही ज्यादा क्रय करने की प्रेरणा मिली। हाँ, इन ऊँचे मूल्यों से अन्य लोग रबर के बगीचों की ओर आकर्षित हुए और 'इण्डोनेशिया में जहाँ यह योजना' लागू नहीं थी, उत्पादन बहुत काफी बढ़ गया। इस प्रकार स्टीवेंसन योजना के अन्तर्गत प्रदेशों में रबर के उत्पादन के क्षेत्रफल में कमी हो जाने पर भी संसार के अन्य देशों में रबर का उत्पादन बढ़ता रहा। फल यह हुआ कि रबर का मूल्य गिरा और रबर के ढेर-के-ढेर इकट्ठा हो गये। अत: सन् १९२८ में 'स्टीवेंसन योजना' का एकाएक अन्त कर दिया गया।

इसके बाद एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते द्वारा रबर उत्पादन की सीमा निर्धारित करने का प्रयत्न हुआ। इसमें दक्षिण-पूर्वी एशिया के सभी रबर उत्पादक देश सम्मिलित हुए। यह योजना जून सन् १९३४ से चालू हुई। इसके कई ध्येय थे—(१) उत्पादन को नियमित कर दिया जाय; (२) रबर के निर्यात को इस प्रकार नियमित किया जाय कि इकट्ठा हुआ ढेर साफ हो जाय, (३) मूल्य की उचित दर स्थिर हो जाय और (४) उत्पादकों को उचित लाभ पहुँच सके। इसलिए निर्धारित सीमा से ऊपर उत्पादन व निर्यात करने पर प्रतिबन्ध लगा दिये गये। इस अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का भार विभिन्न सरकारों के प्रतिनिधियों की एक समिति को सौंप दिया गया।

इस समझौते को सन् १९४४ में छोड़ दिया गया परन्तु अधिक उत्पादन को रोकने के लिए किसी न किसी प्रकार का नियन्त्रण होना आवश्यक है। सन् १९५० से अब तक प्राकृतिक रबड़ का उत्पादन बराबर घटता जा रहा है—

	उत्पादन (हजार टन)	उपभोग (हजार टन)
१९५०	१८६०	१७०५
१९५१	१८७५	१५००
१९५२	१७८०	१४५५

उत्पादन और उपभोग के बीच यह बढ़ता हुआ अन्तर कृत्रिम रबड़ के उपभोग में बढ़ोतरी के कारण है।

इस समय रबर को आयात करने वाले मुख्य देश संयुक्त राष्ट्र, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, जापान और रूस हैं। इधर कुछ दिनों से संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने ब्राजील व मेक्सिको के कुछ बगीचों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया है।

पिछले कुछ दिनों में रासायनिक क्रियाओं द्वारा तैयार किये हुए कृत्रिम रबर ने काफी प्रगति कर ली है। यह कृत्रिम रबर (Synthetic Rubber) प्राकृतिक रबर का प्रतिद्वंद्वी बनता जा रहा है। निम्न तापक्रम में रासायनिक क्रियाओं द्वारा कृत्रिम रबर तैयार करने तथा ससे मजबूत टायर (Tyres) बनाने के कई कारखाने संयुक्तराष्ट्र अमरीका में खुल गये हैं। अगर टायर बनाने के क्षेत्र से प्राकृतिक रबर को हटा देना संभव हो सका तो निश्चय ही कृत्रिम रबर विजय प्राप्त कर लेगा। कृत्रिम रबर के क्षेत्र में नयी दिशाओं में विकास हो रहा है और होने की संभावना है। उन सबके सफल हो जाने पर रबर के भावी औद्योगिक उपयोग में बड़े-बड़े परिवर्तन हो सकेंगे। इसी प्रकार एक और नया लचीला कृत्रिम रबर है। जिस पर गैसीले तेल, रंगों और विभिन्न रासायगिक घोलों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अत: इसका प्रयोग छापेखानों में छपाई के रोलर और वायुयानों के तेल-सम्बन्धी यन्त्रों द [illegible] में हो सकेगा। सन् १९४८ में कृत्रिम रबर का उत्पादन पाँच लाख टन था।

प्रथम विश्व युद्ध के समय जर्मनी ने सबसे पहिले कृत्रिम रबड़ का निर्माण किया। सन् १९३८ में विश्व के कुल रबड़ उत्पादन का ८ प्रतिशत अंश कृत्रिम रबड़ था। दूसरे महायुद्ध के दौरान में इस उद्योग ने बड़ी प्रगति की। सन् १९४५ तक विश्व उत्पादन का ८४ प्रतिशत अंश कृत्रिम रबड़ था। प्राकृतिक रबड़ उद्योग की दशा सन् १९४७ के बाद कुछ सुधरी क्योंकि दक्षिणी-पूर्वी एशिया में रबड़ का उत्पादन फिर शुरू हो गया परन्तु चूँकि कृत्रिम रबड़ का उपभोग बराबर बढ़ रहा है, इस लिए प्राकृतिक रबड़ का भविष्य बहुत उज्जवल नहीं है।

संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कृत्रिम रबड़ की सबसे अधिक माँग है और संसार की कुल उपज का ९० प्रतिशत वहीं जाता है। इसके बाद कनाडा का स्थान है जहाँ ४ प्रतिशत कृत्रिम रबर इस्तेमाल होता है। बाकी ६ प्रतिशत अन्य सब देशों में बँट जाता है, इसीलिए संयुक्त राष्ट्र की मंडियों में कृत्रिम रबड़ की प्रतिद्वंद्विता का भय सबसे अधिक है।

प्राकृतिक और कृत्रिम रबड़ का उपभोग (१९५१)

देश	प्रतिशत
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	५३·४
संयुक्त राज्य	१०
फ्रांस	५·१
पश्चिमी जर्मनी	३·६
कनाडा	३·१
आस्ट्रेलिया	१·५

सन् १९५१-५२ में संयुक्तराष्ट्र अमरीका में रबड़ की खपत में ६० प्रतिशत भाग कृत्रिम रबड़ का था। कृत्रिम रबर के इस बढ़ते हुए उपभोग के कारण उत्पादन में भी वृद्धि हुई है जैसा निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा :—

कृत्रिम रबड़ का विकास

	प्राकृतिक रबड़	कृत्रिम रबड़
	(हजार टन)	
१९४८	१५२०	४८०
१९४९	१५७५	४५०
१९५०	१८६०	५४३
१९५१	१८७५	९२०
१९५३	१७८८	९८९

तिलहन (Oil seeds) और वनस्पति तेल (Vegetable oil)—प्रायः सारे वनस्पति तेल फलों या बीजों से प्राप्त होते हैं। इन तेलों का प्रयोग केवल अचार, चटनी या अन्य खाद्य पदार्थों में ही नहीं होता है बल्कि इनकी सहायता से सुगन्धित तेल, वार्निश, मशीन के तेल, मोमबत्ती, साबुन आदि भी बनाये जाते हैं।

प्रधान तिलहन में तेल का अंश

नारियल की गिरी	६३ प्र० श०
तिल	४५ प्र० श०
रेंडी	४२ प्र० श०
मूँगफली	३६ प्र० श०
बर्रे का बीज	३५ प्र० श०
अलसी	३० प्र० श०
सन का बीज	३० प्र० श०
सूरजमुखी का बीज	३० प्र० श०
बिनौला	१८ प्र० श०
सोया बीन	१५ प्र० श०

यातायात के साधनों का महत्व—वस्तुओं के पारस्परिक क्रय-विक्रय अथवा अदल-बदल में प्रयुक्त मानवी चेष्टाओं को वाणिज्य या व्यापार कहते हैं। मनुष्य की इस व्यापार क्रिया में अनेक बाधायें उपस्थित होती हैं। इन बाधाओं का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के मनुष्यों, स्थानों अथवा समय से होता है। अतएव इन कठिनाइयों को दूर करना वाणिज्य का ही अंग है। समय अथवा मनुष्यों से सम्बन्धित कठिनाइयाँ तो व्यापारियों द्वारा हल हो जाती है, परन्तु स्थानों की विभिन्नता व दूरी से सम्बन्धित कठिनाइयाँ केवल यातायात के साधनों द्वारा ही दूर की जा सकती हैं।

प्राचीन काल में यातायात की व्यवस्था व प्रणाली बड़ी सरल थी। मनुष्य और पशु ही यातायात के साधन थे। परन्तु आजकल न केवल स्थानीय क्षेत्रों में बल्कि दूर-दूर स्थानों में भी बोझा ढोने के लिए मनुष्य जल, पवन, भाप तथा बिजली की शक्तियों से काम लेता है। फलतः सैकड़ों वर्ष पूर्व जिस यात्रा में महीनों लगते थे वही आज कुछ दिनों में ही पूरी हो जाती है। क्रमशः उन्नत वायुयानों द्वारा तो दूर-दूर के स्थानों के बीच का अन्तर और भी कम हो गया है। सच तो यह है कि यातागात के विभिन्न साधनों के विकास के साथ-साथ पिछले ५० वर्षों की अपेक्षा संसार अब छोटा हो गया है।

यातायात के वर्तमान साधन और उनसे लाभ— साधारणतया वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को लाने-ले जाने को हा यातायात कहते हैं। वस्तुओं के उत्पादन और वितरण में यातायात का बड़ा ही महत्व है। अतः यदि इसे व्यापार का 'जीवन-रक्त' कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। देशीय तथा विदेशीय व्यापार की उन्नति व विकास का यही आधार है। ऐसा कोई भी सभ्य देश नहीं है जो खाद्य सामग्री और कच्चे माल के लिए दूसरे देशों पर निर्भर न हो। पश्चिमी यूरोप के देश इन्हीं वस्तुओं के वास्ते एशिया तथा अमरीका पर आँख लगाये रहते हैं। यदि रेल और जहाज न होते तो कनाडा तथा अर्जेण्टाइना इतना गेहूँ पैदा नहीं कर सकते थे, क्योंकि वहाँ का गेहूँ विशेषकर यूरोप की मंडियों के लिए उत्पन्न किया जाता है।

वस्तुओं का अधिक उत्पादन तथा निर्माण इसी कारण होता है कि दूरी की समस्या अब बहुत कुछ सरल हो गई है। यातायात के साधनों के सहारे नवीन प्रदेशों में उपनिवेश स्थापित हो सके हैं और यूरोप निवासियों ने सुलभ यातायात की ही वजह से अमरीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका और न्यूजीलैंड में उपनिवेशों की स्थापना की है।

यातायात के रूप और साधन—धरातल तथा जलवायु की भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न देशों में यातायात के साधन भी भिन्न हैं। कुछ देशों में बहुत-से साधन हैं, तो कहीं एक या दो ही से काम लिया जाता है। टुण्ड्रा प्रदेश में बेपहिये की गाड़ी को रेनडियर खींचते है और मरुस्थल में ऊँट ही काम आता है। नीचे दी हुई तालिका से यातायात के विभिन्न प्रकार स्पष्ट हो जायेंगे।

अ—थल	ब—जल	स—वायु
१. मनुष्य	१. नदियाँ	१. भारी वायुयान
२. पशु	२. नहरें	२. हल्के वायुयान
३. सड़कें	३. झीलें	३. थोड़ी जगह में उतरने वाले हेलीकोप्टर जहाज
४. रेलें	४. महासागर	४. ग्लाइडर जहाज

अ—थल यातायात

अनेक देशों में अब भी मनुष्य ही बोझा ढोता है—मध्य अफ्रीका, चीन तथा जापान में बोझा ढोने वाले पशुओं की कमी के कारण थोड़ी दूर तक बोझा लाने ले जाने के लिए मनुष्य काम करता है। सूडान से जैम्बीसी तक अफ्रीका की जलवायु तथा भू-रचना इस प्रकार की है कि यहाँ पर सड़कें तथा रेलें बनाना बड़ा ही कठिन है। हाथीदाँत, रबर, नारियल आदि घास के मैदानों की उपज हब्शी कुली ही ढोते हैं। जहाँ बोझा ढोने वाले पशु मिल भी सकते हैं वहाँ भी मनुष्य उनका उपयोग नहीं कर सकता। बहुत-से पर्वतीय ढालों पर जैसे चीन, तिब्वत तथा चिली में पशु काम नहीं कर सकते। मध्य अफ्रीका तथा मध्य अमेजन के बेसिन में विषैले कीड़ों के कारण पशु द्वारा यातायात में बाधा पड़ती है। ऐसे भागों में भारी बोझा कुली ही लाते ले जाते हैं। परन्तु पिछड़े हुए देशों में ही मनुष्य से बोझा ढोने का काम लिया जाता है। खोज से पता चला है कि मनुष्य द्वारा १५० मील बोझा ढुलवाने का व्यय रेल द्वारा ८००० मील के भाड़े से तिगुना बैठता है।

पशु भी अनेक स्थानों पर बोझा ढोते हैं—शीतोष्ण कटिबन्ध में घोड़ा यातायात का साधन है। रेगिस्तानों में ऊँट बोझा ढोने का काम करता है और दिनभर में ३० मील से भी अधिक दूर बोझा ले जा सकता है। भारत, ब्रह्मा तथा अफ्रीका के कुछ भागों में हाथी बोझा ढोते हैं। एशिया के उष्ण कटिबंधीय सागौन के वनों में हाथी बड़ा काम करता है। उत्तरी भारत तथा तिब्बत के पहाड़ों पर याक बोझा ढोता है। भूमध्यसागर के निकटवर्ती पर्वतों तथा मेक्सिको में खच्चर काम आता है। कनाडा के उत्तर-पश्चिम तथा साइबेरिया में जमे हुए बर्फ पर बलिष्ठ कुत्ते स्लेज (बेपहिये की गाड़ियाँ) खींचते हैं। अलास्का तथा कनाडा के कुछ भागों में रेनडियर भी काम आने लगा है।

सड़कें और उनका महत्व—पशुओं का सबसे लाभकारी प्रयोग उन्हें पहियेदार गाड़ियों में जोतना है। ये गाड़ियाँ सड़कों पर ही चल सकती हैं। थल-

मार्गों में सबसे प्राचीन साधन सड़कें ही हैं। सड़कें लगभग सभी देशों में पाई जाती हैं। किसी देश के प्राकृतिक साधनों का सर्वोत्तम विकास आवागमन के उत्तम साधनों पर ही निर्भर रहता है। भद्दी व टूटी-फूटी सड़कें मनुष्यों के आवागमन तथा वस्तुओं के आदान-प्रदान में बाधा उत्पन्न करती हैं। अतः ऐसे देश जहाँ आवागमन के उत्तम साधन न हों अवनत ही रह जाते हैं।

सड़कें और मोटर—व्यापारिक देशों में सड़कें ही यातायात का उत्तम साधन होती हैं माल को इकट्ठा करने तथा वितरण में सड़कें बड़ी सहायक होती हैं। सड़कों पर चलने वाली गाड़ियों को पशु अथवा इंजिन खींचते हैं। मोटर गाड़ियाँ तेज चलती हैं और विश्वसनीय होती हैं। प्रत्येक सभ्य देश में इनका प्रचार है। मोटरों का पूरा-पूरा लाभ पक्की सड़कों पर ही उठाया जा सकता है। मोटरों के ही कारण पिछले ४० वर्षों में प्रत्येक देश में सड़कों की बड़ी उन्नति हुई है। आज-कल तो सहारा तथा अरब के रेगिस्तानों में भी मोटरें आने-जाने लगी हैं। सन् १९५२-५३ में संसार में कोई ८१० लाख मोटर गाड़ियाँ थीं, जिनमें से २३ प्रतिशत व्यापारिक गाड़ियाँ थीं।

सड़कों द्वारा यातायात से लाभ—रेलों तथा नावों की अपेक्षा सड़कों द्वारा यातायात में सुविधा होती है, क्योंकि सामान की अदला-बदली नहीं करनी पड़ती (एक गाड़ी से दूसरी में नहीं बदलना पड़ता), दूसरे सड़कों और मोटरों की सहायता से देश के भीतरी भागों में भी व्यापार किया जा सकता है। गाँवों में रेलों की अपेक्षा मोटरों द्वारा व्यापार करने में सुविधा रहती है। कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े-बड़े व्यवसायिक नगरों में निकटवर्ती गाँवों की उपज की वस्तुएँ मोटर द्वारा ही एकत्रित की जाती हैं। इन्हीं कारणों से प्रायः प्रत्येक देश में और सब मिलाकर भूमंडल पर सड़कों का विस्तार बहुत है जैसा नीचे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जायगा—

देश	मोटर सड़कों का विस्तार (मीलों में)	मोटरों की संख्या (लाख में)
संयुक्त राष्ट्र	३०,००,०००	३०१
फ्रांस	४,०६,२५०	२२
ग्रेट ब्रिटेन	१,७७,०००	२६
जर्मनी	१,७२,२५०	१९
कनाडा	३,९४,३००	१४

संसार की लगभग एक-तिहाई सड़कें **संयुक्त राष्ट्र** में हैं। इस देश में सड़कों की लम्बाई ३०,००,००० मील है जबकि संसार की समस्त सड़कों की कुल लम्बाई ९२,२५,००० मील है। संयुक्त राष्ट्र में सबसे अधिक मोटरें चलती हैं। यहाँ पर संसार की ७५ प्रतिशत से भी अधिक मोटरें हैं। साधारणतया चार मनुष्यों पर एक

मोटर का औसत पड़ता है। सन् १९५२ में वहाँ कोई ४४० लाख यात्री गाड़ियाँ तथा ९० लाख ट्रकें थीं।

कनाडा में मोटर यातायात के विकास के लिए अच्छी सड़कें नहीं हैं। वहाँ की सड़कों की कुल लम्बाई ३,९४,३०० मील है, परन्तु करीब ४० प्रतिशत सड़कें कच्ची हैं और ये कच्ची सड़कें सर्दी के महीनों में बन्द रहती हैं। ओण्टेरियो प्रान्त में सबसे अधिक सड़कें हैं और समस्त कनाडा की ५० प्रतिशत से भी अधिक मोटर गाड़ियाँ इसी प्रान्त में हैं। सन् १९५२ में २० लाख यात्री गाड़ियाँ (मोटरकार) और ७ लाख ३२ हजार ट्रकें थीं।

भारतवर्ष में सड़कों की लम्बाई ३,००,००० मील है। इसमें से केवल ७५,००० मील सड़कें मोटर चलाने योग्य हैं। भारत के विस्तार तथा जनसंख्या के विचार से यहाँ की सड़कें बहुत ही कम हैं। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में यातायात के लिए सड़कों की बड़ी आवश्यकता है। अब यह बात प्रतीत होने लगी है कि भारत की भविष्य में समृद्धि के लिए वर्तमान सड़कों का सुधार तथा अधिक सड़कों का निर्माण परमावश्यक है। सन् १९५१ में भारत में १,६०,००० मोटरकार तथा १,२१,००० ट्रकें थीं।

रेल और ट्रामगाड़ियों द्वारा यातायात—सड़कों के अतिरिक्त स्थल यातायात के दो अन्य साधन रेलें व ट्रामगाड़ियां बिजली से चलती हैं तथा बड़े-बड़े नगरों के समीप काम आती हैं। लम्बी यात्रा के लिए ट्रामगाड़ियाँ सुविधाजनक नहीं हैं। अतः रेलगाड़ियाँ ही अधिक काम में आती हैं। रेलों की चाल तेज होती है और वे भारी सामान ढो सकती हैं। इसी कारण इनका विश्वव्यापी विकास हो गया है।

वर्तमान समय में प्रत्येक देश के अन्दर यातायात का सर्वोत्तम साधन रेलें ही हैं। रेलों के द्वारा ही जनता दूसरे देशों में जाकर बस गई है। रेलें न होतीं तो वे देश कम बसे ही रह जाते। कनाडा और साइबेरिया की उन्नति व आबादी का आधार वहाँ की रेलें ही हैं। संसार में रेल द्वारा यातायात उत्तरोत्तर वृद्धि करता जा रहा है। रेलों द्वारा विश्वव्यापी यातायात के तुलनात्मक आँकड़े इस प्रकार हैं—

रेलमार्ग द्वारा विश्वव्यापी यातायात स्थिति

(दस लाख टन, किलोमीटर में)

प्रदेश	१९३७-३९	१९५०-५१	१९५१-५२
अफ्रीका	१९,५००	३८,८००	३७,८००
उत्तरी अमरीका	५७५,०००	९५४,०००	१०,४८,०००
दक्षिणी अमरीका	१९,४००	२५,८००	२६,७००
एशिया	७१,७००	९५,३००	११७,३००
यूरोप	२१९,०००	२३९,०००	२६२,०००
आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड	७,४००	१२,०००	१२,२००
कुल विश्वयोग	१२,२०,०००	१९,००,०००	२१,०८,०००

रेलें और उन पर जलवायु व प्राकृतिक दशा का प्रभाव—रेलों के निर्माण पर पृथ्वी की बनावट और जलवायु का प्रभाव पड़ता है। जलवायु का प्रभाव तो बहुत ही अधिक पड़ता है। बर्फ से पहाड़ी दर्रे जम जाते हैं और पहाड़ी रेलों के चलने में बाधक हो जाते हैं। भारी वर्षा से रेलों के बाँध नष्ट हो सकते हैं। ध्रुव प्रदेशों में हिम के कारण रेलें बन ही नहीं सकतीं और इसी प्रकार भूमध्यरेखीय वन-प्रदेशों में लगातार वृष्टि के कारण रेलों का निर्माण असम्भव-सा है।

देश की बनावट पर रेलों की दिशा निर्भर होती है। पर्वतीय सीमाओं के कारण रेलों को मोड़ना या समाप्त करना पड़ता है। मैदानों में रेलें सरलता से बन सकती हैं परन्तु पहाड़ी प्रदेशों की कठिनाइयाँ कभी-कभी अजेय होती हैं। बड़े-बड़े पर्वतों को पार करने के लिए सुरंगों का भी प्रयोग करना पड़ता है। पर लम्बी सुरंगों को बनाने और पहाड़ों को गहरा काटने में बड़ा खर्च पड़ता है, इसलिए जहाँ तक हो सकता है इस प्रकार की योजना को बचाया ही जाता है।

प्रमुख देशों में रेलमार्गों की लम्बाई (१९५२)

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२३८,०००	ब्रिटिश द्वीप समूह	५२,९१५
रूस	६७,४७०	जापान	१५,२५४
जर्मनी	४२,२९९	पोलैण्ड	१४,४८१
कनाडा	५८,१५०	दक्षिणी अफ्रीका संघ	१३,३९४
भारत	३४,०००	इटली	१४,५५०
आस्ट्रेलिया	२७,९६२	चिली	५,२००
अर्जेन्टाइना	१६,५००	बेल्जियम	३,१८९
फ्रांस	२६,४२७	पाकिस्तान	६,७४८
ब्राजील	२४,०००		

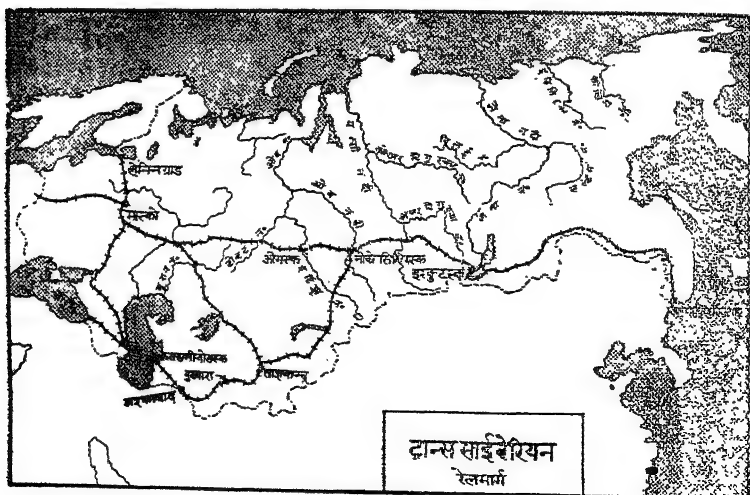
रेल मार्ग और सड़कें—रेलों के इस युग में सड़कों की बड़ी महत्ता है। सड़कों द्वारा ही माल रेलों तक पहुँचाया जाता है। ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस तथा संयुक्त राष्ट्र में बड़ी अच्छी सड़कें हैं। वर्तमान काल में मोटरें रेलों का मुकाबला करती हैं। कम दूरी की यात्राएँ मोटर द्वारा शीघ्र पूरी हो जाती हैं। स्टेशनों पर ठहरने, पटरी बदलने, माल इकट्ठा करने और छुड़ाने की कठिनाइयों के कारण रेलों द्वारा यातायात में बड़ा समय लग जाता है। परन्तु लम्बी यात्रा में और विशेषकर भारी वस्तुओं के लाने ले जाने में रेलें शीघ्रगामी, लाभप्रद और विश्वसनीय सिद्ध हुई हैं। फिर भी एक बात में सड़कें अधिक उपयोगी हैं। मोटर गाडियां पटरियों पर आश्रित नहीं होतीं, इसलिए सड़कों द्वारा विभिन्न दिशाओं में माल ले जाया जा सकता है। मोटरें इच्छानुसार इधर-उधर आ-जा सकती हैं और गाँवों में तो मोटर ही सर्वोत्तम साधन है। दूसरे गाँवों में व्यापारिक वस्तुओं का परिमाण अधिक न होने के कारण रेलें लाभदायक सिद्ध नहीं हो सकतीं।

कुछ प्रमुख रेलें—भूमंडल पर मुख्य महाद्वीपीय रेल-मार्ग निम्नलिखित हैं:—

१. ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग
५. ट्रान्स कैस्पियन रेलमार्ग
३. केप से केरो तक रेलमार्ग
४. कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग
५. चिली अर्जेण्टाइना रेलमार्ग

ट्रांस साइबेरियन रेलमार्ग

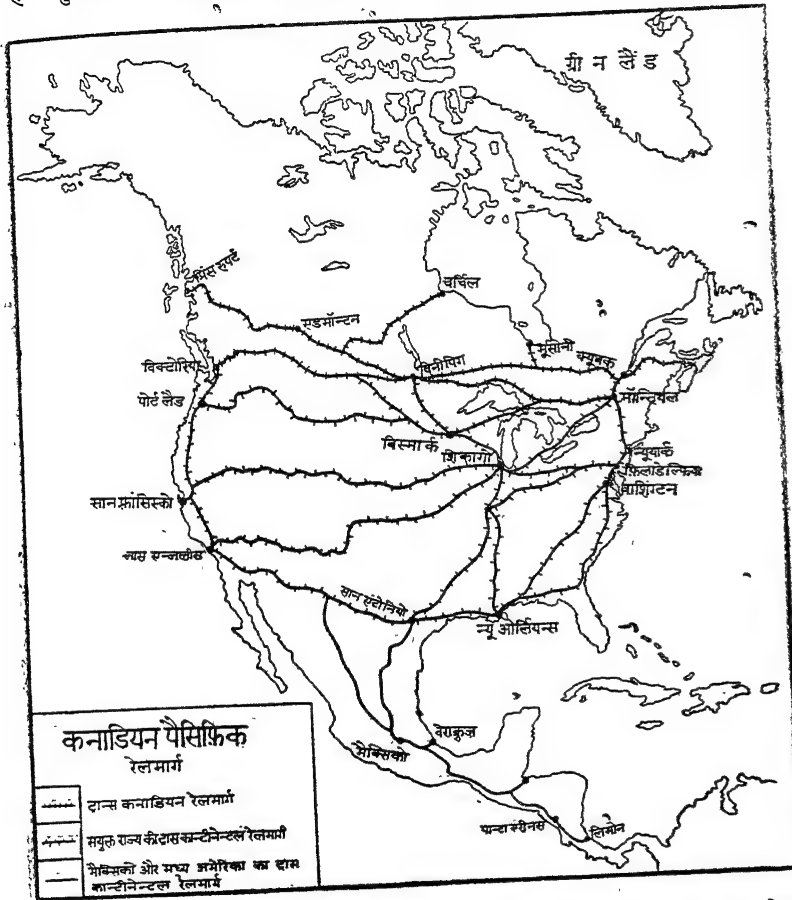
यह रेलमार्ग रूस को सुदूरपूर्व से मिलाता है और मास्को से व्लाडीवास्टक तक जाता है। यह ५४०० मील लम्बा है। मध्य और पूर्वी साइबेरिया में आबादी बढ़ने का श्रेय इसी रेलमार्ग को है। सोवियत रूस में इस रेलमार्ग की राजनीतिक व फौजी महत्ता व्यापारिक महत्ता से कहीं अधिक है। परन्तु यह ध्यान देने योग्य बात है कि यूरोप से प्रशान्त तटवर्ती एशिया के देशों में यात्रियों तथा डाक ले जाने का यह वैकल्पिक मार्ग है। जार सरकार ने इस लाइन को एशियाई रूस में शासन की सुविधा के लिए बनवाया था परन्तु इस समय इसका व्यापारिक महत्त्व बहुत अधिक है। इसी रेलमार्ग के कारण साइबेरिया में खेती व खनिज की उन्नति व विकास हो सका है।



चित्र ३०—ट्रांससाइबेरियन रेलमार्ग—मास्को से लेनिनग्राड तक एक रेलमार्ग जाता है और एक शाखा ओमस्क से ताशकन्द तक जाती है।

यह रेलवे लाइन इकहरी है। मास्को से यह लाइन ओमस्क पहुँचती है और मार्ग में यूराल पर्वत तथा कृषि-प्रधान स्टेपी प्रदेश से होकर गुजरती है। ओमस्क से यह सीधे पूर्व की ओर जाती है और ओबी तथा यनीसी नदियों को पार करके इरकुटस्क तथा बेकाल झील पहुँचती है। बेकाल से मास्को ३४२० मील दूर है और

यहाँ से आमूर की घाटी तथा मंचूरिया होती हुई व्लाडीवास्टक पहुँचती है। मंचूरिया में हारबिन से इसकी एक शाखा मुकडन होती हुई पोर्ट आर्थर तक जाती है। मुकडन से पीकिंग को भी एक रेल जाती है।



चित्र ३१—कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग—शिकागो में कनाडा के रेलमार्ग संयुक्तराष्ट्र के रेल मार्गों से मिल जाते हैं।

ट्रांस केस्पियन रेलमार्ग—यह लाइन मध्य एशिया को यूरोपीय रूस से मिलाती है। यूरोप तथा भारत के मध्य भावी रेलमार्ग इसी ओर से जायगा। यह लाइन कैस्पियन तट-स्थित कासनोवोडस्क से तुर्किस्तान के कपास उत्पन्न करने वाले प्रदेशों से होकर जाती है। इसकी एक शाखा अफगानिस्तान की सीमा पर जर्व से कुश्क तक जाती है और फिर कासनोवोडस्क से ताशकन्द होते हुए मास्को तक भी जाती है।

केप से केरो तक का रेलमार्ग—केपटाउन से केरो तक ९००० मील का अन्तर है। इस फासले को रेल, नदी, झील व सड़क द्वारा पार किया गया है। सेसिल रोडस (Cecil Rhodes) ने केपटाउन को क़ाहिरा से एक ऐसी रेल द्वारा मिलाने की योजना बनाई थी जिस पर केवल अंग्रेजों का अधिकार होगा। परन्तु इसमें उसे सफलता न मिली। केपटाउन से बुलाबेयो तथा एलिजाबेथबिले से होता हुआ एक रेलमार्ग बेल्जियन कांगो की सीमा तक जाता है। वहाँ से--कन्टंगा की राजधानी एलिजाबेथबिले से विक्टोरिया झील तक नदी तथा कारवां का मिलाजुला रास्ता है। विक्टोरिया झील से नीलगार्ज (Nile Gorge) तक एक मोटर की सड़क जाती है और वहाँ से खारतुम तक जहाज चलते हैं। खारतुम से वादी हैफा तक फिर रेलमार्ग है। वहाँ से शैलाल तक नदी-मार्ग और शैलाल से काहिरा तक रेल जाती है।

कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग—यह रेलमार्ग सन १८८२-८६ में बनाया गया था और ३५०० मील लम्बा है। यह लाइन कनाडा के एटलांटिक तथा प्रशान्त महासागरीय तटों को मिलाती है। इस लाइन के द्वारा लीवरपूल से चीन-जापान तट तक का मार्ग करीब १२०० मील छोटा हो जाता है। यह लाइन हैलिफैक्स तथा सैंट जान्स से माण्ट्रीयल तक जाती है। मान्ट्रीयल से यह लाइन कनाडा के गेहूँ के मुख्य केन्द्र विनीपेग को जाती है और फिर वहाँ से रेगिना होती हुई राकी पर्वतों के बीच मैडिसन हाट पहुँचती है। राकी पर्वत श्रेणी को यह लाइन किकिंग हार्स दर्रे से पार करके कनाडा के प्रशान्त महासागरीय तट पर वैनकुवर में समाप्त हो जाती है।

इस रेल से कनाडा राज्य के राजनैतिक व आर्थिक जीवन में महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई है। शुरू में कनाडा में उपनिवेश स्थापित करने में अनेक कठिनाइयाँ थीं। यहाँ की विषम जलवायु और विस्तृत दूरी के कारण बस्तियाँ बनाने में बड़ी रुकावटें थीं। देश के जल-मार्गों से निःसन्देह बड़ी सहायता मिली परन्तु विषम जलवायु के कारण ये नदियाँ लम्बे शीतकाल में जम आती थीं और उन पर गमनागमन बन्द हो जाता था। परन्तु अब इस रेलमार्ग के बन जाने से कनाडा की बिखरी हुई जनसंख्या में अटूट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। इसलिये कनाड़ा के रेलमार्गों के निर्माण का इतिहास ही कनाडा राज्य की आर्थिक, व्यापारिक व राजनैतिक उन्नति की कहानी है।

चिली अर्जेण्टाइना का रेलमार्ग—यह रेलमार्ग दक्षिणी अमरीका में है। यह लाइन ब्यूनस आयर्स को बाल परेसो से मिलाती है। इन दोनों स्थानों में ९०० मील का अन्तर है। इस मार्ग पर आवागमन का कार्य १९१० में आरम्भ हुआ था। यह मार्ग यात्रियों तथा डाक के लिए ही अधिक उपयोगी है। अर्जेण्टाइना की ओर मेण्डोजा तथा चिली की ओर लॉस ऐंडीज पर पटरी की चौड़ाई भिन्न हो गई है अतः माल ढोने में असविधा होती है। इसके अलावा महाद्वीप के पूर्वी तथा पश्चिमी भागों की उपज का क्रय-विक्रय भी अधिक नहीं है। इसलिये इसका सबसे अधिक

महत्त्व डाक और मुसाफिर लाने ले जाने के लिए है । और दक्षिणी अमरीका की ४ प्रमुख रेलों में व्यापारिक महत्त्व भी इसी का सबसे अधिक है ।

ब—जल-यातायात

जल-यातायात दो प्रकार का होता है—आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय। आन्तरिक यातायात नदियों, नहरों और झीलों द्वारा होता है। अन्तर्राष्ट्रीय यातायात समुद्रों महासागरों और समुद्री नहरों द्वारा होता है । जल-यातायात थल की अपेक्षा सस्ता होता है, क्योंकि जलमार्गों को बनाना नहीं पड़ता और उन्हें स्वतन्त्रतापूर्वक प्रयोग में लाया जा सकता है । परन्तु जल-यातायात मन्द गति वाला व अनिश्चित होता है । यही इसका दोष है ।

नदियों द्वारा यातायात—देश के भीतर व्यापार और वाणिज्य का सर्वोत्तम साधन नदियाँ ही होती हैं । नाव चलाने योग्य नदियाँ गहरी तथा बर्फ से मुक्त होनी चाहियें । जिन नदियों का वेग तेज होता है अथवा जिन नदियों में बहुत-से प्रपात होते हैं, वे यातायात के लिये सर्वथा भयानक होती हैं । नदियों में लगातार जल-प्रवाह का होना भी आवश्यक है । इसलिये वे नदियाँ जिनमें अक्सर बाढ़ आती है या जो साल के कुछ महीने सूखी पड़ी रहती हैं, यातायात के दृष्टिकोण से बिल्कुल अयोग्य होती हैं । इसके विपरीत जो नदियाँ उपजाऊ और घनी संख्या वाले प्रदेशों में से बहती हुई बर्फ-रहित खुले सागरों में गिरती हैं उनका महत्त्व वास्तव में बहुत है । ध्रुव प्रदेश के महासागरों अथवा भीतरी सागरों में गिरने वाली नदियों में यातायात भी सीमित हो जाता है ।

आन्तरिक जल मार्गों पर यातायात (१९५२)

(हजार मीट्रिक टन)

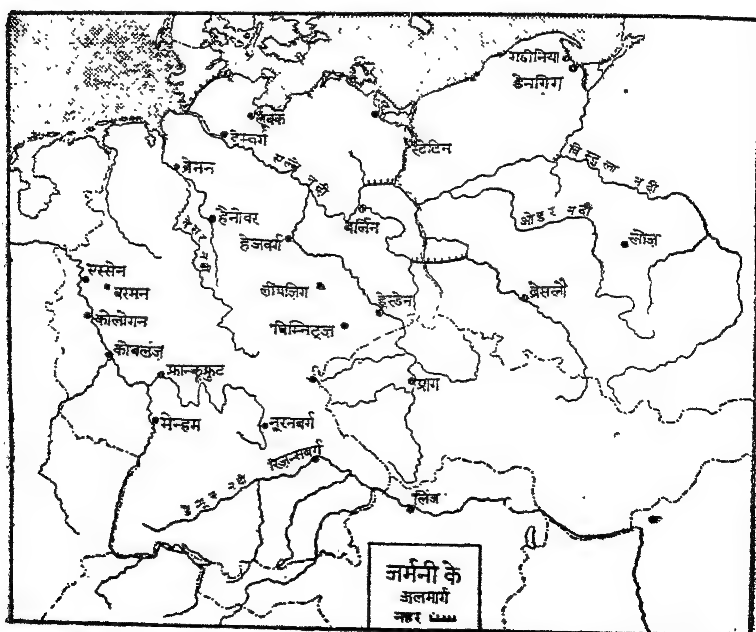
	भारसहित	भारहीन		भार सहित	भारहीन
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१२०,१४१	—	फ्रांस	४१,२०२	४१,२६४
कोलम्बिया	१,६०२	—	जर्मनी	६६,७४४	७१,२१७
बेल्जियम	२६,६२६	२९,१३४	नेदरलैंड	६२,९७८	५१,९८७
फिनलैंड	२,५३६	—	संयुक्त राज्य	१२,६४२	---

यूरोप के जलमार्ग—यूरोप की अनेक नदियाँ नाव चलाने योग्य हैं । इन नदियों का प्रधान स्रोत आल्पस पर्वत हैं । **राइन नदी** २३५ मील तक स्विजरलैंड में बहने के बाद उत्तर सागर में जा गिरती है । **रोन नदी** अपने स्रोत से फ्रांस की सीमा तक १६५ मील तक बहने के बाद दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और भूमध्य-सागर में जा गिरती है । डैन्यूब में **इन नदी** जा मिलती है और जोटार्ड से निकलकर टिसिनो नदी पो में जा निकलती है । यूरोपीय देशों में जर्मनी के जल-मार्ग सबसे महत्त्वपूर्ण हैं । जर्मनी में समुद्र-तट की कमी नाव्य जलमार्गों द्वारा पूरी हो जाती है । किसी और देश में नदी के किनारे पर इतने औद्योगिक नगर नहीं पाये जाते हैं जितने कि जर्मनी में । राइन जर्मनी और यूरोप की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है

और इस पर यातायात की मात्रा बहुत अधिक है। समुद्र में चलने वाले जहाज नदी बन्दर कोलन में अपना माल उतार देते हैं। वैसे इस नदी पर बड़ी-बड़ी नावें मेन, मानहीम तथा स्टासबर्ग तक आ सकती हैं। सन् १९५२ में राइन द्वारा १४० लाख टन माल समुद्र की ओर ले जाया गया और २२० लाख टन माल अंदर को लाया गया।

जर्मनी की अन्य प्रमुख नदियाँ वेसर, ऐल्ब तथा ओडर हैं। ऐल्ब नदी केवल जर्मनी में नाव चलाने योग्य नहीं है परन्तु प्राग से चेकोस्लोवाकिया के अन्य भागों तक भी इसमें नावें चलाई जा सकती हैं। इसके किनारे पर ड्रेसडेन, मैगडेबर्ग (Magdeberg) तथा हैमबर्ग आदि महत्त्वपूर्ण नगर स्थित हैं। ओडर नदी में भी नावें चलती हैं। यह नदी साइलेशिया के उद्योगशील तथा खनिज-सम्पन्न प्रदेशों में होकर बहती है। इस नदी पर ब्रेसलन तथा फ्रैंकफर्ट दो महत्त्व-पूर्ण नगर स्थित हैं।

जर्मनी की नदियाँ नहरों द्वारा परस्पर मिली हुई हैं। वेसर तथा ऐल्ब नदियाँ मैगडेबर्ग तथा हैमबर्ग दो स्थानों पर मिलती हैं। हैम्बर्ग का हंसा नहर द्वारा रूहर (Ruhr) के कोयला क्षेत्रों से सीधा सम्बन्ध है। लुडविग्स की नहर डैन्यूब नदी को राइन की सहायक मेन से मिलाती है।



चित्र ३२—प्रायः सभी नदियां दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम को बहती हैं।

फ्रांस में भी अनेक उपयोगी जलमार्ग हैं और जलमार्गों की उपयोगिता व विस्तार के दृष्टिकोण से फ्राँस जर्मनी के बहुत अधिक पीछे नहीं है। आन्तरिक जल-मार्गों का पूरा लाभ उठाने के लिये महत्त्वपूर्ण नदियों को नहर द्वारा परस्पर

मिला दिया गया है। अपने ऊपरी भागों को छोड़कर ये नदियाँ अन्य सभी स्थानों में नाव चलाने योग्य हैं। रोन नदी ५०० मील लम्बी जरूर है परन्तु अधिक लाभ-प्रद नहीं है। इसके विपरीत सिओन (Seone) नदी एक उत्तम जलमार्ग है। सीन (Seine) नदी अपनी सहायक योने, मैरीन और ओइस नदियों के सहित बर्गण्डी की पहाड़ियों से निकलती है और पेरिस के प्रदेश में बहकर उत्तर में इंगलिश चैनल (English Channel) में जा गिरती है। यह नदी भी नाव चलाने योग्य है और उत्तम जलमार्ग बनाती है। लायर (Loire) भी जो विस्के की खाड़ी में गिरती है, नाव चलाने योग्य है और व्यापार के लिये एक महत्त्वपूर्ण जलमार्ग बनाती है।

रूस में कई बड़ी २ नाव चलाने योग्य नदियाँ हैं, जिनकी लम्बाई कुलें मिला कर ६५,००० मील से अधिक है। इनके नाम ड्वाइना, वाल्गा, डान, नीपर तथा नीस्टर हैं। इनमें से कुछ तो उत्तरी ध्रुवीय सागर में और कुछ कैस्पियन बाल्टिक या काले सागर आदि आन्तरिक सागरों में गिरती हैं। इन नदियों में एक बहुत बड़ा दोषहै कि उत्तरी भाग जाड़े में बर्फ से जम जाता है औरकिसी प्रकार का याता-यात सम्भव नहीं होता। फिर आन्तरिक सागरों में गिरने के कारण कोई निकास का मार्ग नहीं है। इन दोषों के होते हुए भी देशी और विदेशी व्यापार की दृष्टि से ये नदियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। वाल्गा योरोप की दूसरे नम्बर की नदी है। इससे उत्तरी तथा दक्षिणी रूस के व्यापार का सम्बन्ध स्थापित होता है। आन्तरिक माल यातायात का २५ प्र० श० अंश यही नदी ले जाती है। परन्तु थल से घिरे हुए कैस्पियन सागर में गिरने के कारण इसके द्वारा इसके मार्ग पर स्थित केन्द्रों के बीच ही यातायात संभव है।

आस्ट्रेलिया के जलमार्ग—आस्ट्रेलिया में जलमार्गों की कमी है। यहाँ की नदियाँ छोटी छोटी धाराओं के रूप में पर्वतों से निकल कर समुद्रों में गिर जाती हैं। यहाँ की पूर्वी नदियों में वर्षा ऋतु में ही थोड़ा-बहुत यातायात संभव है। इस प्रकार मरे और डार्लिंग दो ही महत्त्वपूर्ण नदियाँ हैं। मरे नदी आस्ट्रेलियन आल्पस से निकलती है। इसमें बर्फ का पिघला हुआ जल या वर्षा का जल आता है। मरे तथा उसकी सहायक नदियां सिंचाई के लिये उत्तम साधन हैं। इसके लिये उपयुक्त स्थानों में नदी पर बाँध बाँधे गये हैं और पानी को रोककर नालियों द्वारा खेतों में पहुँचाया जाता है। पहले मरे नावों के लिये एक प्रमुख जलमार्ग थी लेकिन आज-कल मोटर लारियों के कारण नावों द्वारा व्यापार बहुत कम होता है। मरे का दक्षिणी किनारा विक्टोरिया और न्यूसाउथवेल्स की सीमा बनाता है।

कनाडा के जलमार्ग—कनाडा में सेंट लारेंस नदी और बड़ी झीलें संसार का सबसे सुन्दर जलमार्ग बनाती हैं। इस सुन्दर जलमार्ग के अतिरिक्त यहाँ पर अनेक बड़ी-बड़ी झीलें व नदियाँ हैं जिनमें हजारों मील तक नावें चल सकती हैं। सेंट लारेन्स तथा बड़ी झीलों के जलमार्ग में ३ बड़े दोष हैं: (१) नदी के मुहाने पर सदैव गहरा कोहरा छाया रहता है; (२) जाड़े में बर्फ जम जाती है; (३) नदी के

बीच में अनेकों तीव्र धारायें व प्रपात पाये जाते हैं। कोहरे से होने वाली दुर्घटनाओं से बचने के लिये (Search Light) और हार्न का प्रयोग किया जाता है। जाड़े के दिनों में बर्फ तोड़ने वाले बर्फ हटाकर नदी को नाव चलाने योग्य बनाते हैं। नदी को गहरा करके तथा नहरें निकालकर नदी में तेज धाराओं व प्रपातों से होने वाली रुकावटों को दूर किया गया है। रेड रिवर, अल्पेनी, सस्केचवान, मेकंजी और यूकान कनाडा की अन्य नाव चलाने योग्य नदियाँ हैं। फ्रेसर, स्कीना और कोलम्बिया अन्य कम महत्त्वपूर्ण नदियां हैं। परन्तु सेंट लारेन्स तथा बड़ी झीलों के अतिरिक्त अन्य जलमार्गों पर यातायात स्थानीय ढंग का है।

संयुक्त राष्ट्र की नदियाँ—संयुक्त राष्ट्र में २०,००० मील के लगभग जलमार्गों की जाल-सा बिछा हुआ है। मिसीसीपी तथा मिसौरी यहाँ की सबसे महत्व-पूर्ण नदियाँ हैं। मिसीसिपी नदी के मुहाने से २००० मील अन्दर सेन्ट पाल बन्दरगाह तक जहाज आ सकते हैं। इसके ऊपरी भाग में वर्ष भर खूब व्यापार होता है। मिसीसिपी का निचला भाग बहुत कम इस्तेमाल होता है। इसमें सबसे बड़ा दोष यह है कि अक्सर जबरदस्त बाढ़ आ जाती है। इसकी सहायक ओहियो नदी में पैसिलवेनिया तक जहाज आते हैं और विशेषकर कोयला लाया ले जाया जाता है। सेंट पाल पर मिसौरी नदी मिसीसिपी से मिलती है और इस नदी पर राकी पहाड़ तक जहाज आ-जा सकते हैं। इसमें भी अक्सर बाढ़ आती है। मिसीसिपी और सेंट लारेन्स नदियों का उद्‌गम स्थान करीब होने से नहरों द्वारा दोनों को मिला दिया गया है।

दक्षिणी अमरीका के जलमार्ग—दक्षिणी अमरीका की नदियाँ व्यापार के लिये बड़ी महत्वपूर्ण हैं। यहाँ की सभी बड़ी-बड़ी नदियाँ पूर्वी तट की ओर बहती हैं। पश्चिम की ओर बहने वाली नदियाँ नाव चलाने योग्य नहीं हैं। यहाँ की सबसे लम्बी नदी अमेजन है। वर्षा काल में इसकी सहायक नदियों को मिलाकर ५०,००० मील लम्बा जलमार्ग बन जाता है, परन्तु गर्मी के मौसम में केवल २०,००० मील ही रह जाता है। इसकी सहायक नदियों में भी जहाज आ-जा सकते हैं। परन्तु अमेजन नदी गहन वन प्रदेश से बहती है जो अविकसित, अज्ञात और कम बसा हुआ है। इसीलिये इससे पूरा-पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता। ओरिनोको (Orinoco) नदी जो वेनेजुला से होकर बहती है लम्बा जलमार्ग बनाती है। दक्षिणी अमरीका में सब से अधिक लाभदायक जलमार्ग पराना नदी का है। यह अर्जेण्टाइना, पैरागुऐ, युरुगुवे तथा दक्षिणी ब्राजील के बीच से होकर बहती है। दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी भाग में रियोनीग्रो पेटेगोनिया के भेड़ों के प्रदेश में होकर बहती है।

अफ्रीका के जलमार्ग—अफ्रीका में व्यापार के मुख्य साधन वहाँ की नदियाँ हैं। उत्तरी पूर्वी अफ्रीका में नील सबसे महत्वपूर्ण नदी है। पर इस नदी के ऊपरी व मध्य भाग के झरनों, प्रपातों की अधिकता तथा तेज प्रवाह के कारण अधिक दूर तक नावें नहीं चल सकती, परन्तु डेल्टा व निचले भाग में नावें खूब चलती हैं—दक्षिणी अफ्रीका की नदियों में अधिक यातायात नहीं हो सकता। जैम्बीसी में २५० मील तक

और लिम्पोपो में कुछ ही मील तक नावें चल सकती हैं। औरेंज नदी में जहाज नहीं चल सकते। कांगो नदी भी एक सुन्दर जलमार्ग बनाती है। यह टंगानीका तथा न्यासा झीलों के मध्य के पठार से निकलती है। झरनों तथा वेगपूर्ण प्रवाह के कारण यह यातायात के योग्य नहीं है। कांगो की सहायक उबांगी नदी पर उद्गम स्थान तक नावें चल सकती हैं। पश्चिमी अफ्रीका में नाइजर नदी पर ५०० मील तक जहाज चल सकते हैं। गैम्बिका नदी में मुहाने से लेकर २०० मील तक जहाज चल सकते हैं। अभी कुछ और वर्षों तक अफ्रीका में नदियाँ ही व्यापार का प्रमुख साधन रहेंगी। सम्भव हो सकता है कि भविष्य में अफ्रीका की बड़ी-बड़ी झीलें सुन्दर जलमार्ग बनायें।

एशिया की नदियाँ और जलमार्ग—एशिया की नदियों के प्रमुख जलमार्ग भारत तथा चीन में ही सीमित हैं। **उत्तरी भारत** की तीनों बड़ी-बड़ी नदियाँ तो वास्तव में प्रकृति का उदार वरदान हैं। इनसे २०,००० मील लम्बा जलमार्ग बनता है। गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र बहुत काफी दूर तक नाव चलाने योग्य हैं। गंगा में कानपुर तक जहाज आ सकते हैं। गंगा नदी बड़े उपजाऊ तथा घने बसे हुए भागों से होकर बहती है। इसीलिये यातायात के लिये इसका बड़ा महत्व है। रेलों के विकास व विस्तार से जलमार्ग पर चलने वाले स्टीमरों की महत्ता बहुत कम हो गई है, विशेषकर गंगा के ऊपरी भाग में, परन्तु इस नदी के निचले भाग की अभी उतनी ही महत्ता है।

पाकिस्तान की सिंधु नदी पर मुहाने से ८०० मील दूर डेरा इस्माइल खाँ तक स्टीमर आ-जा सकते हैं। इस पर अधिकतर गेहूँ, कपास तथा ऊन का व्यापार होता है। सिंधु की सहायक चिनाब और झेलम में भी छोटे-छोटे जहाज चल सकते हैं। परन्तु बराबर मार्ग बदलते रहने से और इसकी तली में रेत के ढेर बन जाने के कारण अब इस में स्टीमर कम चलते हैं।

ब्रह्मपुत्र नदी आसाम तथा पूर्वी पाकिस्तान से होकर बहती है। इसमें डिब्रूगढ़ तक जहाज चलते हैं और इसकी सहायक सूरमा पर सिलहट तथा कछार तक भी स्टीमर पहुँचते हैं।

दक्षिणी भारत की नदियाँ कम गहरी हैं, व्यापार के सर्वथा अयोग्य हैं। इनकी तली में चट्टानें हैं और बाढ़ भी आती है। इससे और भी बाधा पड़ती है बरसात के दिनों में इन नदियों का प्रवाह बहुत तेज हो जाता है पर गर्मियों मे ये छिछले पानी का तालाब या रेत के विशाल मैदान बन जाती हैं। केवल महानदी, गोदावरी और कृष्णा नदियों के ऊपरी भागों में नावें चल सकती हैं। पर अधिक यातायात नहीं होता।

बर्मा में बहुत-सी नदियाँ नाव चलाने योग्य हैं। यहाँ की सबसे लम्बी और महत्वपूर्ण नदी इरावदी है जिस पर मुहाने से ५०० मील ऊपर तक स्टीमर जहाज चल सकते हैं। देशी नावें तो और भी ऊपर तक जा सकती हैं।

चीन में नदियाँ ही यातायात व गमनागमन की मुख्य साधन हैं। ह्वांगहो,

यांगटीसीक्यांग तथा सीक्यांग चीन की ३ महत्त्वपूर्ण नदियाँ हैं और पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं। यांगटीसीक्याँग चीन की सबसे लम्बी नदी है। इसकी लम्बाई ३,२०० मील है और चीन का प्रमुख-जलमार्ग यही है। इससे ७,५६,५०० वर्गमील भूमि पर सिंचाई होती है। तिब्बत से निकलकर अपनी सहायक नदियों के साथ यह चीन के बीचों-बीच से बहती है। इसके मुहाने से १००० मील तक स्टीमर आ-जा सकते हैं। यूरोप और अमरीका को चाय तथा अन्य वस्तुएँ ले जाने के लिए इसपर ६०० मील भीतर हैंकाऊ बन्दरगाह तक समुद्री जहाज आ-जा सकते हैं। यांगटीसी-क्यांग के ३ विभाग किए जा सकते हैं—(१) पूर्वी तिब्बत से १५०० मील तक। यहाँ नदी की धारा बड़ी तेज है और इस भाग में इसे किशाँक्यांग या 'सुनहरे बालू की नदी' कहते हैं। (२) मध्यम भाग में समुद्र तट से १६३० मील अन्दर सैफू (Saifu) तक यह छोटी-मोटी नाव चलाने योग्य रहती है। इस प्रदेश में यह सीचान (Szechan) और पश्चिमी हूपेह (Hupei) की गहरी कन्दराओं में होकर बहती है। चीन में सीचान का प्रान्त रेशम, अफीम, कपास तथा खनिज पदार्थों से सम्पन्न है। अतः इस भाग में व्यापार की अधिकता है। (३) तीसरा भाग इचांग (Ichang) से लेकर समुद्र तक फैला है और १००० मील लम्बा है। यहां नदी की गहराई ३० फीट से १०० फीट तक है और नाव के चलने के लिए बहुत सुगम है। यांगटीसी की घाटी के समान विस्तृत व समृद्ध प्रदेश संसार में शायद ही कोई और हो। यहाँ के लोग केवल एक ही जलमार्ग और एक ही विकास के स्रोत पर निर्भर रहते हैं और लगभग देश की आधी जनसंख्या इस उपजाऊ प्रदेश में निवास करती है तथा इस नदी की सहायक नदियों तथा नहरों के सहारे अपना बसर करती है।

ह्वांगहो भी तिब्बत से निकलती है। परन्तु प्रवाह तेज होने और छिछली होने के कारण नाव चलाने योग्य नहीं है। पीली मिट्टी के प्रदेश में से होकर बहने के कारण इसे पीली नदी कहते ह। इसमें बाढ़ भी बहुत आती है और जन-धन की विशेष हानि हो जाती है। इसलिए इसे शोक की नदी भी कहते हैं।

सीक्यांग नदी यनान के पठारों से निकलकर पूर्व की ओर सीधे रुख से बहती है। इसका अधिकतर भाग नाव चलाने योग्य है। **पीहो** नदी भी महत्त्वपूर्ण जलमार्ग है और इस पर टींटसन तक नावें चल सकती हैं।

महासागरीय यातायात—वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार अधिकतर महासागरों द्वारा होता है। समुद्री मार्ग विभिन्न देशों को मिलाते हैं और विदेशी व्यापार का विकास करते हैं। समुद्री यातायात थल की अपेक्षा सस्ता भी होता है और लम्बे समुद्री मार्गों का उपयोग किसी भी समय हो सकता है। इसीलिये जो देश समुद्र के किनारे या समुद्रों से घिरे हुए होते हैं, उनकी स्थिति दूर के देशों की अपेक्षा अधिक अच्छी मानी जाती है। युद्ध-पूर्व ग्रेट ब्रिटेन में जहाजों की संख्या तथा टनभार संसार भर में सबसे अधिक था। आगे की तालिका से द्वितीय महायुद्ध से

पूर्व संसार के भिन्न-भिन्न देशों से जहाजों की संख्या और टनभार की तुलना की जा सकती है।

देश	संख्या	टन	संख्या	टन
	१९३४ में		१९३८ में	
ग्रेट ब्रिटेन	७,४६९	१७,७३४,०००	६,७२२	१७,९००,०००
ब्रिटिश साम्राज्य	२,४९८	३,१०६,०००	२,२५५	३,१००,०००
फ्रांस	१,५६७	३,२९८,०००	१,२३१	२,९००,०००
जर्मनी	२,०४३	३,६९०,०००	२,४५९	४,५००,०००
जापान	१,९४९	४,०७२,०००	२,३३७	५,६००,०००
नार्वे	१,९०८	३,९८१,०००	१,९८७	४,८००,०००
संयुक्त राष्ट्र	३,०४५	१०,३५४,०००	३,०००	११,४००,०००
विश्वयोग	२०,४७९	४५,२३५,०००	१९,९९१	५०,२००,०००

द्वितीय महायुद्ध में नष्ट हुए जहाजों के भार का योग इतना अधिक था कि उसकी पूर्ति तथा पुर्ननिर्माण का कार्य अभी तक भी पूरा नहीं हो सका है। लम्बी यात्रा के मार्गों पर तो अभी तक जहाजों का इतना अभाव है कि नियमित दशा की प्राप्ति के लिए अभी बहुत-कुछ करना शेष है।

द्वितीय महायुद्ध के बाद से संयुक्त राष्ट्र अमरीका संसार का सर्वप्रथम व्यापारी देश हो गया है और जहाजों की संख्या व टनभार में भी उसने ग्रेट ब्रिटेन को पछाड़ दिया है। सन १९५१-५२ तक संसार में व्यापारी जहाजों का टनभार ३४ प्रतिशत अधिक हो गया है। इस बढ़ती का अधिकतर अंश संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हुआ। कुल बढ़ोतरी २२० लाख टन की हुई और इसमें से १५५ लाख टन भार के जहाज अकेले संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने तैयार किए। इसी काल में पनामा और हूण्ड्रास के जहाजों का टनभार सातगुना हो गया। सन् १९५१ तक इटली ने अपना ८ प्रतिशत तक टनभार पूरा कर लिया था। परन्तु जापान और जर्मनी का टनभार महायुद्ध के पूर्व के औसत का क्रमशः आधा व दो-तिहाई ही रहा। हाँ, छोटे देशों ने अपने यहाँ के टन भार में विशेष प्रगति की। बढ़ोत्तरी का दर इस प्रकार था—

मेक्सिका	पाँचगुना
अर्जेण्टाइना	तीनगुना
पीरू	"
भारत	दोगुना
पोर्त्तुगाल	"
तुर्की	"
वेनेजुला	"

जैसे-जैसे टन भार बढ़ा है वैसे-वैसे समुद्र के द्वारा माल का यातायात भी तरक्की करता गया है। सन् १९२९ और १९३२ के बीच समुद्री यातायात में एक चौथाई की घटती हो गई थी परन्तु बाद में दशा सुधर गई। दूसरे महायुद्ध के दिनों में समुद्र द्वारा व्यापारी यातायात को फिर धक्का पहुँचा। परन्तु युद्ध के बाद से बराबर महासागरीय यातायात बढ़ता रहा है और सन् १९५१-५२ में महासागरों द्वारा ले जाया गया माल सन् १९३१ और सन् १९२९ की अपेक्षा क्रमशः ३१ और ३६ प्रतिशत अधिक था। इस काल में महासागरीय यातायात की सबसे अधिक वृद्धि उत्तरी अमरीका (८२ प्र. श.) दक्षिणी अमरीका (९१ प्र. श.) और एशिया (५० प्र. श.) में हुई। इसके विपरीत यूरोप के महासागरीय यातायात में २० प्रतिशत की कमी हो गई।

व्यापारिक जहाज : १९३९ और १९५२

(लाख टन)

देश	१९३८	१९५२
ग्रेट ब्रिटेन	१७९	१८६
नेदरलैण्ड	३१	३२
फ्रांस	२९	३६
जर्मनी	४५	१३
जापान	५६	२७
संयुक्त राष्ट्र	११४	२७२
नार्वे	४८	५९
विश्वयोग	६८४	९०२

समुद्री जहाजों के प्रकार—समुद्री जहाज दो प्रकार के होते है—लाइनर और ट्रैम्प। लाइनर (Liner) जहाज एक निश्चित मार्ग पर चलते हैं। उनके निश्चित व्यापारिक स्थान होते हैं और विज्ञापित समय पर चलते हैं। ये जहाज यात्रियों व माल दोनों ही को एक स्थानसे दूसरे स्थान को ले जाते हैं। यात्री लाइनर जहाज विशेषकर मनुष्यों तथा डाक ले जाने का काम करते हैं। इन जहाजों को सुखप्रद व शीघ्रगामी बनाया जाता है। व्यापारिक लाइनर जहाज उन मार्गों से चलते हैं जहाँ अधिक शीघ्रता की आवश्यकता नहीं होती। (ब) ट्रैम्प जहाजों का मार्ग तथा प्रस्थान का समय निश्चित नहीं होता। जहाँ माल मिल जाता है वहीं चले जाते हैं।

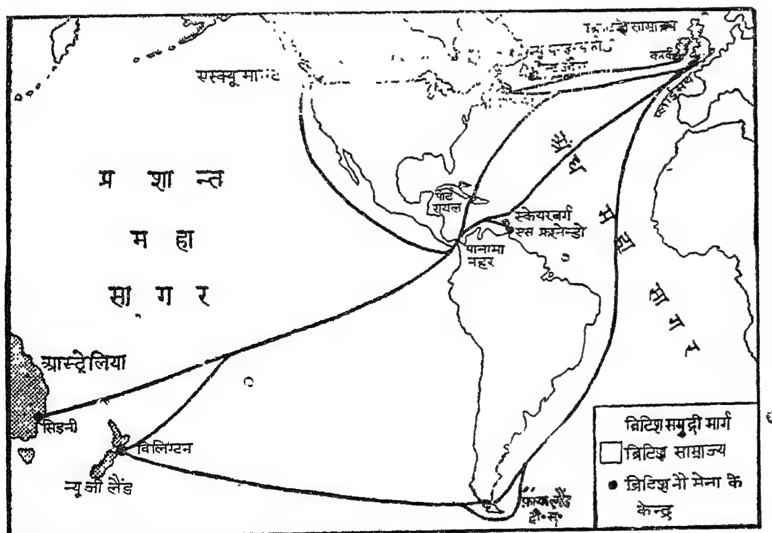
यद्यपि जहाज समु ों पर सभी दिशाओं में आते-जाते हैं परन्तु उन्हें अधिकतर निश्चित मार्गो का ही अनुसरण करने में सुविधा रहती है और भय भी नहीं रहता।

संसार के मुख्य समुद्री मार्ग—**१. उत्तरी अटलांटिक जलमार्ग**—यह मार्ग सबसे अधिक व्यस्त रहता ह। संसार के व्यापारी जहाजों का एक-चौथाई माल इसी मार्ग से आता-जाता है। व्यापार की अधिकता तथा व्यापारिक वस्तुओं की विभि-

न्नता में यह मार्ग सबसे बढ़कर है। यह मार्ग पश्चिमी यूरोप के बन्दरगाहों को उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट के बन्दरगाहों से मिलाता है। ये दोनों ही भाग संसार के सबसे घने बसे हुए तथा औद्योगिक प्रदेश हैं। इन्हीं दोनों प्रदेशों में संसार की सबसे अधिक तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन होता है। ग्लासगो, लिवरपूल, मैनचेस्टर, साउथम्पटन, लंदन, राटरडम, ब्रीमन, बोर्डो तथा लिस्बन से जहाज चलते हैं और क्वीबेक, माण्ट्रीयल, हैलिफैक्स, सेंट जान, पास्टन, न्यूयार्क, बाल्टीमीर, चार्ल्सटन, गालवेस्टन तथा न्यू आर्लियन्स पर माल उतारते तथा चढ़ाते हैं। इस मार्ग पर जहाज चलाने वाली मुख्य कम्पनियाँ क्यूनार्ड स्टीमशिप तथा ह्वाइट स्टार लाइन कम्पनी हैं।

कनाडा और संयुक्त राष्ट्र से यूरोप को बहुमूल्य लकड़ी, पशु, ताजा मांस, दूध, मक्खन, चमड़ा तथा खालें, फल, मछली, गेहूँ, कपास, मक्का, तम्बाकू, तेल, लोहा, इस्पात तथा एसिबेस्टोस आदि वस्तुओं का निर्यात होता है।

२. **पनामा नहर का जलमार्ग**—यह मार्ग प्रशान्त और अटलांटिक महासागरों को मिलाता है। इस मार्ग पर कोलोन (Colon), सान डीगो, वैनकुवर, प्रिंस रूपर्ट, कालाओ तथा न्यूजीलैंड का आकलैंड मुख्य व्यापारिक बन्दरगाह हैं। इस मार्ग पर जहाज चलाने वाली मुख्य नाविक कम्पनियाँ—न्यूजीलैंड शिपिंग कंपनी और रायल मेल स्टीम पैकेट कम्पनी हैं।

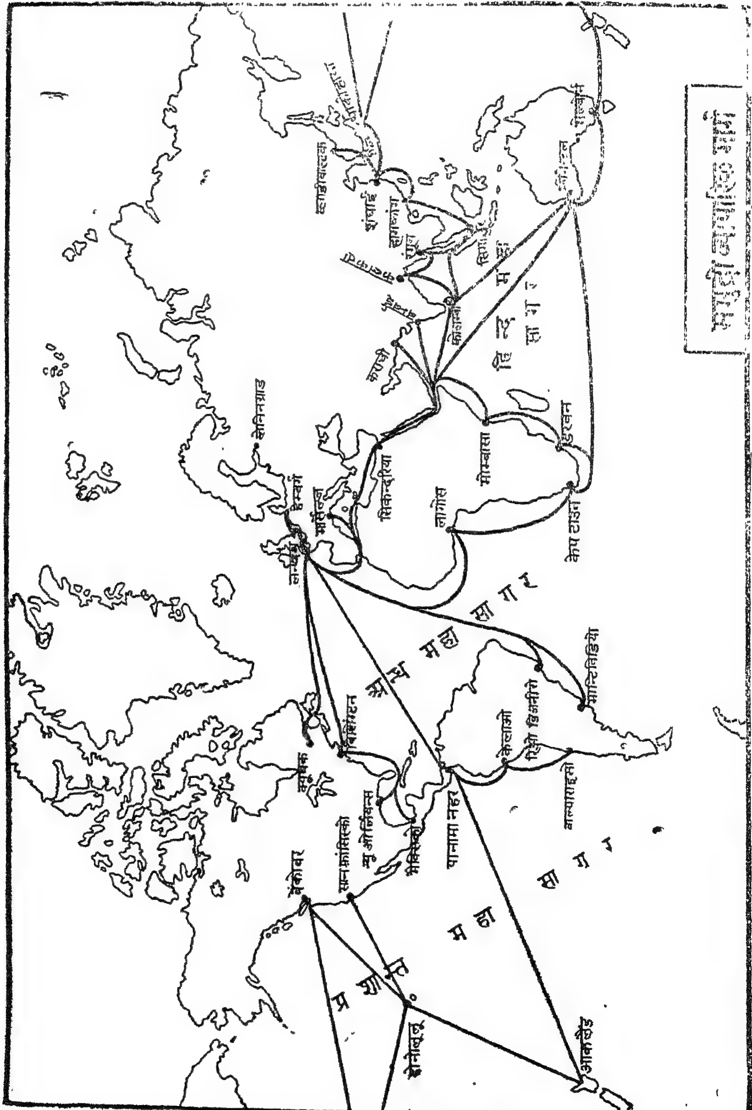


चित्र ३३—उत्तरी अटलांटिक मार्ग—एक उत्तरी अमरीका को और दूसरा दक्षिणी अमरीका को जाता है।

पनामा नहर के बन जाने से कई नए रास्ते ही नहीं खुल गए हैं बल्कि कुछ

पुराने रास्ते बदल भी गए हैं। इस नहर के बनने के पहले उत्तरी अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी किनारों को मिलाने का मार्ग केवल एक ही था—केप हार्न का चक्कर लगा कर। सुदूर पूर्व और अमरीका के पूर्वी तट का व्यापार स्वेज नहर के द्वारा होता था।

अब संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी तट का आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, चीन तथा उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी भागों से व्यापार पनामा नहर के द्वारा होता है।



३. स्वेज नहर का मार्ग--उत्तरी अटलांटिक मार्ग के वाद इसका दूसरा नम्बर है और पूर्वी अफ्रीका, ईरान, अरब, भारत, दूरपूर्व, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की मंडियों का व्यापार इसी मार्ग से होता है। वास्तव में यह मार्ग संसार के मध्य से होकर जाता है और अन्य मार्गों की अपेक्षा इस मार्ग का सम्वन्ध कहीं अधिक देशों तथा निवासियों से पड़ता है। अनेक बन्दरगाहों से होता हुआ यह मार्ग संसार की तीन-चौथाई जनसंख्या के सम्पर्क में आता है। लाल सागर पार करने पर इस मार्ग की दो शाखाएँ हो जाती हैं। एक शाखा तो अफ्रीका के किनारे-किनारे डरबन तक जाती है और दूसरी शाखा अधिक पूर्व की ओर भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया इत्यादि पहुँचती है। इस मार्ग पर चलने वाले जहाज लन्दन, लिवरपूल, साउथेम्पटन, हैमबर्ग, राटरडम, लिस्बन, मारसेल, जिनोआ और नेपल्स से चलते हैं। रास्ते में अदन, बम्बई, कलकत्ता, रंगून, सिंगापुर, मेनीला, हांगकांग, पर्थ, एडीलेड, मेलबोर्न सिडनी, मोम्वासा, जंजीबार, मोजम्वीक और डरबन में ठहरते जाते हैं।

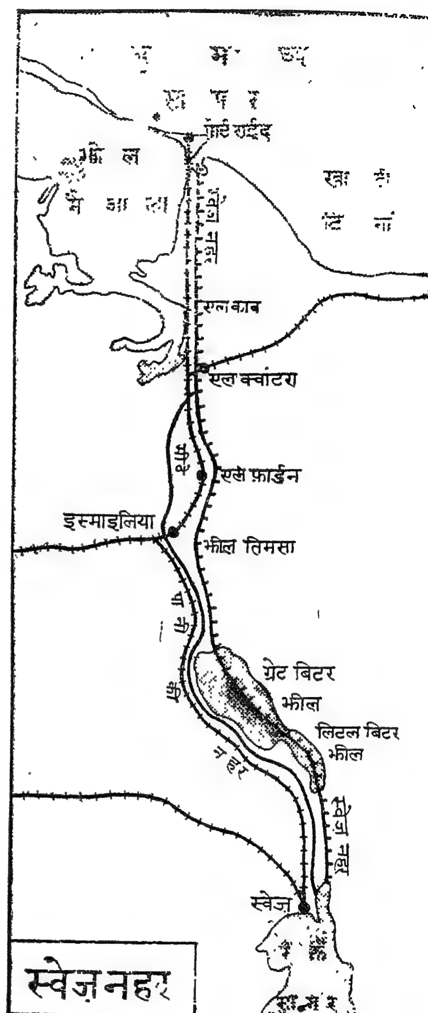
स्वेज केनाल कम्पनी का कर इतना ऊँचा है कि साधारणतया प्रत्येक जहाज इस मार्ग का लाभ नहीं उठा सकता। इसलिए सस्ता माल ढोने वाले स्टीमर आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड पहुँचने के लिए केप मार्ग से ही जाते हैं। इसलिए आस्ट्रेलिया से पश्चिमी यूरोप जाने वाली आधी से अधिक वस्तुएं केप मार्ग से ही भेजी जाती हैं। कभी-कभी तो यूरोप से आस्ट्रेलिया जाने वाले यात्री भी सस्ते भाड़े के कारण केप मार्ग द्वारा ही यात्रा करते हैं।

हां, इस महान जलमार्ग के द्वारा पूर्वीय देश अपना कच्चा माल तथा खाद्य सामग्री पश्चिमी देशों की मंडियों को भेजते हैं और वहाँ से बदले में पक्का माल मँगाते हैं। चीन तथा जापान की मुख्य उपज चावल, चाय, रेशम तथा चीनी है और भारत की कहवा, चाय, चावल, गेहूँ, नील, मसाले, रुई, सागौन, जूट, रेशम, खाल, चमड़ा और तिलहन हैं।

इस मार्ग पर पेनिनसुलर ओरियण्टल एस० एन० कम्पनी, ब्रिटिश इण्डिया लाइन और आस्ट्रेलिया कामनवेल्थ लाइन तथा जापान मेलशिप कम्पनी के जहाज चलते हैं।

४. केप का जल-मार्ग—यह मार्ग पश्चिमी यूरोप को अफ्रीका के पश्चिमी तथा दक्षिणी भागों से मिलाता है। यह मार्ग आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड भी जाता है। स्वेज मार्ग की अपेक्षा इस पर कम व्यय होने से यूरोप के अनेक उपनिवेश निवासी आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड पहुंचने के लिए इसी मार्ग से जाते हैं। अफ्रीका के पश्चिमी तटवर्ती भागों की अवनत दशा के कारण इस मार्ग से व्यापार कम होता है। इसके अतिरिक्त तट से कई मील तक का समुद्र भी उथला है। यूरोप के पश्चिमी तटवर्ती प्रमुख बन्दरगाह लंदन, लिवरपूल, कार्डिफ, साउथेम्पटन, स्वांसी, लिस्बन, एसेशंन हैं। दक्षिणी अफ्रीका के पोर्ट एलिजा-बेथ, ईस्ट लन्दन, केप टाउन और आस्ट्रेलिया में एडीलैड, सिडनी, मेलबोर्न और ब्रिसबेन बन्दरगाहों पर जहाज कोयला लेने के लिये ठहरते हैं।

उष्णकटिबंधीय तथा दक्षिणी अफ्रीका से ताड़ का तेल, हाथीदाँत, गोंद, रब सन्दूक बनाने की लकड़ी, खालें तथा शुतुरमुर्ग के पंख निर्यात किये जाते हैं।



चित्र ३५—स्वेज नहर सदा खुली रहती है औ अतर्राष्ट्रीय आधिपत्य में है। अतः युद्ध व शांति काल में किसी भी राष्ट्र के व्यापारिक या सैनि जहाज बिना किसी भेदभाव के आ-जा सकते हैं

यूनियन कैसिल लाइन, आस्ट्रेलियन कामनवैल्थ लाइन तथा पी० एंड० ओ० के जहाज इस मार्ग पर चलते हैं।

५. वेस्ट इन्डीज और दक्षिणी अटलाण्टिक का जल-मार्ग—यह मार्ग वैस्ट इंडीज, ब्राजील तथा अर्जेन्टाइना को जाता है। किंगस्न (जमैका) हवाना, वैराकूस, टैम्पिको, परनम्बुको, बाहिया, रियोडिजैनिरो सेन्टोस, मांटी वीडियो, ब्यूनस आयर्स तथा रोजारियो बन्दरगाहों पर जहाज कोयले के लिए ठहरते हैं। चीनी, केला, रुई, तुन की लकड़ी, तम्बाकू, चाँदी, रबर, कहवा, रोजवुड, हीरे, अनाज, ऊन तथा मांस का व्यापार होता है।

इस मार्ग से यूरोप का व्यापार पश्चिमी द्वीपसमूह, कैरिबियन सागर तट, ब्राजील, युरुगुवे तथा अर्जेन्टाइना से होता है।

रायल मेल स्टीम पैकट कम्पनी, पैसिफिक स्टीम नैविगेशन कम्पनी, लैम्पोर्ट एण्ड होल्ड लाइन, ऐल्डर्स एण्ड फाइफस तथा इम्पीरियल डाइरेक्ट वैस्ट इंडियन मेल सर्वि कम्पनी के जहाज इस मार्ग पर चलते हैं।

६. प्रशान्त महासागर के जल-मार्ग—यह जल मार्ग ...

पश्चिमी किनारे के भागों को एशिया के पूर्वी भाग से मिलाता है। इस मार्ग की दो मुख्य शाखायें हैं। एक तो छोटा मार्ग एल्यूशियन द्वीपों से होकर जाता है और दूसरा लम्बा मार्ग हवाई द्वीपों से होकर गुजरता है। पनामा कैनाल के बन जाने से पैसिफिक महासागर वाणिज्य और व्यापार का मुख्य मार्ग बन गया है। अमरीका तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का व्यापारिक सम्बन्ध इसी मार्ग के द्वारा स्थापित होता है। चीन और जापान की औद्योगिक उन्नति के कारण इस मार्ग का व्यापारिक महत्व और भी बढ़ गया है। इसी मार्ग के द्वारा सुदूर पूर्व के देश चाय, रेशमी कपड़े, चीनी, तम्बाकू, चावल, सन तथा दरियों को अमरीका भेजते हैं और संयुक्त राष्ट्र से कपास, ऊन, तेल, धातु के सामान, मशीनें और रेलों का सामान मंगवाते हैं। अटलांटिक महासागर को प्रशान्त महासागर से मिलाने के लिए पनामा नहर के २०० मील दक्षिण-पूर्व में एक नहर बनाने की योजना है। इसके बन जाने से इस प्रदेश के जल-मार्गों का महत्त्व और भी बढ़ जाएगा।

इस मार्ग पर पेनिनसुलर ऐण्ड ओरियन्टल लाइन तथा जापान मेल स्टीमशिप कम्पनी के जहाज चलते हैं।

नहरें तथा जहाजी नहरें—नहरें पानी की कृत्रिम प्रणालियाँ होती हैं जिनमें नावें व जहाज चल सकते हैं। नहरें विशेषकर निम्नलिखित कारणों से बनाई जाती हैं—(अ) समुद्रों और महासागरों तथा खाड़ियों को मिलाकर मार्गों को छोटा करने के लिए; (ब) देश के भीतरी केन्द्रों को बन्दरगाहों से मिलाने के लिए; (स) नदियों के प्रपातों व झरनों को बचाने के लिए; (द) जिन देशों की नदियाँ विदेश से होकर बहती हैं, उन देशों में आन्तरिक व्यापार सम्भालने के लिए नहरों का निर्माण होता है। जहाजी नहरों की लम्बाई-चौड़ाई अधिक होती है और उनमें बड़े-बड़े जहाज आ-जा सकते हैं। अधिकतर दो समुद्रों या महासागरों के बीच के पतले थल भाग को काट कर ही नहरें निकाली जाती हैं। इसीलिए भिन्न-भिन्न देशों के बीच की दूरी कम हो जाती है। फिर देश के बहुत भीतर के भाग भी नहरों द्वारा समुद्रों से मिला दिये जाते हैं और बन्दरगाह के समान उपयोगी हो जाते हैं।

स्वेज नहर

सब से पहले सन् १८४६ में फ्रांसीसियों के दिमाग में लाल सागर और भूमध्यसागर को नहर द्वारा मिलाने का विचार उत्पन्न हुआ क्योंकि इन दोनों सागरों के मध्य एक सिधाई में केवल ७५ मील का अन्तर था। सन् १८५१ में फर्डिनेन्ड डी लेसप्स, एक फ्रांसीसी इन्जीनियर की देख-रेख में इस नहर की खुदाई का काम आरम्भ हो गया। १० वर्ष में नहर पूरी बन कर तैयार हो गई और नवम्बर सन् १८९९ में इसका उद्‌घाटन हुआ।

यह नहर १०३ मील लम्बी, १५० फीट चौड़ी और ३३ फीट गहरी है। यह नहर सभी जगह समुद्र धरातल पर है। इस नहर का आधिपत्य किसी एक

सरकार के पास नहीं है, बल्कि यह एक कम्पनी के आधीन है। इस कम्पनी के अधिक हिस्से (Shares) अंग्रेजों के पास हैं।

स्वेज नहर से आपेक्षिक लाभ—इस नहर के बनने से पहल यूराप से एशिया जाने वाले जहाजों को अफ्रीका का चक्कर काटना पड़ता था। इस नहर से दोनों महाद्वीपों के बीच ५००० मील मार्ग की बचत हो गयी है। स्वेज नहर खुलने के वाद केप मार्ग और केप बन्दरगाहों की महत्ता बहुत कम हो गई है। सच तो यह है कि पिछले सौ सालों में स्वेज नहर के समान महत्त्वपूर्ण कोई काम भी नहीं हुआ है। नीचे दिये हुए आँकड़ों से इस मार्ग का लाभ स्पष्ट हो जायगा—

यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया को स्वेज मार्ग से आपेक्षिक लाभ

लिवरपूल से	बम्बई	बटाविया	हांगकांग	सिडनी
केपमार्ग द्वारा	१०,७३०	११,२०५	१३,१९५	१२,६२६
स्वेज मार्ग द्वारा	६,१८९	८,५१६	९,७८५	१२,२३५
दूरी की बचत	४,५४१	२,६८९	३,४१०	३९१

पनामा कैनाल के बनने से पहले उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट और सुदूर पूर्व के देशों का व्यापार स्वेज मार्ग से ही होता था। स्वेज नहर के मार्ग से उत्तरी अमरीका को विशेप लाभ था क्योंकि केप मार्ग की अपेक्षा यह बहुत छोटा है।

ब्रिटिश साम्राज्य को तो इस नहर से और भी अधिक लाभ है। इसी मार्ग के द्वारा ब्रिटिश द्वीप का पूर्वी राज्यों से सम्बन्ध स्थापित होता है। इस मार्ग की सुरक्षा के लिए ब्रिटिश जहाजी वेड़ा भूमध्य सागर में जिब्राल्टर और स्वेज पर प्रवेश तथा प्रस्थान द्वारों की रक्षा करता है।

उत्तरी अमरीका के पूर्वी तट और सुदूरपूर्व के देशों के बीच स्वेज मार्ग से आपेक्षिक लाभ

न्यूयार्क से	बम्बई	बटाविया	हांगकांग
केप मार्ग द्वारा	११,५११	११,९८६	१३,९६६
स्वेज मार्ग द्वारा	८,१०२	१०,४२६	११,६७६
दूरी की बचत	३,४०९	१,५६०	२,२९०

स्वेज नहर के मार्ग से यूरोप और पूर्वीय देशों के बीच समय व व्यय दोनों ही की बचत हो गयी है। इस नहर द्वारा लगभग ६००० जहाज प्रतिवर्ष गुजरते हैं और इन में से करीब दो-तिहाई जहाज अंग्रेजों के होते हैं। ब्रिटिश के बाद इटली, जर्मनी, हालैंड, फ्रांस और जापान का स्थान क्रमशः महत्त्वपूर्ण है। नीचे दी हुई तालिका से यह बात स्पष्ट हो जायेगी।

स्वेज नहर द्वारा यातायात

वर्ष	टन भार	यात्रा की संख्या	यात्रियों की संख्या
१८७०	४३६,६०९	४८६	२६,७५८
१९००	९,७३८,१५२	३,४४१	२,८२,५११
१९३०	३१,६६८,७५९	५,७६१	३०६,२०२

१९३७	३६,४९१,३३२	६,६३४	६९७,८००
१९४५	२५,०६५,०००	४,२०६	—
१९५०	८१,७९६,०००	११,७५१	—
१९५२	८६,१३७,०००	१२,१६८	—

स्वेज नहर की सुविधाएँ—स्वेज मार्ग पुरानी दुनिया के बिल्कुल बीच से जाता है और अन्य मार्गों की अपेक्षा इस मार्ग का सम्पर्क अधिक देशों से है तथा अधिक मनुष्यों को इस से लाभ पहुँचता है। इस मार्ग में बन्दरगाहों की अधिकता है। इसलिए छोटे-छोटे जहाजों द्वारा और थोड़ी दूर माल ढोने का काम खूब अच्छी तरह हो सकता है। इस मार्ग के दोनों सिरों पर तेल या कोयला प्राप्त है—बर्मा और इंडोनेशिया में तेल और पश्चिमी योरुप में कोयला। इन सुविधाओं के होते हुए भी पनामा नहर खुलने से इस मार्ग पर व्यापार की कुछ कमी हो गयी है। संयुक्त राष्ट से जापान, हांगकांग और फिलिपाइन का व्यापार अब पनामा नहर के द्वारा ही होता है। यही नहीं बल्कि यूरोप का आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और जापान से होने वाला व्यापार जो पहले स्वेज मार्ग से होता था अब बहुत कुछ पनामा नहर के मार्ग से भी होने लगा है।

स्वेज मार्ग के दोष—सुविधाओं के साथ-साथ इसमें कुछ दोष भी हैं। यह नहर कम गहरी और कम चौड़ी है। इसलिए इसमें आधुनिक बड़े-बड़े जहाज नहीं गुजर सकते। नहर का यह दोष उसको चौड़ा व गहरा करके दूर किया जा रहा है। इसमें अब ४०,००० टन के जहाज भी आ-जा सकेंगे। इस मार्ग से केवल २४ जहाज ही प्रतिदिन गुजर सकते हैं।

दूसरा दोष यात्रा सम्बन्धी है। पहले एक जहाज को नहर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचने में ३० घण्टे लगते थे परन्तु अब केवल १२ घण्टों में ही यह यात्रा पूरी हो जाती है। पहले कम चौड़ाई के कारण जब एक जहाज गुजरता था तो दूसरे को किनारे से खींच कर बाँध देते थे। परन्तु अब नई योजनाएँ की जा रही हैं और नहर को चौड़ा करके बहुत कुछ सुधार कर दिया गया है। मार्ग पर बहुत से सर्चलाइट और प्रकाशस्तूप भी बन गए हैं जिनसे अब सफर करना सुगम हो गया है।

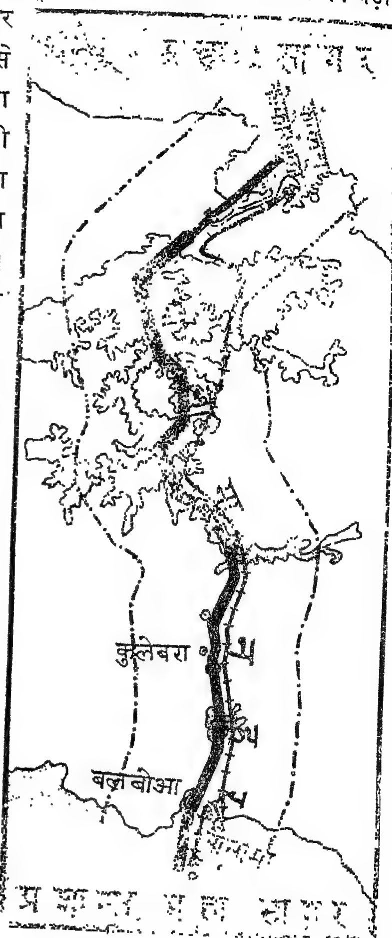
इसका सबसे भारी दोष यह है कि गुजरने वाले जहाजों से कर लिया जाता है। इसलिए जब जल्दी पहुँचने की होती है तब बोझा ढोने वाले बहुत से जहाज केप मार्ग से जाते हैं ताकि उन्हें भारी कर न देना पड़े। हाल में नहर कर में कमी कर दी गई है।

इसकी बड़ी विशेषता यह है कि १८८६ के अन्तर्राष्ट्रीय संधि-पत्र के अनुसार यह मार्ग प्रत्येक देश के व्यापारिक व सैनिक जहाजों के लिए शान्ति या युद्ध काल में सदैव खुला रहता है। वैसे तो यह नहर मिश्र की हद में आती है परन्तु सन् १९६८ तक कम्पनी का ही अधिकार रहेगा। उसके बाद सम्पूर्ण मार्ग मिश्र को मिल जायगा।

पनामा नहर

स्वेज नहर के बन जाने से मध्य अमरीका के जलडमरूमध्य से नहर निकाल कर अटलांटिक तथा प्रशान्त महासागरों को मिला देने के प्रस्ताव को बड़ा बल मिला। शुरू में दो मार्गों पर विचार हुआ—एक तो पनामा जलडमरूमध्य से और दूसरा निकारागुआ से। लम्बाई तथा स्थिति के विचार से पनामा मार्ग ही सबसे अधिक लाभप्रद था परन्तु पनामा राज्य की राजनैतिक उथल-पुथल के कारण १९०७ तक कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका। पनामा नहर के मार्ग में पड़ने वाला प्रदेश पहाड़ी और कड़ी चट्टानों का बना है। इन कठिनाइयों को चट्टानें काटकर तथा द्वार (Locks) बना कर दूर किया गया।

पनामा नहर का उद्‌घाटन १५ अगस्त सन् १९१४ को हुआ। इस नहर पर संयुक्त राष्ट्र का अधिकार है। अटलाण्टिक तथा प्रशान्त महासागरों के तटों के बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक इसकी लम्बाई ४०॥ मील है और एक ओर के गहरे पानी से लेकर दूसरी ओर के गहरे पानी तक इसकी लम्बाई ५० मील है। यह ४१ फीट गहरी है और जहाजों को इस नहर से होकर गुजरने में ७-८ घण्टे लगते हैं। इस नहर से होकर ४८ जहाज प्रति दिन गुजर सकते हैं।



चित्र ३६ पनामा नहर
यह—४०½ मील लम्बी है

पनामा जलमार्ग से आपेक्षिक लाभ—इस नहर के खुलने से अनेक नये मार्ग बने और कई पुराने मार्गों में परिवर्तन हो गया। पहले उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के पूर्वी तटों से पश्चिमी तटों तक जाने के लिए केप हार्न का चक्कर लगा-कर जाना पड़ता था। परन्तु अब दोनों महाद्वीपों के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों के बीच बड़ा निकट व घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया है। समय पड़ने पर इस

नहर के मार्ग से संयुक्त राष्ट्र अमरीका का जहाजी बेड़ा पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर आसानी से काम कर सकता है।

यह तो हुआ इस मार्ग का राजनीतिक व सैनिक महत्त्व। इसके अलावा इस मार्ग के खुल जाने से नई और पुरानी दुनिया के बीच के वाणिज्य पर बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है:—

(अ) दक्षिणी अमरीका के प्रशांत महासागरीय तट तथा उत्तरी अमरीका के अटलांटिक महासागरीय तट के बीच का फासला इस नहर के द्वारा कम हो गया है।

न्यूयार्क से	वालपरेसो तक
मैगेलन मार्ग द्वारा	८,४००
पनामा मार्ग द्वारा	४,६००

अतः पनामा नहर मार्ग द्वारा उपर्युक्त दोनों प्रदेशों के व्यापार में काफी उन्नति हो गयी है।

(ब) इस मार्ग के द्वारा संयुक्तराष्ट्र अमरीका से आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड बहुत पास हो गए:—

न्यूयार्क से	वैलिंगटन (न्यूजीलैंड)	सिडनी (आस्ट्रेलिया)
पनामा मार्ग द्वारा	८,५००	९,७००
मैगेलन मार्ग द्वारा	११,३००	१३,४००

(स) यूरोप से आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड जाने के लिए पनामा द्वारा एक नया मार्ग खुल गया है। वास्तव में दूरी की अधिक बचत तो किसी मार्ग से भी विशेष नहीं होती और इसलिए अब भी स्टीमर अधिकतर स्वेज मार्ग से ही जाते हैं।

लिवरपूल से	सिडनी	वैलिंगटन
पनामा मार्ग द्वारा	१२,४००	११,१००
स्वेज मार्ग द्वारा	१२,२००	१२,५००

(द) इस मार्ग से जापान के बन्दरगाहों और उत्तरी अमरीका के अटलांटिक तटीय बन्दरगाहों के बीच का अन्तर कम हो गया है।

न्यूयार्क से	याकोहामा
पनामा मार्ग द्वारा	६,७००
स्वेज मार्ग द्वारा	१३,१००

(ड) उत्तरी अमरीका के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच पनामा मार्ग द्वारा ७००० मील के लगभग दूरी कम हो गई है। पनामा नहर बनने से पहले अमरीका के दोनों तटों के बीच सामुद्रिक व्यापार का अभाव था।

(फ) उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के पश्चिमी तटीय प्रदेश और यूरोप के बीच ५००० मील की दूरी कम हो गई है।

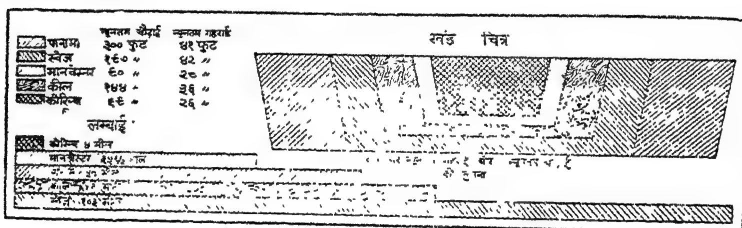
पनामा नहर विशेषतया अमरीका की नहर है। आस्ट्रेलिया, अफ्रीका

और एशिया के साथ यूरोप के व्यापारिक सम्बन्ध को इससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। पनामा नहर के खुलने से यद्यपि समुद्री मार्गों में बड़े-बड़े परिवर्तन हुए हैं परन्तु यह मानना पड़ेगा कि इससे विश्व व्यापार और वाणिज्य पर स्वेज नहर की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण असर पड़ा है। हाँ, एक बात जरूर है कि इस मार्ग के खुल जाने से चीन और जापान का संयुक्तराष्ट्र अमरीका के साथ व्यापार काफी बढ़ गया है।

पनामा नहर द्वारा यातायात का विवरण

वर्ष	(प्रशान्त महासागर से आन्ध्र महासागर को) जहाज	माल (हजार टन)	(आन्ध्र महासागर से प्रशान्त महासागर को) जहाज	माल (हजार टन)
१९२९	३,०९५	२०,७८०	३,३४८	९,८८३
१९५३	३,७३६	१८,७६६	३,६७४	१७,३२९

इस मार्ग पर ईंधन की भी दिक्कत नहीं है और एक माने में स्वेज मार्ग की अपेक्षा इस मार्ग पर अमरीकन कोयला व तेल दोनों ही सस्ते व बहुतायत से हैं। फिर भी कई दोषों के कारण यह स्वेज नहर की तरह उन्नत व महत्त्वपूर्ण नहीं हो पाई है।



चित्र ३७—विभिन्न जहाजी नहरों का तुलनात्मक विवेचन।

पनामा मार्ग के दोष—जलडमरूमध्य को पार करने में ८५ फीट का उतार-चढ़ाव पड़ता है। इस कारण इस मार्ग में ६ स्थानों पर दुहरे द्वार (Locks) बनाए गए हैं जिन्हें बार-बार खोलना व बन्द करना पड़ता है। इस कारण बड़ा समय लगता है और काफी असुविधा होती है। फिर इस मार्ग के आसपास का प्रदेश कम बसा हुआ व कम उपजाऊ है तथा व्यापारिक दृष्टि से कम महत्त्व वाला है। तीसरे, प्रशान्त महासागर बहुत विस्तृत है और उसमें बन्दरगाह बहुत थोड़े हैं।

इसीलिए इस नहर का विशेष महत्त्व उत्तरी व दक्षिणी अमरीका के लिए ही सबसे अधिक है।

कील नहर

यह नहर जर्मनी की सीमा पर है। ऐल्ब नदी से बाल्टिक सागर तक का रास्ता ६०० मील लम्बा है और जटलैंड का चक्कर लगाकर जाना पड़ता है। इस रास्ते

से यात्रा भी बड़ी भयानक है। इस दूरी को कम करने और खतरे से यात्रा को बचाने के लिए कील नहर का निर्माण हुआ। यह नहर १८९५ में बनकर तैयार हुई। यह नहर बाल्टिक सागर को उत्तरी सागर से ऐल्व नदी के मुहाने पर मिलाती है। इस मार्ग से वही यात्रा ६१ मील लम्बी रह जाती है और मार्ग का खतरा भी हट जाता है।

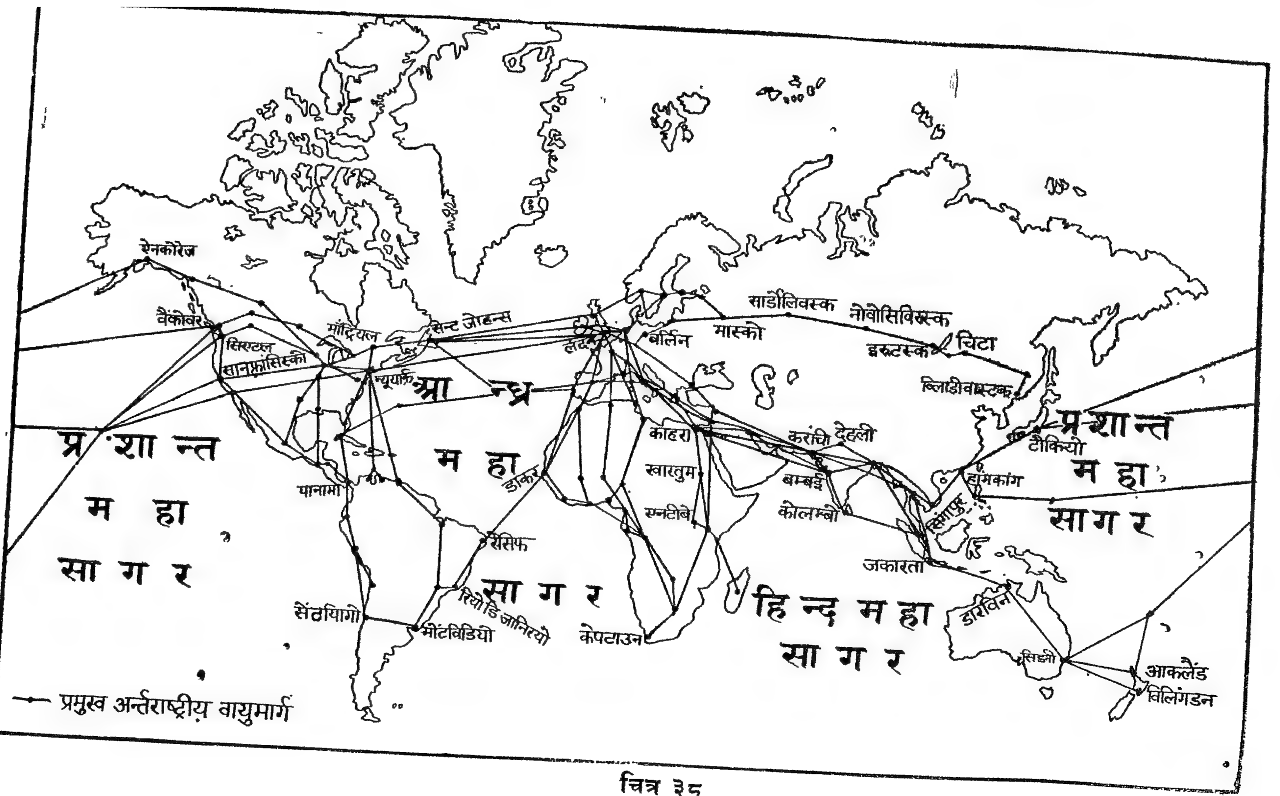
यह नहर ३८ फीट गहरी और १४४ फीट चौड़ी है। इसके द्वारा बड़े-बड़े व्यापारी व सैनिक जहाज आ-जा सकते हैं और इसीलिए जर्मनी के लिए इस मार्ग का विशेष व्यापारिक व सैनिक महत्त्व है। सन् १९५२ में २२७ लाख टन भार के ५६,३०० जहाज इस पर से होकर गुजरे।

मैनचेस्टर शिप कैनाल

ब्रिटिश द्वीप में यह नहर सबसे महत्त्वपूर्ण है। यह १८९५ में बनी। मर्सी नदी के बायें तट स्थित ईस्थाम से मैनचेस्टर तक यह नहर ३५॥ मील लम्बी है। इसकी गहराई २८ फीट और चौड़ाई १२० फीट है। इससे व्यापार को बड़ा लाभ हुआ है। इसके बनने से पहले लिवरपूल बन्दरगाह से मैनचेस्टर तक कपास रेल द्वारा आती थी परन्तु अब इस नहर के बन जाने से जहाज सीधे मैनचेस्टर तक पहुँच जाते हैं। इस नहर का सम्बन्ध संयुक्त राज्य की सभी नहरों तथा रेलों से है। इस नहर पर १२००० टन तक के समुद्री जहाज आ-जा सकते हैं। यह नहर एक कम्पनी के नियंत्रण में है।

इनके अलावा अन्य महत्वपूर्ण जहाजी नहरें एमस्टरडम शिप कैनाल, स्टालिन कैनाल और वोल्गा-डान कैनाल इत्यादि हैं। **एमस्टरडम शिप कैनाल** उत्तरी सागर से एमस्टरडम को सीधे मिलाती है। यह नहर १८७६ में बनाई गई थी। रूस की **स्टैलिन कैनाल** बाल्टिक सागर को आर्कटिक सागर से मिलाती है और श्वेतसागर से लेनिनग्राड का सीधा सम्बन्ध स्थापित करती है। **वोल्गा डान कनाल** ६० मील लम्बी है और डान नदी को वोल्गा से मिलाती है। इस नहर के बन जाने से काला सागर (Black Sea) से मास्को तक सीधा जल-मार्ग बन गया है और मास्को के आगे इसका सम्बन्ध स्टालिन कैनाल के द्वारा उत्तर में श्वेतसागर और पश्चिम में बाल्टिक सागर से भी स्थापित हो गया है। इस नहर के बन जाने से रूस को औद्योगीकरण में बड़ी सहायता मिलेगी और रूस की रेलों पर भीड़ कम हो जायगी।

हवाई यातायात—के क्षेत्र में वायुयानों का विकास एक नया अध्याय है। वर्तमान युग के दो महायुद्धों से वायुयानों को विशेष प्रोत्साहन मिला है और यातायात में वायुयानों की उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है। यातायात में उपयोग किए जाने वाले हवाई जहाज दो प्रकार के होते हैं—वायुपोत (Airships) और वायुयान (Airplanes)। साधारणतः वायुपोत वायुयानोंसे हल्के होते हैं। फिर भी वायुयान का प्रचार दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। इनके द्वारा यातायात में कई


ऐनकोरेज
वैंकोवर
सिएटल
सानफ्रांसिस्को
मॉन्ट्रियल
सेन्ट जोहन्स
न्यूयार्क
पानामा
सेंटियागो
मोंटविडियो
रियो डि जानिरयो
रेसिफ
डकार
लंदन
बर्लिन
मास्को
नोवोसिबिर्स्क
चिटा
ब्लाडीवास्टक
काहिरा
खारतुम
केपटाउन
कराची
देहली
बम्बई
कोलम्बो
हांगकांग
टोकियो
जकारता
डारविन
सिडनी
आकलैंड
विलिंगटन
प्रशान्त महासागर
अन्ध महासागर
हिन्द महासागर
प्रशान्त महासागर
प्रमुख अन्तराष्ट्रीय वायुमार्ग

चित्र ३८

सुविधाएँ व दोष है—यद्यपि वायुयान यातायात के सबसे वेगशील साधन हैं परन्तु सस्ते दामों में भारी वस्तुओं को ले जाने केलिए रेल और जहाजही अधिक लाभ-प्रद रहते हैं। हाँ, बहुमूल्य सामग्री तथा यात्रियों के लिए अन्य साधनों की अपेक्षा हवाई यातायात अधिक सुविधाजनक रहता है। इन दो प्रकार के अलावा आज-कल कम जगह में उतरने वाले हेलीकोपटर तथा ग्लाइडर जहाजों का प्रयोग बढ़ रहा है।

हवाई यातायात और भौगोलिक परिस्थितियाँ हवाई यातायात पर जल-वायु सम्बन्धी स्थिति का बड़ा प्रभाव पड़ता है। भारी वर्षा, गहरे बादल तथा बर्फ व बालू की आँधियाँ इसमें बाधा डालती है। कोहरे के समय भी वायुयानों को उतरने में बड़ी कठिनाई होती है। भूमि की बनावट का भी काफी प्रभाव पड़ता है। हवाई अड्डे बनाने के लिए समतल भूमि ही उपयुक्त होती है और ऊँचे-नीचे भूमि-प्रदेश पर उड़ान करना भी खतरे से खाली नहीं है। इन्हीं कारणों से हवाई यातायात का विशेष विकास संयुक्तराष्ट्र अमरीका, जर्मनी, रूस, संयुक्तराज्य और हालैंड के समतल विभागों में विशेष रूप से हुआ है। सुरक्षा और सञ्चालन की सुविधा के विचार से वायुमार्गों की दिशा नदियों तथा नगरों आदि भूमि स्थित चिह्नों द्वारा ही निश्चित की जाती है।

वायुमार्गों को विश्वव्यापक बनाने का श्रेय निम्नलिखित तीन तथ्यों को है—

(१) टेकनीकी सफलता।

(२) आर्थिक उन्नति।

(३) सभी प्रदेशों के ऊपर से उड़ने का अधिकार। हाल के दिनों में हवाई जहाजों के विज्ञान ने बड़ी प्रगति की है और फलस्वरूप वायुयानों की उड़ानें काफी सुरक्षित हो गई हैं। यातायात में बढ़ोत्तरी के कारण माल तथा यात्री ले जाने में वायुयान आर्थिक रूप से सफलता प्राप्त कर चुका है। परन्तु अभी भी उड़ानों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों की आवश्यकता होती है।

वायु यातायात की उड़ानों को चार प्रकार का कहा जा सकता है—

(१) अन्तर्राष्ट्रीय

(२) महाद्वीपीय

(३) प्रादेशिक तथा

(४) स्थानीय

स्थानीय वायुमार्ग या उड़ान किसी देश के नगर के प्रादेशिक उड़ान से सम्बन्धित करता है और प्रादेशिक उड़ान महाद्वीपीय उड़ान से सम्बन्ध स्थापित करती है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में वायु यातायात इतना अधिक है कि वह अकेला ही संसार के अन्य देशों के योग से अधिक है। वहाँ की तीन प्रमुख कम्पनियाँ यूनाइटेड एअरलाइन्स, अमेरिकन एअर लाइन्स तथा ट्रान्स वर्ल्ड एअरलाइन्स हैं।

ये कनाडा और दक्षिणी अमरीका की कम्पनियों से सम्बन्धित हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सबसे प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय वायु उड़ान कम्पनी, पन अमरीकन एअर-वेज है।

यूरोप के हवाई मार्ग—हवाई यातायात, डाक, यात्रियों और भाड़े आदि की आय के विचार से फ्रांस का यूरोप में प्रथम तथा संसार में छठा स्थान है। इंगलैंड, हालैंड और बेल्जियम क्रमशः अन्य महत्वपूर्ण देश हैं। ग्रेट ब्रिटेन में हवाई यातायात की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। भिन्न-भिन्न हवाई कम्पनियों की संयोजित ब्रिटिश ओवरसीज एअर कारपोरेशन ब्रिटेन और अन्य विभिन्न दूरस्थ कामनवेल्थ देशों में हवाई सम्बन्ध स्थापित करती है। भारत, दक्षिणी अफीका और आस्ट्रेलिया से बराबर आना-जाना लगा रहता है। ग्रेट ब्रिटेन में इस समय सैनिक व सुरक्षा सम्बन्धी हवाई यातायात को छोड़कर अन्य सभी हवाई मार्गों व उड़ानों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है।

संयुक्त राष्ट्र के हवाई मार्ग—संयुक्तराष्ट्र अमरीका में हवाई यातायात अन्य सभी देशों के योग से कहीं अधिक है। यहाँ पर यूनाइटेड एअर लाइन्स, अमरीकन एअर लाइन्स और ट्रांस कांटिनेंटल एअर लाइन्स तीन प्रमुख हवाई कम्पनियाँ हैं और कनाडा तथा दक्षिणी अमरीका के वायुमार्गों से भी सम्बन्ध रखती हैं।

असैनिक वायु यातायात (१९५२)

(हजार किलोमीटर)

	उड़ान की कुल लम्बाई	यात्री किलोमीटर	टन माल किलोमीटर
संयुक्त राष्ट्र	९३४,२२९	२५,०२५,१७४	५०८,९०२
संयुक्त राज्य	९२,७५०	१,९७८,५२६	४४,३५१
आस्ट्रेलिया	८०,३५०	१,४८१,७१५	५४,०४९
नेदरलैंड	४०,७४८	१०११,२२१	३४,७५६
फ्रांस	५४,२१२	१,४६०,२४३	४९,१८२
कनाडा	५७,३३२	१,२२०,२४७	१३,०९४
ब्राजील	८६,२३१	१,२७६,०१४	६२,०५०
भारत	३१,४७६	३,८९,४६८	२०,९०९

प्रधान देश, उनकी वायु उड़ान और उनका क्षेत्र

देश	प्रधान वायु-यातायात कम्पनियाँ
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	यूनाइटेड एअरलाइन्स, ट्रांस वर्ल्ड एअरलाइन्स अमरीकन एअरलाइन्स, पैन अमरीकन एअरवेज
कनाडा	ट्रांस कनाडा एअरलाइन्स

	(ग्रेट ब्रिटेन, पश्चिमी द्वीपसमूह, फ्रांस, जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र)
संयुक्त राज्य	ब्रिटिश ओवरसीज कारपोरेशन (यूरोप, दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी द्वीप समूह और कामनवेल्थ के देश)
फ्रांस	एअर फ्रांस (यूरोप, उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, मध्य और दूर पूर्व और आस्ट्रेलिया)
नेदरलैंड	रायल डच एअरलान्स
डेनमार्क, स्वीडन, नार्वे	स्कैण्डिवेयिन एअरलाइन्स सिस्टम
इटली	एरोफ्लॉट, टेस्को, एल. ए. आई. (उत्तरी अफ्रीका, निकटपूर्व, दक्षिणी अमरीका और लन्दन)
भारत	एअर इण्डिया इण्टरनेशनल (काहिरा, रोम, जेनेवा, पेरिस, लन्दन, अदन, नेरोबी, बैंङाकॉक, सिंगापुर, काबुल, लंका, जकार्ता, बर्मा, पाकिस्तान)
रूस	एरोफ्लॉट (पूर्वी यूरोप के देश)

भूमण्डल के अन्तर्राष्ट्रीय वायुमार्ग

(१) **यूरोप और अमरीका के बीच के वायुमार्ग**—इस मार्ग पर फ्रांसीसी, अमरीकी तथा ब्रिटिश वायुयान चलते हैं। यूरोप और अमरीका के बीच के वायुमार्ग निम्नलिखित हैं—

(अ) यूरोप और संयुक्तराष्ट्र अमरीका—कनाडा—लन्दन—शैनन—गैंडर, ओटावा या न्यूयार्क—पेरिस—लिस्बन—एजोरस—बरमूडाज—न्यूयार्क—स्टाकहॉम, ओस्लो, रेयाकजाविक—गैंडर, ओटावा या न्यूयार्क।

(ब) दक्षिणी अमरीका के लिए वायुमार्ग अफ्रीका के आन्ध्र महासागरीय तट के साथ-साथ डकार तक जाता है और डकार या ब्राथस्ट से यह मार्ग आन्ध्र

महासागर को पार करके ब्राजील में नेटाल पहुँचता है। यह वायुमार्ग द्वारा रियो-डि-जैनीरो और ब्यूनस आयर्स से सम्बन्धित है। नेटाल में आकर संयुक्तराष्ट्र अमरीका के वायुमार्ग भी मिल जाते हैं।

(२) **यूरोप, एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच के वायुमार्ग**—इन मार्गों पर फ्रांसीसी, डच तथा ब्रिटिश वायुयान चलते हैं। ब्रिटिश वायुमार्ग लन्दन से शुरू होकर मार्सेल्स, अथेन्स, सिकन्दरिया, काहिरा, गाजा, बगदाद, बहरीन, शरहाज, जोधपुर, दिल्ली, इलाहाबाद, कलकत्ता, रंगून, बेंगकाक, पीनांग, सिंगापुर, बटाविया, डारविन, ब्रिसबेन तथा सिडनी होता हुआ मेलबोर्न तक जाता है। डच तथा फ्रांसीसी हवाई जहाज भी लगभग इसी मार्ग पर चलते हैं। कुछ दिनों से रूस ने मास्को से ब्लाडीवोस्टक तक एक नया वायुमार्ग खोला है।

(३) **यूरोप और अफ्रीका के बीच के वायुमार्ग**—इस मार्ग पर इटालियन फ्रांसीसी और ब्रिटिश वायुयानों का नियंत्रण है। अफ्रीका के महत्वपूर्ण मार्ग ब्रिटेन के अधिकार में हैं। ब्रिटिश वायुमार्ग साउथेम्पटन से आरम्भ होकर भूमध्यसागर के पार सिकन्दरिया तक जाता है। सिकन्दरिया से यह मार्ग सीधा खारतूम को जाता है और फिर वहाँ से यह दो दिशाओं या शाखाओं में बँट जाता है—एक शाखा तो पश्चिम में लागौस तक जाती है और दूसरी दक्षिण में केप टाउन तक।

फ्रांसीसियों ने अफ्रीका में दो वायुमार्ग स्थापित किये हैं। एक अफ्रीका के पश्चिमी तट के सहारे-सहारे बाथर्स्ट होता हुआ फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय प्रदेश तक पहुँचता है। दूसरा मार्ग सहारा तथा कांगो को पार करके मैडागास्कर में समाप्त होता है। इटली के वायुमार्ग ट्रिपोली तथा काहिरा होते हुए अबीसीनिया में अदीस अबाबा तक जाते हैं।

(४) **अमरीका और एशिया के बीच के वायु-मार्ग**—प्रशान्त महासागर के लिये संयुक्तराष्ट्र के वायुयानों द्वारा यात्रा की जाती है। यह मार्ग सैनफ्रांसिस्को से आरम्भ होता है और प्रशांत महासागर के मध्य होनोलूलू, मिडवे द्वीप, बेक द्वीप और मेनीला होता हुआ केण्टन तक जाता है। लॉस एंजीलीस और सैनफ्रानसिस्को से आने वाले वायुमार्ग हॉनोलूलू में मिलते हैं। जहाँ से हवाई जहाज तीन भिन्न दिशाओं में जाते हैं : (अ) मनीला या शंघाई को (ब) न्यूजीलैंड को (स) सिंगापुर को। सियाटल वायु-मार्ग कनाडा के किनारे के साथ-साथ चलता हुआ टोकियो और शंघाई तक जाता है।

जर्मनी से वायुमार्ग विभिन्न दिशाओं में जाते हैं। यहाँ से उत्तर में नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड को; दक्षिण-पूर्व में चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया और यूनान को; पूर्व में पोलैंड को और दक्षिण में इटली को; दक्षिण-पश्चिम में स्पेन तथा पुर्तगाल को और पश्चिम में फ्रांस तथा संयुक्त राज्य (U. K.) को वायुयान चलते हैं। दूसरे महायुद्ध से पहले पश्चिम तथा दक्षिणी यूरोप में डच तथा फ्रांसीसी वायुयानों की जर्मन वायुयानों से स्पर्धा थी।

वायु-मार्गों तथा हवाई यातायात के विकास में संयुक्तराष्ट्र अमरीका का स्थान

सर्वप्रथम है। इस देश में एक किनारे से दूसरे किनारे तक आने-जाने वाले कई वायु-मार्ग हैं। पूर्वी तट पर बोस्टन, न्यूयार्क तथा वाशिंगटन और पश्चिमी तट पर सियाटील (Seattle), सैन् फ्रांसिस्को और लॉस एंजिलीस प्रसिद्ध हवाई अड्डे हैं।

प्रश्नावली

१. वर्तमान वाणिज्य व व्यापार में यातायात का क्या महत्व है ? यातायात के विभिन्न साधनों पर एक निबन्ध लिखिये।

२. कनाडा में यातायात की किन सुविधाओं के बन जाने से खेतिहर उपज को लाभ पहुँचता है और किस प्रकार यातायात की प्रगति के कारण वहाँ की खेती में उन्नति हुई है ?

३. "हाल के दिनों में पनामा नहर के द्वारा यातायात व गमनागमन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है।" जिन कारणों से वह उन्नति हुई है उनका संक्षिप्त विवरण दीजिए। इस नहर से किन वस्तुओं का व्यापार होता है ? पूर्व के देशों के दृष्टिकोण से इस मार्ग में क्या दोष हैं और उनको किस प्रकार दूर किया जा सकता है ?

४. पनामा नहर का वर्णन कीजिये। किन देशों को उससे अधिक लाभ हुआ है और क्यों ?

५. न्यूयार्क की उन्नति में रेल व आन्तरिक जलमार्गों का क्या महत्त्व रहा है। समझाकर लिखिये।

६. पूर्व में ब्रिटिश हवाई मार्ग का वर्णन कीजिए। भारत में हवाई यातायात के विकास की क्या संभावनाएँ हैं ?

७. हवाई मार्गों के विकास और उन्नति के लिए किन परिस्थितियों का होना आवश्यक है ? यूरेशिया के प्रधान हवाई मार्गों में से किन्हीं दो का व्यापारिक व आर्थिक महत्त्व समझाइये।

८. इंगलैंड और जर्मनी तथा जापान और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले समुद्री व्यापार का वर्णन दीजिये।

९. बनावट व व्यापारिक महत्त्व के दृष्टिकोण से पनामा और स्वेज नहरों का अन्तर विश्लेषण कीजिए।

१०. संसार के प्रमुख समुद्र तट-स्थित देशों में व्यापारिक जहाजों व समुद्री यातायात की वर्तमान दशा क्या है ? इस दिशा में भारत ने क्या प्रगति की है ?

११. "पनामा नहर के खुल जाने से संसार के समुद्री जल मार्गों में काफी महत्त्वपूर्ण हेर-फेर हो गया है, परन्तु फिर भी संसार के वाणिज्य व व्यापार पर स्वेज नहर के समान व्यापक व महत्त्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ सका है। इसके कारण व्यापार व गमनागमन में उतना तीव्र विकास व उन्नति नहीं हो पाई है, जितनी स्वेज जलमार्ग के खुलने से हुई थी।" इस वक्तव्य पर अपने विचार प्रकट कीजिये।

१२. भारत के विदेशी व्यापार के दृष्टिकोण से स्वेज मार्ग का क्या महत्त्व है ? अगर इस मार्ग को कुछ समय के लिए बन्द कर दिया जाय तो इसके विदेशी

व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

१३. स्वेज जलमार्ग का वर्णन कीजिए और इसका व्यापारिक महत्त्व दिखलाइये।

१४. ट्रैम्प और लाइनर जहाजों का अन्तर स्पष्ट कीजिये। भारत से अमरीका के पैसिफिक-तटीय बन्दरगाहों को पहुँचने के लिए कौन-से जलमार्ग सुगम हैं।

१५. पश्चिमी यूरोप से पूर्वी एशिया को जाने के लिए स्वेज और पनामा जल-मार्गों के लाभ व दोष क्या हैं ?

१६. कलकत्ता से दक्षिणी अमरीका के पैसिफिक-तटीय बन्दरगाहों को बहुत-सा पटसन भेजा जाता है। इस व्यापार के लिए जहाज किन-किन रास्तों से जाते हैं और क्यों ?

१७. इस समय संसार के व्यापारिक जहाजों के प्रादेशिक वितरण की क्या विशेषता है ? पिछले महायुद्ध से विभिन्न देशों की व्यापारिक जहाज-सम्बन्धी स्थिति में क्या परिवर्तन हुआ है ? भारत के समुद्री व्यापार के क्या साधन हैं ? ट्रैम्प जहाज क्या होते हैं और क्या वस्तुएँ ले जाते हैं ?

१८. भारत से यूरोप जाने के वास्ते केप मार्ग और भूमध्यसागर मार्गों की तुलना कीजिए। यदि युद्ध काल में भूमध्यसागर मार्ग को बन्द कर दिया जाय तो भारत के व्यापार पर क्या असर पड़ेगा ?

१९. ब्रिटिश कामनवेल्थ देशों में हवाई यातायात की वर्तमान उन्नति का वर्णन कीजिए। दुनिया का मानचित्र खींचकर यूरोप और एशिया के मध्य हवाई मार्गों को दिखलाइये।

२०. भारत और यूरोप के बीच रेल-मार्गों के खुलने की क्या सम्भावनाएँ हैं ?

२१. पनामा नहर के बन जाने से विभिन्न देशों के व्यापार व वाणिज्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पर क्या प्रभाव पड़ा है और क्या प्रभाव पड़ने की भविष्य में सम्भावना है ?

२२. यातायात के अन्य साधनों की अपेक्षा वायु-यातायात की विशेष सुविधाएँ व लाभ क्या हैं ? दुनिया के मानचित्र पर मुख्य हवाई मार्ग दिखलाइये।

२३. थल-यातायात की अपेक्षा जल-यातायात की क्या विशेषताएँ है ? अपने उत्तर में गुण व दोष दोनों ही दिखलाइये।

२४. उत्तरीय अटलांटिक महासागर के प्रधान जलमार्ग एक रेखा-चित्र बनाकर दिखाइये और उनका वर्णन करिये।

२५. थल-यातायात के विभिन्न साधन क्या हैं ? रेलों व सड़कों का महत्व बतलाइये और संसार की प्रमुख रेलों का वर्णन कीजिये।

२६. "रूस की वर्तमान उन्नति वहाँ के यातायात की सुविधाओं के कारण ही हुई है ?" इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिये और रूस की यातायात व्यवस्था समझाइये।

२७. मनुष्य के यातायात सम्बन्धी प्रयत्नों पर उसकी आर्थिक उन्नति व समृद्धि किस प्रकार निर्भर रहती है ? समझाकर लिखिए।

२८. यातायात के साधन के दृष्टिकोण से यांगटीसीक्यांग और नील नदी की तुलना कीजिये।

२९. व्यापार व वाणिज्य के दृष्टिकोण से स्वेज और पनामा नहरों की तुलना कीजिये और उनके निर्माण व विकास के विषय में एक संक्षिप्त विवरण दीजिए।

अध्याय : : नौ

पोताश्रयों और बन्दरगाहों का विकास

बन्दरगाह समुद्रतट पर स्थित देश के वे द्वार हैं जहाँ देश के आन्तरिक व समुद्री व्यापारिक मार्ग मिलते हैं। समुद्री जलमार्ग पर बन्दरगाह वे स्थान हैं जहाँ जहाजों को माल लादने-उतारने की सुविधा रहती है। माल लादने व उतारने के लिए कुछ दशाओं का होना अनिवार्य है— वे बातें हैं आश्रय, सुरक्षा और विस्तृत स्थान।

पोताश्रयों में सुरक्षित आश्रय का महत्व—समुद्रतट पर खुले अरक्षित स्थान पर जहाज से माल उतारना व चढ़ाना बड़ा ही कठिन है। ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका में तटीय समुद्र छिछला है, इसलिए जहाजों को समुद्र-तट से कुछ दूर ही लंगर डालना पड़ता है। यदि समुद्र वर्ष भर अशांत रहता हो तब भी जहाजों के लादने अथवा माल उतरने के कार्य में बड़ी कठिनाई रहती है। इसलिए माल को आसानी से व सुरक्षित तरीके से चढ़ाने-उतारने के लिए जहाजों को तट पर सुरक्षित स्थान की आवश्यकता होती है। पोताश्रय (पोत+आश्रय) शब्द में ही सुरक्षित स्थान का महत्त्व निहित है। पोताश्रय वे स्थान हैं जहाँ जहाज सुरक्षित रह सकते हैं। इस दृष्टिकोण से पोताश्रय दो प्रकार के होते हैं—(१) कृत्रिम और (२) प्राकृतिक। प्राकृतिक पोताश्रय साधारणतया तट-रेखा में भूमि की विशेष बनावट के कारण घिरा हुआ सुरक्षित स्थान होता है, जिसमें जहाजों के ठहरने के लिए शान्त जल मिल जाता है। सेन फ्रांसिस्को, लिवरपूल और कार्क जैसे बन्दरगाहों के सर्वोत्तम प्राकृतिक पोताश्रय हैं।

कृत्रिम पोताश्रय उन स्थानों पर बनाए जाते हैं जहाँ भूमि की बनावट व अन्य स्वाभाविक दशाएँ अनुकूल नहीं होतीं हैं। यहाँ पर तरंग भंगी दीवारों तथा झागों से सदा ही काम लिया जाता है। ये दीवारें पोताश्रय क्षेत्र के अन्दर प्रवेश करने वाली जलतरंगों के वेग को रोकने के लिए बनाई जाती है जिससे वहाँ पर जहाज सुरक्षित रूप से खड़े रहें। जहाँ समुद्र का जल छिछला होता है वहाँ झागों द्वारा गहरा रखा जाता है। लास एंजिलीस तथा मद्रास के पोताश्रय कृत्रिम हैं।

आदर्श पोताश्रयकी दशाएँ—एक आदर्श पोताश्रय के लिए निम्नलिखित बातें होनी चाहिए—(१) समुद्री तूफानों तथा तरंगों से सुरक्षा, (२) शीत-काल में हिम से मुक्ति, (३) तट के पास जल की काफी गहराई, (४) बड़े-बड़े जहाजों के मुड़ने के लिए काफी चौड़ाई, (५) सामान उतारने व चढ़ाने के लिए डाक व व्हर्व का होना, (६) पृष्ठ-प्रदेश का उन्नत तथा समृद्ध होना तथा (७) सीधे व समतल मार्गों द्वारा पृष्ठ-प्रदेश से सम्बन्ध होना।

बन्दरगाहों की दूसरी विशेष आवश्यकता विस्तृत स्थान की है। विस्तृत स्थान होने से व्यापार के कार्य में सुविधा रहती है। इसलिए केवल आदर्श पोताश्रय से ही बन्दरगाह की सभी आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो जातीं। इसमें सुविधाजनक निरंतर गमनागमन, माल व मुसाफिरों के उतारने-चढ़ने की सुविधाएँ भी होनी चाहियें। इनके अलावा घाट जेटी, छायादार स्थान, गोदाम, भारी वस्तुओं को उठाने के लिए क्रेन, आने-जाने के लिए सड़कों, रेलों तथा जहाजों व गाड़ियों के मरम्मत के कारखाने भी पास में होना जरूरी है।

बन्दरगाहों की अन्य महत्त्वपूर्ण आवश्यकता व्यापार का होना है। व्यापार के महत्त्वपूर्ण द्वार होने के कारण ही बन्दरगाह बनते व उन्नति करते हैं। और व्यापार वहीं बढ़ता है जहाँ निम्नलिखित दशाएँ प्रस्तुत हों—(१) वस्तुओं के उत्पादन तथा उपभोग के लिये एक विशाल व सम्पन्न पृष्ठ-प्रदेश, (२) पृष्ठ-देश से बन्दरगाह तक यातायात व गमनागमन के सुगम साधनों का प्रस्तुत होना, (३) संसार के प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर या उनके समीप स्थित होना।

पृष्ठ-प्रदेश का महत्व—बन्दरगाह का विशेष महत्त्व उसके पृष्ठ-प्रदेश के विस्तार तथा उत्पादन शक्ति में सन्निहित रहता है। 'हिण्टरलैंड' (Hinterland) जर्मन भाषा से लिया गया है और जैसा पृष्ठ-प्रदेश शब्द से ही प्रगट होता है, इसका अर्थ वह प्रदेश है जिसके लिए बन्दरगाह द्वार का काम करता है। बंगाल और बिहार का व्यापार कार्य कलकत्ते के बन्दरगाह के द्वारा होता है। इसीलिए ये दोनों प्रान्त कलकत्ता के पृष्ठ-प्रदेश कहलाते हैं।

बन्दरगाह की उन्नति के लिए पृष्ठ-प्रदेश का सम्पन्न व समृद्धिशाली होना आवश्यक है। घनी आबादी, बहुमूल्य आर्थिक उपज तथा यातायात की सुविधा होने से पृष्ठ-प्रदेश 'सम्पन्न' कहलाता है। संक्षेप में बात यह है कि पृष्ठ-प्रदेश में व्यापार के लिए आकर्षण होना चाहिए।

बन्दरगाह के पृष्ठ-प्रदेश का विस्तार वहाँ के आवागमन के साधनों पर निर्भर रहता है। आवागमन के साधन ही पृष्ठ-प्रदेश के भिन्न-भिन्न भागों को बन्दरगाह के निकट सम्पर्क में लाते हैं। जल और थल के बीच व्यापार का मुख्य साधन बन्दरगाह ही होता है। इसलिए अपने चारों ओर के निकटवर्ती क्षेत्रों से रेल, सड़क व नदी-नहरों द्वारा सम्बन्धित होना आवश्यक है।

पृष्ठ-प्रदेश दो प्रकार के होते हैं—वितरक (Distributory) और सहायक (Contributory)। वितरक पृष्ठ-प्रदेश अपनी घनी आबादी के लिए या तो भोजन-सामग्री आयात करता है या उन्हीं निवासियों के लिए आवश्यक अथवा विलास सामग्री जुटाता है। कारखानों के लिए कच्चा माल भी मँगाता है। जिस पृष्ठ-प्रदेश से माल निर्यात होता है वह सहायक कहलाता है। ये वस्तुएँ भोज्य पदार्थ, कच्चे माल अथवा बने हुए माल के रूप में हो सकती हैं। इस प्रकार किसी भी बन्दरगाह के व्यापार की मात्रा से उसके पृष्ठ-प्रदेश के वर्तमान उत्पादन, उपभोग, यातायात की सुविधाओं का पता चलता है।

एक ही पृष्ठ-प्रदेश में कई बन्दरगाह भी हो सकते हैं। जिन बन्दरगाहों में व्यापारिक सुविधाएँ अधिक होती हैं व्यापार भी उन्हींके द्वारा अधिक होता है। भारत के पश्चिमी तट पर बम्बई, ओखा, पोरबन्दर तथा नवलक्खी बन्दरगाहों म होड़-सी लगी रहती है। पोताश्रय कर में कमी के कारण बम्बई की अपेक्षा काठियावाड़ के बन्दरगाह से ज्यादा व्यापार होता है।

बन्दरगाहों के विभिन्न प्रकार—स्थिति के अनुसार ही बन्दरगाह निम्न-लिखित तीन प्रकार के होते हैं—(१) समुद्री बन्दर, (२) नदी बन्दर और (३) नहरी बन्दर। इन बन्दरगाहों से होने वाला व्यापार व कार्य भी विभिन्न होता है। कच्चे माल की प्राप्ति की सुगमता और व्यापार की मंडियों के अनुरूप ही इन बन्दरगाहों की व्यापारिक उन्नति हो जाती है।

समुद्री बन्दरगाह—पोताश्रयों की प्रकृति तथा देश-प्रदेश के थल-मार्गों के सम्बन्ध के अनुसार समुद्री बन्दरगाहों को चार श्रेणियों में बाँटा जा सकता है—

(अ) **खुले बंदरगाह** जैसे बोलोन। यह प्रायः हीन दशा में ही रहते हैं। यहाँ न तो जहाजों के लिये सुरक्षित पोताश्रय, न पानी की पर्याप्त गहराई और न हवा व लहरों से बचाव का कोई प्रबन्ध होता है। बड़ी-बड़ी नदी घाटियों के मुहाने पर स्थित न होने के कारण भीतरी भागों से सम्पर्क कम रहता है और यातायात व गमनागमन की अनेकों असुविधायें रहती हैं।

(ब) **खाड़ी स्थित बंदरगाह** जैसे बोस्टन। ऐसे स्थानों पर पोताश्रय सुरक्षित, सुविस्तृत और गहरे होते हैं तथा उनमें जहाजों के ठहरने के लिये पर्याप्त स्थान होता है।

(स) **नदी बंदरगाह** जैसे कलकत्ता और चिटगाँव। इनमें भीतरी प्रदेशों से यातायात की सुविधा तो रहती है पर गहराई, लंगर स्थान, घाट, माल लादने व उतारने के स्थान की कमी रहती है। इन असुविधाओं को नदी की तलैटी को गहरा व चौड़ा करके दूर किया जाता है अथवा नदी के बहाव में ऊपर या नीचे की तरफ काफी दूर जाकर सुविधाजनक विस्तृत स्थान मिलता है।

(द) **नदी-खाड़ी बंदरगाह**—वे बन्दरगाह जो नदी के मुहाने और खाड़ी के तट पर स्थित होते हैं, व्यापार की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ होते हैं। उनमें विस्तृत व सुर-क्षित लंगर स्थान भी मिल जाता है और घाटों व माल उतारने-चढ़ाने के लिये पर्याप्त क्षेत्र भी मिल जाता है। इनके अलावा भीतरी भागों से सम्पर्क की सभी सुविधायें भी प्रस्तुत रहती हैं।

इनके अलावा प्रत्येक नाव चलाने योग्य नदी व नहर के किनारे कुछ व्यापारिक नगर उत्पन्न हो जाते हैं। इन केन्द्रों पर निकटवर्ती प्रदेश की उपज एकत्रित की जाती है तथा नदियों द्वारा इधर-उधर भेजी जाती है। इन बन्दरगाहों का विकास व महत्व नदियों की नाव्य क्षमता, नदी तट पर उनकी अनुकूल स्थिति और निकट-वर्ती क्षेत्रों की उत्पादनशीलता पर निर्भर रहता है।

पुर्ननिर्यात केन्द्र (Entrepots)—बन्दरगाहों के विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुर्ननिर्यात केन्द्रों के विषय में मुख्य-मुख्य बातें जान लेना बहुत जरूरी है। Entrepots वे बन्दरगाह होते हैं जहाँ पर फिर से निर्यात करने के लिए वस्तुओं को आयात किया जाता है। इस प्रकार ये बन्दरगाह मध्यस्थ का काम करते हैं और इनका मुख्य काम माल का फिर से वितरण करना है। इन केन्द्रों पर व्यापार की वस्तुएँ स्थानीय उपभोग के लिए नहीं वरन् उन प्रदेशों को भेजने के लिए इकट्ठा की जाती हैं जो सीधे उत्पादन क्षेत्रों से माल नहीं मँगा सकते। मलाया प्रायद्वीप स्थित सिंगापुर में इसी प्रकार आस-पास के द्वीपों से माल इकट्ठा करके संसार के भिन्न-भिन्न भागों को भेज दिया जाता है।

पुर्ननिर्यात व्यापार—पुर्ननिर्यात केन्द्रों से सम्बंधित माल की कुछ विशेषताएँ होती हैं। ये वस्तुएँ आम तौर से बहुमूल्य, लम्बाई-चौड़ाई की और टिकाऊ होनी चाहियें। पुर्ननिर्यात केन्द्रों के व्यापार पर किसी वस्तु-विशेष के उत्पादन क्षेत्र और उपभोग क्षेत्र के बीच दूरी का भी काफी गहरा असर पड़ता है। जब इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी अधिक होती है तो पुर्ननिर्यात केन्द्रों पर व्यापार का जोर अधिक रहता है। यूरोप में मसाले, दवाइयाँ, सिल्क और दूसरी उष्णकटिबंधी वस्तुओं की खपत कम रहती है। अतः किसी पश्चिमी पुर्ननिर्यात केन्द्र से इन वस्तुओं के वितरण में काफी बचत रहती है। इसीलिये इन वस्तुओं का नारवे, स्वीडन तथा बाल्टिक राज्यों के लिए पुर्ननिर्यात केन्द्र ऐल्ब नदी पर स्थित हैम्बर्ग है। सैयद बन्दरगाह (Port Said) पुर्ननिर्यात केन्द्र का सर्वोत्तम उदाहरण है। पश्चिम से आने वाले सभी मार्ग स्वेज नहर में प्रवेश करने से पहले यहीं पर मिलते हैं। संसार के प्रमुख पुर्ननिर्यात केन्द्र लन्दन, कोलम्बो, सिंगापुर, हैम्बर्ग और शंघाई हैं।

बंदरगाहों के महत्व की तुलना के मापदंड—बन्दरगाहों की महत्ता तथा संपन्नता की तुलना के अनेक मापदंड हैं। इसीलिए बन्दरगाहों का तुलनात्मक और अपेक्षाकृत महत्त्व जानना सरल या आसान नहीं है। साधारणतया निम्नलिखित आधार काम में लाये जाते हैं।

१. एक वर्ष में बन्दरगाह पर आने-जाने वाले जहाजों की संख्या।
२. जहाजों के टनभार का योग।
३. आयात-निर्यात वस्तुओं के टनभार का योग।
४. बन्दरगाह पर आने-जाने वाले सामान का बाजार मूल्य।

जहाजों के छोटे-बड़े होने के कारण बन्दरगाह की महत्ता का मूल्यांकन आने-जाने वाले जहाजों की संख्या के आधार पर करना उचित नहीं है। जहाजों का परिमाण तथा महत्त्व कुछ अंश तक उनके टनभार के अनुसार निर्धारित किया जा सकता है। साथ ही साथ किसी बन्दरगाह द्वारा आयात तथा निर्यात किए गए माल के टन भार को तुलना का आधार बनाया जा सकता है। परन्तु इसमें भी एक

बड़ी त्रुटि है कि इससे वस्तुओं की प्रकृति स्पष्ट नहीं होती—कि वे वस्तुएँ बहु-मूल्य हैं अथवा केवल भारी और सस्ती।

संसार के कुछ प्रमुख बन्दरगाह

यूरोप—यूरोप के बन्दरगाह अधिकतर उत्तर-पश्चिमी तट पर स्थित हैं। इनमें एल्ब नदी पर हैम्बर्ग, राइन पर राटरडम, शेल्ट पर ऐन्टवर्प और सीन पर हावर प्रधान बन्दरगाह हैं। इन बन्दरगाहों के पृष्ठ-प्रदेश भी बहुत विशाल और उपजाऊ हैं।

स्वेज नहर के खुलने के बाद भूमध्यसागर संसार के व्यापार का प्रसिद्ध मार्ग हो गया है। इससे भूमध्यसागर के बन्दरगाहों के पृष्ठ-प्रदेशों की महत्ता भी बहुत बढ़ गई है। इस पर मार्सेल्स, जिनोआ, नेपिल्स और ट्रीस्ट प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। बाल्टिक तथा कालासागर थल से घिरे हुए समुद्र हैं, इसीलिये इनके बन्दरगाह प्रसिद्ध नहीं हैं, फिर भी कुस्तुनतुनिया और कोपेनहैगेन की स्थिति बड़ी सुविधापूर्ण है।

लन्दन—टेम्स नदी पर स्थित यह प्रसिद्ध बन्दरगाह समुद्र से ५५ मील अन्दर बसा हुआ है। लंदन ब्रिज के समीप ज्वार-भाटे का उभार १६ से २१ फीट तक होने के कारण यहाँ झामों की आवश्यकता नहीं पड़ती। बहुत दिनों से लंदन एक अन्त-र्राष्ट्रीय गोदाम बन गया है। यहाँ पर संसार के सभी भागों से वस्तुएँ आती हैं और तत्काल ही पुर्ननिर्यात कर दी जाती हैं। पुर्ननिर्यात केन्द्र से बढ़ते-बढ़ते अब यह संसार का सबसे महत्त्वपूर्ण द्रव्य केन्द्र हो गया है। यहाँ पर ऊन, अनाज, लकड़ी, मांस, चाय, काफी, चीनी, मदिरा, स्प्रिट, तम्बाकू, रबर, फल, कालीन, दरियाँ और डेरी की वस्तुएँ आती हैं।

लन्दन नगर एक प्रमुख व्यापारिक व औद्योगिक केन्द्र भी है। यहाँ पर कागज, रासायनिक पदार्थ और बनावटी रेशम के अनेक कारखाने हैं। मेज, कुर्सी, वस्त्र, आभूषण, टोप इत्यादि भी यहाँ बनते हैं। ब्रिटिश द्वीपों का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह लन्दन ही है। यहाँ पर ब्रिटेन में आने वाली वस्तुओं का ३० से ४० प्रतिशत भाग आयात किया जाता है और यहीं से बाहर भेजी जाने वाली वस्तुओं के २५ प्रतिशत भाग का निर्यात होता है।

ग्लासगो—संसार भर में जहाजों के निर्माण का सबसे बड़ा केन्द्र है। ग्रीनोक से २० मील पूर्व यह क्लाइड नदी पर बसा है। ग्रीनोक से ग्लासगो तक क्लाइड नदी के किनारों पर जहाज बनाने के बहुत-से कारखाने हैं और अनेक डाक हैं। क्लाइड की सुरक्षित स्थिति, पास ही लोहे-कोयले की खानों का होना तथा नदी की गहराई के कारण क्लाइड का मुहाना आदर्श पोत-निर्माण-क्षेत्र बन गया है। इंजी-नियरी की वस्तुओं के अतिरिक्त यहाँ पर ऊनी माल, दरियाँ, रंग शीशे की वस्तुएँ, रासायनिक पदार्थ, तेल साफ करने, साबुन, मिठाई, मुरब्बे आदि बनाने के अनेक कारखाने हैं। स्थानीय उपभोगों के अतिरिक्त ये वस्तुएँ बाहर भी भेजी जाती हैं।

लिवरपूल—मर्सी नदी के मुहाने पर स्थित है। यह भी लंदन की बराबरी

का बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह से रुई, अनाज तथा खाद्य सामग्री का आयात तथा ऊनी माल, इस्पात, बर्तन, रासायनिक पदार्थ, लोहे तथा पीतल की बनी वस्तुओं का निर्यात होता है। लिवरपूल के पृष्ठप्रदेश में केवल दक्षिणी लंकाशायर ही नहीं बल्कि यार्कशायर, स्टफोर्डशायर और चेशायर भी शामिल हैं। ग्रेट ब्रिटेन के एक-तिहाई से भी अधिक यात्री लिवरपूल से आते-जाते हैं। यहाँ पर आटा पीसने, चीनी साफ करने, रासायनिक पदार्थ बनाने और साबुन तैयार करने के कारखाने है। यहाँ हवाई अड्डा भी है।



चित्र ३९—ग्लासगो का पोताश्रम व बन्दरगाह

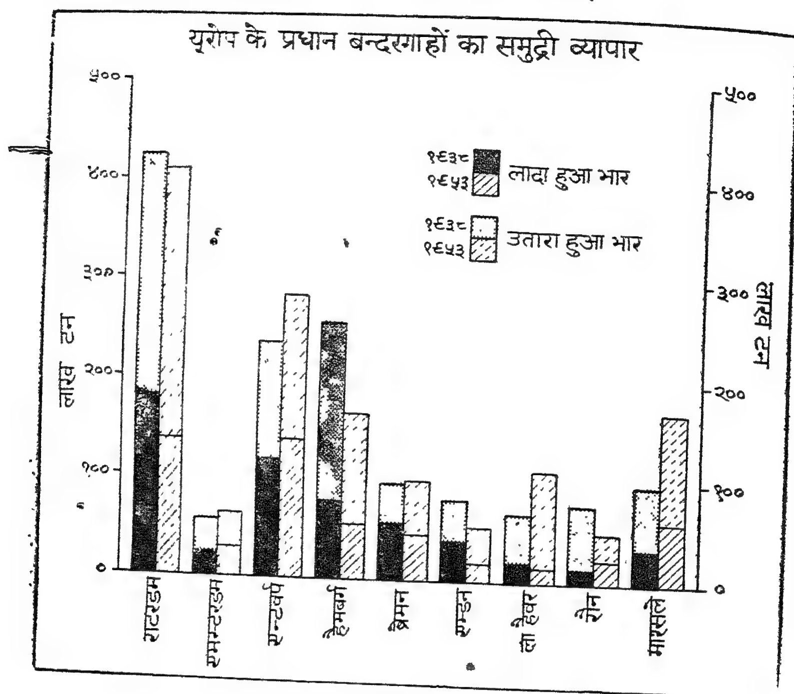
कारडिफ—कोयले के व्यापार का यह प्रमुख बन्दरगाह है और इस दृष्टि से यह न केवल ग्रेट ब्रिटेन का बल्कि संसार का महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है। कोयले के अतिरिक्त इमारती लकड़ी, अनाज और कच्चे लोहे का व्यापार भी होता है। इस बन्दरगाह के करीब घनी संख्या वाले क्षेत्रों में भोजन की वस्तुओं की भी आवश्यकता रहती है। इस बन्दरगाह के क्षेत्र में भी लोहे व इस्पात के प्रमुख कारखाने हैं। भिन्न-भिन्न कारखानों से दूरस्थ प्रदेशों में कोयले की माँग में कमी हो जाने के कारण कुछ दिनों से यहाँ की सम्पन्नता को बड़ा धक्का लगा है। एक तो जहाजों तथा इंजनों में कोयले के स्थान पर तेल का प्रयोग होने लगा है। दूसरे कुछ देशों में जल-विद्युत् का विकास हो गया है। इन्हीं कारणों से कारडिफ के कोयला निर्यात व्यापार को बड़ी हानि हुई है।

मैनचैस्टर—यह मर्सी की सहायक इरवैल (Irwell) नदी पर स्थित है। नहर द्वारा इसका सम्बन्ध लिवरपूल से भी है। ग्रेट ब्रिटेन में इसका पाँचवाँ स्थान है। केन्द्रीय स्थिति के कारण यह सूती वस्त्र निर्यात का केन्द्र वन गया है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लंकाशायर के ९० प्रतिशत तकुवे (Spindles) मैनचेस्टर से १७ मील की परिधि के भीतर स्थित हैं।

हैम्बर्ग—जर्मनी का सर्वप्रथम और यूरोप का एक प्रधान बन्दरगाह है। समुद्र से ७० मील दूर ऐल्ब नदी पर स्थित है। ड्रामों की सहायता से ऐल्ब नदी के मुहाने को गहरा कर दिया गया है। रेल व जलमार्ग के द्वारा यह जर्मनी के मैदानों से मिला हुआ है और इसी कारण यह जर्मनी के व्यापार का केन्द्र वन गया है। यह भी पुनर्निर्यात केन्द्र है और गोदाम बन्दरगाह है। यहाँ पर कहवा, कोको, चीनी, कोयला, रुई, ऊन और मिल के बने हुए सामान केवल जर्मनी के लिए ही नहीं बल्कि स्कैंडिनेविया और बाल्टिक राज्यों के लिए भी आयात किए जाते हैं। यहाँ से बना

हुआ सामान, नमक, चीनी, पशु, डेरी की वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से यह बन्दरगाह राटरडम और एंटवर्प की टक्कर का है।

ऐम्सवेसर और हंसा नहरों के द्वारा इसका सम्बन्ध रूर की घाटी से हो गया है, इसलिए एंटवर्प और राटरडम से होने वाला बहुत-सा व्यापार अब हैम्बर्ग द्वारा ही होने लगा है। कुक्सहैवन हम्बर्ग का बाहरी बन्दरगाह है।



चित्र ४०

राटरडम—राइन की सहायक न्यूमास नदी पर बसा हुआ है और न्यूवाटरवे नहर द्वारा यह समुद्र से मिला हुआ है। इस बन्दरगाह पर जहाजों से माल उतारा-चढ़ाया जाता है और राइन नदी की शाखाओं तथा भीतरी जल-मार्गों द्वारा वेस्टफेलिया (Westphalia) की व्यवसायिक मिलों को तथा जर्मनी, हालैंड और बेल्जियम के भीतरी शहरों को माल भेज दिया जाता है। यद्यपि राइन नदी का स्वाभाविक द्वार राटरडम ही है परन्तु जर्मनी ने रूर प्रदेश के व्यापार को हंसा नहर द्वारा हैम्बर्ग की ओर फेर दिया है।

एन्टवर्प—बेल्जियम में शैल्ट नदी पर स्थित संसार का एक प्रमुख बन्दरगाह है। यह एक पुनर्निर्यात केन्द्र भी है। इसके पृष्ठ-प्रदेश में बेल्जियम, पूर्वी फ्रांस, राइन की घाटी और रूर का कोयला क्षेत्र भी शामिल है। इस बन्दरगाह पर अधिकतर लाइनर या बोझा ढोने वाले जहाज ही ठहरते हैं। यह राटरडम और

हैम्बर्ग की टक्कर का है और सन् १९४७ में यूरोपीय महायुद्ध के समुद्री बन्दरगाहों में इसका स्थान सर्वप्रथम था।

मार्सेल्स—फ्रांस का सबसे प्रधान बन्दरगाह और द्वितीय श्रेणी का नगर यह रोन नदी पर बसा है और यूरोप के सुदूर पूर्व से व्यापार का मुख्य केन्द्र है। यह रोन नदी के मुहाने से ३० मील पूर्व में बसा है। रोन की घाटी के मुँह पर लियोन्स की खाड़ी में इसकी स्थिति बड़ी केन्द्रीय है और स्वेज नहर के खुल जाने से इसका महत्त्व और भी बढ़ गया है। एक नाव चलाने योग्य नहर द्वारा इसको रोन से मिला दिया गया है। यहाँ पर गेंहूँ, तिलहन, चीनी, कहवा, खालें, रेशम, मसाले और पूर्वीय देशों की अन्य वस्तुएँ आयात की जाती हैं। तेल को साफ करने और साबुन बनाने के कई कारखाने भी हैं।

उत्तरी अमरीका के बन्दरगाह

उत्तरी अमरीका के प्रमुख बन्दरगाह मांट्रियल, न्यूयार्क, बोस्टन, हैलिफेक्स, न्यूआरलियन्स, मोवाइल, गैलवेस्टन, सेन फ्रांसिस्को, ओकलैंड, सियाटिल, बैनकुवर और पोर्टलैंड हैं। इनमें से प्रथम सात तो अटलांटिक सागर तट पर हैं और अन्य पाँच प्रशान्त महासागर तट पर। प्रशान्त महासागर तट के बन्दरगाहों की अपेक्षा अटलांटिक महासागर तट के बन्दरगाह अधिक उपयोगी व महत्त्वपूर्ण हैं। इसका कारण यह है कि उनका पृष्ठ प्रदेश विस्तृत व औद्योगिक दृष्टिकोण से विशेष उन्नत है।

बाल्टीमोर—चैसापीक खाड़ी पर स्थित यह एक बड़ा बन्दरगाह व वितरण केन्द्र है। सरल व सस्ते जल-मार्गों द्वारा यह मध्य अपलेचियन प्रदेश से सम्बन्धित है। यहाँ तम्बाकू, लोहा व इस्पात का सामान तथा रासायनिक खाद बनाने के कारखाने हैं और फलों को डिब्बों में भरने का धंधा भी विशेष उन्नत है। दक्षिण पूर्वी संयुक्त राष्ट्र में यह सबसे बड़ा शहर है और ८००,००० से अधिक लोग यहाँ रहते हैं।

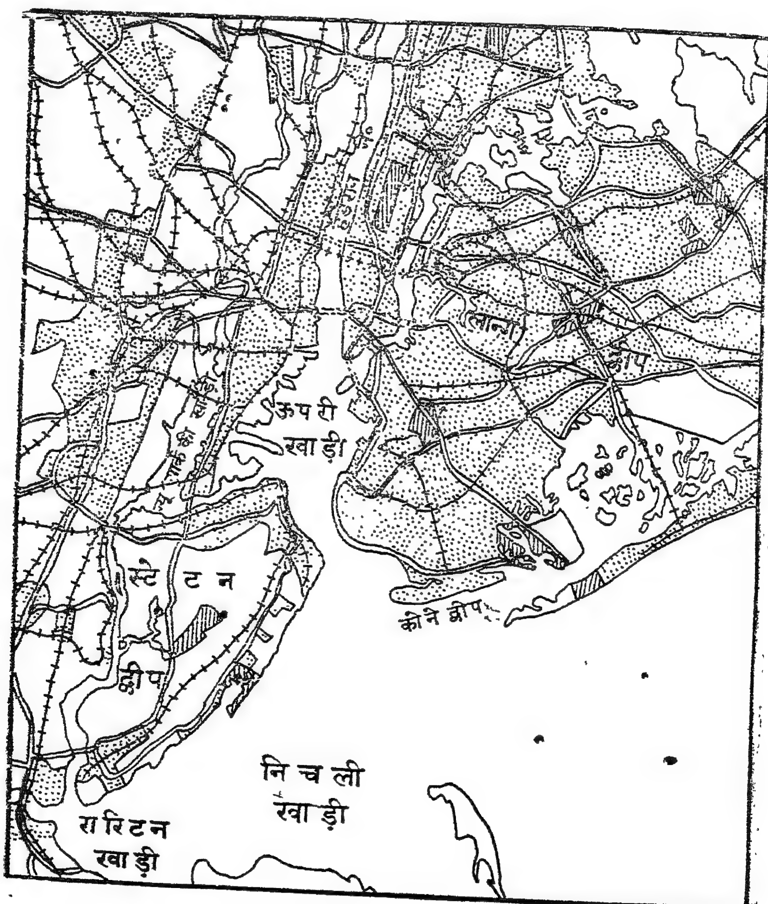


चित्र ४१—बोस्टन का पोताश्रय एक सुरक्षित खाड़ी में है

बोस्टन—न्यू इंग्लैड के विशाल औद्योगिक क्षेत्र के व्यापार का यही द्वार है। इसका पोताश्रय सुरक्षित खाड़ी पर बसा है। अटलांटिक महासागर के व्यापारिक मार्गों के दृष्टि-

कोण से इसकी स्थिति बड़ी अच्छी है। रेल द्वारा यह पोर्टलैंड, न्यूब्रंसविक, मांट्रियल और न्यूयार्क से मिला हुआ है।

यद्यपि न्यूयार्क के बाद बोस्टन दूसरा महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है और यूरोप के देशों के लिए निकटतम बन्दरगाह है, फिर भी इसका मुख्य महत्व इसके उद्योग-धंधों के कारण है न कि व्यापार के कारण। यहाँ की आबादी घनी है और इसका पृष्ठ-प्रदेश धनी है। यह बन्दरगाह वर्ष भर बराबर खुला रहता है। इसका तटीय व्यापार बहुत अधिक है। आस-पास के प्रदेश के वास्ते चमड़ा, खालें, रुई व ऊन का आयात होता है और चीनी, कपड़े, कागज, जूते, लोहा व इस्पात यहाँ की मुख्य औद्योगिक उपज हैं।



चित्र ४२—न्यूयार्क का बन्दरगाह व पोताश्रय

मांट्रियल ओटावा और सेंट लोरेन्स नदियों के संगम पर बसा हुआ है और समुद्री जहाज यहाँ तक आ-जा सकते हैं। यह कनाडा का सबसे महत्वपूर्ण बन्दर-

गाह है और न्यूयार्क की अपेक्षा लिवरपूल से ३०० मील पास है। विस्तार तथा सामान के दृष्टिकोण से यह बहुत बढ़िया बन्दरगाह है परन्तु इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि यह जाड़ों में जम जाता है। यह कनाड़ा का सबसे बड़ा नगर है और इसकी आबादी ८००,००० से भी अधिक है।

न्यूआरलियन्स—यह बन्दरगाह मेक्सिको की खाड़ी से १० मील अन्दर को मिसीसीपी नदी के मुहाने पर बसा हुआ है। संयुक्त राष्ट्र के कपास क्षेत्र का यह सबसे बड़ा शहर व बन्दरगाह है। मिसौरी-मिसीसीपी की घनी तलैटी ही इसका पृष्ठ-प्रदेश है। पहले फ़र (रोयेंदार बाल) के लिये यह बड़ा महत्त्वपूर्ण था परन्तु अब यहाँ से उत्तरी-पश्चिमी यूरोप को कपास, साफ किया हुआ पेट्रोल और और गेंहूं निर्यात किया जाता है। पशु, लकड़ी और मक्का भी बाहर भेजे जाते हैं। परन्तु फिर भी बोस्टन या न्यूयार्क की अपेक्षा इसकी स्थिति कम अच्छी है विशेषकर यूरोप के साथ व्यापार के दृष्टिकोण से।

न्यूयार्क—अमरीका का सर्वप्रधान व्यापारिक बन्दरगाह है। संयुक्त राष्ट्र का आधा वैदेशिक व्यापार इसीके द्वारा होता है। तटीय व्यापार भी यहाँ सबसे अधिक होता है। यहाँ पर भारी वस्तुओं को उतारने, चढ़ाने व रखने की विशेष सुविधाएँ हैं। इसीलिए गेंहूँ, कोयला और इमारती लकड़ी का सबसे अधिक व्यापार इसी बन्दरगाह द्वारा होता है। इसका पोताश्रय आदर्श है और रेल व नहरों द्वारा यह अपने पृष्ठ-प्रदेश से सम्बन्धित है।

उत्तरी अमरीका के प्रशान्त महासागर स्थित प्रमुख बन्दरगाहों को प्रायः सभी सुविधाएँ हैं पर कुछ दोष भी है। (१) इनके पृष्ठ-प्रदेश छोटे तथा उनमें आबादी कम है, (२) इन तटीय प्रदेशों में औद्योगिक विकास की कमी है, (३) लम्बी दूरी तथा कठिन पहाड़ी मार्गों के कारण ये बन्दरगाह महाद्वीप के भीतरी भागों से अलग हैं।

संयुक्त राष्ट्र के वैदेशिक व्यापर में भिन्न-भिन्न बन्दरगाहों का भाग

(१९३९)

आयात		निर्यात	
न्यूयार्क	३४ प्रतिशत	न्यूयार्क	३४ प्रतिशत
गालपेस्टन	१३ प्रतिशत	बोस्टन	६ प्रतिशत
न्यूआरलियन्स	७ प्रतिशत	फिलेडेलफिया	९ प्रतिशत
सेन फ्रांसिस्को	५ प्रतिशत	न्यूआरलियन्स	६ प्रतिशत

सैन फ्रांसिस्को—प्रशान्त महासागर तट पर स बसे महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है। गोल्डन गेट के दक्षिण में यह एक पर्वतीय प्रायद्वीप पर स्थित है। रेलों तथा नावों द्वारा इसका सम्बन्ध ओकलैंड से भी है। यहाँ पर अनाज, तेल, फल तथा लकड़ी का व्यापार होता है। पूर्व के देशों से चाय, रेशम और चीनी का आयात भी यहीं होता है।

दक्षिणी अमरीका के बन्दरगाह



चित्र ४३—सेन फ्रांसिस्को का पोताश्रय प्राकृतिक तथा आदर्श है। इसका प्रवेश-द्वार गोल्डन गेट है।

यद्यपि यूरोप से इसका क्षेत्रफल दुगना है परन्तु इसके बन्दरगाह बहुत थोड़े हैं। अटलांटिक महासागर के तटीय बन्दरगाहों से व्यापार अधिक होता है। उन बन्दरगाहों के पृष्ठ-प्रदेश भी अधिक विस्तृत हैं। प्रशान्त महासागर के तट के बिल्कुल करीब एंडीज पर्वत श्रेणी फैली हुई है। इसीलिए प्रशान्त महासगर के तटीय बन्दरगाहों का व्यापार सीमित है। दक्षिणी अमरीका के प्रसिद्ध बन्दरगाह रियो डि जैनिरो, ब्यूनस आयर्स, वालपरेसो, मांटीवीडियो, बाहिया, गयाकिल तथा बाहिया ब्लांका हैं।

रियो डि जैनिरो—ब्राजील की राजधानी तथा प्रमुख बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय सुरक्षित एवं विस्तृत है। पृष्ठ-प्रदेश विस्तृत है और उसमें सओपोलो, मिनास मिरायस, पनामा यथा ट्रेवेसिया सम्मिलित हैं। रेल द्वारा यह इन सब भागों से जुड़ा हुआ है। सओपोलो, डवरावा सेंटरे मेरिया वेलो, हौरिजेन्टो और विक्टोरिया से इसका सम्पर्क है।

ब्युनस आयर्स—अर्जेन्टाइना की राजधानी है और प्लाटा नदी पर बसा हुआ है। यह एक प्रमुख बन्दरगाह भी है। रियो डि प्लाटा एक विशाल खुले मुहाने की नदी है और इसकी चौड़ाई १३७ मील है। नदी कम गहरी है, इसलिए झामों से बराबर गहरा किया जाता है। हाल में यहाँ पर अच्छे डाँक बनवा दिये गये हैं। अर्जेण्टाइना की उपज—गेहूँ, मक्का, तिलहन इस बन्दरगाह से बाहर भेजी जाती हैं। यह रेलों का भी एक विशाल केन्द्र है।

वालपरेसो—प्रशान्त तट पर सबसे महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है। यह एक अच्छी खाड़ी पर बसा है और इसकी स्थिति सेन फ्राँसिस्को की तरह है। चिली के प्रमुख खनिज प्रदेश इसके पृष्ठ-प्रदेश में आते हैं। इसलिए शोरे की खाद, ताँबा, चाँदी और सोने का निर्यात होता है। रेलों द्वारा यह ब्यूनस आयर्स से भी मिला हुआ है। वालपरेसो से ४३ मील दक्षिण में सेंट अटोनिया स्थान पर एक और पोताश्रय बना दिया गया है।

मांटीबिडियो—युरुगुवे की राजधानी व प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय विशाल है पर रेत जमने के कारण बड़े-बड़े जहाजों को किनारे से दो-

तीन मील दूर ठहरना पड़ता है। वहाँ से नावों द्वारा सामान किनारे पर लाया जाता है।

गयाकिल—इक्वेडोर का प्रमुख बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय आदर्श है, परन्तु जलवायु अस्वास्थ्यकर होने से इसका पूर्ण विकास नहीं हो पाया है। फिर भी यहाँ से हाथी दाँत और कहवा का काफी निर्यात होता है।

एशिया के बदरगाह

कराँची—पाकिस्तान का प्रमुख बन्दरगाह है और सिंधु नदी के मुहाने के समीप स्थित है। अभी तक यह औद्योगिक केन्द्र नहीं वन पाया है। यह पश्चिमी पाकिस्तान के उपज की मंडी और निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ से गेहूँ, कपास, चावल, अनाज, तिलहन, ऊन, खाल व हड्डियाँ बाहर भेजी जाती हैं। ऊनी कपड़े, चीनी, मशीनें, लोहा और इस्पात, खनिज तेल, कोयला और पत्थर का कोयला बाहर से आते हैं।

बम्बई—अपनी श्रेष्ठ भौगोलिक स्थिति और समृद्ध प्राकृतिक पोताश्रय के कारण इतना प्रसिद्ध है। यह बम्बई प्रांत में एक द्वीप पर स्थित है। इसका पोताश्रय सुरक्षित तथा विशाल है। इसका विस्तार ७४ वर्ग मील है। यह वर्ष भर बराबर खुला रहता है और माल लादने-उतारने का काम चलता रहता है। इसके पोताश्रय में पहुँचने का मार्ग-दक्षिण-पश्चिम से है। बम्बई के धुर दक्षिण में कोलाबा प्रायद्वीप एक पतली पट्टी के रूप में फैला है और मानसूनी पवनों से इसकी रक्षा करता है। इसका पृष्ठ-प्रदेश बहुत विस्तृत है और दक्षिण व मध्य भारत तथा पूर्वी पंजाब इसी के भाग हैं। मध्य तथा पश्चिम रेलों और कई बड़ी सड़कों द्वारा यह अपने पृष्ठ-प्रदेश के विभिन्न भागों से मिला हुआ है। हाँ, कलकत्ते के समान नाव चलाने योग्य कोई नदी या नहर इसे भीतरी भागों से नहीं मिलाती है।

दक्षिण तथा मध्य भारत की कपास यहीं से बाहर भेजी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ से चमड़ा, अनाज, बीज, तिलहन और मैंगनीज बाहर भेजे जाते हैं। मशीनें, तेल, चीनी, लकड़ी, गोश्त आदि वस्तुएँ यहाँ पर आयात की जाती हैं। कपड़े बनाने के उद्योग-धंधे का यह एक केन्द्र भी है। इसके अलावा यहाँ अन्य बहुत-से उद्योग-धंधे भी हैं जिनसे बम्बई का औद्योगिक महत्त्व भी स्पष्ट है।

कोचीन—बम्बई तथा कोलम्बो के मध्य यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बम्बई की अपेक्षा यह अदन से ३०० मील पास है। तट के समान्तर विपरीत जल-प्रवाह की व्यवस्था होने से यातायात के साधन सस्ते हैं और कोचीन तथा ट्रावनकोर राज्यों के बहुत से स्थानों में यह जलमार्गों द्वारा जुड़ा हुआ है। अतएव स्पष्ट है कि जब इस प्राकृतिक बन्दरगाह का पूर्ण विकास हो जायेगा इसका व्यापार अवश्य चमक उठेगा।

मद्रास—मद्रास राज्य का प्रमुख बन्दरगाह है। यह कृत्रिम बन्दरगाह है। कृत्रिम पोताश्रय बनने से पहले मद्रास जहाजों के लिये एक खुला लंगर स्थान था। और इनके किनारों पर लहरें टक्कर मारा करती थीं। इसका पृष्ठ-प्रदेश पठारी व

कम उपजाऊ है, परन्तु उत्तरी भारत व दक्षिणी भारत के प्रायः सभी भागों से यह रेलों द्वारा जुड़ा हुआ है। यहाँ से मुख्य निर्यात वस्तुएँ मूँगफली, तम्बाकू, कच्चे खनिज, खाद, कहवा और प्याज इत्यादि हैं। कोयला, तेल, खाद, कागज, लकड़ी, चीनी, धातु, व शीशे की वस्तुएँ, रासायनिक पदार्थ, मशीनें और मोटर-गाड़ियाँ बाहर से यहाँ मँगाई जाती हैं।

कलकत्ता—भारत का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है और यद्यपि समुद्र से १२० मील दूर हुगली पर बसा हुआ है फिर भी व्यापार का एक बड़ा केन्द्र है। इसका पृष्ठ-प्रदेश बड़ा ही विस्तृत है और बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, आसाम और उडीसा सम्मिलित हैं। पूर्वी पंजाब और दक्षिणी भारत के उत्तरी भागों का व्यापार भी इसी द्वारा होता हैं। यहाँ से बंगाल, आसाम का जूट, चाय और कोयला, बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के गेंहूँ, चावल तथा तिलहन का व्यापार होता है। यहाँ की मुख्य आयात वस्तुएँ कटपीस, धातुएँ, खनिज पदार्थ, तेल, मशीनें, लोहे का सामान, कागज, मोटर-गाड़ियाँ और शराब आदि हैं। जूट, चाय, चावल, दालें, खालें, लाख, कच्चा लोहा, अभ्रक, मेंगनीज आदि वस्तुएँ निर्यात की जाती हैं।

यहाँ के पोताश्रय में अनेक सुविधायें हैं परन्तु हुगली नदी में जहाज चलाना मुश्किल है। कलकत्ता से ४० मील तक तो जहाजों का चलाना और भी भयानक है। बालूदार किनारे व दीवारें सदा ही गिरती रहती हैं। अतः बराबर ड्रामों द्वारा रेत निकालकर नदी को गहरा करना पड़ता है।

अक्याब—बर्मा के पश्चिमी तट पर केवल यही एक बन्दरगाह है। यह सुरक्षित खाड़ी में बसा हुआ है, परन्तु बड़ा ही महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है। इसका पृष्ठ-प्रदेश न तो बहुत उपजाऊ है और न विस्तृत ही है। इसके अतिरिक्त भीतरी भागों से रेल द्वारा सम्बन्ध नहीं हैं।

रंगून—समुद्र से २४ मील दूर रंगून नदी पर स्थिति यह बर्मा का मुख्य बन्दरगाह है। यहाँ से मुख्य निर्यात वस्तु इमारती लकड़ी है। इसके अतिरिक्त चावल और मिट्टी का तेल भी बाहर भेजा जाता है।

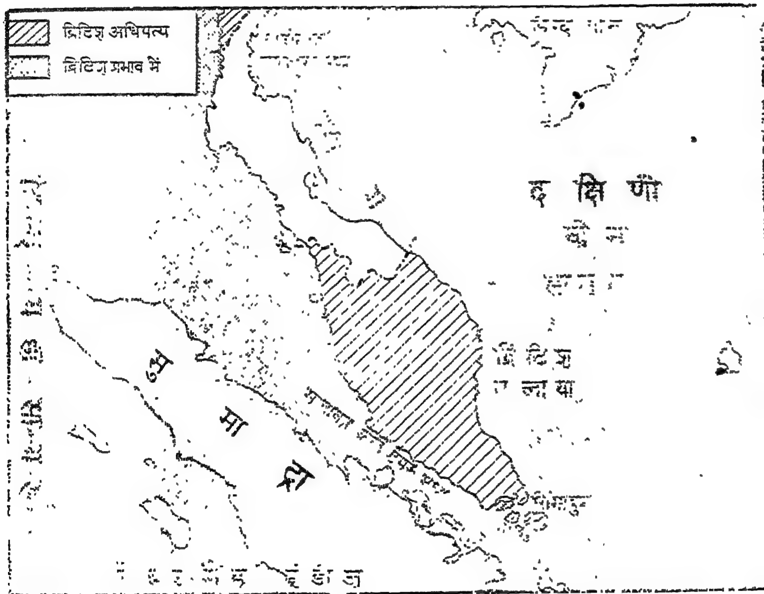
सिंगापुर—स्ट्रेट सैटिलमैंट के दक्षिण में सिंगापुर द्वीप पर बसा है। यह द्वीप २७ मील लम्बा तथा १४ मील चौड़ा है। मलाया की खाड़ी इसे सुमात्रा से अलग करती है। इसकी आबादी ५०,००० है। समस्त मलाया द्वीप समूह के लिए यह प्रमुख पुनर्निर्यात केन्द्र है। यहाँ से टीन, रबर, ताँबा, अनन्नास का निर्यात होता है। मिट्टी का तेल, तम्बाकू, चीनी, लोहा, इस्पात तथा यंत्रों का आयात किया जाता है।

हांगकांग—केन्टन नदी पर स्थित यह एक द्वीप है। इस नदी पर ६०० मील तक नाव व जहाज चलाए जा सकते हैं। इसलिए इसके द्वारा चीन की उपज स्टीमर जहाजों द्वारा हांगकांग तक लाई जाती है। और फिर वहाँ से दूसरे बड़े जहाजों द्वारा बाहर भेजी जाती है। यह एक पुनर्निर्यात केन्द्र भी है। यहाँ की मुख्य व्यापा-

रिक वस्तु चावल है जो भीतरी भागों में वितरण और अन्य देशों को पुनर्निर्यात के लिए यहाँ लाई जाती है। चीनी, कपास, चाय, कोयला, आटा, तेल और अफीम यहाँ के व्यापार की अन्य वस्तुएँ हैं। हांगकांग का पोताश्रय विस्तृत और बड़ा है। इसमें केवल एक दोष है कि समुद्री तूफान के समय भयंकर तरंगें उठने लगती हैं और लंगर डाले हुए जहाज अरक्षित रह जाते हैं।

व्यापारिक केन्द्रों की उत्पत्ति और विकास

व्यापारिक केन्द्र वे स्थान होते हैं जहाँ व्यापार होता है और जहाँ व्यापारिक वस्तुओं का संग्रह, वितरण तथा यान-परिवर्तन किया जाता है।



चित्र ४४—सिंगापुर

नगरों अथवा व्यापारिक केन्द्रों की उत्पत्ति अपने आप ही संयोगवश नहीं होती है। घरों अथवा भवनों के अव्यवस्थित संग्रह को भी नगर कह सकते हैं। श्रम-विभाजन, भौगोलिक नियन्त्रण और मनुष्य की परिस्थितियों के परिणाम व प्रभाव के फलस्वरूप ही उनकी उत्पत्ति व वृद्धि होती है। अतएव सच है कि नगरों की उत्पत्ति केवल स्थान-विस्तार से ही नहीं होती है बल्कि समय-विस्तार में मनुष्य व प्रकृति की नाटक रूप क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं से नगरों का प्रादुर्भाव व वृद्धि होती है।

प्राचीनकाल में वर्तमान समय की अपेक्षा वाणिज्य कम होता था। उस समय मनुष्यों के बीच क्रय-विक्रय व वस्तु-विनिमय किसी एक सामान्य केन्द्र स्थान पर हुआ करता था। ऐसे ही सामान्य मिलन-स्थानों की आवश्यकता से व्यापारिक केन्द्रों का विकास हुआ। वस्तुओं के क्रय-विक्रय व विनिमय से पहले वस्तु व्यापारिक

केन्द्रों को भेजी जाती हैं। इसीलिए यातायात साधनों की सुविधा होना व्यापारिक केन्द्रों के विकास व उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। यातायात के साधनों का सस्ता होना भी बहुत जरूरी है।

नगरों की उत्पत्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ

१. धर्म में नगरों की उत्पत्ति व विकास की महान् शक्ति सन्निहित होती है। बहुत-से नगर धार्मिक महत्त्व तथा तीर्थ-स्थानों के कारण बस जाते हैं। इस तरह के नगर या तो मैदानों में या पहाड़ों पर रेगिस्तानों में बस जाते हैं। ताकि वहाँ जाने पर लोग दुनिया से अलग अनुभव करें। रोम, बनारस, मथुरा, हरिद्वार, लासा और बद्रीनाथ उसी प्रकार के नगर हैं। यातायात के साधनों की सुविधा के कारण प्रथम चार नगर प्रमुख व्यापारिक केन्द्र भी हो गए हैं, परन्तु लासा और बद्रीनाथ केवल तीर्थ-स्थान ही रह गए हैं।

२. स्वास्थ्य-वर्धक, पर्यटन व आमोद-प्रमोद के स्थान होने से बहुत-से नगर उत्पन्न हो जाते हैं जहाँ पर औद्योगिक केन्द्रों के खराब वातावरण से मुक्ति पाने के लिए लोग चले जाया करते हैं। मधुपुर, वाथ और रिवरी के नगर इसी प्रकार के केन्द्र हैं।

बहुत-से देशों के समुद्र-तटीय तथा पर्वतीय स्थान आनन्दप्रद होने के कारण अवकाश के दिनों में लोगों को आकर्षित करते हैं। गर्मी के मौसम में ये स्थान बड़े रमणीक हो जाते हैं और सहस्रों नर-नारी वहाँ का आनन्द उठाने के लिए जाते हैं।

३. खनिज केन्द्र—प्राकृतिक सम्पत्ति, विशेषकर बहुमूल्य धातुएँ और खनिज पदार्थ सदैव ही मनुष्यों को खानों के क्षेत्रों की ओर आकर्षित करते हैं, फलतः बहुत-से नगर उत्पन्न हो जाते हैं और उनके व्यापार की वृद्धि होने लगती है। बंगाल, बिहार के कोयला क्षेत्र के आस-पास ऐसे बहुत-से नगर उत्पन्न हो गए हैं। ऐसे स्थानों में जलवायु या अन्य दशाओं के प्रतिकूल होने पर भी वहाँ की खानों में सुरक्षित बहुमूल्य धातुओं तथा खनिज पदार्थों के कारण असंख्य मनुष्य बस जाते हैं और नए नगरों का प्रादुर्भाव हो जाता है जैसा कि आस्ट्रेलिया के गर्म मरुस्थल में हुआ है।

४. विनिमय केन्द्र—भिन्न-भिन्न वस्तुओं को उत्पन्न करने वाले दो प्रदेशों के मिलन-स्थान पर भी नगरों की उत्पत्ति हो जाती है। ऐसे स्थानों पर दोनों प्रदेशों के निवासियों को अपनी उपज की वस्तुओं के पारस्परिक विनिमय के लिए सामान्य मिलन-स्थान प्राप्त हो जाता है। आल्पस पर्वत श्रेणी की तलैटी में 'मिलान' इसका उत्तम उदाहरण है। यहाँ पर पर्वतीय व मैदानी उपज का विनिमय होता है।

५. प्रपात-नगर—जल-विद्युत उत्पादन की सुविधा वाले स्थानों पर भी अच्छे नगर बस जाते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमरीका में रिचमांड, सेंट पाल, वफैलो, मीनिया पोलिस इसी प्रकार के नगर हैं।

६. **वितरण व सहायक केन्द्र**—उन स्थानों पर भी जहाँ व्यापारिक वस्तुओं को अधिक परिमाण में संग्रह तथा वितरण करने की सुविधाएँ होती हैं, अच्छे नगर बस जाते हैं, इसीलिए संसार के सभी प्रमुख नगर, बन्दरगाह अथवा रेलों के केन्द्र हैं।

७. **राजधानियाँ**—राजधानियों की उत्पत्ति व विकास पर प्राकृतिक दशाओं की अपेक्षा ऐतिहासिक व राजनैतिक आन्दोलनों का अधिक प्रभाव पड़ता है। दिल्ली, वाशिंगटन, पेरिस आदि इसके उदाहरण हैं।

८. **सुरक्षा-सम्बन्धी स्थान**—स्थान-विशेष की स्थिति की व्यापारिक या सुरक्षा-सम्बन्धी विशेषताओं से भी नगरों का प्रादुर्भाव व विकास हो जाता है। पेशावर और इस्ताम्बुल इसी प्रकार के स्थान हैं।

९. **शिक्षा केन्द्र**—आधुनिक काल में महत्वपूर्ण शिक्षा-केन्द्र होने के कारण अनेक नगर उन्नति कर रहे हैं। आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज इसी प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं।

१०. प्रमुख जल अथवा थल मार्गों के सम्मिलन स्थान पर भी नगरों का जन्म तथा उत्थान हो जाता है। कोलम्बो और सिंगापुर इसी प्रकार का केन्द्रीय स्थिति के कारण विकसित हो गए हैं। अमरीका का सैंट लुइस इस प्रकार का नगर है। दो नदियों के संगम स्थान पर भी नगर बस जाते हैं और विभिन्न वस्तुओं के संग्रह व वितरण के केन्द्र हो जाते हैं।

११. **सैनिक शिविर**—गढ़, सैनिक रक्षा और नौसेना के आधार पर भी नगरों का जन्म हो जाता है। अदन, जिब्राल्टर इसी प्रकार के नगर हैं।

संसार में व्यापार केन्द्रों का वितरण बड़ा ही विषम है। समस्त संसार में एक लाख से अधिक आबादी वाले नगरों की संख्या ६०० से अधिक है। इनमें से ४० प्रतिशत से अधिक नगर यूरोप में ही हैं। अधिकांश नगर उत्तरी-पूर्वी संयुक्त-राष्ट्र, उत्तरी-पश्चिमी यूरोप तथा एशिया के प्रशान्त महासागर के तट पर बसे हैं। नगरों में रहने वाली जनता की संख्या के दृष्टिकोण से आस्ट्रेलिया सर्वप्रथम है। यहाँ के ४४ प्रतिशत मनुष्य नगरों में रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में २९ प्रतिशत; यूरोप में १९ प्रतिशत; दक्षिणी अमरीका में ११ प्रतिशत; एशिया में ५ प्रतिशत और अफ्रीका में २॥ प्रतिशत लोग नगरों में रहते हैं। इस विषम वितरण के निम्नलिखित कारण हैं—(१) प्राकृतिक साधनों का विषम वितरण, (२) विश्व की विभिन्न जलवायु, (३) विविध भौगोलिक बनावट और भू रचना (४) जल्दी प्रारम्भ की सुविधा, (५) मनुष्य की प्रतिभा और प्रयत्न।

प्रश्नावली

१. अच्छे बन्दरगाहों के लिए क्या परिस्थितियाँ आवश्यक होती हैं? मांट्रियल, फ्रीमैण्टल, शांघाई, ब्यूनस आयर्स और ट्रीस्ट का उदाहरण लेते हुए समझाइए।

२. निम्नलिखित बन्दरगाहों में से किन्हीं चार की स्थिति पर विचार

कीजिये और बताइए कि प्रत्येक का अपने देश के व्यापार और उद्योग में क्य स्थान है ? (अ) राटरडम, (ब) याकोहामा, (स) जीनोआ, (द) गैलवेस्टन (इ) ब्यूनस आयर्स ।

३. एक सफल नदी बन्दरगाह के विकास के लिये कौन-सी दशाएँ आवश्यव होती हैं ? कुछ प्रमुख उदाहरण भी दीजिये ।

४. बन्दरगाहों की पृष्ठभूमि से आप क्या समझते हैं ? संसार के विभिन्न भाग में स्थित कुछ बन्दरगाहों का उदाहरण लेकर समझाइये ।

५. निम्नलिखित में से किन्हीं चार की स्थिति बतलाते हुए महत्त्व के कार समझाइये ।—हारबिन, वारसा, कोलम्बो, मीनियापोलिस, शिकागो और मैनचेस्टर

६. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच की स्थिति बतलाइये और उन्नति व कारण समझाइये ।—ब्यूनस आयर्स, शिकागो, डैनिजग, डरहम, होबर्ट, से फ्रांसिस्को, सिडनी, वैन्कुवर और याकोहामा ।

७. निम्नलिखित में से किन्हीं ५ की स्थिति बतलाते हुए उनकी उन्नति व विकास के कारणों का निरूपण करिये ।—अल्कजेन्डरिया, डरबन, मारसेल्स, न्य आरलियन्स, शांघाई, सिडनी और बैनकुवर ।

८. व्यापार केन्द्रों के विकास व उन्नति के लिए किन भौगोलिक परि स्थितियों का होना आवश्यक है ?

९. "बन्दरगाह का महत्त्व उसके पृष्ठ-प्रदेश के विस्तार व उन्नति प निर्भर है ।" इस उक्ति पर अपने विचार प्रकट कीजिये ।

१०. समुद्री बन्दरगाहों की उत्पत्ति व विकास किन परिस्थितियों पर निर्भ रहता है ? भारतीय बन्दरगाहों का उदाहरण देते हुए उत्तर लिखिये ।

११. निम्नलिखित में से किन्हीं ५ पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिये—राटरडम याकोहामा, मारसेल्स, सिएटल, लिवरपूल, हैम्बर्ग, सिडनी और न्यूयार्क ।

१२. "पोताश्रय की रूपरेखा का बन्दरगाह के विकास पर बड़ा असर पड़त है, परन्तु साधारणतया केवल आदर्श पोताश्रय होने से महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह नहीं बन जाता", इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ।

१३. रेखाचित्रों की सहायता से निम्नलिखित स्थानों के महत्त्व को स्पष्ट करिये—हैम्बर्ग, न्यू ओर्लियन्स, सिंगापुर, कैण्टन ।

१४. किन भौगोलिक कारणों से निम्नलिखित नगरों की वृद्धि हुई है—पेरिस शंघाई, डैन्जिग, हैलीफैक्स ।

१५. पिट्सबर्ग, शिकागो, माण्ट्रियल और विनीपेग के विकास व महत्व के कारण समझाइये ।

१६. संयुक्त राष्ट्र अमरीका के गल्फ बन्दरगाहों की उत्पत्ति व महत्त्व के भौगोलिक कारण बतलाइए और एक रेखाचित्र खींचकर समझाइए ।

१७. "बहुधा प्राकृतिक भागों के कारण बड़े-बड़े शहर बस जाते हैं ।" इस कथन पर उत्तरी अमरीका के शहरों का उदाहरण देते हुए अपने विचार प्रगट

करिए।

१८. टोकियो, न्यूयार्क, पैरिस और लन्दन के विकास और उन्नति के भौगोलिक कारण क्या हैं? रेखाचित्र देकर समझाइए।

१९. बन्दरगाह के दृष्टिकोण से डैन्जिग के भौगोलिक लाभ व दोष क्या हैं? पोलैण्ड और जर्मनी के लिए इसका व्यापारिक महत्त्व क्या है? डैन्जिग की स्थिति को एक रेखाचित्र द्वारा समझाइये।

२०. हैवर और हैम्बर्ग तथा हल और लिवरपूल के भौगोलिक महत्त्व का तुलनात्मक विवेचन करिये।

अध्याय : : दस

यूरोप महाद्वीप

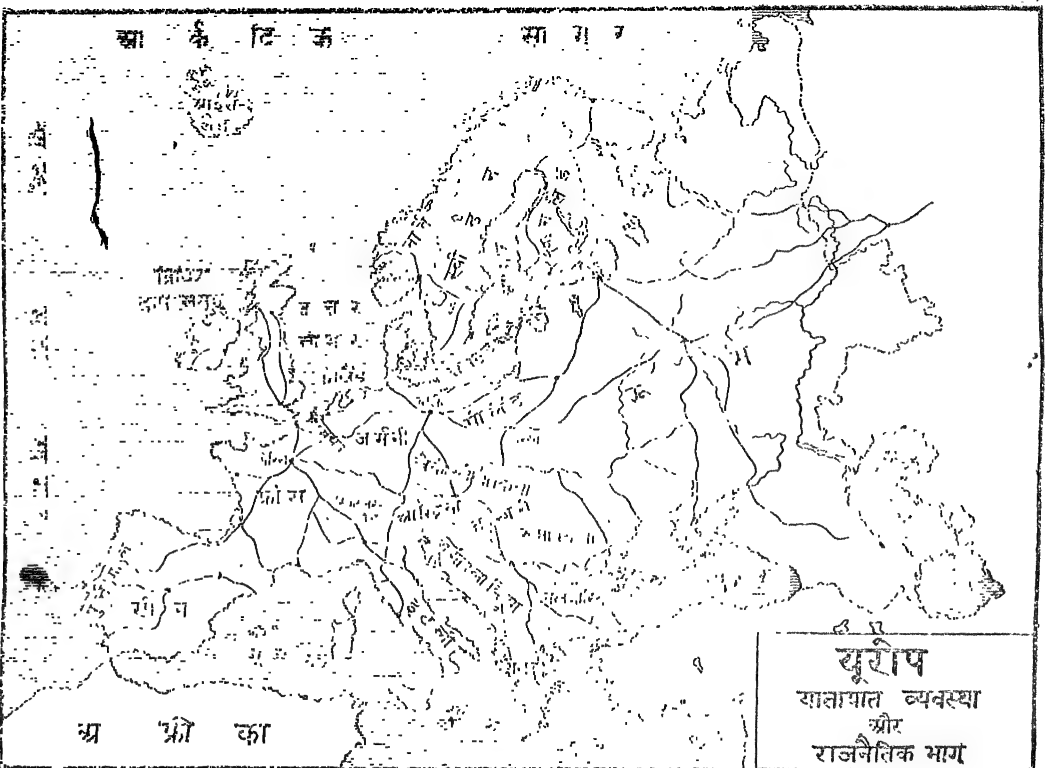
यूरोप एक छोटा-सा महाद्वीप है। वास्तव में आस्ट्रेलिया को छोड़कर यह महाद्वीपों में सबसे छोटा है। इसका संम्पूर्ण क्षेत्रफल ३७,६०,००० वर्गमील है। एशिया महाद्वीप इससे पाँच गुना बड़ा है। भौतिक दृष्टि से यूरोप का महाद्वीप एशिया का एक प्रायद्वीप मात्र है।

यूरोप की सभ्यता तथा व्यापार—यूरोप संसार भर में सबसे सभ्य प्रदेश है। आधुनिक काल में यहाँ के शिल्प-उद्योग तथा वाणिज्य-व्यवसाय उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच गए हैं। यूरोप की इस महत्ता में कुछ भौगोलिक कारणों ने विशेष सहयोग दिया है।

यूरोप की स्थिति—यूरोप की केन्द्रीय स्थित से उसका औद्योगिक व व्यापारिक महत्त्व बढ़ गया है। यूरोप को दुनिया के सब स्थानों से पहुँचा जा सकता है। जिब्राल्टर का जलडमरूमध्य इसे अफ्रीका महाद्वीप से अलग करता है और डार्डनल्स व वासफोरस के जलडमरूमध्य द्वारा यह एशिया महाद्वीप से अलग हैं। इन दोनों महाद्वीपों से यूरोप हमेशा अपने उद्योग-धंधों के लिए कच्चा माल प्राप्त करता रहा है। इस महाद्वीप के भोजन तथा कच्चे माल की खपत की मुख्य मंडियाँ भी इन्हीं दो महाद्वीपों में हैं। यूरोप के राष्ट्रों के राज्य विस्तार के लिए भी इन महाद्वीपों में पर्याप्त क्षेत्र हैं। अमरीका के दृष्टिकोण से भी इसकी स्थिति बड़ी ही अच्छी है।

समुद्रतट तथा जलवायु—क्षेत्रफल के विचार से इसका समुद्र-तट संसार में सबसे लम्बा है। बाल्टिक सागर, भूमध्यसागर तथा कालासागर महाद्वीप के भीतरी भागों में घुसे हुए हैं, जिनके कारण भारी वस्तुओं को समुद्र-मार्गों द्वारा स्थानान्तरित करने में अल्पतम व्यय होता है। ऊँचे अक्षांशों में स्थित होने के कारण इसकी जलवायु समशीतोष्ण है अर्थात् न अधिक शीत है न अधिक उष्ण ही। टुंड्रा तथा टैगा को छोड़कर यूरोप के सभी भागों में मनुष्य सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। इसकी जलवायु के कारण भी यहाँ के निवासियों की बड़ी उन्नति हुई है।

वन-सम्पत्ति—यूरोप के समस्त क्षेत्रफल के ३१ प्र० श० भाग पर बन फैले हुए हैं। प्रमुख वनों की मेखला स्कैंडिनेविया से यूराल पर्वत तक चली गई है। इस वन प्रदेश की सम्पत्ति का स्वीडन, फिनलैंड तथा सोवियत रूस ने पूरा-पूरा लाभ उठाया है। वनों की दूसरी महत्त्वपूर्ण पेटी का विस्तार दक्षिण जर्मनी के पठारों से यूगोस्लाविया तक फैला है। काष्ठ-सम्बन्धी स्थानीय उपभोग की अधिकता के कारण यूरोप से काष्ठ का यथेष्ट मात्रा में निर्यात नहीं होता।



चित्र ४५

खनिज सम्पत्ति की सुविधाएँ—कोयला—(समस्त संसार की लगभग आधी खनिज वस्तुओं का उत्पादन यूरोप में ही होता है। ग्रेट ब्रिटेन, फ्राँस, बेल्जियम, दक्षिणी हालैंड, जर्मनी, दक्षिणी रूस तथा उत्तरी स्पेन में कोयला क्षेत्र पाए जाते हैं।) नारवे, स्वीडन तथा फिनलैंड की प्राचीन रवेदार चट्टानों (Crystalline-rocks) तथा भूमध्यसागरीय कछार की अत्यन्त अस्त-व्यस्त चट्टानों में वस्तुतः कोयले का अभाव ही है। यूरोप में समस्त संसार का ५० प्र० श० कोयला प्राप्त होता है। यूरोप का अधिकतर कोयला ऐंथ्रेसाइट अथवा उत्तम बिटयूमिनस श्रेणी का है। (अधिकतर कोयला क्षेत्रों की स्थिति समुद्र-तट अथवा नदियों की उपत्यकाओं के समीप होने के कारण कोयले के स्थानान्तर करने में अल्पतम व्यय होता है।)

कोयले का उत्पादन

(लाख मीट्रिक टन में)

प्रदेश	१९३७	१,९५१
यूरोप (रूस को छोड़कर)	६,५३८	६,८४५
कनाडा और संयुक्त राष्ट्र	४,६२६	५,३६५
अफ्रीका	१७१	३०३
एशिया	१,१५७	१,२२०
दक्षिण अमरीका	४५	५६
मध्य पूर्व	२४	५१
रूस	१२८	२८४

लोहा तथा मिट्टी का तेल—(कच्चे लोहे में भी यूरोप का स्थान सर्वप्रथम है। खनिज लोहे के प्रधान क्षेत्र उत्तरी स्पेन, पूर्वी फ्रांस, उत्तरी तथा दक्षिणी स्वीडन तथा रूस में क्रिवोई-रौग, कुर्स्क तथा मैगनीटोगार्स्क (Magnitogorsk) हैं। खनिज तेल के विशाल क्षेत्र काकेशस, यूराल तथा रूमानिया में हैं। यूरोप में खनिज तेल की उपलब्धि समस्त संसार की १३·७ प्र० श० होती है। सीसा, जस्ता, प्लैटनिम, ताँबा, पोटाश तथा अल्यूमिनियम भी बड़े परिमाण में पाये जाते हैं,) परन्तु यूरोप में खनिज तेल, सीसा (१७ प्र० श०), राँगा (टिन) तथा मैगनीज आदि खनिज पदार्थों की अत्यन्त अल्पता है। इन खनिज पदार्थों का उपभोग समस्त संसार का ५० प्र० श० होता है परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यूरोप में खनिज तेल की अल्पता अथवा अभाव का उद्योगों के [illegible] अधिक प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि संसार भर में कहीं भी खनिज तेल शिल्प उद्योगों के लिए शक्ति का महान् साधन नहीं है। हाँ, युद्ध-सम्बन्धी आवश्यकताओं तथा यातायात के साधनों के दृष्टिकोण से खनिज तेल वास्तव में महत्वपूर्ण पदार्थ है। यूरोप में न्यूनाधिक परिमाण में चाँदी, सोना, राँगा (Tin) तथा निकिल भी पाए जाते हैं।

यूरोप के कृषि-क्षेत्र के लिए सर्वोत्तम साधन है—गेहूँ, जौ, जई, राई तथा सन की उपज अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा यूरोप में सबसे अधिक होती है, जैसा कि आगे का तालिका से प्रकट होता है:

	विश्वव्यापी उत्पादन (लाख क्विण्टल में)	यूरोप का उत्पादन
गेहूँ	१,३११०ं	६,४००
जौ	४,२६०	२,३३०
जई	६,८७०	४,१५०
राई	४,९२०	४,७००
आलू	२०,१८०	१८,४८०
चुकन्दर	७,८१०	६,८९०
सन	६०	६०

कृषिप्रधान भाग तथा उपज—कृषि प्रदेशों में भूमध्यसागरीय प्रदेश, उत्तर-पश्चिमी तथा मध्य यूरोप की समतल भूमियों तथा पूर्वी निम्न भूमियाँ भी सम्मिलित हैं। यहाँ पर उच्च स्तर की सयत्न खेती तथा वैज्ञानिक ढंगों द्वारा कृषि कार्य किया जाता है। प्रति एकड़ उपज भी अधिक ही होती है। यूरोप के लगभग ६५ प्र० श० निवासी खेती पर गुजर करते हैं अतः यूरोप को हम ग्राम्य-प्रधान महाद्वीप कह सकते हैं। यूरोप में साधारणतया संसार का आधा गेहूँ उत्पन्न होता है। डैन्यूब के वेसिन से दक्षिणी यूराल तक की एक चौड़ी पट्टी में गेहूं की खेती की जाती है। यूरोप में विश्वव्यापी उत्पादन को ६२ प्र० श० जई तथा १५ प्र० श० राई की उपज होती है। यहाँ पर आलू, चुकन्दर तथा जौ की उपज अन्य समस्त महाद्वीपों के योग से भी अधिक होती है। कृषि उपज का परिणाम इतना विशाल होते हुए भी सघन जन-संख्या तथा जीवन के उच्च स्तर के ढंग के कारण यूरोप के संसार के अन्य सभी भागों से भोजन-सम्बन्धी तथा कृषि सम्बन्धी अन्य वस्तुएँ मँगानी पड़ती हैं।

यूरोप की शिल्प-प्रधानता के कारण तथा शिल्प-प्रधान क्षेत्र—यूरोप संसार भर में सबसे अधिक शिल्प-प्रधान भूभाग है। यहाँ पर शिल्प-उद्योगों के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ १८ वीं शताब्दी से ही विद्यमान थीं, जिनके परिणाम-स्वरूप औद्योगिक क्रांति का श्रीगणेश यहीं से हुआ। वे अनुकूल परिस्थितियाँ ये थीं—सम्भावित अथवा शक्तिशाली वाजार को जुटाने के लिए यहाँ के निवासियों का उच्च स्तर, घरेलू उद्योग-धंधों से अनुभव द्वारा प्राप्त की हुई यहाँ के निवासियों की कला-कौशल में वृद्धि उन्नति, यंत्रों तथा यांत्रिक शक्ति की जननी यहाँ के निवासियों की आविष्कारक प्रतिभा तथा महाद्वीप में विशाल कोयला क्षेत्रों की विद्यमानता। आधुनिक काल में यूरोप के भारी तथा मौलिक उद्योग कोयला क्षेत्रों पर ही सीमित हैं। यूरोप के कोयला क्षेत्र सभी स्थानों में समान रूप से वितरित नहीं है। यहाँ के प्रमुख उद्योग क्षेत्र उस पट्टी पर स्थिति हैं जो कि महाद्वीप के मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई है। इस पट्टी मे ग्रेट ब्रिटेन, उत्तरी फ्रांस बेल्जियम, पश्चिमी तथा मध्य जर्मनी, चैकोस्लोवाकिया, दक्षिणी पोलैंड तथा रूस का मध्य भाग सम्मिलित हैं। रासायनिक पदार्थों, सीमेंट, सूती तथा लोहे का वस्तुओं

के दृष्टिकोण से तो यूरोप सर्वप्रधान है ही, परन्तु मोटर गाड़ियों, विद्युत सामग्री तथा धातु निर्मित वस्तुओं के उत्पादन में भी केवल संयुक्त राष्ट्र ही इससे बढ़-कर है।

यूरोप में आवागमन के साधन—गमनागमन तथा यातायात के साधनों में भी यहाँ पर उल्लेखनीय उन्नति हुई है। यूरोप के व्यापारिक पोत समूहों का टनभार समस्त संसार का ७० प्र० श० है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अब ग्रेट ब्रिटेन के पोतसमूहों की भार क्षमता तो घट रही है, परन्तु नारवे, इटली, फ्रांस तथा हालैंड के पोतों की क्षमता तीव्र गति से बढ़ रही है।

यूरोप में रेलमार्ग तथा हवाई मार्ग—यूरोप के रेलमार्गों की लम्बाई २,३०,४००० मील है अर्थात् प्रति १०,००० निवासियों पर ४·८ मील तथा प्रति ४० वर्ग मील पर ३·३ मील रेलमार्ग का औसत पड़ता है। भारतवर्ष में समस्त रेलमार्गों की लम्बाई ४०,००० मील से कुछ ही अधिक है (८,००० निवासियों पर १ मील तथा १०० वर्ग मील पर २ मील रेलमार्ग का औसत है) परन्तु यूरोप में रेलमार्गों की लम्बाई सबसे अधिक नहीं है। संयुक्त राष्ट्र तथा कनाडा की रेलों की लम्बाई २७०,२०० मील से भी अधिक है। हाँ, यूरोप में वायुमार्गों की प्रधानता अवश्य है। यहाँ से एशिया, अफ्रीका तथा आस्ट्रेलिया को नियमित रूप से वायुयान चलते हैं।

सामान्य दशा में यूरोप का व्यापार विश्व व्यापार का ५२ प्र० श० रहता है। यह व्यापार विश्वव्यापी जन-संख्या के केवल १९ प्र० श० मनुष्यों के हाथ में है तथा संसार के समस्त क्षेत्रफल के केवल ४ प्र० श० भाग पर ही सीमित है।

विश्वव्यापी विदेश व्यापार, जनसंख्या तथा क्षेत्र का प्रतिशत वितरण १९३९

प्रदेश	व्यापार प्र० श०	जनसंख्या प्र० श०	क्षेत्र प्र० श०
यूरोप (सोवियत रूस के अतिरिक्त)	५२	१९	४
एशिया (सोवियत रूस के अतिरिक्त)	१४	५३	२०
उत्तरी अमरीका	१५	७	१५
लेटिन अमरीका	९	५·५	१६
अफ्रीका	६	७	२३
आस्ट्रेलिया	३	०·५	६
सोवियत रूस	१	८	१६

यूरोप की जनसंख्या का वितरण—यूरोप की जनसंख्या ५० करोड़ से अधिक है। यह संख्या समस्त भूमंडल के एक चतुर्थांश से भी अधिक है। यहाँ की जन-संख्या का वितरण सर्वत्र एक समान नहीं है। आइसलैण्ड का पर्वतीय प्रदेश, स्टाक-लैंड के पर्वत, स्कैंडिनेविया के विराट् पर्वत, स्वीडन के नारलैंड, फिनलैंड का उत्तर-पूर्वी प्रदेश, उत्तरी शीत-वायु वाले वन प्रदेश तथा उत्तरी ध्रुवतटीय टुण्ड्रा प्रांत तो

निर्जनप्राय ही हैं । यूक्रेन, मोरविया, साइलेशिया, बोहिमिया, सैक्सनी, वेस्टफालिया, राइनलैंड, दक्षिणी हालैंड, बेल्जियम, उत्तरी फ्रांस तथा इंगलैंड में प्रति वर्ग मील पर २६० से भी अधिक व्यक्ति रहते हैं । ये घनी जनसंख्या वाले प्रदेश हैं ।

यूरोप के २० प्र० श० के लगभग निवासी (रूस तथा तुर्किस्तान के अतिरिक्त) नगरों में निवास करते हैं ।

सोवियत रूस (U. S. S. R)

सोवियत रूस का विस्तार तथा सीमाएँ—सोवियत रूस का विस्तार बाल्टिक सागर से प्रशान्त महासागर तक लगभग ६,००० मील है । इसमें पूर्वी यूरोप का सम्पूर्ण विशाल मैदान तथा उससे जुटे हुए एशिया के राज्य सम्मिलित हैं । यह प्रदेश समस्त यूरोप का दुगना है तथा समस्त भूमंडल के एक सप्तमांश पर फैला हुआ है । राजनैतिक इकाई के दृष्टिकोण से केवल ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का क्षेत्रफल ही इससे बढ़कर है । इसके उत्तर में उत्तरी ध्रुव सागर तथा पश्चिम में रूमानिया, पोलैंड, बाल्टिक सागर तथा फिनलैंड स्थित हैं । इसकी पूर्वी सीमा पर प्रशान्त महासागर तथा दक्षिणी सीमा पर अनेक पर्वत, पठार, मरुस्थल, अर्द्ध-मरुस्थल तथा आन्तरिक समुद्र स्थित हैं ।

सोवियत रूस में दो विषम क्षेत्र सम्मिलित हैं । छोटा क्षेत्र (समस्त का २५ प्र० श०) यूरोपीय रूस तथा दीर्घ क्षेत्र (७५ प्र० श०) एशियाई रूस का भाग है ।

सोवियत रूस का समुद्र-तट तथा बन्दरगाह—सोवियत रूस का समुद्र-तट सपाट तथा देश के विस्तार के विचार से बहुत कम है । ध्रुवीय वृत्त में स्थित होने के कारण उत्तरी तट तो जमा ही रहता है परन्तु शीत ऋतु में प्रशान्त महासागरीय तट पर भी नौका-संचालन का कार्य सम्पादन नहीं हो सकता । रूस की सम्पूर्ण तट-रेखा पर मुरमांस्क ही केवल एक ऐसा बंदरगाह है जो जमता नहीं । यह बंदरगाह धुर उत्तर-पश्चिम में स्थित होने के कारण उत्तरी आंध्र महासागरीय धारा (North Atlantic Drift) के प्रभाव से गर्म रहता है। कुछ वर्षों से इसका सम्बन्ध रेल द्वारा लेनिनग्राड से भी स्थापित हो गया है ।

धुर दक्षिण को छोड़कर लगभग सारे ही रूस में शीत ऋतु में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है । इसकी सीमा पर स्थित समुद्रों का यहाँ के तापक्रम तथा जलवृष्टि पर ~~अधिक प्रभाव~~ नहीं पड़ता । यहाँ पर जो कुछ जलवृष्टि होती है वह प्रायः गर्मियों में ही होती है ।

यनीसी नदी के पश्चिम में सम्पूर्ण प्रदेश का अधिकतर भाग समतल भूमि अथवा निम्न प्रदेश ही हैं । इन मैदानों की अधिकतम ऊँचाई १,००० फीट से कुछ ही अधिक है । यनीसी नदी के पूर्व स्थित प्रदेश अधिकतर उच्च भूमि अथवा पर्वतीय प्रदेश हैं ।

सोवियत रूस का क्रमिक विवरण तथा क्षेत्रफल—सोवियत रूस एक विशाल साम्यवादी राष्ट्र है । सन् १९१७ की बोलशेविक क्रान्ति से पूर्व रूस एकतंत्र राज्य

था। वर्तमान रूस में १६ राष्ट्र सम्मिलित हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—रूस, यूक्रेन, श्वेत रूस, अजरबेजान, आर्मीनिया, जार्जिया, तुर्किस्तान, उजबेकिस्तान, ताजीकिस्तान, कज्जाक, सिरजीनिया, करेला (फिनलैंड), मोल्डाविया, इस्टोनिया, लटेविया तथा लिथुनिया। सोवियत संघ के इन सदस्यों के अन्तर्गत बहुत-सी स्वायत्त इकाइयाँ भी सम्मिलित हैं। कुछ स्वायत्त गणतन्त्र हैं तो कुछ स्वायत्त प्रदेश और कुछ स्वायत्त जिले हैं। इनमें छोटी-छोटी जातियाँ निवास करती हैं। इन सब को मिलाकर सन् १९४० में सोवियत रूस का क्षेत्रफल ८३,४८,००० वर्गमील था। मार्च सन १९४० में फिनलैंड द्वारा दिये गये प्रदेश में करेला फिनिश नामक बारहवें सोवियत गणतन्त्र की स्थापना हुई। इसी वर्ष के अगस्त महीने में तेरहवें, चौदहवें, १५वें और १६वें गणतन्त्र का प्रादुर्भाव हुआ जो कि क्रमशः मोल्डाविया, इस्टोनिया, लटेविया और लिथुनिया हैं। सन् १९४५ में कर्जन रेखा से आगे पोलैंड का पूर्वी भाग भी सोवियत् रूस में मिला लिया गया। इस प्रकार ६९,८८६ वर्गमील क्षेत्रफल वाले पूर्वी पोलैंड का रूस में लय हो जाना द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त यूराप का सबसे बड़ा राज्य-परिवर्तन है। इसी वर्ष जापान की पराजय के बाद सखालीन का दक्षिणी आधा भाग और क्यूराइल द्वीपों को रूस में शामिल कर दिया।

सन् १९५१ में सोवियत रूस का विस्तार ८,४३६,००० वर्गमील था।

रूस की जातियाँ तथा जन-संख्या में वृद्धि—रूस में अनेक जातिसमूह हैं—महान् रूसी (५४ प्र. श.), यूक्रेनियन (१७ प्र. श.) श्वेत रूसी (३.११ प्र. श.), उजबेक (३ प्र. श.), तातारी (३ प्र. श.), कज्जाक (१.८३ प्र. श.), यहूदी (१.७३ प्र. श.), जार्जियन्स (१.३४ प्र. श.) तथा आर्मिनियन्स (१.२ प्र. श.) हैं। रूस की जनसंख्या में भी सदैव ही द्रुतगति से वृद्धि होती रहती है। १८५८ की ७,४०,००,००० जनसंख्या बढ़ते-बढ़ते सन् १९१२ में १७८,०००,००० हो गई। १९५४ में जनसंख्या २१,००,००,००० थी जो कि समस्त संसार की ९ प्र. श. है। जनसंख्या का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्र यूक्रेन है जहाँ रूस के २० प्र. श. से भी अधिक मनुष्य निवास करते हैं। यूरोपीय रूस में जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रति वर्ग मील २५ व्यक्ति है तथा एशियाई रूस में प्रति वर्गमील औसत २ व्यक्ति से भी कम है। करीब ४८ प्र. श. जनसंख्या ६ प्रतिशत भूखंड पर निवास करती है और ६५ प्रतिशत क्षेत्रफल में केवल ६ प्रतिशत जनसंख्या पाई जाती है। यद्यपि रूस में १ लाख से ऊपर जनसंख्या वाले नगरों की संख्या १५० से भी अधिक है फिर भी समस्त जनसंख्या का लगभग आधा भाग गाँवों में ही बसा हुआ है।

आर्थिक विकास की प्रगति

आर्थिक विकास सम्बंधी योजनाएँ तथा देश की कृषि और उद्योग-धंधों की उन्नति—१९१७ की क्रांति के पूर्व रूस उद्योग-व्यवसाय के दृष्टिकोण से अविकसित दशा में था। अब सोवियत सरकार ने यहाँ पर नवजीवन का संचार कर दिया है। रूसी राष्ट्रों के आर्थिक विकास में कुछ वर्षों में ही उल्लेखनीय उन्नति हो गई है।

१९२८-२९ में रूसी सरकार ने केवल कृषि-सम्बन्धी आर्थिक व्यवस्था को सुधारने के उद्देश्य से ही नहीं परन्तु भारी शिल्प उद्योगों को पुनः संगठित करने के लिए भी एक पंचवर्षीय योजना का निर्माण किया। सन् १९३३-३७ के लिए भी द्वितीय पंचवर्षीय योजना बनाई तथा कार्यान्वित की गई। इस योजना का उद्देश्य देश के उद्योग-धन्धों को शक्ति के साधनों तथा कच्चे माल की सुविधा वाले प्रदेशों में स्थानीकरण द्वारा पुनर्गठित करना तथा देश के भिन्न-भिन्न भागों की श्रमिक शक्ति का पूरा-पूरा लाभ उठाकर देश को औद्योगिक दृष्टिकोण से पूर्णतया आत्म-निर्भर बनाना था। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय रूस में तृतीय पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित हो रही थी जिसका उद्देश्य (१) प्रादेशिक आत्मनिर्भरता की वृद्धि (विशेष कर भोजन सामग्री, खाद की वस्तुओं, ईंटों तथा सीमेण्ट इत्यादि के दृष्टिकोण से) तथा (२) औद्योगिक केन्द्रों को अधिक पूर्व की ओर केन्द्रित करना था। १९४६-५० की चतुर्थ पंचवर्षीय योजना देश के युद्ध-ध्वस्त प्रदेशों की पुनः स्थापना के विशेष उद्देश्य को लेकर बनाई गई थी। १९४१-४४ में जर्मनों के द्वारा रूसी आर्थिक व्यवस्था को गम्भीर हानि उठानी पड़ी थी। रूस को अपने इस्पात तथा कोयले की आधी तथा कच्चे लोहे की दो-तिहाई उत्पादन-क्षमता से हाथ धोना पड़ा था। इसी प्रकार तेल उद्योग को कठोर धक्का लगा और कृषि को भी पर्याप्त हानि हुई। इसके अतिरिक्त बमबारी से भवनों तथा निवास-स्थानों का नाश होने के कारण ढाई करोड़ व्यक्ति गृहहीन हो गए थे। सोवियत सूचनाओं के अनुसार रूसी सामग्री को हानि यूरोप को समस्त सामग्री की आधी थी, जिसका मूल्य ६७ खरब ९० अरब (679 Billion) रूबल आँका जाता है। इस योजना का उद्देश्य रूसी कृषि तथा उद्योग-व्यवसायों को युद्ध-पूर्व के स्तर पर लाना ही नहीं परन्तु उससे भी अधिक आगे ले जाना था। इस योजना में रूस के कुछ भागों के विकास पर भी जोर दिया गया।

रूसी खेती का विस्तार—रूस ने खेती की उपज में भी यथेष्ट विस्तार कर दिया है। गेहूँ, चीनी, चुकन्दर, कपास तथा चावल की उत्पादनवृद्धि तथा समुचित प्रादेशिक वितरण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। गेहूँ उत्पादन में रूस अब विश्व भर में सबसे अग्रगण्य देश है। आज गेहूँ, कपास और कुछ अन्य व्यवसायिक फसलों का उत्पादन युद्ध पूर्व की अपेक्षा १० प्रतिशत तो अवश्य ही अधिक है परन्तु पशुओं की संख्या घरेलू आवश्यकता से कहीं कम है। भूसे की कमी के कारण बहुत-से पशु मर जाते हैं। इसलिए अब भूसा उगाने का प्रयत्न हो रहा है।

रूस में पशुओं की संख्या

(लाख में)

	१९२८	१९५३
भैंस	६६८	५६६
गाय	३३२	२४३
सूअर	२७७	२८५

भेड़-बकरी	११४६	१०९९
घोड़े	३६१	१५३

रूसी खेती के प्रकार—वर्तमान काल में रूसी खेती की दो रीतियाँ प्रचलित हैं, कोलखोजेज (अर्थात् विस्तृत सामूहिक क्षेत्र) तथा सोवखोजेज (अर्थात् विस्तृत सरकारी क्षेत्र) की रीतियाँ। कोलखोजेज प्रणाली के अनुसार कृषक लोग मिलकर सामूहिक रूप में सरकारी सहायता द्वारा कृषि करते हैं। सरकार उन्हें कृषि-संबंधी यंत्र, बीज तथा ट्रैक्टर इत्यादि की सहायता देती है। इस प्रकार रूस के लगभग ८५ प्र. श. कृषक सामूहिक क्षेत्रों पर काम करते हैं। प्रत्येक सामूहिक खेत पर साधारणतया ७५ कृषक परिवार काम करते हैं। प्रत्येक सदस्य कृषक को साल के १५० दिन तक सामूहिक खेतों पर काम करना पड़ता है और शेष दिनों में अपना खुद का काम। सोवखोजेज अथवा सरकारी क्षेत्र अधिकतर यूरोपीय रूस के दक्षिण-पूर्व तथा साइबेरिया में पाए जाते हैं। इन सरकारी खेतों पर अधिकतर बीज उगाए जाते हैं, या वैज्ञानिक रीति से पशु-पालन किया जाता है या यान्त्रिक खेती के तरीकों के विषय में खोज होती है। कुल खेतिहर भूमि के १० प्रतिशत भाग में सरकारी खेत स्थित हैं।

वर्तमान रूस की कृषि में महान् परिवर्तन हो गए हैं। रूस की नवीन कृषि-प्रणाली वहाँ की पुरानी विस्तृत खेती, जिसकी उपज बहुत कम होती थी, उससे सर्वथा भिन्न है। युद्ध के पश्चात् खेती में मशीनों का योग बराबर बढ़ता जा रहा है। सन् १९५२ में खेती की भूमि सन् १९१३ की अपेक्षा १·४ अधिक हो गई। विभिन्न प्रकार की फसलों में भूमि की बढ़ोतरी इस प्रकार रही :

खाद्यान्न फसलें	१/२० गुना
औद्योगिक फसलें	२$\frac{2}{5}$ गुना
पशुओं के भोजन की फसलें	११ गुना

इस समय समस्त खेतिहर योग भूमि के ४० प्रतिशत भाग पर केवल औद्योगिक फसलें ही उगाई जाती हैं।

सोवियत रूस में खेतिहर भूमि

(लाख हैक्टर में)

	१९५३	१९५४	१९५५
कुल खेतिहर प्रदेश	१५७२	१६६१	१८३१
खाद्यान्न	१०६७	११२०	१२३०
गेहूँ	४८४	४९३	६०३
मक्का	३५	४३	१७९

युद्ध के बाद के सालों में रूस की सरकार सिंचाई की सुविधाओं को बढ़ाने का उत्तरोत्तर प्रयत्न कर रही है। सिंचाई की नई रीति ग्रहण की गई है जिसके अनुसार नहरों की शाखाओं और नालियों को दूर-दूर तक फैलाया जा रहा है। अगले कुछ सालों में सिंचित प्रदेश का क्षेत्रफल १$\frac{2}{3}$ गुना हो जाएगा। इसके अलावा नए

वनों को लगाकर भूमि के कटाव को रोका जा रहा है और फसलों के लिए छाया का प्रबन्ध किया रहा है।

(रूस की खेती में नवीन विशेषता यह आ रही है कि उद्योग-धन्धों के विकास के आगे धीरे-धीरे खेती गौण पड़ती जा रही है। सन् १९१३ में कुल उत्पादन का ५९.९ प्र.श. खेती से सम्बन्धित था, परन्तु सन् १९३७ में औद्योगिक उत्पादन कुल का ७७.४ प्रतिशत था और खेती का अंश केवल २२.६ प्रतिशत था।

रूसी खेती की दूसरी विशेषता यह है कि फलों का उत्पादन बराबर बढ़ रहा है। सन् १९४९ में २०,००० हेक्टर भूमि पर फलों की खेती होती थी और अब अधिक उत्तर तक फलों की खेती की जाने लगी है।

तीसरी विशेषता खेती में मशीनों का अधिकाधिक प्रयोग है। सहकारी-खेतों में जुताई और बुवाई का ८० प्रतिशत काम मशीनों से होता है। ७० प्रतिशत खेतिहर भूमि पर कटाई भी मशीनों द्वारा होती है। सरकारी खेतों पर तो बुवाई और कटाई का ९५ प्रतिशत भाग मशीनों द्वारा ही होता है।

चौथी विशेषता यह है कि रेशम के कीड़े अत्यधिक पाले जाने लगे हैं। मध्य एशिया और ट्रान्स काकेशिया के अलावा यूक्रेन, क्रीमिया, उत्तरी काकेशस, वारोनेज, कुर्स्क और स्टालिनग्राड क्षेत्रों में भी रेशम का उत्पादन होता है।)

कृषि-विषयक तापक्रम तथा वृष्टि-सम्बन्धी सीमायें—यहाँ के निवासियों तथा उनकी सरकार के महान् प्रयत्न करने पर भी वर्तमान समय में रूस की समस्त भूमि के क्षेत्रफल के केवल १० प्र.श. भाग पर ही खेती का कार्य होता है। यहाँ की खेती के अधिक विस्तार में जलवायु-सम्बन्धी कठिनाइयाँ बाधक सिद्ध होती हैं। ध्रुवों की ओर तो खेती के प्रसार को तापक्रम सम्बन्धी दशायें सीमित करती हैं तथा मध्य एशिया में जलवृष्टि का अभाव विशेष बाधा उत्पन्न करता है। सोवियत रूस का एक-चौथाई से भी अधिक भाग पर्वतों अथवा जलवायु की प्रतिकूलता के कारण कृषि के सर्वथा अयोग्य है। दूसरे चौथाई भाग में ऐसी धरती है जो कृषि-संभव प्रदेशों में होते हुए भी अभी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।

रूसी कृषि की विशेष रूपरेखा यह है कि यहाँ पर कृषि की उपज का स्थानीय उपभोग इतना अधिक होता है विदेशी मंडियों के लिए कृषि की उपज बहुत ही कम बचती है। दूसरी विशेष बात यह है कि रूस के उत्तरी भाग में अनाज की खपत तो बहुत अधिक है, परन्तु उपज इतनी कम होती है कि इससे वहाँ की जनता की माँग के केवल षष्ठांश की ही पूर्ति हो सकती है।

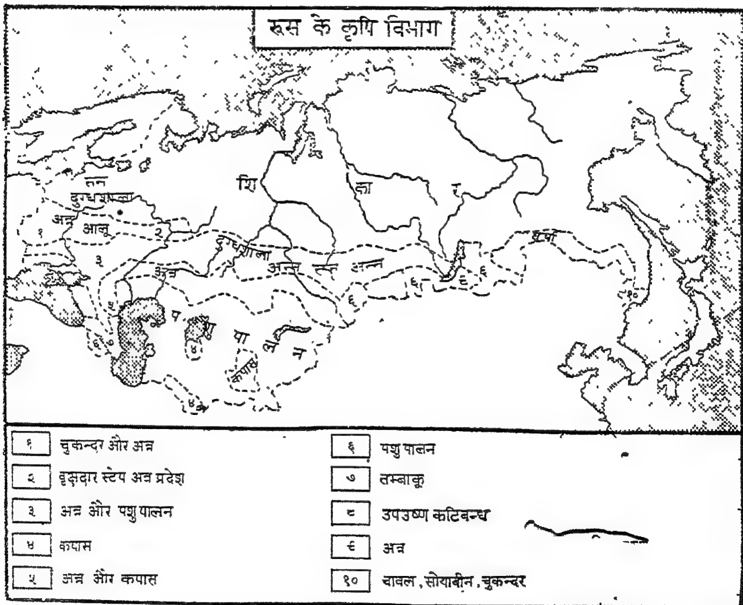
विश्व उत्पादन में रूस का स्थान

(१९४८-४९)

फसलें	प्रतिशत	फसलें	प्रतिशत
गेहूँ	१४.५	जौ	११.१
राई	५८.७	आलू	३०.०
जई	१५.६	कपास	५.५

सोवियत रूस में गेहूँ के उत्पादन क्षेत्र—रूस की प्रमुख उपज गेहूँ है। यूरोपीय रूस में केवल दक्षिण के काली मिट्टी के प्रदेशों में ही गेहूँ-उत्पादन नहीं किया जाता, परंतु वनों को साफ करके अधिक उत्तरी अक्षांशों में भी वैज्ञानिक विधि से इसका उत्पादन किया जाता है। पश्चिमी साइबेरिया में भी द्रुतगति से गेहूँ की उपज में वृद्धि हो रही है। गेहूँ-उत्पादन के अन्य प्रमुख क्षेत्र ओरेन वर्ग प्रदेश, कज्जाक तथा काराकालपाक हैं। यद्यपि अन्य क्षेत्रों में भी गेहूँ-उत्पादन के विस्तार में वृद्धि की जा रही है परन्तु रूस में अभी तक भी यूक्रेन प्रान्त ही गेहूँ-उत्पादन में अग्रगण्य प्रदेश है। सन् १९५० में विशेष प्रकार के पाला निरोधक गेहूँ के बीज काली मिट्टी के क्षेत्र के अतिरिक्त प्रदेशों में बोये गये।

रूस में चुकन्दर उत्पादन क्षेत्र—कीवा (Kiev) तथा कुर्स्क, ट्रांस काकेशिया पश्चिमी साइबेरिया तथा बेकाल झील के मध्य के प्रदेशों में चुकन्दर की खेती की जाती है। चुकंदर उत्पादन में रूस का प्रथम स्थान है। यहाँ पर समस्त संसार का एक-चतुर्थांश चुकन्दर उत्पादन किया जाता है। अन्य कृषि की उपज राई, जौ, सन, चाय तथा तम्बाकू हैं। रूस में संसार की आधी राई उत्पन्न होती है। यूक्रेन, स्टेप



चित्र ४६

प्रदेश तथा साइबेरिया में जौ का उत्पादन होता है। संसार के सन की आवश्यकता के आधे भाग की पूर्ति भी रूस द्वारा ही होती है।

कपास तथा अन्य उपज—वस्त्र-व्यवसाय-सम्बन्धी उपज की वस्तुओं में यहाँ

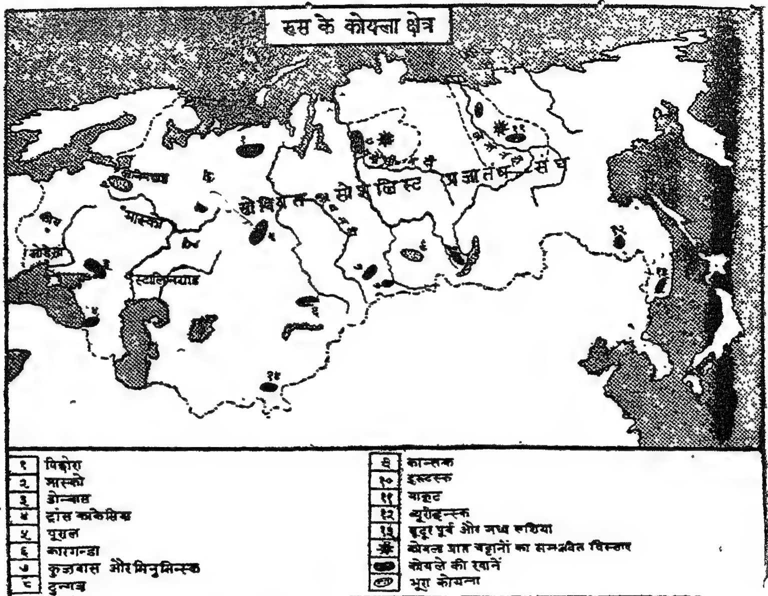
कपास सर्वप्रधान है। वर्तमान समय में रूस अपनी सभी घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करके भी रुई का निर्यात कर सकता है। कपास का उत्पादन (अ) क्रीमिया, (ब) काले सागर के उत्तरी भागों तथा (स) अजोव सागर के उत्तरी तथा पूर्वी प्रदेशों में होता है। चाय तथा चावल भी यथेष्ट मात्रा में उत्पन्न होते हैं। सन् १९४० में चाय का कुल उत्पादन २३,५०० टन था और सन् १९५२ में चीनी का उत्पादन ३३ लाख टन था।

अनावृष्टि तथा भूमि क्षयीकरण की रोक-थाम की १५ वर्षीय योजना—अनावृष्टि पर विजय प्राप्त करने तथा कृषि में क्रान्ति उत्पन्न करने के विचार से १९४८ में एक पन्द्रह-वर्षीय योजना बनाई गई। इस योजना के अनुसार १३५ लाख एकड़ भूमि पर १९५६ तक बन लगा दिए जाएँगे। भूमि के क्षयीकरण को रोकने के लिए वनों का लगाना ही एक विश्वसनीय उपाय माना जाता है। इस योजना के अधीन वोलगा, यूराल, डोन तथा उत्तरी डोनेट्ज नदियों के किनारे-किनारे ३,३०० मील के विस्तार में वनों की विशाल रक्षा पेटियों की अनेक पंक्तियाँ लगाई जावेंगी। सिंचाई का कार्य सम्पादन करने के लिए ४४,००० तालाब तथा बाँध बनाए जाएँगे तथा उनसे नहरें निकाली जायेंगी।

रूस की खनिज सम्पत्ति—खान खोदना—खनिज पदार्थों में रूस एक सम्पन्न देश है। वर्तमान युद्ध-प्रणाली के लिए यंत्रों तथा शस्त्रास्त्र-सम्बन्धी आवश्यकताओं की सभी खनिज वस्तुओं में रूस प्रायः आत्मनिर्भर है। कोयले और लोहे के विश्व-व्यापी उत्पादन में रूस का स्थान द्वितीय, खनिज तेल में तृतीय तथा मैंगनीज और फास्फेट्स में प्रथम है। १९२८ से आज तक अनेक नवीन क्षेत्रों की खोज हुई तथा उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाया गया।

सोवियत रूस के कोयला-क्षेत्र तथा कोयले की उपलब्धि—कोयले के विश्व-व्यापी उत्पादन में रूस का द्वितीय स्थान है तथा यहाँ पर विश्व का १।६ कोयला प्राप्त किया जाता है। यहाँ पर ९ करोड़ ३० लाख टन से भी अधिक कोयला निकलता है। १९१३ में केवल २ करोड़ ९० लाख टन कोयला निकाला गया था। १९१७ की राज्य-क्रान्ति से पूर्व रूस में कोयले का ९० प्रतिशत भाग से भी अधिक केवल डोनेट्स के कोयला क्षेत्र से ही प्राप्त हो जाता था परन्तु वहाँ की कोयला पूर्ति अब केवल ६० प्रतिशत ही है। वर्तमान रूस के प्रधान कोयला क्षेत्र कुजवुज (पश्चिमी साइबेरिया); तुगुंज (यनीसी कछार); इर्कुटस्क, डोनवास, पेचौरा (यूरोपीय रूस के उत्तर टुंड्रा प्रदेश में); वुरेन (आमूर के कछार में); युकत (लीनाकछार)—कांस्क (भूरा कोयला); कारांगडा (एशियाई रूस के स्टेप प्रान्त में); मिनूसिस्क, मास्को, मध्य एशिया (फरगाना के दक्षिण); यूराल (स्वर्डलोवस्क तथा शेल्याबिस्क के समीप); दूर पूर्व (व्लाडीवोस्टक के समीप) तथा वातुम के समीप ट्रांस काकेशस भाग में स्थित हैं। एशियाई रूस स्थित कुजवुकमिनूसिस्क, इर्कुटस्क, वुरेन तथा ब्लाडीवास्टक के कोयला-क्षेत्र ट्रांस-साइबेरियन रेल के लिए कोयला पूर्ति करते हैं। सन् १९५३ में सम्पूर्ण रूस का कोयला उत्पादन ३२००

लाख टन था जबकि सन् १९४८ में उत्पादन केवल २०९० लाख टन था ।



चित्र ४७—रूस के कोयला उत्पादक क्षेत्र

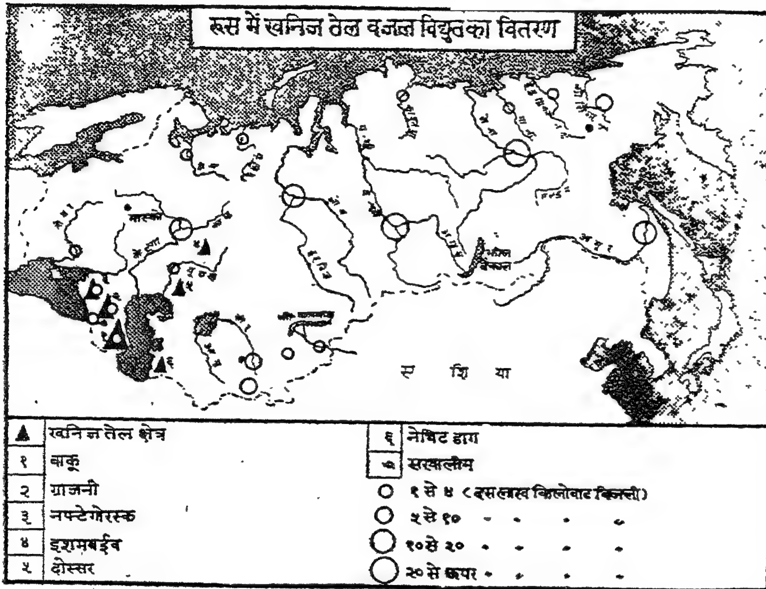
रूस में कोयले और खनिज तेल का उत्पादन
(लाख टन में)

	१९१३	१९४०	१९५०	१९५५
कोयला	२९०	१६६०	२९१०	३९००
खनिज तेल	९०	३१०	३७८	७००

(ऐसा अनुमान है कि स में विश्व कोयले भंडार का २० प्रतिशत निहित है । मास्को से कमच्छटा तक के प्रदेश में १५०० लाख टन कोयले का विस्तृत भंडार है। इसका ९० प्रतिशत भाग एशियाई रूस में स्थित है ।)

सोवियत रूस के तेल-क्षेत्र—१९३९ तक रूस को विश्व में खनिज तेल उत्पादन करने वाले देशों में द्वितीय स्थान था । परन्तु अब यह स्थान वेनेजुला का प्राप्त हो गया है । तेल-उत्पादक प्रदेशों में काकेशस, कैस्पियन क्षेत्र (९० प्र. श.); मध्य एशिया (४·९ प्र. श.) वोल्गा, यूराल (४ प्र. श.) तथा दूर पूर्व (१·१ प्र. श.) के क्षेत्र प्रमुख हैं। बाकू, ग्रोजनोनीफ्टरगोर्स्क, इशुम्बेव (Ishunbayev), डौसार, नेविट, डाग, तथा साखालीन प्रधान तेल केन्द्र हैं। यूराल के पश्चिमी पार्श्व में उत्तर की ओर दस्ता में, पर्म के पूर्व शूसोव में तथा समारा के पूर्व स्टेअरलिटामक

में तेल पाया जाता है। १९३८ में यहाँ पर तेल का उत्पादन ३२२.३ लाख टन था जबकि १९१३ में केवल ९२.३ लाख टन ही था। १९४२ में तृतीय पंचवर्षीय योजना से सोवियत रूस का तेल उत्पादन ३८५ लाख टन हो गया। सन् १९५३ में खनिज तेल का कुल उत्पादन ५२० लाख मीट्रिक टन था जब कि सन् १९३९ में उत्पादन केवल ३२० लाख मीट्रिक टन था।



चित्र ४८—रूस के खनिज तेल व जलविद्युत् क्षेत्र

(१) काले सागर पर बाकू से बातुम तक तथा (२) ग्रोजनी और माइकोप से त्वाप्से तक औद्योगिक प्रान्तों को निर्यात के लिए तेल नलों द्वारा लाया जाता है। यूराल वालगा प्रदेश रूस का दूसरा बाकू है। सन् १९५० में रूस के कुल तेल उत्पादन का ४४ प्रतिशत भाग इसी पूर्वी भाग से ही प्राप्त हुआ था। यहाँ का तेल भण्डार अनुमानतः ६ खरब मीट्रिक टन है।

रूस में कच्चा लोहा—रूस में लोहा भी बहुत मिलता है। लोहे के विश्व-व्यापी उत्पादन में इसका स्थान दूसरा है। कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि विश्व

लोह भण्डार का ५३ प्र. श. रूस में निहित हैं। कच्चे लोहे के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं :

(१) कुर्स्क के समीपवर्ती स्थानों में
(२) दक्षिणी यूराल में उर्स्क के समीप
(३) कुबु ज प्रदेश मे तैल्बेज (Telbez)
(४) मुर्मास्क प्रायद्वीप
(५) यूराल में मैगनिटोगोर्स्क के समीप मैगनेट पर्वत तथा
(६) यूक्रेन में क्रिवाई रॉग (Krivoi Rog)

१९५३ में रूस ने ४५० लाख टन कच्चा लोहा उत्पन्न किया। अनुमान है कि रूस में १० खरब टन से अधिक कच्चे लोहे का भंडार है। क्रिवाईरॉग और यूराल के क्षेत्र में लोहे का उत्पादन सबसे अधिक होता है। सन् १९५२ में रूस में लोहे व इस्पात का उत्पादन इस प्रकार था—पिगआयरन २५० लाख टन, स्टील के ढोके ३५० लाख टन और इस्पात की चद्दरें २७० लाख टन।

रूस में कच्चे लोहे और इस्पात का उत्पादन

(लाख टन में)

	१९१३	१९४०	१९५०	१९५५
कच्चा लोहा	४२	१५०	१९३	३३०
इस्पात	४२	१८३	२७३	४५०

रूस में मैंगनीज तथा अन्य धातुएँ—सोवियत रूस समस्त संसार में मैंगनीज उत्पादन का भी प्रधान क्षेत्र है। यूरोपीय रूस में दो प्रमुख स्थानों पर मैंगनीज निकलता है :—(अ) जार्जिया के काकेशस में शियातूर (Chiature) के समीप तो निर्यात के लिए तथा (ब) दक्षिणी यूक्रेन में निकोपोल के समीप, (क्रीमिया के १०० मील उत्तर-पश्चिम में) स्थानीय उपभोग के लिए। मैंगनीज के अन्य क्षेत्र अधिक पूर्व की ओर मध्य वोल्गा में औरनवर्ग, दक्षिण यूराल में वाशकीरिया तथा साइबेरिया में यूजूल नदी के समीप हैं। रूस की अन्य महत्वपूर्ण धातुएँ सोना, ताँबा और खनिज अल्यूमिनियम, बाक्साइट, निकिल, प्लेटिनम, सीसा तथा जस्ता हैं। प्लेटिनम का तो रूस प्रधान उत्पादक है। सोने की खानें यूराल में, लीना नदी के बेसिन में तथा बैकाल झील प्रदेश में हैं। १९३९ में रूस में विश्व का १२ प्र. श. सुवर्ण तथा २२ प्र. श. क्रोमियम उत्पन्न हुआ था। क्रोमियम कीखानें यूराल, औरेनबर्ग, वाशकीरिया तथा कजाकस्काई (Kasakskey) में स्थित हैं। सन् १९५२ में रूस ने १०० लाख औंस सोना, एक लाख अस्सी हजार मीट्रिक टन ताँबा और ५ लाख मीट्रिक टन बाक्साइट उत्पन्न किया। यूराल, ओरेनवर्ग वशकिरियन और कसाकस्की में क्रोमियम का भंडार पाया जाता है।

सोवियत रूस की वन-सम्पत्ति तथा वन-प्रदेश—रूस में समस्त संसार के एक तृतीयांश से भी अधिक वन सम्मलित हैं। पाइन, फर, लार्च, स्प्रूस जिनकी लकड़ी भवन-सामग्री, कागज तथा सैलूलोज बनाने के काम आती है. यहाँ पर

विशाल मात्रा में पाए जाते हैं। काष्ठ-उद्योग की विशालता का पता इस बात से चलता है कि १९३५ में रूस से तो १,१२० लाख मीट्रिक टन लकड़ी प्राप्त हुई जबकि कनाडा में, जिसका दूसरा स्थान है केवल ४८० लाख मीट्रिक टन ही हुई। परन्तु यहाँ की वन सम्पत्ति के सम्यक् उपभोग में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ पड़ती हैं। वनों के भौगोलिक वितरण की विषमता, यातायात व्यवस्था का अपर्याप्त विकास, स्थानीय तथा विदेशी उपभोग के स्थानों की दूरी तथा मजदूरों की कमी रूस में विशेष बाधायें हैं। रूस के वन-प्रदेशों का विस्तार २३,१०० लाख एकड़ से भी अधिक है, जिसका अधिकतर भाग एशियाई रूस में स्थित है। यूरोपीय रूस के वन-प्रदेश अधिकतर उत्तर में हैं यद्यपि काकेशस पर्वत में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की बहुमूल्य लकड़ी का अपार भंडार है।

सोवियत रूस के वन-प्रदेशों में बहुमूल्य लकड़ी का उत्पादन तथा वितरण

प्रदेश	क्षेत्रफल (समस्त का प्र० श०)	लकड़ी (समस्त का प्र० श०)	प्रदेश	क्षेत्रफल (समस्त का प्र० श०)	लकड़ी (समस्त का प्र० श०
साइबेरिया तथा सुदूर पूर्व	७५	३३	काकेशस	२	२.
यूरोपीय रूस का उत्तरी प्रदेश	१२	२२	दक्षिणी प्रदेश, (यूक्रेन तथा श्वेत रूस)	१	६
वोल्गा प्रदेश	८	२१	प्राचीन औद्योगिक प्रदेश (लैनिनग्राड, मास्को तथा कालोनिन)	२	१५

शिल्प उद्योग तथा औद्योगिक क्षेत्र

सोवियत रूस की औद्योगिक प्रगति तथा औद्योगिक प्रदेश—आधुनिक काल में सोवियत रूस में शिल्प उद्योगों का यथेष्ठ विकास हुआ है। सोवियत संगठन का यह उद्देश्य है कि समस्त देश में उद्योगों का पुनर्वितरण कर दिया जाय जिससे कि किसी प्रदेश विशेष में उद्योगों का एकाधिकार न रहे। यन्त्र-निर्माण, खेती के औजार, मोटर-ट्रैक्टर, मोटर गाड़ियाँ, सूती वस्त्र, चमड़े की वस्तुएँ, मिट्टी के वर्तन, रासायनिक पदार्थ, चीनी शोधन आदि के यहाँ पर बड़े-बड़े कारखाने हैं। इस रीति से सोवियत रूस का औद्योगिक संगठन केवल उन्हीं कच्ची वस्तुओं पर निर्भर रहता है जो कि रूस में ही प्राप्त हो सकती हैं। सोवियत रूस में छः प्रधान औद्योगिक प्रदेश हैं जिनमें सबसे प्रधान (१) **मास्को प्रदेश** है। सूती वस्त्र के ९० प्र. श. कारखाने मास्को प्रदेश ही में केन्द्रित हैं। मास्को तथा इवानोव (Ivanove) ही दो प्रधान सूती वस्त्र केन्द्र हैं, धातु-उद्योगों का स्थानीयकरण ट्यूला, मास्को तथा गोर्की में हो गया है। देश के रासायनिक उद्योगों का ६० प्र. श. भाग मास्को प्रदेश में ही स्थित है। परन्तु इस प्रदेश की सबसे बड़ी कमी यह है कि यहाँ पर प्रकृति-दत्त साधनों की बड़ी कमी है।

२. **यूक्रेन का औद्योगिक प्रदेश**—दूसरा महत्त्वपूर्ण औद्योगिक प्रदेश यूक्रेन तथा उनके समीप का भाग है—डोनेट्ज नदी के बेसिन से ही सोवियत रूस के ४५ प्र. श. इस्पात तथा ७० प्र. श. अल्यूमिनियम की पूर्ति होती है। यूक्रेन का डोनेट्ज बेसिन चीनी मिलों, आटे की मिलों, तथा चमड़े के कारखानों के लिए भी प्रसिद्ध है। खीव (अनाज की मंडी), ओडेसा (खेती के औजार), क्रिवोई रॉग (लोहा तथा इस्पात), नीप्रोपेट्रोवस्क (इंजीनियरी की वस्तुओं तथा कोयले से उत्पन्न बिजली का स्टेशन), रोस्टोव (खेतो के औजार), वोरोशिलोवग्राड (मोटर गाड़ी) तथा स्टालिनग्राड (लोहा तथा इस्पात) इस प्रदेश के मुख्य औद्योगिक केन्द्र हैं।)



चित्र ४६

(मास्को का औद्योगिक प्रदेश सबसे प्रधान है। यहाँ सूती कपड़े के ९० प्रतिशत कारखाने स्थित हैं।)

३.(**यूराल औद्योगिक प्रदेश**—यह प्रदेश अपेक्षतः नवीन ही है।) इस क्षेत्र में पर्मस्वर्डलोवस्क, शीलियाबिंस्क (Chelyabinsk), ओरेनवर्ग तथा वाश्कीर प्रदेश सम्मिलित हैं।(इस प्रदेश में सोवियत रूस का २० प्र. श. के लगभग इस्पात उत्पन्न होता है। अन्य शिल्प उद्योगों में रासायनिक उद्योग, रेलों के कारखाने तथा शस्त्रास्त्र ढालने के कारखाने हैं) इस प्रदेश के प्रधान नगर मैगनीटोगोरस्क, निझनी टागिल (Nizhni Tagil), शीलियाबिंस्क, स्वर्डलोवस्क तथा उर्स्क हैं। इस प्रदेश को ट्रांससाइबेरियन रेलवे तथा कैस्पियन रेल दोनों ही जाती हैं।

४.(**कुजबुज प्रदेश**—पश्चिमी साइबेरिया में है। कुछ ही दिनों में यह महत्त्वपूर्ण औद्योगिक प्रदेश बन गया है। केमेरोवो (तैल शोधन तथा धातु उद्योग), स्टालिन्स्क (लोहा-इस्पात तथा मोटर गाड़ियों) तथा होमस्क (वायुयानों के लिए) यहाँ के प्रमुख औद्योगिक नगर हैं।)

५. मध्य एशिया प्रदेश—सोवियत मध्य एशिया प्रदेश में सूती वस्त्र उद्योग, रासायनिक पदार्थ, लोहा तथा इस्पात आदि के उद्योग होते हैं। ताशकन्द, बुखारा तथा स्टालिनाबाद मध्य एशिया प्रदेश के प्रमुख नगर हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के छिड़ने से सुदूरपूर्व का औद्योगिक प्रदेश भी महत्त्वपूर्ण हो गया है। यूराल पर्वत से २००० मील के अन्तर पर होने से सोवियत सरकार ने इस प्रदेश को आर्थिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर बना दिया है। सुदूरपूर्व स्थित इस प्रदेश के याकूतस्क, विटिम, कोमसोमोल्सक, आरलोवोस्क तथा ब्लाडीवोस्टक प्रसिद्ध नगर हैं। रूस में औद्योगिक विकास की मुख्य विशेषता यह है कि पिछले कुछ वर्षों से रूस के पूर्वी भाग में औद्योगिक विकास होता रहा है। इसके कारण रूसी उद्योग-धन्धों के वितरण में बड़ा परिवर्तन हो गया है। देश के पूर्वी भागों में एक मजबूत औद्योगिक आधार स्थापित हो गया है। यह औद्योगिक क्षेत्र ६ भागों में बाँटा जा सकता है—वोल्गा प्रदेश, यूराल प्रदेश, साइबेरिया, सुदूरपूर्व, कज्जाक प्रदेश और मध्य एशिया। सन् १९५२ तक इन प्रदेशों का उत्पादन सन् १९४० की अपेक्षा तिगुना हो गया था। सन् १९५१ में पूर्वी प्रदेशों ने कुल रूस के औद्योगिक उत्पादन का ⅓ अंश उत्पन्न किया। सम्पूर्ण रूस के इस्पात व ढाले हुए लोहे के उत्पादन का आधा हिस्सा पूर्वी प्रदेशों ने ही उत्पन्न किया। कोयले और खनिज तेल के कुल उत्पादन का आधा भाग और विद्युत शक्ति का ४० प्र. श. भाग इसी पूर्वी प्रदेश से प्राप्त हुआ।

यदि १९४० के रूसी उत्पादन को १०० मान लिया जाय तो सन् १९५२ में यह २६७ था और सन् १९५५ के अन्त में पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के पूरे होने पर सन् १९५० की अपेक्षा ७० प्रतिशत अधिक हो जाने का अनुमान है।

सन् १९३६ में रूस में ५७४,०६४ कल-कारखाने थे जिनमें से ६१,४२८ बड़े उद्योग-धन्धे थे। सन् १९४६ से सन् १९५१ तक ७,००० और बड़े उद्योग-धन्धों का सूत्रपात किया गया है।

सन् १९४५ से रूस का सूती वस्त्र उद्योग बहुत तरक्की कर गया है और पिछले १० वर्षों में सूती वस्त्र के कारखाने यूराल, मध्य एशिया और साइबेरिया में खुल गये हैं। सन् १९५२ में विभिन्न उद्योग-धन्धों का अनुमानित उत्पादन इस प्रकार था—

	(लाख मीटर में)
सूती कपड़ा	५०००० से अधिक
ऊनी कपड़ा	१९०० के करीब
रेशमी कपड़ा	२१८०
	(लाख जोड़े)
चमड़े के जूते	२५००
रबड़ के जूते	१२५०

विभिन्न उद्योगों में उत्पादन बराबर बढ़ रहा है। सन् १९५० में सन् १९४०

की अपेक्षा २३ प्रतिशत अधिक उत्पादन हुआ और सन् १९५२ का औद्योगिक उत्पादन सन् १९५१ की अपेक्षा ११ प्रतिशत अधिक रहा।

रूस में उद्योग धन्धों का उत्प...

(सन् १९५१ का उत्पादन १०० माना गया है)

	१९५२	१९५३	१९५४
कुल औद्योगिक उत्पादन	१११	१२४	१४०
कोयला	१०७	११३	१२२
कच्चा तेल	११२	१२५	१४०
प्राकृतिक गैस	१०२	—	—
विद्युत	११३	१२८	१४२
पिग आयरन	११४	१२४	१३५
इस्पात	११०	१२१	१३१
जस्ता	१२४	१४०	१५०
सीसा	११७	१४३	१६२
धातु गलाने की मशी	११२	१३२	१३९
बिजली की मोटरें	१०६	१२०	१३७
कल पुर्जे (तकुवे)	११८	—	—
करघे	१३९	१४२	२४०
ट्रेक्टर	१०७	१३२	१६१
रासायनिक खाद	१०८	११८	१३७
टायर	१०१	१०८	१२३
कागज	१०९	१२०	१३२
सीमेण्ट	११५	१३२	१५७
सूती कपड़े	१०६	१११	११८
ऊनी कपड़े	१०८	११८	१३८
साइकिलें	१४३	१६४	२०५
दुग्धशाला उपज	१०५	११४	१२४

रूस में जलविद्युत् ने बड़ी प्रगति की है। डान नदी पर काखोबका स्थान पर, वोल्गा पर कुवेशेव स्थान पर और स्टालिनग्राड स्थान पर बड़े-बड़े बाँध बनाये जा रहे हैं, जिनसे क्रमशः २५०,००० और १००,००० लाख किलोवाट बिजली तैयार की जावेगी। सन् १९४८ में जलविद्युत् का कुल उत्पादन ४८३,००० लाख किलोवाट था और सन् १९५२ में यह ११,७०,००० लाख किलोवाट हो गया। सन् १९५१ में पूरे किए गए बाँधों से ३० लाख किलोवाट बिजली तैयार की गई थी।

रूस में विद्युत शक्ति का उत्पादन
(लाख किलोवाट में)

१९१३	१९०००
१९४०	४,८३,०००
१९५५	१६,६०,०००

वैदेशिक व्यापार

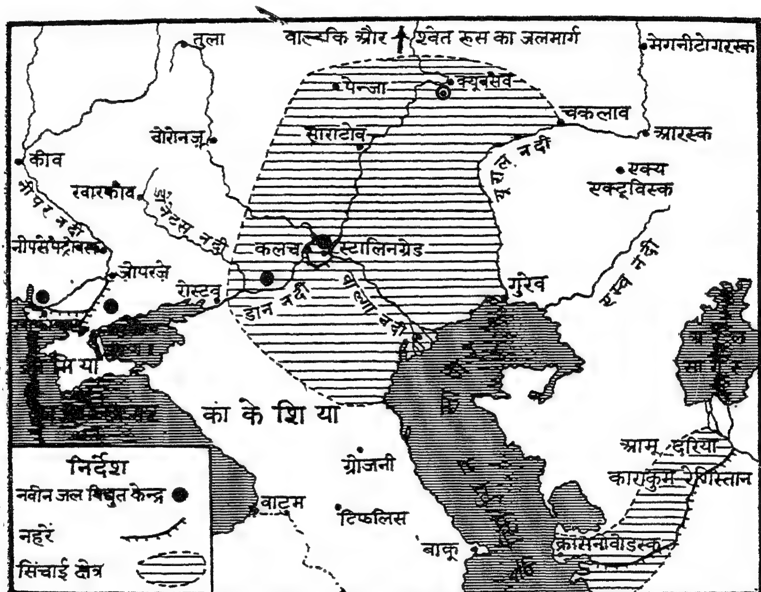
रूस का व्यापार--आयात तथा निर्यात की वस्तुएँ—विश्वव्यापी व्यापार में सोवियत रूस का भाग अपेक्षतः अल्प ही है। यहाँ का वैदेशिक व्यापार सरकार के ही अधिकार में है। यहाँ से निर्यात की वस्तुओं में मुख्यकर खनिज तेल, बहुमूल्य काष्ठ, फर (Furs) तथा सन आदि कच्ची वस्तुएँ और गेंहूँ, जई, मक्खन तथा खली आदि भोजन की वस्तुएँ सम्मिलित हैं। इनके अतिरिक्त थोड़ी-बहुत कपास तथा तैयार की गई वस्तुएँ पूर्वी देशों को जाती हैं। आयात की वस्तुओं में विशेषकर ताँबा, रबर, ऊन तथा कपास आदि कच्ची वस्तुएँ सम्मिलित हैं जिनका अभी तक सोवियत रूस में यथेष्ट परिमाण में उत्पादन नहीं होता। इनके अतिरिक्त चाकू, उस्तरे, कैंची तथा मशीनें (यन्त्र) भी विदेशों से आती हैं। सोवियत रूस का वैदेशिक व्यापार जर्मनी, संयुक्त राज्य (U. K.) तथा संयुक्त राष्ट्र से होता है। वर्तमान काल में सोवियत रूस का एशियाई देशों से व्यापार प्रतिवर्ष उन्नति कर रहा है।

यातायात के साधन

रूसी यातायात के साधनों की महत्ता—**रूसी राज्यों के विशाल विस्तार, बहुसंख्यक परन्तु बिखरी जनसंख्या, प्राकृतिक साधनों के असमान वितरण, उद्योगधंधों की असुविधाजनक स्थिति तथा देश के दक्षिणी भागों में अन्न उत्पादन के केन्द्रों की स्थिति के कारण सोवियत रूस में यातायात के साधनों की बड़ी महत्ता है।** गमनागमन के मुख्य साधन नदियां, रेलें तथा वायुयान हैं।

सोवियत रूस की नदियाँ तथा जलमार्ग—यद्यपि यहाँ की नदियाँ नौकासंचालन के अनुकूल हैं तथा यातायात के लिए अधिक उपयोग में आती हैं, परन्तु रूस के लिए यह दुर्भाग्य की बात है कि यह नदियाँ या तो आन्तरिक समुद्रों में अथवा उत्तरी ध्रुवीय महासागर में गिरती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की नदियाँ जाड़ों में जम जाती हैं और ग्रीष्म ऋतु में सूख जाती हैं। कहीं-कहीं पर वेग-प्रवाह के कारण भी नौकासंचालन में बाधा पड़ती है। उत्तर की ओर को प्रवाहित होने वाली नदियों के मुहाने के चारों ओर के प्रदेशों में ग्रीष्म ऋतु के आरम्भकाल में प्रायः बाढ़ आ जाया करती है क्योंकि इन नदियों के ऊपरी भागों में ही सबसे पूर्व हिम पिघलना आरम्भ होता है। परन्तु यहाँ की नदियाँ लम्बी हैं। उनका ढाल समान तथा धारा मन्द है। इस कारण उसके उद्गम स्थानों तक नौकासंचालन का कार्य होता है। उनमें अनेक सहायक नदियाँ भी मिलती हैं तथा उनका मार्ग कृषि-प्रधान प्रदेशों से होकर है। रूस की नदियों से जल-विद्युत भी बनाई जाती है।

नदियों द्वारा व्यापार—सोवियत रूस में सब मिलाकर नदियों का जलमार्ग १,८०,००० मील से भी अधिक है। यूरोपीय रूस की मुख्य नदियाँ ड्वाइना, नीपर, डोन तथा वोल्गा हैं। वोल्गा नदी सबसे लम्बी है और इसके कछार में रूस का आधे से अधिक भाग स्थित है। साइबेरिया की मुख्य नदियाँ ओबी, यनीसी, लीना तथा अमूर हैं। इन नदियों से जल-विद्युत शक्ति भी उत्पन्न की जाती है। रूस की नदियों से २८०० लाख किलोवाट जलविद्युत उत्पन्न की जा सकती है। इनसे सिंचाई का भी सम्यक् प्रबन्ध हो सकता है।



चित्र ५०—सोवियत रूस की नई नाव्य नहरें और उनसे सींचा जाने वाला क्षेत्र। नई नाव्य नहरों को निकालने के लिए बनाए गए बाँधों से जलविद्युत भी तैयार की जावेगी।

रूस में जलमार्गों का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है और सन् १९५१ में नाव्य जलमार्ग की लम्बाई सन् १९४० की अपेक्षा २३००० किलोमीटर अधिक थी। नये प्रकार के यात्री व व्यापारिक जहाजों द्वारा समुद्री व नदी यातायात में विशेष विकास हो गया है। सन् १९४० की अपेक्षा माल लादने-उतारने में भी मशीनों का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। सन् १९५१ में रूस में जहाजी बेड़े के टन भार का ब्योरा इस प्रकार था

१. महासागरीय जहाज	२२,६१,००० टन
२. सागरीय जहाज	५ लाख टन
३. नदी पर चलने वाले जहाज	० लाख टन

.. उत्तरी सागर के मार्ग द्वारा यूरोपीय रूस और सुदूरपूर्व के बीच सम्पर्क स्थापित होता है।

इस समय रूस में नाव्य नदियों की लम्बाई ११३,००० किलोमीटर है और ७३,००० किलोमीटर लम्बी नदियाँ ऐसी हैं जिन पर सामान को बहाया जा सकता है। इसके अलावा कई हजार मील लम्बी नाव्य नहरें हैं जिनमें सबसे प्रमुख बाल्टिक और श्वेत सागर नहर है जो १३५ किलोमीटर लम्बी है। इसके बाद मास्को वोलगा नहर का स्थान है जो १३० किलोमीटर लम्बी है। तीसरी महत्वपूर्ण नहर वोल्गा-डान नहर है जो सन् १९५२ में खोली गई। यह स्टालिनग्राड से रोस्टव तक १०१ किलोमीटर लम्बी है। इसके द्वारा श्वेत सागर, बाल्टिक सागर, कैस्पियन सागर, अजोब सागर और काला सागर सब मिलकर एक हो गए हैं। डान नदी में जहाज नहीं चल सकते, परन्तु इस नहर द्वारा कलाच से रोस्टव तक का क्षेत्र बड़े-बड़े जहाजों के उपयुक्त हो गया है।

इस समय दो और नहरें बनाई जा रही हैं। एक तो है दक्षिणी युक्रेनियन नहर जो ३००० मील लम्बी है और नीपर नदी पर जायरोजे स्थान से अजोब सागर के एक दलदली भाग पुटरिड सागर तक जाती है। दूसरी नहर तुर्कमीनियन नहर है, जो ७०० मील लम्बी है और आमू दरिया को कैस्पियन सागर के क्रास्नोवोडस्क स्थान से मिलाती है। इसके बन जाने से मास्को से मध्य एशिया तक जाया जा सकेगा। साथ-साथ दो और लाभ होंगे—काराकून या काली रेत के रेगिस्तान में सिंचाई द्वारा खेती की जा सकेगी और कैस्पियन सागर के तल को ऊँचा उठाया जा सकेगा।

साइबेरिया की ओब, येनीसी और लीना नदियों के जल से नाव्य नहरों व जल विद्युत के उत्पादन के लिए एक योजना तैयार की गई है, जिसके पूरा होने पर साइबेरिया में एक नया युग शुरू हो जायेगा।

आमू दरिया और सिर दरिया मध्य एशिया की प्रधान नदियाँ हैं। नदियाँ हिमाच्छादित पहाड़ों से निकलती हैं। आमूदरिया को बाल्टिक-श्वेतसागर नहर से मिलाने की योजना है। यह सम्बन्ध कैस्पियन सागर के द्वारा हो सकेगा। रूस के जलमार्गों से कुल यातायात का १० प्रतिशत अंश गुजरता है। इनसे जल-विद्युत भी खूब बनाई जाती है। रूस की सम्भावित जलशक्ति २८०० लाख किलोवाट है। रूस की नदियाँ भी सिंचाई का अच्छा साधन हैं, परन्तु अभी तक उनका पूरा उपभोग नहीं किया जा सका है। विशेषकर मध्य एशिया और ट्रान्स काकेशिया में।

उत्तरी मार्ग की योजना—कुछ वर्षों से सोवियत रूस उत्तर ध्रुवीय सागर के किनारे किनारेएक उत्तरी मार्ग स्थापित करने में प्रयत्नशील है यद्यपि इस मार्ग पर वर्ष में कुछ ही महीनों तक नावें चलाई जा सकती हैं, परन्तु इसके द्वारा मुरमांस्क लेनिनग्राड तथा व्लाडीवोस्टक के मध्य सीधा जल-मार्ग सम्बन्ध स्थापित होता है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान में संयुक्त राष्ट्र अमरीका से उत्तरी साइबेरिया के लिए

सामान व रसद ध्रुवीय सागर से होकर आती थी। रूस की यातायात व्यवस्था में झीलों और समुद्रों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। काले, कैस्पियन तथा अरल सागर और लडोजा, ओनेजा तथा बेकाल झीलें माल और यात्री इधर से उधर ले जाने में महत्वपूर्ण जल मार्ग बनाती हैं।

रूस के रेल मार्ग—सोवियत रूस में ६२००० मील लम्बा रेलमार्ग है। इनका आर्थिक व सैनिक महत्व है। परन्तु इसका केवल २ प्रतिशत भाग ही विद्युत-मय है। यूराल, साइबेरिया ट्रांसकाकेशिया और मास्को, लेनिनग्राड तथा टालनिव के आसपास रेलों को विद्युतमय करने की विस्तृत योजना है। पश्चिमी सोवियत रूस में रेलमार्गों का घना जाल बिछा हुआ है। यूराल में भी रेलें काफी हैं। अन्य स्थानों पर रेल व्यवस्था अपर्याप्त है। अधिकतर रेलों की लाइन इकहरी है। मास्को रेलों द्वारा सभी भागों से जुड़ा हुआ है।

रूस का हवाई मार्ग—वायु-यातायात में रूस ने आश्चर्यजनक उन्नति की है। रूस के सभी महत्वपूर्ण नगर वायुमार्गों द्वारा परस्पर सम्बन्धित हैं। यहाँ पर तीन प्रधान वायुमार्ग हैं जो मास्को से ही आरम्भ होते हैं। प्रथम वायु-मार्ग तो कजन, स्वर्डलोस्क, सोमस्क, इर्कुटस्क, चीता तथा खबरबोस्क होता हुआ प्रशान्त महासागर स्थित ब्लाडीवोस्टक तक जाता है। दूसरा वायुमार्ग रीगा होता हुआ मास्को से स्टाकहोम तक जाता है। रीगा पर इसका सम्बन्ध जर्मन वायु-मार्ग से है। तीसरा मार्ग औरनबर्ग तथा ताशकन्द होता हुआ मास्को से काबुल तक जाता है। इस समय रूस और चीन, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रूमानिया, बल्गारिया और फिनलैंड के बीच हवाई यातायात की व्यवस्था है।

व्यापारिक केन्द्र

मास्को—रूस का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र मास्को मोस्क्वा (Moskva) नदी से ऊपर की ओर एक उच्च स्थान पर स्थित है। मास्को रूस की राजधानी ही नहीं है अपितु रूसी मार्गों का भी महान् ग्रन्थिल केन्द्र है। यहाँ से भिन्न भिन्न दिशाओं को रेलमार्ग जाते हैं। यहाँ पर सूती वस्त्र, धातु तथा चमड़े की वस्तुओं और कागज बनाने के कारखाने हैं। यहाँ की जनसंख्या ४० लाख से भी अधिक है।

लेनिनग्राड—नीवा नदी पर स्थित है। यह बाल्टिक सागर का बन्दरगाह है। पश्चिमी यूरोप को जाने के लिए यह रूस का प्राकृतिक द्वार है। वर्ष में पाँच मास के लगभग यह जमा रहता है। जलपोतों के निर्माण के लिए यह प्रसिद्ध स्थान है। विशेषकर यहाँ पर हिमत्रोटक पोत बनाए जाते हैं। यहाँ पर कागज, सैलूलोज तथा अल्यूमिनियम का उद्योग भी होता है। यहाँ की जनसंख्या ३० लाख से ऊपर है।

अन्य प्रसिद्ध नगर—**बाकू**—कैस्पियन सागर पर स्थित विश्वविख्यात तेल उत्पादन का केन्द्र है। यहाँ से निर्यातार्थ तेल पाइप द्वारा काले सागर पर स्थित बातुम में भेजा जाता है। यहाँ की जनसंख्या लगभग २० लाख है। वोल्गा नदी के

मुहाने पर स्थित **अस्ट्राखान** (Astrakhan) मछली व्यवसाय का बन्दरगाह है। कोला प्रायद्वीप के उत्तरी तट पर स्थित केवल **मुरमांश** ही हिममुक्त बन्दरगाह है। इसका सम्बन्ध रेल द्वारा लेनिनग्राड से है। काले सागर के उत्तरी तट पर स्थित **ओडेसा** दक्षिणी रूस का महान् बन्दरगाह है। यहाँ से गेहूँ का निर्यात होता है। नीपर नदी पर स्थित **खीवा** महत्वपूर्ण अनाज की मंडी है। यहाँ की जनसंख्या ५ लाख है और यह यूरोप के प्राचीन नगरों में से है। अजोव सागर के उत्तर-पूर्वी तट के समीप डोन नदी पर **रोस्टोव** (Rostov) एक औद्योगिक केन्द्र है। यहाँ पर कृषि-यन्त्र बनाए जाते हैं। यूक्रेन की राजधानी **खारकोव** में ट्रेक्टर, मोटरकार तथा कृषियन्त्रों का निर्माण होता है। यहाँ की जनसंख्या ५ लाख से भी अधिक है। नीपर नदी-स्थित **नीप्रोपीट्रोवस्क** में इंजीनियरी (यंत्र-निर्माण) के कारखाने हैं। नीपर नदी पर एक बाँध बनाया गया है जहाँ से उद्योग-व्यवसायों के लिए जल-विद्युत शक्ति की पूर्ति होती है। यहाँ की जनसंख्या ५ लाख है। सन् १९३९ के बाद वोल्गा के स्टेपी प्रदेश, यूराल, पश्चिमी साइबेरिया और मध्य एशिया में बहुत-से नये नगर बन गए जिनमें अनेक नए उद्योग-धन्धों का विकास हो गया है। सन् १९५१ में नए जलविद्युत उत्पादक केन्द्रों और नहरों के प्रदेश में अनेक नए शहर बन रहे थे।

भूतपूर्व बाल्टिक प्रदेश

सन् १९१४-१८ के युद्ध के बाद रूसी साम्राज्य के भूभाग के चार छोटे-छोटे राज्यों का निर्माण हुआ था। ये राज्य इस्टोनिया, लैटविया, फिनलैंड और लिथूनिया हैं। इन्हें बाल्टिक राज्य कहते हैं। इन राज्यों में अधिक प्रगति नहीं हुई है। सड़कें अविकसित तथा रेलमार्ग कम हैं। देश में गरीबी है और जीवन का स्तर नीचा है। दूसरे महायुद्ध के बाद इस्टोनिया, लैटविया और लिथूनिया को रूस में मिला लिया गया है।

इस्टोनिया बाल्टिक राज्यों में सबसे उत्तरी भाग है। फिनलैंड की खाड़ी पर इसकी स्थिति विशेष सैनिक महत्व की है। सन् १९१८ तक वह रूस का ही बाल्टिक प्रान्त था। सितम्बर सन् १९३९ में रूस ने फिर से यहाँ पर सैनिक चौकियाँ बना लीं। सरकार यहाँ के उद्योग-धन्धों तथा यातायात की उन्नति करने का प्रयत्न कर रही है। **टालनिन** प्रधान बन्दरगाह और नगर है।

लैटविया में खेती के साथ-साथ पशुपालन और लकड़ी चीरने का काम भी होता है। मछली पकड़ना भी एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है। **रीगा** सबसे बड़ा शहर है। यही प्रधान समुद्री बन्दरगाह है और शिल्प उद्योगों के लिए प्रसिद्ध है।

लिथूनिया में खेती के साथ-साथ शिल्प उद्योग का भी विकास हो रहा है। आटा पीसना, शराब बनाना, चमड़ा साफ करना, लकड़ी चीरना आदि यहाँ के प्रमुख उद्योग हैं। जलशक्ति का प्रयोग होता है। जंगलों से लकड़ी तथा अन्य कच्चा माल प्राप्त होता है, जिसके सहारे दियासलाई बनाने और कागज बनाने के उद्योग चलते हैं। **मैमल** प्रधान बन्दरगाह है और **कौनसस** मुख्य व्यापारिक केन्द्र है।

स्विजरलैंड (Switzerland)

महाद्वीपीय स्थिति—यह एक महाद्वीपीय राज्य है जिसका समुद्र से सीधा संबंध नहीं है। स्विजरलैंड के पश्चिम में फ्रांस, उत्तर तथा पूर्व में जर्मनी तथा दक्षिण में इटली हैं। इस प्रकार की भौगोलिक परिस्थिति के फलस्वरूप स्विजरलैंड के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण आर्थिक तथा राजनैतिक विशेषताएँ उत्पन्न हो गई हैं।

स्विजरलैंड की समष्टि में व्यष्टि—यूरोप भर में स्विजरलैंड सबसे अधिक पहाड़ी देश है। विस्तार के विचार से यह यूरोप का सबसे छोटा राज्य है। यद्यपि इसका समस्त क्षेत्रफल १६,००० वर्गमील ही है परन्तु यहाँ की जनसंख्या ४० लाख से भी ऊपर है। इस राज्य में तीन प्रधान भाषाएँ बोली जाती हैं। ७० प्र. श. मनुष्य जर्मन भाषा, २० प्र. श. फ्रांसीसी भाषा तथा ६ प्र. श. इटालियन भाषा बोलते हैं। भाषाओं की यह विभिन्नता पारस्परिक विरोध अथवा मतभेद का कारण होने के स्थान पर स्वयं स्विजरलैंड की जीवन स्थिति का मूलाधार ही सिद्ध हुई है। स्विजरलैंड ने राष्ट्रीयता संबंधी उन कठिन समस्याओं का सफलता-पूर्वक समाधान पर लिया है जो कि आज अनेक अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों के मूल में व्याप्त हैं। अतः यह राज्य विभिन्न जाति समुदायों की त्रिवेणी (संगम-स्थान) बन गया है।

स्विजरलैंड का २२ प्र. श. क्षेत्रफल अनुपजाऊ अथवा बंजर भूमि है। देश की उर्वरा भूमि के ५० प्र. श. भाग पर कृषि भूमि तथा पर्वतीय चारण भूमि (Pastures) स्थित हैं तथा २२ प्र. श. भूमि में बन प्रदेश हैं।

स्विजरलैंड में कृषि पशुपालन व्यवसाय—गेहूँ, राई, जई, जौ, मक्का, आलू तथा तम्बाकू मुख्य उपज की वस्तुएँ हैं। फल तथा अंगूरों की व्यापक कृषि होती है। स्विजरलैंड में पशुचारण भूमि का बड़ा ही महत्त्व है, जिनमें कि पशुपालन तथा दुग्धशालाओं का कार्य किया जाता है। इन धंधों का विकास स्विजरलैंड की आय का एक महत्त्वपूर्ण साधन हो गया है। दुग्ध तथा मांस के उत्पादन के अतिरिक्त पशु निर्यातार्थ परम्परागत पशु-पालन का प्राचीन धंधा भी विशेष महत्त्व का है। स्विजरलैंड की दुग्धशाला सम्बन्धी मुख्य उत्पादन वस्तु पनीर है, जिसका कि घरेलू उपभोग तथा विदेशों में पर्याप्त मात्रा में उपयोग होता है। पनीर का व्यापार वर्न, लूसर्न, ज्यूरिच तथा सैंट कैलन में होता है।

जल-विद्युत उत्पादन केन्द्र—खनिज पदार्थों के दृष्टिकोण से देश निर्धन है। कोयले का तो पूर्णतः अभाव ही है। परन्तु स्फटिक, ऐस्फाल्ट, लवण तथा शीशा बनाने का रेत यहाँ पर मिलता है। असंख्य जल-प्रपातों तथा नदी की तीव्र धाराओं की विद्यमानता के कारण जल-विद्युत शक्ति के उत्पादन में बड़ी सुविधाएँ हैं तथा इसी शक्ति से कोयले के अभाव की पूर्ति की जाती है। उद्योग-धंधों तथा यातायात के साधनों में भी जल-विद्युत का ही प्रयोग किया जाता है। स्विजरलैंड में जल-विद्युत उत्पादन के ३१ विशाल केन्द्र हैं जिनमें से प्रत्येक में २०,००० हय शक्ति से भी अधिक विद्युत उत्पादन होता है। कुल उत्पादन शक्ति २६ लाख इकाइयाँ हैं।

स्विजरलैंड में जलविद्युत केन्द्र

केन्द्र	ऊँचाई (फीट में)	बाँध की ऊँचाई (फीट में)	जलाशय की शक्ति (लाख घन फीट में)	सम्भावित शक्ति (लाख किलो-वाट प्रतिवर्ष)
डिक्सेन्स	७,३४८	२९५	१,७६०	२,०००
ग्रिमसल	६,२६६	३७४	३,५३०	२,६००
डिक्सेन	७,७७६	८६९	१५,१८०	२०,०००

उद्योग व्यवसाय तथा उनकी प्रगति—स्विजरलैंड के औद्योगिक विकास में विशाल उन्नति हुई है। ४५ प्रतिशत लोग उद्योग-धन्धों में लगे हुए हैं। इस प्रकार क्षेत्रफल और जनसंख्या के विचार से यह देश संसार के प्रधान औद्योगिक राष्ट्रों में से है। यहाँ पर मुख्यत: शिल्प उद्योग की वस्तुओं का ही निर्माण होता है। यातायात के साधनों की अपर्याप्तता तथा अपव्ययता और कोयले तथा कच्ची वस्तुओं के अभाव को दूर करने के लिए यहाँ के उद्योग व्यवसायों की प्रवृत्ति अधिकतर उन्हीं वस्तुओं के निर्माण की ओर है जिनमें कुशल कारीगरों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे व्यवसायों में विद्युत् व्यवसाय, रासायनिक व्यवसाय तथा घड़ी बनाना ही महत्त्वपूर्ण हैं। स्विजरलैंड निर्मित शिल्प वस्तुओं का संसार की मंडियों में बड़ा आदर है।

उद्योग व्यवसाय:—

(अ) वस्त्र व्यवसाय
(ब) यंत्र तथा धातु व्यवसाय
(स) घड़ी बनाना तथा अन्य सहयोगी व्यवसाय
(द) रासायनिक वस्तुओं का व्यवसाय
(इ) भोजन की वस्तुओं तथा तम्बाकू व्यवसाव

वस्त्र व्यवसाय—वस्त्र व्यवसाय में रेशमी वस्त्र उद्योग का विशेष स्थान है। यह उद्योग भौगोलिक दृष्टिकोण से स्विजरलैंड में ही सीमित है। चार-पंचमांश रेशमी वस्त्रों का निर्माण, निर्यात के लिए ही होता है। यहाँ के बने रेशमी वस्त्रों की संसार भर में बड़ी माँग रहती है। इस उद्योग का केन्द्र ज्यूरिच है। रेशमी फीते बेसल (Basle) में बनते हैं। फीते की अधिकतर माँग की पूर्ति यहाँ से होती है तथा यहाँ के फीता उत्पादन का ९५ प्र.श. भाग निर्यात किया जाता है। वस्त्र व्यवसाय में चिकन-लैस, मोजे, बनियान, गोटा-लैस आदि अन्य व्यवसाय भी हैं जिनको इस देश में उतनी ही प्रधानता है जितनी कि वस्त्र व्यवसाय की है।

धातु सम्बन्धी उद्योग तथा घड़ी का यंत्र व्यवसाय—धातु निर्मित वस्तुओं में स्विटजरलैंड में अल्यूमिनियम, ताँबा, पीतल, निकल तथा अन्य अनेक धातुओं की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। बड़े परिमाण में अल्यूमिनियम की छड़ें बनती हैं। **घड़ियों का निर्माण तो यहाँ का सबसे पुराना तथा सबसे समृद्ध व्यवसाय है।** आधुनिक काल में यह व्यवसाय जूरा प्रान्त में होता है तथा इसमें ६७,००० व्यक्ति कार्य करते हैं।

९५ प्र.श. घड़ियाँ निर्यात की जाती हैं। यह व्यवसाय यहाँ पर विश्व भर में सबसे प्रसिद्ध है।

भोजन-पदार्थों के व्यवसाय की प्रधान वस्तुएँ जमा हुआ दूध, चाकलेट, पनीर, बिस्कुट इत्यादि हैं।

यहाँ के अलौकिक दृश्य तथा छटा 'आय का स्रोत'—पर्यटन सम्बन्धी तथा होटलों का धन्धा भी काफी महत्वपूर्ण है। स्विजरलैण्ड के अतिरिक्त संसार भर में अन्य कोई भी देश इतने सीमित क्षेत्र में चित्रवत् दृश्यों तथा प्राकृतिक सौन्दर्य की भिन्न-भिन्न प्रकार की अलौकिक छटाएँ नहीं प्रदर्शित करता है। इसीलिए तो इस देश को **"यूरोप का बिहार-स्थल"** कहते हैं। इसकी सीमाओं में यूरोप की लगभग प्रत्येक भाँति की जलवायु है। संसार भर के भिन्न-भिन्न प्रदेशों के दर्शक यहाँ की छटा का आनन्द उठाने तथा बिहार करने के लिए आते हैं जिससे इस देश को बहुमूल्य आय होती है।

आवागमन के साधन विद्युत-रेलें—स्विजरलैण्ड का समुद्र से सीधा सम्बन्ध नहीं है। यहाँ पर रेल-मार्गों की महान् उन्नति हुई है। इङ्गलैण्ड तथा बेल्जियम को छोड़कर रेल-मार्गों में इसका तीसरा स्थान है। रेल-मार्गों का योग ३,२७५ मील है और प्रति सहस्र जनसंख्या पर इसका औसत ·८५ मील है। रेलों के विषय में सबसे महत्वपूर्ण बात उनमें विद्युत द्वारा संचालन की प्रगति है। स्विजरलैण्ड की वर्तमान ७० प्र. श. रेलों का संचालन विद्युत-शक्ति से ही होता है। रेल तथा सड़कों का संयुक्त मार्ग १०,००० मील के लगभग है। वायु-यातायात का भी विकास किया जा रहा है।

प्रसिद्ध नगर—**बर्न**—आर्थिक तथा राजनैतिक जीवन का केन्द्र तथा राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या १,३०,००० है। यह मार्गों का केन्द्र भी है। यहाँ का सबसे बड़ा नगर **ज्यूरिच** है। इसकी आबादी ३,३६,००० है। यह रेलों का केन्द्र ही नहीं वरन् एक महान् व्यवसायिक नगर भी है। यहाँ पर सूती, रेशमी वस्त्र तथा मशीनें (यन्त्र) बनाए जाते हैं। **बेसिल** (Basle) राइन के मोड़ पर स्थित है तथा स्विजरलैण्ड, जर्मनी, और फ्रांस के मध्य व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र है। अन्य नगरों के नाम जिनेवा, विन्टरथर (Winterthur), फ्रीबोर्ग तथा लासेन हैं।

हंगरी (Hungary)

यह एक छोटा-सा राज्य है जो डैन्यूब क्षेत्र में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३५,८७५ वर्गमील तथा जनसंख्या ९३,१३,००० है। ९३ प्र.श. हंगरी निवासी अथवा मगयार लोगों की उत्पत्ति एशिया से है। १९१९ तक हंगरी का देश आस्ट्रिया हंगरी के युग्मराज-तन्त्र में सम्मिलित था। प्रथम महायुद्ध के फलस्वरूप हंगरी एक स्वाधीन प्रजातन्त्र राज्य बन गया परन्तु उसका दो-तिहाई प्रदेश रूमानिया, चैकोस्लोवाकिया तथा यूगोस्लाविया में बंट गया।

जलवायु तथा भौतिक दशाएँ—हँगरी एक समतल देश है, जिसमें होकर डैन्यूब नदी तथा उसकी सहायक, द्रव, सव, तीसा तथा कोरोस नदियाँ बहती हैं।

इस देश के चारों ओर आल्पस पर्वत की श्रेणियाँ फैली हुई हैं। यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय है। यहाँ पर गर्मियों में गरमी तथा सर्दियों में सर्दी पड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में थोड़ी वर्षा भी हो जाती है। इस जलवायु के अनुसार यह प्रदेश एक घास का मैदान है जहाँ अनाज उत्पन्न हो सकते हैं।

खेती की उपज—हंगरी की समतल उर्वर भूमि शताब्दियों तक यूरोप का अन्न भंडार रही है। खेती योग्य ८० प्र.श. भूमि में गेहूँ तथा मक्का उत्पन्न होता है।

खेतिहर क्षेत्रफल तथा उपज (१९५४-५५)

	क्षेत्रफल (लाख हेक्टर)	उपज (लाख मीट्रिक टन)
अनाज	१८४	५२
आलू	—	२३
चुकन्दर	१३	२५
मक्का	१२०	—

यद्यपि हंगरी में गेहूँ की पर्याप्त उपज होती है, परन्तु प्रति एकड़ उपज मध्यम श्रेणी की है। सन् १९५३ में गेहूँ का उत्पादन २१ लाख टन था। गेहूँ के विशाल उत्पादक देशों में प्रति एकड़ उपज का औसत ३० बुशल रहता है। परन्तु हंगरी में २० बुशल से अधिक कभी नहीं रहा। अन्य प्रमुख उपज की वस्तुएँ राई, जौ, जई, चुकन्दर, आलू, तम्बाकू इत्यादि हैं। जनसंख्या के दो-तिहाई मनुष्यों का निर्वाह कृषि से होता है। कुछ वर्षों से अंगूर के उद्यानों की बड़ी उन्नति हो रही है तथा यहाँ पर १० करोड़ गैलन से अधिक मदिरा बनाई जाती है। कपास की खेती भी की जाने लगी है।

हंगरी में कपास की कृषि और उत्पादन

१९४९—	८०० एकड़
१९५१—	७०,००० एकड़
१९५४—	३००,००० एकड़

सन् १९५४ में कपास का कुल उत्पादन ९ लाख क्विंटल हुआ। यह सन् १९५० के उत्पादन का ३० गुना था। सन् १९५० में कपास का कुल उत्पादन केवल ३२ हजार क्विंटल था।

खनिज पदार्थ—कभी भेड़ों का पालना एक विशेष धन्धा था, परन्तु अब इसका ह्रास हो रहा है। खनिज पदार्थों का अभाव है। दक्षिण-पश्चिम में स्थित पैक्स (Pecs) के समीप उत्तम श्रेणी का कोयला मिलता है। यहाँ से ७० लाख टन कोयले की प्राप्ति होती है। फिर भी जर्मनी, पोलैण्ड तथा चैकोस्लोवाकिया से कोयला मँगाने की आवश्यकता पड़ती है। सालगोतार्जन के समीप कुछ कच्चा लोहा मिलता है, परन्तु धातुशोधन सम्बन्धी व्यवसाय की आवश्यकता पूर्ति के लिए यथेष्ट परिमाण में बहुत-सा माल मँगाना पड़ता है।

उद्योग-धंधे—यहाँ पर सन् १९५० में पंचवर्षीय योजना चलाई गई। इसका

उद्देश्य उद्योग-धन्धों का इस प्रकार विकास करना था कि हंगरी औद्योगिक देश बन जाए। ये उद्योग-धन्धे वे हैं जो खेती की उपज पर निर्भर हैं। आटा पीसना, चीनी साफ करना तथा शराब बनाना यहाँ के प्रधान उद्योग हैं। बुडापेस्ट में आटा पीसने की चक्कियों की भरमार है और उसे यूरोप का मीनियापोलिस कहते हैं। हाल में सूती वस्त्र उद्योग भी शुरू किया गया है। अन्य उद्योग-धन्धे चमड़ा साफ करना तथा कल-पुर्जे बनाना हैं।

हंगरी की आर्थिक उन्नति के लिए पहली पंचवर्षीय योजना पूरी हो चुकी है और सन् १९५५ में दूसरी पंचवर्षीय योजना पर काम शुरू कर दिया गया है। इस दूसरी योजना का उद्देश्य औद्योगिक उत्पादन में ५·७ प्रतिशत की वृद्धि करना है। योजना के अनुसार अगले पाँच वर्षों में तेल-उद्योग का ३० प्रतिशत अधिक हो जायेगा और विद्युत-शक्ति में भी १० प्रतिशत की बढ़ोतरी होगी। अन्य उद्योगों में बढ़ोतरी की दर निम्नलिखित होगी—

कोयला तथा अन्य खनिज	४ प्र. श.
ढलवाँ लोहा	४·५ प्र. श.
सीमेण्ट उत्पादन	१८ प्र. श.
इञ्जीनियरिङ्ग उद्योग	३५ प्र. श.

इञ्जीनियरिंग उद्योग में खेती की मशीनों के उत्पादन पर अधिक जोर दिया जाता है। सामान्यत: सम्पूर्ण औद्योगिक विकास की प्रगति उन वस्तुओं के उत्पादन की ओर है जिनमें मेहनत की ज्यादा जरूरत होती है।

योजना के अनुसार खेतिहर उत्पादन ७·३ प्रतिशत अधिक हो जायेगा। सन् १९५४ की अपेक्षा खेती के मद में ३३ प्रतिशत अधिक खाद, २५ प्रतिशत अधिक निर्माण सामग्री तथा २० प्रतिशत अधिक पेट्रोल की व्यवस्था की गई है। सन् १९५५ में सन् १९५४ की अपेक्षा ६०-७० प्रतिशत अधिक खेतिहर औजार बिके। खाद्यान्न उगाने और गाय-भैंस पालने की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। पशुओं से प्राप्त होने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी इस योजना के अन्त तक बहुत काफी बढ़ जायेगा।

समुद्री प्रवेश-द्वार की समस्या—हंगरी में ६० हजार किलोमीटर लंबी सड़कें हैं। ये सभी सड़कें कच्ची हैं। अतएव वर्तमान यातायात के लिए बिल्कुल बेकार हैं। नदियाँ नाव्य हैं और महत्त्वपूर्ण यातायात व्यवस्था का निर्माण करती हैं। परन्तु सबसे बड़ी समस्या यह कि समुद्र की तरफ कोई निकास नहीं है। निचली डैन्यूब से होकर जाने में रूमानिया से गुजरना पड़ता है। हंगरी के व्यापार के लिए हैमबर्ग, सबसे सुविधाजनक है परन्तु वह दूर पर स्थित है, और वहाँ तक पहुँचने के लिए कई देशों को पार करना पड़ता है। फिर भी इसका विदेश व्यापार हैमबर्ग, फ्यूम तथा स्पिलट से होता है। सन् १९५१ में हंगरी के रेलमार्गों की लम्बाई ११,४२५ किलोमीटर थी।

सन् १९३९ में हंगरी ने रुथेनिया को (जीतकर) मिला लिया। यह पहले

चैकोस्लोवाकिया का बन्दरगाह था। परन्तु यह बन्दरगाह पहाड़ी है और यहाँ के निवासी भी निर्धन हैं—यहाँ के निवासियों का मुख्य धन्धा भेड़ों को पालना है।

प्रमुख नगर—बुडापेस्ट राजधानी तथा प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है। इसमें दो नगर सम्मिलित हैं जो नदी के दोनों ओर स्थित हैं। बूडा डैन्यूब के दायें और पैस्ट बायें किनारे पर हैं। यहाँ यूरोप भर में सबसे अधिक आटे की चक्कियाँ हैं। यहाँ बिजली के यन्त्र भी बनते हैं। यह रेलों का प्रसिद्ध जंकेशन है तथा मैदानों की उपज को एकत्रित करने के लिए प्राकृतिक केन्द्र है। यहाँ की जनसंख्या दस लाख से कुछ अधिक है। जगेद (Szeged) एक ग्राम्य नगर है। यहाँ पर चीनी शोधन और अर्क तथा मद्य खींचने के उद्योग होते हैं।

विदेशी व्यापार—हंगरी का व्यापार पूर्वी यूरोपीय देशों, वेल्जियम, वर्मा, रूस, डेनमार्क और भारत के साथ विशेष रूप से विशेष प्रगतिशील है। इसके द्वारा निर्यात की मुख्य वस्तुएँ मशीनें, ढले हुए लोहे के सामान, राशायनिक पदार्थ, वस्त्र, खाद्यान्न, विजली का सामान, रेल के इंजन, नाव इत्यादि हैं। अन्य देशों से यह तम्बाकू, लकड़ी, खनिज पदार्थ, कोको, तेल, चमड़ा तथा अन्य कच्चा माल आयात करता है। इसे सोवियत संघ से कोक, लोहा, कपास, खाद तथा औद्योगीकरण की भारी मशीनें प्राप्त होती हैं।

बालकन राज्य (The Balkan State)

रियासतें तथा धंधे—रूमानिया, यूगोस्लाविया, बल्गारिया, अल्बानिया, तथा ग्रीस और तुर्किस्तान मिलकर बालकन राज्य कहलाते हैं। ये राज्य अधिकतर पर्वतीय हैं यहाँ का व्यापार नगण्व ही है। कृषि कार्य तथा पशु-पालन यहाँ के निवासियों के दो ही प्रधान धंधे हैं।

बलगारिया (Bulgaria)

सीमा-विस्तार तथा निवासी—यह देश निम्न डैन्यूब के दक्षिण में स्थित है। यह बाल्कन प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इसके उत्तर में डैन्यूब, दक्षिण में यूनान, पूर्व में काला सागर तथा पश्चिम में यूगोस्लाविया है। इसका क्षेत्रफल ४२,७९६ वर्ग मील तथा जनसंख्या ७० लाख है। बल्गारिया में स्लाव तथा मंगोल जाति के मिले-जुले निवासी रहते हैं। बल्गार का अर्थ होता है हल और यहाँ के चार-पंचमांश लोग किसान ही हैं।

भू-प्रकृति तथा जल-वायु—इस देश में भिन्न-भिन्न प्रकार की बनावट, मिट्टी तथा जलवायु पाई जाती है। अधिकतर जलवायु महाद्वीप श्रेणी की है। दक्षिण की जलवायु प्रधानतः भूमध्यसागरीय है। देश का लगभग आधा उत्तरी भाग पर्वतीय प्रदेश है। किन्तु धुर उत्तर का भाग मैदान है। यहाँ का सबसे अधिक उर्वर तथा उत्पादनशील प्रदेश बाल्कन पर्वतों के दक्षिण में है। इस प्रदेश में मेरिटजा नदी बहती है। इस देश के सारे दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग में रोडोप पर्वत फैले हुए हैं।

खनिज पदार्थ—बलगारिया यूरोप के सबसे निर्धन तथा अनुन्नत प्रदेशों में से है। इसमें पर्याप्त खनिज सम्पत्ति भरी है। यहाँ पर ताँबे, मैंगनीज, कोयले, सीसे, जस्ता, स्फटिक तथा ग्रेनाइट की खानें हैं। परन्तु ईंधन के अभाव, यातायात की असुविधा तथा पूँजी की अल्पता के कारण खनिज पदार्थों को खोदकर निकाला नहीं जाता। यहाँ पर विदेशी कम्पनियों के द्वारा ही न्यूनाधिक परिमाण में ताँबे तथा कोयले को निकालने का कार्य होता है।

वन-सम्पत्ति तथा रेशम के कीड़े पालना—ओक बीज तथा अन्य प्रकार के पतझड़ के वृक्षों से जो कि पर्वतीय प्रदेशों में विस्तृत रूप से पाए जाते हैं निर्यातार्थ बहुमूल्य लकड़ी प्राप्त होती है। यहाँ पर रेशम के कीड़ों को पालना तथा कोये प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण उद्योग है।

कृषि, फल तथा गुलाब के पौधों का उत्पादन—यहाँ के निवासियों का मुख्य धन्धा कृषि है। ८० प्रतिशत से अधिक मनुष्यों के जीवन-निर्वाह का प्रत्यक्ष साधन कृषि उद्योग ही है। कृषि उपज की वस्तुओं में गेंहूँ, मक्का, जौ, तम्बाकू, चुकन्दर, अंगूर की बेलें तथा फल महत्वपूर्ण हैं। दक्षिण-पश्चिम की उपत्यका में फलों का बाहुल्य है। कपास तथा जई की भी खेती होती है। बाल्कन पर्वतों के पहाड़ी ढालों पर इत्र तथा सुगन्धित तेल बनाने के लिए गुलाब के पौधे लगाए जाते हैं। काजनलिक (Kazanlik) की घाटी गुलाब के पौधों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रदेश हो गया है। गुलाब के फूलों से इत्र बनाना कभी यहाँ का महत्वपूर्ण तथा प्रसिद्ध व्यवसाय था। अब भी न्यूनाधिक रूप में इत्र बनाया जाता है। पशुचारण संबन्धी धंधे भी यहाँ पर महत्वपूर्ण हैं।

खेतिहर क्षेत्रफल तथा उपज (१९५४-५५)

	क्षेत्रफल (लाख हेक्टर)	उपज (लाख मीट्रिक टन)
अनाज	—	४०
आलू	—	—
चुकन्दर	—	८

रेल-मार्ग तथा समुद्र-मार्ग—यहाँ पर रेल-मार्गों का विकास नहीं हुआ है। बैल्ग्रेड से दो रेल-मार्ग चलते हैं:—एक तो उत्तर में बुडापेस्ट को जाता है तथा दूसरा दक्षिण में सालोनिका तक जाता है। तीन समुद्री मार्ग हैं—(१) सोफिया से काले सागर पर स्थित वार्ना तक बाल्कन पर्वत के उत्तरी पार्श्व के साथ-साथ; (२) फिलियोपोलिस से काले सागर पर स्थित बुर्गास तक बाल्कन पर्वत के दक्षिणी पार्श्व के साथ-साथ तथा (३) मेरिट्जा की घाटी से दीद अगाक (Dede Agach) तक जो कि बलगेरिया का सबसे समीप का बन्दरगाह है।

व्यापार—यहाँ का वैदेशिक व्यापार बहुत ही कम है। तम्बाकू, मक्का, गुलाब का इत्र तथा अंडे ही निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ हैं।

व्यापार का प्रतिशत (१९५०)

निर्यात		आयात	
रूस	५२	रूस	५८
चेकोस्लोवाकिया	११	चेकोस्लोवाकिया	१२
पोलैंड	५	पोलैंड	६
हंगरी	१·३	रूमानिया	१.५
रूमानिया	०.६	हंगरी	१.३

कुर्गास, वार्ना, सोफिया तथा फिलियोपोलिस प्रमुख व्यापारिक नगर हैं। काले सागर पर स्थित वार्ना तथा वुर्गास से तम्बाकू, अंडे, गुलाब का इत्र, मक्का तथा रेशम का निर्यात किया जाता है। शीत ऋतु में डैन्यूब नदी हिम से जम जाती है, अतः इन दिनों यथेष्ठ व्यापार नहीं हो सकता। सोफिया राजधानी है। यही बल्गारिया का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ की जनसंख्या २ लाख ८० हजार है।

अलबानिया (Albania)

स्थिति, विस्तार तथा निवासी—यह छोटा-सा ऊबड़-खाबड़ देश बाल्कन देशों में सबसे निर्धन तथा अनुन्नत है। इस देश का क्षेत्रफल लगभग ११,००० वर्ग-मील है। यूगोस्लाविया तथा यूनान के मध्य यह देश ऐड्रियाटिक सागर पर स्थित है। तटीय प्रदेश के अतिरिक्त सारा ही देश पहाड़ी है। इसकी जनसंख्या १,००,०००० है जिसमें ७० प्रतिशत लोग मुसलमान हैं। यहाँ के निवासी प्रधानतः गड़रिये हैं। लगभग ९० प्रतिशत लोग खेती में लगे हुए हैं। २५ प्र० श० लोग फसलें उगाते हैं, और ६५ प्र० श० लोग पशुपालन करते हैं। ये लोग वीर तथा बदला लेने वाले हैं। तटीय मैदानों की जलवायु भूमध्यसागरीय है, जहाँ पर फल तथा खाद्यान्न उत्पन्न किये जाते हैं। देश में रेलमार्गों का नितान्त अभाव है, सड़कें भी अपर्याप्त हैं तथा देश का अधिकतर भाग बंजर तथा निरर्थक है।

महत्त्वपूर्ण स्थिति—इटली देश की एड़ी के समीप स्थित होने से अलबानिया का देश ऐड्रियाटिक सागर के द्वार पर युद्ध सम्बन्धी महत्त्व का स्थान है।

अलबानिया के खनिज सम्बन्धी साधन अभी तक अज्ञात अवस्था में हैं। एक तैल-क्षेत्र का पता लगा है तथा उस पर कार्य भी आरम्भ हो गया है। सन् १९५२ में कच्चे तेल का उत्पादन ६,७०,००० मीट्रिक टन था। ताँबे की खानों और नमक के गड्ढों में भी खुदाई शुरू हो गई है। टिरेन (Tirane) राजधानी है तथा मुख्य तटीय समतल भूमि के आन्तरिक छोर पर देश के मध्य में स्थित है। इसकी जनसंख्या तीस सहस्र (३०,०००) से कुछ ऊपर है। सिकुतरी (Scutari) सबसे विशाल नगर है। इसकी स्थिति सिकुतरी झील के समीपवर्ती मैदान में है। यहाँ के खरबूजे प्रसिद्ध हैं। दुराज्जो (Durazzo) यहाँ का मुख्य बन्दरगाह है।

यूनान (Greece)

स्थिति, तटरेखा तथा निवासी—यूनान सबसे पूर्व का पहाड़ी प्रायद्वीप है जो कि दक्षिण की ओर भूमध्यसागर में घुसा चला गया है तथा साथ ही साथ क्रीट

तथा अन्य असंख्य द्वीप इजियन तथा आयोनियन सागरों में फैले हैं। यह भी एक पर्वतीय प्रदेश है। इस प्रायद्वीप का तट इतना छिन्न-भिन्न तथा कटावपूर्ण है कि यहाँ के निवासी सदैव से ही मुख्यतः नाविक तथा व्यापारी रहे हैं। देश का कोई भाग भी समुद्र से ८० मील से अधिक अन्तर पर नहीं है। यहाँ की जलवायु आदर्श-रूप से भूमध्यसागरीय है, परन्तु यहाँ पर जलवृष्टि पर्याप्त नहीं होती जिसके फलस्वरूप पानी की अल्पता के कारण कृषि-कार्य में कठिनाई पड़ती है। सन् १९५१ में सम्पूर्ण देश का क्षेत्रफल ५१,१६८ वर्गमील तथा आबादी ७६३ लाख थी।

यूनान देश में तीन प्राकृतिक विभाग हैं—(अ) प्रायद्वीप, (ब) मैसिडोनिया के तटीय प्रदेश तथा (स) द्वीपसमूह।

प्रायद्वीप में पशु-पालन तथा अंगूर की उपज—(अ) प्रायद्वीप नितान्त पहाड़ी भाग है। तटीय भाग निम्न भूमियाँ हैं। यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम भेड़-बकरी तथा पशुपालन है। यूनान में संसार के अन्य किसी भी देश की अपेक्षा प्रति वर्ग मील बकरियों की संख्या अधिक है। प्रायद्वीप के तटीय भागों में भूमध्यसागरीय उपज होती है। मोरिया के पश्चिमी तट पर प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में अंगूर को सुखाकर मुनक्का के रूप में बाहर भेज दिया जाता है। **दाख या मुनक्का के निर्यात में यूनान सबसे प्रधान देश है।** कभी-कभी तो अंगूर का उत्पादन इतना अधिक होता है कि अंगूर की कृषि पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। सन् १९५२ में मुनक्के का उत्पादन ९०,००० मीट्रिक टन था।

(ब) मैसिडोनिया के तटीय प्रदेश उपजाऊ होने के कारण कृषि उद्योग के लिए बड़े महत्वपूर्ण हैं। गेहूँ, कपास, चावल, जैतून तथा अंगूरों की यहाँ पर कृषि होती है। पूर्वी मैसिडोनिया की भूमि तथा जलवायु सर्वोत्तम तम्बाकू उत्पादन के लिए बड़ी उपयुक्त है।

यूनान की कृषि—यद्यपि यूनान एक कृषि-प्रधान देश है, परन्तु यहाँ की भूमि के एक पंचमांश पर ही खेती हो सकती है। यहाँ की खेती के ढंग प्राचीन हैं, अत. प्रति एकड़ उपज भी अत्यल्प होती है। यूनानी उद्योगों में सबसे महत्त्वपूर्ण उद्योग जैतून का तेल उत्पादन है। यूनान मे ऐसा कोई भाग नहीं है, जहाँ जैतून न पाया जाता हो।

यूनान के खनिज पदार्थ—खनिज क्षेत्र अधिक तो नहीं हैं परन्तु जो भी हैं वे बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ हैं—नमक, सीसा, स्फटिक तथा कच्चा लोहा। इनके अतिरिक्त जस्ता, ताँबा, चाँदी तथा सुरमा भी पाए जाते हैं। अटिका की लारियम नामी प्राचीन खानों का सीसा बहुमूल्य होता है, परन्तु मैगनेसाइट अपेक्षतः महत्त्वपूर्ण है जिसका वार्षिक उत्पादन लगभग ५०,००० टन होता है। क्रोमियम की खान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध में यूनान की मैगनेसाइट तथा क्रोमियम की खानों से जर्मनी को बड़ी सहायता मिली थी। युद्ध-सामग्री के लिए इन दोनों धातुओं की बड़ी आवश्यकता होती है और जर्मनी में उन दिनों इनका अभाव हो गया था।

यूनान के उद्योग व्यवसाय—यूनान के शिल्प उद्योग नितान्त अविकसित दशा में हैं। यहाँ के उद्योगों में ऊनी-सूती वस्त्रों का निर्माण, मदिरा तथा जैतून का तेल और रासायनिक पदार्थों का व्यवसाय सम्मिलित है। सिगार तथा सिगरेट भी बनाए जाते हैं। मदिरा तथा फलों का बड़े परिमाण में निर्यात होता है। खाद्य पदार्थों के लिए आत्मनिर्भर न होने के कारण यूनान को फलों और मदिरा के बदले में भोजन की वस्तुएँ मँगानी पड़ती हैं।

यूनान की सड़कें तथा रेलमार्ग—यूनान में अब १,५०० मील से भी अधिक लम्बे रेलमार्ग बन गए हैं परन्तु ये मार्ग अधिकतर पूर्वी भाग में ही सीमित हैं। प्रायद्वीप के उत्तर-पश्चिमी भाग में उनका नितान्त अभाव है। सड़कें अपर्याप्त हैं तथा बुरी दशा में हैं। यहाँ की नदियाँ भी छोटी तथा वेग प्रवाहयुक्त हैं, अतः यातायात के लिए निरर्थक हैं।

यहाँ का प्रत्येक प्रमुख नगर समुद्रतट पर स्थित है, अतः यहाँ के निवासी मुख्यतः नाविक रहे हैं। यूनान की समृद्धि समुद्री व्यापार पर ही अवलम्बित है। भोजन-सम्बन्धी वस्तुओं के लिए यूनान आत्मनिर्भर नहीं है, इसलिए भोजन की वस्तुएँ अधिकतर दक्षिणी देशों से समुद्रों द्वारा लाई जाती हैं। अतः यूनान के लिए समुद्री व्यापार का बड़ा ही महत्त्व है।

यूनान के प्रसिद्ध नगर—अथेन्स—राजधानी है। तीन सहस्र से अधिक वर्षों से यह नगर प्रसिद्ध रहा है। इसकी जनसंख्या ४ लाख के लगभग है। पिरोस (Piroeus) यूनान का प्रमुख बन्दरगाह है। यूनान का सबसे महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र **सालोनिका** है। यह नगर दक्षिणी यूरोप का एक प्रमुख बन्दरगाह है। इसकी स्थिति थैसालोनिका खाड़ी पर है। बाल्कन के अन्य प्रमुख नगरों से इसका सम्बन्ध रेलों द्वारा है। यहाँ से अनाज, पशु सम्बधी वस्तुएँ (खाल, हड्डी इत्यादि) तथा तम्बाकू का निर्यात होता है। इसके द्वारा वस्त्र तथा लोहे की वस्तुओं का आयात किया जाता है। **लारिसा, स्टावरोस, कालाबाका, एलेक्जेंड्रोपोलिस** तथा **कालाकोटोन** अन्य प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र हैं।

यूनानी द्वीपसमूह—(१) **क्रीट** एक लम्बा-पतला पर्वत-प्रधान द्वीप है। इसकी स्थिति ईजियन सागर के मुहाने पर है। यहाँ की जलवायु उष्ण तथा आर्द्र है। यहाँ के निवासी अधिकतर कृषि कार्य करते हैं। यहाँ से मदिरा तथा तेल का निर्यात होता है।

(२) **आयोनियन द्वीप** —यह द्वीपसमूह यूनान के पश्चिमी तट के परे है। इसमें अनेक छोटे पहाड़ी द्वीप जैसे कार्फ्यू, लवकस, कैफालोनिया, इथाका, जान्ते (Zante) तथा काईथरा (Kythera) सम्मिलित हैं। फलों का उत्पादन महत्त्वपूर्ण होता है।

(३) **ईजियन द्वीप समूह**—यह द्वीपसमूह अधिकतर अनुपजाऊ है, परन्तु यहाँ बड़ी मात्रा में मदिरा बनाई जाती है।

यूगोस्लाविया (Yugoslavia)

यूगोस्लाविया की स्थापना—यूगोस्लाविया में हंगरी के मैदान का दक्षिणी भाग तथा प्रायद्वीप का मध्य तथा उत्तर-पश्चिमी भाग सम्मिलित हैं। इसका अधिकृत नाम क्रोआटों तथा स्लोवनों का राज्य (Kingdom of Serbs Croats and Slovenes) है। प्रथम विश्व-युद्ध (१९१४-१९) के पश्चात् सर्विया तथा मान्टीनीग्रो के वोसनिया, डालमाटिया तथा क्रोटिया को मिलाकर (जो कि पहले आस्ट्रिया के साम्राज्य के भाग थे) एक संयुक्त राज्य की स्थापना की गई जिसका नाम यूगोस्लाविया पड़ा। यूगोस्लाव शब्द का अर्थ है दक्षिणी स्लाव। इस देश का क्षेत्रफल लगभग ९६,००० वर्ग मील है तथा इन सबकी जनसंख्या १ करोड़ ४० लाख है।

भूमि की वनावट—इस देश का अधिकतर भाग पहाड़ी है। पूर्व के पर्वत तो बाल्कन पर्वतों के भाग हैं तथा पश्चिमी पर्वत दिनारिक आल्पस हैं। दिनारिक आल्पस चूने के बने हैं। एड्रियाटिक तट के समीप तथा उत्तर-पूर्व में जो निम्न भूमियाँ हैं वे हंगरी के मैदान का ही क्रमिक विस्तार हैं।

कृषियोग्य भूमि तथा उपज की वस्तुएँ—पहाड़ी भूमि के कारण कृषियोग्य भूमि का बड़ा अभाव है। अधिक-से-अधिक एक चतुर्थांश भाग पर ही कृषि हो सकती है। कृषि की मुख्य उपज की वस्तुएँ गेंहूँ, मक्का, तम्बाकू तथा चावल इत्यादि हैं। खेती करने के ढंग भी अनुन्नत दशा में हैं। फलतः प्रति एकड़ उपज भी अत्यल्प है। यहाँ के ८० प्र. श. मनुष्य कृषक हैं। इसी कारण अधिकतर मनुष्य निर्धन हैं।

पशु-पालन, खनिज सम्पत्ति तथा वन-सम्पत्ति—यूगोस्लाविया में सहस्रों मनुष्यों के जीवन-निर्वाह का मुख्य आधार पशुचारण तथा पशुपालन ही है। देश के पूर्वी भाग में पशु—भेड़-बकरी तथा सुअर पाले जाते हैं। देश में पर्याप्त खनिज सम्पत्ति के साधन हैं। परन्तु अभी तक अविकसित दशा में हैं। यहाँ पर उपलब्ध खनिज पदार्थ कोयला, लोहा, ताँबा और सीसा है। परन्तु इनका उत्पादन अभी तक अधिक नहीं है। सन् १९५३ में उत्पादन इस प्रकार था—

कोयला	९२५००० टन
लोहा	७९५००० टन
ताँबा	१३४४००० टन

वनों की उपज यहाँ की आय का प्रमुख साधन है। यूगोस्लाविया के एक-तिहाई मनुष्यों को ओक, बीच तथा पाइन के वनों से भोजन तथा वस्त्रों की प्राप्ति होती है।

यूगोस्लाविया की सड़कें तथा रेल—देश की सड़कों तथा रेलों की बड़ी शोचनीय दशा है। १,५५,६२५ वर्गमील के क्षेत्रफल में केवल ११,५०० किलोमीटर लम्बा ही रेलमार्ग है। रेलें सरकार के अधिकार में हैं। बेलग्रेड रेलों का प्रधान केन्द्र है। यहाँ से दक्षिण-पूर्व में इस्तम्बोल तक तथा उत्तर में बुडापेस्ट तक रेलें जाती हैं। दक्षिण की ओर इनका सम्बन्ध सालोनिका से भी है। यूगोस्लाविया

में ४०,००० किलोमीटर लम्बी सड़कें हैं, जिनका औसत २·२५ किलोमीटर प्रति सहस्र मनुष्य पड़ता है।

औद्योगिक तथा व्यापारिक अवनति—आयात तथा निर्यात—आटा पीसने तथा मदिरा खींचने के अतिरिक्त इस देश में अन्य किसी प्रकार का शिल्प उद्योग नहीं होता। देश की औद्योगिक तथा व्यापारिक अवनति के अनेक कारण हैं जैसे—(१) कोयले का अभाव; (२) आवागमन के साधनों की कमी; (३) देश की पहाड़ी प्रकृति तथा राज्य-शासन की दुर्बलता। परन्तु देश में भावी उन्नति की महान् आशायें हैं। यहाँ से बहुमूल्य लकड़ी, मक्का, सुअर, अण्डे, मांस तथा पशुओं का मुख्यतया निर्यात होता है। मशीनें, वस्त्र तथा सूती माल, लोहे का सामान तथा भोजन की वस्तुओं का आयत किया जाता है। आयात-निर्यात व्यापार में पश्चिमी जर्मनी का भाग सबसे अधिक है। सन् १९५२ में २४ प्रतिशत निर्यात व्यापार और २० प्रतिशत आयत व्यापार पश्चिमी जर्मनी के साथ हुआ।

प्रसिद्ध नगर—**बैलग्रेड**—यूगोस्लाविया की राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या ४ लाख ९० हजार है। इसकी स्थिति आंतरिक उर्वर समतल भूमि में डैन्यूव तथा सार्वे (Sarve) नदियों के संगम पर है। यह नगर रेलों का भी केन्द्र है। **जग्रेब** इस देश का प्रमुख शिल्प उद्योग केन्द्र है। यह नगर सार्वे नदी पर स्थित है। यहाँ की जनसंख्या ३५०,००० है। बेलग्रेड, स्प्लिट तथा फियूम से भी यह रेलों द्वारा मिला हुआ है। **स्प्लिट** की स्थिति ऐड्रियाटिक तट प्रदेश में है अतः यह एक महत्वपूर्ण बन्दरगाह है। दो अन्य बन्दरगाह **कोठोर** तथा **सुसाक** हैं। **फियूम** यद्यपि इटली के अधिकार में है परन्तु यूगोस्लाविया के उत्तर-पश्चिमी भाग का प्राकृतिक द्वार है।

यूरोपीय तुर्किस्तान (Turkey in Europe)

स्थिति, विचार, जनसंख्या—तुर्की स्वतन्त्र राज्य है। इसके क्षेत्रफल का २३,४८५ वर्ग किलोमीटर यूरोप में और ७४३,६३४ वर्ग किलोमीटर एशिया में है। इस देश का विस्तार स्काटलैण्ड के आधे के लगभग है। इसकी स्थिति सेरिटजा नदी तथा काले सागर के मध्य में है। वासफोरस तथा दर्रेदानियाल के जलडमरूमध्य तथा मारमोरा सागर इसे एशियाई तुर्किस्तान से पृथक् करते हैं। इनका क्षेत्रफल केवल ११,००० वर्गमील तथा इसकी जनसंख्या २० लाख के लगभग है। तुर्किस्तान की स्थिति राजनैतिक तथा युद्ध-सम्बन्धी दृष्टिकोण से बड़े महत्त्व की है, कारण यह है कि रूस से भूमध्यसागर में जाने का मार्ग यहीं होकर है।

सत्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय तुर्किस्तान में समस्त बाल्कन प्रायद्वीप, रूमानिया तथा हंगरी सम्मिलित थे। इस शताब्दी के अन्तिम दिनों के साथ-साथ तुर्कों की शक्ति का भी ह्रास होने लगा। गत महायुद्ध के उपरान्त यह साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया तथा आज का यूरोपियन तुर्किस्तान, तुर्की प्रजातन्त्र का एक अंशमात्र रह गया है, जिसका केन्द्र एशिया में है।

निवासी तथा धंधे—यूरोपीय तुर्किस्तान के उत्तर तथा दक्षिणी भाग पर्वतीय

हैं तथा पूर्वी भाग समतल मैदान है। यहाँ पर कृषि उद्योग तथा भेड़-बकरी पालने का धंधा विशेषतया होता है। निवासी अधिकतर निर्धन तथा पुरानी लकीर के फकीर हैं।

नगर—इस्तम्बोल (कुस्तनतुनिया)—इस प्रजातन्त्र का सबसे बड़ा नगर है। इसकी स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। यहाँ पर काले सागर तथा भूमध्यसागर के समुद्री मार्गों को यूरोप तथा एशिया-माइनर के मध्य के थलमार्ग द्वारा पार करना पड़ता है। तुर्किस्तान की राजधानी न रहने के कारण अब इसकी महत्ता बहुत कुछ घट गई है। इस्तम्बोल की जनसंख्या ५ लाख से भी अधिक है।

गलीपोली (गलीबोलू)—प्राकृतिक समुद्री बेड़े की छावनी है तथा दर्रेदानियाल की रक्षा करता है। यह काले सागर और भूमध्यसागर के बीच २०० मील लम्बे जलमार्ग की रक्षा करता है। इस जलडमरूमध्य से हर प्रकार के जहाज आ सकते हैं। स्वेज और पनामा नहर के समान यह एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है। चूँकि काला सागर और भूमध्यसागर के बीच अन्य कोई मार्ग नहीं है इसलिए इसका व्यापारिक व युद्ध-सम्बन्धी महत्व बहुत अधिक है और इसी कारण ग्रेट ब्रिटेन व रूस दोनों ही देश इस मार्ग में समान रूप से दिलचस्पी रखते हैं।

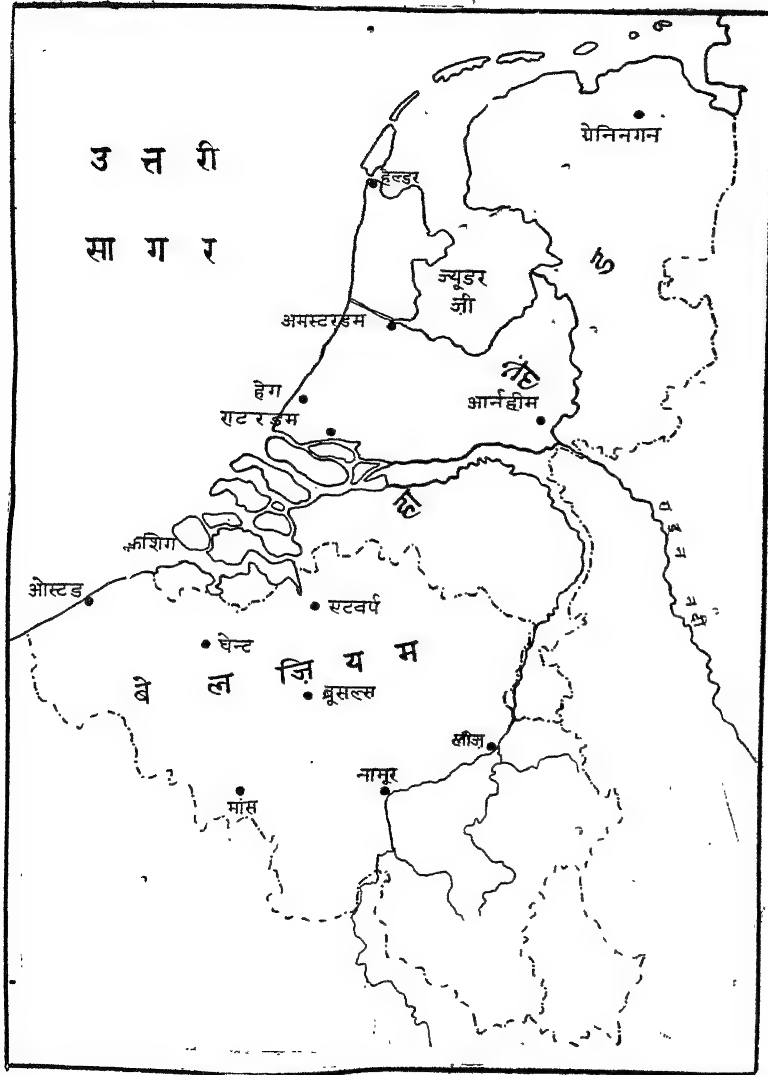
ग्रेट ब्रिटेन तो इसलिए इस मार्ग पर आधिपत्य रखना चाहता है क्योंकि पूर्व में उसके साम्राज्य से सम्पर्क रखने के लिए तथा स्वेज मार्ग की सुरक्षा के दृष्टिकोण से इस पर अधिकार रखना बड़ा ही आवश्यक है।

रूस एक विशाल राज्य है, परन्तु उसका किसी भी खुले हुए विस्तृत समुद्र में निकास नहीं है। रूस की सारी नदियाँ कैस्पियन और काले सागर में गिरती हैं जो सब ओर से स्थल खण्ड से घिरे हुए हैं। इसलिए केवल इस मार्ग से ही उसके व्यापारिक व सैनिक जहाज काले सागर से भूमध्य सागर में आ-जा सकते हैं।

नीदरलैंड्स (Netherlands)

निम्न प्रदेशों में समुद्र से अपहृत भूमि—यूरोप के सबसे छोटे देशों में से हालैंड एक है। यहाँ की जनसंख्या १०४ लाख तथा क्षेत्रफल १२,५७९ वर्गमील है। जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रतिवर्गमील ६८७ व्यक्ति पड़ता है। यह औसत यूरोप में दूसरे नम्बर का है। यह देश निम्नभूमि का है तथा इसका एक-चतुर्थ भाग तो वास्तव में समुद्र तल से नीचा है। हालैण्ड की ४९ प्र. श. भूमि तो समुद्र तल से बलपूर्वक छीनकर खेती योग्य बनाई गई है। समुद्रतट के निम्न भागों में समुद्र से सुरक्षित रखने के लिए बाँध या पुश्ते बाँधे गए हैं। पुनर्प्राप्त भूमि अथवा पोल्डरलैण्ड कृषि के लिए बड़ा ही उपयुक्त प्रदेश है। द्वितीय महायुद्ध से पूर्व जुइडर जी को थल में परिणत कर भूमि प्राप्त करने की योजना कार्यान्वित की जा रही थी। इस योजना के द्वारा ८,००० वर्गमील उपजाऊ समुद्री-भूमि के प्राप्त होने का अनुमान था। ज्यूडरजी को सुखाकर प्राप्त किये गए भाग का क्षेत्रफल ४७७ वर्ग किलोमीटर है। इसे नूरडूस्टेलाइक (Noordoostelike) कहते हैं।

जनसंख्या का घनत्व—जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक—एक वर्गमील में ६५९ व्यक्ति से भी अधिक है। प्रतिवर्ग मील जनसंख्या के विचार से हालैण्ड का संसार भर में चतुर्थ स्थान है।



चित्र ५१

प्रतिवर्ग किलोमीटर पर जनसंख्या का घनत्व (१९५२-५३)

हालैण्ड	३२०
पश्चिमी जर्मनी	१९७·५
संयुक्त राज्य	२०७·५
फ्रांस	७७·५
यूगोस्लाविया	६५
तुर्की	२७·५
स्वीडन	१५
सीरिया	२०
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२०
कनाडा	२·५

निवासियों पर समुद्र का प्रभाव—इस देश के मध्य वाल, लैक तथा येसिल तीन नदियाँ बहती हैं। यहाँ का समुद्रतट बहुत ही छिन्न-भिन्न है। समुद्र तट तथा धरातल की प्रकृति के कारण ही डच (Dutch) लोग मुख्यतया व्यापार-कुशल जाति बन गए हैं। डच लोगों ने अन्य देशों में प्रवास किया तथा उष्ण कटिबंध स्थित सम्पन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना की। ३०० वर्ष पूर्व हालैण्ड की समुद्री-शक्ति सभी देशों से बढ़कर थी। यहाँ की जलवायु समुद्री है तथा पूर्वी इङ्गलैण्ड की जलवायु के सदृश है।

कृषि-उद्योग—यहाँ पर विशेष रूप से गहरी खेती की जाती है। यहाँ की ७० प्र. श. से अधिक भूमि पर कृषि कार्य किया जाता है। खेती (कृषि) की उपज की मुख्य वस्तुएँ गेहूँ, जौ, जई, राई, सन, चुकन्दर तथा आलू हैं।

खेती और बगीचों का उत्पादन

(लाख गिल्डर)

	खेती की उपज	पशुपालन की उपज	बगीचों की उपज
१९४८-४९	७,५००	२१,२५०	५,०००
१९५०-५१	११,२५०	२७,५००	५,०००
१९५२-५३	१२,५००	३२,५००	६,२५०

खनिज पदार्थ के अभाव का कारण—देश की अधिकतर भूमि गंगवा र(नदियों द्वारा लाई हुई) होने के कारण देश में खनिज पदार्थों का अभाव है। केवल लिम्बर्ग में जोकि दक्षिणी हालैण्ड में है थोड़ा कोयला निकलता है। सन् १९५२ में कोयले का उत्पादन १२५ लाख टन था। सन् १९५३ में कच्चे तेल का उत्पादन ७१५,००० टन था। देश में नमक की भी खानें हैं।

हालैण्ड में अधिकतर वे ही उद्योग-धन्धे होते हैं जिनमें (१) कच्ची वस्तुओं तथा धन की अपेक्षा कुशलता की अधिक आवश्यकता हो, (२) जो कृषि उपज का प्रत्यक्ष परिणाम हो तथा (३) जो उपनिवेशों की माँग पर आधारित हों।

हालैः का उद्योग-व्यवसाय—यहाँ का उल्लेखनीय उद्योग पशुपालन तथा

भिन्न-भिन्न वस्तुओं का बनाना है। भूमि की उर्वरता तथा जलवायु की आर्द्रता के कारण यह देश दुग्धशालाओं के लिए आदर्श प्रदेश बन गया है। हालैंड (Netherlands) में **प्रतिवर्ग मील पशुओं की संख्या संसार के अन्य सभी देशों से अधिक है।** यहाँ पर दूध से मक्खन, पनीर, जमाया हुआ (गाढ़ा) दूध तथा दूध का चूर्ण व्यापक रूप में बनाया जाता है। यहाँ पर दुग्धशालाओं का इतना अधिक विकास हो गया है कि यहाँ के निवासियों को अपने भोजन के लिए अन्न उगाने की भी सुध नहीं है। आधुनिक समय में मनुष्यों के लिए भोजन की वस्तुएँ तथा पशुओं के लिए खली इत्यादि अन्य देशों से मँगाई जाती है। डच लोग अपनी सम्पन्नता के लिए अधिकतर दुग्धशाला उद्योग पर ही आश्रित रहते हैं।

विभिन्न व्यवसाय में लगे व्यक्तियों की संख्या

	खेती, मछली पकड़ना, शिकार करना	उद्योग, खान खोदना, भवननिर्माण और नौकरी	व्यापार, यातायात बैंक, बीमा	अन्य व्यवसाय
१९३०	६,५०,०००	१२,००,०००	७,००,०००	६,००,०००
१९४७	७,५०,०००	१३,००,०००	८,००,०००	८,००,०००

अन्य उद्योग—यहाँ के अन्य उद्योगों में मछली पकड़ना, चाकलेट तथा तम्बाकू की वस्तुएँ बनाना और हीरों का काटना सम्मिलित है।

१९३८ के स्तर पर बढ़ोतरी का प्रतिशत

	औद्योगिक उत्पादन	औद्योगिक मजदूर
१९४७	—	२५
१९५०	४०	५०
१९५३	६५	५५

समुद्र तल से नीचे के भागों में देश के समतल होने के कारण यहाँ की चक्कियों तथा शिल्पशालाओं में पवनशक्ति के उपयोग की सुविधा है।

विभिन्न उद्योग धन्धों से राष्ट्रीय आय

(लाख गिल्डर)

उद्योग धन्धे	१९४८	५०,०००
	१९५३	८५,०००
खेती और मछली पकड़ना	१९४८	१५,०००
	१९५३	२२,५००
व्यापार और यातायात	१९४८	३०,०००
	१९५३	४०,०००
अन्य व्यवसाय	१९४८	३५,०००
	१९५३	४५,०००

यातायात के साधन—देश की समतल भूमि के कारण सभी दिशाओं में यातायात की सुविधाएँ हैं। रेल तथा सड़क मार्गों की अपेक्षा जलमार्ग अधिक

महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ की नदियों तथा नहरों के जलमार्गों का विस्तार ४,००० मील से अधिक है।

माल का अन्तर्राष्ट्रीय यातायात (१६५३)
(लाख टन)

समुद्र द्वारा माल का यातायात		
	आयात	३६१
	निर्यात	१७८
स्थल मार्गों द्वारा माल का यातायात		
रेल द्वारा—	आयात	४७
	निर्यात	२६
आन्तरिक जल	आयात	२६९
मार्गों द्वारा—	निर्यात	३३२

व्यापार, आयात तथा निर्यात—इस देश में विशाल परिमाण में पुर्ननिर्यात व्यापार होता है। यहाँ के व्यापारी पोतसमूह का संसार में आठवाँ स्थान हैं। यहाँ से निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ—जमा हुआ दूध, पनीर तथा मक्खन इत्यादि हैं।

नेदरलैंड की खेतिहर उपज का निर्यात
(लाख गिल्डर)

	खेती की उपज	पशुपालन की उपज	बगीचों की उपज
१९४९	१७५०	१२५०	३०००
१९५१	१७५०	३२५०	३७५०
१९५३	२५००	३७५०	४२५०

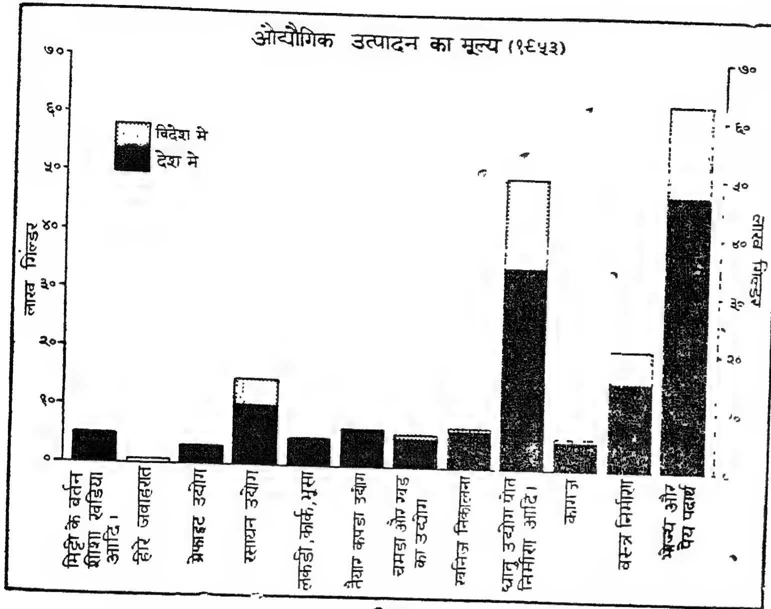
यहाँ पर कोयला, सूती वस्त्र तथा यंत्र इत्यादि का आयात किया जाता है। हालैंड को भोजन की वस्तुएँ जुटाने वाला देश जर्मनी है। हालैंड की एक-चौथाई आयात की वस्तुओं की पूर्ति जर्मनी ही करता है। यहाँ की वस्तुओं के प्रधान ग्राहक भी संयुक्त राज्य (U. K.) तथा जर्मनी हैं। इनके अतिरिक्त इण्डोनेशिया, बेल्जियम, संयुक्तराष्ट्र तथा अर्जेण्टाइना आदि देशों से भी व्यापार होता है।

आयात और निर्यात का प्रति व्यक्ति पर औसत (डालर में)

	आयात	**निर्यात**
हालैंड	२२५	२०५
संयुक्त राज्य	१८०	१४५
फ्रांस	९५	९०
पश्चिमी जर्मनी	७५	९०
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	७०	१००

एम्सटर्डम—यहाँ का सबसे विशाल नगर तथा राजधानी है। यह जुइडर जी (Zuider Zee) के पश्चिम में स्थित है। उत्तरी सागर से यह नगर नहर

द्वारा मिला हुआ है। इस नगर के द्वारा इन्डोनेशिया से व्यापार होता है तथा यहाँ पर रबर, कोको, राँगा (टिन), चावल, मसाले, तम्बाकू तथा गोलों (Copra) का आयात किया जाता है। यहाँ पर हीरों की कटाई तथा पालिश का कार्य भी महत्व-पूर्ण है।



चित्र ५२

राटरडम—यह हालैंड का प्रसिद्ध पाताश्रय है। यह राइन नदी की एक शाखा पर स्थित है तथा समुद्र से इसका सम्बन्ध 'हुक आफ हालैंड' (Hook of Holland) नामक स्थान पर "New-waterway" नाम की नहर द्वारा होता है। राइन के कछार की उपज के लिए यह नगर एक प्राकृतिक द्वार है। हालैंड का तीन-चतुर्थांश व्यापार इसी पोताश्रय द्वारा होता है। यहाँ से निर्यात की मुख्य वस्तुएँ सन तथा सन के वस्त्र, दुग्धशाला की वस्तुएँ तथा पशु हैं। आयात की प्रमुख वस्तुएँ चावल, चीनी, नील, कोयला तथा मिट्टी का तेल है। राटरडम का अधिक-तर व्यापार जर्मनी तथा इण्डोनेशिया से होता है। **हेग**—राजधानी है। यहाँ पर बर्तनों का काम अधिक होता है। यह नगर अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण है। अन्य केन्द्रीय स्थान युट्रैक्ट, हारलम तथा **फ्लाशिंग** हैं।

बेल्जियम (Belgium)

बेल्जियम यूरोप का एक छोटा-सा देश है। यह फ्रांस तथा हालैंड के बीच स्थित है। यहाँ पर गर्मियो में गर्मी तथा जाड़ों में ठंड पड़ती है।

बेल्जियम का उत्तरी भाग एक मैदान है। इसमें तटीय प्रदेश सम्मिलित हैं। बेल्जियम का तट ४० मील लम्बा तथा सपाट है। रेतीले तट के बिल्कुल नीचे का

१० मील के लगभग चौड़ा प्रदेश 'पोल्डर' अथवा समुद्र से प्राप्त दलदली भूमि है जो कि कृषि के लिए प्रसिद्ध हो गया है। उत्तरी बेल्ज़ियम के फ्लैण्डर्स प्रदेश में समतल भूमि तथा निम्न पहाड़ियाँ सम्मिलित हैं। बेल्जियम के पशुओं की सबसे अधिक संख्या इसी प्रदेश में है तथा कुछ उद्योग-धन्धों का भी विकास हुआ है। **बेल्जियम का मध्य भाग** उत्तरी फ्रांसके कोयला-क्षेत्र तथा उर्वर मैदान का ही विस्तार है। इस भाग में शैल्ट नदी का कछार तथा डच सीमा का समीपवर्ती कैम्पाइन प्रदेश भी सम्मिलित हैं। मध्य भाग कृषि-प्रधान प्रदेश है। खनिज केन्द्रों का भी विकास होता जा रहा है। **दक्षिणी बेल्जियम** में आर्डिनीज के पठार हैं जो कि लक्समवर्ग तक चले गए हैं।

बेल्जियम की जनसंख्या अत्यन्त घनी है। यहाँ ८७ लाख मनुष्य रहते हैं। प्रतिवर्ग मील जनसंख्या २१७ है जो कि यूरोप भर में सबसे अधिक है। फ्लैण्डर्स में तो जनसंख्या ९९० व्यक्ति प्रति वर्गमील तक है। इतनी घनी जनसंख्या का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए १९वीं शताब्दी के मध्य में इस देश को उद्योग-व्यवसायों को अपनाना पड़ा। यहाँ के भिन्न-भिन्न उद्योग-व्यवसायों को खनिज क्षेत्रों तथा आंतरिक और वैदेशिक दोनों प्रकार के ही व्यापारों की असाधारण सुविधायें प्राप्त हैं। (१) समुद्री व्यापारिक मार्गों के केन्द्र-बिन्दु के समीप की स्थिति, (२) फ्रांस, जर्मनी, हालैंड आदि तीन व्यापारी देशों से सम्बन्ध तथा (३) इंग्लैंड की समीपता के कारण यहाँ पर अनेक व्यापारिक सुविधाएँ हैं। इनके अतिरिक्त यह देश राइन नदी के मुहाने के समीप स्थित है जोकि यूरोप महाद्वीप की प्रधान व्यापारिक नदी है।

कृषि दुग्धशाला तथा खनिज उद्योग—यद्यपि बेल्जियम अत्यधिक औद्योगिक देश है, खेती का प्रमुख स्थान है और उसमें काफी लोग लगे हुए हैं। खेती में लगी हुई पूँजी और उसकी उपज के मूल्य के आधार पर भी खेती को बेल्जियम का महत्वपूर्ण धंधा कहा जा सकता है। देश के ६० प्रतिशत भाग पर खेती होती है। खेती का धंधा सयत्न तथा वैज्ञानिक तरीकों से किया जाता है। परन्तु उत्पादन से माँगपूर्ति नहीं होती। गेहूँ, जौ, जई, आलू और चुकन्दर यहाँ की प्रधान फसलें हैं। देश के आर्थिक जीवन में दुग्धशाला उद्योग का विशेष महत्व है। परन्तु अपनी खेतिहर उपज को अन्तर्राष्टीय मंडियों में भेजने में असमर्थ है। अपने घरेलू उपभोग के लिए भी उसका उत्पादन काफी नहीं होता।

कोयला, लोहा तथा जस्ता इत्यादि इस देश में पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं। देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में लोहा तथा कोयला पास-ही-पास मिलते हैं, अतः वहाँ पर लोहे तथा इस्पात के बड़े-बड़े कारखाने हैं। उद्योग-धंधों के प्रमुख केन्द्र मोन्स, चार्लीआय, समूर तथा वरवियर्स हैं। लीस नदी के बेसिन के उत्तर-पूर्वी भाग में भी कोयला-क्षेत्रों का पता लगा है। जस्ते की प्राप्ति में संयुक्तराष्ट्र तथा कनाडा के उपरान्त बेल्जियम का तीसरा स्थान है। बेल्जियम के उपनिवेशों में खनिज पदार्थों की बहुलता के कारण बेल्जियम को ताँबे, सीसे तथा राँगे की यथेष्ट मात्रा मिल जाती है।

बेल्जियम एक महान् शिल्प उद्योग-सम्पन्न देश है। द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण इसके उद्योग-धन्धों को बहुत अधिक हानि हुई। १९४७ में यहाँ के कारखानों की वस्तुओं का उत्पादन युद्धपूर्व काल का ९३ प्र० श० था। सन् १९५२ में औद्योगिक उत्पादन युद्धपूर्व से कहीं आगे बढ़ गया था।

बेल्जियम का उत्पादन (सहस्र मीट्रिक टन)

	१९३६-३८	१९५१-५२		१९३६-३८	१९५१-५२
ढला हुआ लोहा	२६१	४८४	इस्पात	२०४	३८८
			सीमेंट	२५०	२१७
खनिज लोहा	२५३	२३५	कोयला	२,४२५	२,९६६

बेल्जियम का उत्पादन (१९५३)

(हजार मीट्रिक टन)

कोयला	३०३८४
ढलुवाँ लोहा	४७७४
ढलुवाँ इस्पात	४९९५
पक्का इस्पात	३७६२
कच्ची चीनी	१८९

बेल्जियम में उद्योग-व्यवसायों की स्थिति—कुछ शिल्प उद्योगों में कुशल कारीगरों के अभाव तथा पुरानी मशीनों के प्रयोग करने के कारण उत्पादन मे असमानता रही है। इस देश में वस्त्र उद्योग सबसे महत्वपूर्ण है। इस उद्योग में प्रत्येक प्रकार के रेशे जैस सूत, ऊन, सन, पटसन, कृत्रिम रेशम आदि व्यवहार में लाये जाते हैं। तकवों तथा करघों की संख्या तथा कारीगरों की संख्या के विचार से बेल्जियम के वस्त्र उद्योगों में सूती वस्त्र उद्योग सबसे महत्वपूर्ण तथा ऊनी वस्त्रों का धन्धा सबसे पुराना है। अब इस व्यवसाय का केन्द्र देश के पूर्वी भागों की ओर हो गया है जहाँ कि पानी की सुविधा है और इस पानी में धुलाई के लिए विशेष गुण हैं। घैण्ट (Ghent), ऐन्टवर्प तथा कोर्टराय (Courtrai) में सूती वस्त्र उद्योग तथा वरवियर्स में ऊनी वस्त्र बनाये जाते है। खेण्ट, कोर्टराय, राउलर्स (Roulers) तथा तूर्न (Tournai) सन के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। (१) जुलाहों की परम्परागत कार्यकुशलता, (२) मध्य के मैदानों में सन की विशाल उपज तथा बेल्जियम के कोयला-क्षेत्रों से कोयले की सुविधा के कारण सन के वस्त्र-उद्योग को बड़ी सहायता मिली है। यहाँ पर संसार का २ प्र० श० फौलाद (Steel) बनाया जाता है। यहाँ पर इस्पात से ढला हुआ सामान, चादरें, रेलों का सामान, जहाज, मोटर, मशीन औजार तथा गृह-निर्माण सम्बन्धी अनेक वस्तुएँ बनाई जाती हैं। सन् १९४७ में लोहे के बने हुए सामान की निर्यात मात्रा कुल निर्यात का १५ प्रतिशत थी। यहाँ

के अन्य उद्योग-धन्धे रसायन, शीशा, चमड़ा और रबड़ की वस्तुओं के निर्माण से सम्बन्धित हैं।

बेल्जियम का रसायन उद्योग यूरोप महाद्वीप पर सबसे पुराना है और यह विश्व के प्रथम ६ रसायन निर्यातक देशों में से एक है। इस उद्योग में देश के कोई ५०००० व्यक्ति लगे हुए हैं और सन् १९५१ में इस उद्योग के उत्पादन का मूल्य २२००० लाख फ्राँक या २१३० लाख रुपये था। सन् १९५१ में विश्व का रसायन उत्पादन ३२०००० लाख डालर मूल्य का था जिसमें विभिन्न देशों का भाग इस प्रकार था—

संयुक्तराष्ट्र अमरीका	५० प्र० श०
पश्चिमी जर्मनी	५ प्र० श०
संयुक्त राज्य	४ प्र० श०
बेल्जियम	१·१ प्र० श०
स्विट्जरलैंड	०·१ प्र० श०

विभिन्न देशों में रसायन उत्पादन का प्रति व्यक्ति पर औसत इस प्रकार था—

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१०६ डालर
स्विटजरलैण्ड	४१ डालर
बेल्जियम	३६ डालर
संयुक्त राज्य	३४ डालर
पश्चिमी जर्मनी	३२ डालर

तेजाब, अमोनियम सल्फेट, सुपरफासफेट, खाद, विस्फोटक आदि के उत्पादन में बेल्जियम का स्थान सबसे आगे है।

यातायात के साधन—यहाँ पर उत्तम थल, जल तथा हवाई मार्गों का सुचारु विस्तार है जिससे व्यापार में बड़ी सहायता मिलती है। पश्चिमी यूरोपीय देशों के मार्गों के मिलनस्थान पर स्थित होने से बेल्जियम में यूरोप के भिन्न-भिन्न प्रमुख स्थानों को जानेवाला ६००० किलोमीटर लम्बा रेलमार्ग है। ब्रुसेल्स रेलों का केन्द्र है। नदियाँ भी नाव्य हैं तथा नहरों द्वारा सम्बन्धित हैं। बेल्जियम के हवाई-मार्ग यूरोप के सभी भागों को जाते हैं।

व्यापार, आयात तथा निर्यात—इस देश के समीपवर्ती देशों अर्थात् फ्राँस, जर्मनी, हालैंड, इंग्लैंड तथा डेनमार्क से घनिष्ट व्यापार होता है। संयुक्तराष्ट्र, कनाडा, अर्जेण्टाइना, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका से भी इसका व्यापारिक सम्बन्ध है। गेहूँ, खनिज लोहा, खनिज तेल, लकड़ी, ऊन, रुई, ताँबा, फासफेट, कहवा तथा अन्य उपज की वस्तुओं का इसके उपनिवेशों से महत्त्वपूर्ण आयात होता है। यहाँ से लोहे तथा इस्पात की बनी वस्तुएँ, कोयला तथा कोक, रासायनिक पदार्थ तथा खाद इत्यादि बाहर भेजे जाते हैं।

बेल्जियम से निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ लोहा तथा इस्पात, सीसा, सूती माल, जस्ते की वस्तुएँ तथा सीमेंट हैं।

१९४९ में निर्यात (समस्त मूल्य का प्र.श.)		१९४९ में (आयात समस्त मूल्य का प्र.श)	
निर्मित वस्तुएँ	५४	भोजन सामग्री	२१
कच्ची वस्तुएँ	३९	कच्ची वस्तुएँ	४९
भोजन सामग्री	६	निर्मित वस्तुएँ	२८

प्रधान नगर

ब्रुसेल्स—राजधानी है और यह Seinne नदी पर स्थित है। कोयला क्षेत्र तथा समुद्र के मध्य अपनी उत्तम स्थिति के कारण ही यह एक व्यापारिक केन्द्र बन गया है। यहाँ पर लेस, दरियाँ, मेज, कुर्सी तथा कागज आदि वस्तुएँ बनती हैं। रेलों तथा नहर द्वारा यह ऐण्टवर्प से सम्बन्धित है।

ऐण्टवर्प—शेल्ट नदी की खाड़ी पर बेल्जियम का सबसे महान् बन्दरगाह है। यहाँ से विशाल मात्रा में पुनर्निर्यात व्यापार होता है। यह बन्दरगाह हैम्बर्ग तथा राटर्डम की ही टक्कर का है। इसके पृष्ठ प्रदेश में बेल्जियम के अतिरिक्त पूर्वी फ्राँस का कुछ भाग, राइन तथा रूर की घाटी सम्मिलित हैं। यह एक प्रधान औद्योगिक केन्द्र भी है। **लीज**—बेल्जियम के कोयला क्षेत्र के मध्य भाग में स्थित है। यह नगर रासायनिक पदार्थों, शीशे तथा धातु के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है। **घेंट**-सनी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है।

वरवियर्स—दक्षिणी पहाड़ों में ऊनी वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है।

लक्समबर्ग में कृषि तथा लोहा—लक्समबर्ग यूरोप में सबसे छोटा स्वतन्त्र राज्य है। इसका क्षेत्रफल ९९९ वर्गमील तथा जनसंख्या २,९५,००० है। उत्तरी लक्समबर्ग के लोग खेती करते तथा भेड़-बकरी पालते हैं। दक्षिणी लक्समबर्ग लोहे के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रतिवर्ष ३० लाख टन लोहा तथा २५,००,००० टन इस्पात का उत्पादन होता है जोकि अधिकतर फ्राँस तथा जर्मनी को भेज दिया जाता है। व्यापारिक दृष्टिकोण से १९२१ से इसका सम्बन्ध बेल्जियम से है।

डेनमार्क (Denmark)

स्थिति, रचना तथा जन-संख्या—डेनमार्क का क्षेत्रफल लगभग १७,००० वर्गमील तथा नार्वे के तट से इसकी स्थिति ७० मील दक्षिण की ओर है। इसका क्षेत्रफल स्वीडन का दशमांश तथा नारवे का अष्टमांश है। इसमें जटलैंड प्रायद्वीप तथा अन्य अनेक द्वीप सम्मिलित हैं जिनमें फ्यूनन (Fuenen), जीलैंड तथा लीलैंड मुख्य द्वीप हैं। देश का दो-तिहाई क्षेत्रफल जटलैंड प्रायद्वीप को घेरे हुए है। यह देश मैदानों तथा नीची पहाड़ियों से बना है। इस देश में कोई भाग भी ५५० फीट से अधिक ऊँचा नहीं है। उत्तरी सागर तथा बाल्टिक सागर के मध्य सभी प्राकृतिक मार्गों पर इसका अधिकार होने से इस देश की स्थिति महत्वपर्ण हो गई है।

डेनमार्क का पश्चिमी भाग एक ऊँचा-नीचा मैदान है जिसके तट रेतीले होने के कारण यहाँ की जनसंख्या बिखरी है। परन्तु सागर की ओर उर्वर भूमि है और यहाँ जनसंख्या भी अधिक है। १९५० में डेनमार्क की जनसंख्या ४२ लाख थी। यहाँ की जनसंख्या में एक ही जाति के लोग हैं। यहाँ के निवासी एक ही भाषा-भाषी तथा एक ही धर्मावलम्बी हैं।

डेनमार्क के प्राकृतिक साधन—डेनमार्क में प्राकृतिक सम्पत्ति का अभाव है। काओलिन के अतिरिक्त, जिससे कि बर्तन बनते हैं, यहाँ पर अन्य कोई भी खनिज पदार्थ नहीं मिलता। नदियाँ भी नौका-संचालन अथवा जलविद्युत् निर्माण के लिए निरर्थक हैं। कभी इस देश का बड़ा भाग वनों से ढका था परन्तु अब वन काटकर भूमि पर कृषि की जाती है। इसी कारण यहाँ पर लकड़ी चीरने का उद्यम भी नहीं होता है और डेनमार्क में वन-सम्पत्ति का अभाव हो गया है।

डेनमार्क में कृषि की स्थिति—डेनमार्क सदा से ही कृषि-प्रधान देश रहा है। कभी यहाँ पर गेंहूँ का उत्पादन तथा निर्यात विशाल परिमाण में होता था परन्तु १८७० के पश्चात् यूरोप में अमरीकन गेंहूँ के आयात के कारण इस व्यवसाय को बड़ा धक्का लगा और डेनमार्क के कृषक को गेंहूँ का धंधा त्यागकर पशु-पालन उद्योग को अपनाना पड़ा। यहाँ की समस्त भूमि का ७५ प्रतिशत भाग कृषि-योग्य है। यहाँ पर अनाज तथा अन्य उपज की वस्तुओं का उत्पादन अधिकतर पशुओं को चराने के लिए होता है। खेती की उपज का ८८ प्र. श. भाग पशुओं, घोड़ों, सुअरों तथा मुर्गियों को खिलाने के काम में आता है।

दुग्धशाला उद्योग—डेनमार्क का देश दूध के लिए पशु-पालन के लिए संसार-प्रसिद्ध हो गया है। दुधारू गायों का पालना तथा दूध का उत्पादन ही डेनमार्क के कृषि-उद्योग का आधार-स्तम्भ हो गया है। देश की आय का मुख्य साधन गोपालन उद्योग ही है। यहाँ के निवासी मक्खन, पनीर, दूध आदि के बदले ही अन्य देशों से आवश्यकता की वस्तुएँ मँगाते हैं। यहाँ की दुग्धशालाओं की विशेष महत्ता निम्न-लिखित कारणों से है :—(१) बड़े-बड़े शिल्प उद्योगों के आधार साधनों का अभाव अर्थात् यहाँ पर न तो कोयला, लोहा ही है और न जलशक्ति तथा कच्ची वस्तुएँ ही उपलब्ध होती हैं। (२) यहाँ की जलवायु घास इत्यादि की ही उपज के लिए अधिक अनुकूल है। (३) यहाँ के अधिकतर खेत बहुत छोटे हैं जिससे कि प्रत्येक कुटुम्ब को छोटे-छोटे खेतों से ही अधिक मात्रा में उपज प्राप्त करना अनिवार्य है। (४) डेनमार्क में कृषि योग्य भूमि को खेती की अपेक्षा पशुओं के लिए चारा उगाने के उद्योग में लाने की पूर्ण व्यवस्था कर ली गई है। इस प्रकार तृणभूमि अथवा गोचरण भूमि के उतने ही क्षेत्रफल में अधिक पशुओं का निर्वाह हो सकता है। परन्तु **डेनमार्क में दुग्धशालाओं (डेरी फार्मिंग) की सफलता का मुख्य कारण सहकारिता है।** यहाँ की ८८ प्र० श० दुग्धशालाओं का संचालन तथा ९२ प्र० श० दूधध का काम सहकारी समितियों द्वारा होता है। ये समितियाँ सरकारी आज्ञा से नहीं बनीं परन्तु इनका विकास देशव्यापी प्रौढ़ शिक्षा का परिणाम है। इन समितियों में सभी

किसान साझेदार हैं। इन समितियों का उद्देश्य ग्राहकों का विश्वास प्राप्त करने के लिए आदर्श तथा श्रेष्ठतम श्रेणी की वस्तुओं का ही उत्पादन रहा है। यहाँ के डेरी फार्मों तथा निर्यात की वस्तुओं पर सरकार का भी कठोर निरीक्षण रहता है। आजकल देश में ९,००० के लगभग सहायक समितियाँ कार्य कर रही हैं। ८० प्र. श. दूध का मक्खन तथा १० प्र० श० का पनीर तथा गाढ़ा दूध बनाया जाता है तथा शेष दूध घरेलू उपभोग में लाया जाता है।

डेनमार्क में दुग्धशाला का उत्पादन (१९५२)
(हजार मीट्रिक टन)

दूध	५३८८	गोमांस	१९१
मक्खन	१७३	सूअर का मांस	४८७
पनीर	८७	अंडे	१३६

व्यापार—यहाँ से निर्यात की प्रधान वस्तुएँ दुग्धशाला-उद्योग का उत्पादन वनस्पति तेल से बनी वस्तुएँ, सीमेंट, खड़िया, मछली, जिन्दा पशु और अंडे हैं। रोटी, पशुओं का चारा, फल, शराब, चीनी, काष्ठ मांड तथा कागज, रसायन, धातु की वस्तुएँ, वस्त्र, सूत, खनिज तेल, कोयला और कोक आयात किया जाता है। डेनमार्क से निर्यात की वस्तुओं में ७६ प्रतिशत दुग्धशालाओं की उपज की वस्तुएँ होती हैं। इनमें से दो-तिहाई भाग से अधिक वस्तुएँ इंग्लैंड को जाती हैं। डेनमार्क का १७ प्रतिशत निर्यात तथा २८ प्रतिशत आयात का व्यापार जर्मनी से होता है।

मछली उद्योग तथा व्यापारिक पोत—देश की आदर्श स्थिति के कारण यहाँ पर मछली व्यवसाय तथा व्यापारिक पोत समूहों का बड़ा विकास हुआ है, परन्तु डेनमार्क की समृद्धि इस बात पर निर्भर रहेगी कि यह पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक प्रदेशों को भोजन की सामग्री जुटाता रहे।

मुख्य नगर—**कोपेनहेगन**—इस देश का सबसे बड़ा नगर है। यह नगर जीलैंड के पूर्वी तट पर स्थित है। डेनमार्क की जनसंख्या के एक-पंचमांश लोग इसी नगर में निवास करते हैं। यह नगर जल तथा थल मार्गों का मिलन-स्थान है। कील नहर के खुल जाने से इसके व्यापार को हानि हुई है। यह नगर बाल्टिक प्रदेशों की सामग्री के क्रय-विक्रय के लिए पुनर्निर्यात केन्द्र है। इन प्रदेशों की मुख्य वस्तुएँ सूती माल, जूते, बीअर, मदिरा तथा बर्तन हैं। **ऐस्बजर्ग**—जटलैंड के पश्चिमी तट पर स्थित मछलियों का प्रसिद्ध केन्द्र है। देश के पूर्वी भाग में दो अन्य बड़े नगर **आरहूस** तथा **ओडन्स** हैं।

स्कैंडिनेविया (Scandinavia)

स्कैंडिनेविया का प्रायद्वीप यूरोप में सबसे बड़ा है। इसमें नारवे तथा स्वीडन शामिल हैं।

स्थिति, विस्तार तथा जलवायु—स्कैंडिनेविया प्रायद्वीप का पश्चिमी भाग नारवे एक पतला तथा लम्बाकार देश है जिसका क्षेत्रफल १,२५,००० वर्गमील है।

यद्यपि यह देश अधिक उत्तर में स्थित है परन्तु इसके तट कभी नहीं जमते। इसका कारण यह है कि नारवे के सम्पूर्ण तट पर गल्फ स्ट्रीम नामी उष्ण जलधारा तथा पछुआ हवाओं का प्रभाव पड़ता रहता है। यहाँ का समुद्र तट फियर्डों (Fiords) के कारण अत्यन्त छिन्न-भिन्न है तथा तट से जुड़े हुए अनेक पहाड़ी द्वीप हैं। फियोर्ड — जोकि लम्बे पतले ढालू कटान में हैं वास्तव में निमग्न घाटियाँ हैं। कहीं-कहीं तो फियोर्डों के पार्श्व, समकोण के रूप में कई सौ फीट उठे हुए हैं। यहाँ की नदियों में सुन्दर प्रपात बने हुए हैं।

कृषियोग्य भूमि—देश का दो-तिहाई भाग नितान्त अनुपजाऊ भूमि से बना है। इसके अतिरिक्त ५,१२१ वर्गमील पर झीलें तथा नदियाँ हैं और २६,००० वर्गमील पर वनों का विस्तार है। नारवे की समस्त भूमि के केवल ३·६ प्र०श० भाग पर खेती की जाती है।

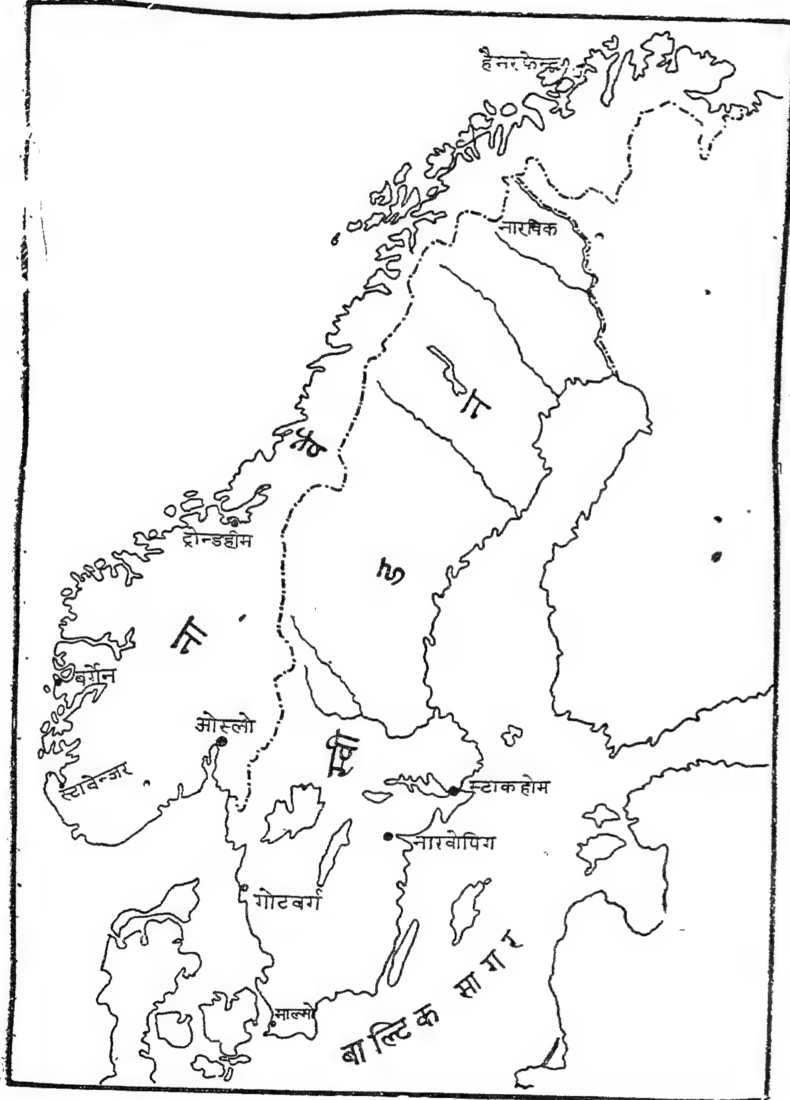
यहाँ की जनसंख्या लगभग ३३ लाख है तथा जनसंख्या के घनत्व का औसत प्रतिवर्ग मील २३ व्यक्ति है। इस देश के दक्षिण-पूर्वी भाग में ही अधिक लोग रहते हैं। यहाँ के निवासियों के प्रमुख व्यवसाय अधिकतर कृषि, मछली, वन तथा शिल्प-सम्बन्धी हैं।

कृषि उद्योग तथा उपज—कुल क्षेत्रफल के केवल ३ प्रतिशत भाग पर ही खेती होती है और खेती का कार्य दक्षिण-पूर्व के सुरक्षित मैदानों में ही सीमित है फिर भी देश के २१ प्र० श० से अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती पर ही निर्भर है। गेंहूँ, जौ, जई, राई, आलू मुख्य उपज होती हैं। आधुनिक काल में दुग्धशालाओं का पर्याप्त विकास हुआ है। अनाज की खेती त्यागकर लोग अधिकतर दुग्धशालाओं की ओर झुकते जा रहे हैं और अब यहाँ से डेरी की उपज की वस्तुओं का निर्यात भी होने लगा है।

नारवे में मछली व्यवसाय तथा उसके केन्द्र—मछली पकड़ना देश का महत्त्वपूर्ण उद्योग है। सन् १९५२ में इस उद्योग में कोई ८५,००० व्यक्ति लगे हुए थे। मुख्य मछलियाँ काड तथा हैरिंग हैं। अधिक छिन्न-भिन्न तटों तथा समीपस्थ संरक्षक द्वीपों में मछली पकड़ने वालों के लिए असंख्य पोताश्रय तथा मछलियों के लिए अंडे देने के उत्तम स्थान हैं। उत्तर में फिनमार्क तथा लोफोटन द्वीप के चारों ओर काड जाति की मछली पाई जाती है तथा स्टेवेंजर और हेगसूंड के दक्षिण में हैरिंग मछलियों की बहुलता है। जिन यूरोपीय देशों में मछलियाँ नहीं पाई जातीं उनमें ये मछलियाँ तुरन्त ही बिक जाती हैं। यहाँ के काड-लिवर आयल तथा अन्य मछलियों के तेलों की संसार में बड़ी माँग रहती है। सन् १९५२ में समुद्र से १६ लाख टन मछलियाँ पकड़ी गईं। स्टेवेंजर में मछलियों को बाहर भेजने के लिए डिब्बों में भरा जाता है। क्रिश्चियनसूंड सूखी मछलियों के व्यापार का केन्द्र है। वर्जन बन्दरगाह से मछलियों का निर्यात होता है। हैमरफैस्ट तथा ट्रोम्सो उत्तरी भाग में मछलियों के केन्द्र हैं।

नारवे की वन-सम्पत्ति—यद्यपि नारवे के एक-चतर्थ भाग पर वन फैले हुए

हैं, परन्तु वनों के लिए दक्षिण पूर्वी भाग सवसे प्रसिद्ध है। चीड़ के पेड़ ८४ प्रतिशत वन-भूमि में पाये जाते हैं। यहाँ के वनों की उपज बड़ी महत्वपूर्ण है तथा निर्यात की वस्तुओं का एक-तिहाई भाग वनों की उपज ही होती है। नारवे में ईंधन तथा मकानों में वहुमूल्य लकड़ी का पर्याप्त उपयोग होने पर भी बहुत-सी लकड़ी वच जाती है। यह अवशिष्ट लकड़ा पहले काठ-कबाड़ के रूप में अन्य देशों



चित्र ५३—स्कैंडिनेविया

को भेज दी जाती थी, परन्तु आजकल नारवे से अधिक लकड़ी का निर्यात नहीं होता। देश में ही इसका काष्ठ-मण्ड तथा कागज बनाया जाता है। वार्षिक उत्पादन लगभग १२० लाख घन मीटर है। सन् १९५३ में ७० लाख घन मीटर लकड़ी लुग्दी और अन्य उद्योग के लिए काटी गई।

नारवे के खनिज पदार्थ—यहाँ पर खनिज पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ कच्चा लोहा, ताँबा तथा चाँदी हैं। कोयले का नितान्त अभाव है। स्पिट्सवर्जन में ही कोयले की कुछ खानें हैं। दूर उत्तर में फिनलैंड की सीमा पर कच्चा लोहा प्राप्त होता है। पर्वतों की प्राचीन चट्टानों में उत्तम ग्रेनाइट मिलता है।

नारवे के व्यापारिक पोतसमूह का विकास—नारवे में पोतनिर्माण उद्योग का भी बड़ा विकास हुआ है। नारवे के लोग संसार के उत्तम नाविकों में गिने जाते हैं। नारवे का व्यापारिक पोतसमूह संसार में पाँचवें नम्बर पर है। इसमें मुख्यतया ट्रैम्प स्टीमर्स (Tramp Steamers) ही अधिक हैं। नारवे की भौगोलिक स्थिति, इसके असंख्य उत्तम पोताश्रय, पोतनिर्माण के लिए लकड़ी की सुविधाएँ, यातायात के थलमार्गों की कठिनाइयों तथा जल-मार्गों की सुगमता बहुमूल्य लकड़ी तथा मछलियों का निर्यात तथा कोयला, अनाज और पक्की वस्तुओं का आयात, इन सभी सुविधाओं के कारण नारवे में जहाज अधिकतर बनाए जाते हैं।

नारवे के उद्योग-धंधे तथा जलविद्युत—नारवे के उद्योग अधिकतर देश में उत्पन्न कच्ची वस्तुओं तथा जलशक्ति पर निर्भर हैं। नारवे में जलविद्युत उत्पादन के लिए अनुपम सुविधाएँ हैं। यहाँ पर अनेक जलप्रपात हैं—नदियों की धाराएँ तेज हैं तथा शीत ऋतु में जमती नहीं हैं। जलविद्युत शक्ति काष्ठमाण्ड, कागज तथा दियासलाई बनाने में काम आती है।

नारवे के सुन्दर दृश्यों का आनन्द लेने संसार के भिन्न-भिन्न भागों से अनेक व्यक्ति आते हैं। इन लोगों के रुपये से देश को पर्याप्त आय होती है।

आवागमन के साधन तथा आयात और निर्यात की वस्तुएँ—देश की पर्वतीय प्रकृति तथा उत्तर और दक्षिण के भाग एक-दूसरे से दूर होने के कारण नारवे में आवागमन के साधनों का उत्तम विकास नहीं हो सकता है। रेलें तथा सड़कें अधिकतर देश के दक्षिण-पूर्वी भाग में ही सीमित हैं। वैदेशिक व्यापार अधिकतर यूरोपीय देशों के साथ ही होता है। यहाँ से अधिकतर बहुमूल्य लकड़ी, कागज, मछली, दियासलाई, दुग्धशाला की वस्तुएँ तथा डिब्बों में बन्द भोजन की वस्तुओं का निर्यात होता है। राई, आटा, कोयला, मशीनें, चीनी, कहवा तथा जौ आयात की वस्तुएँ हैं। भारत की छपाई के कागज सम्बन्धी माँगपूर्ति का प्रधान देश नार्वे है। यहाँ से २५ प्रतिशत कागज आयात किया जाता है। भारत में नार्वे से आनेवाला अन्य सामान कैलशियम कारबाइड, धातुएँ और चमड़ा साफ करने का सामान हैं।

भारत से नार्वे को जाने वाली निर्यात सामग्री में पटसन की वस्तुएँ, कपास,

तिलहन, मूंज का धागा, लाख और मैंग्ननीज हैं। रेंडी का तेल और चाय भी भेजी जाती है।

मुख्य नगर—ओसलो—राजधानी है। इसकी जनसंख्या ४३५,००० हैं। यह नगर नारवे के दक्षिण-पूर्वी मैदान में दीर्घ फियोर्ड (Long Fiord) के सिरे पर स्थित है। यह रेल द्वारा वर्जन तथा टोंझेम से सम्बन्धित हैं। **वर्जन** दूसरा बड़ा नगर है। यहाँ से यूरोपीय देशों को मछलियाँ भेजी जाती हैं। **ट्रोंझेम** से, जो कि उत्तर में रेलों का केन्द्र है, हैरिंग मछलियों का निर्यात होता है। यह नारवे की प्राचीन राजधानी है। **नारविक** उत्तरी महासागर (Arctic Ocean) में नारवे का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इसका सम्बन्ध स्वीडन के रेल-मार्गों से है। शीत ऋतु में बोथिनिया की खाड़ी में हिम जम जाने के कारण स्वीडन का कच्चा लोहा नारविक को रेल द्वारा ही भेजा जाता है।

स्वीडन की स्थिति तथा तटरेखा—स्वीडन स्कैंडिनेविया प्रायद्वीप का पूर्वी भाग है। इस देश का अधिकतर भाग बाल्टिक सागर के किनारे है। यह सागर शीत ऋतु में हिम से जम जाता है। यहाँ का तट अधिक कटा-फटा नहीं है। जलवायु महाद्वीपीय है। इसके दक्षिणी भाग में मैदान तथा निम्न भूमियाँ हैं परन्तु उत्तरी भाग पर्वतीय है।

स्वीडन का क्षेत्रफल १,७३,००० वर्गमील है। इसके आधे से अधिक भाग में वन हैं। यद्यपि इसका क्षेत्रफल नारवे की अपेक्षा कम है, परन्तु यहाँ पर उर्वर भूमि अधिक है। आबादी लगभग ७० लाख है।

स्वीडन के चार भौगोलिक विभाग हैं।

(१) नारलैंड (Norland)
(२) झीलों का प्रान्त
(३) स्मालैंड का पठार
(४) स्केनिया (Scania)

स्वीडन के भौगोलिक विभाग—नारलैंड स्वीडन का उत्तरी भाग है। तथा इसमें देश का ६० प्रतिशत भाग सम्मिलित है। यह नवीनतम उपनिवेश का प्रदेश है। नारलैंड के बिल्कुल दक्षिण में निम्न प्रदेश अथवा झीलों का प्रान्त है जिसमें कि कृषि तथा उद्योगधन्धों का विकास हो गया है। स्मालैंड दक्षिण स्वीडन के मध्यभाग में स्थित है। इस प्रदेश में वन तथा दलदल भरे हैं और जनसंख्या बहुत बिखरी है। स्वीडन का दक्षिण-पश्चिमी भाग स्केनिया (Scania) कहलाता है जो कि सारे स्वीडन में सबसे अधिक कृषि-सम्पन्न प्रदेश है।

खनिज सम्पत्ति—यहाँ पर यथेष्ट मात्रा में खनिज पदार्थ मिलते हैं। स्वीडन के लोहा-क्षेत्र अपनी उत्तमता के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं। उत्तरी स्वीडन के किरुना तथा गेलिवारा क्षेत्रों में उत्तम श्रेणी का कच्चा लोहा मिलता है। यहाँ का लगभग सारा ही लोहा जर्मनी तथा इंगलैंड को भेजा जाता है जिसमें ३३ प्रतिशत नारविक द्वारा तथा ५५ प्रतिशत लूलिया के मार्ग द्वारा भेजा जाता है। सन् १९५२

में स्वीडन ने १६० लाख टन कच्चा लोहा निर्यात किया। शीत ऋतु में बाल्टिक सागर के जम जाने से निर्यात नारविक द्वारा ही होता है क्योंकि नारवे का यह नगर स्वीडन को रेलों से सम्बन्धित हैं। स्वीडन में समस्त संसार का ५ प्रतिशत ही कच्चा लोहा निकलता है। स्वीडन में कोयले का अभाव है। अब तो जल-शक्ति का महत्वपूर्ण विकास हो गया है। जल-विद्युत का सबसे बड़ा स्टेशन पोरजस (Porjus) है जहाँ से रेलों तथा औद्योगिक केन्द्रों को बिजली पहुँचाई जाती है। यहाँ पर ताँबा, चाँदी, सीसा, जस्ता तथा गंधक भी पाया जाता है। नारलैंड में बोलिडन (Boliden) का सुवर्ण की खानों से संसार का २ प्रतिशत सुवर्ण प्राप्त होता है।

स्वीडन के वनों का महत्व—नारवे की वन-सम्पत्ति यहाँ की आय का सबसे बड़ा साधन है। संसार के अन्य किसी देश को वनों से इतना लाभ नहीं होता। कुल भूमि के ५६ प्रतिशत अंश पर वन पाये जाते हैं। चीड़ और स्प्रूस प्रधान वृक्ष हैं। सन् १९५१ में ३९० लाख घन मीटर लकड़ी काटी गई जिसका ब्योरा इस प्रकार है—

व्यापारिक लकड़ी—१५० लाख मीटर
गदी की लकड़ी—१४० लाख मीटर
जलाने की लकड़ी—९० लाख मीटर

लकड़ी तथा गन्धक की सुविधाओं के कारण ही स्वीडन में दियासलाई उद्योग प्रसिद्ध हो गया है। स्मालैंड स्थित जानकोपिंग (Gonkoping) इस उद्योग का मुख्य प्रमुख केन्द्र है। यहाँ पर दियासलाइयाँ इतने विशाल परिमाण में बनती हैं कि संसार के सभी देशों को इनका निर्यात होता है।

कृषि की उपज—स्वीडन की ९ प्र. श. भूमि पर ही कृषि की जाती है। स्केनिया प्रायद्वीप में गेहूँ, जौ तथा राई की उपज होती है। चुकन्दर भी उत्पन्न होती है। यह देश कृषि के विचार से आत्मनिर्भर ही है।

उद्योग-धन्धे तथा व्यापार—यहाँ के ५ लाख निवासी उद्योग-व्यवसाय में लगे हुए हैं। यहाँ के प्रमुख उद्योग खान खोदना, लकड़ी चीरना तथा कागज बनाना है। यहाँ से कागज, काष्ठमंड, लट्ठे तथा चिरी हुई लकड़ी, धातुएं तथा खनिज पदार्थों का निर्यात होता है। कोयला, सूती माल, भोजन की वस्तुएँ तथा मशीनें बाहर से मँगाई जाती हैं। यहाँ पर अधिकतर आयात जर्मनी से तथा अधिकतर निर्यात संयुक्त राज्य (U. K.) को होता है।

प्रमुख नगर—**स्टाकहोम**—वह स्वीडन की राजधानी है। इसकी जनसंख्या ५ लाख है। यह नगर उद्योग तथा रेलों का केन्द्र है। स्वीडन के पूर्वी भाग में स्थित होने के कारण यह नगर संसार के व्यापारिक मार्गों से दूर पड़ता है। इसके अतिरिक्त शीत ऋतु में फिनलैंड की खाड़ी के जम-जाने से रूस में आने-जाने में बाधा पड़ जाती है। **गोटेबर्ग** स्वीडन का महान् व्यापारिक केन्द्र है। यह नगर दक्षिणी स्वीडन के पश्चिम में स्थित हैं। यह वर्ष भर खुला रहता है तथा दक्षिणी

स्वीडन के सभी भागों से नहरों और रेलों द्वारा इसका सम्बन्ध है। सन् १९५३ में इसकी आबादी ३६३,००० थी।

आयबेरियन प्रायद्वीप (Iberiàn Peninsula)

स्थिति—आइबेरिया प्रायद्वीप में स्पेन तथा पुर्तगाल के देश सम्मिलित हैं। यह प्रायद्वीप यूरोप के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में स्थित है। व्यापार के दृष्टिकोण से तो इसकी स्थिति बड़ी अनुकूल परन्तु तटरेखा तथा तटीय जल की प्रकृति इसके विकास में बाधक सिद्ध हुई है। इसका तट सपाट है और पोताश्रय भी कम हैं। समुद्र की प्रबल तरंगों के कारण उत्तम पोताश्रयों का निर्माण सर्वथा असम्भव है।

स्पेन

स्पेन की अवनति के कारण—यह एक पिछड़ा हुआ देश है। यद्यपि व्यापारिक दृष्टिकोण से इसकी स्थिति अच्छी है, भूमि उपजाऊ है और खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता है; फिर भी निम्नलिखित कारणों से सभी व्यर्थ हैं—

(१) लोहे का विशाल भंडार होते हुए भी कोयले की कमी से लोहा उद्योग विकसित नहीं हुआ।

(२) यहाँ के पोताश्रयों में जहाजों के लिए काफी स्थान नहीं है। तटरेखा के सपाट होने के कारण सुरक्षित पोताश्रयों का अभाव है।

(३) देश अधिकतर पहाड़ी है, सड़कों तथा रेलों के बनाने में कठिनाइयाँ हैं, नदियों में झाल-झरने हैं तथा प्रवाह तेज है।

(४) जलवायु यद्यपि भूमध्यसागरीय है परन्तु स्वास्थ्यकर तथा बलवर्धक नहीं है। देश के एक-तिहाई भाग में वार्षिक वर्षा का औसत इतना कम है कि खेती नहीं हो सकती। खेतिहर भूमि पर कड़ी मेहनत के बाद भी उपज अधिक नहीं होती।

(५) सड़कों तथा रेलों की व्यवस्था अपर्याप्त है। सन् १९५२ में देश के रेलमार्गों की लम्बाई ६००० मील थी। यातायात की असुविधाजनक स्थिति के कारण औद्योगिक उत्पादन और खेतिहर उपज के व्यापार में बड़ी कठिनाई पड़ती है। सड़कें इतनी अच्छी नहीं है कि उनसे रेलों का काम लिया जा सके।

यद्यपि स्पेन प्रधानतः खेतिहर प्रदेश है, उसकी खेती बहुत पिछड़ी हुई है। ... जनसंख्या का ५० प्रतिशत अंश खेती में लगा हुआ है। परन्तु पिछले कई सालों से खेतिहर उत्पादन स्थायी-सा है। ४० प्रतिशत से कम भूमि पर खेती होती है और केवल ७ प्रतिशत खेतिहर भूमि पर सिंचाई होती है। सामान्य शुष्कता के कारण ९० प्रतिशत भूमि पर केवल शुष्क कृषि ही हो सकती है। इसलिए बहुत मेल की फसलों का उगाना सम्भव नहीं है। सिंचाई के साधनों को बढ़ाने की जरूरत है। कुछ ऐसे शुष्क भाग हैं जहाँ ३ मीटर की गहराई पर पानी उपलब्ध

है, परन्तु फिर भी फसलें खराब हो जाती हैं। स्पेन की राष्ट्रीय योजनाओं का उद्देश्य वर्षा की कमी की समस्या को हल करके लोगों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करना है।

खेती तथा पशु-पालन—लगभग एक चौथाई लोग खेती करते हैं। गेहूँ, चावल तथा फलों की व्यापक खेती होती है। कुल खेतिहर उत्पादन का २५ प्रतिशत गेहूँ होता है। दक्षिणी और उत्तर-पूर्व में जैतून होता है। दक्षिण में अंगूर की खेती की जाती है। जैतून के तेल तथा कार्क उत्पादन में तथा सन्तरों के निर्यात में स्पेन संसार में प्रथम है। यहाँ पर पशु, भेड़, घोड़े तथा सुअर भी पाले जाते हैं। स्पेन की मेरिनो ऊन संसार-प्रसिद्ध रही है।

स्पेन की खनिज सम्पत्ति—यूरोप के अन्य किसी भी देश में खनिज सम्पत्ति की इतनी भिन्नता तथा व्यापक विस्तार नहीं है जितना कि स्पेन में है। यहाँ पर कच्चा लोहा, मैंगनीज, जस्ता, सीसा, कोयला, तांबा, पारा, चाँदी इत्यादि पाये जाते हैं। **सीसे तथा तांबे में स्पेन यूरोप भर में प्रथम, पारे और चाँदी में द्वितीय तथा जस्ते, मैंगनीज और लोहे के प्रथम श्रेणी के उत्पादकों में है।** स्पेन में संसार का ४० प्रतिशत पारा प्राप्त होता है। अब पिरेनीज में जल-विद्युत का विकास भी हो रहा है।

यातायात के साधन—यहाँ यातायात के साधनों की बड़ी कमी है। रेल-मार्ग केवल९,००० मील लम्बा है जब कि बेल्जियम में, जो इसके छठे भाग के बराबर है, ६,००० मील लम्बी रेलें हैं। यहाँ की नदियाँ यातायात तथा सिंचाई दोनों ही के लिए बेकार हैं।

खनिज पदार्थों का उत्पादन (१९५२)
(हजार मीट्रिक टन)

कोयला	१२००
लिगनाइट	१५९७
ताँबा	४
कच्चा लोहा	८५१
जस्ता	१५३
सीसा	६७
मैंगनीज	३०
पहाड़ी नमक	३२७
गन्धक	५२
पारा	४२

उद्योग तथा व्यापार—मदिरा उद्योग में स्पेन का संसार में तीसरा स्थान है। यहाँ पर मुख्यतः वस्त्र निर्माण, मदिरा, खाल, चमड़ा तथा डेरी की उपज के उद्योग होते हैं। स्पेन के उद्योग-धन्धों की सबसे बड़ी कमी यह है कि उनमें सतुन्लन नहीं है। वहाँ के आधाराभूत उद्योगों और यातायात व्यवस्था शिल्प-

उद्योगों के विकास में सहारा नहीं दे सकते। फिर भी शराब उत्पादन में स्पेन का विश्व में तीसरा स्थान है। इसके अन्य शिल्प उद्योग वस्त्र, शराब, चमड़ा व खालें तथा दुग्धशाला की वस्तुएँ हैं।

निर्यात की प्रधान वस्तुएँ फल, लोहा, कार्क, ऊन और इसपार्टो घास हैं। आयात की वस्तुओं में मशीनें, कपड़े तथा खाद्यपदार्थ प्रधान हैं।

मुख्य नगर—**मैड्रिड**—राजधानी है, यहाँ की जनसंख्या १० लाख के लगभग है। यह रेलों का प्रधान केन्द्र है। **बार्सीलोना**—भूमध्यसागर तट पर स्थित है। यह स्पेन का सबसे बड़ा नगर तथा प्रधान बन्दरगाह है। यह एक औद्योगिक केन्द्र भी है। अन्य व्यापारिक केन्द्रों के नाम हैं—वेलेंशिया, मलागा, बिलवाओ तथा कार्डिज।

पुर्तगाल

स्पेन के पश्चिम में एक छोटा-सा महासागर स्थित देश है।

विस्तार, जल-वायु तथा उद्योग—यहाँ की जन संख्या ८४ लाख है। यहाँ की जलवायु सम तथा नम है। भूमि उपजाऊ है। यह देश स्पेन के आंध्र महासागरीय व्यापार का प्राकृतिक द्वार है। यहाँ के लोगों का विशेष उद्यम कृषि-कार्य है, जिसमें ६० प्रतिशत व्यक्ति लगे रहते हैं। नीबू, अंजीर, नारंगी, सेव, बादाम, खजूर तथा अखरोटों की व्यापक खेती होती है। मदिरा तो देश भर में ही बनाई जाती है।

खनिज-पदार्थ—यह देश खनिज पदार्थों में धनी है। कच्चा लोहा काफी होता है। टीन तथा वोल्फ्राम में विदेशी पूँजी लगी हुई है। यहाँ की वोल्फ्राम की खानें यूरोप भर में प्रसिद्ध हैं। यहाँ पर ताँबा, सीसा तथा नमक भी बड़े परिमाण में मिलते हैं।

उद्योग-धन्धे—पुर्तगाल के वनों में ओक बड़ा महत्वपूर्ण वृक्ष है। इससे कार्क बनाते हैं। ईधन की कमी के कारण उद्योगों की प्रगति मन्द रही है। यहाँ पर कोयले का तो बिल्कुल अभाव ही है। जल-विद्युत की भी बड़ी कमी है। यहाँ के शिल्प उद्योग अधिकतर मदिरा (शराब) तथा जैतून सम्बन्धी वस्तुएँ ही हैं। यहाँ ऊनी, सूती तथा सन के वस्त्र भी बनाए जाते हैं। **पुर्तगालियों का एक विशेष उद्यम चीनी मिट्टी के टाइल बनाना है। यह उद्योग इन्हें मूर लोगों से प्राप्त** हुआ। देश से कार्क का बड़ा निर्यात होता है। कुल निर्यात का २५ प्रतिशत कार्क ही होता है।

लिस्बन—यहाँ की राजधानी तथा प्रधान नगर है। इसका पोताश्रय बड़ा सुन्दर है। रेल द्वारा यह ओपोर्टो तथा मैड्रिड से मिला हुआ है। यहाँ की खेती की उपज का निर्यात तथा पक्के माल का आयात लिस्बन द्वारा ही होता है। अपोर्टो शराब के निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain)

ब्रिटिश द्वीप समूह के अन्तर्गत ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड सम्मिलित हैं। ग्रेट ब्रिटेन के अन्दर मूण्डालैंड, वेल्स और स्काटलैंड शामिल है। ग्रेट ब्रिटेन तथा

उत्तरी आयरलैंड को संयुक्त राज्य कहते हैं और संयुक्त राज्य का क्षेत्रफल ९४०० वर्ग मील है। यह देश संसार भर में सबसे उन्नत उद्योग-प्रधान देश है। १९ वीं शताब्दी से ही यहाँ पर व्यापार तथा उद्योगों में उल्लेखनीय विकास हुआ है। तभी से यह देश इंजीनियरी के विकास, रेलों की प्रमुखता तथा उद्योग-धन्धों के आविष्कार में अग्रगण्य रहा है। सन् १९०० में यहाँ का व्यापार संसार का एक-पंचमांश तथा ब्रिटिश-साम्राज्य सहित संसार का एक-तृतीयांश था। **ग्रेट ब्रिटेन की इस महान् व्यापारिक उन्नति में इसकी प्राकृतिक तथा भौतिक सुविधाओं ने बड़ा योग दिया है।**

जलवायु के लाभ—शीतोष्ण कटिबंध में स्थित होने से यहाँ की जलवायु न अधिक ठंडी है न अधिक गर्म परन्तु सम है जिसके कारण खेती में रुकावट नहीं होती। हिम से मुक्त होने के कारण आवागमन में भी कोई बाधा नहीं। जलवायु के ही कारण खेती और कारखानों में यहाँ के मनुष्य सारे साल काम कर सकते हैं। लोगों में काफी स्फूर्ति रहती है, जिससे उनके नियमित कार्यों में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़ती।

तटरेखा—यहाँ की तट रेखा इतनी कटी-फटी है कि ब्रिटेन का कोई भी भाग समुद्र से ७० मील से अधिक दूर नहीं है। १३ मील के क्षेत्रफल पर १ मील तट रेखा पड़ती है। समुद्र की समीपता के कारण ही इसके दोनों ओर के औद्योगिक प्रदेशों को विदेशों में माल भेजने की बड़ी सुविधा है।

स्थिति के लाभ—ब्रिटेन की स्थिति भी आदर्श है। इंगलिश चैनल इसे महाद्वीप से पृथक् करती है। यूरोप से समीपता के कारण यहाँ पर व्यापारिक उन्नति हो सकी है। साथ ही समुद्र से पृथक् होने के कारण यहाँ पर थल अथवा जल मार्गों द्वारा विदेशी आक्रमणों का भय नहीं है। हाँ—हवाई हमले हो सकते हैं। इसकी स्थिति संसार के उन्नत भागों के मध्य में है। सभी देश समीप पड़ते हैं। यूरोप के सभी व्यापारिक देश—जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम इत्यादि समीप ही पूर्व या दक्षिण में स्थित हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में भी आंध्र महासागर द्वारा सरलता से पहुँचा जा सकता है। छिछले तटीय समुद्र में स्थित होने के कारण यहाँ के बन्दरगाहों को ऊँचे ज्वार से लाभ होता है। जहाज बन्दरगाहों में सरलता से पहुँचते हैं और कीचड़ इत्यादि भी उनमें नहीं जमती। यहाँ की नदियाँ जल-मार्ग की दृष्टि से अच्छी नहीं, परन्तु उनके मुहानों में जहाजों के लिए सभी सुविधाएँ हैं। अतः व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

खनिज-पदार्थ—ग्रेट ब्रिटेन में लोहे और कोयले की बड़ी-बड़ी खानें हैं जो कि पास ही पास स्थित हैं। कोयला उत्तम श्रेणी का है और लगभग सभी औद्योगिक केन्द्र कोयले की खानों के समीप हैं। थोड़े-बहुत परिमाण में चाक, स्लेट टीन इत्यादि भी मिलते हैं।

औद्योगिक प्रगति—देश की व्यापारिक तथा औद्योगिक प्रगति का श्रेय आर्थिक तथा मानवी परिस्थितियों दोनों ही को है। (१) देश की सुदृढ़ सरकार

से औद्योगीकरण में बड़ी सहायता मिली है। (२) वहाँ के लोगों का स्वभाव, चरित्र तथा मेहनत देश के उद्योग-धन्धों का आधार है। प्रति व्यक्ति पर औद्योगिक उत्पादन का औसत संसार के सभी देशों से बढ़कर है। ब्रिटिश व्यवसाय का संसार में विशेष मान है। और उनकी टेकनिकी प्रगति विश्व-प्रख्यात है। वस्त्रों, बर्त्तनों, हवाई इंजनों तथा जहाजों में ब्रिटिश प्रगति तथा डिजाइन बड़ी ही उम्दा कोटि की है। (३) आन्तरिक यातायात व्यवस्था बहुत ही अच्छी है। ग्रेट ब्रिटेन में २५००० मील लम्बा रेलमार्ग है जो देश के सभी भागों को बन्दरगाहों से मिलाता है। सडकों का भी जाल-सा बिछा हुआ है और मोटर गाड़ियों से यात्री तथा सामान दोनों ही को ले जाया जाता है। आन्तरिक जल-मार्ग बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैं। इनके द्वारा केवल रेलमार्गों का ४ प्रतिशत व्यापार होता है। सन् १९४७ में एक विधान द्वारा आन्तरिक यातायात बोर्ड की स्थापना की गई। यह बोर्ड जनवरी १९४८ में बन गया और इसके नियन्त्रण में देश की सभी रेलें, २० हजार इंजन, ४१००० यात्रा गाड़ियाँ, १२ लाख ३५ हजार सामान ढोने के डिब्बे, १०० जहाज तथा हजारों मोटर गाड़ियाँ हैं। सरकार के नियन्त्रण में इतनी विशाल व्यवस्था और किसी भी देश में नहीं है। (४) औद्योगिक केन्द्र में घनी आबादी है। (५) ब्रिटिश साम्राज्य बड़ा ही विस्तृत है। इसके उपनिवेश तथा आश्रित राज्य दूर-दूर तक फैले हुए हैं और उनमें ब्रिटिश माल की उत्कृष्ट मण्डियाँ पाई जाती हैं। संसार की जन संख्या का २४ प्रतिशत अंश ब्रिटिश कामनवेल्थ और साम्राज्य में निवास करता है। (६) ब्रिटेन का व्यापारिक जहाजी बेड़ा संसार में सबसे बड़ा है। (७) अंग्रेजी भाषा सारे विश्व में फैल गई है। इसके अलावा ब्रिटेन की स्वतंत्र व्यापार नीति और वैज्ञानिक प्रगति ने भी इस विकास में काफी हाथ बंटाया है।

परन्तु कुछ असुविधायें भी हैं। औद्योगीकरण और जनसंख्या के घनत्व के कारण जमीन की भारी कमी है और भूमि बहुत मंहगी है। मजदूरों के पारिश्रमिक का दर काफी ऊँचा है। साथ में जल-विद्युत का पूर्णतः अभाव है! अन्य देशों के आयात कर की ऊँची दर से भी ब्रिटिश उद्योग को चिन्ता हो रही है।

फिर देश में आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध नहीं है। कोयला तथा निम्न-कोटि का कोयला तो जरूर मिलता है। परन्तु वर्त्तमान औद्योगिक जगत का विकास केवल इन्हीं दो खनिज पर कदापि भी निर्भर नहीं है। यहाँ खनिज तेल, मैंगनीज, टीन, बाक्साइट, सीसा, ताँबा, कपास, रबड़, पटसन तथा तिलहन आदि कुछ भी नहीं होता। यह सब वस्तुयें बाहर से मँगानी पड़ती हैं। वास्तव में कोई भी उद्योग प्रधान देश ऐसा नहीं है यहाँ इतना कम कच्चा माल मिलता हो।

इसके लिए ब्रिटेन दूसरे देशों पर आश्रित रहता है। नीचे की तालिका से ब्रिटेन की यह निर्भरता समझ में आ सकती है।

मूल कच्ची वस्तुओं के विश्वव्यापी उत्पादन का प्रतिशत जो कि ग्रेट ब्रिटेन में उत्पन्न तथा प्रयोग होता है।

कच्ची वस्तुएँ	विश्वव्यापी उत्पादन का ग्रेट ब्रिटेन में उत्पादन प्र. श.	विश्वव्यापी उत्पादन का ग्रेट ब्रिटेन का उत्पादन प्र. श.
कोयला	१८.९	१५.५
लोहा	४.७	११.५
खनिज तेल	—	४.५
निकिल	—	२७.०
मैंगनीज	—	९.५
टीन	१.३	३५.०
कपास	—	१०.०
ऊन	२.७	२.०
रबर	—	१५.०
बाक्साइट	—	५.५
सीसा	१.६	२०.६
जस्त	०.६	७.५
ताँबा	—	१३.५

जनसंख्या—ग्रेट ब्रिटेन की आबादी बहुत घनी है। १९३१ की जनगणना के अनुसार आबादी इस प्रकार है :

स्काटलैंण्ड	४८,४२,५५४
इंगलैंड तथा वेल्स	३,९९,४७,९३१

इंगलैंड में जन संख्या का औसत प्रति वर्गमील ६८५ व्यक्ति है। बेल्जियम, हालैंड तथा जावा को छोड़कर यहाँ की आबादी का औसत अन्य सभी देशों से अधिक है। १९४९ में ग्रेट ब्रिटेन की आबादी का अनुमान ५ करोड़ ५ लाख व्यक्ति था। यह संख्या सन् १९४४ की अपेक्षा १० लाख अधिक थी। सन १७०० में इंगलैंड की जनसंख्या इससे ४३० लाख कम थी। संख्या में वृद्धि का मुख्य कारण वीसवीं सदी के शुरू तक मृत्यु में कमी और उत्पादन में निरन्तर बढ़ती है।

उत्तरी इंग्लैंड तथा दक्षिणी वेल्स औद्योगिक क्षेत्र हैं इसलिए यहाँ सबसे घनी आबादी है। लंदन के आस-पास आबादी बढ़ती जा रही है। लंकाशायर ग्लेमोरगन, वारविकशायर, डरहम, स्टैफर्डशायर जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में आबादी का औसत १००० तथा नारफाक, सफक, लिंकनशायर और कैम्ब्रिज जैसे कृषि प्रान्तों का ५०० व्यक्ति प्रति वर्गमील है। पहाड़ी प्रान्तों की आबादी बहुत कम है परन्तु अब जन-संख्या के वितरण में बड़ा परिवर्तन होता जा रहा है।

खनिज सम्पत्ति

ग्रेट ब्रिटेन के खनिज पदार्थ बड़े महत्वपूर्ण हैं।

ग्रेटब्रिटेन के प्रधान खनिज (१९५३)

(हज़ार मीट्रिक टन)

कोयला	२२३,०००
कच्चा लोहा	१६,०४०
सीसा (साफ किया हुआ)	८६
जस्ता	१
टीन	२९
मिट्टी का तेल	१०४
जिप्सम	१,०९२
बलुहा पत्थर	४,३४६
चूने का पत्थर	१५,९२६
खड़िया	१०,१६७
चीका मिट्टी	२६,५००

कोयला—यहाँ लोहा तथा कोयला पास-पास पाए जाते हैं। कोयला सभी स्थानों में मिलता है पर विट्यूमिनस श्रेणी का है। कोयले की खानें समुद्र के पास हैं। इसका तटीय व्यापार होता है। कोयले के वार्षिक उत्पादन में ग्रेट ब्रिटेन का संसार में तृतीय स्थान है। देश के आर्थिक जीवन में कोयले का बड़ा महत्व है क्योंकि देश के उद्योगों के लिए ई शक्ति इसीसे प्राप्त होती है। कोयला उद्योग में १० लाख व्यक्ति लगे हैं तथा ४० लाख व्यक्ति इसी पर आश्रित हैं। खनिज पदार्थों के ९ प्र. श. मूल्य का कोयला निकाला जाता है। प्रत्येक कोयला क्षेत्र औद्योगिक केन्द्र भी है। कोयले का निर्यात भी होता है और निर्यात वस्तुओं में ५ प्र. श. मूल्य का कोयला होता है।

ब्रिटिश द्वीप समूह में कोयले का उपभोग

(लाख टन में)

	१९३८	१९४७	१९५३	१९५४
देश के उद्योग धंधों में	१७७८	१८४७	२०८५	२१३१
निर्यात	३५८	११	१४०	१३८
भार संतुलन के वास्ते जहाजों में	१०५	४४	२९	२५

देश में कोयले का उपभोग और निर्यात इतना अधिक बढ़ गया है कि अब ब्रिटेन को बाहर से कोयला आयात करना पड़ता है। सन् १९५३ में ६ लाख टन कोयला बाहर से आयात किया गया और सन् १९४४ में ३० लाख टन कोयला बाहर से आया। यदि सन् १९४७ और सन् १९५४ के आँकड़ों की तुलना की जाय तो स्पष्ट हो जायगा कि इस बीच में उत्पादन तो केवल २६० लाख टन अधिक हुआ, परन्तु देश में उपभोग २८४ लाख टन अधिक बढ़ गया। साथ-साथ

नेर्यातक देशों में अपना स्थान बनाये रखने के लिए ब्रिटेन से १४० लाख टन कोयला बाहर भेजा गया जब कि सन् १९४७ में केवल १० लाख टन कोयला ही निर्यात किया गया था। परन्तु निर्यात की यह दशा केवल आयात द्वारा ही कायम रखी जा सकी।

कोयले का उपभोग—विस्तृत आँकड़े

(लाख टन)

उपभोग	१९३८	१९५१	१९५४
गैस के लिए	१८२	२७४	२७३
बिजली तैयार करने के लिए	१४९	३५४	३९३
रेलों द्वारा	१२०	१४३	१३६
इस्पात के कारखानों में	१८७	८०	६७
कोयले की खानों में	११८	२३५	२६६
घरेलू उपभोग में	४००	६१९	६५७
सामान्य शिल्प उद्योग तथा इन्जीनियरिंग उद्योग	५७७	३७४	३४१
कुल उपभोग	—	—	२१३९

सन् १९५४ में संयुक्त राज्य ने ३० लाख टन कोयला आयात किया था। सन् १९५५ में दशा और भी संकटनीय रही। उत्पादन में तो कोई विशेष वृद्धि हुई नहीं परन्तु उपभोग बराबर बढ़ रहा है। कोई १०० लाख टन कोयला निर्यात किया गया और इस प्रकार उत्पन्न कमी को पूरा करने लिए कोई १२० लाख टन कोयला बाहर से मँगवाना पड़ेगा। अतएव ब्रिटेन की कोयला समस्या का हल निर्यात की कमी तथा उद्योगों में अन्य प्रकार के ईंधन, विशेषकर तेल को अधिकाधिक अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है। जुलाई सन् १९५५ में ब्रिटेन की सरकार ने निर्यात में कटौती की घोषणा की, परन्तु सन् १९५५ में इससे केवल २० लाख टन कोयले की बचत होने की आशा है। परन्तु सन् १९५६ में निर्यात में भारी कमी हो जायगी और साथ-साथ आयात में बचत हो सकेगी।

ग्रेट ब्रिटेन में कोयले के प्रधान क्षेत्र निम्नलिखित हैं :—

पीनाइन श्रेणी के क्षेत्र :—

(१) नार्थम्बरलैंड तथा डरहम, (२) यार्क-डर्बी तथा नाटिंघम, (३) दक्षिणी लंकाशायर तथा (४) उत्तरी स्टैफोर्डशायर

मिडलैंड के क्षेत्र :—

(५) वारविक (६) दक्षिणी स्टैफोर्डशायर तथा (७) लीसेस्टरशायर

वेल्स पहाड़ के क्षेत्र :—

(८) उत्तरी वेल्स तथा (९) दक्षिणी वेल्स

स्काटलैंड की मध्यवर्ती घाटी के क्षेत्र :—

(१०) आयरशायर तथा (११) क्लाइड

इनके अतिरिक्त अन्य छोटे-छोटे कोयला क्षेत्र ब्रिस्टल, ऐडिनबर्ग और आयरलैंड के किल केनी में हैं।

कोयला
लोहा
अन्य वस्तुओं के नाम दिए हैं।

चित्र ५४—ग्रेट ब्रिटेन की आर्थिक उपज

ब्रिटिश कोयला उद्योग

वर्ष	उत्पादन (लाख टन)	निर्यात (लाख टन)	लगे हुए व्यक्तियों की संख्या (हजार में)
१९१३	२८७०	९८०	१२३०
१९३९	२२८०	४६३	७८२
१९४६	१८९०	९२	९७७
१९५०	२१६०	१७०	१५१०
१९५३	२२४०	१६०	७१७

सन् १९५४ में कोयले का कुल उत्पादन २२६० लाख टन था। इसमें से २१३० लाख टन गहरी खानों से तथा १०० लाख टन खुली खानों से प्राप्त हुआ था। विविध खानों का उत्पादन में भाग इस प्रकार था—

स्काटलैंड के कोयला क्षेत्र	१४ प्रतिशत
यार्क, नाट्स और डर्बी	४० प्रतिशत
लंकाशायर	६ प्रतिशत
मिडलैण्ड	११ प्रतिशत
दक्षिणी वेल्स	१६ प्रतिशत

ब्रिटिश द्वीप समूह में कोयले का उत्पादन

(लाख टन में)

	१९३८	१९७	१९५३	१९५४
गहरी खानों से प्राप्त	२७०	१८७२	२१२५	२१३४
उभरी पट्टियों से प्राप्त	—	१०२	११७	१०१
कुल योग	२२७०	१९७४	२२४२	२२३५

ब्रिटिश द्वीप समूह में कोयले का उत्पादन
मजदूरों की सँख्या के अनुसार

	१९३८	१९४७	१९५३	१९५४
कोयला उद्योग मे लगे मजदूरों की संख्या (हजार)	७८२	७११	७१७	७०७
प्रति मजदूर की पारी पर उत्पादन (टन)	१.१४	१.०७	१.२१	१.२३
प्रति मजदूर वर्ष पर उत्पादन (टन)	२९०	२६३	२९६	३०२

दक्षिणी वेल्स का कोयला क्षेत्र—दक्षिणी वेल्स के कोयला क्षेत्र का कोयला उत्तम श्रेणी का होता है और अधिक परिमाण में मिलता है। यहाँ का कोयला विशेषकर जहाजों में काम आता है। १९१४ तक यह क्षेत्र संसार का प्रधान कोयला क्षेत्र रहा परन्तु अब कोयले की माँग की कमी के कारण बड़ी बाधा पड़ गई है। लेकिन सन १९२० से दक्षिणी वेल्स का कोयला उद्योग सकटनीय परि

स्थितियों से गुजर रहा है। कोयले की माँग भी काफी कम होगई है।

वेल्स कोयला क्षेत्र की अवनति के कारण निम्नलिखित हैं।

(१) ब्रिटिश कोयले के दाम काफी मंहगे हैं। आसानी से खुद सकने वाली खानों को काम में लाया जा चुका है और अब कोयला प्राप्त करने के लिए काफी नीचे जाना पड़ता है। इस प्रकार उत्पादन का मूल्य या खर्च ज्यादा पड़ जाता है। इसके बिपरीत आसानी से उपलब्ध कोयले को संयुक्तराष्ट्र अमरीका सस्ते मूल्य पर विश्व मंडियों में बेच लेता है।

जलविद्युत के तीव्र विकास के कारण फ्रांस, इटली, स्वीडन और अन्य देश जो पहले कोयला खरीदा करते थे अब नहीं खरीदते।

आस्ट्रेलिया और नैटाल जो पहिले कोयला आयात किया करते थे अब बाहर से कोयला नहीं मँगवाते। वहाँ पर नई कोयला खानों का पता लगा लिया गया है।

(४) यद्यपि कोयले का उत्पादन बराबर बढ़ रहा है परन्तु साथ-साथ ब्रिटेन में कोयले का उपभोग भी बढ़ता जा रहा है। दूसरे विश्वयुद्ध से पहले वार्षिक घरेलू उपभोग १८०० लाख टन था और एक पचमांश उत्पादन से अधिक निर्यात के लिए बच रहता है। सन् १९५३ में घरेलू उपभोग बढ़ गया और केवल ७ प्रतिशत ही निर्यात के लिए बचा। यह दिशा एक माने में अच्छी भी रही क्योंकि उद्योग-धंधों को अधिक कोयला मिल सकने के कारण ब्रिटेन अपने औद्योगिक स्थान को पुनः प्राप्त कर सका।

उत्तरी वेल्स के कोयला क्षेत्र का समुद्र से सीधा सम्बन्ध है यद्यपि उसमें कोयला अधिक नहीं है।

यार्क तथा डर्बी कोयला क्षेत्र—यार्क, डर्बी तथा नाटिंघम कोयला क्षेत्र ७० मील लम्बा तथा २० मील चौड़ा है। लोहा पास ही मिलता है। समुद्र पास होने से स्केंडिनेविया, डेनमार्क तथा वाल्टिक प्रदेश यहीं से कोयला मँगाते हैं। वैस्ट राइडिंग के ऊन के कारखाने तथा शैफील्ड के लोहे के कारखाने इसी क्षेत्र पर निर्भर हैं।

दक्षिणी लंकाशायर क्षेत्र के समीप मुख्यकर सूती कारखाने हैं।

मिडलैंड क्षेत्र का ह्रास—मिडलैंड कोयला क्षेत्रों पर लोहे के कारखाने हैं, परन्तु सन् १९२९ से इस्पात उद्योग में ह्रास होने के कारण इन क्षेत्रों की महत्ता घट गई है। अब यहाँ पर ब्रिटेन के समस्त कोयले का केवल ११ प्र. श. ही निकाला जाता है।

आयरशायर तथा लैनार्कशायर—स्काटलैंड के आयरशायर क्षेत्र का कोयला अधिकतर निर्यात होता है। क्लाइड बेसिन के पोत-निर्माण उद्योग में लैनार्कशायर का कोयला तथा लोहा काम में लाया जाता है क्योंकि क्लाइड नदी द्वारा कोयला आसानी से लाया जा सकता है।

सन् १९४६ के जुलाई मास में ब्रिटिश संसद ने कोयला उद्योग राष्ट्रीय-

करण विधान पास किया। इसके द्वारा कोयला उद्योग सरकार के नियंत्रण में आ गया। जनवरी सन् १९४७ में कोयला उद्योग नेशनल कोल बोर्ड के नियंत्रण में आगया। इसका उद्देश्य कोयला उद्योग का इस प्रकार विकास करना है कि काफी कोयला



चित्र ५५

उचित मूल्य पर देश की जनता के लिए उपलब्ध हो सके। इसके नियन्त्रण में कोई १५०० खानें हैं और कोक बनाने के ४५ प्रतिशत कारखाने भी इसीके अन्तर्गत आते हैं। बोर्ड कोई ३ लाख एकड़ भूमि का मालिक है और इसके नियन्त्रण में १४००० मकान, बहुत-से मजदूर, कारखाने तथा सभी प्रकार के यातायात हैं। इसके आधीन कोई ७ लाख २३ हजार मजदूर काम करते हैं और बहुत-से अन्य मजदूर सम्बन्धित उद्योगों में लगे हुए हैं। घरेलू उपभोग के बढ़ने के कारण कोयले का उत्पादन बढ़ना जरूरी है। नेशनल कोल बोर्ड कोयले की खानों का पुनर्गठन तथा विकास करके इस उद्देश्य को पूरा करने की भरपूर चेष्टा कर रहा है। कोयला काटने, लादने और इधर-उधर ले जाने में मशीनों का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है।

ग्रेट ब्रिटेन की लोहे की खानें

ब्रिटेन में खनिज लोहा निम्न श्रेणी का है। यहाँ पर लोहे की खानें अधिकतर उत्तरी लैनार्कशायर, क्लाइड बेसिन, उत्तरी स्टैफोर्डशायर तथा दक्षिणी वेल्स में स्थित हैं।

लोहे के क्षेत्र तथा उत्पादन की कमी—दक्षिणी वेल्स की लोहे की खानें प्रायः समाप्त हो गई हैं और अब यहाँ का लोहे तथा इस्पात का धंधा स्पेन तथा फ्रांस के लोहे पर निर्भर है। ब्रिटेन के सबसे महत्त्वपूर्ण लोहे-प्रदेश दक्षिणी-पूर्वी इंगलैंड में हैं। यहाँ से ब्रिटेन का ८५ प्र.श. लोहा निकलता है। लोहे के प्रमुख केन्द्र नीचे दिए हैं:—(१) क्लीवलैंड की पहाड़ियाँ, (२) लिंकनशायर के स्कन्थोर्प तथा फ्राडिंघम (३) नार्थम्पटनशायर के कौर्बी तथा कैटेरिंक तथा (४) उत्तरी आक्सफोर्डशायर में बैनबरी के समीप। यहाँ के लोहे की अनेक खानें अब समाप्त हो गई हैं। इसीलिए स्वीडन, स्पेन, फ्रांस, संयुक्तराष्ट्र तथा न्यूफाउंडलैंड से लोहा मँगाना पड़ता है। सन् १९५३ में संयुक्त राज्य (U. K.) ने १०० लाख टन खनिज लोहा बाहर से मँगाया था।

अन्य खनिज पदार्थ—ब्रिटेन में सीसा, जस्ता, ताँबा तथा टीन भी मिलता है। चूने का पत्थर, खरिया, ग्रेनाइट, स्लेट और नमक भी कार्नवाल, डैवोन, सोमरसैट, वेल्स तथा कम्ब्रियन प्रायद्वीप से प्राप्त होता है। टीन का अपार भंडार अब समाप्त हो गया है।

ग्रेट ब्रिटेन में सैनिक सुरक्षा सम्बन्धी धातुओं की बड़ी कमी है, परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य तथा अन्य देशों से धातुएँ मिल सकती हैं। ब्रिटेन में मैंगनीज, क्रोम, टंगस्टन, ताँबा, निकिल तथा अल्यूमिनियम बिल्कुल नहीं होता। इन धातुओं की प्राप्ति की सुविधा के कारण ही संयुक्त राष्ट्र को छोड़कर संयुक्तराज्य (U. K.) की स्थिति संसार में सबसे सुदृढ़ है। यह नीचे की तालिका से स्पष्ट हो जायगा—

ग्रेट ब्रिटेन में युद्धोपयोगी खनिज की प्राप्ति (१९३८)

(लाख टनों में)

वस्तु	घरेलू उत्पादन	साम्राज्य व कामनवेल्थ	अन्य प्रदेश
कोयला	२,३००	७५०	१५०
लोहा	१२०	१००	६०
कच्चा लोहा	७०	३०	१०
इस्पात	१००	३०	—
तेल	—	७०	८४०
मैंगनीज	—	९,५००	१,५००
क्रोम	—	१,७००	१,३००
टंगस्टन	—	५००	१,०००
अल्यूमिनियम	—	५,०००	९,०००
ताँबा	—	५,५००	८,५००
निकल	—	९००	३००

कृषि का धंधा

ब्रिटिश द्वीप की उपज—ब्रिटिश द्वीप उद्योग-प्रधान देश है। फिर भी यहाँ पर खेती का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के ११ प्र.श. मनुष्य खेती करते हैं। इसका ब्योरा इस प्रकार है—स्काटलैंड ३७ प्र.श.; इंगलैंड २ प्रतिशत और आयरलैंड ५३ प्र.श.। यहाँ की मुख्य फसलें गेंहूँ, जौ, जई, मटर, लोभिया, आलू, शलजम, इत्यादि हैं। भूमि की कमी से सयत्न खेती की जाती है। पूर्वी इंगलैंड में गेंहूँ, जौ, जई, चुकन्दर तथा फलों के लिए अनुकूल दशाएँ हैं। गेंहूँ की खेती लिंकन, नारफोक, सफोक, एसेक्स तथा बैडफोर्डशायर में; जौ की खेती पूर्वी मैदानों में; जई की खेती स्काटलैंड के पूर्वी मैदानों तथा उत्तरी आयरलैंड में होती है। चुकन्दर की खेती पूर्वी इंगलैंड, उत्तरी श्रोपशायर, फ़ाइफशायर तथा आयरलैंड की बैरो नदी की घाटी में होती है। आजकल इंगलैंड की ८०प्रतिशत भूमि पर खेती की जाती है। यदि १९३६-३९ के खेतिहर उत्पादन को और खेतों के प्रसार को १०० मान लिया जाय तो बाद के वर्षों में स्थिति इस प्रकार थी—

	१९४७-४८	१९५२-५३	१९५३-५४
उपज	१२८	१५३	१५५
खेत	१२४	१५१	१५५

संयुक्तराज्य में प्रति एकड़ उपज सबसे अधिक है। सन् १९५० में प्रति एकड़ उपज इस प्रकार थी—

गेंहूँ १९.५ हण्डरवेट; जौ १८.३ हण्डरवेट; जई १६ हण्डरवेट; भूसा २४.५ हण्डरवेट तथा चुकन्दर १९०.७ हण्डरवेट।

संयुक्त राज्य में खेतिहर उत्पादन
(वर्ष का आरम्भ जून से होता है)

	१९४७-४८	१९५२-५३	१९५३-५४
फसलों का प्रसार (हजार एकड़)			
गेंहूँ और राई	२१९८	२०८६	२२८५
अन्य अनाज	५८६६	६००१	५८७०
आलू	१३३०	९९०	९८५
चुकन्दर	३९५	४०८	४१५
कुल भूमि	१२,८८०	१२,२६६	१२,३०४
फसलों की उपज (हजार टन)			
गेंहूँ और राई	१६८९	२३५७	२७३०
अन्य अनाज	४५१४	२९३६	६१८७
आलू	७७६६	७८४८	८२६०
चुकन्दर	२९६०	४२३६	५२७५

देश में भूमि की कमी के कारण, गहरी व मिश्रित खेती की जाती है।

ब्रिटेन की खेती में वृद्धि—ब्रिटेन में अपनी आवश्यकता की ३९ प्र. श. ही भोजन की वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं। अतः शताब्दियों से बाहर से ही भोजन की सामग्री यहाँ आती है। अनाज पैदा करने वाले देशों के लिए ग्रेट ब्रिटेन सदा ही उत्तम ग्राहक रहा है। अब बहुत-से बगीचों व ऊसर भूमि को ठीक करके यहाँ पर ७० लाख एकड़ से भी अधिक भूमि पर खेती की जाती है और खेती की उपज में कल्पनातीत वृद्धि हुई है। पिछले छः वर्ष की वृद्धि का प्रतिशत नीचे दिया जाता है—गेंहूँ १०९, जौ ११५, जई ५८, आलू १०२, चुकन्दर ३७, शाक-भाजी (सब्जी) ३४ तथा फल ५५ प्र० श०। वास्तव में दूसरे महायुद्ध के बाद में खाद्यान्नों की कमी के कारण ब्रिटेन में अनाजों की उपज बढ़ाई जा रही है।

युद्ध उपरान्त संसार में भोजन की कमी के कारण ग्रेट ब्रिटेन में घरेलू उपभोग के लिए खाद्यान्नों का उत्पादन बराबर बढ़ाया जा रहा है। सन् १९५१-५२ में कुल खेतिहर उत्पादन महायुद्ध के पूर्व के औसत से ४० प्रतिशत अधिक था और ग्रेट ब्रिटेन की सरकार इस उत्पादन की वृद्धि को सन् १९५६ तक ६० प्रतिशत तक पहुँचा देना चाहती है। इसी दृष्टिकोण से मशीनों का प्रयोग भी बराबर बढ़ रहा है और आजकल समस्त संसार में ट्रैक्टर मशीनों के घनत्व के दृष्टिकोण से ग्रेट ब्रिटेन का स्थान सबसे आगे है। यहाँ प्रत्येक ५८॥ एकड़ खेतिहर भूमि के पीछे एक ट्रैक्टर इस्तैमाल होता है।

पशुओं में वृद्धि—पशु पालन—यह भी ब्रिटेन का एक महत्वपूर्ण धंधा है। पशुओं से दूध, मांस और खाल प्राप्त होती है। १९५२ में यहाँ दो लाख पशु थे। १९२९ से १९४९ के बीच २,००,००० की वृद्धि हुई। यहाँ पर डेरी के धंधे में भी महत्वपूर्ण उन्नति हुई है, विशेषकर आयरलैंड में। इंगलैंड में अब १,२०,००,००० से भी अधिक पशु हैं। दुग्धशालाओं का धंधा निम्नलिखित भागों में प्रमुख है—

(१) **कार्नवाल, डेवन और सोमरसेटशायर**—यहाँ पनीर व क्रीम बनाई जाती है।

(२) **वेल्स के मैदान**—दक्षिण वेल्स कोयला क्षेत्र की घनी आबादी के लिए यहाँ पर दूध व पनीर उत्पन्न किया जाता है।

(३) **चेशायर**—यह सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। दूध व पनीर यहाँ की मुख्य वस्तुएँ हैं।

(४) **आक्सफोर्ड और ऐल्सबरी की घाटियाँ**—यहाँ से लन्दन को दूध भेजा जाता है।

(५) आयरलैंड में उत्तर और दक्षिण-पश्चिमी भाग के मैदानों में दुग्धशाला का धंधा होता है।

पशुओं से प्राप्त उपज

	१९४८	१९५३	१९५४
दूध (लाख गैलन)	१७०४०	२०५६०	२१७००
अण्डे (हजार टन)	३३८	४९४	५२६
बैल का मांस (हजार टन)	४७८	५८३	६३७
भेड़ का मांस (हजार टन)	११२	१७२	१६६
सूअर का मांस (हजार टन)	१८५	५८९	६०६

ब्रिटेन से उच्च कोटि के पशुओं को जिंदा ही निर्यात कर दिया जाता है। सन् १९४९ में करीब २,००० पशु बाहर भेजे गए। मिडलैंड के मैदानों में मांस का धंधा होता है।

ग्रेट ब्रिटेन में सूअरों की संख्या कम होती जा रही है। सन् १९३८ में ४४ लाख सूअर थे परन्तु सन् १९५२ में केवल ४० लाख ही रह गए।

संयुक्त राज्य में पशु-संख्या
(लाख में)

	१९३९	१९५२
दुग्धशाला के पशु	३९	४६
अन्य पशु	५०	४०
भेड़ें	२६९	२१७
सूअर	४४	५०
मुर्गियाँ	७४४	९५०

ब्रिटेन में भेड़ों की संख्या—भेड़ पालना—किसी समय ब्रिटेन की समृद्धि

भेड़ों पर ही निर्भर थी। परन्तु अब यह धंधा महत्वपूर्ण नहीं रहा, फिर भी संयुक्त राज्य (U. K.) में न्यूजीलैंड से अधिक भेड़ें हैं। १९३९ में यहाँ २ करोड़ ६० लाख भेड़ें थीं परन्तु १९५१ में उनकी संख्या केवल २ करोड़ २० लाख ही रह गई। भेड़ पालने के मुख्य प्रदेश (१) पीनाइन श्रेणी, (२) वेल्श पहाड़ी प्रदेश, (३) स्काटलैंड का पर्वतीय प्रदेश तथा (४) आयरलैंड हैं।

मछली का धन्धा

यह ब्रिटेन का एक मुख्य धंधा है। इस धंधे में देश की १० प्र० श० जनता या ३०,००० व्यक्ति लगे हैं। ब्रिटेन के चारों ओर छिछले पानी में असंख्य मछलियाँ पाई जाती हैं। यह धंधा अधिकतर पूर्वी तट पर केन्द्रित है। उत्तरी सागर में हैडाक, हैरिंग, काड और मैकरेल आदि मछलियाँ अधिकतर मिलती हैं। और विक, एबरडीन, पीडरहैड, स्टोन हैविन (Stone Haven), हल, ग्रिम्सबी तथा यारमथ आदि बन्दरगाह मछली के मुख्य केन्द्र हैं। इंगलिश चैनल में पिलचर्ड मछली मिलती है। यहाँ की नदियों में भी सालमन तथा ट्राउट मछलियाँ मिलती हैं। ग्रिम्सबी तथा बिलिंग्स गेट मछली की मण्डियाँ हैं।

हम्बर नदी पर बसा हुआ ग्रिम्सबी संसार भर में मछली पकड़ने के धंधे के विस्तार व उनसे प्राप्त मूल्य के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ उत्तरी सागरों, आइसलैंड, फ्रांस और उत्तर सागर से पकड़ी हुई मछलियाँ लाई जाती हैं। समीपवर्ती बन्दरगाह हल में दूर-दूर पर पकड़ी गई मछलियाँ लाई जाती हैं। यहाँ पर काड और हैडक मछलियाँ प्रधान हैं। लंकाशायर में फ्लीटवुड बड़ा ही महत्वपूर्ण केन्द्र है और बड़े औद्योगिक व कोयला उत्पादक क्षेत्रों के समीप होने के कारण इंगलैंड के पश्चिमी तट पर इसका बड़ा महत्व है। यहाँ पर लाई गई मछलियों में हेक, काड और हैडक मुख्य हैं।

ब्रिटिश मछली क्षेत्रों का उत्पादन

	मात्रा (मीट्रिक टन)	मूल्य (हजार पौंड)
१९३८	१,०४५,४६२	१७,५४८
१९४९	१,११२,५८०	४१,०५८
१९५२	९,८९,९०९	४३,७००
१९५३	९,८०,३८३	४१,०००

मछली का धंधा इतना उन्नत होते हुए भी ब्रिटेन को संयुक्तराष्ट्र, कनाडा तथा नारवे आदि देशों से मछली मंगानी पड़ती है। सन् १९४९ में ग्रेट ब्रिटेन ने ताजी, जमी हुई, नमक लगी हुई और डिब्बों में बन्द २३९,२५३ टन मछली का आयात किया। ये मछलियाँ संयुक्तराष्ट्र, कनाडा और नार्वे से मँगवाई जाती हैं। ग्रिम्सबी और बिलिंग्सगेट (लन्दन) मछली की दो प्रधान मण्डियाँ हैं। ग्रेट ब्रिटेन में मछलियों का औसत उपभोग २७ पौंड प्रति व्यक्ति है। उत्तर सागर में मछली

पकड़ने के उद्यम में ग्रेट ब्रिटेन सबसे प्रधान है। इसके अलावा वहाँ की नदियों से भी ट्राउट और सामन मछलियाँ पकड़ी जाती हैं।

ब्रिटेन के मुख्य उद्योग-धन्धे

ग्रेटब्रिटेन संसार का सबसे प्रधान औद्योगिक देश है। यहाँ के मुख्य धंधे लोहा, स्टील, सूती, ऊनी वस्त्र तथा रासायनिक धंधे हैं। यहाँ सबसे प्रधान धंधा लोहा तथा स्टील का है, फिर सूती वस्त्रों का जिसमें १५ लाख आदमी काम करते हैं। १२ लाख मनुष्य जूट, सन तथा सनी आदि के धंधों में लगे हैं। कुल औद्योगिक मजदूरों का ४/५ हिस्सा वस्त्र उद्योग में लगा है। अधिकतर स्त्रियाँ वस्त्र उद्योग में लगी हैं। ब्रिटेन के अधिकतर धंधे कोयले की खानों पर केन्द्रित हैं। पिछले दिनों से यहाँ विद्युत का भी उपयोग होने लगा है। उद्योग धन्धों में कोई १४० लाख आदमी लगे हुए हैं और युद्धपूर्व की अपेक्षा उत्पादन ३० प्रतिशत अधिक है।

शिल्प उद्योग और लगे हुए व्यक्तियों की संख्या (१९५४)

व्यवसाय	**(हजार व्यक्ति)**
रसायन उद्योग और सम्बन्धित व्यवसाय	५०९
धातु, इंजीनियरिंग और मोटर गाड़ियाँ	४,४८७
वस्त्र	९९५
कपड़े और जूते	६८५
भोज्य, पेय और तम्बाकू सम्बन्धित	९०५
अन्य शिल्प-उद्योग	१५९०
	९१७१

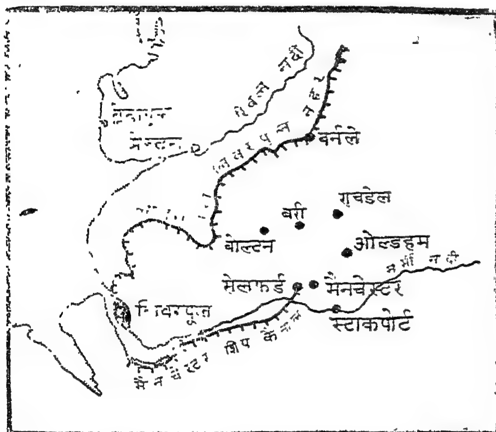
सूती वस्त्र उद्योग

१८ वीं शताब्दी के अन्त में निम्नलिखित कारणों से ब्रिटेन के सूती वस्त्र-व्यवसाय में असाधारण उन्नति हुई—(१) ब्रिटेन की बढ़ी-चढ़ी सामुद्रिक शक्ति तथा विस्तृत साम्राज्य के कारण कच्चा माल (कपास) मिलने तथा बने हुए माल के बिकने की सुविधा थी। (२) कपास उत्पादक देशों में औद्योगिक उन्नति नहीं थी। (३) यहाँ की आर्द्र जलवायु, जल शक्ति तथा कोयला वस्त्र उद्योग स्थापना के लिए स्वाभाविक सुविधाएँ थीं। (४) सूत कातने की मशीनों और यन्त्रों की सुविधाएँ थीं। (५) भारत तथा अन्य कपास के देशों में राजनैतिक स्वतन्त्रता नहीं थी तथा (६) यूरोप के अन्य देशों में राजनैतिक अशान्ति तथा युद्ध का बोलबाला था।

सूती वस्त्र उद्योग के केन्द्र तथा सुविधाएँ—ब्रिटेन का यह धंधा मुख्यत: लंकाशायर तथा समीपवर्त्ती क्षेत्रों में ही केन्द्रित है। इस धन्धे में लगे हुए ८५ प्र० श० व्यक्ति लंकाशायर, चेशायर तथा डर्बीशायर में ही रहते हैं। लंकाशायर में इस धन्धे के लिए निम्नलिखित सुविधाएँ प्राप्त हैं—(१) पछुआ हवाओं के कारण सूत कातने के लिए उत्तम नम जलवायु। (२) लंकाशायर के सामने अमरीका के

बन्दरगाहों की स्थिति से कच्चा माल मँगाने की सुविधा। (३) कोयले, चूने के पत्थर तथा जल शक्ति की यथेष्ट प्राप्ति। (४) लिवरपूल के बन्दरगाह की समीपता, मजदूरों की कुशलता, पीढ़ियों से इस व्यवसाय का अनुभव, वस्त्र तैयार करने की मशीनों का आविष्कार, मैनचेस्टर-शिप कैनाल की व्यवस्था आदि)

ग्रेट ब्रिटेन में कपास का उत्पादन तो नहीं होता। यहाँ पर कपास संयुक्त राष्ट्र अमरीका, भारतवर्ष, पीरु, मिस्र, सूडान तथा ब्राजील से मँगाई जाती है। चूँकि यहाँ उत्तम प्रकार का महीन कपड़ा बिना जाता है, इसलिए लम्बे रेशे वाली कपास संयुक्त राष्ट्र, मिस्र और सूडान से मँगाई जाती है।



चित्र ५६—दक्षिणी लंकाशायर में सूती वस्त्र के केन्द्र

वस्त्र उद्योग सम्बन्धी भिन्न-भिन्न कार्य—(लंकाशायर के नगरों को सूती वस्त्र उद्योग के विचार से दो श्रेणियों म बाँट सकते हैं।-प्रेस्टन, ब्लैकबर्न तथा वर्नले आदि उत्तर के केन्द्रों में बुनाई का काम होता है और रोशडेल (Rochdal), ओल्डहम, बोल्टन तथा बरी आदि दक्षिणी केन्द्रों में सूत कातने का धन्धा केन्द्रित है। लंकाशायर से ८० प्र० श० वस्त्र बाहर भजे जाते हैं।) स्काटलैंड में ग्लासगो तथा पेसले भी वस्त्र उद्योग के प्रधान केन्द्र हैं। पेसले में डोरा बहुत बुना जाता है। ग्लासगो में वे सभी सुविधाएँ है जो लंकाशायर को हैं; परन्तु इस्पात उद्योग की वृद्धि के कारण सूती वस्त्र उद्योग पीछे रह गया है।

ग्रेट ब्रिटेन में कच्ची कपास का उपभोग

(लाख पौंड में)

उत्पादक प्रदेश	१९४०	१९५०
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	६,६८०	३,३९०
मिस्र	२,५९०	१,९७०
ब्राजील	९९०	१,६३०
सूडान	५६०	८२०
भारत और पाकिस्तान	१,४३०	५८०
बेल्जियन कान्गो	—	३००
पीरु	८९०	३६०

उत्पादन प्रदेश	१९४०	१९५०
ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका	—	४१०
फ्रांसीसी भूमध्यरेखीय अफ्रीका	—	—
रूस	—	—
ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका	—	१९०
अन्य	७५०	१३०

ब्रिटिश सूती वस्त्र के ग्राहक—ब्रिटेन के सूती माल के प्रमुख ग्राहक भारतवर्ष, चीन, मिश्र, जर्मनी, हालैंड, तुर्की वैस्ट इंडीज, दक्षिणी तथा मध्य अमरीका, मध्य अफ्रीका, जापान, आस्ट्रेलिया, कनाडा, संयुक्तराष्ट्र, स्पेन, इटली, फ्रांस और स्विटजरलैंड हैं। ब्रिटेन भी जापान, फ्रांस जर्मनी और स्वीजरलैंड से काफी सूती वस्तुएँ मँगाता है।

ब्रिटिश वस्त्र उद्योग का पतन—१९१३ तक संसार के वस्त्र व्यापार पर लंकाशायर का एकछत्र अधिकार था। अब इसके बहुत-से पूर्वी बाजार जापान और संयुक्त राष्ट्र के हाथ में आ गए हैं। इसके अतिरिक्त एशिया तथा अफ्रीका के देश अब अपने यहाँ काफी कपड़ा बनाने लगे हैं। फिर बाहर के देशों में भारी चुंगी लगा दी गई है। और जापान में सस्ते मजदूरों तथा राज्य के प्रोत्साहन के कारण जापानी वस्त्र चीन तथा भारत में सस्ता पड़ता है। इन्हीं कारणों से लंकाशायर के वस्त्र उद्योग का पतन हो गया है।

ब्रिटेन में सूती वस्त्र व्यवसाय की अवनति के आँकड़े

(लाख गज)

	१९१३ में	१९३७ में
वस्त्र का निर्यात	७०,००० गज	१९,००० गज
कपास का आयात	२१,००० गज	१२,००० गज
भारत को वस्त्र निर्यात	३०,००० गज	४० ००० गज

ब्रिटेन के वस्त्र उद्योग की स्थिति—यद्यपि ब्रिटेन में वस्त्र उद्योग को पुनः संगठित करने के उद्योग किए जा रहे हैं फिर भी अभी तक पूर्व दशा की प्राप्ति नहीं हो सकी है। बारीक कपड़े-व्यापार में तो ब्रिटेन पहले की ही भाँति बढ़ा-चढ़ा है परन्तु मोटे कपड़े के व्यापार में वर्तमान स्थिति की भी संभावना नहीं है। ब्रिटेन को पूर्वी देशों से मुकाबला करने में कपड़े का मूल्य घटाना पड़ेगा और समय के अनुसार अपने उद्योग में भी परिवर्तन करना पड़ेगा।

सूती वस्त्र उत्पादन और निर्यात (१९५४)

	उत्पादन	निर्यात
सूत (लाख पौंड)	८४१०	५२०
सूती वस्त्र (लाख गज)	१९९४०	६३१०

सन् १९३९ में निर्यात की मात्रा—सूत १५९० लाख पौंड तथा कपड़ा १९२१० लाख गज थी।

ग्रेट ब्रिटेन के विभिन्न कारखानों को एक में मिलाकर केन्द्रीभूत करने की योजना पर विचार हो रहा है ताकि अन्दर में ज्यादा से ज्यादा खर्च बचाया जा सके। दूसरी बात यह है कि यद्यपि मोटे कपड़े के बाजार में लंकाशायर बहुत कुछ पिछड़ गया है परन्तु महीन कपड़े के उत्पादन में वह अपना सानी नहीं रखता। यह कहा नहीं जा सकता कि वह अपनी खोई हुई मंडियों में फिर से प्रभुत्व जमा सकेगा या नहीं। सम्भव है आने वाली व्यापारिक स्पर्धा में उसकी वर्त्तमान स्थिति भी न रह पाये। अस्तु, लंकाशायर सूती वस्त्र उद्योग का भविष्य इस बात पर निर्भर है कि वह उच्च कोटि के महीन वस्त्रों के बनाने तक अपने को सीमित रखे और यह तभी सम्भव हो सकता है जब उत्पादन की लागत बहुत कम कर दी जाए।

लोहे तथा इस्पात का धंधा

लोहे व इस्पात के उत्पादन में ग्रेट ब्रिटेन का संसार में तीसरा स्थान है। इससे आगे केवल संयुक्त राष्ट्र अमरीका और सोवियत रूस हैं। संयुक्त राष्ट्र का उत्पादन ९३० लाख टन तथा रूस का उत्पादन ३७० लाख टन है। सन् १९३९ के पहले कुछ दूसरी ही शक्ल थी। संयुक्त राष्ट्र सर्व प्रथम था परन्तु दूसरा स्थान जर्मनी लिए हुए था। रूस का तीसरा स्थान था और संयुक्त राज्य चौथा था। हाल के दिनों में पश्चिमी जर्मनी का स्थान चौथा हो गया है। इस देश में कोयले और लोहे के पास-पास पाये जाने से इस्पात उद्योग के विकास की इतनी प्रगति हुई है। उत्पादन बराबर तेजी से बढ़ रहा है। सन् १९४६ में इस्पात उत्पादन १२९ लाख टन था पर सन् १९५३ में बढ़कर यह १७६ लाख टन से भी अधिक हो गया। इस समय एक विकास योजना पर काम हो रहा है जिसके अनुसार सन् १९५८ तक उत्पादन २२० लाख टन हो जायगा। अभी कुछ दिन पहले तक यह उद्योग सरकार की देख-रेख में था। आयात किया हुआ कच्चा माल सरकार द्वारा बाँटा जाता था और ग्राहकों को तैयार इस्पात भी सरकार द्वारा दिया जाता था। इस्पात की चद्दरों और टीन की प्लेटों को छोड़कर अन्य सभी प्रकार के इस्पात के वितरण पर सरकारी नियंत्रण मई सन् १९५० में हटा लिया गया।

इस्पात उत्पादन से सम्बन्धित ही यहाँ का इंन्जिनियरिंग उद्योग है। मशीनों के कल-पुर्जे, कपड़ा बुनने की मशीनें, रेल के इंजन, खेती की मशीनें और दफ्तर में प्रयुक्त सहायक मशीनें यहाँ के इन्जिनियरिंग उद्योग की प्रमुख देन हैं। इन पाँच प्रकार की वस्तुओं का मूल्य कच्चे लोहे के आयात मूल्य के बराबर होता है। बिजली उद्योग भी काफी महत्वपूर्ण है और उसमें पाँच लाख व्यक्ति लगे हुए हैं। इस महत्वपूर्ण उद्योग की प्रमुख वस्तुएँ टेलीग्राफ, टेलीफोन, बिजली की रोशनी, बिजली तैयार करने की भारी डाइनेमो मशीनें, रेडियो, टेलीविजन, राडर, इस्त्री, गर्म कपड़े धोने की मशीन आदि हैं।

सन् १९५४ में इस्पात का उत्पादन १८५ लाख टन था। यूरोप का सबसे

बड़ा इस्पात का कारखाना दक्षिणी वेल्स के मारगम में है। इसका वार्षिक उत्पादन १५ लाख टन है। करीब में ही एक और कारखाना है जहाँ टूटे-फूटे लोहे से टीन की चद्दर बनाई जाती है। सन् १९५४ में लिंकनशायर के स्कनथ्रोप-स्थान पर यूरोप की सबसे बड़ी इस्पात भट्टी स्थापित की गई है और इसमें उद्योग के नये तरीकों को अपनाया गया है। फलस्वरूप सन् १९५५ में इस्पात उत्पादन १९,८९१,००० टन था जो अब तक सबसे अधिक रहा। सन् १९५४ की अपेक्षा यह १२७१,००० टन अधिक है। सन् १९५५ में पिगआयरन का उत्पादन १२,४७०,००० टन था जो सन् १९५४ की अपेक्षा ५८७००० टन अधिक है।

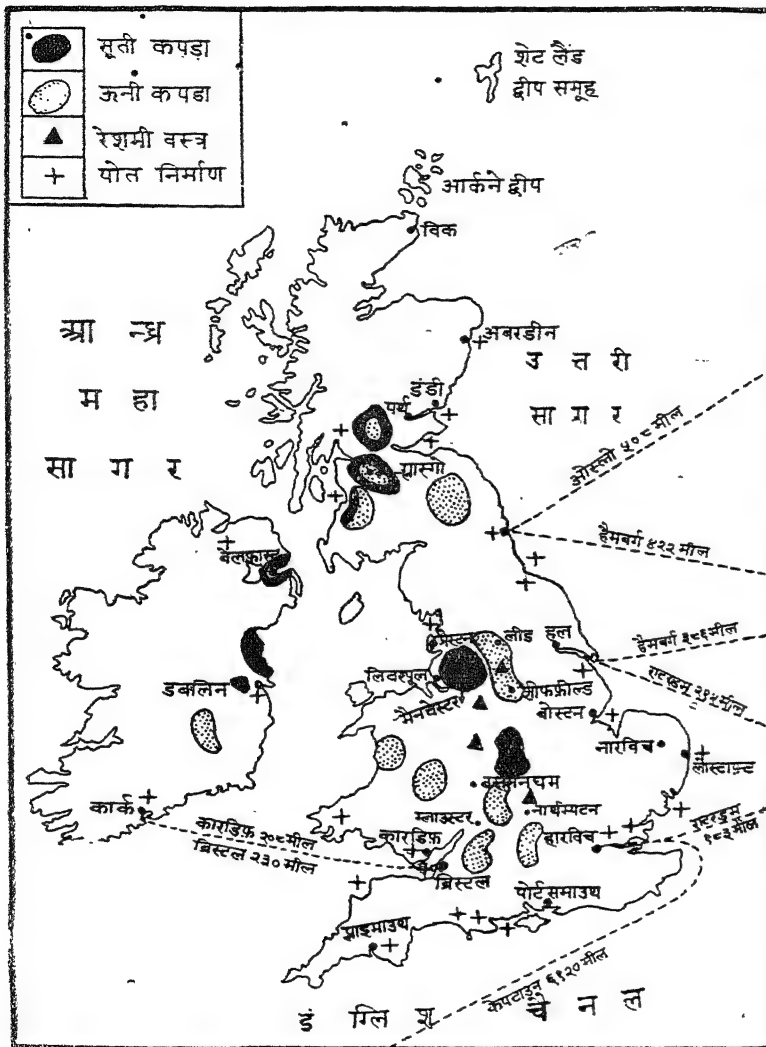
(१) **काला प्रदेश** (The Black Country)—यह ब्रिटेन का मुख्य लोहे और इस्पात का प्रदेश है। लोहे, कोयले, लकड़ी और चूने के पत्थर के पास-पास पाये जाने के कारण ही इस प्रदेश में लोहे तथा स्टील उद्योग की स्थापना हुई है। बर्मिंघम, कोवेन्टरी, डडले और रेडिच इस धंधे के प्रमुख केन्द्र हैं। **बर्मिंघम** में विशेष रूप से मोटर-साइकिल, रेल का सामान, मशीनें, औजार, बिजली का सामान तथा पीतल के बर्तन; **कवेन्टरी** में कारें और साइकिलें, **रेडिच** में सुइयाँ तथा **डडले** में जंजीरें बनाई जातीं हैं। समुद्र से दूर होने के कारण काफी खर्च पड़ता है इसलिए अधिक मूल्य की वस्तुएें बनाई जाती है।

(२) **शैफील्ड प्रदेश—कटलरी का प्रसिद्ध केन्द्र**—यहाँ पर लोहे का धंधा यहाँ के कच्चे लोहे, लकड़ी तथा जल-शक्ति के कारण आरंभ हुआ था। अब लोहा समाप्त हो गया है और अधिकतर कच्चा लोहा लिंकनशायर तथा स्वीडन से आता है। यहाँ पर छुरी, उस्तरे, कैंची, चाकू आदि हल्की वस्तुएँ तथा मैंगनीज स्टील, क्रोमियम स्टील और टंगस्टन स्टील आदि भी बनाये जाते हैं। इस प्रदेश के रौथरहैम तथा चेस्टरफील्ड मुख्य केन्द्र हैं।

(३) **उत्तर-पूर्वीय तट जहाजों नावों तथा इंजीनियरिंग के केन्द्र—टाइन, वीयर तथा टीज प्रदेश**—टी-साइड लोहा गलाने का केन्द्र है। इस क्षेत्र के अन्य नगर हार्टिलपूल, मिडिल्सवारो और डार्लिंगटन हैं जिनमें क्रमशः जहाज, ऐंजिन तथा इंजीनियरी का सामान बनाया जाता है। टाइन साइड के न्यूकैसिल में आधुनिक ढंग के जहाज तथा वीयर साइड के सन्डरलैंड में माल ढोने वाली नावें बनाई जाती हैं। इस प्रदेश में कच्चे लोहे, कोक, चूने के पत्थर तथा उत्तम श्रेणी के धातुओं की सुविधाएँ हैं। इस प्रदेश में इस्पात उद्योग के लिए कई सुविधाएँ हैं—(१) कच्चा लोहा पास में ही पाया जाता है, (२) दक्षिणी डरहम में उच्च कोटि का कोक के योग्य कोयला पाया जाता है, (३) पेनाइन की श्रेणी में चूने के पत्थर का भंडार पाया जाता है, (४) स्वीडन और स्पेन से अच्छी किस्म का लोहा आसानी से आ सकता है।

(४) **फरनेस प्रान्त**—यह उत्तर-पश्चिमी तटीय प्रदेश स्टील तथा पिग आयरन बनाने का केन्द्र है। **बारो** (Barrow) जहाज बनाने का केन्द्र है।

(५) **दक्षिणी वेल्स**—इस प्रदेश में टीन की चादरें बनती हैं। यहाँ स्पेन



चित्र ५७—ग्रेट ब्रिटेन के प्रमुख उद्योग-धन्धे

तथा अलजीरिया से लोहा तथा मलाया, बोलिविया और नाइजीरिया से टीन आता है। स्वान्सी तथा लेनली प्रधान नगर हैं।

(६) **स्काटलैंड की मध्य घाटी**—वह प्रदेश इंजीनियरी तथा पोतनिर्माण के धन्धे के कारण प्रसिद्ध है। ग्लासगो, ग्रीनोक तथा डम्बरटन यहाँ के प्रधान केन्द्र हैं।

मोटर निर्माण उद्योग

संयुक्त राज्य में मोटरों के निर्माण उद्योग ने सन् १९४६ और सन् १९५३ के बीच में बड़ी जबरदस्त प्रगति की है। सन् १९३८ में इस उद्योग का कुल उत्पादन ४४७००० गाड़ियाँ थीं, परंतु सन् १९५३ में ८३५००० मोटर गाड़ियाँ और ट्रकें तैयार हुईं। यह उद्योग मिडलैंड प्रदेश के पश्चिमी भाग में केन्द्रित हैं। कवन्टरी, बरमिन्घम, विशाल लन्दन, बेडफार्डशायर, आक्सफार्डशायर, नार्थएम्पटन-शायर और लंकाशायर में मोटर-निर्माण के कारखाने पाये जाते हैं।

संसार के मोटर-गाड़ी निर्यात करने वाले देशों में संयुक्त राज्य का बड़ा ही प्रमुख स्थान है। ब्रिटेन की मोटरों की मण्डियाँ संयुक्त राष्ट्र अमरीका, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया है। १० प्रतिशत मोटर-गाड़ियाँ संयुक्त राष्ट्र को जाती हैं। मोटर-गाड़ियों के निर्यात के विषय में एक नई बात यह है कि जिन देशों में मोटर-गाड़ियाँ जाती हैं वहाँ पर इनको फिट करने का पूरा प्रबन्ध तथा कारखाने होना जरूरी है।

पोत निर्माण उद्योग

पोत-निर्माण ग्रेट ब्रिटेन का मुख्य धंधा है। संसार के पोत निर्माण करने वाले देशों में ग्रेट ब्रिटेन का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। सन् १९४६ से सन् १९५२ की अवधि में ग्रेट ब्रिटेन ने ८६ लाख टन भार के जहाज तैयार किए। इस उत्पादन के अनुसार उसका स्थान सर्वप्रथम है, परंतु इस पोत निर्माण का अधिकांश भाग समुद्र पार ग्राहकों के लिए होता है। ऊपर दिए हुए ८६ लाख टन भार में ३० लाख से अधिक टन भार जहाज २७ विविध देशों को निर्यात कर दिए गए। ब्रिटिश जहाजों के मुख्य ग्राहक निम्नलिखित हैं—

नार्वे	३० प्रतिशत
आर्जेन्टाइना	८ प्रतिशत
फ्रांस	८ प्रतिशत
पुर्तगाल	६ प्रतिशत
हालैण्ड	६ प्रतिशत
स्वीडन	३ प्रतिशत

इसके लिए दो बातों की आवश्यकता है—(१) नाव्य नदी तथा समुद्री प्रवेश की सुविधा और (२) पोत-निर्माण सामग्री की प्राप्ति। पिछली शताब्दियों में पोत-निर्माण सामग्री की भिन्नता के कारण इस धन्धे के भिन्न-भिन्न केन्द्र रहे हैं। जब लकड़ी के जहाजों का समय था तो लकड़ी की प्राप्ति की सुविधा के कारण टेम्स पोत-निर्माण का केन्द्र था। १९वीं शताब्दी के मध्य भाग में लोहे के जहाज़ बनने लगे तो यह धंधा लोहे की खानों के समीप होने लगा। ब्रिटेन में पोत-निर्माण की उत्पत्ति तथा उन्नति निम्न कारणों से हुई—

अ—नदियों के गहरे मुहाने।

ब—कोयले तथा लोहे-उद्योग का समीप में ही केन्द्रित होना तथा

स—जहाजों की बढ़ती हुई माँग।

विशिष्ट पोतों के केन्द्र—आजकल पोत-निर्माण उद्योग ग्रेट ब्रिटेन के ५ प्रमुख प्रदेशों में केन्द्रित है:—

(१) उत्तर-पूर्वी तट प्रदेश (टाइन, वीअर, टीज नदियाँ)

(२) क्लाइड नदी प्रदेश

(३) बेल्फास्ट प्रदेश

(४) बर्कनहैड प्रदेश तथा

(५) बारो प्रदेश

उत्तर-पूर्वी तट प्रदेशों में सभी श्रेणी के जहाज बनते हैं। क्लाइड प्रदेश में यात्री जहाज, वेलफास्ट प्रदेश में मोटर जहाज, बर्कनहैड प्रदेश में युद्ध-पोत (जंगी जहाज) तथा बारो प्रदेश में व्यापारी पोत (सौदागरी जहाज) विशेषकर बनते हैं। टेम्स नदी पर अब जहाज नहीं बनते; हाँ, लन्दन में जहाजों की मरम्मत का धन्धा होता है। **क्लाइड** प्रदेश में बड़े-बड़े यात्री जहाज बनाये जाते हैं। सैनिक जहाजों का भी निर्माण किया जाता है। संसार में क्लाइड पोत-निर्माण-क्षेत्र की तरह मशीनों से युक्त शायद ही कोई और क्षेत्र होगा। सन् १९३९ तक उत्तरी-पूर्वी तटीय तथा क्लाइड प्रदेशों में ब्रिटिश पोत-निर्माण का ७५ प्रतिशत अंश यहीं से प्राप्त होता था। **बेलफास्ट** प्रदेश के पास इस्पात-निर्माण का कोई कारखाना नहीं है, परंतु ईंधन और कच्चे माल को आसानी से स्काटलैंड और कम्बरलैंड से मँगाया जा सकता है। यहाँ पर मोटर वाले जहाज बनाये जाते हैं। **बरकनहेड** में नौसेना के जहाज, आरामपूर्ण यात्री-जहाज और समुद्र गहरा करने वाले जहाज बनाये जाते हैं। **बैरो** में व्यापारी जहाज, पनडुब्बी किश्ती तथा सैनिक-पोत बनाये जाते हैं। पोत-निर्माण के अन्य गौण केन्द्र गूल, एबरडीन, डण्डी, लीथ साउथएम्पटन तथा कौस हैं।

आजकल टेम्स प्रदेश में लन्दन में जहाज नहीं बनाये जाते क्योंकि वहाँ कच्चा माल तथा ईंधन बड़ा मंहगा पड़ता है। लोहे के प्रयोग से पहले यह सबसे बड़ा पोत-निर्माण केन्द्र था, परंतु आखिरी जहाज सन् १९११ में बनाया गया।

ऊन का धन्धा

यहाँ का यह बहुत पुराना धंधा है, परंतु अब इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। यह धंधा यार्कशायर में केन्द्रित है। इसके लिए यहाँ अनुकूल दशाएँ हैं:—(१) उपयुक्त जलवायु, (२) ऊन धोने और रँगने के लिए पीनाइन पर्वत से जल-प्राप्ति, (३) पीनाइन पर चराने के लिए उत्तम चरागाह, (४) जल-शक्ति की सुविधा तथा समुद्र-तट से समीपता।

यार्कशायर का वैस्टराईडिंग—ऊन के धंधे का प्रधान केन्द्र वैस्ट राईडिंग है। यहाँ कोयला बहुत मिलता है। लीडस, ब्रैडफोर्ड, हैलिफैक्स तथा हडरशोल्ड नगर यहाँ के मुख्य केन्द्र हैं। हैलिफैक्स में कालीन बहुत बनते हैं। यहाँ पर ऊन

काफी नहीं होती इसलिए आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड, दक्षिणी अफ्रीका, भारत, अर्जेन्टाइना तथा युरुगुवे से मँगाया जाता है) इंगलैंड में न्यूजीलैड का ६० प्रतिशत अर्जेन्टाइना का २५ प्रतिशत, दक्षिणी अफ्रीका का २० प्रतिशत और आस्ट्रेलिया का ३५ प्रतिशत ऊन आता है। (दुनिया का सबसे अधिक ऊन यहीं आता है। यहाँ का ऊनी कपड़ा बहुत बढ़िया होता है और जर्मनी, जापान, स्वीडन, नारवे, रूस डेनमार्क, इटली, स्पेन तथा संयुक्त राष्ट्र को जाता है) ब्रिटेन में बना ऊनी सामान उच्च कोटि का होता है मशीनों के बेतरतीब प्रयोग द्वारा माल की किस्म को घटिया नहीं होने दिया गया है।

चमड़े का धन्धा

ब्रिटेन के इस धंधे का दुनिया में तीसरा स्थान है। यह धंधा ऊँचे दर्जे का होता है। यहीं के पशुओं से काफी चमड़ा मिल जाता है और बाहर से भी आता है, विशेषकर भारत से बकरे की खालें मँगाई जाती हैं। लगभग ८०,२०० लाख मेमने की खाल, इससे कुछ कम बछड़े की खाल तथा करीब १२५ लाख गाय की खालें और कुछ थोड़ी-सी घोड़े और बैल की खालें प्रति वर्ष देश में ही मिल जाती हैं। लंदन, ब्रिस्टल, ग्लासगो तथा लिवरपूल इस धंधे के प्रधान केन्द्र हैं। साउथ लंकाशायर प्रान्त भारी चमड़े का केन्द्र है। यार्कशायर, ऐसेक्स, कैन्ट तथा सरे इस धंधे के अन्य केन्द्र हैं। सन् १९५२ में २०,००० मनुष्य इस धंधे में लगे हुए थे। चमड़े की भारी वस्तुओं के लिए दक्षिणी लंकाशायर प्रदेश विशेष महत्त्वपूर्ण है। यह लिवरपूल से लेकर मैनचेस्टर तक फैला हुआ है। इसके अन्य केन्द्र यार्कशायर, एसेक्स, केन्ट और सरे हैं। चमड़े की हल्की वस्तुएँ बनाने के केन्द्र देश भर में फैले पड़े हैं।

अन्य धंधे—अन्य धंधों में रासायनिक धंधे, शीशे का सामान, नकली रेशम, जूट तथा रेशम का धंधा सम्मिलित हैं। रासायनिक तथा शीशे का उद्योग दक्षिणी लंकाशायर तथा चेशायर में, चमड़े का धंधा मिडलैंड के नगरों में तथा जूट का धंधा डंडी में केन्द्रित है।

यातायात

ग्रेट ब्रिटेन की रेलव्यवस्था संसार के सर्वश्रेष्ठ मार्गों में से है और प्रधान रेलमार्गों को निम्नलिखित प्रदेशों में बाँट दिया गया है—(१) लन्दन मिडलैण्ड प्रदेश (२) पश्चिमी प्रदेश (३) दक्षिणी प्रदेश (४) पूर्वी प्रदेश (५) उत्तरी-पूर्वी प्रदेश और (६) स्काटलैंड प्रदेश। सन् १९५१ में ब्रिटिश रेलों द्वारा १००१० लाख व्यक्तियों ने यात्रा की और २८४८ लाख टन माल ले जाया गया। रेल मार्गों की कुल लम्बाई ५२००० मील है। अधिकतर गाड़ियाँ भाप से चलने वाले इंजन द्वारा खींची जाती हैं परन्तु अब बिजली और तेल का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है, विशेष कर दक्षिणी प्रदेश में। सन् १९५२ से पेनाइन के आर-पार बिजली की गाड़ी चलने लगी है।

संयुक्त राज्य के विस्तार को देखते हुए यहाँ पर सड़कों की लम्बाई संसार

के सभी देशों से अधिक है। प्रत्येक १ वर्गमील क्षेत्रफल पर २ माल सड़कों का औसत पड़ता है। इस प्रकार यहाँ पर सड़कों की कुल लम्बाई १८४००० मील है। साथ-साथ मोटरों की संख्या भी बहुत अधिक है। सन् १९५२ में सड़कों पर चलने वाली मोटरों की संख्या ४५५,८४३ थी।

इंगलैंड और वेल्स में प्रमुख जलमार्ग हम्बर, मर्सी, टेम्स और सेवर्न नदियों से निकलते हैं। इन नदियों के मुहाने और मिडलैन्ड के बीच नहरों का एक जाल-सा बिछा हुआ है। हम्बर, ट्रेन्ट और मर्सी के बीच भी अनेकों जलमार्ग पाये जाते हैं। यहाँ की प्रमुख नाव्य नहरें निम्नलिखित हैं—

(१) लंकास्टर नहर।
(२) लीड्स और लिवरपूल नहर।
(३) मैनचेस्टर शिप नहर।
(४) ली नैवीगेशन।
(५) ट्रेन्ट नैवीगेशन।
(६) शेफील्ड नहर।
(७) दक्षिणी यार्कशायर नहर।

स्काटलैन्ड में सबसे महत्वपूर्ण नहर कैली कोनियन है जो उत्तर-पूर्व में स्थित इनवरनेस को पश्चिम में फोर्ट विलयम से मिलाती है। इस प्रकार की सभी नहरों की नाव्य दूरी २४०० मील है।

ग्रेट ब्रिटेन में वायु यातायात की व्यवस्था एक वायु यातायात संस्था के आधीन है। जिसका राष्ट्रीयकरण हो चुका है। यहाँ के प्रमुख हवाई अड्डे लन्दन प्रेस्टविक, वेलफास्ट, वर्रामंघम, लिवरपूल, मैनचेस्टर और नारफोक हैं। लन्दन का हवाई अड्डा अन्तर्राष्टीय महत्व का है। यह लन्दन से १४ मील दूर है। सन् १९५४ में देश में १०० असैनिक हवाई अड्डे थे। सन् १९५२ में इन हवाई अड्डों पर तीस लाख यात्री आये, ६२,४८० टन माल लादा-उतारा गया और ९७६० टन डाक ले जाई गई।

यहाँ पर वायु-यातायात के क्षेत्र में दो कम्पनियाँ विशेष रूप से प्रमुख हैं—

(१) ब्रिटिश ओवरसीज एयरवेज कारपोरेशन।
(२) ब्रिटिश यूरोपियन एयरवेज कारपोरेशन।

प्रथम कम्पनी के जहाज उत्तरी व दक्षिणी अटलान्टिक, पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका, मध्यपूर्व, पाकिस्तान, भारत, लंका और बर्मा तथा सुदूरपूर्व और आस्ट्रेलिया तक चलते हैं। दूसरी कम्पनी के जहाज यूरोप महाद्वीप और भूमध्य-सागर के क्षेत्र में चलते हैं। यही कम्पनी ग्रेट ब्रिटेन के भीतरी भागों के बीच भी वायु-यातायात की व्यवस्था करती है।

सन् १९५१ में संयुक्त राज्य की विविध कम्पनियों के जहाजों ने ५३,६६४,००० मील की उड़ान की और १,४११,२०० यात्रियों ने यात्रा की। कुल ३७,५८४ टन माल ढोया गया।

ब्रिटेन का वैदेशिक व्यापार

ब्रिटेन का वैदेशिक व्यापार संयुक्त राष्ट्र के पश्चात् संसार में दूसरे स्थान पर है। यहाँ का व्यापार समुद्र द्वारा होता है। यहाँ निर्यात की अपेक्षा आयात अधिक होता है परन्तु बैंकों, बीमों और जहाजों की आय के कारण ब्रिटेन लाभ में ही रहता है। इनको अदृश्य निर्यात कहते हैं और ग्रेट ब्रिटेन के वैदेशिक व्यापार में इनका बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार के अदृश्य निर्यात के कारण यहाँ का व्यापार सन्तुलन इसके पक्ष में रहता है। यहाँ के निर्यात व्यापार की रूप-रेखा यह है कि ब्रिटेन स्वनिर्मित वस्तुओं के अतिरिक्त बाहर से आई हुई वस्तुओं को भी जैसी की तैसी ही पुर्ननिर्यात कर देता है।

ब्रिटेन में आने वाली वस्तुओं को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है :—

(अ) **भोजन की वस्तुएँ**—गेहूँ, आटा, मक्का, जौ, दाल, चावल, राई, डेरी की वस्तुएँ, मछली, मांस, फल, चीनी, मसाले, चाय, कहवा, कोको, मदिरा, तम्बाकू तथा सब्जी।

(ब) **कच्चा माल**—कपास, ऊन, सन, जूट, रेशम, पटुआ, रबर, फर, लकड़ी, तिलहन, खनिज, तेल, खालें, हाथीदाँत, चमड़ा कमाने के पदार्थ, कच्चा लोहा, ताँबा, सीसा, मैंगनीज, जस्त, टीन, सोना, चाँदी इत्यादि।

(स) **तैयार माल**—सूत, सूती कपड़ा, चमड़े का सामान, लोहे का सामान, शीशा, विजली का सामान, रेशमी वस्त्र, चीनी मिट्टी इत्यादि।

ग्रेट ब्रिटेन संसार में सबसे अच्छा ग्राहक है। संसार के कुल निर्यात का २१ प्रतिशत केवल ग्रेट ब्रिटेन द्वारा उपभुक्त है। विभिन्न देशों के निर्यात में ग्रेट ब्रिटेन का अंश इस प्रकार है—

प्रदेश	प्रतिशतांश	प्रदेश	प्रतिशतांश
कनाडा	४०	अफ्रीका	२४
संयुक्त राष्ट्र	१७	एशिया	१४·७
दक्षिणी अमरीका	१५	आस्ट्रेलिया	६१
यूरोप	१२	रूस	२९

आयात व्यापार का प्रादेशिक वितरण

(१९५४)

	प्रतिशत		प्रतिशत
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	९	पूर्वी यूरोप	५
कनाडा	९	स्टरलिंग प्रदेश	४१
अन्य उत्तरी अमरीकी देश	२	अस्टरलिंग प्रदेश	२५
पश्चिमी यूरोप	३	शेष विश्व	६

संयुक्त राज्य के आयात की प्रधान मंडियाँ महत्व के अनुसार निम्नलिखित है। प्रत्येक से आयात का मूल्य लाख पौंड में दिया गया है।

(१९५४)

कनाडा	३११९४	पाकिस्तान	२८८
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	३११५७	न्यूजीलैण्ड	१९५६
आस्ट्रेलिया	२२४८	दक्षिणी अफ्रीका	१५३०
भारत	१४८०	आयरलैण्ड	८९६

सन् १९५४ में आयात का कुल मूल्य ३३७९० लाख पौंड था।

आयात का व्यौरा व स्रोत

गेहूँ : कनाडा, अर्जेन्टाइना और आस्टेलिया से
चावल : बर्मा, स्याम और स्पेन से
चीनी : क्यूबा, आस्ट्रेलिया और मारीशस से
चाय : भारत, लंका और जावा से
कहवा : गोल्ड कोस्ट से
चुकन्दर : अर्जेन्टाइना, युरुगवे, ब्राजील और आयरलैण्ड से
गोश्त : न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना से
मक्खन : न्यूजीलैण्ड, डेनमार्क और आस्ट्रेलिया से
पनीर : हालैण्ड, कनाडा और न्यूजीलैण्ड से
कपास : संयुक्त राष्ट्र सूडान, मिश्र और भारत से
पटसन : पाकिस्तान से
सन : रूस, बेल्जियम, बाल्टिक रियासतों से
ऊन : स्वीडन, फिनलैण्ड, कनाडा और रूस से
रबड़ : मालाया, लंका तथा स्ट्रेट्स सेटलमेन्ट्स से
लोहा : स्पेन, अलजीरिया और स्वीडन से
टीन : मलाया, बोलीविया, चिली और नाइजीरिया स।

ब्रिटेन से बाहर जाने वाली वस्तुएँ—यहाँ से ८० प्रतिशत पक्के माल का ही निर्यात होता है। कोयला ही केवल एक कच्ची वस्तु है जो बाहर भेजी जाती है। उत्पादन को ही बढावा दिया जाता है। अतः निर्यात की पुरानी वस्तुओं की माँग कम हो गई है और ब्रिटेन को अपने निर्यात व्यापार को कायम रखने के लिए निर्यात की वस्तुओं में परिवर्तन करना पड़ा है।

ग्रेट ब्रिटेन का व्यापारिक सम्बन्ध संसार के बहुत-से देशों के साथ है। उसके व्यापार सम्बन्ध का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है। इससे ब्रिटेन की आयात-निर्यात व्यवस्था का खाका साफ हो जाएगा।

(१) **उत्तरी अमरीका** से व्यापार करने वाले प्रधान ब्रिटिश बन्दरगाह लिवरपूल, ग्लासगो, साउथैम्पटन, और लन्दन हैं। उत्तरी अमरीका से लकड़ी, माँस, दुग्धशाला की वस्तुएँ, चमड़ा आर खालें, समूर, मछली, गेहूँ, कपास, मक्का, जई, तम्बाकू, मशीनें, वस्त्र खनिज तेल, ताँबा, जस्ता, चाँदी, शीशा, ग्रेफाइट, तथा

रबड़ का सामान ब्रिटिश द्वीपसमूह में आयात किया जाता है। इसके बदले में ब्रिटिश द्वीपसमूह मशीनें, रसायन, शराब, वस्त्र, लोहे की वस्तु तथा अलौह धातुएं आदि उत्तरी अमरीका को निर्यात करता है।

(२) **मध्य अमरीका और पश्चिमी द्वीपसमूह** से—ग्रेट ब्रिटेन को रबड़, कोको, कहवा, कपास, तम्बाकू, स्पंज, गिरी, चांदी, खनिज तेल, तिलहन और मसाले आते हैं। इन देशों को ग्रेट ब्रिटेन कपास, मशीनें, शराब तथा स्प्रिट निर्यात करता है।

(३) **दक्षिणी अमेरीका**—से आयात की मुख्य वस्तुएं माँस, गेहूँ, मक्का, खाल और चमड़ा, लकड़ी, ताँबा, ऊन, कहवा, चीनी, कोको, नाइट्रेट, रबड़, खनिज तेल हैं। ग्रेट ब्रिटेन से इस महाद्वीप को मशीनें, औजार, शीशा, जहाज, इंजन, धातुएं, मोटर गाड़ियाँ, रसायन, लोहे की वस्तुएँ, चमड़े का सामान तथा कोयला निर्यात किया जाता है।

(४) **उष्ण कटिबंधीय पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीका** से ब्रिटिश द्वीप-समूह में ताड़ का तेल, हाथी दाँत, रबड़, गोंद, मसाले, कोको, कहवा, कपास, लकड़ी, तिलहन, गन्ने की चीनी आदि वस्तुएँ आयात की जाती हैं। ब्रिटेन इन देशों को सूती वस्त्र, टीन का सामान, चाकू, छुरी बन्दूकें तथा औजार भेजता है।

(५) **दक्षिणी अफ्रीका**—ब्रिटेन से वस्त्र, रसायन, लोहे का सामान, कपड़े, चमड़े की वस्तुएँ, रेल के इंजन, मोटर गाड़ियाँ, मशीनें, औजार, हथियार तथा गोला बारूद आदि मंगवाता है। शुतुर्मुर्ग के पंख, ऊन, चमड़ा, हीरे, सोना, ताँबा, चाय, शराब तथा फल यहाँ से ब्रिटिश द्वीपसमूह को भेजे जाते हैं।

(६) **चीन-जापान**—से ग्रेट ब्रिटेन चाय, कच्चा रेशम और रेशमी वस्त्र, चावल, चीनी, खिलौने और दियासलाई आयात करता है। ग्रेट ब्रिटेन से इन देशों को निर्यात की प्रधान वस्तुएँ कपड़े, लोहे का सामान, मशीनें, तम्बाकू, हथियार तथा गोला-बारूद आदि हैं।

(७) **दक्षिणी पूर्वी तथा दक्षिणी पश्चिमी एशिया** के देशों से ग्रेट ब्रिटेन को खनिज-तेल, चमड़ा साफ करने का सामान, गेहूँ, चावल, मक्का, पटसन, कपास, अन्य वस्तुएँ विशेषकर लोहे का सामान, ऊनी तथा सूती वस्त्र, रासायनिक पदार्थ, कागज, मशीनें, चमड़े की वस्तुएँ, तम्बाकू, जूट, अस्त्र-शस्त्र तथा गोला-बारूद इत्यादि हैं।

ग्रेट ब्रिटेन का निर्यात व्यापार भी बहुत अधिक है। वास्तव में सन् १९१८ तक तो ग्रेट ब्रिटेन संसार में सबसे प्रमुख निर्यातक देश था परन्तु प्रथम महायुद्ध के बाद से संयुक्त राष्ट्र अमरीका का स्थान प्रथम हो गया और यह देश द्वितीय श्रेणी पर पहुँच गया।

ग्रेट ब्रिटेन के निर्यात व्यापार में तैयार किए हुए माल का अंश ८० प्रतिशत से अधिक रहता है। शिल्प उद्योग से तैयार किए हुए माल के अतिरिक्त दूसरी महत्त्वपूर्ण वस्तु कोयला है। निर्यात की प्रमुख वस्तुएं सूती कपड़ा, लोहा व इस्पात

की वस्तुएं, ऊनी कपड़े, रासायनिक पदार्थ, कागज, मशीनें, चमड़े का सामान, तम्बाकू, पटसन का कपड़ा, गोला-बारूद तथा हथियार हैं।

संयुक्त राज्य के निर्यात की प्रधान मंडियाँ महत्त्व के अनुसार निम्नलिखित हैं :—

१९५४	लाख पौंड
दक्षिणी अफ्रीका संघ	२०००
भारत	११५०
आस्ट्रेलिया	२१९८
आयरलैण्ड	९७०
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	१४४०
कनाडा	१२७४
न्यूजीलैण्ड	११३७
पाकिस्तान	५६२

ग्रेट ब्रिटेन के निर्यात व्यापार में इधर इन्जीनियरिंग उद्योग की वस्तुओं की अधिकता रही है। पहले यह देश वस्त्रों का अधिक निर्यात करता था परन्तु अब मशीनों का निर्यात बढ रहा है। युद्ध से पहले मशीनों, गाड़ियों और जहाजों का निर्यात कुल का २५ प्रतिशत होता था। परन्तु अब कुल निर्यात के ४० प्रतिशत से अधिक मूल्य की मशीनें, गाड़ियें तथा जहाज बाहर भेजे जाते हैं। इस सिलसिले में ध्यान रखने की बात यह भी है कि सन् १९३८ के मुकाबले इस समय का निर्यात व्यापार ड्यौढ़ा है।

निर्यात व्यापार में मशीनों के बाद रसायनिक पदार्थों का स्थान आता है। इसके अन्तर्गत खनिज तेल को साफ करने के उद्योग से प्राप्त वस्तुएँ भी शामिल हैं। तेल साफ करने का उद्योग ब्रिटेन में युद्ध उपरान्त स्थापित हुआ है। रसायन कुल निर्यात का १० प्रतिशत होते हैं। निर्यात व्यापार में यह परिवर्तन विभिन्न मंडियों में स्थानीय उद्योग-धन्धे के विकास के अनुसार ही है। उद्योग-धन्धों के विकास के साथ पिछड़े हुए देशों में जहाँ पहले ब्रिटिश वस्तुओं की खपत होती है अब स्थानीय मसाले, तिलहन, कहवा, चाय, नील, लकड़ी, हाथी दाँत, ऊन, सोना, तम्बाकू, चमड़ा और खालें, गटापर्चा, रबड़ तथा दालें भेजी जाती हैं। बदले में ग्रेट ब्रिटेन इन देशों को कपड़े, मशीनें, चमड़े का सामान, तम्बाकू, कोयला, कागज, इंजन, सूती कपड़े तथा लोहे का सामान निर्यात करता है।

(८) **आस्ट्रेलिशिया** को रेलों के इंजन, मोटर गाड़ियाँ, आराम की वस्तुएँ, रसायन, धातुएँ, जहाज आदि निर्यात किये जाते हैं और ग्रेट ब्रिटेन में भेड़ का मांस मक्खन, गेहूँ तथा आटा, ऊन, चाँदी, सोना, गिरी, शराब तथा खालें आयात की जाती हैं।

(९) **पश्चिमी और मध्य यूरोप तथा रूस से** ब्रिटिश द्वीपसमूह में दुग्धशाला की वस्तुएँ, अण्डे, चुकन्दर की चीनी, लकड़ी, गेहूँ, वन की वस्तुएं, समूर, आटा,

शराब, लोहे का सामान, खालें, रसायन तथा प्लेटिनम आदि आयात किया जाता है। इन देशों को ब्रिटेन कोयला, कपड़े, लोहे का सामान, मशीनें, कागज, चमड़े का सामान तथा मछलियाँ आदि निर्यात करता है।

(१०) **बाल्टिक देशों** से दूध, मक्खन, पनीर, सूअर का मांस, मछली, अंडे, दियासलाई आदि आयात किया जाता है। ग्रेट ब्रिटेन इन देशों को कोयला, लोहे का सामान, मशीनें, कपड़े, जहाज तथा धातुएँ आदि निर्यात करता है।

ग्रेट ब्रिटेन का अधिकांश आयात-निर्यात व्यापार कामनवेल्थ देशों के साथ होता है, जैसा कि निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा —

निर्यात (१९५४) कुल का प्रतिशत		आयात (१९५४) कुल का प्रतिशत	
भारत	४.३	भारत	३·३
दक्षिणी अफ्रीका	८·५	कनाडा	८·३
आस्ट्रेलिया	७·३	आस्ट्रेलिया	७·३
कुल कामनवेल्थ	४९·२	कुल कामनवेल्थ	३९.२
यूरोप	२६·७	यूरोप	२९.०

कामनवेल्थ देशों के साथ संयुक्त राज्य का व्यापार संतुलन सदैव ही ब्रिटेन के अनुकूल रहा है।

द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव—द्वितीय विश्व-युद्ध का ब्रिटेन के व्यापार पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। अब यह अमरीका पर अधिक निर्भर हो गया है। यहाँ की बनी हुई वस्तुएँ अब बहुत मँहगी पड़ती हैं। इस कारण ब्रिटेन की औद्योगिक स्थिति कमजोर हो गई है और उसकी बहुत-सी पूँजी नष्ट हो गई है। इसलिए ग्रेट ब्रिटेन के निर्यात व्यापार में घटती हो गई है। साथ-साथ ग्रेट ब्रिटेन में सोने व डालर का मुद्रा कोष भी बहुत कुछ खाली हो गया है। अब ब्रिटेन में अतिरिक्त उत्पादन के लिए प्रयत्न हो रहे हैं, जिससे आयात में कमी हो जाए और निर्यात अधिक हो सके।

संयुक्त राज्य के विदेश व्यापार का रूप

निर्यात (दस लाख पौंड)

	१९५१	१९५२	१९५३	१९५४
खाद्य, पेय और तम्बाकू	१५८	१५५	१४९	१५७
आधारभूत पदार्थ	१०८	८२	९७	१०१
खनिज तेल, कोयला और चिकनाने के पदार्थ	७०	१२५	१४८	१५२
शिल्प-उद्योग की वस्तुएँ	२१९५	२१४१	२०९८	२१७१
कुल योग	२५८२	२५८४	२५८२	२६७४

आयात (दस लाख पौंड)

	१९५१	१९५२	१९५३	१९५४
खाद्य, पेय और तम्बाकू	१२९१	१२०६	१३१५	१३३१
आधारभूत पदार्थ	१५२२	११४५	१०५४	१०२४
खनिज तेल, कोयला और चिकनाने वाले पदार्थ	३१५	३३९	३१४	३९२
शिल्प उद्योग की वस्तुएँ	७५८	७६८	६४३	६८०
कुल योग	३९०२	३४७७	३३४३	३३७९

ग्रेट ब्रिटेन के व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र तथा बन्दरगाह

लन्दन—संयुक्त राज्य (U. K.) की राजधानी और संसार भर में सबसे विशाल नगर तथा सबसे बड़ा बन्दरगाह है। ये टेम्स नदी के दोनों किनारों पर बसा हुआ है। ब्रिटेन का वितरक केन्द्र होने के कारण यहाँ निर्यात की अपेक्षा वस्तुओं का आयात अधिक होता है। बाल्टिक तथा भूमध्यसागर के बन्दरगाहों के साथ होने वाले वैदेशिक व्यापार पर अधिकतर लन्दन का ही अधिकार है। पूर्वीय देशों की चाय इत्यादि उपज तथा आस्ट्रेलिया की ऊन के लिए लन्दन एक प्रमुख मंडी है।

बर्मिंघम—मिडलैण्ड का व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र है। यहाँ पर तलवार, बन्दूक, लोहे के कलम, निब, साइकिल और मोटर के पुर्जे विशेषकर बनते हैं।

लिवरपूल—ब्रिटेन के पश्चिमी तट पर सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका, कनाडा, दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी अफ्रीका तथा पश्चिमी द्वीपसमूह से कच्ची वस्तुएँ तथा भोजन के पदार्थ (कपास, अनाज, तेल, रोगन, तम्बाकू इत्यादि) अधिकतर आते हैं। यहाँ से ऊनी-सूती वस्त्र, लोहे का सामान तथा रासायनिक पदार्थ बाहर भेजे जाते हैं। यहाँ पर वस्तुओं का निर्यात तथा आयात समीपवर्ती नगरों के लिए होता है।

मानचेस्टर—लंकाशायर के सूती वस्त्र उद्योग का प्रधान केन्द्र है। संसार भर में यह 'रुई की राजधानी' (Cotton Metropolis) के नाम से प्रसिद्ध है।

शैफील्ड—में लोहे की भारी वस्तुएँ तथा चाकू, कैंची, छुरी इत्यादि विशेषकर बनते हैं।

लीड्स तैयार वस्त्रों, चमड़े की वस्तुओं तथा मशीनों का मुख्य केन्द्र है। ब्रिटेन का चमड़ा व्यापार यहाँ सबसे अधिक होता है और यहाँ साबुन बनाने तथा तेल-शोधन के बड़े कारखाने हैं।

ब्रिस्टल—सेवर्न के मुहाने पर बहुत पुराना बन्दरगाह है। यहाँ अमरीका से तम्बाकू का व्यापार होता है।

हल—हम्बर नदी पर स्थित है। यहाँ से हैम्बर्ग तथा ब्रेमेन आदि महाद्वीपीय नगरों के साथ व्यापार होता है।

ब्रैडफोर्ट—यार्क्स के वैस्ट राइडिंग का रेशम, मखमल तथा रंग की वस्तुओं का प्रधान केन्द्र है।

साउथैम्पटन—इंगलैंड के दक्षिणी तट पर अमरीकन जहाजी मार्गों का अंतिम प्रसिद्ध स्थान है।

सन्डरलैंड—वीयर नदी के मुहाने पर इंगलैण्ड का प्रसिद्ध पोत-निर्माण केन्द्र है। यहाँ पर शीशे तथा रासायनिक पदार्थों के कारखाने हैं और रस्से भी बनाए जाते हैं।

ओल्डहम—दक्षिणी लंकाशायर का डोरे, धागे और वस्त्र उद्योग का प्रसिद्ध केन्द्र है।

कार्डिफ—वेल्स का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ से विदेशों को सबसे अधिक कोयला जाता है। यहाँ पर रासायनिक उद्योग, पोत-निर्माण तथा लोहा ढालने के कारखाने हैं।

स्वानसी—वेल्स का दूसरे नम्बर का महान् नगर है। यहाँ पर लोहा, ताँबा, चाँदी, जस्ता, टीन तथा सीसा गलाकर शुद्ध किए जाते हैं। स्पेन से लोहा तथा स्ट्रेट सैटिलमैंट और इन्डोनेशिया से खनिज ताँबा यहाँ आता है।

ग्लासगो—क्लाइड नदी पर स्काटलैण्ड का सबसे बड़ा नगर है। ब्रिटेन के पश्चिमी तट पर अमरीका से कच्चा माल मँगाने के लिए इसकी स्थिति बड़ी अच्छी है। यह पोत-निर्माण का प्रसिद्ध केन्द्र तथा संसार के सबसे व्यस्त औद्योगिक प्रदेश का भी केन्द्र है।

एडिनबर्ग—फोर्थ की खाड़ी पर स्थित एक शिक्षा-केन्द्र है। यहाँ से वस्तुएँ इधर-उधर वितरण की जाती हैं।

डण्डी—स्काटलैण्ड का तीसरे नम्बर का नगर, जूट व्यवसाय का प्रमुख केन्द्र तथा मछली व्यापार की मंडी है।

ऐबरडीन—स्काटलैण्ड का चौथे नम्बर का नगर है। यहाँ पर ऊनी वस्त्र, दरियाँ, रासायनिक पदार्थ, मशीनें, सन का मोटा कपड़ा आदि वस्तुएँ बनती हैं। संसार का सबसे बड़ा कंघों का कारखाना यहीं है।

बैल्फास्ट—आयरलैंड में सन व्यवसाय तथा पोतनिर्माण का केन्द्र है।

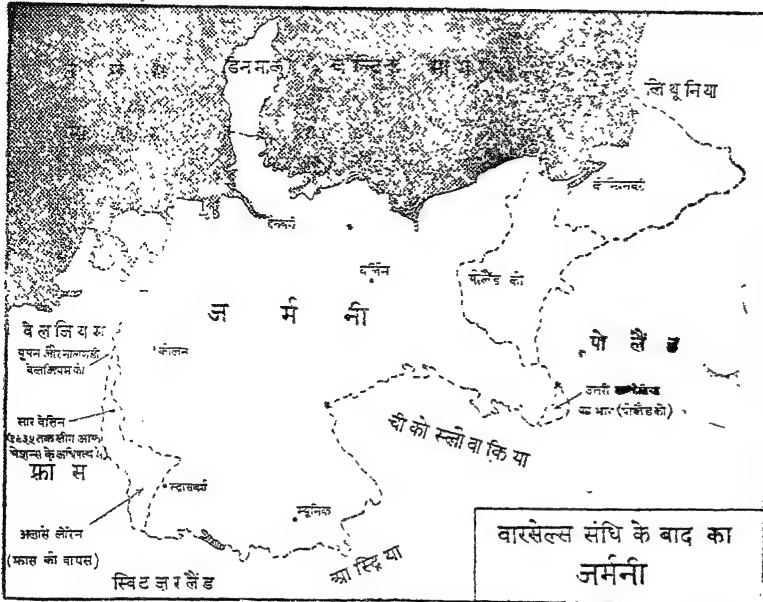
डबलिन—आयरलैण्ड की राजधानी तथा प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ पर पापलीन वस्त्र, बिस्कुट, रंग, शराब (ह्विस्की तथा बीय) आदि बनते हैं।

लिमरिक में सन का कपड़ा, मद्यसार (Spirits) तथा मदिरा बनाई जाती है।

जर्मनी

जर्मनी प्रधान का क्षेत्रफल ४७१,०७५ वर्ग किलोमीटर तथा जनसंख्या ६९० लाख है। जनसंख्या का घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर १४१ है। राजनीतिक रूप में इस देश को दो भागों में विभाजित कर दिया गया है—पश्चिमी जर्मनी जो संघ राष्ट्र है और पूर्वी जर्मनी जो जनतंत्र है। पश्चिमी जर्मनी का क्षेत्रफल

२४५,३१७ वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या ४९० लाख है। पूर्वी जर्मनी का क्षेत्रफल १०७,१७३ किलोमीटर है और आबादी १७० लाख है।

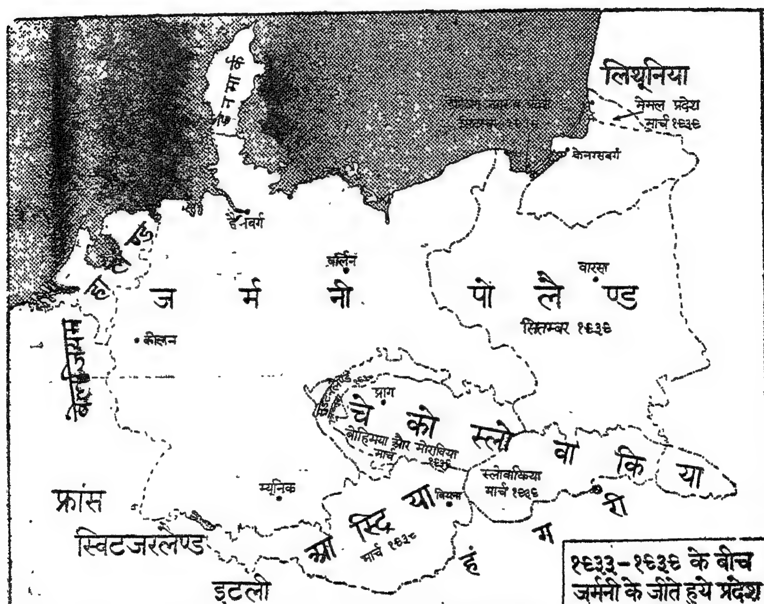


चित्र ५६—१९१९ के बाद का जर्मनी

सन् १९१८ से पहले जर्मनी के अनेक उपनिवेश थे। अफ्रीका में दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, कैमेरून तथा टोगो, प्रशान्त महासागर में केसर विल्हमलैण्ड, पपुआ, उत्तरी न्यू गिनी, न्यू ब्रिटेन द्वीप समूह, सोलोमन द्वीप, टोगां, उपोलू, कैरोबीन द्वीप, मैरीएनस तथा पील्यू द्वीप इसके आधिपत्य में थे। इनका विशेष सैनिक व व्यापारिक महत्व था। परन्तु १९१८ में प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय के साथ-साथ उसके सारे उपनिवेश ही नहीं छीन लिए गए बल्कि जर्मनी प्रधान की यूरोपीय सीमाओं को छिन्न-भिन्न करके २८००० वर्गमील क्षेत्रफल को उससे अलग कर लिया गया। उसका व्योरा इस प्रकार है—

प्रदेश	जनसंख्या	क्षेत्रफल
अलासे लोरेन	१,८७४,०१४	५,६०७
सार बेसिन	७१३,१०५	७४४
यूमेनको और माल मंडी (बेल्जियम में)	६०,००३	४००
पोलैंड को	६,८५४,९७१	१७,८१६
मेमल	१४१,२३८	१,०२६
डैनजिग	३३०,६३०	७३९
सेल्सविग (डेनमार्क को)	१६६,३४८	१५४२
चेकोस्लोवाकिया को	४८,४४६	१२२
योग	७,१८८,७५५	२७,९९६

लोरेन छिन जाने से क्षेत्रफल, आबादी के साथ-साथ लोहे और पोटाश का भंडार भी उसके हाथ से निकल गया। सेल्सविग, यूपन और मालमंडी का विशेष सैनिक महत्व था। डैनजिग प्रधान बाल्टिक बन्दरगाह था। पोलैंड को दिया गया क्षेत्र खनिज, वन सम्पत्ति तथा खेतिहर उपज से परिपूर्ण था। राइन जलमार्ग पर राष्ट्रीय लीग का नियन्त्रण था।



चित्र ६०—सन् १९३३ और १९३९ के बीच जर्मनी द्वारा प्राप्त नये क्षेत्र

परन्तु इन सबसे जर्मनी को हमेशा के लिए कमजोर नहीं रखा जा सकता। सन् १९३८ में वह पुनः शक्तिशाली देश बन गया। सन् १९३५ में चुनाव द्वारा सार उसको वापस मिल गया। सन् १९३९ में जर्मनी ने आस्ट्रिया, सुडेटन लैंड, बोहीमिया, मोराविया और स्लोवाकिया को अपनी सीमा में मिला लिया।

परन्तु दूसरे महायुद्ध के बाद सन् १९४५ में जर्मनी ने जब हथियार डाल दिए तो इसको चार प्रभागों में बाँट दिया गया। पूर्वी जर्मनी पर सोवियत रूस की सेनाओं ने कब्जा कर लिया, दक्षिणी-पश्चिमी जर्मनी पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सेनाओं ने कब्जा जमा लिया। पश्चिमी जर्मनी तथा उत्तरी पश्चिमी प्रभाग पर क्रमशः फ्रांस और संयक्त राज्य का अधिकार रहा। सन् १९३८ में संयुक्त राज्य, फ्रांस और संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपने प्रभागों को मिलाकर पश्चिमी जर्मनी के संघ राष्ट्र को जन्म दिया। इसकी राजधानी बॉन है। एक वर्ष बाद सन् १९४९ में पूर्वी जर्मनी में एक जनतंत्र की स्थापना की गई।

जर्मनी के औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति के साधन—निम्नलिखित

प्राकृतिक तथा मानवी कारणों से जर्मनी एक महान् औद्योगिक तथा व्यापारिक देश बन गया है:—(१) यूरोप के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश के मध्य स्थित है; (२) लोहा, कोयला, पोटाश, जस्ता इत्यादि खनिज पदार्थों की प्रचुरता है; (३) देश उपजाऊ है; (४) उत्तम जलमार्ग है; (५) जलवायु स्फूर्तिदायक है; (६) वन-सम्पत्ति के प्रचुर साधन हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के निवासियों तथा सरकार ने भी यहाँ की औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति में बड़ा योग दिया है। यहाँ की सरकार ने वैदेशिक व्यापार को प्रोत्साहन दिया तथा निवासियों ने एकमत होकर १८७१ में राष्ट्रीय औद्योगिक नीति को जन्म दिया। फ्रांस पर विजय प्राप्त करके ५ अरब फ्रैंक तथा लारेन और अलासे प्रांत प्राप्त किए। १८८८-८९ में जर्मनी ने संसार में उपनिवेशों की स्थापना की ओर वहाँ पर मंडियाँ बनाईं। इस प्रकार १९१४ में जर्मनी का उद्योग और व्यापार संसार में ब्रिटेन को छोड़कर दूसरे नम्बर पर था।

जर्मनी की वन-सम्पत्ति तथा कृषि—जर्मनी की जलवायु सभी स्थानों पर महाद्वीपीय है। दक्षिण के पहाड़ वनों से भरे हैं और उत्तरी भाग में मैदान हैं। इसके दक्षिणी तथा पश्चिमी भाग में छोटे जमींदारों और किसानों के खेत हैं और उत्तरी भाग में बड़े-बड़े जमींदार हैं। यहाँ पर सयत्न कृषि होती है और गेहूँ, राई, जौ, चुकन्दर तथा आलू की फसलें उगाई जाती हैं।

खेतिहर उत्पादन (१९५१)

(हजार मीट्रिक टन)

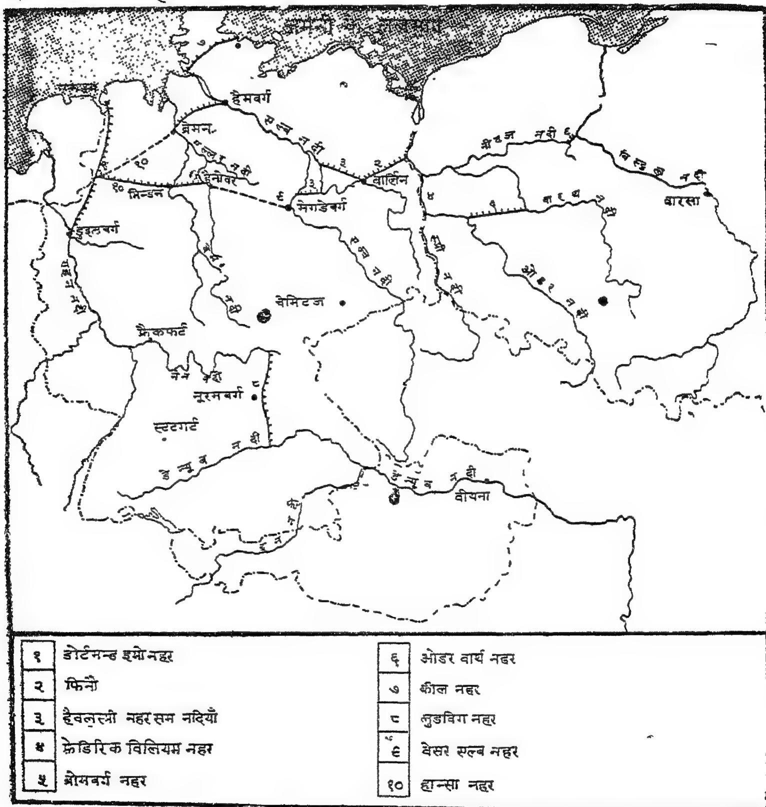
	पश्चिमी जर्मनी	**पूर्वी जर्मनी**
गेहूँ	३१८०	१४९४
राई	३४५८	२९९४
जौ	२०७२	५४५
चुकन्दर	६८४५	६२३०
	२४,३००	१५,१५१

यातायात—जर्मनी के जल, थल तथा वायु मार्ग सुव्यवस्थित हैं। रेलों की व्यवस्था संसार भर में अच्छी है। सन् १९४० में रेलमार्गों की लम्बाई ४३,००० मील थी। रेलें देश भर में फैली हुई हैं। १९३९ में यहाँ का हवाई यातायात भी किसी अन्य देश से कम नहीं था। दूसरे महायुद्ध में इसके यातायात को बहुत हानि पहुँची है और भविष्य में फिर उसी प्रकार बन सकेगा या नहीं, कहना मुश्किल है।

जर्मनी में रेलगाड़ियों की गति तीव्र करने के लिए तथा स्थान की बचत करने के लिए एक पटरी वाली रेलों को चालू किया जा रहा है। दूसरी लाइन वाले रेलमार्ग को जमीन के नीचे ले जाने या ऊपर उठाने की अपेक्षा इस इकहरे रेलमार्ग में कम खर्च पड़ता है।

सन् १९५५ के अप्रैल महीने से पश्चिमी जर्मनी ने वायुयातायात व्यवस्था की उड़ानें हैम्बर्ग से अन्य पश्चिमी यूरोपीय नगरों तक शुरू कर दी है। आन्ध्र महासागर के आर-पार उड़ानों की भी योजना है।

जर्मनी के जलमार्ग (नदियाँ)—जर्मनी के मैदानों में जलमार्गों की व्यवस्था अति उत्तम है। इन मार्गों के विकास का यहाँ के उद्योग-धंधों और व्यापार पर सब से अधिक प्रभाव पड़ा है। मुख्य नदियाँ राइन, एल्ब, ओडर तथा विस्चुला हैं। इन्हें गहरी करके नहरों द्वारा परस्पर मिला दिया गया है। इस प्रकार सारे देश में जलमार्गों की सुविधा हो गई है। राइन का सम्बन्ध पूर्व में वीसर से. पश्चिम में म्यूज से तथा दक्षिण में डैन्यूब से कर दिया गया है और फ्रांस के जलमार्गों से भी इसका सम्बन्ध है। राइन संसार की प्रमुख नाव्य नदी है। इस पर माल के आने-



चित्र ६१

जाने की मात्रा तथा यातायात उत्तरी अमरीका की बड़ी झीलों के ही समान है। ऐल्ब नदी सबसे घने आबाद भागों में बहती है और कील नहर द्वारा इसका संबंध बाल्टिक सागर से भी है। ओडर कृषि-प्रांतों में बहती है और ऐल्ब से भी मिली हुई ह। डेन्यूब में अधिक व्यापार नहीं होता। अन्य छोटी नदियों के नाम ऐम्स, इन, स्प्री, मेन तथा ऐल्ब हैं। नदियों और नहरों के मार्ग की लम्बाई ७,००० मील के लगभग है। सामान्यतः जर्मनी का $\frac{२}{५}$ माल जलमार्गों द्वारा ही ले जाया जाता है।

जर्मनी की नहर—१९३८ में मिडलैंड कनाल बना, जिसके द्वारा पूर्वी तथा पश्चिमी भागों का सम्बन्ध स्थापित हुआ। ओडर डैन्यूब नहर द्वारा डैन्यूब नदी भी जलमार्गों से मिला दी जायगी। ओडर-विस्चुला नहर पूर्व की ओर नीस्टर तक बढ़ाई जा रही है। इसके द्वारा जर्मनी का रूस से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जायगा। ऐल्ब-ओडर नहर तथा राइन-मेन-डैन्यूब नहर द्वारा शीघ्र ही मध्य तथा उत्तरी जर्मनी का डैन्यूब से सम्बन्ध स्थापित किया जायगा।

जर्मनी की खनिज सम्पत्ति—खनिज सम्पत्ति विशेषकर लोहे, कोयले में जर्मनी का बहुत ऊँचा स्थान है। इन दोनों का यहाँ पर अपार भंडार है, परन्तु पास-पास नहीं मिलते। यहाँ के मुख्य कोयला-क्षेत्र रूर, वैस्टफालिया, सार, साइलेशिया (Upper and Lower), ज्विक्शा तथा लूगान (सैक्सनी) हैं। लोहा क्षेत्र वैस्टरवाल्ड (प्रशिया), लाह-डील प्रदेश, अपर हैस प्रान्त तथा पीन साल्जाइटस (Peine salzites) प्रान्त हैं। १९१८ में लारेन तथा लक्समवर्ग से ७५ प्रतिशत लोहा निकाला जाता था और यूरोप भर में सबसे अधिक होता था। (प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् ये दोनों प्रांत जर्मनी से निकाल कर फ्रांस तथा बैल्जियम को दे दिए गए थे) सन् १८७१ और सन् १९१४ की अवधि में जर्मनी को अपनी शक्ति बढ़ाने का पर्याप्त मौका मिला। उस समय उसको लोरेन का लोहा और रूहर तथा सार का कोयला उपलब्ध था। सालीसिया प्रान्त में और राइन कोयला क्षेत्र के रेच स्थान पर जस्ता तथा सीसा पाया जाता है। सैक्सनी में नमक काफी मात्रा में पाया जाता है। इस भंडार के सहारे जर्मनी के खेती तथा रसायन व्यवसाय ने बड़ी उन्नति की है। जर्मनी में प्रतिवर्ष ५ लाख टन खनिज तेल भी निकाला जाता है।

खनिज उत्पादन (१९५२)
(हजार मीट्रिक टन)

	पश्चिमी जर्मनी	**पूर्वी जर्मनी**
कोयला	१२३,२७८	३५००
लिगनाइट	८३,३६६	—
कच्चा लोहा	१५,४०३	३६५०
पोटाश	१२,५८५	—
कच्चा तेल	१७५५	—
सीसा	—	१६
ताँबा	—	२८

शिल्प-उद्योग—जर्मनी संसार में प्रधान औद्योगिक देशों में से है। यहाँ उद्योगों में विज्ञान का प्रयोग सबसे अधिक किया जाता है। यहाँ के उद्योग-धन्धों की वस्तुओं में लागत का व्यय सबसे कम पड़ता है। वस्तुओं का ऊँचा स्तर, वैज्ञानिक प्रबन्ध, मशीनों का अधिक उपयोग, विक्रय में कम खर्चा तथा माल का पूरा-पूरा उपयोग यहाँ के शिल्प-उद्योगों की विशेषताएँ हैं। परन्तु इन सब विशेषताओं के साथ-साथ

जर्मनी की औद्योगिक व्यवस्था को कुछ कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है। सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसके प्रधान उद्योग केन्द्र सीमा के समीप ही स्थित हैं और युद्ध काल में हवाई हमलों का डर रहता है। इसी कारण प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी के उद्योग विशेषकर रूहर का क्षेत्र बिल्कुल ही तहस-नहस हो गया। परन्तु जर्मनी के लोग कठिन मेहनत से अपने उद्योग-धन्धों के पुनःनिर्माण में लगे हुए हैं। सन् १९५३ में पश्चिमी जर्मनी का औद्योगिक उत्पादन सन् १९३८ के मुकाबले ३० प्रतिशत अधिक बढ़ गया।

जर्मनी के प्रमुख शिल्प-उद्योग

१—लोहा तथा इस्पात उत्पादन

२—रासायनिक उद्योग

३—बिजली का सामान

४—वस्त्र—ऊनी, सूती तथा रेशमी।

जर्मनी में लोहा तथा इस्पात का उद्योग—जर्मनी की औद्योगिक शक्ति का आधार लोहे और इस्पात का निर्माण है। जर्मनी में इस्पात का उत्पादन कार्टेल द्वारा नियन्त्रित है। सन् १९१८ तक जर्मनी का इस्पात उत्पादन में प्रमुख स्थान था। कच्चा लोहा फ्रांस, स्वीडन तथा स्पेन से मँगाया जाता है। जर्मनी में सबसे बड़ी सुविधा यह है कि कोयला तथा लोहा पास-पास पाया जाता है। देश की जल-यातायात व्यवस्था से सामान को इधर-उधर ले जाने में आसानी रहती है। जर्मनी का प्रधान इस्पात उत्पादक क्षेत्र रूहर है जहाँ पर देश का ८० प्रतिशत कोयला भी निकाला जाता है। स्थानीय लोह भंडार उद्योग के लिए काफी नहीं होता। इसलिए स्पेन, स्वीडन और फ्रांस से काफी मात्रा में लोहा आयात किया जाता है। राइन नदी के कारण कच्चे माल के आयात और तैयार माल के निर्यात में बड़ी सुविधा रहती है। इसके अलावा यह प्रदेश समतल है और इसी कारण यहाँ पर सड़कों, रेलों तथा नहरों का जाल बिछा हुआ है, जो इसके विभिन्न भागों के बन्दरगाह से मिलाता है। फलस्वरूप रूहर क्षेत्र जर्मनी का सबसे प्रमुख शिल्प-उद्योग प्रदेश है। एसन, बोकम, डार्टमन्ड और डसलडर्फ में भारी मशीनें तथा औजार बनाये जाते हैं।

लोहे और इस्पात के उद्योग के दूसरे प्रदेश हार्ट्ज पर्वत क्षेत्र, सैक्सनी और ऊपरी सालीसिया हैं। हार्ट्ज पर्वत क्षेत्र में **स्टासफर्ट** स्थान पर धातु की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। यह धातु बाहर से आती है। सैक्सनी में इस्पात निर्माण के प्रमुख केन्द्र **चेमनिज** और **जिकाव** हैं, जहाँ मशीनें बनाई जाती हैं।

लोहे व इस्पात का उत्पादन (१९५४)

(हजार टन)

	पश्चिमी जर्मनी	पूर्वी जर्मनी
ढलुवाँ लोहा	१२,५१२	२०००
इस्पात	१७,४३२	३०००

संसार के इस्पात उत्पादक देशों में पश्चिमी जर्मनी का चौथा स्थान है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका, रूस और संयुक्त राज्य का स्थान इससे पहले है। परन्तु संयुक्त राज्य और पश्चिमी जर्मनी के इस्पात उत्पादन में थोड़ा ही अन्तर है।

पोतनिर्माण क्षेत्र तथा केन्द्र—दूसरे विश्व युद्ध के पहले जर्मनी ने **पोतनिर्माण** में बड़ी प्रगति की थी। व्यापारिक जहाजी बेड़े के टन भार के अनुसार जर्मनी का पाँचवाँ स्थान था। पोतनिर्माण उद्योग में जर्मनी की प्रगति का प्रधान कारण यह था कि नदियों की एस्चुरी के समीप ही कोयला पाया जाता है। पोतनिर्माण उद्योग के प्रधान प्रदेश निम्नलिखित हैं—

(१) एल्ब एस्चुरी जिसका केन्द्र हैम्बर्ग है।
(२) लूबेक खाड़ी जिसका केन्द्र लूबेक है।
(३) वेसर एस्चुरी में ब्रेयर और ब्रेमर हेवन।
(४) ओडर के मुहाने पर स्टेटिन।

सन् १९५१ में समुद्री जहाजों के निर्माण पर से सारे प्रतिबंध हटा दिये गए और फलस्वरूप पश्चिमी जर्मनी में पोतनिर्माण का काम बहुत तेजी से फिर शुरू हो गया है। सच तो यह है कि सन् १९५३ में पोत-निर्माणकारी देशों में पश्चिमी जर्मनी का दूसरा स्थान था। पोतनिर्माण उद्योग के इस पुनुरुत्थान का मुख्य कारण नये टेकनकी तरीकों का प्रयोग तथा दूसरे देश से प्राप्त निर्यात के लिए विस्तृत माँग हैं। इस समय संसार में पोतनिर्माण के क्षेत्र में केवल संयुक्त राज्य ही इसके आगे है।

पोतनिर्माण

(हजार टन)

	उत्पादन	निर्यात की माँग
१९५०	१४१	१०
१९५१	३०२	२७
१९५२	५०३	२२५
१९५३	७२४	२२९

बर्लिन और **मेगडेबर्ग** में बिजली की मशीनें बनाई जाती हैं। संसार में मोटर गाड़ियों के निर्माण के क्षेत्र में पश्चिमी जर्मनी का तीसरा स्थान है। इस उद्योग में कोई २½ लाख व्यक्ति काम करते हैं।

रसायन उद्योग में तो जर्मनी अपना सानी नहीं रखता। देश में वैज्ञानिक

और टेक्निकी शिक्षा के प्रसार से रसायन उद्योग को बड़ी सहायता मिली है। विश्वविद्यालय की प्रयोगशालाओं में की गई खोजों का व्यवसाय और उद्योग में सम्यक् उपयोग किया जाता है। पोटाश नमक के विशाल भंडार से भी इस उद्योग को बड़ी सहायता मिली है। इस उद्योग का केन्द्रीयकरण रूहर और एल्ब की तलैटियों में है। यहाँ कोयला उपलब्ध होने से और भी सुविधा है। अन्य स्थानों पर इस उद्योग में जल-विद्युत का प्रयोग होता है। एल्ब की तलैटी में रसायन उद्योग के प्रधान केन्द्र स्टासफर्ट और शोनबेक हैं। राइन घाटी में एसन, फ्रांकफर्ट एल्बरफील्ड और लिडविग्सएफ्टन में कोलतार का रसायन उद्योग केन्द्रित है। म्यूनिक और वर्गहाउसन में बिजली रसायन उद्योग केन्द्रित है। सूक्ष्ममापक यन्त्रों तथा सूक्ष्म-दर्शी लेन्स के निर्माण में तो जर्मनी का स्थान संसार में सर्वप्रथम है और विश्व माँग का ३० प्रतिशत यहीं से प्राप्त होता है। इस उद्योग में कोई १ लाख १५ हजार व्यक्ति लगे हुए हैं।

सूती तथा ऊनी वस्त्र उद्योग—जर्मनी के वस्त्र उद्योग में ऊनी, सूती तथा रेशमी वस्त्रों का बनाना सम्मिलित है। सूती वस्त्रों के कारखाने यों तो देश भर में फैले हैं परन्तु दो क्षेत्र—रूर कोयला क्षेत्र तथा सैक्सनी—प्रधान केन्द्र हैं। रुई संयुक्त राष्ट्र, ब्राजील तथा मिस्र से आती है। सूती वस्त्र उद्योग के प्रधान केन्द्र मंचनग्लैडबाच (Munchengladbach), चैमनिटज तथा ज्विकशा हैं, ऊनी वस्त्रों के कारखाने कोयला क्षेत्रों पर हैं। आचेन (Aachn), चैमनिटज तथा ब्रोमन प्रधान केन्द्र हैं। रेशमी वस्त्रों के कारखाने रूर कोयला क्षेत्र पर स्थित हैं।

चुकन्दर की चीनी—चीनी के कारखाने सेक्सनी, साइलेशिया, हनोवर तथा पोमरानिया में हैं। सन् १९१४ तक जर्मनी का चीनी उद्योग अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का था, लेकिन प्रथम महायुद्ध से यह उद्योग तहस-नहस हो गया। सन् १९१९ के बाद से यह उद्योग फिर कभी पहली सी दशा को प्राप्त न हो सका। शराब बनाना भी यहाँ का मुख्य उद्योग है और जर्मनी की बनी बीअर शराब देश-विदेश सभी जगह बहुत प्रसिद्ध है। **शीशे, चीनी और मिट्टी के बर्तन** खेरिया, साइलेशिया, थूरिंगिया, ब्रेडनवर्ग तथा सैक्सनी में बनते है। घड़ियाँ, लकड़ी की चीजें तथा अल्कोहल आदि अन्य वस्तुओं के भी कारखाने हैं।

शिल्प-उद्योग की अन्य वस्तुएँ टाइप करने की मशीनें, एक्स-रे यन्त्र तथा रासायनिक तरीके से बनाये गये कृत्रिम रेशे हैं। टाइप मशीनों में पश्चिमी जर्मनी का संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बाद दूसरा स्थान है। एक्स-रे यन्त्र उद्योग का भी बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है।

जर्मनी के औद्योगिक विकास का कारण देश के भौगर्भिक साधन कदापि नहीं है। देश की औद्योगिक महानता का श्रेय वहाँ के लोगों के साहस तथा आगे बढ़ने के इरादे को है। साथ-साथ देश के साधारणप्राकृतिक साधनों का सम्यक व चतुर उपयोग किया गया है। जर्मनी की औद्योगिक कमजोरियों का भास नीचे दी हुई दशा से किया जा सकता है—

(१) जर्मनी में कच्चा लोहा अधिक नहीं पाया जाता यद्यपि जर्मनी का इस्पात उद्योग बहुत बढ़ा-चढ़ा है। जर्मनी को अपनी आवश्यकता का $\frac{3}{4}$ लोहा स्वीडन, स्पेन, लक्समवर्ग, अल्मीरिया, फ्रांस और संयुक्तराष्ट्र अमरीका से मँगवाना पड़ता है। जर्मनी का कच्चा लोहा निम्न कोटि का है।

(२) जर्मनी में ताँबा, टीन और बाक्साइट की बड़ी कमी है।

(३) मैन्गनीज, क्रोमियम, टंगस्टन, निकल, मालीबडनम, कोबल्ट तथा बनाडियम आदि धातुओं का जिनको इस्पात कठोर करने में प्रयोग किया जाता है बिल्कुल ही अभाव है। इन खनिज पदार्थों को अफ्रीका, अमरीका तथा चीन से आयात किया जाता है।

(४) जर्मनी का खनिज तेल उत्पादन नगण्य है। इस कमी को पूरा करने के लिए कृत्रिम तेलों की खोज की गई है। परन्तु उनकी उपयोगिता अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाई है।

(५) कपास बिल्कुल ही नहीं होती। देश में प्राप्त ऊन, सन तथा कृत्रिम रेशों से राष्ट्रीय वस्त्र उद्योग की माँगपूर्ति का केवल २५ प्रतिशत ही प्राप्त होता है।

(६) जर्मनी में सभी प्रकार के वनस्पति तेलों तथा उष्ण कटिबंधीय पदार्थों की कमी रहती है।

देश में रबड़ और वस्त्र उद्योग के रेशों की कमी को कुछ हद तक कृत्रिम रबड़ (बूता) तथा 'एरसाट्ज' वस्त्रों द्वारा दूर किया गया है।

इस प्रकार जर्मनी की औद्योगिक महानता का कारण केवल एक ही है—वहां के लोगों का मेहनती स्वभाव तथा उद्योग में विज्ञान का सफल प्रयोग। यही कारण है कि जर्मनी के उद्योग-धन्धों के दो विश्वयुद्धों में तहस-नहस हो जाने पर भी अपने साधारण प्राकृतिक साधनों का चतुर उपयोग करके जर्मनी फिर से संसार के औद्योगिक राष्ट्रों में अपने प्रमुख स्थान पर आगया है।

जर्मनी का वैदेशिक व्यापार

जर्मनी का विदेशों से व्यापक सम्बन्ध है। हैम्बर्ग, ब्रीमन, राटरडम तथा ऐंटवर्प प्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह हैं। आयात की वस्तुओं में भोजन की वस्तुएँ तथा कच्चा माल होता है। कोयला, कहवा, रुई, अनाज, डेरी की वस्तुएँ, तिलहन लकड़ी तथा ऊन बाहर से आते हैं। लोहे तथा स्टील की वस्तुएं, मशीनें, रासायनिक पदार्थ, चीनी तथा ऊनी सामान बाहर जाते हैं। सन् १९३८ में जर्मनी का विश्व ग्राहकों में दूसरा स्थान था। विश्व निर्यात का १०·९ प्रतिशत अंश जर्मनी द्वारा लिया जाता था। इसके द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में बिजली का सामान लोहा, व इस्पात की वस्तुएं, मशीनें, रसायन, चीनी, ऊनी वस्त्र आदि मुख्य हैं। द्वितीय महायुद्ध में कारखानों के नष्ट हो जाने से जर्मनी के व्यापार पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

व्यापारिक नगर—बर्लिन—राजधानी है। मैदान के मध्य में होने से आवागमन की सुविधाएं हैं। यह एक औद्योगिक तथा व्यापारिक नगर और रेलों का केन्द्र है। लन्दन को छोड़कर यहाँ की आबादी सबसे अधिक है।

हैम्बर्ग— ऐल्ब नदी पर प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यह वैदेशिक व्यापार का केन्द्र भी है।

लीपजिग—यहाँ छापेखाने का काम अधिक होता है और फर की बड़ी मंडी है।

डैसडन—ऐल्ब नदी पर व्यापारिक तथा औद्योगिक केन्द्र है। मशीनों और मदिरा के लिए प्रसिद्ध है।

कोलोन— राइन नदी का बन्दरगाह है। रेलों का केन्द्र है। शराब और स्टील के लिए प्रसिद्ध है।

नरम्बर्ग—खिलौनों और पैंसिल के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है।

ब्रीमन—बीसर नदी पर स्थित है। पोतनिर्माण के लिए प्रसिद्ध है।

मैगडेबर्ग—चीनी का महान् केन्द्र है।

आस्ट्रिया

वन, खनिज पदार्थ तथा उद्योग-धंधे—यह एक छोटा-सा पहाड़ी देश है। इस का क्षेत्रफल ३२ हजारवर्गमील है। यहाँ की जनसंख्या ७० लाख है। यहाँ खेती अधिक नहीं हो सकती और भोजन की वस्तुएँ बाहर से मँगानी पड़ती हैं। वनों की अधिकता के कारण यहाँ पर पैंसिल, कागज तथा सेलूलोज बनाने के कारखाने हैं। यहाँ पर लोहा, कोयला, नमक तथा मैंगनीज भी मिलते हैं और धातु उद्योग किए जाते हैं। यहाँ पर बाजे, मोटरगाड़ियाँ तथा चमड़े का माल तैयार होता है।

व्यापार तथा नगर—तटरेखा न होने से वैदेशिक व्यापार विदेशी बन्दरगाहों पर आश्रित रहता है।

वीयना—राजधानी के अतिरिक्त औद्योगिक, व्यापारिक तथा शिक्षा-केन्द्र है। **ग्राज** लोहे की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है। **लिंज** रेलों का केन्द्र है।

चेकोस्लोवाकिया

विस्तार तथा आबादी— प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् सन् १९१८ में बोहेमिया, साइलेशिया, मोरिया तथा स्लोवाकिया को मिलाकर चेकोस्लोवाकिया को जन्म दिया गया। चेकोस्लोवाकिया यूरोप के मध्य में स्थित है और अति प्राचीन काल से इसके प्रदेश में उत्तर, दक्षिण, पूर्वी तथा पश्चिमी योरोप के व्यापार मार्ग आकर मिलते रहे हैं। बहुत पुराने समय से ही यहाँ पर अनेक युद्ध होते आये हैं। चारों ओर थल से घिरे हुये इस देश का क्षेत्रफल १२८००० वर्ग किलोमीटर है और इस का निकास किसी भी तरफ से समुद्र में नहीं है। यहां की आबादी लगभग १३०

लाख है। जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक है। औसतन प्रति वर्ग किलोमीटर पर १०२ निवासी रहते हैं। यह जनसंख्या केवल औद्योगिक नगरों व कस्बों में ही केन्द्रित नहीं है बल्कि उपजाऊ भागों में अनगिनत गाँव पाये जाते हैं।

चेकोस्लावाकिया की स्थिति पश्चिमी यूरोप के उपजाऊ प्रदेशों तथा पूर्वी यूरोप के खेतिहर प्रदेशों के बीच में है। साथ ही बाल्टिक सागर और ऐड्रियाटिक सागर से भी बराबर दूरी पर है। इसलिए इसको अनेक व्यापारिक सुविधाएं प्राप्त हैं। यह उद्योग और व्यापार का मिलन-स्थान है। इसमें बन्दरगाह नहीं हैं और व्यापार के लिए यह दूसरे देशों के बन्दरगाहों पर निर्भर रहता है।

जलवायु कृषि तथा वन—यहाँ की जलवायु कुछ समुद्री कुछ महाद्वीपी है। वर्षा २० से ३० इंच विशेष कर गर्मियों में होती है। यहाँ की वर्षा का वितरण कृषि के लिए लाभदायक ही रहता है। यहाँ की भूमि उपजाऊ है। नदियों द्वारा सिचाई का उत्तम प्रबन्ध है। इसी कारण कृषि की काफी उन्नति हुई है। गेंहूं, राई, जौ, चुकन्दर और आलू की सयत्न खेती की जाती है। चेकोस्लोकाविया में खेती की मुख्य फसलें सभी प्रकार के अनाज, चुकन्दर, सन, आलू, हाप्स तथा विषम जलवायु के अनुकूल अन्य फसलें हैं। हाल में कुछ उपोष्णीय फसलों को उगाने का भी प्रयत्न किया गया है। इनमें चावल, मूँगफली और तम्बाकू सर्व प्रमुख हैं।

खेतिहर क्षेत्रफल तथा उपज (१९५३-५४)

	क्षेत्रफल (लाख हेक्टर)	उपज (लाख मीट्रिक टन)
अनाज	४८३	५०
आलू		८५
चुकन्दर		५५

वनों की अधिकता के कारण यहाँ पर दियासलाई, कागज, खिलोने, वाजे (गायन-वाद्य), सामान भेजने के लिए खाँचे और लकड़ी के बेरल (बड़े-बड़े ढोल) बनते हैं।

सन् १९५३ में फसलों का उत्पादन इस प्रकार था—

गेहूँ	२७ लाख टन
जौ	२५ लाख टन
आलू	८८ लाख टन
चुकन्दर	५९ लाख टन

खनिज पदार्थ तथा शिल्प-उद्योग—मोराविया, वोहेमिया तथा स्लोवाकिया बहुत कोयला है। जस्ता, ताँबा, सोना और चाँदी भी थोड़ा बहुत मिलते हैं। स्लोवाकिया के पहाड़ों पर टीन, निकिल, मैंगनीज और ताँबा पाया जाता है। तेल के क्षेत्र भी हैं। यहाँ पर अनेक शिल्प-उद्योग किए जाते हैं। देश की आय और राष्ट्रीय समृद्धि शिल्प उद्योगों पर ही निर्भर है।

युद्ध के पूर्व भी चेकोस्लोवाकिया यूरोप का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देश था

परन्तु पिछले १० वर्षों में इस देश ने जो प्रगति की है वह बहुत ही विलक्षण है। इस औद्योगिक प्रगति के मुख्य कारण यहाँ पर उपलब्ध प्राकृतिक साधन तथा यहाँ के मेहनती लोगों की कार्य-कुशलता हैं। केन्द्रीय वोहीमिया और स्लोवाकिया में उच्च कोटि का कड़ा-भूरा कोयला और कच्चा लोहा पाया जाता है। हाल की जाँच पड़ताल से पता चला है कि इस प्रकार के खनिज देश के अन्य भागों में भी उपलब्ध हैं। परन्तु माँगपूर्ति के लिए काफी आयात भी करना पड़ता है। इस देश में यूरेनियम धातु का भी विशाल भण्डार है।

चेकोस्लोवाकिया के जग विख्यात पेन्सिल उद्योग का आधार सीसा और शीशे के बर्तन बनाने के लिए बालू बोहीमिया प्रान्त में पाई जाती है। यहाँ के वनों से लकड़ी व कागज उद्योग के लिए लुग्दी प्राप्त होती है। सिलोलाइड, मेज-कुर्सी, खिलौने, दियासलाई तथा बाजों को बनाने का उद्योग भी इन्हीं वनों पर आश्रित है।

परन्तु इन सब उद्योग-धन्धों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण इन्जीनियरिंग उद्योग है जिसके द्वारा कोई ३ लाख विविध वस्तुएँ तैयार की जाती हैं। इस देश का भारी उद्योग कील और सुइयों से लेकर खेतिहर मशीनें, मोटरें, रेल के इन्जन, हवाई जहाज, छपाई और लोहा गलाने की मशीनें, चीनी साफ करने, शराब निकालने, बिजली बनाने, कपड़ा बुनने आदि की महत्त्वपूर्ण मशीनें तैयार करता है।

देश में चीनी मिट्टी के विस्तृत भंडार के कारण चीनी के बर्तन बनाना यहाँ का प्रमुख उद्योग हो गया है। परन्तु इंजीनियरिंग उद्योग के बाद दूसरी श्रेणी का महत्त्वपूर्ण रासायनिक उद्योग है। इसकी प्रमुख वस्तुएँ रंग, वार्निश, दवाएँ, कृत्रिम खाद तथा विविध पदार्थ हैं। कृत्रिम तेल का उत्पादन इतना अधिक होता है कि देश को बाहर के आयात पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। कपास, ऊन और रेशम की कमी भी कृत्रिम रेशों द्वारा पूरी की जाती है।

चेकोस्लोवाकिया में केवल सन तथा कुछ थोड़ा-सा ऊन उत्पन्न होता है। अतएव यहाँ के वस्त्र उद्योग को अन्य देशों से आयात किए गए कच्चे माल पर निर्भर रहना पड़ता है। चमड़े और रबड़ के जूते बनाना यहाँ का अन्य महत्त्वपूर्ण उद्योग है।

इस प्रकार यहाँ के शिल्प-उद्योग तीन वर्गों में विभाजित हो सकते हैं: (१) वे उद्योग जिनके लिए कच्चा माल देश ही में प्राप्त हो जाता है, जैसे चीनी, अल्कोहल, चीनी के बर्तन और शीशे के कारखाने इत्यादि; (२) वे उद्योग जो अंशतः घरेलू पैदावार पर निर्भर हैं जैसे धातु के कारखाने, रासायनिक पदार्थ तथा चमड़े के कारखाने; (३) वे उद्योग जिनके लिए कच्चा माल विदेशों से आता है, जैसे सूती वस्त्रों के कारखाने।

चेकोस्लोवाकिया का पुनर्निर्माण—सन् १९३६ से सन् १९४५ तक यह देश हिटलर की फौजों के अधिकार में रहा। इस बीच में यहाँ के आर्थिक जीवन को विशेष हानि पहुँची। युद्धकाल में केवल क्षति ही नहीं हुई बल्कि उद्योग-धन्धों को भी

सैनिक उत्पादन में लगा लिया गया। अतः मई सन् १९४५ से इस देश के आर्थिक जीवन का पुर्नगठन प्रारम्भ हुआ। सरकारी योजनाओं के फलस्वरूप सन् १९४७-४८ में उद्योग-धन्धों का उत्पादन युद्ध पूर्व की दशा को प्राप्त हो गया। सन् १९४९ से सन् १९५३ तक प्रथम योजना चालू रही। इस योजना के फलस्वरूप विलक्षण प्रगति हुई जैसा कि निम्नलिखित आँकड़ों से स्पष्ट हो जाएगा—

औद्योगिक उत्पादन	१११ प्रतिशत
विद्युत शक्ति	२३१ प्रतिशत
कोयला (कठोर)	३० प्रतिशत
भूरा कोयला	१०६ प्रतिशत
कोक	९२ प्रतिशत
इस्पात	६७ प्रतिशत

इस विकास एवं प्रगति का मुख्य कारण नवीनतम विधियों के प्रयोग के साथ-साथ कई सौ नए कारखानों की स्थापना है। सन् १९५३ के अन्त तक सरकार ने १२ नए बिजली घरों की स्थापना की थी। इनमें से छः तो जल-विद्युत उत्पादन केन्द्र हैं और अन्य छः में कोयले से बिजली उत्पन्न की जाती है। इस समय १५ अन्य विद्युत उत्पादन केन्द्रों पर काम चल रहा है। नदियों पर बड़े-बड़े बाँध बनाकर जल-विद्युत की योजना पर भी काम हो रहा है।

आयात तथा निर्यात—इस देश में अपना कोई बन्दरगाह नहीं है। डैन्यूब, ऐल्ब तथा ओडर नदियां ही प्राकृतिक मार्ग हैं। रुई तथा ऊन आयात की प्रधान वस्तुएँ हैं, भोज्य-पदार्थ भी पर्याप्त मात्रा में मंगाएँ जाते हैं। खादें, मशीनें, धातुएँ, जूते तथा कागज निर्यात किए जाते हैं।

प्रसिद्ध नगर—प्राग (प्राह)—राजधानी तथा प्रधान औद्योगिक केन्द्र है। यह रेलों का नगर भी है। **ब्रून** (ब्रूनो)—कारखानों का प्रधान नगर है। यहाँ पर कागज, दियासलाई तथा चमड़े के बड़े-बड़े कारखाने हैं। **पिलसन** में शराब, इन्जीनियरी का सामान तथा धातु शोधन के कारखाने हैं। **गोवलोन्ज** शीशे के कारखानों का केन्द्र है। **ज्लीन** चमड़े के कारखानों के लिए प्रसिद्ध है।

रूमानिया

विस्तार तथा आबादी—प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व रूमानिया का क्षेत्रफल ५०,७०० वर्ग मील तथा आबादी ८० लाख के लगभग थी। १९१९ में बैसारेबिया (Bessarabia), ट्रांसिलवानिया तथा बूकोविना के मिल जाने से इसका क्षेत्रफल १,२०,००० वर्ग मील तथा आबादी २ करोड़ के लगभग हो गई। यहाँ के ७५ प्रतिशत निवासी रूमानियन भाषा बोलते हैं। इस समय इसका क्षेत्रफल ९१,७०० वर्ग मील और आबादी १६० लाख है।

उपज की वस्तुएँ—रूमानिया अनाज का देश है। यहाँ पर लोहे और कोयले की कमी, पूँजी का अभाव तथा बाजार सीमित हैं। इसीलिए यहाँ के केवल १०

प्रतिशत मनुष्य ही उद्योगों पर निर्भर हैं। ट्रांसिलवानिया के पूर्वी तथा पश्चिमी प्रदेशों में गेहूँ तथा मक्का की खेती होती है। खेती पुराने ंग से होते हुए भी यहाँ गेहूँ बहुत पैदा होता ह। चुकन्दर, तम्बाकू तथा अंगूर गौण उपज की वस्तुएँ हैं।

खेतिहर क्षेत्रफल तथा उपज (१९५४-१९५५)

	क्षेत्रफल (लाख हेक्टर)		उपज (लाख मीट्रिक टन)
अनाज	३४	७८	६२
आलू	—		२३
चुकन्दर	१½		—
मक्का	३५		—

खनिज पदार्थ—रूमानिया में अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं, जिनमें खनिज तेल, सोना, ताँबा, सीसा, मैंगनीज, चाँदी, जस्ता तथा सुरमा महत्त्वपूर्ण हैं। पूर्वी मैदानों के पहाड़ी प्रदेश (Ploetsi) में ६० लाख टन से अधिक खनिज तेल का वार्षिक उत्पादन होता है। तेल उत्पादन में रूमानिया का संसार में छठा स्थान है। ये तेल क्षेत्र नलों द्वारा काले सागर स्थित कोंस्टाजा बन्दर से मिले हुए हैं। ट्रांसिलवानिया में कच्चा लोहा पाया जाता है। कच्चे लोहे का वार्षिक उत्पादन १२०,००० टन है।

पठार, वनसम्पत्ति तथा उद्योग—रूमानिया के पश्चिमी पठार में ओक, बीच आदि के वृक्ष पाए जाते हैं। शराब, कागज, आटा और रासायनिक पदार्थ बनाना यहाँ के प्रमुख उद्योग हैं।

रूमानिया का आर्थिक विकास—ग्यारह वर्ष पहले रूमानिया की आर्थिक दशा बहुत ही पिछड़ी हुई थी। उसके उद्योग-धन्धे अविकसित तथा खेती पिछड़ी हुई थी। परन्तु १९४९ में ही युद्ध द्वारा की गई हानि खतम हो चुकी थी और देश का औद्योगिक उत्पादन युद्ध पूर्व के स्तर को पहुँच चुका था। सन् १९५३ में हालत इतनी सुधर गई थी कि सन् १९३८ की अपेक्षा २½ गुना अधिक उत्पादन हुआ। इस अप्रत्याशित विकास का अन्दाज तो इसीसे लगाया जा सकता है कि सन् १९३८ में रूमानिया में ९९ प्रतिशत मशीनें और औजार बाहर से आते थे, परन्तु अब रूमानिया अपनी जरूरत पूरी करने के बाद मशीनों का निर्यात भी करने लगा है। भारी उद्योग की प्रगति का भास नीचे दिए आँकड़ों से स्पष्ट हो जायगा।

औद्योगिक उत्पादन

	१९५३	१९३८ के स्तर पर वृद्धि
खनिज तेल	९० लाख टन	१½ गुना
कोयला	६० लाख टन	दुगना
इस्पात	७,२०,००० टन	ढाई गुना
बिजली	३४००० लाख किलोवाट	तिगुना

सन् १९५४ में दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन भी सन् १९३८ के स्तर से कहीं अधिक बढ़ गया। सूती वस्त्रों और सूत का उत्पादन पहिले से २½ गुना हो गया है। ऊनी कपड़े और चमड़े के जूते पहले से दुगने हो गये हैं। शीशे के सामान का उत्पादन ढाई गुने से भी अधिक हो गया है।

अपेक्षाकृत पिछड़े हुए प्रदेशों का विकास किया जा रहा है। मोलडाविया में तेल के कूओं का विकास किया जा रहा है और विकाज में एक जल-विद्युत केन्द्र बनाया जा रहा है। सन् १९५५ में नई पेनीसिलीन फैक्टरी भी चालू हो गई।

खेती में मशीनों से काम लिया जाने लगा है और देश में कोई ११० लाख हेक्टर भूमि पर खेती की जा रही है। सन् १९४९-५३ की अवधि में खाद्यान की औसत फसल ४,५३०,००० टन थी परन्तु २-३ साल में फसल १०,५००,००० टन होने लगेगी। सन् १९५४ में खाद्यान्न का कुल उत्पादन ९० लाख टन से अधिक था।

रूमानिया का विदेशी व्यापार भी काफी बढ़ गया है। संसार के कोई ५२ देशों के साथ इसका व्यापारिक सम्बन्ध है। इनमें सोवियत रूस, फ्रांस, मिस्र, भारत, इन्डोनीशिया, तुर्की, यूनान, डेनमार्क, नार्वे, इटली, फिनलैंड, बेल्जियम, स्विजरलैंड, आस्ट्रिया और अर्जेन्टाइना मुख्य हैं।

रूमानिया से बाहर जाने वाली वस्तुयें निम्नलिखित हैं—

तेल निकालने की मशीनें, सीमैन्ट मिलें, मशीन के औजार, ट्रैक्टर, खेती की मशीनें, रेल के डिब्बे, बिजली का सामान;

गैसोलीन, तेल, पैट्रोल, पैराफीन, बिटुमिन, रंग, वार्निश, औषधियाँ और लकड़ी का सामान।

सीमेन्ट, संगमरमर, शीशे का सामान, फल और सब्जी, मछली, शराब और चीनी से तैयार वस्तुएँ।

रूमानिया बाहर के देशों से निम्नलिखित वस्तुएँ मँगवाता है—

मशीनें और बिजली का सामान, खाल, ऊन, कपास, चमड़ा साफ करने का सामान और रंग।

खेती की मशीनें, रसायन, खाद, पटसन, मछली, कहवा, कोको आदि आयात की अन्य वस्तुएँ ह।

रूमानिया के औद्योगीकरण के ही कारण शिल्प-निर्मित वस्तुओं का निर्यात २० प्रतिशत तथा आयात ५५ प्रतिशत है। सन् १९३८ में यहाँ के आयात का ७५ प्रतिशत निर्मित वस्तुएँ होती थीं और निर्यात में निर्मित वस्तुओं का स्थान केवल २ प्रतिशत होता था। अब निर्यात में निर्मित वस्तुओं का स्थान पहले का दस गुना (२० प्रतिशत) हो गया है।

प्रमुख नगर—बुखारेस्ट—राजधानी तथा रेलों का केन्द्र है। यहाँ की आबादी ६ लाख ३० हजार है।

गोलाटज—डैन्यूब स्थित नदी बन्दर है। यहाँ से गेहूँ तथा तेल का निर्यात होता है।

कौन्स्टांजा—काले सागर पर स्थित रूमानिया का मुख्य बन्दरगाह है।

फ्रांस

स्थिति, विस्तार तथा आबादी—फ्रांस के उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर समुद्री मार्ग हैं। अतः व्यापार के लिए इसकी स्थिति बड़ी अच्छी है। इसके उत्तर में इंगलिश चैनल है जो व्यापार का उत्तम राजमार्ग है। इसके पश्चिमी बन्दरगाहों से अमरीका और अफ्रीका से व्यापार आसानी से हो सकता है और दक्षिणी बन्दरगाह एशिया, आस्ट्रेलिया तथा ब्रिटिश बन्दरगाहों से पास पड़ते हैं। फ्रांस का क्षेत्रफल २,१५,००० वर्ग मील है और ग्रेट ब्रिटेन के दुगने से भी अधिक है। १९५३ में यहाँ की आबादी ४२७ लाख थी।

प्राकृतिक प्रदेश तथा जलवायु—फ्रांस में दो प्रकार के प्राकृतिक प्रदेश हैं—पर्वतीय प्रदेश तथा मैदान। पर्वतीय प्रदेश में (१) आर्मोरिकन प्रायद्वीप (ब्रिटेनी तथा नारमंडी), (२) मध्य के पठार, (३) अल्सेसलारेन प्रान्त तथा (४) आल्प्स, जूरा तथा पिरेनीज पर्वत सम्मिलित हैं। मैदानी भाग में (१) रोन-साओन की घाटी, (२) पेरिस बेसिन तथा (३) एक्विटेन का बेसिन अर्थात पिरेनीज-मध्य के पठार और गोटाइन (Gotaine) के बीच का प्रदेश सम्मिलित है। फ्रांस के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग की जलवायु समुद्री है तथा दक्षिणी भाग की भूमध्यसागरीय है। यहाँ की जलवृष्टि का वार्षिक औसत ३० इंच है।

फ्रांस की मुख्य उपज—अनाज तथा फल—आर्थिक दृष्टि से फ्रांस आत्म-निर्भर है। कृषि-प्रधान देश होने के कारण बाहर से भोजन की वस्तुएँ नहीं मँगानी पड़तीं। देश की आधी जनता खेती में लगी हुई है। भूमि की बनावट तथा जलवायु की विभिन्नता के कारण यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार की उपज होती हैं। अनाज में विशेषकर गेहूँ अधिक पैदा होता है। दक्षिणी भाग में नीबू, नारंगी, अंगूर, जैतून आदि फल अधिकता से पैदा होते हैं। शहतूत के पेड़ों पर रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। फ्रांस में रेशम बहुत अधिक पैदा होता है।

फ्रांस में सुअर का गोश्त, मक्खन तथा चर्बी इत्यादि यहाँ की आवश्यकता के लिए काफी होती है। यहाँ ताजे फल, सब्जी, मेवा, पनीर तथा शराब की अतिरिक्त उपज होती है और इन वस्तुओं का निर्यात किया जाता है। जई, मक्का, वनस्पति तेल, आलू और सूखी सब्जियाँ यहाँ पर काफी पैदा नहीं होतीं।

फ्राँस के खनिज पदार्थ—खनिज पदार्थों में पर्याप्त धनी देश है। **फ्रांस में** **रोप के सभी देशों से अधिक लोहा होता** है। लारेन प्रान्त में लोहे का अपार भण्डार है। यहाँ का लोहा निम्न श्रेणी का है जिसमें धातु का अंश ४० प्रतिशत होता है। परन्तु ये लोहे की खानें जर्मनी, बेल्जियम तथा फ्रांस की कोयले की खानों के समीप हैं ओर यूरोप की औद्योगिक मंडियाँ भी इनके समीप ही पड़ती हैं।

कच्चा लोहा उत्तर में नारमण्डी तथा ब्रिटेनी में और दक्षिण में पिरेनीज पर्वत-माला में भी पाया जाता है। नारमण्डी की खानों से यहाँ के लोहे का भण्डार बहुत बढ़ गया है परन्तु देश में कोयले की कमी है अतः फ्रांस को अपने पर्वतों की जलशक्ति से काम लेना पड़ता है। यहाँ के प्रमुख कोयला क्षेत्र लिले (Lille) के समीप उत्तर-पूर्व में स्थित हैं। और भी कई छोटी-छोटी कोयले की खानें हैं परन्तु देश की आवश्यकता पूर्ति के लिए काफी नहीं है। फ्रांस के दक्षिण-पूर्वी भाग में हाल ही में तेल क्षेत्र मिला है और सेंट मारसल (St. Marcel) के समीप तेल निकाला जाता है। यहाँ पर संसार भर में सबसे अधिक बाक्साइट मिलता है जिससे अल्यूमिनियम बनाया जाता है। अल्सेस में पोटाश का भण्डार है और चीन को छोड़कर यहाँ सुरमा भी सब से अधिक प्राप्त होता है।

खनिज उत्पादन (१९५३)

(हजार मीट्रिक टन)

कोयला	५२,५७७
लिगनाइट	१,९४९
कच्चा लोहा	४२,४००
बाक्साइट	१,१६०
पाइराइट	२९४
खनिज नमक	२,०६०
पोटाश	१,०३०

जलविद्युत—फ्रांस में जलविद्युत के विकास के लिए महान् साधन हैं। दक्षिणी भागों के कारखानों तथा यातायात में जलशक्ति का उपभोग हो सकता है। जलविद्युत अधिकतर आल्प्स तथा पिरेनीज पर्वतों से प्राप्त होती है। यों तो जलशक्ति के साधन देश भर में हैं परन्तु अभी तक वे काम में नहीं लाये जा रहे हैं और कोयले की भी कमी है इसीलिए यहाँ का कच्चा लोहा अधिकतर बाहर भेज दिया जाता है।

फ्रांस के शिल्प उद्योग

यद्यपि फ्रांस एक महान औद्योगिक देश है परन्तु यहाँ पर उद्योग-धन्धों का इतना विकास नहीं हुआ है जितना कि ग्रेट ब्रिटेन में हुआ है। फ्रांस में बनी हुई वस्तुएँ ऊँचे दर्जे की, सुन्दर नमूने की और कलापूर्ण होती हैं। सुन्दर लैस और वस्त्रों, चीनी के बर्तनों, आभूषणों, मेमों के गाउनों और तोपों तथा साजबाज की वस्तुओं के बनाने में फ्रांस से बढ़कर और कोई भी देश नहीं है।

फ्रांस का वस्त्र उद्योग—फ्रांस में (१) सूती कपड़ा, (२) लोहे और स्टील की वस्तुएँ, (३) शराब और (४) विलास की वस्तुएँ बहुत बनती हैं। वस्त्र-उत्पादन में फ्रांस का संसार में चौथा स्थान है। यहाँ पर सूती, ऊनी और रेशमी वस्त्र अच्छे नमूने के बनाए जाते हैं। यह काम यहाँ पर २०० वर्षों से होता आ रहा है। अल्सेस

प्रांत में अब भी बहुत उम्दा वस्त्र बनाए जाते हैं। पेरिस बेसिन के उत्तरी कोयला क्षेत्र तथा रुओन प्रांत (Rouen) में अमरीकन रुई से बहुत ऊँचे दर्जे के सूती वस्त्र बनाए जाते हैं। और लिले (Lille), अमीयन्स, सेंट क्विन्टेन तथा रुओन (Rouen) इसके केन्द्र हैं। कच्चे माल की कमी और लड़ाई का खतरा पैदा होते हुए भी यह उद्योग युद्ध-पूर्व स्तर पर पहुँच गया है। वस्त्र-उद्योगी राष्ट्रों में फ्रांस का छठा स्थान है और सन् १९५१ में संसार के सूती वस्त्र व्यापार में फ्रांस ने ७ प्र० श० भाग लिया।

ऊनी तथा रेशमी वस्त्र उद्योग—उत्तरी कोयला क्षेत्र ऊनी कपड़ों के लिए भी प्रसिद्ध है। घरेलू ऊन के अतिरिक्त यहाँ पर आस्ट्रेलिया, अर्जेन्टाइना और न्यूजीलैंड से भी ऊन मंगाई जाती है। रोनेक्स, रीम्स, अमीयन्स तथा लिले ऊनी वस्त्रों के केन्द्र हैं। फ्रांस के रेशमी वस्त्र भी जगत्प्रसिद्ध हैं। यह उद्योग रोन की घाटी के लियों प्रांत में (Lyons district) में केन्द्रित है। यहाँ पर कच्चा रेशम जापान, चीन और इटली से भी आता है और कारखानों के लिए शक्ति कोयले की खानों और जलविद्युत द्वारा प्राप्त की जाती है

फ्रांस में लोहे और स्टील का धंधा—इस्पात उत्पादन में फ्रांस का पाँचवाँ स्थान है। सन् १९५३ में इस देश का इस्पात उत्पादन १०० लाख टन था। लोरेन प्रांत के लिए कोयला रूहर से मंगाया जाता है। इस्पात उद्योग के प्रधान केन्द्र क्लेरमान्ट, सेंट इटनी और लिले हैं। क्लेरमान्ट में मोटरगाड़ियाँ, सेट इटली में रेल के इंजन और लिले में कपड़ा बनाने की मशीनें तैयार की जाती हैं।

फ्रांस की आर्थिक व्यवस्था में बिजली के सामान बनाने का उद्योग बड़ा ही महत्वपूर्ण है। सन् १९५२ में इस उद्योग में कोई ४ लाख व्यक्ति लगे हुए थे। सन् १९३८ के मुकाबले इस समय उत्पादन १५० प्रतिशत है। उत्पादित वस्तुओं का $\frac{1}{6}$ अंश निर्यात कर दिया जाता है।

जहाज बनाने का धंधा—जहाज बनाने के काम में भी फ्रांस में बड़ी उन्नति हुई है और अब संसार में इसका पाँचवाँ स्थान है। मार्सेल्स तथा सीन की एस्टयूरी (Estuary) पोतनिर्माण केन्द्र हैं।

शराब के उत्पादन में फ्रांस संसार में सर्वप्रथम है। इस धंधे का मुख्य केन्द्र बोर्डो (Bordeaux) **है।**

रासायनिक पदार्थ—सन् १८४८ में रासायनिक पदार्थों के उत्पादन में फ्रांस १९३८ के स्तर से बहुत आगे बढ़ गया। यहाँ के रासायनिक पदार्थों में गंधक का तेजाब, कारबोनेट आफ सोडा, करबाइड आफ कैल्शियम, शोरे का खाद, सुपर फासफेट, रंगने का सामान, चमड़ा कमाने का सामान, रंग तथा वार्निश आदि वस्तुएँ हैं। रंग और वार्निश के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ रहा है।

शक्ति की कमी होते हुए भी फ्रांस के सभी उद्योग-धन्धों में युद्ध के पश्चात् उन्नति ही हो रही है। कोयले के घरेलू उत्पादन और आयात से मिलकर यहाँ की केवल ८६ प्र० श० आवश्यकता की पूर्ति होती है। यूरोप के अन्य देशों की भाँति

फ्रांस में भी कोक की भट्टियों के लिए आवश्यक वस्तुओं की बड़ी कमी है।

फ्रांस में आवागमन के साधन

किसी देश की आर्थिक दशा वहाँ की यातायात व्यवस्था पर निर्भर रहती है। सन् १९५३ में फ्रांस में सड़कों की व्यवस्था इस प्रकार थी—

मुख्य सड़कें	६० हजार मील
गौण सड़कें	२ लाख मील
स्थानीय सड़कें	२ लाख २० हजार मील

वायुमार्ग—फ्रांसीसी हवाई यातायात ने भी बड़ा विकास किया है। राष्ट्रीय हवाई यातायात केवल देश के विभिन्न नगरों के बीच ही उड़ानें नहीं करता बल्कि उसकी उड़ान व्यवस्था के अन्तर्गत यूरोप, उत्तरी अमरीका, मध्य और दक्षिणी अमरीका, अफ्रीका, मध्य तथा सुदूरपूर्व और आस्ट्रेलिया भी आ जाते हैं। सन् १९५२ में फ्रांसीसी हवाई यातायात से १० लाख यात्रियों ने सफर किया।

द्वितीय महायुद्ध से पूर्व फ्रांस के वायुमार्गों का गमनागमन की दृष्टि से संसार में पाँचवाँ तथा लम्बाई के विचार से तीसरा स्थान था। युद्धकाल के अन्त में फ्रांस का हवाई यातायात नष्टप्राय हो चुका था, परन्तु इसके पश्चात् फ्रांस ने अपने हवाई मार्गों में आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है। अब यहाँ के हवाई-मार्गों द्वारा यातायात में १९३८ की अपेक्षा कई गुनी उन्नति हो गई है, जैसा निम्न तालिका से स्पष्ट हो जायेगा।

	१९३८-३९	१९४६-४७	१९४८-४९
यात्रा की दूरी (मीलों में)	८७ लाख	२६० लाख	३५० लाख
यात्रियों की संख्या	१०९ हजार	३०७ हजार	८३४ हजार
माल का भार	२५०० टन	१०,१४९ टन	५३,३०० टन

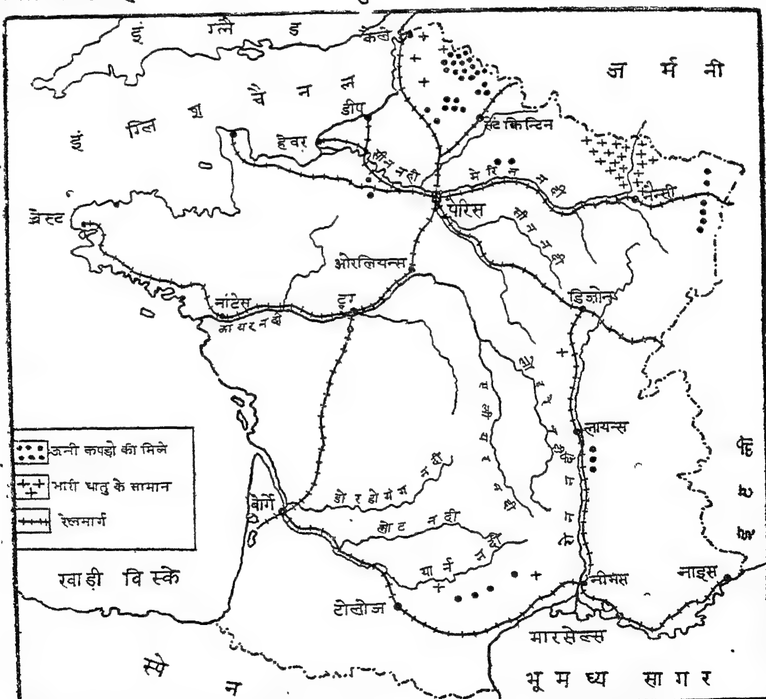
फ्रांस के भीतरी जलमार्ग—फ्रांस के भीतरी जल-मार्ग वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिए बड़ा महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। यहाँ की नदियाँ नहरों द्वारा जुड़ी हुई हैं और इस प्रकार यहाँ पर जलमार्गों की पूर्ण व्यवस्था है। ये जलमार्ग देश के उत्तर-पूर्वी तथा मध्य के प्रदेशों के लिए बड़े काम के हैं क्योंकि इन प्रदेशों में कोयला, भवन-निर्माण सामग्री तथा खेती की उपज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानी पड़ती है। यहाँ की मुख्य नदियों के नाम सीन, म्यूज (Meuse), साओन, रोन, राइन, ल्वायर तथा ओइस (Oise) हैं। नदियों तथा नहरों का सम्मिलित जलमार्ग ५,५०० मील के लगभग है। कई नदियों पर कर (Toll) बिल्कुल नहीं लिया जाता। रोन नदी की धारा बड़ी तेज है। कहीं-कहीं पर तो इसकी चाल १२ मील प्रति घंटा है। फ्रांस की सरकार ने रोन तथा उसकी सहायक नदियों पर बाँध बनाकर जलविद्युत उत्पादन तथा सिंचाई की एक योजना बनाई है। इस योजना से ६० लाख टन वार्षिक कोयले की बचत होगी और गर्मियों में रोन के दक्षिणी भागों में सिंचाई भी हो सकेगी। रोन नदी ३०९ मील लम्बी है।

यह नदी सिंचाई के लिए तो अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु इसकी घाटी दक्षिण यूरोप के पहाड़ों में प्राकृतिक राजमार्ग का काम देती है। इसी कारण उत्तरी तथा दक्षिणी यूरोप के बीच व्यापार का एक महत्वपूर्ण साधन जारी है। सीन तथा उसकी नदियाँ फ्रांस में उत्तम जलमार्ग बनाती हैं। सीन नदी साओन घाटी के पश्चिमी पहाड़ों से निकलती है और पश्चिम की ओर पेरिस तक बहती है। इसकी लम्बाई ४८० मील है।

फ्रांस की नहरों की लम्बाई ३,००० मील से भी अधिक है। **मुख्य नहरों के नाम**—(१) यस्ट (Est) जो म्यूज को मोसेल और साओन से मिलाती है, (२) नान्टीज ब्रेस्ट केनाल तथा (३) ल्वायर केनाल। फ्रांस के जलमार्गों में निम्नलिखित दोष हैं—(१) उत्तम बन्दरगाहों की कमी; (२) माल ले जाने में सुस्ती; (३) लम्बी यात्रा तथा कुछ नहरों में माल को रेलों तक ले जाने में सुविधाओं का अभाव।

फ्रांस का वैदेशिक व्यापार

फ्रांस की आयात तथा निर्यात की वस्तुएँ—यूरोप भर में केवल फ्रांस ही ऐसा औद्योगिक देश है जो कि भोजन की वस्तुओं के लिए भी आत्मनिर्भर है। यहाँ पर



चित्र ६२—फ्रांस के औद्योगिक केन्द्र तथा नदियाँ

कपास, ऊन, तिलहन, चमड़ा तथा खालें बाहर से आती हैं। फ्रांस के उपनिवेशों से चीनी, चावल, कहवा तथा जंगली रबर आती है। शराब, डेरी की उपज, बाक्साइट

सूती वस्त्र, कच्चा लोहा, रासायनिक पदार्थ, चमड़ा, मोटरगाड़ियाँ तथा चीनी का निर्यात होता है। शीशे का सामान अधिकतर संयुक्तराज्य (U. K.) बैल्जियम, स्वीडन, स्विजरलैंड, तथा संयुक्तराष्ट्र अमरीका को भेजा जाता है।

सन् १९३८ में फ्रांस के निर्यात में ५० प्रतिशत तैयार की हुई वस्तएँ होती थीं, परन्तु अब निर्यात व्यापार की ७२ प्रतिशत बनी हुई वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। फ्रांस का वैदेशिक व्यापार यूरोपीय देशों के ही साथ अधिकतर होता है। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र अमरीका, उत्तरी फ्रांसीसी अफ्रीका तथा अन्य देशों से भी व्यापार होता है।

(लाख फ्रांक में)

	१९३८	१९४९
निर्यात	३,०५,९००	७८,२० २२०
आयात	४,६०,६५०	९३,१७.९४०

फ्रांस के निर्यात का ४० प्रसिशत अंश उसके उपनिवेशों को जाता है। महत्व के दृष्टिकोण से अन्य ग्राहक देशों के नाम इस प्रकार हैं—

ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम, अर्जेन्टाइना, हालैंड, जर्मनी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका।

आयात का ३० प्र. श. अंश फ्रांस अपने उपनिवेशों से प्राप्त करता है। शेष आयात के स्रोत क्रमशः संयुक्त राष्ट्र, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ग्रेट ब्रिटेन और बेल्जियम हैं।

फ्रांस के व्यापारिक केन्द्र

पेरिस—फ्रांस की राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है। यहाँ से रेलें चारों ओर को जाती हैं।

हावर—सीन नदी पर स्थित एक प्रसिद्ध समुद्री बन्दर है। यहाँ से उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका के साथ व्यापक व्यापार होता है।

लियों (Lyons)—रोन नदी पर स्थित है। यह नगर रेशमी वस्त्र उद्योग के लिए जगत्प्रसिद्ध है। रोन तथा साओन की घाटी से रेशम प्राप्त होता है परन्तु अधिकतर रेशम चीन, जापान तथा इटली से आता है। रेशमी वस्त्र घरों में तथा छोटे-छोटे कारखानों में तैयार किए जाते हैं। लियों क आस-पास ही बनावटी रेशम के भी कारखाने हैं। फ्रांस का ८० प्र. श. बनावटी रेशम लियों में ही तैयार होता है।

मार्सेल्स—भूमध्यसागर तट पर फ्रांस का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। स्थानीय जैतून के तेल की अधिकता तथा उष्ण कटिबंधीय भागों से वनस्पति तेल की प्राप्ति की सुविधा होने से मार्सेल्स साबुन, मोमबत्तियाँ इत्यादि बनाने का एक प्रसिद्ध केन्द्र बन गया है।

बोर्डो (Bordeaux)—पश्चिमी तट पर स्थित मदिरा का केन्द्र है। पिछले कुछ दिनों से यहाँ पर जहाज बनाने में भी काफी तरक्की हुई है।

रुओन (Rouen)—सीन नदी पर स्थित सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र है ।

लिले (Lille)—उत्तरी-पूर्वी कोयला क्षेत्र पर स्थित सन के वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध है । यहाँ पर सूती कपड़ा भी बनाया जाता है ।

सैंट-एटीन—(St. Etinne)—फ्रांस के मध्य के कोयला क्षेत्र पर एक महान् औद्योगिक नगर है । यहां पर लोहे का सामान तथा रेशमी फीते बनाये जाते हैं ।

डनकर्क (Dunkirk)—फ्रांस के उत्तरी तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है । दक्षिणी अमरीका के साथ यहीं से अधिकतर व्यापार होता है ।

इटली

व्यापारिक दृष्टिकोण से इटली की स्थिति बड़ी ही अनुकूल है । यह देश तीन ओर समुद्र से घिरा हुआ है और संसार के महत्वपूर्ण भीतरी सागर (भूमध्य सागर) के बीच में स्थित है । इसका क्षेत्रफल ११६,२३५ वर्गमील है और सन् १९५३ में यहाँ की आबादी ४७१ लाख थी ।

भौगोलिक विचार से इटली के तीन विभाग हैं—

१. उत्तरी मैदान तथा पर्वत,

२. इटली का प्रायद्वीप,

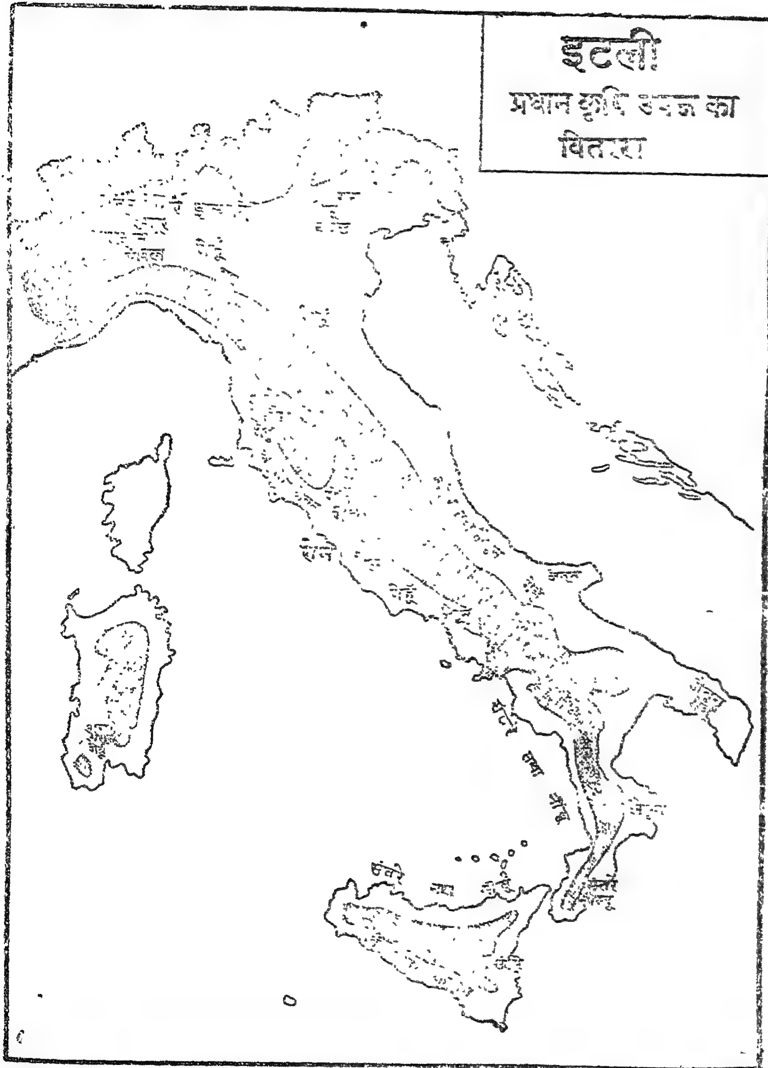
३. इटली के द्वीप ।

जलवायु—पहाड़ों से घिरा होने के कारण उत्तरी मैदानों पर समुद्री जलवायु का प्रभाव नहीं पड़ता । इसी कारण यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय है । इटली के प्रायद्वीप प्रदेश की जलवायु भूमध्यसागरीय है ।

आबादी तथा कृषि की उपज—इटली घना बसा हुआ देश है । घनी आबादी अधिकतर उत्तरी मैदान में ही केन्द्रित है । क्योंकि इस मैदान की मिट्टी और जलवायु भिन्न-भिन्न उपजों के अनुकूल है, यहाँ पर सिंचाई के द्वारा अंगूर, गेंहूँ मक्का, चावल, सन, पटुआ तथा चुकन्दर की खेती की जाती है । इटली के पीडमान्ट-लम्बार्डी क्षेत्र में ३३६,००० एकड़ पर चावल की खेती की जाती है और इटली यूरोप के देशों में सबसे अधिक चावल उत्पन्न करने वाला देश है । उत्तरी प्रान्तों की घाटियों म विस्तीर्ण खेतों पर धान की फसल पैदा की जाती है । यहां पर खेती की सहकारी व्यवस्था नहीं है । यहाँ का दो-तिहाई चावल यहीं पर खप जाता है । बाकी का एक-तिहाई चावल अर्जेन्टाइना, स्विजरलैंड, जर्मनी तथा फ्रांस को निर्यात कर दिया जाता है ।

अंगूर की उपज सारे ही देश म होती है । इसलिए यहाँ पर शराब अधिकतर बनाई जाती है । इटली के प्रायद्वीप में भूमध्यसागरीय जलवायु के कारण जैतून, नीबू, नारंगी, अंजीर, खूबानी की व्यापक उपज होती है । यहाँ शहतूत के पेड़ भी बहुत होते हैं । कुछ पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर इटली के सभी भागों में शहतूत के पेड़

खूब उगते हैं। शहतूत के वृक्षों के मुख्य क्षेत्र लम्बार्डी, वेनीशिया, पीडमान्ट, एमीलिया, टसकानी, अम्ब्रिया और सिसली हैं। बहुत प्राचीन काल से इटली में शहतूत



चित्र ६३—कृषि का धंधा विशेषकर उत्तरी मैदान में ही केन्द्रित है।

के वृक्ष का महत्व रहा है। १३०० ईस्वी में भी इसको फल का प्रधान वृक्ष माना जाता रहा है। इसीलिए यूरोप भर में इटली सबसे अधिक रेशम उत्पन्न करता है।

खनिज सम्पत्ति—सिसली, टस्केनी, सार्डीनिया लोम्बार्डी तथा पीडमौंट में

खनिज उद्योग का बहुत विकास हुआ है। गंधक सबसे महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ है जो विशेषकर सिसली में मिलता है। एल्वा द्वीप तथा टस्केनी में लोहा मिलता है। इटली में पारा सब देशों से अधिक प्राप्त होता है। टस्केनी में मौंट अमियाटी (Monte Amiati) तथा इद्रिया पारे की प्रसिद्ध खानें हैं। इटली में सर्वोत्तम श्रेणी का संगमरमर भी मिलता है। कोयले की कमी है परन्तु जलविद्युत का विकास हो रहा है। इटली की प्राकृतिक बनावट तथा असंख्य धाराएँ जलशक्ति के विकास के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। सीसा, जस्ता, बाक्साइट तथा मैंगनीज आदि अन्य खनिज पदार्थ इटली में पाये जाते हैं। पिछले कुछ दिनों से प्राकृतिक गैस का उपभोग बढ़ रहा है। सन् १९५३ में कुल शक्ति उपभोग का १४ प्रतिशत प्राकृतिक गैस थी जब कि सन् १९४७ में इसका उपभोग केवल एक प्रतिशत ही था। आशा है कि सन् १९५८ तक उपभोग में इसका अंश ४० प्रतिशत होजायगा।

खनिज का उत्पादन (१९५२)
(हजार मीट्रिक टन)

कच्चा लोहा	७९०
मैंगनीज	४१
सीसा	६५
जस्ता	२३४
गन्धक	१,७१३
बाक्साइट	२८६

इटली के शिल्प-उद्योग—इटली के शिल्प-उद्योगों में बड़ी उन्नति हो रही है। यहाँ पर (१) सस्ते मजदूर, (२) स्थानीय मंडियाँ, (३) जलशक्ति, (४) राजकीय सहायता, (५) लोगों की कुशलता तथा साहस आदि की सुविधाएँ हैं। **यहाँ की कारीगरी की वस्तुओं में कलापूर्णता अथवा अर्थ-कलापूर्णता की विशेष छाप रही है।** यहाँ की शीशे की वस्तुओं, लैंसों, मिट्टी के वर्तनों, संगमरमर की वस्तुओं तथा चाकू-उस्तरे आदि वस्तुओं में इटली के शिल्प कौशल की झलक दिखलाई पड़ती है।

इटली का वस्त्र उद्योग—यहाँ पर ऊनी, सूती तथा रेशमी वस्त्रों के बड़े-बड़े कारखाने हैं। शराब, जहाज तथा लोहे और स्टील का धंधा भी महत्त्वपूर्ण है। वस्त्रों के धंधे और व्यापार में इटली का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। १९३० से ४० तक रुई के आयात करने वाले देशों में इटली का पाँचवाँ तथा ऊन में छठा स्थान था। निर्यात के दृष्टिकोण से भी कृत्रिम रेशम के डोरे तथा पटुआ निर्यात में प्रथम, सूती डोरे में दूसरा तथा कच्चे रेशम के निर्यात में इटली का तीसरा स्थान था। वस्त्र व्यवसाय में यहाँ के ४,७०,००० व्यक्ति तथा अनुपूरक उद्योगों में ३,८०,००० व्यक्ति लगे हैं। जितना वस्त्र यहाँ तैयार होता है उसका २५ प्र. श. निर्यात हो जाता है। **कृत्रिम देशों के उत्पादन में भी इटली योरोप भर में सबसे प्रथम है।** कृत्रिम रेशम के उत्पादन में १९३७ तक इटली का छठा स्थान था। कृत्रिम रेशम के लिए इटली में निम्नलिखित अनुकूल अवस्थाएं हैं—(१) जलविद्युत की प्रचुरता, (२)

सस्ती कच्ची वस्तुएं, (३) कारीगरों की कुशलता तथा (४) रेशमी उद्योगों में कुशल कारीगरों की अधिक संख्या। यहाँ के कृत्रिम रेशम के उपभोग की प्रमुख मंडियाँ जर्मनी, हालैंड, डैनमार्क, भारतवर्ष, पीरू, चिली तथा ब्राजील हैं।

इटली के अन्य शिल्प-उद्योगों में मोटर बनाने का उद्योग सबसे अधिक उन्नत और समृद्ध है। मोटरों और मोटर गाड़ियों का उत्पादन बराबर बढ़ता जा रहा है। वार्षिक उत्पादन का औसत १ लाख मोटर गाड़ियाँ हैं।

यातायात के साधन—इटली के रेल-मार्ग बड़े विकसित हैं। इटली के भीतरी भाग तथा मध्य यूरोप रेलों द्वारा ही बन्दरगाहों से मिले हुए हैं। १९५२ में यहाँ पर रेलमार्गों की लम्बाई २१,७१७ किलोमीटर थी। यहाँ पर नदियाँ तो बहुत हैं परंतु नाव्य नदियां अधिकतर उत्तरी मैदानों में ही हैं। नदियों के नाम हैं—पो, टिसिनो, अड्डा (Adda) तथा अडीज (Addige)। दक्षिणी नदियों में केवल टाइबर तथा आर्नो ही नाव्य नदियाँ हैं। इटली की सड़कों की लम्बाई १९५२ में १७०,६८३ किलो मीटर थी।

जनसंख्या तथा देश के साधन—इटली की आबादी साढ़े ४ करोड़ से भी अधिक है। देश के वर्तमान साधनों पर इतनी आबादी का बोझ देश की शक्ति से अधिक ही है। प्राकृतिक साधनों की भी इटली में कमी है। ईंधन तो यहाँ है ही नहीं। तेल के अतिरिक्त यहाँ पर ९०,००,००० टन कोयला प्रति वर्ष बाहर से मँगाना पड़ता है। देश की खपत के लिए यहाँ पर कोयला भी पर्याप्त नहीं होता कृषि की उपज में भी इटली आत्मनिर्भर नहीं है। यहाँ पर कपास, गेहूं और अनाज बाहर से मंगाने पड़ते हैं। इन्ही कारणों से इटली एक निर्धन देश है।

इटली के प्रसिद्ध नगर—मिलान—आल्प्स की तलहटी में स्थित उत्तरी मैदान का सबसे बड़ा नगर है। यह रेशमी वस्त्र उद्योग का केन्द्र है, जिसके लिए इटली यूरोप भर में प्रसिद्ध है। यहाँ पर इंजीनियरी के भी कारखाने हैं।

रोम—वर्तमान इटली की राजधानी है। यह दुनिया के सबसे प्राचीन नगरों में से है। यहाँ की आबादी १० लाख से भी अधिक है।

नेपल्स का बन्दरगाह इटली के प्रायद्वीप के दक्षिण-पश्चिमी तट पर एक सुन्दर खाड़ी पर स्थित है। यह पोतनिर्माण का केन्द्र है। यहाँ के कारखानों में जलविद्युत का प्रयोग होता है।

ट्यूरिन (Turin)—उत्तरी मैदान का एक प्रसिद्ध नगर है। यहां पर मोटरकार बनते हैं।

ट्रीस्ट—उत्तरी मैदान के पूर्व में एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यूरोपीय मध्य देशों के लिए यह एक प्रसिद्ध पुनर्नियात व्यापारिक केन्द्र है। अब यह संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकार में है।

फ्यूम (Fiume)—इस्ट्रिया प्रायद्वीप के पूर्व में एक बन्दरगाह है। यहाँ पर माल इकट्ठा किया जाता है।

जिनोआ (Genoa)—उत्तरी मैदान का प्रसिद्ध समुद्री बन्दरगाह है।

वेनिस तथा जिनोआ दोनों किसी समय में प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र थे। पूर्वीय देशों की बहुमूल्य वस्तुएं वितरणार्थ यहाँ लाई जाती थीं और इन नगरों से यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों को उनका पुनर्निर्यात कर दिया जाता था। केप मार्ग के खुलने से इन नगरों का महत्व अब जाता रहा है !

इटली के आयात और निर्यात—इटली में बाहर से आने वाली प्रमुख वस्तुएं—कपास, लोहा, ऊन, खनिज तेल, कोयला, इमारती लकड़ी, चीनी, कहवा तथा चाय हैं। यहाँ से बाहर जाने वाली वस्तुओं में फल और तरकारियाँ, कपास, रेशम तथा कृत्रिम रेशम, मोटरकारें तथा मदिरा इत्यादि सम्मिलित हैं। साधारणतः इटली का व्यापार संतुलन उसके विरोध में रहता है। इसकी आमदनी अधिकतर पहाड़ों, भ्रमण करने वाले यात्रियों और विदेशों में स्थित इटाली लोगों के भेजे गए रुपयों से बनती है। सन् १९५१ में इटली में आयात का कुल मूल्य १३,५३० लाख लायर था। इसी वर्ष इटली से निर्यात की हुई सामग्री का मूल्य १०,२७० लाख लायर था। इटली के कुल आयात का ४० प्रतिशत भाग संयुक्त-राष्ट्र से आता है। निर्यात की वस्तुओं के सबसे बड़े ग्राहक अर्जेन्टाइना और ग्रेट ब्रिटेन हैं।

पोलैंड

पोलैंड का संक्षिप्त परिचय—शताब्दियों से पोलैंड एक स्वतन्त्र राष्ट्र था। १८वीं शताब्दी के अन्त में रूस, प्रशा तथा आस्ट्रिया ने इसे आपस में बाँट लिया। इस प्रकार १९१९ तक यूरोप के राजनीतिक नक्शे पर पोलैंड का नामोनिशान भी नहीं रहा। प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् पोलैंड जिस पर अब तक जर्मनी, आस्ट्रिया तथा रूस का अधिकार था एक प्रजातन्त्र राज्य बन गया। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण पोलैंड जर्मनी और रूस के बीच मध्यस्थ राष्ट्र बन गया। १९१९ में पोलैंड स्वतन्त्र हुआ परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में फिर जर्मनी और रूस ने इसे बाँट लिया। अब यह फिर स्वतन्त्र है परन्तु इसकी सीमाओं में परिवर्तन हो गया।

बाल्टिक सागर पर स्थित डानजिग और डीजिया द्वारा ही समुद्र-तट पर पहुँचा जा सकता है। पूर्व में प्राइपट मार्चज और दक्षिण में कार्पेथियन पर्वतों को छोड़कर पोलैंड के किसी ओर भी प्राकृतिक सीमाएं नहीं हैं। पोलैंड की रूपरेखा में दूसरे महायुद्ध के कारण बड़ा हेर-फेर हुआ। वर्तमान पोलैंड की सीमाएं सन् १९४५ में पाट्सडम कानफ्रेंस द्वारा निर्धारित की गई। तदनुसार इसका क्षेत्रफल ३११,७३० वर्ग किलोमीटर है। विस्तार के अनुसार यूरोप के देशों में इसका आठवाँ स्थान है। महाद्वीप के करीब-करीब मध्य में स्थित होने के कारण यातायात की सुविधा है और उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम को जाने वाले व्यापारिक मार्ग इसी में से होकर गुजरते है। इसलिए पोलैंड का व्यापार संसार के सभी देशों से आसानी से हो सकता है।

पोलैंड की सीमाएँ ३५६० किलोमीटर हैं और कोई ५०० किलोमीटर तक बाल्टिक तट फैला हुआ है। ग्डान्सक (Gdansk), गिडनिया (Gydinia) और से जिसिन (Szczecin) यहाँ के प्रमुख बन्दरगाह हैं। सम्पूर्ण देश की जनसंख्या

कोई २७० लाख है और जनसंख्या के दृष्टिकोण से इसका यूरोप में सातवां स्थान है। *कोई ११० लाख व्यक्ति ७१५ नगरों में निवास करते हैं। पोलैंड के १६ नगरों की आबादी १ लाख से अधिक है।

पोलैंड प्रधानतया निम्नप्रदेशीय भाग है। इसमें मैदान का विस्तार अधिक है। सम्पूर्ण प्रदेश का ९० प्रतिशत भाग समुद्रतल से केवल ३०० मीटर ही ऊँचा है। परन्तु पिछले युग के हिमाच्छादन के फलस्वरूप इधर-उधर टीले आदि स्थित दिखाई देते हैं और नदियाँ प्रपात बनाकर गिरती हैं। इस कारण भू-दृश्य बड़ा ही ऊँचा-नीचा दिखाई देता है। प्राकृतिक बनावट के दृष्टिकोण से पोलैंड को ६ भागों में बाँटा जा सकता है—(१) समुद्रतटीय मैदान, (२) झील प्रदेश, (३) मध्यवर्ती मैदान, (४) पुराने पहाड़ और उच्च प्रदेश, (५) कारपेथियन की घाटियाँ, (६) कारपेथियन पर्वत। भूगर्भ की बनावट, जलप्रवाह प्रणाली, वनस्पति और जीव-जन्तु के आधार पर प्रत्येक को कई-कई उपविभागों में बाँटा जा सकता है।

शीतोष्ण कटिबंध में स्थित होने के कारण पोलैंड की जलवायु सम है। गर्मी और जाड़े के तापमान के बीच १८ से २३ डिग्री का अन्तर रहता है। वनस्पति का उपज काल केवल २२९ दिन है। वार्षिक वर्षा का औसत ७०० मिलीमीटर रहता है परन्तु जलवृष्टि पर्याप्त रूप से हर महीने में वितरित रहती है।

यहाँ की मिट्टी साधारण उपजाऊ है, परन्तु दक्षिणी पूर्वी प्रदेश की स्टेपी मिट्टी बड़ी अच्छी है।

कृषि की उपज—यह एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ के ६० प्रतिशत से भी अधिक मनुष्य खेती, वन उद्योग तथा मछली व्यवसाय में लगे हैं। कृषि-योग्य आधी से अधिक भूमि पर राई और आलू की कृषि होती है।

युद्ध उपरान्त पिछले १० वर्षों में सरकार ने कृषि की विशेष उन्नति की है। सरकार की ओर से ४१६ मशीन केन्द्र स्थापित कर दिये गये हैं जहां १९००० ट्रैक्टर, ४०००० मजदूर तथा ४००० कुशल कारीगरों का बन्दोबस्त किया गया है। फलस्वरूप सन् १९५३ में खेती का उत्पादन प्रति मनुष्य पर ३० प्रतिशत अधिक हो गया है। सन् १९५५-५६ में खेती का विस्तार ८ लाख हेक्टर और भूमि पर हो जायगा। भूमि को खाद देकर उसकी उपज शक्ति को बढ़ाने का भी पूरा प्रयत्न किया जा रहा है।

पोलैंड में खेती के तीन प्रकार हैं। खेतिहर प्रदेश की ८० प्रतिशत भूमि पर अलग-अलग कृषकों के खेत हैं। दूसरे प्रकार के खेत सहयोगी तथा सहकारिता के आधार पर बने हैं। इन सहकारी खेतों पर किसान मिल-जुलकर खेती करते हैं। खेतिहर भूमि के ८ प्रतिशत अंश पर इसी प्रकार के खेत पाये जाते हैं। इस समय कोई १०,००० सहकारी खेत हैं जहाँ पर नवीनतम रीतियों से खेती की जाती है। इसलिए इन खेतों की उपज अधिक होती है। खाद्यान्न का प्रति एकड़ उत्पादन १।। से २ क्विंटल तक अधिक होता है। तीसरे प्रकार के खेत सरकारी खेत हैं जो खेतिहर भूमि के १२ प्रतिशत अंश पर फैले हुए हैं। इन खेतों का प्रधान उद्देश्य पहले

दो प्रकार के खेतों के लिए अच्छे प्रकार के वीज और पशु प्रदान करता है। इन पर कोई ३.1 लाख व्यक्ति ३०००० ट्रैक्टरों की सहायता से काम करते हैं। पोलैंड के सरकारी खेत सयत्न खेती के केन्द्र हैं।

खेतिहर उपज तथा क्षेत्रफल १९५४-५५

	क्षेत्रफल (लाख हेक्टर)		उपज (लाख मीट्रिक टन में)
अनाज	८९	१६०	—
आलू	—		३३८
चुकंदर	४		७३
मक्का	०१		—

खनिज और उद्योग—देश में खनिज पदार्थों की अधिकता होते हुए भी केवल १५ प्रतिशत मनुष्य ही खान खोदने का काम करते ह। ऊपरी साइलेशिया से प्रति वर्ष ४ करोड़ टन से भी अधिक उत्तम श्रेणी का कोयला प्राप्त होता है। कारपेथियन की तलहटी में गैलीशिया तेल-क्षेत्र से ५ लाख टन के लगभग पैट्रोलियम निकलता है। देश में कोयले का अपार भंडार है। अनुमान है कि पोलैंड की भूमि के नीचे कोई ७००० लाख टन कोयला निहित है। मध्य पोलैंड में भूरे कोयले की विस्तृत राशि पाई जाती है। इसके अलावा पीट, खनिज तेल और प्राकृतिक गैस भी खूब पाई जाती है। लोहा, जस्ता, सीसा और ताँबे की भी खानें हैं। नमक, पोटाश और फासफोराइट भी बहुतायत से पाया जाता है। चूने का पत्थर जिप्सम तथा चीनी मिट्टी भी विशाल राशि में खूब पाई जाती है। सन् १९५२ में पोलैंड में ८५० लाख टन कोयला और २० लाख ३० हजार टन खनिज तेल निकाला गया।

देश के एक चौथाई भाग पर वन फैले हुए हैं। लोड्ज, वाइडोगोसेज, साइलेशिया कोयला क्षेत्र, वेली स्टाक, ल्वोवा तथा वारसा के चारों ओर के क्षेत्रों में शिल्प-उद्योगों का विकास हो गया है।

उद्योग-धन्धे—दूसरे महायुद्ध से पूर्व अन्य यूरोपीय राज्यों की अपेक्षा पोलैंड बहुत पिछड़ा हुआ था। युद्ध और जर्मनी द्वारा सैनिक कब्जे से इस देश की आर्थिक दशा और भी बिगड़ गई। इसकी उत्पादन शक्ति पर बड़ा ही कुठाराघात हुआ। जब तक जर्मन सेनाओं का कब्जा रहा उनका ध्येय पोलैंड को अपना उपनिवेश बनाना था। इसी कालान्तर में ३०,००० कारखानों में से लगभग १९००० कारखाने बिल्कुल तहस-नहस हो गए। विध्वंस का प्रतिशत इस प्रकार था—

बिजली घर	५० प्रतिशत
यातायात के साधन	७५ प्रतिशत
वन-सम्पत्ति	२५ प्रतिशत
पशु	६० प्रतिशत
ग्रामीण घर	२५ प्रतिशत

इस प्रकार १० वर्ष पूर्व पोलैंड एक खंडहर मात्र था और उसकी आर्थिक दशा बिल्कुल ही बिगड़ी हुई थी। परन्तु सरकार की नीति तथा लोगों के कठिन परिश्रम के फलस्वरूप आज पोलैंड की आर्थिक स्थिति युद्धपूर्व से भी अच्छी हो गई है। पिछले १० वर्षों में इस देश में नये-नये उद्योग भी चालू कर दिये गए हैं जिनका पहले नाम-निशान भी नहीं था। नये उद्योगों में निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय हैं—भारी मशीनें, उच्च-कोटि का इस्पात, ट्रैक्टर, मोटर गाड़ियाँ, हवाई जहाज, भारी विद्युत उत्पादक मशीनें, जहाज, खेती की नवीन मशीनें और कृत्रिम रासायनिक पदार्थ। युद्ध से पहले खेती के अलावा अन्य उद्योग-धन्धों में लगे मजदूरों की संख्या २७ लाख थी परन्तु सन् १९५४ के आँकड़ों के अनुसार कल-कारखानों में ५८ लाख मजदूर काम करते हैं। युद्धपूर्व की अपेक्षा सन् १९५३ में उत्पादन में प्रति मनुष्य पर वृद्धि इस प्रकार रही—

सूती वस्त्र	२·३ गुना
ऊनी कपड़े	२·५ गुना
रेशमी कपड़े	३·९ गुना
चीनी	२·९ गुना
सिगरेट	४·६ गुना

सन् १९५३ में सन् १९४९ की अपेक्षा आधारभूत आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन ९९ प्रतिशत अधिक बढ़ गया। सन् १९१४ में औद्योगिक उत्पादन युद्ध-पूर्व का चौगुना हो गया। इस समय मशीनों का उत्पादन युद्ध के पहले की अपेक्षा ८ गुना है। निम्नलिखित तालिका से उत्पादन के आँकड़े स्पष्ट हो जायँगे—

औद्योगिक उत्पादन

	१९३८	१९५४
कोयला (लाख टन में)	३८०	९२०
इस्पात (लाख टन में)	१४	४०
विद्युत (लाख किलोवाट)	—	१५००

विद्युत का यह उत्पादन युद्ध पूर्व से २९० गुना है। रासायनिक उद्योग का उत्पादन भी युद्धपूर्व से पाँच गुना अधिक हो गया है। सीमेन्ट का उत्पादन पहले से दूना हो गया है। सन् १९५४ में २४२ किस्म के नये औजार तथा मशीन का निर्माण हुआ।

पिछले पाँच वर्षों में १४२५ नये कारखाने चालू किये गये जिनमें २२ नई लोहे की खानें तथा ३० बड़े रासायनिक कारखाने भी शामिल हैं। क्रैकाओ के समीप इस्पात का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला गया है। यह कारखाना प्रति-वर्ष १५ लाख टन इस्पात तैयार करेगा।

विदेशी व्यापार—सन् १९५५ में पोलैंड का विदेशी व्यापार सन् १९३७ की अपेक्षा तिगुना हो गया। आज पोलैंड का संसार के ७८ विभिन्न देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध है। पोलैंड से निर्यात की मुख्य वस्तुएँ कोयला, मशीनें, जहाज,

रेल के डिब्बे, कल-कारखाने, रासायनिक पदार्थ, चीनी, गोश्त, अनाज और लकड़ी हैं। धातु गलाने की भट्टियों के लिए कच्चा माल, रबड़, ऊन, कपास, रसायन और विविध वस्तुएँ ये दूसरे देशों से आयात करता है।

हाल में पोलैंड और भारत के बीच एक व्यापारिक समझौता हुआ है। जिसके अनुसार पोलैंड भारत को मशीन के औजार, इस्पात का वस्तुएँ खेती और वस्त्र उद्योग की मशीनें, विज्ञान प्रयोगशाला का सामान, बिजली की मशीनें, साइकिलें, सीमेन्ट, रसायन, मेज-कुर्सी, अखबारी कागज, चिरे हुए लकड़ी के तख्ते आदि नर्यात करेगा। इसके बदले में भारत से पटसन, कपास, चमड़ा, अभ्रक, चमड़े की सफाई का सामान, बेंत, मूँगफली, मिर्च, चाय, तम्बाकू, जड़ी-बूटी और मसाले आदि वस्तुयें पोलैंड को भेजी जाएँगी।

पोलैंड में आयात-निर्यात का काम केन्द्रीय संस्थाओं के हाथ में है। ये संस्थाये सरकार की ओर से संगठित हैं तथा प्रत्येक प्रकार की वस्तु के लिए अलग संस्था की व्यवस्था है। इससे कार्य संचालन में बड़ी सुचारुता आ जाती है।

लोड्ज़ सूती वस्त्रों के कारखानों का केन्द्र है। ऊपरी साइलेशिया में विशेषकर भारी धातुओं के कारखाने हैं। **वारसा** पोलैंड का एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध नगर ह। यहाँ से सड़कें और रेलें चारों ओर फैली हुई हैं। **डीनिया** विस्चुला के मुहाने से कुछ पश्चिम की ओर डानजिग की खाड़ी पर स्थित है। यह डानजिग राज्य से बाहर है। डानजिग से पोलैंड की आवश्यकता पूर्ति नहीं होती थी और यह एक स्वतन्त्र नगर बना दिया गया था। इस बात से पोलैंड असन्तुष्ट था। इसी कारण डीनिया एक उन्नत नगर हो गया। डानजिग १९३८ तक स्वतन्त्र नगर रहा फिर १९५४ तक जर्मनी के अधिकार में रहा, परन्तु अब यह पूर्ण रूप से पोलैंड का बन्दरगाह है।

फिनलैंड

इसका क्षेत्रफल ३०६,००० वर्ग किलोमीटर और आबादी ४१ लाख है। अधिकांश जनसंख्या दक्षिणी प्रदेशों में पाई जाती है।

इसके पूर्व में रूस, दक्षिण में बाल्टिक सागर, पश्चिम में स्वीडन तथा नारवे तथा उत्तर में उत्तरी ध्रुव महासागर हैं। फिनलैंड के आधे से अधिक भाग पर वन हैं जिनमें फर, पाइन, मेपिल, ऐश तथा ओक के वृक्ष मुख्य हैं। यहाँ के उद्योग-धंधों का आधार यहाँ की वन-सम्पत्ति ही है। देश में ४५० से भी अधिक लकड़ी चीरने के कारखाने हैं। कागज, अखबारी कागज, सूखा सैलूलोज, काष्ठमंड तथा गत्ता यहाँ के वनों से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ हैं। आजकल फिनलैंड में सभी देशों से अधिक प्लाईवुड (Plywood) बनाई जाती है। यहाँ के वनों से अनेक उद्योगों के लिए कच्चा माल मिलता है। वन-क्षेत्र भी बड़ा व्यापक है।

यहाँ के लोगों के मुख्य पेशे खेती करना तथा पशु-पालन या डेरी का काम हैं। बारहसिंघों (Reindeer) से दूध, मांस तथा खाल (वस्त्र) प्राप्त होते हैं। मछली पकड़ने का काम उन्नति पर है। यहाँ के अनेक बन्दरगाह तथा कटा तट

मछली व्यवसाय के लिए अनुकूल हैं। फिन लोग उन्नतिशील हैं। यहाँ पर खनिज पदार्थों तथा यातायात के साधनों की बड़ी कमी है। इमारती लकड़ी, काष्ठमंड तथा कागज निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ हैं। **हैलसिंकी** यहाँ की राजधानी, बन्दरगाह तथा औद्योगिक नगर है। **वाइबोर्ग** लकड़ी निर्यात का प्रमुख बन्दरगाह है। **टूर्कु** जहाजों का केन्द्र है।

प्रश्नावली

१. ग्रेट ब्रिटेन के विदेशी व्यापार की मुख्य विशेषताएँ बतलाइए और इसका क्या कारण है, समझाइए। आयात-निर्यात व्यापार की चार मुख्य वस्तुएँ बतलाइए और उन वस्तुओं के व्यापार के बन्दरगाहों के बारे में लिखिए।

२. फ्रांस के आन्तरिक जलमार्गों का विवरण लिखिए। उनका महत्त्व बतलाइए।

३. ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड को छोड़कर उत्तरी यूरोप में पटसन के कपड़ों का व्यवसाय कहाँ स्थित है? इनके लिए कच्चा माल कहाँ से आता है? भारत से प्राप्त कच्चे माल पर यह व्यवसाय कहाँ तक निर्भर है?

४. यूरोप के मानचित्र पर कच्चे लोहे वाले क्षेत्रों को दिखलाइए और यह बतलाइए कि लोहे की किन खानों के समीप कोयला उपलब्ध है।

५. जर्मनी का रूहर प्रदेश इतना बड़ा औद्योगिक केन्द्र कैसे बन गया? मनुष्य के प्रयत्नों से या प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण, प्राकृतिक सुविधाएँ कौन-कौन-सी हैं? बतलाइए।

६. प्राकृतिक बनावट, उपज और जनसंख्या के विचार से इंग्लैंड और स्काटलैंड की तुलना कीजिए।

७. ग्रेट ब्रिटेन के किस भाग में ऊनी कपड़े का व्यवसाय केन्द्रित है? स्थानीय सुविधाओं को बतलाइए और इस व्यवसाय में लगे हुए चार शहरों का नाम बतलाइए।

८. लंकाशायर में सूती कपड़े के व्यवसाय के केन्द्रित होने के क्या भौगोलिक कारण हैं? ब्रिटिश सूती कपड़ा व्यवसाय की वर्तमान दशा का भी वर्णन कीजिए।

९. कोयला, तेल और जल-विद्युत के दृष्टिकोण से फ्रांस का विवरण दीजिए।

१०. फ्रांसीसी साम्राज्य के आर्थिक दृष्टिकोण से आत्म-निर्भर होने की क्या संभावनाएं हैं? विस्तार से लिखिए।

११. ग्रेट ब्रिटेन के तीन औद्योगिक व्यवसायों का वर्णन कीजिए और उनके स्थानीयकरण के भौगोलिक कारण बतलाइए।

१२. सामान्य रूप से ग्रेट ब्रिटेन किन-किन प्रदेशों से भोज्य पदार्थ व सूती कपड़े के व्यवसाय का कच्चा माल प्राप्त करता है और इस माँग की पूर्ति पर लड़ाई का क्या असर पड़ा है? इन वस्तुओं की कमी के लिए ग्रेट ब्रिटेन ने क्या कुछ किया है?

१३. जर्मनी के प्रधान कोयला क्षेत्र कौन-कौन-से हैं और उनका नाव्य जल-मार्गों से क्या सम्बन्ध है ? इन क्षेत्रों के मुख्य उद्योग-धन्धों का भी निरूपण कीजिए।

१४. यूरोप के प्रमुख लोहा व कोयला क्षेत्रों का वर्णन कीजिए और उन भागों में स्थापित उद्योग-धन्धों के विषय में बतलाइए।

१५. ग्रेट ब्रिटेन की व्यापारिक व राजनीतिक उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइए।

१६. ग्रेट ब्रिटेन की जनसंख्या का वितरण बतलाइए और वितरण में विभिन्नता का कारण समझाइये।

१७. रूस व स्पेन प्रायद्वीप को छोड़कर यूरोप महाद्वीप की आर्थिक आत्म-निर्भरता का वर्णन कीजिए। इस प्रदेश में उष्णकटिबन्ध की अनेक वस्तुएँ मँगाई जाती थीं, जिनमें भोज्य पदार्थ व कच्चा माल दोनों ही सम्मिलित थे। इन वस्तुओं की माँग की पूर्ति के लिए अब क्या किया जा रहा है ? समझाकर लिखिए।

१८. ग्रेट ब्रिटेन में प्रस्तुत कोयले का सम्पत्ति का निरूपण कीजिए और बतलाइए कि वहाँ की कोयले की खानों का देश के औद्योगीकरण से क्या सम्बन्ध है ?

१९. ग्रेट ब्रिटेन का एक मानचित्र खींचकर उसके उद्योग-धन्धों के केन्द्रों को दिखलाइए।

२०. जर्मनी में आन्तरिक जलमार्गों के विकास व उन्नति पर एक लेख लिखिए।

२१. फ्राँस को प्राकृतिक भागों में विभाजित कीजिए और प्रत्येक का वर्णन विस्तार से करिए। अपने उत्तर के पूर्ण कारण दीजिए।

२२. इस्पात उद्योग के विकास व उन्नति के लिए प्रस्तुत सुविधाओं के दृष्टिकोण से ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की तुलना कीजिए।

२३. ग्रेट ब्रिटेन और जापान दोनों में ही रुई नहीं होती है और दोनों ही देश कपास तथा मंडियों के लिए बाहर के देशों पर निर्भर रहते हैं। फिर भी इन देशों में सूती कपड़े का व्यवसाय बहुत उन्नति कर गया है। ऐसा क्यों है ?

२४. रूस के आयात-निर्यात व्यापार की विशेषताओं को समझाइए।

२५. किन परिस्थितियों के कारण ग्रेट ब्रिटेन के लोगों ने इतनी उन्नति की हैं ? क्या उन परिस्थितियों पर अब भी भरोसा किया जा सकता है ? समझाकर उत्तर लिखिए।

२६. ग्रेट ब्रिटेन में पोतनिर्माण व्यवसाय के केन्द्र कौन-कौन-से हैं और प्रत्येक को क्या भौगोलिक सुविधाएँ प्राप्त हैं ? टेम्स प्रदेश का इस व्यवसाय में बड़ा उच्च स्थान था। उस स्थान से गिरने के क्या कारण हैं ? विस्तार से लिखिए।

२७. यूरोप में चीनी के उत्पादन का विवरण लिखिए। चीनी के उत्पादन में यूरोप कहाँ तक आत्मनिर्भर है ?

२८. रूस के आर्थिक जीवन में डोनेटज बेसिन का क्या महत्त्व है ?

२९. डैन्यूब नदी का प्रवाह एक मानचित्र पर दिखलाइए और लिखिए कि इसके मार्ग में पड़ने वाले विभिन्न देशों को इससे क्या आर्थिक लाभ पहुँचता है ?

३०. ग्रेट ब्रिटेन को छोड़कर यूरोप में सूती कपड़े के व्यवसाय का विवरण दीजिए।

३१. नार्वे, हालैंड या स्पेन का भौगोलिक विवरण दीजिए।

३२. "हालैंड प्रकृति पर मनुष्य के बढ़ते हुए नियंत्रण का एक नमूना है।" हालैंड में भूमि उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

३३. "यूरोप के उन देशों ने सबसे अधिक उन्नति की है जहाँ कोयले व लोहे का विस्तृत भंडार है।" यह कथन कहाँ तक ठीक है ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

३४. दक्षिणी पेनाइन श्रेणी का एक चित्र खींचिए और इसके ढालों पर स्थित उद्योग-धन्धों का वर्णन कीजिए। इन धन्धों के स्थानीयकरण का कारण भी बतलाइए।

३५. रूस को व्यवसायिक व औद्योगिक क्षेत्रों में विभाजित करिए और मास्को प्रदेश का विस्तृत विवरण दीजिए।

३६. मारसेल्स, हैम्बर्ग और साउथम्पटन बन्दरगाहों की विशेषताओं को समझाइए।

३७. रूस की आर्थिक उन्नति व विकास का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि वहाँ की वन-सम्पति के वितरण का क्या प्रभाव पड़ा है ?

३८. बेलजियम में लोहा और इस्पात व्यवसाय का विकास किन भौगोलिक परिस्थितियों में हुआ है ? उनका वर्णन कीजिए।

३९. ब्रिटिश द्वीपसमूह का लिनन व्यवसाय या जर्मनी के रासायनिक व्यवसाय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

४०. उत्तरी जर्मन मैदान का भौगोलिक वर्णन करिए।

४१. ब्रिटिश द्वीपसमूह में कृषि-व्यवसाय का भौगोलिक विवरण दीजिए।

४२. डेनमार्क में दूध के लिए पशुपालन का धन्धा इतना उन्नति क्यों कर गया है ? कारण बतलाते हुए उत्तर दीजिए।

४३. नाव्य जलमार्गों के दृष्टिकोण से राइन और एल्ब नदियों की तुलना कीजिए और बतलाइए कि प्रत्येक ने अपने आस-पास के प्रदेशों की आर्थिक उन्नति में क्या सहायता दी है ?

४४. फिनलैंड या बेलजियम किसी एक का भौगोलिक वृत्तान्त लिखिए।

४५. बरमिंघम, टाइनसाइड या टीसमाऊथ, किसी औद्योगिक क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों व प्राकृतिक साधनों का वर्णन कीजिए।

४६. लोरेन प्रदेश में स्थित वर्तमान इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण तथा

भौगोलिक परिस्थितियों का विवेचन करिए।

४७. बेलजियम की खनिज सम्पत्ति और औद्योगिक उन्नति पर एक लेख लिखिए।

४८. जर्मनी को कृषि विभागों में विभक्त करिए और कारण सहित किसी एक कृषि-प्रदेश का वर्णन करिए।

४९. ग्रेट ब्रिटेन में इस्पात उद्योग किन भौगोलिक परिस्थितियों में विकसित हुआ ? और इस समय उनकी क्या दशा है ? एक रेखाचित्र पर ग्रेट ब्रिटेन में इस उद्योग के प्रधान केन्द्रों को दिखाइये।

५०. फ्रांस में रेशम और ऊनी कपड़े के व्यवसाय का भौगोलिक आधार बतलाइए। इन व्यवसाओं की वस्तुओं की विदेशी व्यापार में क्या स्थान है ? संसार की मंडियों में क्या वे स्पर्धा कर पाती हैं।

५१. उत्तरी इटली का एक मानचित्र खींचकर वहाँ का भौगोलिक विवरण दीजिए।

अध्याय :: ग्यारह

उत्तरी अमरीका

सामान्य परिचय—विस्तार की दृष्टि से उत्तरी अमरीका का तीसरा स्थान है। यह भूमंडल के एक सातवें भाग पर फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल ९० लाख वर्ग मील और आबादी १९ करोड़ है। यह महाद्वीप उत्तर-पश्चिम में एशिया-तक चला गया है और उत्तर-पूर्व में यूरोप से निकटतम है। जल मार्ग द्वारा एशिया और यूरोप से सम्पर्क की सुविधा के कारण अमरीका की स्थिति व्यापार के लिए आदर्श रूप है। पनामा नहर के खुलने से एशिया के साथ व्यापार की और भी सुविधा हो गई है। उत्तरी अमरीका की विभिन्न जलवायु में गेहूँ, कपास, चुकन्दर, तम्बाकू, गन्ना, चावल, पटुआ, मक्का इत्यादि भिन्न प्रकार की कृषि की फसलें पैदा हो सकती हैं। पश्चिमी पर्वतों तथा पूर्वी उच्च प्रदेशों में खनिज पदार्थों की प्रचुरता है। कुछ खनिज पदार्थ तो यहाँ पर संसार भर में सब से अधिक होते हैं। यहाँ की नदियाँ और झीलें जल मार्गों के उत्तम साधन हैं।

उत्तरी अमरीका के निम्नलिखित राजनैतिक विभाग हैं:—

१—कनाडा,

२—संयुक्तराष्ट्र तथा अलास्का,

३—मैक्सिको,

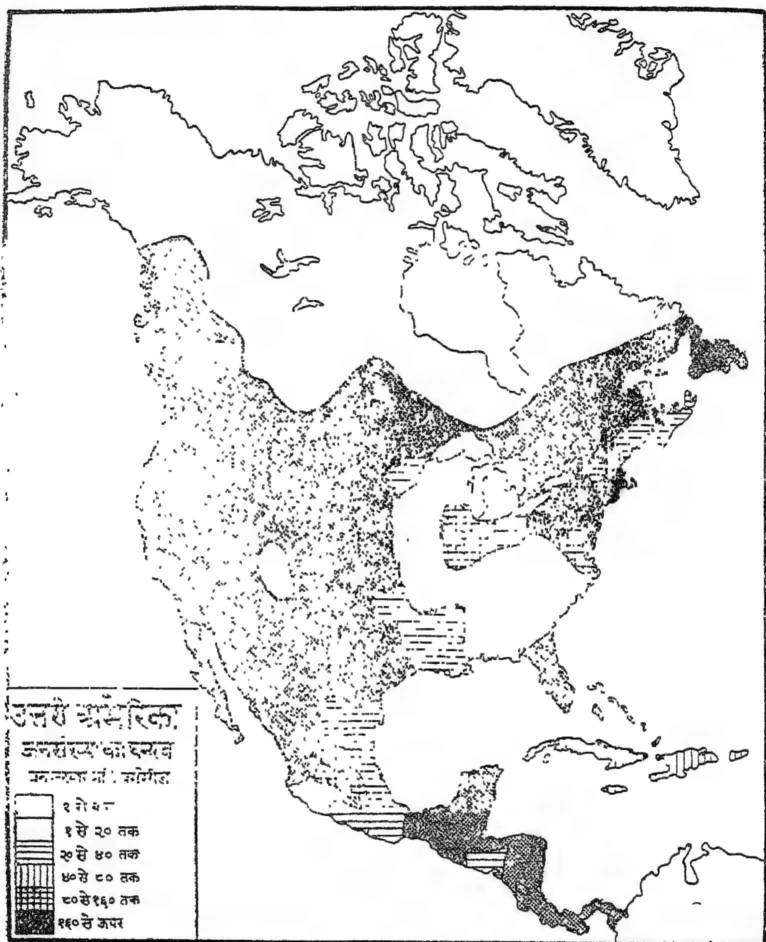
४—मध्य अमरीका तथा

५—पश्चिमी द्वीपसमूह।

कनाडा

देश का बिस्तार, जनसंख्या तथा भिन्न-भिन्न जातियाँ—कनाडा में १० प्रान्त सम्मिलित हैं, जिनके नाम हैं:—नोवास्कोशिया, न्यू ब्रंसविक प्रिंस ऐडवर्ड द्वीप, क्वीबेक, ओंटेरियो, न्यू फाउंडलैंड, मेनीटोबा, सस्कैचवान, अलबर्टा, तथा ब्रिटिश कोलम्बिया। इनके अतिरिक्त उत्तरी पश्चिमी राज्य तथा यूकन राज्य भी सम्मिलित हैं। कनाडा का क्षेत्रफल ३५ लाख वर्गमील तथा १९५३ के अनुसार जनसंख्या १४७ लाख है। देश का विस्तार अधिक होते हुए भी यहाँ के अनेक भाग हानिकारक जलवायु, भूरचना तथा मिट्टी की खराबी के कारण मनुष्यों के बसने के योग्य नहीं हैं। यूकन प्रान्त तथा उत्तर-पश्चिमी राज्यों में उन्नति की गुंजायश ही नहीं है। कनाडा की अधिकतर आबादी संयुक्तराष्ट्र से लगी हुई एक तंग पट्टी में ही केन्द्रित है। इस पट्टी में अधिकतर ईरी, ओन्टेरियो तथा सैंट लारेंस नदी का मैदान तथा लारेंशियन शील्ड सम्मिलित है। यहाँ पर कनाडा की ५० प्र. श. जनसंख्या बसी हुई है। सबसे घनी आबादी ओन्टेरियो प्रान्त में दोनों झीलों के उत्तरी तटों पर तथा

क्वीबेक के लारेंशियन मैदानों में है। क्वीबेक तथा ओन्टोरियो के ७० नगरों में ही देश की आधी जनसंख्या बसी हुई है।



चित्र ६४—उत्तरी अमरीका की जनसंख्या का घनत्व

कनाडा की आबादी में अनेक जातियों का सम्मिश्रण है जो पास रहते हुए भी अभी तक एक राष्ट्र नहीं बन पाई हैं। यहाँ पर २८ प्र. श. फ्रांसीसी, २६ प्र.श. अंग्रेज, १२ प्र.श. स्कॉच (स्काटलैंड वासी), १२ प्र. श. आयरलैंड निवासी और ५ प्र. श. जर्मन हैं। इन सभी जातियों में अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग है।

प्राकृतिक साधन—कनाडा में बड़े विशाल प्राकृतिक साधन हैं। खेती-बारी-

खान खोदने, लकड़ी चीरने, मछली पकड़ने और भेड़ों के पालने में कनाडा का स्थान ब्रिटिश साम्राज्य में सर्वप्रथम है।

कनाडा में मछली पकड़ने की सुविधाएँ तथा मछली के धंधे का विकास—मछली पकड़ना कनाडा का एक मुख्य धंधा है। यहाँ पर नदियों, तटों तथा गहरे समुद्रों से मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। समुद्री मछली पकड़ने में नोवास्कोशिया तथा न्यूब्रंसविक सब से प्रसिद्ध राज्य हैं। यहाँ की टूटी तट रेखा, बन्दरगाहों की अधिकता, नावों के लिए वनों की लकड़ी तथा तटों के पास ही मछलियों की अधिकता इस धंधे के लिए बड़े ही उपयुक्त साधन हैं। काड, हालीबट, मेकरेल तथा हैरिंग मुख्य प्रकार की मछलियाँ हैं। पूर्वी तट पर मछली संसार भर में सबसे अधिक पाई जाती है। कनाडा के पश्चिम में नदियों से मछली पकड़ी जाती है। कोलम्बिया, फ्रेजर तथा स्कीना नदियों में सालमन मछली अधिकतर मिलती है। यह प्रदेश मछलियों के लिए जगत्प्रसिद्ध है। यहाँ पर प्रतिवर्ष लगभग १९ करोड़ मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। पश्चिमी तट पर प्राप्त होने वाली बहुमूल्य मछलियाँ हैरिंग, काड तथा हैलीबट हैं। प्रिंस रुपर्ट इनका प्रधान केन्द्र है। कनाडा की नदियों और महान झीलों में भी स्थानीय उपयोग के लिए मछलियाँ पकड़ी जाती हैं। १९५१ में कनाडा के ८४,००० व्यक्ति मछली उद्योग में लगे हुए थे। कनाडा की स्थानीय मंडियों में जितनी मछलियों की खपत होती है उससे तीन गुनी मछलियां यहाँ प्राप्त हो जाती हैं। इसी कारण इस देश की मछलियाँ बाहर की मंडियों में भेजी जाती हैं। कनाडा में अटलांटिक तथा प्रशांत महासागरीय तटों, झीलों तथा नदियों से कुल मछलियों का उत्पादन १ अरब ३० करोड़ पौंड वार्षिक होता है। अन्ध और प्रशान्त महासागर के तटवर्ती मछली मार क्षेत्रों से कोई ७० विविध प्रकार की मछलियाँ पकड़ी जाती है। इनमें कुछ तो केवल व्यापारिक महत्व की ही होती हैं। उन्हें खाया नहीं जा सकता। समुद्र व नदियों तथा झीलों से पकड़ी गई मछलियों का वार्षिक उत्पादन ६१३,००० मीट्रिक टन होता है।

कनाडा में खेती का धंधा—यद्यपि कनाडा में कल कारखानों की काफी उन्नति हुई है परन्तु कनाडा मुख्यतः कृषि प्रधान देश है। देश की आय के लिए कृषि का धंधा बड़ा महत्त्वपूर्ण है। कनाडा में कृषि सम्बन्धी अनेक वस्तुओं का उत्पादन होता है। परन्तु भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज विशेषकर उगाये जाते हैं। कृषि की उपज का ऊँचा भाव, अनुकूल ऋतु, मशीनों का अधिक उपयोग, खेती के धंधे में नई खोज तथा उत्तम खाद इत्यादि के उपयोग से कनाडा ने अपनी कृषि की उपज में हाल ही में बड़ी भारी उन्नति कर ली है। कृषियोग्य भूमि में रेलों की पहुँच भी खेती की उन्नति में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है।

खेती का उत्पादन (१९५२)

(हजार मीट्रिक टन)

	१८,७२२
	७,१९९

जौ	६,३४३
राई	६२४
अलसी	३२९
मक्का	५०१
सोयाबीन	११२
आलू	१,६३५

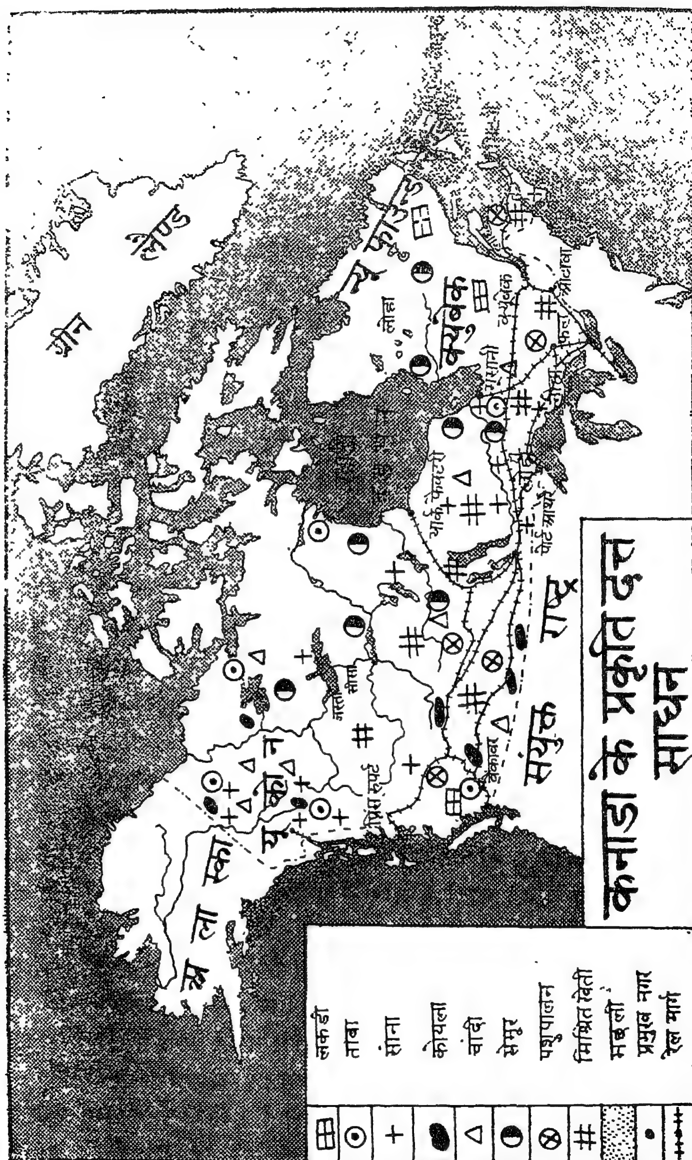
कनाडा में गेहूँ की उपज—**कनाडा में गेहूँ की उपज की मुख्य पट्टी ७०० मील लम्बी तथा २०० मील चौड़ी है जो मेनीटोवा, सस्केचवान तथा अलबर्टा के दक्षिणी भाग में कोणवत् फैली हुई है।** गेहूँ मई में बोया और सितम्बर तक काट लिया जाता है। कनाडा में गेहूँ की उपज का औसत साधारणतया १२ से १४ बुशल प्रति एकड़ रहता है जो संयुक्त राष्ट्र की उपज से बहुत ही कम है। परन्तु कनाडा में बड़े पैमाने पर गेहूँ की खेती की जाती है और मजदूरी की बचत के उपायों द्वारा यहाँ पर लागत का मूल्य भी कम पड़ता है। अब यहाँ गेहूँ की खेती में परिवर्त्तन हो रहा है। गेहूँ उत्पादन क्षेत्र पश्चिम की ओर हटता जा रहा है। अब अधिक पैदावार में सस्केचवान का स्थान अलवर्टा को प्राप्त हो रहा है। सन् १९५२ में करीब २६० लाख एकड़ भूमि पर गेहूँ की खेती होती थी। पर गेहूँ की खेती पश्चिम की ओर खिसकती जा रही है। सन् १९२६ में सस्केचवान प्रान्त से ५० प्रतिशत गेहूँ प्राप्त होता था परन्तु अब उत्पादन केवल ३० प्रतिशत ही रह गया है। आजकल गेहूँ की खेती अलवर्टा में इतनी अधिक बढ़ गई है कि यह प्रान्त सस्केचवान के समान उपज देने लगा है। गेहूँ की खत्तियों द्वारा गेहूँ का मूल्य, कोटि तथा माँगपूर्ति को स्थायी किया जाता है। गेहूँ की पैदावार देशीय खपत से पाँच गुना होती है, इसी कारण संसार भर में गेहूँ का निर्यात करने वाला प्रमुख देश हो गया है। कनाडा से लगभग तीन-चौथाई गेहूँ प्रतिवर्ष बाहर भेजा जाता है। कनाडा ने सन् १८७० में गेहूँ का निर्यात शुरू किया और सन् १९१३ में यहाँ से ९०० लाख बुशल गेहूँ बाहर भेजा गया। सन् १९२८ में घरेलू उपभोग के बाद ३,६५० लाख बुशल गेहूँ निर्यात के लिए बच रहा। तब से कनाडा से निर्यात मात्रा करीब-करीब इतनी ही बनी रही है। यहाँ का गेहूँ संयुक्त राज्य (U. K.), संयुक्त राष्ट्र अमरीका, अफ्रीका तथा दूरपूर्व के देशों को अधिकतर जाता है। पोर्ट आर्थर, फोर्ट विलियम, विन्निपेग तथा मान्ट्रीयल गेहूँ के प्रधान केन्द्र हैं। यहाँ पर गेहूँ केवल निर्यात ही नहीं किया जाता परन्तु पशुओं को भी खिलाया जाता है।

कनाडा की जौ, जई, आलू तथा पशु सम्बंधी उपज—जई की उपज सस्केचवान, अलबर्टा, ओन्टेरियो, क्वीवेक तथा मेनीटोवा में मुख्यतया होती है। १९५२ में १ करोड़ १० लाख एकड़ भूमि पर जई बोई गई थी। जौ की भी ९० प्रतिशत उपज मेनीटोवा, सस्केचवान तथा अलबर्टा प्रान्तों ही में होती है। राई भी १० लाख एकड़ से अधिक भूमि पर बोई जाती है। इसकी पैदावार भी अधिकतर सस्केचवान, तथा मेनीटोवा में ही होती है। आलू ओन्टोरियो तथा क्वीबेक में प्रधान-

तया उत्पन्न होता है। आजकल पशुधन तथा पशु सम्वन्धी उपज को बढ़ाने का भी प्रयत्न हो रहा है। इन वस्तुओं की द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् देशी और विदेशी माँग बहुत बढ़ गई है। क्वीवेक और ओन्टेरियो के प्रान्तों में मुर्गियाँ, गोश्त, अन्डे, दूध तथा दूध सम्वन्धी अन्य उपज की बड़ी तरक्की की जा रही है।

कनाडा की खनिज सम्पत्ति—कनाडा अव उस स्थिति को प्राप्त हो गया है जब कि खनिज उत्पादन में इसका प्रमुख स्थान हो गया है। खनिज उत्पादक देशों में इसका स्थान बड़ा ही विलक्षण है। वहाँ से प्राप्त खनिज न केवल उत्तरी अमरीका महाद्वीप बल्कि सम्पूर्ण संसार के लिए विशिष्ट महत्व रखते हैं।

सन् १९५३ में कनाडा में निकाले गये कोई ६० विविध खनिज पदार्थों का मूल्य १३३१० लाख डालर था। खनिज तेल, लोहा और टिटानियम खनिज क्षेत्रों की विस्तृत खोज हो रही है और महत्वपूर्ण विकास होने की आशा है। नोवास्कोशिया, ब्रिटिश कोलम्बिया, क्वेबक, ओन्टेरिया, अलबर्टा और यूकान प्रदेश प्रमुख खनिज उत्पादक प्रदेश हैं। संसार में **सोना** उत्पन्न करने वाले देशों में कनाडा का तीसरा स्थान है और यहाँ से विश्व उत्पादन का ७ प्रतिशत सोना प्राप्त होता है। ब्रिटिश कोलम्बिया, यूकान प्रदेश का क्लोनडाइक क्षेत्र, नोवास्कोशिया, ओन्टेरियो और क्वेबक सोने के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। सन् १९५२ में कनाडा का स्वर्ण उत्पादन ४४ लाख औंस था। संसार की सबसे मूल्यवान **निकल** की खानें कनाडा के सैडबरी क्षेत्र में स्थित हैं, जहाँ से विश्व उत्पादन का ९० प्रतिशत निकल प्राप्त होता है। सैडबरी क्षेत्र में कोई ४० मील लम्बे और १५ मील चौड़े भूभाग में निकल की ४० खानें पाई जाती हैं। **ताँबा** भी यहाँ का एक प्रमुख खनिज है जो कि क्वेबक ओन्टेरियो तथा ब्रिटिश कोलम्बिया में निकाला जाता है। **एसबेस्टास** अन्य महत्वपूर्ण खनिज है जो कि क्वेबक में निकाला जाता है और विश्व उत्पादन का ९५ प्रतिशत यहीं से प्राप्त होता है। **चाँदी, जस्ता** और **सीसा** अन्य खनिज हैं जो कनाडा में पाये जाते हैं, **कोबल्ट** भी प्रधान खनिज है और **टिटानियम** का विस्तृत भण्डार सेंट लारेन्स के समीप पाया जाता है और उत्तरी-पश्चिमी प्रदेश तथा सस्केचवान मे **यरेनियम** की खानें हैं। इन दो खनिज पदार्थों के सहारे देश धनी ही नहीं होगा बल्कि बंजर भूमि पर आबादी भी बढ़ जायेगी। टेक्साडा, ओन्टेरिओ, नोवास्कोशिया अल्बर्टा, सस्केचवान, राकी पर्वत और वैनकुवर द्वीप में कच्चा लोहा निकाला जाता है क्वेबक और लैब्रेडर के बीच में स्थित उनगारा बंजर प्रदेश में भी लोहे का भंडार निहित है। सन् १९५२ में कनाडा ने १८० लाख टन **कोयला** उत्पन्न किया। इसका ४० प्रतिशत केवल नोवास्कोशिया से प्राप्त होता है। अलबर्टा प्रान्त में मेडिसन हाट और मैकंजी तलैटी से **खनिज तेल** और **प्राकृतिक गैस** निकाली जाती है। इस तेल क्षेत्र से भविष्य में बड़ी-बड़ी सम्भावनायें है। ३०० लाख पौड खर्च करके एव ११०० मील लम्बी पाइप लाइन बनाई जावेगी। इसके द्वारा अलबर्टा के तेल को सुपारियर झील के संयुक्त राष्ट्र वाले तट तक पहुँचाया जावेगा। दूसरी पाइप लाइन राकी पर्वत को पार करके कनाडा के पश्चिमी तट तक जायेगी। सन् १९५८



चित्र ६५

प्रथम पाइप लाइन का आधा हिस्सा बनकर तैयार हो गया था। यह ४३९ मील लम्बी लाइन एडमान्टन से रेगीना तक जाती है। दूसरी लाइन एडमान्टन से वैंकूवर तक बनाकर १९५३ में चालू कर दी गई है।

सन् १९५२ में कनाडा का खनिज तेल उत्पादन ६१० लाख बैरल था।

इन तीनों पाइप लाइनों के बन जाने पर कनाडा के पश्चिमी तट का तेल ओंटेरिओ और मानट्रियल तक पहुँचाया जायेगा। ओंटेरिओ में तेल साफ करने का कारखाना है और मानट्रियल में तेल को 'तोड़'कर अनेक पदार्थ तैयार करने का बहुत बड़ा कारखाना खोला गया है।[2]

इधर कनाडा में तेल का उपभोग बराबर बढ़ रहा है। सन् १९४७ में एडमानटन के दक्षिण में Imperial Oil Company ने लेडुक स्थान पर तेल की खान का पता लगाया। उस समय तक कनाडा के तेल क्षेत्र से राष्ट्र की १० प्रतिशत माँग पूरी होती थी। आज कनाडा में तेल की माँग ८ गुनी अधिक हो गई है, लेकिन उस माँग के ३५ प्रतिशत अंश की पूर्ति घरेलू उत्पादन से पूरी हो जाती है। यदि उपभोग इसी प्रकार बढ़ता रहा तो सन् १९५५ तक कनाडा के तेल क्षेत्रों से ५० प्रतिशत माँग पूर्ति संभव हो सकेगी।

ऐसा अनुमान है कि कनाडा में २५० से ५०० लाख बैरल खनिज तेल का भंडार निहित है। इसके अलावा अलबर्टा प्रान्त के सुदूर उत्तर में अथाबास्का की टार बालू से ३० अरब बैरल तेल की संभावना है जो कि दुनिया के भंडार का तिगुना है। सन् १९४९ में ६० विभिन्न खनिज पदार्थों को मिलाकर ९००० लाख डालर मूल्य का तेल खानों से उत्पादन हुआ। कनाडा की सरकार की ओर से खनिज पदार्थों की विस्तृत खोज हो रही है और इसके फलस्वरूप सेंट लारेन्स, सस्केचवान, लब्रेडर और उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में लोहा, तेल, यूरेनियम के मिलने की संभावना है।

कनाडा की वन-सम्पत्ति—कनाडा के एक-तिहाई भाग पर वन-प्रदेश फैला है। उत्तरी भाग को छोड़कर जहाँ यातायात की कठिनाई है, सभी वनों में लकड़ी चीरना ही मुख्य धन्धा है। बहुमूल्य लकड़ी के निर्यात में कनाडा का स्थान संसार के प्रमुख देशों में है। ब्रिटिश राष्ट्र-मंडल में केवल कनाडा ही ऐसा देश है जहाँ पर निर्यात-योग्य बहुमूल्य इमारती लकड़ी की अधिकता है। केवल स्केण्डिनेविया ही संसार भर में इसकी स्पर्धा करता है। कनाडा की चिरी हुई लकड़ी के आधे से अधिक भाग की पूर्ति केवल ब्रिटिश कोलम्बिया से ही हो जाती है। यहाँ पर डगलस फर, हैमलाक, स्प्रूस, लालसिडार तथा पाइन के वृक्ष अधिकतर होते हैं। पाइन तथा हैमलाक वृक्षों से इमारती लकड़ी और स्प्रूस के वृक्ष से कागज बनाने के लिए काष्ठमण्ड प्राप्त होता है।

लकड़ी का उत्पादन

(हजार फीट)

१९३८	३,७६८,३५१
१९४७	५,३९२.५९५
१९४९	५,२८९,०००
१९५१	६,९४९,०००
१९५२	६,७८३,०००

कनाडा में उत्तरी वनों का महत्व—उत्तरी वनों की पट्टी का पूर्वी भाग विशेषकर क्वीबेक में, व्यापारिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है। पूर्वी कनाडा में नदियों की अधिकता, कड़ा जाड़ा तथा वसन्त ऋतु में बर्फ के पिघलने से बाढ़ का आना लकड़ी के चीरने के उद्योग में बड़े सहायक साधन हैं। जाड़ों में लकड़ी काटी जाती है और घोड़ों द्वारा पास की सुविधापूर्ण जमी हुई नदी के बर्फ पर पहुँचा दी जाती हैं। पेड़ों को एक जगह बाँधकर बेड़ा बना देते हैं और जब बर्फ पिघलती है ये बेड़े धार के साथ बहकर लकड़ी चीरने के कारखानों में पहुँचा दिये जाते हैं। कनाडा में जंगलों को विशेषकर सुरक्षित रखा जाता है। बिना आज्ञा के वनों से कोई लकड़ी नहीं काट सकता और छोटे पेड़ तो काटे ही नहीं जा सकते। अग्नि से रक्षा के लिए ऊँची-ऊँची चौकियाँ बनी हुई हैं, जिन पर चौकीदार रहते हैं। इन वनों में फर (Fur) वाले पशु भी पाये जाते हैं। इन पशुओं की खाल और नमदे की अमरीका और यूरोप में बड़ी माँग रहती है। कनाडा की चिरी हुई लकड़ी के क्रमशः प्रमुख ग्राहक संयुक्त राज्य (U. K.), संयुक्त राष्ट्र अमरीका तथा आस्ट्रेलिया हैं।

कनाडा के जलमार्ग—कनाडा में सेंट लारेंस तथा बड़ी झीलें नाव्य हैं। इनसे २००० मील लम्बा प्राकृतिक जलमार्ग बनता है। जाड़ों में ये जम जाती हैं। बड़े-बड़े समुद्री जहाज सेंट लारेंस द्वारा देश के १००० मील भीतर मांट्रियल तक आ सकते हैं। यहाँ पर माल छोटे-छोटे जहाजों में लादकर इधर-उधर ले जाया जाता है। सेंट लारेंस के मुहाने पर कुहरे और तेज धारा के कारण कठिनाई अवश्य पड़ती है। यहाँ पर नदियों और झीलों को मिलाने के लिए १६०० मील लम्बी नहरें हैं।

कनाडा में जलविद्युत—कनाडा में जलशक्ति का महत्वपूर्ण विकास हुआ है और देश में कारखानों के लिए ९७·५ प्र. श. विद्युत जल-शक्ति से ही पैदा की जाती है। देश में सस्ती जलशक्ति (विद्युत) के कारण ही यहाँ पर औद्योगिक विकास सम्भव हुआ है और लोगों का जीवन-स्तर भी ऊँचा हो गया है। सस्ते मूल्य पर तैयार की गई जलविद्युत के कारण ही देश का औद्योगीकरण इतनी तेजी से हो सका है और इसी के कारण देश में रहन-सहन का स्तर इतना ऊँचा हो गया है। गौण उद्योग-धन्धों में उपयोग की हुई ⅘ शक्ति जलविद्युत से ही प्राप्त होती है और मुख्य धन्धों का तो एकमात्र सहारा यही जलविद्युत है। कागज बनाने और लकड़ी से लुग्दी तैयार करने के धन्धे तो जलविद्युत के ऊपर निर्भर रहते हैं। बिजली से धातु निकालने तथा बिजली रसायन उद्योग भी जलविद्युत के ही सहारे चलते हैं।

कनाडा के रेल मार्ग—रेलों के विकास के कारण ही कनाडा में बड़ी उन्नति हुई है, विशेषकर पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी कनाडा में रेल यातायात के ही कारण यहाँ की उपज में इतनी उन्नति सम्भव हो सकी है। कनाडा में अब दो महान रेल मार्ग हैं : (१) कैनडियन पैसिफिक रेल मार्ग तथा (२) कैनडियन नेशनल रेल मार्ग। ये दोनों ही रेल मार्ग महाद्वीप के एक छोर से दूसरे छोर तक जाते हैं। और इनमें

से अनेक शाखाएँ देश में इधर-उधर फैली हैं। इन्हीं रेलों के कारण पश्चिमी कृषि-क्षेत्र की उन्नति हुई है। यहाँ की रेलें संयुक्त राष्ट्र की रेलों से भी मिली हुई हैं। सन् १९५२ में कनाडा के समस्त रेल मार्ग ५८१५० मील लम्बे थे।

कनाडा में औद्योगिक विकास—कनाडा के शिल्प-उद्योगों का तेजी से विकास हो रहा है। खेतिहर जनता की संख्या में वृद्धि, रेलों के प्रसार, खनिज सम्पत्ति, जलविद्युत और अपार वन सम्पत्ति के कारण कनाडा भविष्य में एक महान् उद्योगी राष्ट्र बन जायेगा। इस समय भी उसके शिल्प-उद्योग द्वारा निर्मित वस्तुओं का मूल्य खेती के द्वारा प्राप्त कच्चे माल से कहीं अधिक हो गया है। इस समय कनाडा को अपने लिए रेल का सामान, खेती की मशीनें, लोहे व इस्पात की वस्तुएँ तथा सूती, ऊनी व रेशमी वस्त्र बाहर से मँगाने पड़ते हैं, परन्तु स्पष्ट है कि निकट भविष्य में औद्योगिक विकास के फलस्वरूप कनाडा आत्मनिर्भर हो जायेगा।

कनाडा के विशाल प्राकृतिक साधनों के आधार पर मछली भरने, आटा पीसने, मक्खन और पनीर बनाने, लकड़ी चीरने तथा कागज बनाने के उद्योग स्थापित हो गये हैं। चमड़े के सामान, सूती व ऊनी वस्त्र निर्माण तथा लोहे व इस्पात के उद्योग भी काफी महत्वपूर्ण हैं। देश में अपार वन सम्पत्ति, सुविस्तृत जल-शक्ति और स्वच्छ ताजे जल के स्रोतों के कारण कागज बनाने और कृत्रिम रेशम तैयार करने का उद्योग काफी तरक्की कर गया है।

प्रधान शिल्प-उद्योग (१९५४)

उद्योग	**कारखानों की संख्या**	**काम करने वालों की संख्या**
वनस्पति उपज	८३८८	१७२,४९३
पशु से प्राप्त उपज	४३२३	—
वस्त्र उद्योग	३९७५	१९७,०००
लकड़ी और कागज	१२४०	२१३,०००
लोहे की वस्तुएँ	२४३५	१८३,३२३
अलोहप्रधान धातु उद्योग	५३६	१२२,५१७
अधातु खनिज उद्योग	१००९	—
रसायन	१०३७	४५,६६४
मिश्रित (विविध)	—	—
कुल योग	३७०२१	१,२५८,३७५

कनाडा में आयात तथा निर्यात की वस्तुएँ--जनसंख्या के घनत्व कम होते हुए भी संसार के प्रमुख व्यापारी देशों में कनाडा का तीसरा स्थान है और यहाँ पर प्रत्येक मनुष्य के पीछे विदेशी व्यापार का औसत सबसे अधिक है। कनाडा से निर्यात की वस्तुओं में ५२ प्रतिशत मूल्य का तैयार माल और २६ प्रतिशत मूल्य की कच्ची वस्तुएँ होती हैं। यहाँ से अखबारी कागज, काष्ठमांड, गोश्त, गेहूँ, इमारती लकड़ी, पनीर, मछलियाँ, चाँदी, सोना, सुअर का मांस, ताँबा, फल, मोटर गाड़ियाँ, खेती के

औजार तथा खाद इत्यादि का निर्यात होता है। लोहे और स्टील का सामान, ऊनी और सूती वस्त्र, कोयला, टीन, रबर, खनिज तेल और उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण-कटिबंधीय उपज आयात की मुख्य वस्तुएँ हैं। पहले यहाँ पर अधिकतर माल संयुक्त राज्य (U.K.) से आता था परन्तु अब संयुक्त राष्ट्र की वस्तुओं का ही अधिक उपभोग होता है। कनाडा और संयुक्तराष्ट्र के निवासियों की अभिरुचि भी समान ही है इसीलिए संयुक्तराष्ट्र से व्यापार बढ़ गया है।

कनाडा के निर्यात की दशा (१९५३)

(हजार डालर में)

संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२,४१८,९१५
संयुक्त राज्य	६६५,२३२
जर्मनी	८३,८५८
बेल्जियम	६९,५१०
फ्रांस	३२,२८१
पाकिस्तान	३२,१०३
जापान	११८,५६८
दक्षिणी अफ्रीका	५०,७५३
ब्राजील	३७,५१६
नार्वे	३७,२७८
भारत	३७,१८७
वेनेजुला	३६,४८५
कुल योग	४,११७,४०६

सन् १९५३ में आयात का कुल मूल्य ४३८३० लाख डालर था और इसका २५ प्रतिशत भाग मशीनें, खनिज तेल, खेती के औजार तथा मोटरें थीं।

कनाडा के प्रसिद्ध नगर—हैलिफैक्स—नोवास्कोशिया की राजधानी और मुख्य बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय आदर्श है और यह जाड़ों में कभी नहीं जमता। यह छः मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। इसमें बड़े-बड़े समुद्री जहाज ठहर सकते हैं। यद्यपि यह एक व्यापारिक केन्द्र है और यहाँ से मछली तथा खनिज पदार्थ बाहर जाते हैं परन्तु अब यहाँ चीनी शोधने और सूत कातने आदि के भी अनेक कारखाने खुल गए हैं।

चारलोटाउन (Charlotte Town)—प्रिंस ऐडवर्ड द्वीप की राजधानी तथा प्रमुख नगर है। यहाँ पर लोमड़ियाँ पालने का धन्धा प्रसिद्ध है।

मान्ट्रीयल—क्वीबेक का सबसे बड़ा नगर है। यहाँ पर व्यापार, कारखानों, और शिल्प-उद्योगों की बड़ी उन्नति हुई है।

टोरंटो—ओन्टेरियो में मान्ट्रीयल की टक्कर का नगर है। यह एक प्रसिद्ध

झील-स्थित बन्दरगाह है ।

ओटावा—ओन्टेरियो प्रान्त में स्थित है । यह कनाडा की राजधानी है । यह काष्ठ व्यापार के लिए प्रसिद्ध नदी स्थित बन्दरगाह है । यहाँ पर जल शक्ति का सबसे प्रधान केन्द्र भी है ।

वैनकुवर—ब्रिटिश कोलम्बिया में पैसिफिक तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है । इसका पोताश्रय भी आदर्श है । यहाँ से गेहूँ, इमारती लकड़ी और खनिज पदार्थ बाहर भेजे जाते हैं ।

विनिपैग—मेनीटोवा में प्रान्तीय सरकार की राजधानी है । यह संसार भर में गेहूँ का सबसे प्रधान केन्द्र है ।

न्यूफाउन्डलैंड

रचना—१९४९ से न्यूफाउन्डलैंड कनाडा का दसवाँ प्रान्त है । यह इंग्लैंड का सबसे पुरन्ना उपनिवेश है । भौगोलिक विचार से तो यह कनाडा के पूर्वी पर्वतों का ही सिल-सिला है परन्तु यह द्वीप कहीं भी ऊँचा नहीं है । यहाँ की जलवायु तर होने से अच्छी नहीं है । तर जलवायु और कम उपजाऊ भूमि के कारण कृषि की उन्नति नहीं होती ।

मछली तथा वनसम्पत्ति की प्रचुरता—यहाँ की आवादी विखरी है । कुल संख्या ३,१६,००० है । अधिकतर लोग चट्टानी तटों पर रहते हैं । स द्वीप में वन अधिक हैं । **कहावत है कि न्यूफाउन्डलैंड मछलियों से घिरा हुआ वन है ।** यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा मछली पकड़ना है । यही उनकी समृद्धि का साधन है । ग्रैंड बैंक्स मछलियों का प्रसिद्ध केन्द्र है । जितनी मछलियाँ यहाँ पकड़ी जाती हैं उनका पाँचवाँ भाग ब्राजील, पुर्तगाल, इटली और स्पेन को निर्यात किया जाता है । कनाडा, यूनान और पश्चिमी द्वीपसमूह को भी काफी मछलियाँ भेजी जाती हैं । यहाँ पर कागज भी बनता है और लोहा भी निकाला जाता है । कुल निर्यात का २५ प्रतिशत भाग कागज होता है ।

सैंट जौन्स राजधानी है ओर मछली व्यवसाय का केन्द्र है ।

अमरीका के संयुक्त राष्ट्र

सामान्य परिचय : प्राकृतिक साधनों की प्रचरता—संयुक्तराष्ट्र संसार में सबसे धनी देश है । इसके मुकाबले का संसार में और कोई धनी देश नहीं है । यहाँ की व्यापारिक महानता निम्नलिखित कारणों से है:—(१) उत्तम जलवायु, (२) प्रचुर प्राकृतिक साधन, (३) कम घनी आबादी तथा (४) यहाँ के निवासियों की जातीय तथा सामाजिक परम्परागत कुशलता । यहाँ के मूल निवासी यूरोप से आए हुए लोग हैं जो अपने साथ ऊँची संस्कृति, सभ्यता तथा व्यापारिक कुशलता भी लाये । यहाँ की जलवायु शारीरिक तथा मानसिक क्रियाशीलता के लिए उत्साह-बर्धक है । यहाँ पर प्राकृतिक सम्पत्ति की प्रचुरता है—विशेषकर खनिज, मछला, वन तथा कृषि साधनों की । भोजन की वस्तुएँ भी आवश्यकता से अधिक होती

हैं। (संयुक्तराष्ट्र में लोहे, कोयले, ताँबे, खनिज तेल तथा कपास की कमी नहीं है।) एक ओर तो यहाँ के प्राकृतिक साधन तथा दूसरी ओर कम घनी आबादी दोनों ही बातों के कारण यहाँ के निवासियों का जीवन-स्तर बहुत ऊँचा हो गया है, फलतः यहाँ के निवासियों को जीवन के लिए संघर्ष की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

स्थिति, विस्तार तथा विकास—संयुक्त राष्ट्र पृथ्वी के थल भाग के ५ प्रतिशत से भी अधिक भाग को घेरे हुए है। इसका क्षेत्रफल यूरोप से कुछ ही कम है। संयुक्तराष्ट्र की स्थिति इतनी अनुकूल है कि इसके पूर्वी भाग में जलवायु, पैदावार और व्यापार की दृष्टि से अमरीका का सर्वोत्तम उपजाऊ मैदान आ जाता है। पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण सभी ओर से समुद्र में प्रवेश करने की सुविधाएँ भी इसे प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त यूरोप से अधिक दूर होने के कारण यहाँ के उद्योग-धन्धे बड़े विकसित हो गए हैं। यूरोपीय युद्ध तथा आन्तरिक स्पर्धा इसके विकास में इसी कारण बाधा नहीं डाल सके। यहाँ के निवासी बहुत दिनों तक यूरोप की घटनाओं से तटस्थ रहे और उनकी नीति यही रही कि "अमरीका अमरीकनों का है।" आजकल अमरीका ने इस नीति को त्याग दिया है और अब अमरीका यूरोपीय राजनैतिक मामलों में प्रधान रूप से भाग ले रहा है।

सरकारी दृष्टिकोण—संयुक्तराष्ट्र की सरकार भी यहाँ के उद्योग-धन्धों को सदैव ही प्रोत्साहित करती रही है। इस सम्बन्ध में रूजवेल्ट की 'नई नीति' (New Deal) का उल्लेख कर देना आवश्यक है। इस नई नीति का उद्देश्य था—अमरीका के प्राकृतिक साधनों को सुरक्षित रखना तथा विकसित करना, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करना, मजदूरों को खाली न रहने देना, कम उम्र के बच्चों से कारखानों में काम लेने और मजदूरों से अधिक परिश्रम लेने की प्रथा का अन्त करना।

हबशी जनता—भिन्न-भिन्न दशाओं में महान् उन्नति प्राप्त कर लेने पर भी संयुक्तराष्ट्र की सरकार अभी तक रंग-भेद की समस्या को नहीं सुलझा सकी है। यहाँ के हबशियों के साथ मनुष्योचित व्यवहार नहीं किया जाता था, मानो वे मनुष्य हैं ही नहीं। उनको उचित शिक्षा, पूरा वेतन तथा वोट देने का भी अधिकार नहीं था। अब उनके साथ कुछ-कुछ अच्छा व्यवहार होने लगा है।

विस्तार तथा आबादी—संयुक्त राष्ट्र का क्षेत्रफल २९,७७,१२८ वर्ग मील है। १९५० की जनगणना के अनुसार यहाँ की आबादी १५ करोड़ थी। १९४० के अनुसार आबादी का औसत ४४ व्यक्ति प्रति वर्ग मील था। हबशियों की आबादी १ करोड़ ३० लाख है। यहाँ की कुल आबादी का दशमांश हबशी लोग हैं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका में आबादी की बढ़ोतरी मानव भूगोल के दृष्टिकोण से विशेष महत्त्वपूर्ण है। सन् १७८९ में यहाँ की आबादी ४० लाख थी, परन्तु सन् १८३० में यह बढ़कर १ करोड़ ३० लाख हो गई और सन् १८६० में ३ करोड़ २० लाख हो गई। सन् १८७० में यहाँ की आबादी फ्रांस से अधिक हो गई और सन् १८८० में जर्मनी से भी आगे बढ़ गई। आज केवल चीन, भारत और रूस की जनसंख्या

ही इससे अधिक है। जनसंख्या में इस बढ़ोतरी के साथ-साथ रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा हो गया है। संयुक्त राष्ट्र में जनसंख्या का औसत घनत्व ५० मनुष्य प्रति वर्ग मील है, जबकि आवादी का औसत घनत्व फ्रांस में १९०, जर्मनी में ४४१, ग्रेट ब्रिटेन में ६८५ और बेलजियम में ७१२ है। संयुक्त राष्ट्र के पूर्वी भाग में करीब १२ करोड़ ७० लाख मनुष्य निवास करते हैं और वहाँ की जनसंख्या का घनत्व १२६ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है।

संयुक्त राष्ट्र में ४८ राज्य सम्मिलित हैं, जिनमें प्रत्येक को समान अधिकार हैं। अब व्यक्तिगत राज्यों के अधिकार कम हो रहे हैं और फेडरल सरकार के अधिकार बढ़ते जा रहे हैं।

खेती की स्थिति—संयुक्तराष्ट्र की खेती की पैदावार संसार भर में सबसे अधिक है। उसकी अधिकतर आवश्यकतायें उसकी खेती की उपज से ही पूरी हो जाती हैं। फिर भी देश को रबर, कहवा, चीनी, केले और तेल बाहर से मँगवाना पड़ता है। कृत्रिम रबर के उत्पादन से रबड़ सम्बन्धी स्थिति कुछ सुधर गई है।

चित्र ६६—संयुक्त राष्ट्र अमरीका की प्रमुख आर्थिक उपज

परन्तु अब खेती की महत्ता कम होती जा रही है। सौ वर्ष पूर्व यहाँ के ८० प्रतिशत मनुष्य खेती पर निर्भर थे परन्तु १९०० में यह संख्या २७ प्रतिशत और १९४४ में केवल २० प्रतिशत ही रह गई थी और आजकल तो केवल १० प्रतिशत मनुष्य ही खेती में लगे हुए हैं।

खेतिहर उत्पादन (१९५२)

(लाख टन)

गेहूँ	३५०
मक्का	८४०

जौ	५०
जई	१८०
चावल	२०
सोयाबीन	८०
आलू	९०
तम्बाकू	१०
कपास	३०
राई	५

संयुक्तराष्ट्र में गेहूँ की पैदावार—देश की मुख्य पैदवाार गेहूँ है। गेहूँ की पैदावार की मुख्य पट्टी में वे देश सम्मिलित हैं जहाँ गर्मियों के आरम्भ में हल्की वृष्टि हो जाती है और पतझड़ की ऋतु गर्म रहती है। गेहूँ अधिकतर मोन्टाना, वाशिंगटन, इदाहो, नेब्रास्का, टैक्सास, ओक्लाहामा, कंसास, उत्तरी डाकोटा तथा इलिनाय में उत्पन्न होता है। कैलिफोर्निया की घाटी की भूमध्य सागरीय जलवायु भी गेहूँ की उपज के अनुकूल है। परन्तु यूरोप, अर्जेन्टाइना और आस्ट्रेलिया में गेहूँ की पैदावार होने के कारण यहाँ की पैदावार घटने की आशा है। देश की ५८० एकड़ भूमि पर गेहूँ की खेती जाती है। सबसे उत्पादक पट्टी वह है जहाँ गर्मी के शुरू में हल्की वर्षा हो जाती है और पतझड़ का मौसम गर्म होता है। ये दशाएँ मानटाना, वाशिंगटन, इडाहो, नेब्रास्का, टैक्सास, ओकलाहामा, कैन्सास, उत्तरी डकोटा और इलीनाय में पाई जाती हैं। भूमध्यसागरीय जलवायु के कारण कैलीफोर्निया की घाटी भी गेहूँ उत्पादन के लिए बहुत उपयुक्त है। संयुक्त राष्ट्र में गेहूँ का सबसे महत्त्वपूर्ण उत्पादक क्षेत्र कैन्सास राज्य है।

संयुक्तराष्ट्र में मक्का की उपज—संयुक्तराष्ट्र की दूसरी मुख्य उपज मक्का की है। मक्का की खेती गेहूँ से भी अधिक भूमि पर की जाती है, परन्तु मक्का की व्यापारिक महत्ता नहीं है। अधिकतर मक्का मनुष्यों और पशुओं के भोजन में ही काम आ जाती है और इसका निर्यात नहीं होता। मक्का के लिए अधिक गर्म और तर ग्रीष्म ऋतु चाहिए अतः मक्का का पैदावार गेहूँ की पट्टी के दक्षिण और पूर्व में होती है। मिसिसिपी की घाटी का मध्य भाग इस उपज का प्रधान केन्द्र है। मक्का की पैदावार आयोवा, इलिनाय, इंडियाना, मिसौरी और पूर्वी कैंसास में होती है और सेंट लुइस, कैंसास नगर तथा शिकागो मक्का की मुख्य मंडियाँ हैं।

जई, कपास, तम्बाकू तथा अन्य उपज की वस्तुएँ—संयुक्तराष्ट्र की तीसरी मुख्य पैदावार की वस्तु जई है जिससे सुबह के नाश्ते की चीजें बनती हैं। मक्का की पट्टी के दक्षिण में कपास की खेती होती है। उपजाऊ काली मिट्टी के कारण पूर्वी टैक्सास कपास की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त अरकंसास, अलबामा, मिसीसिपी, जार्जिया तथा कैरोलिना में भी कपास पैदा होती है। जार्जिया तथा कैरोलिना में 'समुद्र-द्वीपीय' कपास उगाई जाती है। **दुनिया की ६० प्र० श० कपास संयुक्तराष्ट्र में दा होती है और पश्चिमी यूरोप के देश अपनी ८० प्र० श०**

आवश्यकता के लिए संयुक्तराष्ट्र की कपास पर निर्भर रहते हैं। बिनौला भी एक प्रमुख गौण उपज है। इससे तेल और जानवरों के लिए खली बनाई जाती है। हाल में सिंचाई की सहायता से बिनौले की खेती न्यू मैक्सिको, एरीजोना और कैलीफोर्निया में की जाने लगी है। तम्बाकू, केन्टकी, वर्जीनिया, उत्तरी तथा दक्षिणी कैरोलिना तथा टनीसी में उत्पन्न होता है। रिचमंड तम्बाकू निर्यात के लिए प्रमुख बन्दरगाह है। संयुक्तराष्ट्र में संसार का ४० प्र० श० तम्बाकू पैदा होता है। चावल और गन्ने की पैदावार भी होती है।

खनिज पदार्थ—संयुक्त राष्ट्र खनिज पदार्थों में भी संसार में सबसे बढ़कर है। यहाँ पर ऐंथ्रसाइट और बिटयूमिनस कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, सीमेन्ट, नमक, लोहा, चाँदी, सोना, ताँबा, जस्ता, बाक्साइट और सीसा आदि प्रमुख खनिज पदार्थों की प्रचुरता ह।

खनिज उत्पादन (१९५२)

(लाख टन)

कोयला	५१७०
लिगनाइट	३०
पेट्रोलियम	३१४०
मैंगनीज	५
तांबा	८
लोहा	५००
सीसा	३
जस्ता	६
सुरमा	२०
बाक्साइट	१८
सोना (लाख ट्राय औंस)	१७
चाँदी (,, ,,)	४००

संयुक्तराष्ट्र में सारे पश्चिमी यूरोप से अधिक कोयला निकलता संयुक्तराष्ट्र में कोयले के पाँच प्रमुख क्षेत्र हैं—

प्रधान कोयला क्षेत्र—(अ) अपेलेशियन कोयला क्षेत्र—यहाँ पर पैं वानिया से अलबामा तक विट्यूमिनस कोयले की खानें फैली हुई हैं। संयुक्त का तीन-चौथाई उत्तम कोयला यहीं से निकलता है।

(ब) दूसरा प्रधान कोयला क्षेत्र पूर्वी भीतरी प्रदेश है। इस भ इंडियाना, केन्टकी तथा इलिनाय सम्मिलित हैं।

(स) पश्चिमी भीतरी कोयला क्षेत्र आयोवा से कन्सास और मिसौरी होता हुआ ओक्लाहामा तक फैला हुआ है।

(द) खाड़ी कोयला क्षेत्र—दक्षिणी अलबामा से टैक्सास तक फैला यहाँ लिगनाइट कोयला निकलता है।

(क) पश्चिमी कोयला क्षेत्र—पश्चिमी पहाड़ों में बिखरे हुए हैं। इस भाग में निम्न श्रेणी का विट्यूमिनस तथा लिगनाइट कोयला प्राप्त होता है। औद्योगिक क्षेत्रों और समुद्र से दूर होने के कारण यहाँ अधिक प्रगति नहीं हुई। यहाँ की आबादी बिखरी और देश पहाड़ी है। प्रशान्त महासागर तट पर कोयले की बड़ी-बड़ी खानों का अभाव है।

खनिज तेल (पैट्रोलियम)—संयुक्तराष्ट्र में संसार का ६० प्र० श० पैट्रोलियम निकलता है। यहाँ पैट्रोलियम के चार प्रमुख क्षेत्र हैं—

(अ) सर्वप्रधान तेल क्षेत्र कन्सास से ओक्लाहामा तथा उत्तरी टक्सास में होता हुआ लूशियाना में चला गया है। टैक्सास और ओक्लाहामा में बहुत अधिक तेल निकलता है।

(ब) अपेलेशियन क्षेत्र न्यूयार्क से केन्टकी तक फैला है। इसका उत्पादन अब घट रहा है।

(स) ओहियो—इन्डियाना तथा इलिनाय कभी तेल के बड़े क्षेत्र थे। अब अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं।

(द) पश्चिमी क्षेत्र में कैलिफोर्निया, कोलोरेडो, मोन्टाना तथा व्योमिंग शामिल हैं। कैलिफोर्निया में टैक्सास के ही बराबर तेल निकलता है।

संयुक्तराष्ट्र में वनस्पति अवशेषांश से बने ईंधन का उपयोग (१९५२)

(प्रतिशत)

खनिज तेल	४० प्र० श०
कोयला	३३ प्र० श०
प्राकृतिक गैस	२० प्र० श०
जल-विद्युत्	५ प्र० श०

ताँबा तथा जस्ता—संयुक्तराष्ट्र की तीसरी नम्बर की धातु है। यह अधिकतर राकी पहाड़ में पाया जाता है। इसकी प्रमुख खानें रेगरिजोना, मोन्टाना तथा न्यू मैक्सिको में हैं। सन् १९४९ में ७५३,००० टन ताँबा निकाला गया। जस्ता, पिसौरी में तथा कन्सास, ओक्लाहामा, मोन्टाना, न्यू मैक्सिको तथा विन्सकौंसिन में निकलता है। सन् १९४९ में उत्पादन की मात्रा ६ लाख टन थी।

सोना, चांदी तथा लोहा—सोने की खानें, कैलिफोर्निया, कोलेरेडो, आरिजोना, न्यू मैक्सिको, यूटाह और नेवादा में है। चाँदी की खानें अरिजोना, नेवादा, कोलोरेडो और यूटाह में हैं। संसार की एक-चौथाई चाँदी तथा नवाँ भाग सोना संयुक्तराष्ट्र में मिलता है। ये दोनों धातुएँ पास-पास मिलती हैं। संयुक्तराष्ट्र में सबसे अधिक सोना दक्षिणी डकोटा के ब्लैकहिल प्रांत में निकलता है। ये खानें सन् १८७६ में खोज कर निकाली गईं। कैलिफोर्निया को 'सुवर्ण-प्रान्त' कहते हैं। यहाँ पर नेवादा के पश्चिमी ढालों पर सोने की बड़ी खान हैं। कैलिफोर्निया में सोने की खानों का पता सबसे पहले सन् १८४८ में लगा। सन् १९५० में उत्पादन २१ लाख ट्राय औंस था। लोहे की खानें मिनेसोटा, विस-

कौंसिन और मिशिगन में हैं। शिकागो, बफैलो और पिट्सबर्ग लोहे के काम के प्रधान केन्द्र हैं। सन् '१९४९ में संयुक्तराष्ट्र में ८४० लाख टन कच्चा लोहा निकाला गया।

संयुक्तराष्ट्र संसार भर को अल्यूमिनियम देता है। यह धातु अधिकतर अपेलेशियन पर्वतमाला में मिलती है। संयुक्तराष्ट्र से दुनिया भर के आधे ताँबे, आधे सीसे, आधे जस्ते, चौथाई चाँदी और चौथाई अल्यूमिनियम की पूर्ति होती है और सोने को छोड़कर ये सभी धातुएँ यहाँ पर दुनिया भर से अधिक निकलती हैं। परंतु यहाँ पर तेज मजदूरी, यातायात का अधिक व्यय तथा खानों के औद्योगिक क्षेत्रों से दूर होने की कठिनाइयाँ भी हैं।

संयुक्तराष्ट्र में मैंगनीज, टीन, अभ्रक और क्रोमियम की बड़ी कमी है। मैंगनीज की खानें इधर-उधर छिटकी हुई हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण खानें मोन्टाना में हैं। चूँकि संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने पिछले ५० वर्षों में क्रोमियम के विश्वव्यापी उत्पादन का आधे से अधिक भाग उपभोग कर डाला है, इसलिए देश में क्रोमियम की कमी उसके लिए एक समस्या बन गई है। पिछले दस वर्षों में संसार के कुल उत्पादन का ५५ प्रतिशत क्रोमियम संयुक्तराष्ट्र द्वारा उपभोग किया गया। पिछले महायुद्ध के बाद से क्रोमाइट का उपभोग इस प्रकार रहा है—धातु गलाने में ४७ प्रतिशत, विद्युत में ३७ प्रतिशत और रासायनिक उद्योग में १६ प्रतिशत। इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र में क्रोमाइट का उपभोग इस्पात उद्योग से सम्बधित है। चूँकि इस्पात का उत्पादन बराबर बढ़ रहा है इसलिए क्रोमाइट की माँग बराबर बढ़ती रहेगी।

यद्यपि संयुक्त राष्ट्र में मोलीबिडनम का विस्तृत भंडार पाया जाता है परंतु यहाँ निकल, टंगस्टन और सुरमा का अभाव है। ये धातुएँ थोड़ी बहुत मात्रा में विभिन्न राज्यों में बिखरी पाई जाती हैं परन्तु उनमें से बहुत कम आर्थिक महत्व की हैं और इनको चालू रखने के लिए आयात कर द्वारा सरकारी संरक्षण की आवश्यकता होती है।

खनिज पदार्थों की वर्तमान स्थिति—कच्ची धातुओं की अब यहाँ कमी होती जा रही है, कारण यह है कि पिछले दो वर्षों में इन धातुओं का बहुत अधिक उपभोग हुआ है। अनुमान है कि यहाँ के ताँबे की खानें १० वर्ष में समाप्त हो जायेंगी और अब भी यहाँ की आवश्यकता का आधा भाग ताँबा बाहर से मँगाया जाता है। यहाँ की सुरमे, एस्बस्टोस, अभ्रक, मैंगनीज तथा टंगस्टन की ३० प्रतिशत आवश्यकता पूर्ति बाहर से मँगाकर की जाती है। ५० प्रतिशत बाक्साइट तथा सारा का सारा क्रोमाइट, प्लेटिनम, निकल और टीन भी बाहर से मँगाना पड़ता है।

जलविद्युत—संयुक्तराष्ट्र के उद्योगों के लिए जलविद्युत बड़ी महत्त्वपूर्ण शक्ति है। देश में उपयुक्त बिजली शक्ति का २६ प्रतिशत जल से प्राप्त होता है और ७४ प्रतिशत कोयले तेल और गैस से। दक्षिणी अपलेशिया की सभी नदियाँ पीडमोन्ट पठार पर उतरते समय प्रपात बनाती हैं और 'फाल लाइन' पर स्थित सभी नगरों के कारखानों की मशीनें जलविद्युत से चलती हैं। मसीना के अल्यूमिनियम-

के कारखाने और मिनियापोलिस की आटे की चक्कियाँ भी जलशक्ति से ही चलती हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जलविद्युत के उत्पादन के केन्द्र व उपभोग के प्रदेश निम्नलिखित हैं—(१) नियागरा जलप्रपात; (२) उत्तरी व उत्तरी-पूर्वी प्रदेश जो मेन से मेनीसोटा तक फैला हुआ है, यहाँ पर अपलेशियन से गिरने वाली छोटी-छोटी नदियों से बिजली तैयार की जाती है; (३) अपलेशियन पर्वत प्रदेश पेनसलवेनिया से अलाबामा तक; (४) मिसिसिपी पर क्यूकक स्थान पर बाँध बना कर १,२०,००० हय शक्ति बिजली पैदा की जाती है; (५) कैलीफोर्निया की घाटी, यहाँ सान लोकन नदी से खूब बिजली उत्पन्न की जाती है; (६) कोलैरैडो नदी की घाटी जिसमें जल विद्युत के लिए बड़ी सम्भावनाएँ हैं और (७) सबसे महत्वपूर्ण है टेनेसी नदी का बेसिन जिसके अन्तर्गत ४१,००० वर्गमील का प्रदेश सम्मिलित है और जिसके द्वारा उत्पन्न जलविद्युत टेनीसी, केन्टकी, मिसिसिपी, अलाबामा, उत्तरी कैरोलीना, जार्जिया और वरजीनिया राज्यों द्वारा उपभोग की जाती है। टी. वी. ए. बहुधंधा योजना है जो सन् १९३३ के एक केन्द्रीय विधान द्वारा चालू की गई। इसका मुख्य ध्येय तो बाढ़ को रोकना और नाव्यता प्रदान करना है। इस पर २७ बाँध बना कर नदी के जल को रोका गया है। इन जलाशयों के चारों ओर जंगल लगा दिये गये हैं और इससे ६३० मील लम्बी नहर निकाली गई है। जलविद्युत का उत्पादन भी बढ़ रहा है। सन् १९३३ में कुल १५,००० किलोवाट हय-शक्ति बिजली तैयार की गई थी, परन्तु सन् १९५० में १७५,१४० लाख हयशक्ति बिजली तैयार की गई।

उद्योग-धंधे

(संयुक्त राष्ट्र संसार का सबसे बड़ा औद्योगिक राष्ट्र है। देश के २५ प्र. श. व्यक्ति उद्योग-धंधों में लगे हुए हैं।)

उद्योग-धंधों में लगे व्यक्तियों की संख्या (१९५३)

यातायात	१,५०१,९००
मशीन उद्योग	१,२७०,४००
वस्त्र उद्योग	१,१०१,७००
धातु उद्योग	१,१३२,९००
भोज्य पदार्थ	१,१७१,४००
काठ का सामान	३१५,३००
रसायन और प्लास्टिक	५११,४००
पत्थर, मिट्टी और शीशे की वस्तुएँ	४५५,९००

लोहा तथा स्टील उद्योग—(**संयुक्त राष्ट्र का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग लोहे तथा स्टील का उत्पादन है। इस उद्योग का सब से अधिक विकास पश्चिमी पेंसिलवानिया तथा पूर्वी ओहियो में है।** इस प्रदेश में कोयले के बड़े विशाल क्षेत्र हैं—तैयार माल की खपत की मंडी है और सुपीरियर झील प्रान्त से लोहा मँगाने में बहुत ही कम खर्च होता है। इस प्रान्त से कच्चा लोहा झील के बन्दरगाहों को भेज दिया जाता

है और वहाँ से रेलों के द्वारा पिट्सवर्ग तथा शिकागो इत्यादि औद्योगिक केन्द्रों को भेज दिया जाता है। इस प्रकार इन प्रदेशों को लोहे और स्टील के उद्योग की सभी सुविधाएं प्राप्त हैं। इस उद्योग का दूसरा प्रान्त अलवामा है परन्तु यहाँ पर कोयले, लोहे और चूने की वहुतायत होते हुए भी खपत के वाजारों की वड़ी कमी है क्योंकि यह प्रदेश बन्दरगाहों से बहुत दूर है। इस प्रान्त में संसार के सभी देशों से सस्ता स्टील बनता है और बर्मिघम इसका प्रधान केन्द्र है।

इस्पात व्यवसाय—अमरीका का सबसे बड़ा व्यवसाय है। अमेरिकी लोग जब किसी बड़े व्यवसाय के केन्द्र की चर्चा करते हुये उसकी विशालता प्रकट करना चाहते हैं, तब वे उसे 'पिट्सवर्ग' कहते हैं। इसका कारण यह है कि पेन्सिल्वेनिया में पिट्सवर्ग स्थान में ही लोहे और इस्पात का निर्माण वढ़ते-वढ़ते अमरीका का सब से बड़ा उद्योग बन गया है। इस उद्योग में अभी पिछले कुछ दिनों से काफी काया-पलट हो गई है। स्वसंचलन विधि से इस उद्योग में महान क्रांति उत्पन्न हो गई है।

अमेरिका के इस्पात व्यवसाय की सभी शाखाओं में बड़ी उन्नति हो चुकी है। १९०० में अमेरिका में १ करोड़ १४ लाख १० हजार टन इस्पात तैयार हुआ था। इसके विपरीत सन् १९५४ में ११ करोड़ १० लाख टन इस्पात तैयार हुआ। इसी बीच में प्रति व्यक्ति पीछे इस्पात के वार्षिक उत्पादन की मात्रा ३०० पौंड से बढ़कर १४०० पौंड होगई है। इस उद्योग में २ लाख ६० हजार व्यक्ति काम करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों में वहाँ की आवश्यकतानुसार विशेष प्रकार की लोहे और स्टील की वस्तुएँ बनाई जाती हैं। कृषि-प्रधान प्रान्तों में खेती की मशीनें बनती हैं और मध्य पश्चिम के लिए **शिकागो** मशीनों का मुख्य केन्द्र है। खेती की मशीनों का दूसरा प्रधान केन्द्र **मिलवाकी** है। न्यू इंग्लैण्ड के वस्त्र उद्योग प्रदेश में कपड़ा बुनने की मशीनों का प्रधान केन्द्र **वारसस्टर** है। जलशक्ति की सुविधा के कारण बिजली की मशीनों और इंजनों का मुख्य केन्द्र **न्यूयार्क** है। फिलाडेलफिया, शिकागो, पिट्सवर्ग और सैन्ट लुइस रेल-केन्द्रों में रेलों के इंजन बनते हैं और रेलों के कारखाने हैं। एटलांटिक, दक्षिणी पेसिफिक और झीलों के प्रान्त के बन्दरगाहों में जहाज बनाये जाते हैं।

अमेरिका का मोटर उद्योग भी असाधारण है। देश में जितना फौलाद तैयार होता है उसका २० प्रतिशत से अधिक मोटरकारों, ट्रकों और बसों में खप जाता है। रबड़ उद्योग प्रतिवर्ष ९ करोड़ टायर बनाता है और इस कारण अमेरिका का मोटर व्यवसाय संसार में सबसे अधिक रबड़ खपाने वाला व्यवसाय बन गया है। मोटरें प्रतिवर्ष १०० करोड़ बैरल से अधिक पैट्रोल और तेल, करोड़ों गज कपड़ा, टनों काँच, प्लास्टिक, रंग, वार्निश और अन्य समान खपा लेती हैं। इस प्रकार इस उद्योग का देश की आर्थिक अवस्था पर अप्रत्यक्ष परन्तु असाधारण प्रभाव पड़ता है। इसके महत्व का भास तो इसी बात से हो जाता है कि अमे-

रिका में प्रति २४ घंटों में ३१ हजार मोटर गाड़ियाँ तैयार की जाती हैं और प्रत्येक ४ अमरीकी पर १ मोटर गाड़ी का औसत पड़ता है। मोटरगाड़ियों के बनाने का संसार भर में सबसे महान् केन्द्र **डिट्रोइट** (Detroit) है।

अमरीका की पहली मोटरगाड़ी सन् १८९३ में चार्ल्स और फ्रान्कलिन दरया नामक दो भाइयों ने तैयार की। परन्तु मोटर गाड़ी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय हेनरी फोर्ड को है जिन्होंने इस उद्योग को सुचारु रूप प्रदान किया। इन्होंने सन् १९०३ में फोर्ड मोटर कम्पनी की स्थापना की और शीघ्र ही सस्ती 'टी मोडल' गाड़ी जनता के सामने प्रस्तुत करदी।

सन् १९५२ में संयुक्तराष्ट्र के मोटर उद्योग ने ४३ लाख मोटरगाड़ियाँ और १२ लाख ट्रकें तैयार कीं।

फलों के प्रान्तों में टीन की चादरें अधिकतर बनाई जाती हैं। देश में मजदूरी अधिक होने पर भी औद्योगिक मशीनों, रेल के इंजन, बिजली की मशीनों, मोटर गाड़ियों, हवाई जहाज, ट्रेक्टर आदि को संयुक्त राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा कम दामों पर बेच सकता है।

संयुक्तराष्ट्र का वस्त्र-उद्योग—संयुक्तराष्ट्र अमरीका का दूसरा प्रधान उद्योग वस्त्र-निर्माण उद्योग है जिसमें सूती वस्त्र उद्योग सबसे प्रधान है। सूती वस्त्रों का प्रधान केन्द्र न्यूइंग्लैंड की रियासतों में है। इन रियासतों में तर जलवायु, जलशक्ति की प्रचुरता, दक्षिण में सस्ती कपास की प्राप्ति, पैंसिलवानिया का सस्ता कोयला तथा देश की भीतरी मण्डियों में सहज प्रवेश की सुविधाएँ हैं। फिलाडेल्फिया भी सूती वस्त्रों का केन्द्र है। दक्षिण की अलबामा, जार्जिया, केरोलिना आदि रियासतों में कुछ ही वर्षों से चीन तथा कनाडा की मण्डियों के लिए मोटा कपड़ा बनने लगा है।

संयुक्तराष्ट्र में ऊनी वस्त्र-उद्योग—उत्तर-पूर्व में ऊनी वस्त्र उद्योग में बड़ी उन्नति हुई है। फिलाडेलफिया इसका प्रधान केन्द्र है। आस्ट्रेलिया और अर्जेन्टाइना से ऊन आती है। **बोस्टन** ऊन की सबसे बड़ी मंडी है। यहाँ से ऊन न्यूइंग्लैंड की रियासतों को भेज दी जाती है। संयुक्तराष्ट्र रेशमी वस्त्रों के लिए भी प्रसिद्ध है। न्यूयार्क, न्यूजर्सी तथा पैंसिलवानिया इसके प्रधान केन्द्र हैं। वस्त्र निर्माण उद्योग में संयुक्त राष्ट्र, जापान, चीन व भारत के साथ स्पर्धा नहीं कर पाता। इस उद्योग में करीब ११ लाख लोग लगे हुए हैं।

अन्य उद्योग—लकड़ी तथा जलशक्ति की अधिकता के कारण न्यूइंग्लैंड की रियासतों में कागज तथा काष्ठमंड भी बनता है। मिनियापोलिस आटे की चक्कियों का सबसे महान् केन्द्र है। इनके अतिरिक्त मेन और न्यूयार्क में चीनी शोधन तथा डिब्बों में मांस भरने का धन्धा होता है। **केलिफोर्निया** में फलों और बाल्टीमोर में मछलियों को डिब्बों में भरने का धन्धा होता है। संयुक्तराष्ट्र के महाद्वीपीय भाग में प्राकृतिक रबड़ बिल्कुल भी नहीं होता। इसलिए कच्चा रबड़ इसे दक्षिणी-पूर्वी एशिया और दक्षिणी अमरीकी देशों से आयात करना पड़ता है। प्रतिवर्ष यहाँ १५

लाख टन रबड़ बाहर से आयात की जाती है। परन्तु दूसरे महायुद्ध के दौरान में रबड़ की कमी का अनुभव करने पर यहाँ पर कृत्रिम रबड़ का निर्माण होने लगा है और हाल के दिनों में यह उद्योग बहुत अधिक उन्नति कर गया है। सन् १९५२ में कृत्रिम रबड़ का कुल उत्पादन ७९९,२६६ टन था और इससे संयुक्तराष्ट्र की रबड़ माँग का ६५·२ प्रतिशत अंश पूरा किया जा सका। कृत्रिम रबड़ आजकल मोटर व मशीनों के हिस्से के बनाने में प्रयोग किया जाता है। इससे जूते, कपड़े, खिलौने तथा बिजली का सामान भी बनाया जाता है।

यातायात व्यवस्था—संयुक्तराष्ट्र की रेलें—संयुक्तराष्ट्र में यातायात व्यवस्था में भी उल्लेखनीय प्रगति हुई है। संयुक्तराष्ट्र में संसार के सभी देशों से अधिक लम्बी रेलें हैं। पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण प्रदेशों को मिलाने और भीतरी प्रदेशों का समुद्र तट से सम्बन्ध जोड़ने के लिए यहाँ पर रेलों का जाल-सा फैला हुआ है। १९५२ में यहाँ २,२३५,००० मील लम्बी रेलें थीं जो संसार की २९ प्र० श० से भी अधिक हैं। यहाँ पर रेलों के तीन प्रादेशिक समूह हैं—उत्तरी, दक्षिणी तथा पश्चिमी समूह, जिन पर क्रमशः ४५ प्र० श०, १८ प्र० श० तथा ३५ प्र० श० आवागमन होता है। देश को पूर्व-पश्चिम पार करने वाली रेलें बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। इनके द्वारा पैसिफिक की रियासतों और मध्य के मैदानों की उपज पूर्वी औद्योगिक प्रदेशों में पहुँचाई जाती है। सन् १९५२ में विभिन्न रेलें ३४,०४५,०००,००० यात्री मील और ६१७,९०२,०००,००० टन मील माल इधर से उधर ले गई। ये रेलमार्ग कम्पनियों के अधिकार में है पर इन पर सरकारी नियन्त्रण है। प्रमुख रेलें निम्नलिखित हैं :—

१. **नार्दर्न पेसिफिक रेल**—न्यूयार्क से बफैलो होती हुई शिकागो जाती है। यहाँ से यह रेल मिलवाकी तथा सैंट पाल होती हुई पेसिफिक तट स्थित सियाटिल नगर तक जाती है।

२. **यूनियन पेसिफिक रेल**—शिकागो से राकी पर्वत को पार कर सैन फ्रांसिस्को और वहाँ से लॉस ऐंजिलीस तक जाती है। न्यू आरलियन्स देश के आर पार जाने वाली रेलों का प्रधान केन्द्र है।

३. **सदर्न पेसिफिक रेल**—न्यू आरलियन्स से लॉस ऐंजिलीस तक जाती है। रेल की पटरियों के बीच सामान्यतः ४ फीट ८½ इंच का अन्तर रहता है।

भीतरी प्राकृतिक जल-मार्ग—देश के भीतर महान् झीलें तथा मिसिसिपी, मिसौरी मार्ग यातायात के प्राकृतिक साधन हैं।

महान् झीलों का मार्ग—महान् झीलें यद्यपि अनाज कोयला, लोहा और तैयार माल को पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व लाने-ले जाने के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु विभिन्न तल पर स्थित होने के कारण इनको एक-दूसरी से मिलाने के लिए नहरों की आवश्यकता पड़ती है। इन नहरों में लाक्स (Locks) के कारण बड़े-बड़े जहाज धुर अन्त तक नहीं जा सकते। सुपीरियर और ह्यूरन झीलों को सूनहर मिलाती हैं। इन नहरों से आवागमन इतना अधिक है कि पनामा और स्वेज

दोनों को मिलाकर भी कम रहता है। फिर भी शीतोष्ण कटिबन्ध के मध्य अपनी स्थिति के कारण और इनका प्राकृतिक निकास पूर्व की ओर होने के कारण ये झीलें बड़ी ही महत्त्वपूर्ण हैं। यूरोप और अमरीका के मध्य होने वाला बहुत-सा व्यापार इन्हीं में को जाता है।

मिसौरी-मिस्सिसिपी जल-मार्ग—मिसौरी-मिस्सिसिपी के जलमार्ग द्वारा जहाज मोन्टाना राज्य स्थित महान् प्रपात तक जा सकते हैं। परन्तु यह मार्ग अधिक लाभकारी सिद्ध नहीं हो सका। कीचड़दार किनारों के कारण जहाजों के आने-जाने में कठिनाई पड़ती है। यह मार्ग तिरछा-बाँका तो है, साथ ही उत्तर-दक्षिण दिशा में मैक्सिको की खाड़ी पर समाप्त होता है—जो प्रसिद्ध व्यापारिक मार्गों के बाहर पड़ती है। इसीलिए इस मार्ग पर अन्तर्देशीय व्यापार ही अधिक होता है, वैदेशिक व्यापार कम।

हवाई यातायात—संयुक्त राष्ट्र में हवाई यातायात अन्य सभी देशों के योग से भी अधिक होता है। हवाई यातायात की यहाँ पर भी सभी सुविधाएँ हैं। यहाँ के हवाई मार्गों का सम्बन्ध कनाडा तथा दक्षिणी अफ्रीका के हवाई मार्गों से है और यहाँ से अटलाँटिक तथा पेसिफिक के पार भी हवाई जहाज आते-जाते हैं।

देश में ४४ वायुमार्ग हैं जिन पर लगभग १२१८ वायुयान उड़ान करते हैं। सन् १९५२ में स्थिति इस प्रकार थी—

यात्रियों की संख्या	२५,०१९,७४२
माल का भार (टन)	११९,५०२,२४१
डाक की मात्रा (टन)	६९,३३३,१४०

देश में ५४७९ असैनिक हवाई अड्डे हैं।

आयात तथा निर्यात की वस्तुएँ—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में कच्चा माल या विलास सामग्री का ही आयात अधिकतर होता है। यहाँ जापान से चाय; भारत से चाय, चमड़ा तथा जूट, मलाया प्रायद्वीप से रबर तथा टीन, फिलीपाइन से चीनी और पटुआ, चीन से लोभिया और रेशम, आस्ट्रेलिया से ऊन तथा कनाडा से कागज और निकिल आदि वस्तुएँ आती हैं। यहाँ से रुई, खनिज तेल तथा तम्बाकू का अधिकतर निर्यात होता है। निर्यात की अन्य वस्तुओं में लोहे और स्टील की वस्तुएँ, मशीनें और मोटरकार और हवाई जहाज सम्मिलित हैं।

यूरोप तथा संयुक्त राष्ट्र के बीच का व्यापार अधिकतर एकपक्षीय ही है। संयुक्त राष्ट्र यूरोप को कपास, अनाज, तेल, मांस तथा तम्बाकू भेजता है। यूरोप से केवल विलास सामग्री की वस्तुएँ ही संयुक्त राष्ट्र में आती हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका का व्यापार महाद्वीपों के अनुसार—१९५२
(हजार डालर)

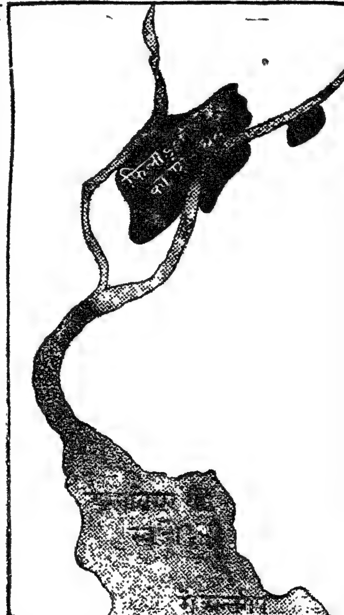
	आयात	निर्यात
उत्तरी अमरीका	३,७३९,११९	४,२९०,६६४
यूरोप	२,०२७,७४४	३,३४१,६८१
दक्षिणी अमरीका	२,२८३,३०३	२,०६८,५७८
एशिया	१,८१३,८१३	२,११३,११२
अफ्रीका	६०६,५९७	५६८,४२३
आस्ट्रेलिया	२४२,९४१	२२४,२५३

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—न्यूयार्क—संसार का दूसरे नम्बर का नगर और तीसरे नम्बर का महान् बन्दरगाह है। इसकी महत्ता के कई कारण हैं। इसका पोताश्रय प्राकृतिक है, यूरोप से निकटतम है। यहाँ से भीतरी नगरों मे आने जाने की सहज सुविधा है। इसकी स्थिति कच्चे माल के तथा औद्योगिक प्रदेशों के बीच में है।

बाल्टीमोर—एक महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह है और चीपसेक खाड़ी की एक शाखा पर पटाप्सको नदी के उत्तरी किनारे पर बसा है। यह फिलाडेलफिया से ९० मील दक्षिण-पश्चिम में है। यह रोटी के अन्न के व्यापार का प्रधान केन्द्र है। आस-पास के इलाके से जो सामान रेल द्वारा यहाँ लाया जाता है वह यहां से जहाजों द्वारा बाहर भेज दिया जाता है। निर्यात की अन्य वस्तुयें तम्बाकू, पशु, कपास, लकड़ी और आयस्टर मछली हैं। यहाँ पर बहुत-से शिल्प-उद्योग भी पाये जाते हैं जिनमें सूती और ऊनी वस्त्र, तम्बाकू और सिगार तथा लोहा व इस्पात प्रधान हैं। यहाँ पर आयस्टर मछली को डिब्बों में बन्द करके बाहर भी भेजा जाता है।

शिकागो—यह नगर अनाज तथा पशुओं की बड़ी मंडी है। शिकागो सबसे बड़ा रेलों का केन्द्र है और झीलों के मार्ग के सिरे पर स्थित है। देश के बीचोंबीच में स्थिति के कारण यहाँ पर आवागमन की सहज सुविधाएं हैं। इसके आस-पास का क्षेत्र बड़ा उपजाऊ है।

फिलाडेलफिया—आदर्श प्राकृतिक पोताश्रय है। कच्चे माल और कोयला-क्षेत्र के



चित्र ६७ फिलाडेलफिया की स्थिति

समीप होने के कारण ऊनी माल तथा अन्य उद्योगों का विशाल केन्द्र बन गया है।

सेंट लुइ—यह नगर प्रेरीज के मैदान में झीलों और मैक्सिको की खाड़ी के बीच में स्थित है। इसके आस-पास अनाज, पशु, कपास, तथा तम्बाकू का प्रदेश है। यह नगर रेलों का केन्द्र तथा औद्योगिक नगर है।

पिट्सबर्ग—संसार भर में सबसे बड़ा लोहे के उत्पादन का केन्द्र है। इसके समीप ही लोहे, कोयले और चूने के पत्थर की बहुतायत है। इसके अतिरिक्त यह नाव्य नदियों के संगम पर स्थित है। प्राकृतिक गैस की सुविधा के कारण शीशे के कारखानों के लिए बड़ा ही उपयुक्त स्थान है।

बोस्टन—एटलांटिक तट पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। उत्तर-पूर्वी औद्योगिक रियासतों के लिए माल मँगाने तथा वहाँ की वस्तुओं को इधर-उधर वितरण करने के लिए यह एक महान् केन्द्र है।

गालवैस्टन—गालवैस्टन की खाड़ी के मुहाने पर स्थित है। दक्षिणी पश्चिमी रियासतों का व्यापार अधिकतर इसी नगर के द्वारा होता है। संसार भर में सबसे बड़ा कपास का बन्दरगाह है। व्यापार की दृष्टि से यह संयुक्त राष्ट्र में केवल न्यूयार्क से ही दूसरे नम्बर पर है।

सैनफ्रांसिस्को—पैसिफिक तट पर केवल यही एक प्राकृतिक पोताश्रय है। कैलिफोर्निया की घाटी की उपज के निर्यात का केवल एक यही बन्दरगाह है। पनामा नहर के खुल जाने से इसकी महत्ता और भी बढ़ गई है।

कंसास—पशुओं की बड़ी मंडी है। यह नगर मक्का और कपास के क्षेत्रों के बीच स्थित है। यहाँ पर मांस और चमड़ा रँगने का व्यवसाय भी बहुत होता है।

न्यू आरलियन्स—संसार भर में गेहूँ और कपास के निर्यात का सबसे महान् केन्द्र है।

मेक्सिको

स्थिति और विस्तार—मैक्सिको की भौगोलिक स्थिति व्यापार के लिए बड़ी ही उपयुक्त है। इसके एक ओर अटलांटिक और दूसरी ओर पैसिफिक महासागर है और संसार का सबसे प्रधान औद्योगिक देश संयुक्त राष्ट्र अमरीका इसके बिलकुल समीप है। यहाँ की सरकार निर्बल है और इसी कारण यहाँ पर राजनैतिक क्रान्तियाँ और लूट-मार बहुधा होती रहती है। यदि ये राजनैतिक और सामाजिक दोष न होते तो यहाँ का व्यापार और उद्योग-धन्धे बहुत ही चमक उठते। यहाँ का क्षेत्रफल ७,६३,९४४ वर्ग मील तथा १९५१ के अनुसार जनसंख्या २ करोड़ ५७ लाख थी।

जलवायु तथा उपज की दशा—मैक्सिको का लगभग आधा भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में और आधा उष्ण कटिबंध में है, इसलिए इनमें दोनों ही प्रकार की जलवायु पाई जाती है। जलवायु के कारण वनस्पति भी कई प्रकार की होती है। यहाँ पर लगभग सभी प्रकार की वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, परन्तु यहाँ की १० प्र

भूमि पर ही खेती हो सकती है । अधिकतर भूमि पर खेती का प्रवन्ध भी अच्छा नहीं है । यदि आधुनिक ढंग से खेती की जाय तो यहाँ पर कई गुनी पदावार वढ़ सकती है । यहाँ की मुख्य उपज मक्का तथा कहवा हैं । उत्तर के घास के मैदानों में सीसल नामी पटुवे की भी व्यापक खेती होती है ।

यहाँ पर वर्षा गर्मियों में होती है जो खेती के लिए काफी नहीं होती । इसीलिए सिंचाई के विकास की वड़ी आवश्यकता है ।

खनिज पदार्थ तथा उद्योग-धन्धे—खनिज पदार्थों का तो मक्सिको में अपार भंडार है । यहाँ पर पैट्रोलियम, चांदी, सीसा, जस्ता तथा सोना सभी धातुएँ विद्यमान हैं । पश्चिमी पर्वत श्रेणी ज्वालामुखी होने के कारण ही यहाँ खनिज पदार्थों की भरमार है । चाँदी तो यहाँ दुनिया भर में सबसे अधिक मिलती है । पैट्रोलियम, सीसा और तांबा भी वहुत मिलता है । प्राचीनकाल में यहाँ सोना भी वहुत मिलता था । यहाँ के निर्यात में ८० प्र० श० भाग खनिज पदार्थ ही होते हैं । घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए यहाँ कल-कारखाने भी हैं । चीनी, सिगार, सिगरेट और सूती वस्तुओं का निर्यात भी होता है । पर्वतों की अधिकता के कारण यातायात में अधिक व्यय होता है । प्रमुख नगरों को छोड़कर उत्तम सड़कों का यहाँ अभाव है । मैक्सिको की खाड़ी पर कोई आम पोताश्रय नहीं है । यहाँ पैसिफिक तट पर आदर्श पोताश्रय हैं, परन्तु अभी तक वहाँ व्यापार में उन्नति नहीं हुई है ।

मैक्सिको—राजधानी है । यह नगर चमड़े और चमड़े की वस्तुओं का केन्द्र है ।

टैम्पिको तथा वैराक्रूज—ये दोनों बन्दरगाह हैं ।

प्रश्नावली

१. खेती और खनिज उत्पादन के दृष्टिकोण से कनाडा का भौगोलिक विवरण दीजिए ।

२. कनाडा में गेहूँ की खेती पूर्व से पश्चिम की ओर क्यों हटती जा रही है ? इसके भौगोलिक कारण बताइए ।

३. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के प्रमुख खेतिहर प्रदेशों का वर्णन कीजिए ।

४. "औद्योगिक क्षेत्र में नवीन होते हुए भी संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने विशेष औद्योगिक उन्नति करली है ।" इस उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइए ।

५. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के लोहा व इस्पात उद्योग का भौगोलिक विवरण दीजिए ।

६. उत्तरी अमरीका में गेहूँ, मक्का, कपास और तम्बाकू की खेती कहाँ और किन भौगोलिक दशाओं में होती है ? कपास या गेहूँ का व्यापार भी बतलाइए ।

७. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में लोहे व इस्पात उद्योग के स्थानीयकरण के भौगोलिक कारण बतलाइए ।

८. मैक्सिको की खनिज सम्पत्ति का विवरण दीजिए और उसकी सम्पूर्ण

उन्नति की सम्भावनाएँ बतलाइए। उस देश में खनिज सम्पत्ति के उपभोग में विदेशियों का क्या हाथ रहा है? समझाकर लिखिए।

९. उत्तरी अमरीका में कोयला व लोहा उत्पादक क्षेत्रों की स्थिति बतलाइए और लिखिए कि गमनागमन व यातायात के साधनों का क्या असर पड़ा है।

१०. उत्तरी अमरीका के प्रधान औद्योगिक व खनिज क्षेत्रों को बतलाइए और उनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

११. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में प्रधान कोयला उत्पादक प्रदेशों और प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों का क्या सम्बन्ध है?

१२. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कोयला व तेल-सम्पत्ति के बारे में एक छोटा-सा लेख लिखिए।

१३. संयुक्तराष्ट्र अमरीका की प्रधान खनिज उपज कौन-सी हैं और कहाँ पाई जाती हैं?

१४. संसार के विदेशी व्यापार में आने वाली कौन-सी वस्तुएँ संयुक्तराष्ट्र अमरीका में सबसे अधिक मात्रा में उत्पन्न होती हैं? उन वस्तुओं के अन्य उपज क्षेत्रों का भी हवाला दीजिए।

१५. "कनाडा में यातायात के साधनों के नवीन विकास से खेती को बड़ा प्रोत्साहन मिला है।" इस उक्ति पर टिप्पणी कीजिए।

१६. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कोयले की सम्पत्ति का विवरण दीजिए और बतलाइए कि उसकी सहायता से औद्योगिक विकास व उन्नति में किस प्रकार सहायता मिली है।

१७. लोहा व इस्पात उद्योग के विकास के दृष्टिकोण से संयुक्तराष्ट्र अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन की तुलना कीजिए।

१८. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के शिल्प-उद्योग कौन-से हैं और वे कहाँ पर केन्द्रित हैं?

१९. संयुक्तराष्ट्र अमरीका की औद्योगिक सीमा दक्षिणी रियासतों में हट रही है। इसके कारण बतलाइए।

२०. उत्तरी अमरीका में लोहे की खानों से लोहा प्राप्त करने की प्रगति बतलाइए।

२१. कनाडा के मछली पकड़ने के व्यवसाय पर एक लेख लिखिए।

२२. न्यू इंग्लैंड स्टेट्स के औद्योगिक व्यवसाय का विवरण दीजिए। उसके अधिक विकास का कारण बतलाइए।

२३. अपलेशियन प्रदेश का भौगोलिक विवरण लिखिए।

२४. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कोयले के अतिरिक्त दूसरी चालक शक्तियों के स्रोत किस प्रकार कहाँ स्थित हैं, बतलाइयें।

२५. रेडरिवर की घाटी या कैलिफोर्निया की घाटी का भौगोलिक विवरण दीजिए।

२६. पिट्सवर्ग, शिकागो, मान्ट्रीयल और विनीपेग की उन्नति व विकास के ारण बतलाइए ।

२७. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में पशुपालन व्यवसाय ने क्या विकास किया है ? संयुक्तराष्ट्र के मध्य की पेटी में केन्द्रित होने के क्या कारण हैं ?

२८. उत्तरी अमरीका व झील प्रदेश कनाडा व संयुक्तराष्ट्र के उद्योगधन्धों का केन्द्र कैसे बन गया है ? विशिष्ट उदाहरण देकर समझाइए ।

२९. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के गल्फ बन्दरगाहों की उन्नति व विकास के भौगोलिक कारण लिखिए और रेखाचित्र द्वारा समझाइए ।

३०. निम्नलिखित के स्थानीयकरण के कारण बतलाइए :—

(अ) संयुक्तराष्ट्र अमरीका का भारी लोहा व इस्पात उद्योग ।

(ब) दक्षिणी रियासतों का सूती कपड़ा व्यवसाय ।

३१. कैलिफोर्निया के आर्थिक भूगोल के विषय में लिखिए ।

३२. कनाडा की सिंचाई योजनाओं का विवरण दीजिए ।

३३. उत्तरी अमरीका महाद्वीप की आर्थिक उन्नति व विकास में सेंट लारेंस प्रदेश का क्या महत्त्व रहा है ? समझाकर लिखिए ।

३४. संयुक्तराष्ट्र अमरीका की उत्तरी पूर्वी रियासतों में शिल्प-उद्योग के विकास के लिए क्या प्राकृतिक सुविधाएँ प्राप्त हैं ? समझाकर उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिए ।

३५. निम्नलिखित बातों का कारण बतलाइए :—

(अ) संयुक्तराष्ट्र के कैलिफोर्निया प्रदेश में विशाल वृक्ष होते हैं ।

(ब) संयुक्तराष्ट्र में अपने आप चलने वाली और मानव शक्ति को बचाने वाली मशीनों का उत्पादन बहुत अधिक है ।

३६. सेंट लारेंस के निम्न भाग का भौगोलिक वर्णन कीजिए ?

३७. संयुक्तराष्ट्र असरीका में राकी पहाड़ के पूर्वी भाग की इतनी अधिक औद्योगिक उन्नति के कारण बतलाइए और विभिन्न महत्त्वपूर्ण उद्योगों का विवरण दीजिए ।

३८. अपलेशियन प्रदेश में कोयले की खानें कहाँ-कहाँ पाई जाती हैं ? इनमें से प्रत्येक का आर्थिक महत्त्व अलग-अलग बतलाइए और उससे सम्बन्धित उद्योग-धन्धों का विवरण दीजिए ।

३९. संयुक्तराष्ट्र अमरीका के विभिन्न वनों का वितरण व आर्थिक मूल्य समझाइए ।

४०. कनाडा और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले व्यापार का वर्णन कीजिए ।

४१. कनाडा के प्रेरी प्रदेशों की आर्थिक उन्नति का वर्णन कीजिए ।

४२. जापान और संयुक्तराष्ट्र अमरीका के बीच होने वाले व्यापार की विशेषताएँ बतलाइए ।

४३. संयुक्तराष्ट्र अमरीका में कपास की खेती और कनाडा में गेहूँ की खेती का विवरण दीजिए और बतलाइए कि इनके आधार पर कौन-से उद्योग-धन्धे उठ खड़े हुए हैं।

४४. ओहियो, मिसीसीपी और बड़ी झीलों से सीमाबद्ध प्रदेश के उद्योग धन्धों व व्यवसायों का उल्लेख कीजिए।

अध्याय : : बारह

दक्षिणी अमरीका

दक्षिणी अमरीका उत्तरी अमरीका से कुछ छोटा है। महाद्वीपों में इसका नम्बर चौथा है। इसका क्षेत्रफल ७० लाख वर्गमील तथा आबादी १०८० लाख है। क्षेत्रफल के विचार से इसकी तटरेखा अफ्रीका को छोड़कर और सभी महाद्वीपों की तुलना में कम है। इसके तट में कटानों की बड़ी कमी है। केवल दक्षिण-पश्चिम में ही तट कुछ-कुछ कटा-फटा है। पश्चिमी तट ढालू और ऊँचा है। इधर केवल एक ही कटान है जिसे गयाकिल की खाड़ी कहते हैं। इसका पूर्वी तट नीचा और सीढ़ीदार है।

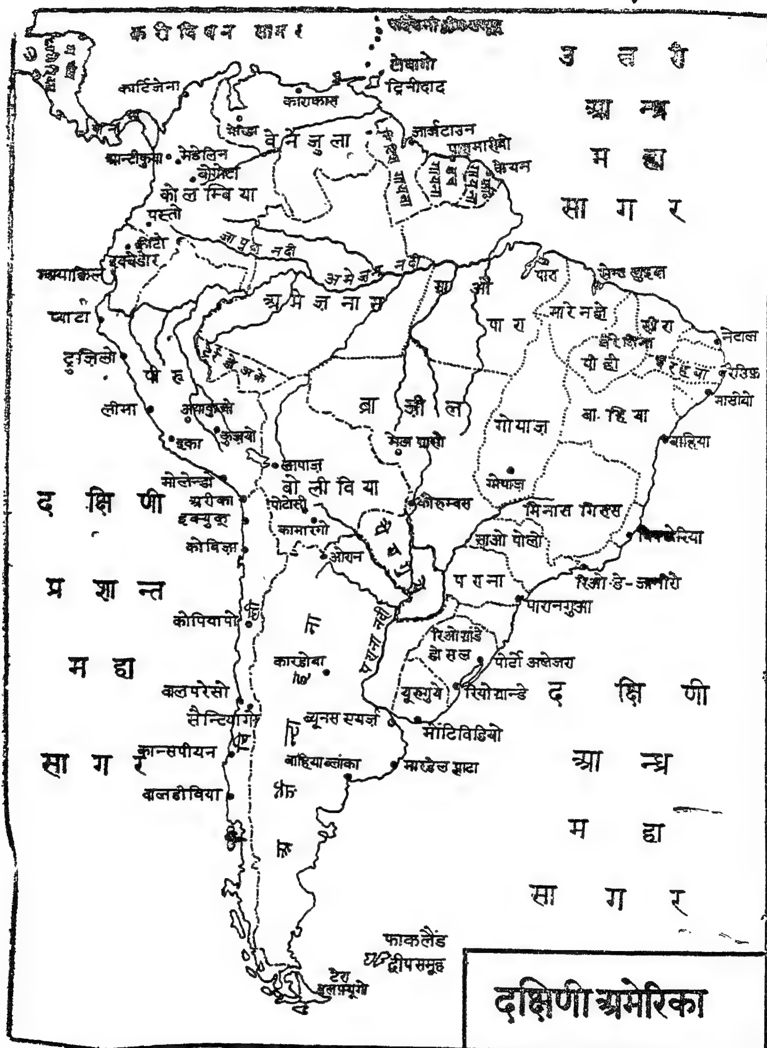
प्राकृतिक विभाग—दक्षिणी अमरीका के छः प्राकृतिक विभाग हैं जिनमें तीन ऊँचे प्रदेश और तीन नीचे प्रदेश हैं। ऊँचे प्रदेश में (१) ऐंडीज, (२) ब्राजील के पठार और (३) गायना के पठार सम्मिलित हैं और नीचे प्रदेश में (१) ओरीनीको, (२) अमेजन तथा (३) पराना परागुवे नदियों के कछार हैं।

दक्षिणी अमरीका की नदियाँ—अमेजन, ओरीनोको, प्लाटा तथा कोलोरेडो यहाँ की प्रसिद्ध नदियाँ हैं। अमेजन नदी ४००० मील लम्बी और संसार की सबसे बड़ी नदी है। इसका ढाल अधिक नहीं है। इसमें बड़े-बड़े जहाज मुहाने से १००० मील अन्दर तक और छोटे-छोटे जहाज ऐंडीज पर्वत की तलहटी तक आ-जा सकते हैं। अमेजन और उसकी सहायक नदियाँ मिलकर ५०,००० मील लम्बा मार्ग बनाती हैं। अमेजन का आन्तरिक प्रवाह क्षेत्र संसार का सबसे विशाल वनप्रदेश है—इसका क्षेत्रफल १४ लाख वर्गमील है। पश्चिमी ब्राजील का सारा भाग अमेजन के प्रवाह क्षेत्र में आता है। अमेजन के किनारे आबादी और उपज की वस्तुओं की कमी के कारण और सारे ही अमेजन प्रदेश में उपज की समानता के कारण अमेजन के जलमार्ग की अधिक महत्ता नहीं है।

ओरीनीको तथा लाप्लाटा नदियाँ—उत्तरी भाग की ओरीनोको नदी भी १००० मील तक नाव्य है। व्यापार के दृष्टिकोण से पराना नदी का मार्ग बड़ा महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह मार्ग अर्जेन्टाइना, परागुवे तथा दक्षिणी ब्राजील के बीच में को जाता है। पराना और ऊरुगुवे मिलकर रियो-डि-लाप्लाटा कहलाती हैं। यह स्वयं एक नदी तथा सहायक नदी भी है क्योंकि इसमें दोनों ही विशेषताएँ हैं। अन्तर्राष्ट्रीय नियम के अनुसार यह एक नदी है और इसकी चौड़ाई १३७ मील है। इसमें रेत बहुत जमती है और जहाज ज्वार के आने तक कभी-कभी भूमि पर ही टिक जाते हैं। ज्वार की ऊँचाई ३ फीट तक होती है। परन्तु हवाओं का प्रभाव और भी अधिक पड़ता है। दक्षिण-पश्चिमी तेज हवाएँ विशेषकर पैम्पीरो

(Pempero) हवाएँ नदी की सतह को इससे भी दुगना उठा या गिरा देती हैं।

जलवायु—दक्षिणी अमरीका का चार-पंचमांश भाग ऊष्ण कटिबन्ध में स्थित है। अतः महाद्वीप के अधिकतर भाग की जलवायु उष्ण कटिबन्धीय है। ३०° द अक्षांश से नीचे का भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में है। महाद्वीपीय जलवायु यहाँ है ही नहीं। आबादी बहुत बिखरी है। कुल आबादी साढ़े छः करोड़ है।



चित्र ६८—दक्षिणी अमरीका के राजनैतिक विभाग—देखिए दक्षिणी प्रायद्वीप में बन्दरगाहों की कमी है।

दक्षिणी अमरीका की अवनत दशा के कारण

१. **निवासी**—दक्षिणी अमरीका में जाति का प्रश्न बड़ा महत्त्वपूर्ण है। श्वेत जाति के अधिकतर लोग यहाँ पर आरम्भ में सिपाहियों की भाँति आये। उनका उद्देश्य यहाँ पर लूट-मार करना था, उन्हें यहाँ बसना नहीं था। प्रत्येक राज्य में यहाँ के निवासियों से वे धीरे-धीरे घुल-मिल गए। अब अर्जेन्टाइना, चिली तथा उरुगुवे में श्वेत जाति की प्रधानता है शेष आबादी इन्डियनों, हबशियों तथा मिले-जुले लोगों की है।

२. **जलवायु तथा रोग**--यहाँ के निवासी बुरी जलवायु तथा घातक ज्वर के कारण सुस्त तथा अकर्मण्य होते हैं। मृत्यु का औसत घना है। परन्तु अब दवाओं ने बीमारियों को कम कर दिया है और वर्त्तमान विज्ञान की प्रगति से दक्षिणी अमरीका को लाभ हो रहा है।

३. **राष्ट्रीयता का अभाव**—यहाँ की अवनति के कारणों में राष्ट्रीयता का अभाव भी है। एक प्रान्त के दूसरे प्रान्त वालों को बुरा-भला कहते हैं। वे एक दूसरे को जंगली, हब्शी या असभ्य कहकर पुकारते हैं। राज्य-प्रबन्ध की निर्बलता और सरकार की अस्थिरता यहाँ की उन्नति में बाधा डालती है। यहाँ के राज्यों में क्रान्तियाँ बहुधा हुआ करती हैं। लोगों का जान-माल सुरक्षित नहीं है। इसी कारण विदेशी भी पूँजी लगाने में हिचकते हैं और देश निर्धन है ही।

४. **खराब सड़कें**—आवागमन की कठिनाइयाँ हैं, सड़कें खराब हैं और रेलों का विकास नहीं हो सका है।

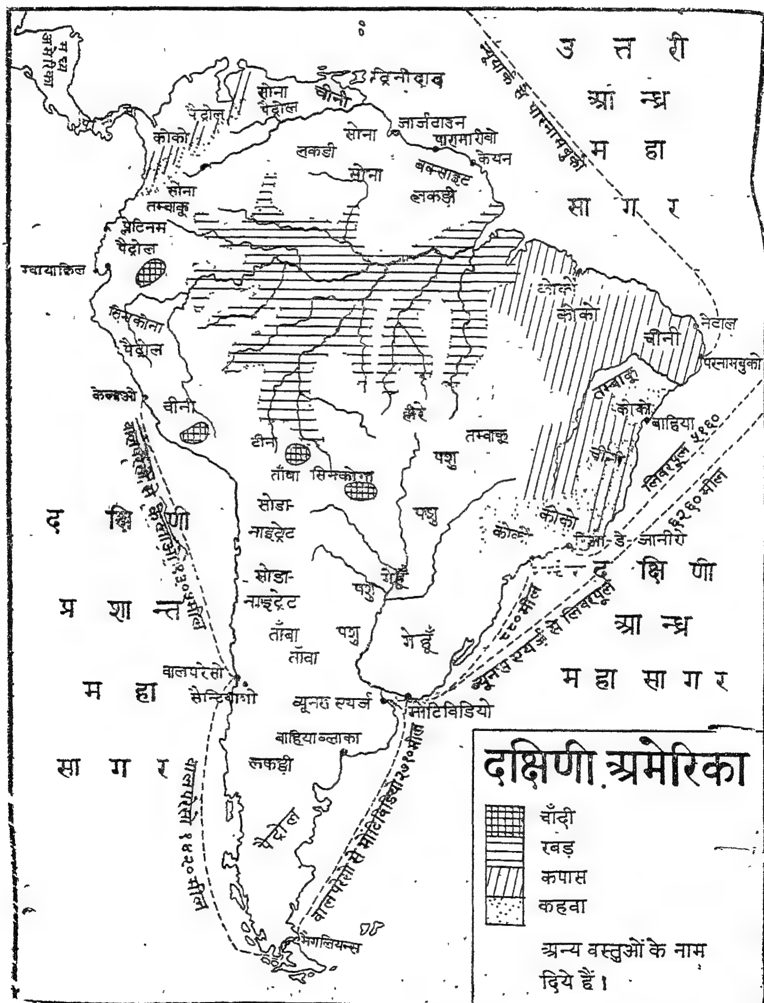
५. **कोयले की कमी**—दक्षिणी अमरीका में अन्य सभी उपयोगी खनिज पदार्थों के होते हुए भी कोयले की कमी है। यहाँ की चट्टानें बहुत पुरानी नहीं हैं और उनकी परतें भी नवीन हैं। पीरू और चिली में अच्छी श्रेणी के कोयले की कुछ खानें हैं। कोयले की कमी के कारण ही यहां के निवासी खेती तथा पशु सम्बन्धी कार्यों में लगे। पीरू, वेनुजुला, अर्जेन्टाइना, इक्वेडर में तेल निकल आने के कारण देश में उद्योग-धन्धों की उन्नति हो रही है। यहाँ की नदियों और झरनों की अधिकता के कारण काफी जलशक्ति भी मिल सकती है, परन्तु यहाँ पर मजदूरों की कमी के कारण व्यय अधिक पड़ता है।

६. **यूरोप पर निर्भरता**—दक्षिणी अमरीका में कच्ची वस्तुओं की उपज अधिकतर होती है और ये वस्तुएँ निर्यात के लिए होती हैं। यहां की उपज का ६० प्र.श. से भी अधिक भाग यूरोप को भेजा जाता है। फलतः जब कभी यूरोप की माँग युद्ध अथवा अन्य कारणों से कम हो जाती है तो यहाँ के लोगों को बड़ी हानि उठानी पड़ती है।

राजनैतिक विभाग—दक्षिणी अमरीका १२ भागों में बँटा है जिनके नाम हैं—पनामा, कोलम्बिया, इक्वेडर, वेनेजुला, गायना (डच, फ्रैंच तथा ब्रिटिश), ब्राजील, पीरू, बोलिविया, चिली, अर्जेन्टाइना, परागुवे तथा उरुगुवे। गायना को छोड़कर अन्य सभी देश प्रजातन्त्र हैं।

१—कोलम्बिया

सामान्य वृत्तान्त—विस्तार के विचार से यह दक्षिणी अमरीका का पाँचवें नम्बर का देश है। इसका क्षेत्रफल ४४,०,००० वर्गमील तथा आबादी ११० लाख है। अधिकतर मनुष्य ४००० से ९००० फीट की ऊँचाई पर रहते हैं। यह उष्ण कटिबंध के मध्य में बसा है और ऊँचाई के अनुसार तापक्रम कहीं कम और कहीं ज्यादा रहता है। तटीय प्रदेशों और निम्न घाटियों में औसत तापक्रम ८६° फार्नहैट रहता है। कौका घाटी में और गोगोटा में तापक्रम क्रमशः ७०° और ६८° हो जाता है।



६९ चित्र —दक्षिणी अमरीका की आर्थिक उपज

वर्षा की मात्रा भी बड़ी बेतरतीब रहती है। प्रशान्त सागर के तट पर खूब वर्षा होती है और वार्षिक औसत ४०० इंच रहता है। परन्तु मैदानों में औसत वर्षा २०.० इंच से अधिक नहीं होती। इसके एक ओर एटलांटिक तथा दूसरी ओर पैसिफिक महासागर हैं और उनकी स्थिति बड़ी अनुकूल है। उपजाऊ भूमि होते हुए भी यहाँ पर खेती अधिक नहीं की जाती। स्थानीय उपभोग के लिए ही यहाँ पर कहवा, चावल, केला, रबर और गन्ना पैदा किया जाता है।

कहवे की उपज—ब्राजील को छोड़कर कहवे में इसका संसार में दूसरा स्थान है और हल्के कहवे में सर्वप्रथम है। कहवे का उत्पादन अधिकतर कार्डिलियरा के ढालों पर होता है। कार्डिलियरा की मिट्टी गहरी और उपजाऊ है, यह ज्वालामुखी की मिट्टी है, जो कहवे की उपज के अनुकूल है। साये के लिए प्रायः केले के पेड़ लगाए जाते हैं और स्थायी साये के लिए अन्य वृक्षों से काम लिया जाता है। सन् १९५१ में कुल खेतिहर उत्पादन का एक-तिहाई कहवा था। कहवे को उत्पादन क्षेत्रों से मंडियों में और बन्दरगाहों तक ले जाने की बड़ी कठिन समस्या है। यह काम पशुओं द्वारा किया जाता है। यहाँ पर पशु सुअर, घोड़े, भेड़, बकरियाँ और खच्चर भी पाले जाते हैं।

खनिज पदार्थ—यह देश खनिज पदार्थ सम्पन्न है। सोना और चाँदी पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। लोहा, कोयला और प्लेटिनम की भी खानें हैं। यह प्लेटिनम का सबसे बड़ा भंडार है। सन् १९५२ में यहाँ पर ३३,७०० औंस प्लेटिनम निकाला गया। अमरीका में खनिज तेल भी कोलम्बिया के अनेक भागों में मिलता है और तेल के उत्पादन में दक्षिणी अमरीका में कोलम्बिया का दूसरा नम्बर है। सन् १९५२ में ४२२, २४० औंस सोना निकाला गया। सन् १९४९ में चाँदी का उत्पादन १०७, ००० औंस था। सन् १९५२ में यहां पर खनिज तेल का उत्पादन ५४ लाख मीट्रिक टन था।

यातायात के साधन—अच्छी सड़कें यहां हैं ही नहीं और रेलों की भी कमी है। दक्षिणी अमरीका के देशों में हवाई यातायात की दृष्टि से इसका स्थान सर्वप्रथम है। यहाँ की हानिकर जलवायु तथा भिन्न २ भागों के यातायात की कठिनाइयों के कारण यहां के आर्थिक विकास में बड़ी बाधा पड़ती है। बोगोटा राजधानी है और ८००० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ की जलवायु बड़ी स्वास्थ्यवर्धक है।

२—वेनेजुला

विस्तार—**आबादी, खेती तथा खनिज पदार्थ**—यद्यपि यह देश कृषिप्रधान है परन्तु काफी धनी है। इसका क्षेत्रफल ३,५०,००० वर्गमील तथा आबादी ४९ लाख है। यहाँ की उपज के तीन प्रदेश हैं.—खेती के प्रदेश, पशुपालन प्रदेश और वन प्रदेश। खेतिहर प्रदेश देश के उत्तरी भाग में स्थित है और बड़े-बड़े उपजाऊ खेत हैं। इस भाग का कुल क्षेत्रफल ११६,००० वर्गमील है परन्तु केवल १० लाख

एकड़ पर खेती की जाती है। यहां पर गेहूँ, चावल, तम्बाकू, मक्का, कहवा, गन्ना, कपास तथा लोभिया उत्पन्न होता है।

एक-पंचमांश जनता खेती में लगी हुई है। पशुओं की संख्या इस प्रकार है—

गाय-बैल	४० लाख
बकरी	१० लाख
भेड़ें	१ लाख
घोड़े और खच्चर	४ लाख
सूअर	३,६०,०००

खनिज उत्पादन में सोना, ताम्बा, खनिज तेल, कोयला और लोहा प्रधान है। प्रधान तेलक्षेत्र मारकैबो झील की तलैटी और पूर्वी वेनेजुला में पाये जाते हैं। हाल के दिनों में वेनेजुला संसार का दूसरा प्रमुख तेल उत्पादक राष्ट्र हो गया है। यहाँ से सबसे अधिक तेल निर्यात किया जाता है। संसार का ९ प्रतिशत खनिज तेल यहाँ से प्राप्त होता है। सन् १९५३ में तेल का कुल उत्पादन ९२० लाख टन था। कुडियाड वोलिवार का दक्षिणी पूर्वी भाग सोने की खानों के लिए प्रसिद्ध है।

कराकस (Caracas) राजधानी है। **वेलेशिया** भी प्रधान नगर है।

ला गुवेरा (La Guaira) तथा **पोर्टो केबिलो** (Porto Cabello) बन्दरगाह हैं।

३—इक्वेडर

विस्तार, आबादी, खनिज पदार्थ—दक्षिणी अमरीका का यह सबसे छोटा और निर्धन देश है। यह उत्तर-पश्चिम में बसा हुआ है और इसके क्षेत्रफल का पाँचवाँ भाग भूमध्य रेखा के उत्तर में है। इसका क्षेत्रफल २,८०,००० वर्ग मील तथा आबादी ३० लाख है जिसमें १० प्रतिशत गोरे लोग हैं। आबादी का औसत प्रति वर्गमील १२ व्यक्ति है। यहाँ पर खेती की भूमि नदियों की लाई हुई मिट्टी से बनी है और उनके बीच-बीच में ज्वालामुखी उद्गार का लावा भी पाया जाता है। यहाँ की जलवायु स्थिति के अनुसार है परन्तु उस पर देश की पर्वतीय बनावट तथा अन्टार्कटिक ठंडी जलधारा का भी प्रभाव पड़ता है। खेती की दो प्रमुख पेटियाँ हैं—(अ) नदी घाटियाँ और तटीय मैदान जहाँ पर उष्ण कटिबंधीय फसलें उगाई जाती हैं; (ब) पहाड़ी प्रदेश जहाँ अनाज, फल और सब्जी की खेती होती है। यहाँ की अधिकतर आबादी कोको पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त चावल, कहवा, तथा आइवरी नट (Ivory-nuts) भी उत्पन्न होते हैं। कहवे की खेती कोको और केले के साथ की जाती है जिससे कहवा सुरक्षित रहता है। कहवे की खेती अधिकतर पश्चिम के मानाबी (Manabi) प्रान्त में होती है। खनिज पदार्थों की प्रचुरता है, परन्तु उनका विकास नहीं हुआ है। खनिज तेल भी यहाँ काफी है। सन् १९५१ में खनिज तेल का कुल उत्पादन ३७०,००० मीट्रिक टन था। देश में सोना, चाँदी,

ताँबा, लोहा, शीशा और कोयला भी पाया जाता है। इक्वेडर में 'पनामा टोप' विशेषकर बनाये जाते हैं।

क्विटो (Quito) भूमध्य रेखा से ९००० फीट की ऊँचाई पर है। यहां की जलवायु बड़ी सुहावनी है।

गयाकिल—प्रसिद्ध बन्दरगाह है। निर्यात की वस्तुएँ यहीं से अधिकतर भेजी जाती हैं।

मान्टा तथा **वाहिया डि राक्वेज** यहाँ के अन्य बन्दरगाह हैं।

४—बोलीविया

सामान्य परिचय—इस देश की आर्थिक प्रगति बड़ी मन्द रही है। ४०४००० वर्ग मील के इस देश की आवादी ३० लाख हैं। मजदूरों की कमी के कारण औद्योगिक विकास में बड़ी बाधा पड़ी है। यातायात के साधन अच्छे नहीं हैं और बोलीविया में कोई बन्दरगाह भी नहीं है। सन् १९५३ में यहाँ पर रेल मार्गों की कुल लम्बाई १००० मील थी। मोटर योग्य सड़कों का विस्तार ६०० मील था। खेती, पशुपालन और खान खोदना लोगों के मुख्य उद्योग-धन्धे हैं। सोना, चाँदी, ताँबा और टीन प्रमुख खनिज पदार्थ हैं। बोलीविया से संसार के कुल उत्पादन का २० प्रतिशत टीन प्राप्त होता है। टीन उत्पादक देशों में इसका तीसरा स्थान है। बोलीविया में दक्षिणी अमरीका का सबसे बड़ा सम्भावित तेल क्षेत्र होने का अनुमान है यद्यपि वर्तमान उत्पादन बहुत कम है। इस समय तो घरेलू उत्पादन से इसी की माँग पूर्ति नहीं हो पाती। भेड़, अल्पका तथा लामा व्यापक रूप से पाले जाते हैं। कहवा, कोको, चीनी, चावल और तम्बाकू मुख्य उपज की वस्तुएँ हैं। यहाँ के ९० प्रतिशत निवासी इण्डियन हैं। राजनैतिक सत्ता टीन व्यापारियों के हाथ में है।

लापाज (La Paz) राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है।

५—चिली

चिली दक्षिणी अमरीका का एक प्रगतिशील देश है। यहाँ का क्षेत्रफल २८६,००० वर्ग मील है। विस्तार की दृष्टि से दक्षिण अमरीका में चिली का सातवां स्थान है। यहाँ की तट रेखा २५०० मील लम्बी है पर देश की औसत चौड़ाई केवल ११० मील है। आवादी का औसत घनत्व २० मनुष्य प्रति वर्गमील है और १९५२ में यहाँ की आबादी ६० लाख थी।

उत्तरी चिली—चिली का उत्तरी भाग रेगिस्तान है, परन्तु औद्योगिक व्यापार का केन्द्र है। यहाँ पर नाइट्रेट आफ सोडा बहुत मिलता है जिसके निर्यात से देश को बड़ी आमदनी होती है। इस सोडे का प्रयोग खाद, रासायनिक पदार्थों और विस्फोटक पदार्थों में किया जाता है। अब बनावटी नाइट्रेट के कारण चिली के इस उद्योग पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। उत्तरी भाग में ही सोना, ताँबा और चाँदी भी पाये जाते हैं। ताँबा यहाँ की बहुमूल्य निर्यात की वस्तु है और संसार का

प्रतिशत ताँवा यहीं से प्राप्त होता है। चिली का ताँबा भंडार संसार का ३७ प्रतिशत है।

मध्य चिली—मध्य चिली की जलवायु भूमध्यसागरीय है और यहाँ पर खेती अधिक होती है। यह भाग सबसे घना बसा हुआ और सबसे उन्नत प्रदेश है। यहाँ की खेती की उपज उत्तर के खनिज प्रदेशों में लोगों के निर्वाहार्थ भेज दी जाती है। इस देश में जल-शक्ति और कोयला दोनों ही प्रचुर मात्रा में हैं। चिली में शराब अधिक बनाई जाती है जिसकी स्थानीय और पास की रियासतों में बड़ी माँग रहती है। कुछ शराब मध्य-यूरोप को भी भेजी जाती है।

दक्षिणी चिली—दक्षिणी चिली में भेड़ों और पशुओं के लिए विस्तृत चारागाह हैं। यहाँ की वन-सम्पत्ति का पूरा लाभ नहीं उठाया जा रहा है।

सैंटियागो (Santiago) यहाँ का प्रसिद्ध नगर है।

वाल परेसो (Valpariso) तथा **इक्वीक** (Iquiqe) यहाँ के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

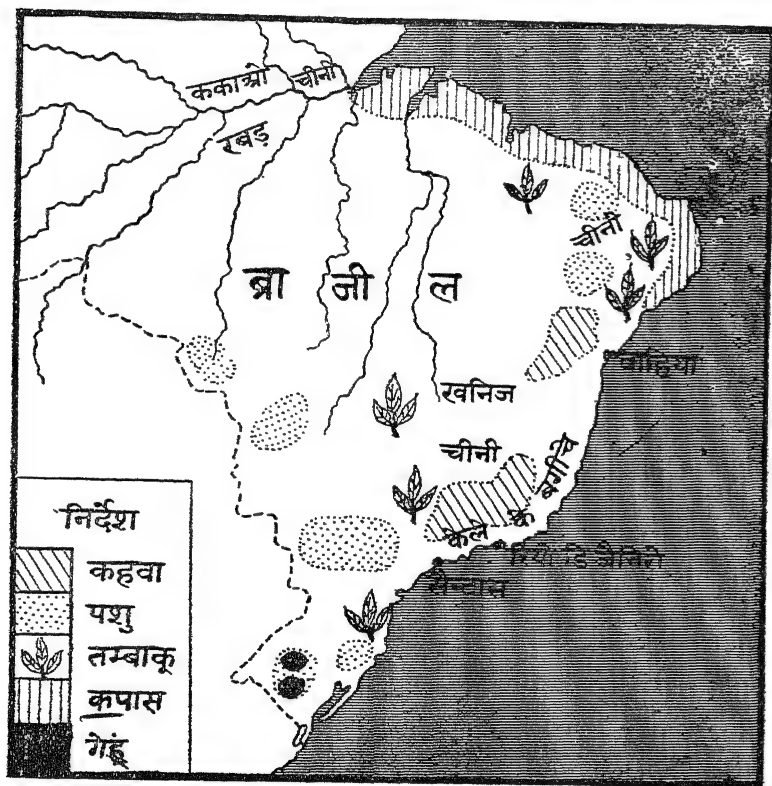
६--ब्राजील

सामान्य परिचय—यह देश दक्षिणी अमरीका के लगभग आधे भाग पर फैला है और विस्तार में संयुक्त राष्ट्र की ही टक्कर का है। १९५० में यहाँ की आबादी ५,३०,००,००० थी। जनसंख्या का औसत घनत्व १६ व्यक्ति प्रति वर्ग मील है। साओपोलो में जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक है—८० व्यक्ति प्रति वर्गमील। यहाँ के लोग अधिकतर पुर्तगीज भाषा बोलते हैं। समुद्रतट ४००० मील लम्बा है परन्तु बन्दरगाहों की कमी है। इसका उत्तरी तट नीचा तथा दलदली है और दक्षिणी तट पथरीला है। देश में अनेक नदियाँ हैं। अमेजन सबसे लम्बी है (४००० मील)। इस देश में तीन-चौथाई भाग की जलवायु उष्ण कटिबंधीय है। अन्य भागों में ऊँचाई के अनुसार समशीतोष्ण जलवायु है। यह देश इतना लम्बा-चौड़ा है और इसमें आर्थिक साधनों की इतनी संभावना है कि कभी-कभी तो इसे "सुप्तदेश" कहा जाता है। यातायात की कमी, पूँजी का अभाव, सस्ते मजदूरों का न मिलना और उत्तरी भाग की हानिकर जलवायु इसकी उन्नति के मार्ग में बाधाएँ हैं।

ब्राजील की सरकार ने राज्य की उन्नति के लिए एक पंचवर्षीय योजना चालू कर दी जो सन् १९५४ के अन्त तक पूरी हो गई है। इस योजना का उद्देश्य देश में स्वास्थ्य के स्तर को ऊँचा उठाना, खेती की उपज को बढ़ाना, विद्युत् शक्ति की व्यवस्था में वृद्धि करना और देश की यातायात व्यवस्था को सुधारना है।

मुख्य उपज—लोगों का मुख्य धन्धा खेती है। यहाँ की मुख्य उपज कहवा, कोको, रबर, चीनी, तम्बाकू और कपास हैं। संसार का ८० प्रतिशत कहवा यहीं से मिलता है। और यहाँ की सम्पन्नता सबसे अधिक कहवे के ही कारण है। ब्राजील के सभी प्रान्तों में कहवा उत्पन्न होता है। कहवा उत्पादन का सबसे

अनुकूल भाग वह विस्तृत प्रदेश है जो कि उत्तर में अमेजन से दक्षिण में कैथरीना तक और पूर्व में एटलांटिक तट से माटो ग्रासो रियासत के पश्चिमी सिरे तक फैला हुआ है। परन्तु इस विस्तृत प्रदेश के थोड़े ही भाग में कहवा उत्पन्न किया जाता है। कहवे की खेती केवल साओपोलो, मिनास जिरायस, एस्पिरिट सांटो, रियौडिजैनिरो, पराना, बाहिया, परनम्बुको में ही होती है और इन्हीं भागों में देश का १८ प्रतिशत कहवा उत्पन्न होता है। केवल साओपोलो ही से देश की कुल उपज का दो-तिहाई कहवा उत्पन्न होता है।



चित्र ७०—ब्राजील की आर्थिक दशा

साओपोलो (कहवा उत्पादन का प्रधान केन्द्र)—साओपोलो दक्षिणी अमरीका का ही नहीं बल्कि संसार का भी कहवा उत्पादन का प्रमुख केन्द्र है। इसके कई कारण हैं। (१) साओपोलो में पश्चिमी पर्वत माला के ढाल से पराना नदी तक लगभग १८०० फीट ऊँचा एक पठार है जिसका ढाल पूर्व से पश्चिम को है। इस पठार की भूमि में लोहे का मिश्रण है जो कहवा के लिए बड़ा लाभकारी होता है। (२) इस भाग की जलवायु स्फूर्तिवर्धक और गोरे लोगों के लिए अनुकूल है। १९५२

में ब्राजील में ११ लाख टन कहवे की उपज हुई थी। कहवे की बिक्री पर सरकार का नियंत्रण है। १९४० से कहवे की अतिरिक्त उपज का उपयोग प्लास्टिक की वस्तुएँ बनाने में होने लगा है।

कोको तथा अन्य उपज—कोको के उत्पादन में ब्राजील का तीसरा स्थान है और इसकी विस्तृत खेती का क्षेत्र बाहिया है। सन् १९५२ में उत्पादन ५८००० टन था। इसी वर्ष गोल्ड कोस्ट पर २१५००० टन और नाइजीरिया में ११७००० टन की फसल हुई। ब्राजील की दो-तिहाई कोको संयुक्त राष्ट्र अमरीका को निर्यात कर दी जाती है। ब्राजील में चीनी और तम्बाकू के उत्पादन का ओर उत्तरोत्तर ध्यान दिया जा रहा है। इस समय इन वस्तुओं के विश्व उत्पादकों में ब्राजील का तीसरा स्थान है। मक्के के उत्पादन में ब्राजील का स्थान विश्व में चौथा है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका, रूमानिया और अर्जेन्टाइना का स्थान इससे पहले आता है। हाल के दिनों में कपास की खेती तेजी से आगे बढ़ रही है। कपास का रेशा तो छोटा होता है पर इसकी किस्म अच्छी है। एकड़ प्रदेश में रबड़ पाया जाता है। पारा और अमेजनास के प्रदेश भी रबड़ के लिए प्रसिद्ध हैं। सन् १९५२ में रबड़ का उत्पादन २६,९०० टन था जबकि १९१२ में केवल ४० हजार टन ही था।

पशुपालन—खेती के बाद में पशुपालन का धन्धा महत्त्वपूर्ण है। यहाँ पर सुअर, भेड़, घोड़े तथा अन्य पशु बड़ी संख्या में पाले जाते हैं। यह देश संसार के सुअर पालने वाले देशों में एक प्रमुख देश है।

पशुओं की संख्या १९५२

(लाख में)

गाय, भैंस	५५८	बकरी	८१
सुअर	३०९	घोड़े	७१
भेड़	१६२	गधे और खच्चर	४८

ब्राजील की खनिज सम्पत्ति—यद्यपि यहाँ पर खनिज सम्पत्ति की प्रचुरता है, परन्तु इसका व्यापारिक उपयोग नहीं होता। क्रोमाइट, अभ्रक, जिरकोनियम, ग्रेफाइट, मैंगनीज, कोयला, लोहा, सोना, नमक तथा हीरे इत्यादि यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ हैं। मैंगनीज में ब्राजील का दुनिया में तीसरा स्थान है। लगभग सारे ही मैंगनीज का निर्यात होता है। इसकी खानें अधिकतर मिनास जिरायस में हैं। निजारथ के समीप बाहिया राज्य में भी कुछ मैंगनीज निकलता है। कोयला रियो ग्रांडडिसूल, सांटा कैथरिना, पनामा तथा साओपोलो में पाया जाता है। १९४२ में १० लाख टन कोयला उत्पादन हुआ था। लोहे की खानें मिनास जिरायस में हैं। इटाबीरा (Itabira) में यहाँ की सरकार को नई लोहे की खान मिली है जो कि संसार की प्रमुख खानों में से है। सोना भी अधिकतर मिनास जिरायस में मिलता है। यहाँ पर जल-विद्युत शक्ति के लिए भी काफी आशा की जाती है।

ब्राजील में शिल्प उद्योगों की भी उन्नति हो रही है। यहाँ पर ऊनी, सूती

वस्त्रों, चीनी शोधन, शराब बनाने तथा फलों को डिब्बों में भरने के धन्धे किये जाते हैं। यहाँ के उद्योगों को सरकारी संरक्षण प्राप्त है। यहाँ सूती, ऊनी, रेशमी तथा कृत्रिम रेशम के वस्त्रों, जूट के सामान, कागज, तम्बाकू और चीनी बनाने के कारखाने हैं। यहाँ से कहवा, सुरक्षित मांस, रबर, कपास, खालें, चमड़ा, तम्बाकू, कोको, मांस, चीनी, इमारती लकड़ी का निर्यात और अधिकतर तैयार माल का आयात होता है। अमरीका के अन्य देशों की अपेक्षा ब्राजील अफ्रीका से निकटतम पड़ता है। पश्चिमी अफ्रीका यहाँ से १६०० मील दूर है। यूरोप से अमरीका जाने वाला हवाई मार्ग यहीं को होकर जाता है।

रियोडिजैनिरो—राजधानी तथा बन्दरगाह है। इसका आदर्श पोताश्रय है।

सान्टोस—दक्षिण में है। यहाँ कहवे का निर्यात होता है।

बाहिया तथा परनाम्बुको से चीनी, कपास और तम्बाकू का निर्यात होता है।

७—अर्जेन्टाइना

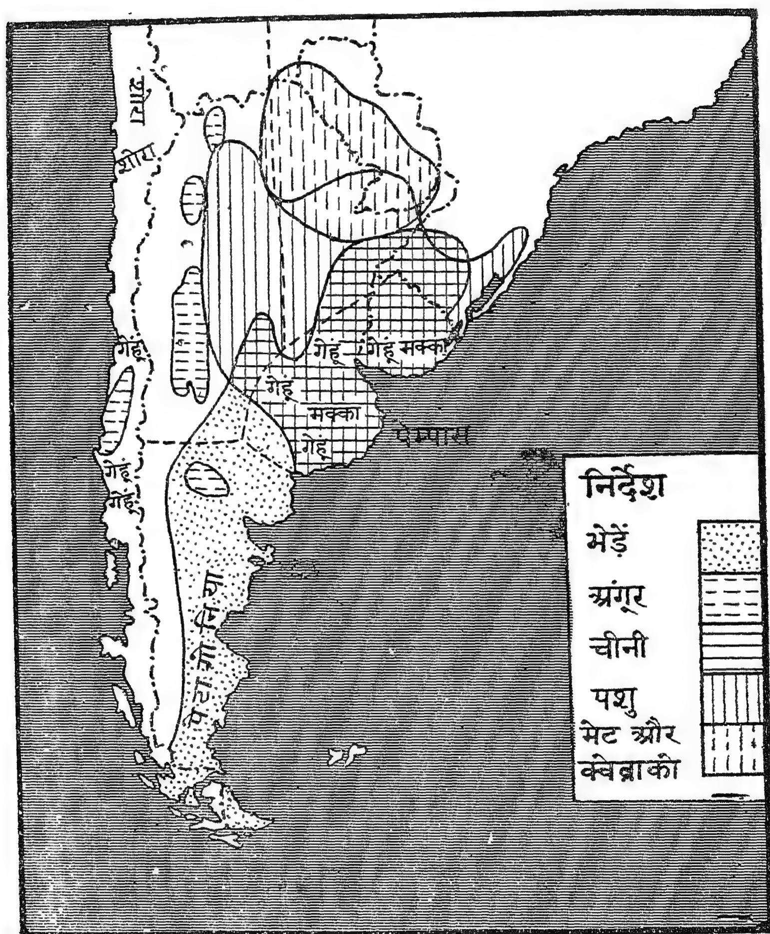
विस्तार, भूमि तथा जलवायु—विस्तार तथा आबादी के विचार से ब्राजील से दूसरे नम्बर का देश है। इसका क्षेत्रफल १० लाख वर्गमील तथा आबादी १.. करोड़ ७८ लाख है। जनसंख्या का घनत्व १५ व्यक्ति प्रति वर्गमील है। यहाँ के निवासी अधिकतर दक्षिणी यूरोप से आये हुए लोग हैं। इस देश में बड़ी उन्नति हुई है। यहाँ की जलवायु ठण्डी और भूमि समतल है जिससे यहाँ यूरोपियनों के बसने और रेलों के बनाने की सुविधाएँ हैं। यहाँ की पराना, परागुवे तथा उरुगुवे नदियों में नावें चल सकती हैं।

कृषिप्रधान देश—यहाँ खनिज पदार्थों की अधिकता नहीं है। यह देश कृषि-प्रधान होने से दक्षिणी अमरीका का "अन्न भन्डार" है। कुल क्षेत्रफल के ११ प्र.श. भाग पर खेती की जाती है। पूर्वी भाग में खेती की अधिक उन्नति हुई है और यहाँ सभी अनाज उगते हैं। गेहूँ, जई, मक्का और तिलहन यहाँ की मुख्य उपज हैं। कुल खेतिहर भूमि के आधे भाग पर गेहूँ बोया जाता है और गेहूँ की खेती ८० लाख एकड़ भूमि पर होती है। गेहूँ के बाद अलसी का स्थान आता है, जिसकी खेती ३० लाख एकड़ भूमि पर होती है। १९५२ में अर्जेन्टाइना में ७८ लाख मीट्रिक-टन गेहूँ, १४ लाख टन तिलहन और ३६ लाख टन मक्का पैदा हुई। कपास, आलू, चीनी, तम्बाकू, चावल और चाय भी उत्पन्न होती है। संयुक्तराज्य (U. K.) में अर्जेन्टाइना के गेहूँ और तिलहन की बड़ी बिक्री होती है।

...—इसके दक्षिण-पश्चिमी भाग में भेड़, चौपाये, सुअर और घोड़े बहुत पाले जाते हैं। यहाँ पर मांस को ठण्डा रखने का प्रमुख उद्योग होता है और यहाँ पर मांस को ठण्डा रखने का दुनिया में सबसे बड़ा कारखाना है। यहाँ पर आटा पीसने, वस्त्र बनाने, मशीनें और गाड़ियाँ बनाने, रासायनिक पदार्थों और तम्बाकू के भी कारखाने हैं। यहाँ की सरकार अधिकतर पशुपालक भूमिधरों के अधिकार में है।

यातायात के साधन—इस देश में २७,००० मील लम्बा रेलमार्ग है। सभी

रेलों की चौड़ाई समान माप की नहीं है, इसी कारण कठिनता प्रड़ती है। यहाँ सबसे लम्बी रेल की लाइन ब्यूनस आयर्स से वाल परेसो तक ९०० मील लम्बी है। साल्टा (अर्जेन्टाइना) से एन्टोफोगस्टा (चिली) तक एक नया रेलमार्ग बनाया जा रहा है। अर्जेन्टाइना में ३२,००० मील लम्बी सड़कें हैं जिनके द्वारा चिली, युरुगुवे तथा परागुवे से व्यापार की बड़ी सुविधा है।



चित्र ७१—अर्जेन्टाइना और युरुगुवे की आर्थिक उपज

निर्यात तथा आयात की वस्तुएँ—यहाँ से निर्यात की प्रमुख वस्तुएँ अनाज मांस, अलसी, ऊन और तम्बाकू हैं। सन् १९५२ में निर्यात की दशा इस प्रका थी—

खेतिहर उपज	३५ प्र. श.
पशु से प्राप्त उपज	५६ प्र. श.
वन उपज	३ प्र. श.
शिल्प-उद्योग की वस्तुएँ	२ प्र. श.

आयात की प्रधान वस्तुएँ लोहे व इस्पात का सामान, सूती व ऊनी कपड़े तथा रेलगाड़ियाँ हैं।

ब्यूनस आयर्स—अर्जेन्टाइना की राजधानी और प्रमुख बन्दरगाह है। यह प्लाटा नदी पर स्थित है। यहाँ का तीन-चौथाई निर्यात और पंचमांश आयात यहीं से होता है। व्यापारिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से यह नगर अर्जेन्टाइना में सबसे बढ़कर है। इसमें दोष केवल इतना है कि प्लाटा नदी कम गहरी है और यहाँ डामों से लगातार मिट्टी निकाली जाती है।

रोजेरियो—का आदर्श पोताश्रय और गेहूँ निर्यात का प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

८—युरुगुवे

सामान्य परिचय—अर्जेन्टाइना और ब्राजील के मध्य यह दक्षिणी अमेरिका का सबसे छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल ७२,१५३ वर्गमील और १९४८ में आवादी २३,१८,२०० थी। यहाँ पर स्पेनिश भाषा बोली जाती है। यहाँ के ५० प्र.श. निवासी यूरोपियनों की सन्तान हैं जो अधिकतर स्पेन और इटली के निवासी हैं।

जलवायु—भौगोलिक दृष्टिकोण से युरुगुवे अर्जेन्टाइना के घास के मैदानों का ही सिलसिला है। इसके तट पर १२० मील तक दक्षिणी एटलांटिक तथा ६०० मील तक प्लाटा और युरुगुवे नदियाँ बहती हैं। देश पहाड़ी तो नहीं है परन्तु इसमें नीची पहाड़ियाँ बहुत-सी हैं। यहाँ जलवायु शीतोष्ण है। यहाँ का न्यूनतम ताप ३५° और उच्चतम ९०° फा. रहता है।

खनिज पदार्थ—इस देश में सोना, ताँबा, चाँदी, लोहा, टीन, पारा, अभ्रक, स्लेट पतथर, जिप्सम, कोबल्ट और संगमरमर बहुत है। परन्तु खनिज उद्योग का विकास अभी नही हुआ।

मुख्य उद्यम—यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम भेड़ें और पशु पालना है। यह धन्धा दक्षिण और पश्चिम के भागों में अधिकतर होता है। सन् १९५१ में यहाँ के पशुओं की संख्या इस प्रकार थी।

(हजार में)

गाय-बैल	८,८२१	बकरी	१७
भेड़	२३,०००	सुअर	२७३
घोड़े	५४५		

कुल क्षेत्रफल के ६० प्र.श. भाग पर पशुचारण का व्यवसाय होता है। यहाँ के कुल निर्यात का ९५ प्र. श. पशु और पशुओं से प्राप्त होने वाली अन्य वस्तुएं होती हैं।

खेती की उपज—यहाँ भूमि के कुल ७ प्र.श. भाग पर ही खेती की जाती है। गेहूँ, मक्का, जई और तिलहन यहाँ की मुख्य उपज है। शराब भी यहाँ बहुत बनती है। कुल शराब का उत्पादन १ करोड़ ५० लाख गैलन से भी अधिक होता है।

निर्यात की विशेष वस्तुएँ—ऊन, मांस और खालें हैं। तिलहन, गेहूँ, मक्का, सन्तरे और इमारती पत्थर भी बाहर भेजे जाते हैं। तेल, पेट्रोल, कोयला, सूती वस्त्र, चीनी, लोहा, फौलाद तथा मशीनों का आयात किया जाता है। यहाँ का समुद्री व्यापार विशेषकर ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, अर्जेंटाइना तथा जर्मनी से होता है।

मांटीवीडियो—प्लाटा नदी पर स्थित है। रेलों का प्रमुख केन्द्र है। देश का वैदेशिक व्यापार यहीं से अधिकतर होता है। इस नगर में कई पशु-वध-केन्द्र (Slaughter Houses) हैं। १९४९ में यहाँ की जनसंख्या ७८०,००० थी।

पेसान्डू, साल्टो तथा मर्सीडीज अन्य नगर हैं।

९—पीरू

चिली के उत्तर में है। घरेलू युद्ध के कारण यहाँ उन्नति नहीं हो सकी। इसका क्षेत्रफल ५१४,०५९ वर्गमील और आबादी ८० लाख है। आबादी का औसत प्रति वर्गमील ११ व्यक्ति पड़ता है। यहाँ की आधी आबादी गोरों की और आधी इन्डियनों की है। भौगोलिक दृष्टिकोण से देश को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—(१) प्रशान्त महासागर की तटीय पट्टी, (२) तटीय पट्टी और एण्डीज के बीच के पठार, (३) पूर्व के वनाच्छादित प्रदेश। तटीय प्रदेश में प्रधानतया उन्नत धन्धा खेती है जिस पर यहाँ की ८० प्र.श. जनता निर्भर रहती है।

यहाँ पर आर्थिक साधनों की विभिन्नता है। ऊँचे पहाड़ी पठारों में सोना, चाँदी और ताँबा पाया जाता है। यहाँ पर खनिज तेल भी निकाला जाता है। सन् १९५१ में यहाँ पर खनिज तेल का उत्पादन २२ लाख मीट्रिक टन था। इसके बाद ताँबे का स्थान आता है, जिसका उत्पादन सन् १९५२ में ३१,२०० मीट्रिक टन था। पीरू संसार भर में सबसे अधिक वनाडियम उत्पन्न करता है। चीनी, कपास, तम्बाकू, मक्का, इण्डिया रबर तथा कहवा यहाँ की खेती की प्रमुख उपज है। यहाँ की सबसे गंभीर समस्या है यहाँ के अनुपस्थित पूँजीपति। यहाँ के तेल क्षेत्रों और अन्य खनिज पदार्थों पर संयुक्त राष्ट्र और कनाडा का अधिकार है। यहाँ की कपास की उपज जापानियों और जर्मनी के अधिकार में है। यहाँ की रेलें अंग्रेजों के हाथ में हैं। यहाँ के बैंकों के स्वामी इटली वाले हैं और चीनी के कारखानों के मालिक जर्मन लोग हैं। देश से निर्यात की प्रधान वस्तुएँ कपास, चीनी, खनिज पदार्थ और ऊन हैं। मशीनें, कपड़े और रसायन यहाँ पर बाहर से मँगाए जाते हैं।

लीमा—राजधानी तथा व्यापारिक केन्द्र है। १९४८ में यहाँ की आबादी ७,६७,०५४ थी।

प्रश्नावली

१. चिली को प्राकृतिक विभागों में विभाजित करिए और प्रत्येक का वर्णन कीजिए।

२. बोलीविया का भौगोलिक विवरण दीजिए।

३. भूमध्यरेखीय दक्षिण अमरीका के आर्थिक विकास में क्या बाधाएँ हैं ?

४. दक्षिणी अमरीका की उपज की आर्थिक वस्तुएं कौन-कौन हैं ? यूरोप महाद्वीप में भारतीय उपज की किन वस्तुओं से स्पर्धा रहती है ?

५. ब्राजील पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए और इसकी प्रमुख निर्यात वस्तुओं का विवरण दीजिए।

६. अर्जेन्टाइना के आर्थिक साधनों का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि किन-किन वस्तुओं के साथ ग्रेट ब्रिटेन में यह राज्य स्पर्धा करता है ?

७. अर्जेन्टाइना, चिली और ब्राजील के साथ होने वाले भारतीय व्यापार का वर्णन दीजिए। यह भी बतलाइए कि भविष्य में इस व्यापार में किस प्रकार हेरफेर की संभावनाएँ हैं ?

८. दक्षिणी अमरीका में भेड़ों के वितरण पर एक लेख लिखिए और बतलाइए कि किन प्राकृतिक दशाओं में यह पशु फलता-फूलता है ? अपने उत्तर को मानचित्र द्वारा स्पष्ट करिए।

९. दक्षिणी अमरीका के किन्हीं पाँच समुद्री बन्दरगाहों के नाम लिखिए और बतलाइए कि देश के किन भागों का व्यापार वहाँ से होता है ? प्रत्येक की निर्यातक वस्तुओं का भी हवाला दीजिए।

१०. दो अमरीका में से किसमें चावल की अत्यधिक उपज होने की संभावनाएँ हैं ?

अध्याय : : तेरह

अफ्रीका महाद्वीप

अफ्रीका संसार का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है और इसका क्षेत्रफल ११५ लाख वर्गमील है। सन् १९५० में यहाँ की कुल आबादी १८१० लाख थी।



चित्र ७२—अफ्रीका के राजनैतिक विभाग

यहाँ पर जनसंख्या का औसत घनत्व १४ व्यक्ति प्रति वर्गमील है। यहाँ पर वर्त्तमान और सम्भावित धन व साधन बहुत अधिक । इसकी भूमि, वनस्पति,

खनिज और मजदूर शक्ति बड़ी धनी है। इसके विस्तृत भूभाग समतल क्षेत्र हैं और केवल थोड़ा-सा भाग पहाड़ी है।) संसार की कुछ बहुत शक्तिशाली नदियाँ यहाँ पर हैं और जनशक्ति के दृष्टिकोण से इसका स्थान संसार में चौथा है। कच्चे माल जैसे कपास, सोना, हीरा, जस्ता, टीन, फासफेट, ऊन, रबड़, खाल, ग्रेफाइट, वनस्पति तेल, कोको और व्यापारिक लकड़ी के दृष्टिकोण से इसका मूल्य पश्चिमी यूरोप के उपनिवेश स्थापित करने वाले देशों के लिए सदैव बहुत अधिक रहा है। यूरोप और एशिया से यह जुड़ा हुआ है और प्राचीन काल में यहाँ के मिश्र देश का भूमध्यसागरीय सभ्यता में बहुत उच्च स्थान था परन्तु इस समय यह एक पिछड़ा हुआ महाद्वीप है। यहाँ की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक दशा सभी महाद्वीपों से गिरी हुई है। इस हीन दशा के कारण ये हैं—(१) समुद्र तट में कटानों और उत्तम पोताश्रयों का अभाव। अफ्रीका का तट बिल्कुल सपाट है और इसमें खाड़ियाँ नहीं हैं। यद्यपि अफ्रीका का क्षेत्रफल यूरोप का तिगुना है परंतु तट रेखा का विस्तार आधे से भी कम है। (२) (पर्वतमालाओं का घेरा जो इसे चारों ओर से घेरे हुए है और जिसके कारण यहाँ की नदियों में झरने और तेज बहाव पैदा हो गए हैं और मिट्टी उपजाऊ नहीं है। (३) जलवायु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अफ्रीका के उत्तर-पश्चिमी व दक्षिणी भागों में मरुस्थल हैं। यहाँ के अधिकतर प्रदेश उष्णकटिबन्ध में होने के कारण यहाँ की जलवायु सुस्ती पैदा करनेवाली है। इसी जलवायु के कारण आज भी अनेक भीतरी भागों की खोज नहीं हो सकी है। यहाँ अनेक रोग फैलते रहते हैं जिसके कारण देश की आर्थिक उन्नति में बाधा पड़ती है। (४) अफ्रीका के बहुत-से सम्भावित साधन उन ऊँचे पठारों पर उपलब्ध हैं जोकि किनारों से रेगिस्तान और दलदल द्वारा अलग पड़े हुए हैं। इन्हीं भौगोलिक व जलवायु सम्बन्धी दशाओं के कारण इस महाद्वीप की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति बहुत पिछड़ी हुई है। इन्हीं भौगोलिक तथा जलवायु सम्बन्धी कारणों से अफ्रीका महाद्वीप में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक उन्नति नहीं हो सकी है।)

अफ्रीका की समस्याएँ—अफ्रीका की आर्थिक उन्नति में आजकल अनेक बाधाएँ हैं। अफ्रीका का आर्थिक विकास उसी समय सम्भव हो सकता है जब इसकी यातायात सम्बन्धी समस्याओं को हल कर लिया जाय। ये बाधाएँ निम्नलिखित हैं—(१) वस्तुओं को लाने और ले जाने के लिए अच्छे मार्गों की कमी और अधिक व्यय के कारण अफ्रीका के भीतरी भागों से व्यापार में बाधा पड़ती है। यद्यपि कुछ रेलें बन भी गई हैं, परन्तु प्रगति बहुत धीमी है। यहाँ की अधिकतर रेलें दक्षिणी अफ्रीका संघ में केन्द्रित है। (अन्दर के कुछ भाग सड़कों द्वारा पहुँचे जा सकते हैं लेकिन अन्दर के बहुत-से भाग घने जंगलों, रोगों और घातक पशुओं के कारण पहुँचे नहीं जा सकते।) इस महाद्वीप में बहुत-सी बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं जिनमें साल भर बराबर पानी भरा रहता है परन्तु केवल नील को छोड़कर अन्य सभी नदियाँ उष्ण कटिबन्ध के अवनत क्षेत्रों से होकर बहती हैं। नील नदी

में बहुत-से जल-प्रपात पाये जाते हैं और वर्षा ऋतु में इसमें बाढ़ आ जाती है। (२) अफ्रीका में विदेशी तैयार माल की माँग बहुत कम है। यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर नीचा होने से इन लोगों को अच्छे वस्त्रों, मकानों और सामान की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। संसार की मंडियों में अफ्रीका के माल की माँग नहीं है। (यहाँ की उष्ण कटिबन्धीय उपज अर्थात् नारियल का तेल, गोला, कोको और रबर इत्यादि वस्तुएँ अफ्रीका की अपेक्षा दक्षिण-पूर्वी एशिया, इन्डोनेशिया, पश्चिमी द्वीपसमूह और दक्षिणी अमरीका से आसानी से प्राप्त हो सकती हैं और जब तक ये देश इन वस्तुओं की पूर्ति करते रहेंगे अफ्रीका से मँगाने की आवश्यकता ही क्या पड़ेगी ? अफ्रीका के भूमध्यरेखीय भागों के विकास से भारत के वैदेशिक व्यापार की कुछ हानि हो सकती है क्योंकि तब भारत और श्रीलंका के कहवे, गोले और रबर आदि को ग्रेट ब्रिटेन में मध्य अफ्रीका की वस्तुओं से मुकाबला लेना पड़ेगा। परन्तु यह बात मध्य अफ्रीका के यातायात के साधनों की उन्नति पर निर्भर होगी।) (३) मजदूरों की कमी है। गोरे लोग तो यहाँ के उष्ण भागों में काम नहीं कर सकते और हबशियों की आवश्यकताएँ कम हैं। पूर्वी अफ्रीका में तो कुछ एशियाई और भारतीय मजदूरों द्वारा इस कठिनाई को दूर किया गया है। पश्चिमी अफ्रीका में वहीं के निवासी काम पर लगाये गये हैं परन्तु ये लोग मूर्ख, वहमी और सुस्त हैं और उनके रहन-सहन का ढंग भी स्वास्थ्य नियमों के अनुसार नहीं है।

खेतिहर और खनिज उत्पादन

सन् १९३९ के बाद से अफ्रीका में वस्तुओं का उत्पादन बढ़ा है, विशेषकर रसदार फल, मूँगफली, रबड़ और चीनी का उत्पादन काफी तरक्की कर गया है।

अफ्रीका महाद्वीप में केवल तीन प्रदेशों में उन्नति हुई है। वे हैं—(१) अल्जीरया और ट्यूनिस के फ्रांसीसी उपनिवेश—यहाँ भूमध्यसागरीय जलवायु के कारण गोरे लोग बस गए है और सुविधापूर्वक कार्य करते हैं; (२) मिस्र तथा (३) दक्षिणी अफ्रीका। अन्य भाग बहुत पिछड़े हुए हैं, यद्यपि वहाँ पर आर्थिक विकास के साधनों की कमी नहीं है।

अफ्रीका की कृषि उपज (१९५०)

(हजार मीट्रिक टन में)

वस्तु	मात्रा	वस्तु	मात्रा
रसदार फल	७१७	रबड़	१८,७८,६९९
कोको	७७०	सीसल	३१०
कहवा	२,१००	चीनी	२३,१००
कपास	५,२६०	चाय	५५०
मूँगफली	१०,२००	तम्बाकू	३,१००
ताड़ के तेल की वस्तुएँ	८७३	ऊन	१,८७१

अफ्रीका के मुख्य खनिज (१९५०)
(हजार मीट्रिक टन में)

वस्तु	मात्रा	संसार का प्र. श.
सुरमा	१०,७६१	२८.३
एसबेस्टोस	१७४	१६.४
क्रोम	३७६	४७.०
कोयला	३०,०३५	२
कोवल्ट	६,२०८	८७.४
ताँवा	५००	२२.२
हीरे (हजार कैरट)	१४,८६६	९४.४
सोना (हजार औंस)	१३,४३६	५५.४
लोहा	३,९३१	४.२
जस्ता	१२९	६.८
मैंगनीज	८२०	५४.२
फोसफट	६,१५५	३१.९
चाँदी	२४९	४.७
टीन	२४	१४.४
शीशा	१०८	७.२

अफ्रीका के छ: राजनैतिक विभाग हैं—(१) ब्रिटिश अफ्रीका, (२) फ्रांसीसी अफीका, (३) बैल्जियन अफ्रीका, (४) पोर्तुगीज अफ्रीका, (५) इटालियन अफ्रीका और (६) स्वतन्त्र राज्य।

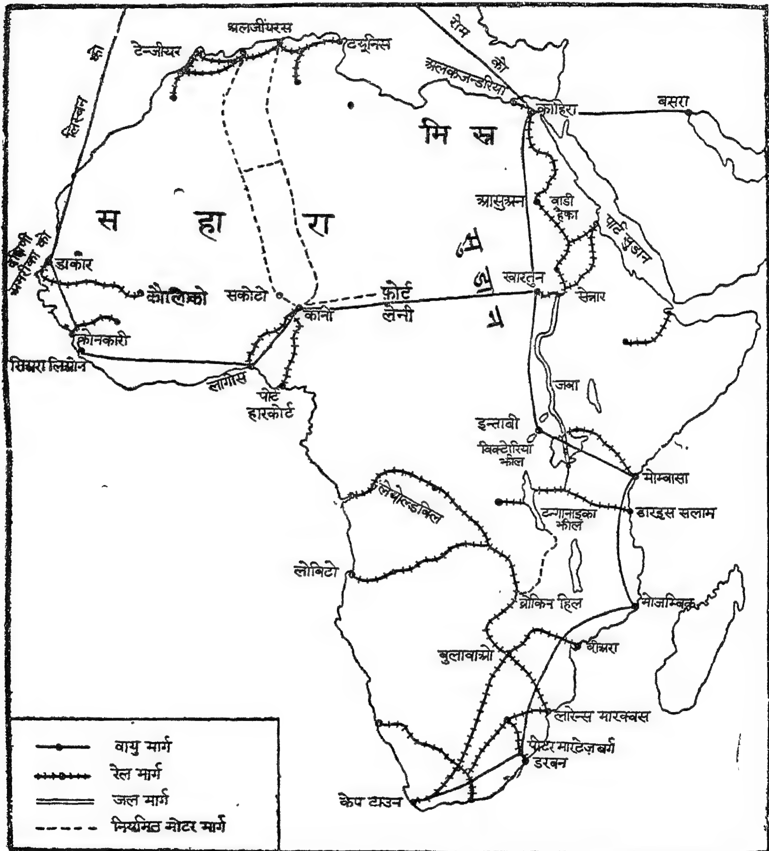
ब्रिटिश अफ्रीका के भी तीन भाग हैं—(१) ब्रिटिश पूर्वी अफीका, (२) ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका तथा (३) ब्रिटिश दक्षिणी अफ्रीका।

अफ्रीका की आबादी कुल १८१० लाख है जिसमें आधे के लगभग मुसलमान हैं। यहाँ पर गोरों की संख्या ३५ के पीछे १ पड़ती है। अफ्रीका के आदि लोगों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(१) बौने, (२) हब्शी, (३) हैमाइट। बौने अपने रहन-सहन में बहुत पिछड़े हैं और अधिकतर कान्गो बेसिन में पाये जाते हैं। वे खेती नहीं करते बल्कि शिकार करके अपना पेट पालते हैं। हब्शी लोग सहारा के दक्षिण से केप प्रदेश तक फैले हैं और सवाना घास के मैदानों में उनकी संख्या विशेष अधिक है। उनके गाँव हैं, और खेती करते हैं। हैमाइट लोग सबसे अधिक सभ्य हैं और उनके रहन-सहन का स्तर भी ऊँचा है। अफ्रीका के उत्तरी भाग में वे विशेषकर रहते हैं और अधिकतर मुसलमान धर्म को मानते हैं।

ब्रिटिश पश्चिमी अफ्रीका

इस भाग में गैम्बिया, सियरा लियोन, गोल्डकोस्ट तथा नाइजीरिया सम्मिलित हैं। इसका क्षेत्रफल ३,७१,३९३ वर्गमील तथा १९४६ के अनुसार जनसंख्या २,३०,००,००० है। यहाँ की हानिकारक जलवायु, रोगों का प्रकोप, आवागमन के मार्गों की कमी और बन्दरगाहों का अभाव यहाँ के आर्थिक विकास में बाधक हैं। पश्चिमी अफ्रीका में तो प्राकृतिक पोताश्रय न होने से माल लादने और उतारने



चित्र ७३—अफ्रीका मे यातायात के साधन

की बड़ी समस्या है। किनारा सपाट और रेतीला होने से बड़े जहाज काफी दूरी पर लंगर डालते हैं और माल और मनुष्य डोंगियों द्वारा किनारे तक लाये और ले जाये जाते हैं। अब गोल्डकोस्ट में टकोरादी (Takoradi) पोताश्रय बनाया गया है। यहाँ गोरे लोग काम नहीं कर सकते इसलिए यहीं के निवासी काम पर लगाये जाते हैं।

गैम्बिया—यहाँ की भूमि और जलवायु मूँगफली की उपज के लिए उत्तम है। यही लोगों का मुख्य धंधा है। गोरे लोग यहाँ नहीं रहते, देसी लोग ही खेती करते हैं। यहाँ की प्रधान उपज तो मूँगफली ही है परन्तु चावल, मक्का और कपास भी खूब पैदा होती है। बाथरस्ट राजधानी है।

गोल्डकोस्ट—गिनी की खाड़ी पर स्थित है और इसके पश्चिम में फ्राँसीसी आइवरी कोस्ट, उत्तर में फ्राँसीसी सूडान, पूर्व में टागोलैण्ड और दक्षिण में समुद्र है। इसका क्षेत्रफल ९२००० वर्गमील है और जन संख्या ४५ लाख है। इसकी तटरेखा ३३४ मील लम्बी है। यह भाग कृषि और वन साधनों से सम्पन्न है। अधिकतर निवासी किसान हैं। कोको, नारियल का तेल, नारियल इत्यादि प्रधान उपज की वस्तुएँ हैं। रबर और कपास भी थोड़ी-बहुत होती है। मेहोगनी की लकड़ी का निर्यात होता है। सोना, मैंगनीज और हीरे भी यूरोपियन लोग निकालते हैं। सड़कें भी बन गई हैं और मोटर योग्य सड़कों की लम्बाई ६४०० मील हैं। नदियाँ नाव चलाने योग्य नहीं हैं। रेल मार्ग कुल ५०० मील लम्बा है। **कुमासी, अका** और **सकोन्डी** प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हैं। सफल औद्योगिक विकास के दृष्टिकोण से गोल्डकोस्ट में तीन महत्वपूर्ण तत्वों की कमी है। वहाँ न तो पानी है और न अच्छी यातायात व्यवस्था। सस्ती औद्योगिक शक्ति की भी कोई व्यवस्था नहीं है फिर भी अपने औद्योगीकरण के लिए यह देश महान् प्रयत्न कर रहा है। वोल्टा नदी घाटी योजना में इस नदी का पानी बाँध बनाकर रोक लिया जायेगा और इस प्रकार जलविद्युत तैयार की जायेगी तथा सिंचाई होगी।

सियरा लियोन—इस देश का दक्षिणी और पश्चिमी भाग चपटा और नीचा है और उत्तरी तथा पूर्वी भाग ऊँचा और टूटा फूटा है। चावल यहाँ की मुख्य उपज और यहाँ के निवासियों के भोजन की मुख्य वस्तु है। अन्य प्रमुख भोजन की वस्तुएँ मक्का, बाजरा, मूँगफली तथा नारियल हैं। नारियल का तेल और उसकी बनी वस्तुएँ, कोला, अदरख, कोको, कहवा, तथा मिर्चें यहाँ से बाहर भेजी जाती हैं। यहाँ पर लोहा, हीरा, सोना, और प्लेटिनम आदि खनिज पदार्थ मिलते हैं। परन्तु इनका व्यापारिक लाभ नहीं उठाया जा रहा है। यहाँ पर बड़े-बड़े कारखानों की कमी है परन्तु कपड़ा बुनना और चटाई बनाना आदि कुटीर उद्योग होते हैं। ये वस्तुएँ घरेलू उपयोग के लिए बनती हैं।

फ्रीटाउन—प्रसिद्ध व्यापारिक मंडी है और प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे पर एक प्राकृतिक पोताश्रम पर बसा हुआ है।

नाइजीरिया का क्षेत्रफल ३७३,००० वर्गमील है और यहाँ की आबादी २५० लाख है। इस प्रदेश की मुख्य उपज कोको, ताड़, मूँगफली, महोगनी और गोंद है। यहाँ के आदि निवासियों ने लोहा, सीसा और टीन की खानें खोद निकाली हैं। यहाँ पर चाँदी, मैंगनीज, लिगनाइट और मोनाजाइट का भंडार भी निहित है। यहाँ के प्रसिद्ध बन्दरगाह लाओस, बारा, बुरुटू और विक्टोरिया हैं। बहुत-सी नदियों व खाड़ियों से यहाँ की यातायात व्यवस्था बनती है। यहाँ पर

१५०० मील लम्बा रेलमार्ग है, जिस पर सन् १९१९ में १३ लाख टन माल ढोया गया।

लाशोत यहाँ की राजधानी है।

ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका

पूर्वी अफ्रीका में अंग्रेजों का साम्राज्य अंग्रेजों के आधीन मिश्री सूडान से दक्षिणी अफ्रीकी संघ तक फैला हुआ है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल २,२४,९६० वर्गमील और आबादी २०० लाख है। जिसमें २४,००० यूरोपियन हैं। युगान्डा, कीनिया, टैंगानीका तथा न्यासालैंड उष्ण कटिबंध में स्थिति हैं परन्तु इन भागों की ऊँचाई ४,००० से ६,००० फीट तक होने के कारण यहाँ यूरोपियन स्थायी रूप से बस गए हैं। इसी कारण इस भाग में बड़ी उन्नति हो गई है। अधिकतर खेती का काम गोरे लोगों के हाथ में है। यहाँ के देशी लोगों से ये लोग खेती में सहायता लेते हैं। कहवा, चाय, मक्का, सीसल (पटुआ) और गेहूँ यहाँ की प्रधान उपज है। डेरी की वस्तुएँ और ऊनी वस्त्र यहाँ बनाये जाते हैं और चमड़ा काफी मात्रा में बाहर भेजा जाता है। पिछले कुछ दिनों में इस भाग में महान् परिवर्तन हुए हैं।

युगान्डा—युगान्डा का क्षेत्रफल ९३,९८१ वर्गमील है। इसके अंतर्गत विक्टोरिया नयान्जा, एडवर्ड, जार्ज, अलबर्ट, कियोगा सेलसबरी झीलों का कुछ भाग और नील की घाटी का ऊपरी भाग स्थित है। वास्तव में ये झीलें और नदियाँ कुल क्षेत्रफल के १३, ६८० वर्गमील में फैली हुई हैं। सन् १९४८ की जनगणना के अनुसार यहाँ की आबादी ५० लाख है। यह प्रदेश एक ऊँचे प्लेटो पर स्थित है। यहाँ का जलवायु सम है और यहाँ का तापक्रम वर्ष भर लगभग समान ही रहता है। यहाँ के लोगों का मुख्य साधन खेती है। खेती करना और पशु पालना ही यहाँ के देसी तथा यूरोपीय लोगों के प्रधान धंधे हैं। इस देश की समृद्धि का प्रधान साधन कपास की फसल है। इसके साथ-साथ सड़कों और रेलों के विकास, नगरों की स्थापना आदि के कारण भी पिछले वर्षों में यहाँ पर काफी तरक्की हुई है। सन् १९५० में युगान्डा की १६ लाख एकड़ भूमि पर कपास उगायी गयी और कुल उत्पादन ३३०,००० गांठ था। ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में भारत को छोड़कर सबसे अधिक कपास युगान्डा में ही उत्पन्न होती है। तम्बाकू, कहवा, चाय और रबर आदि भी पैदा होते हैं। टीन, सोना और नमक भी प्राप्त होते हैं। दक्षिणी युगान्डा की म्वीरासांडू (Murrasandu) नामक टीन की खान में ५०० आदमी काम करते हैं। यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार के सुन्दर दृश्यों और पशुओं को देखने के लिए अनेक यात्री आते रहते हैं। शिकार के लिए कुछ क्षेत्र अलग सुरक्षित कर दिये गये हैं। यहाँ पर रेलों, सड़कों, नदियों और हवाई जहाजों के मार्ग भी हैं।

ऐन्टेब—राजधानी है। **कम्पाला** एक व्यापारिक केन्द्र है। **जिंजा** विक्टोरिया झील पर एक बन्दरगाह है।

कीनिया—पूर्वी अफ्रीका में यह एक बड़ा राज्य है। यहाँ की आबादी ५३ लाख और क्षेत्रफल २२०,००० वर्गमील है। इसका उत्तरी भाग जिसमें देश का तीन-पाँचवाँ भाग सम्मिलित है, सूखा और बंजर है। इसका दक्षिणीभाग एक पतली पट्टी है जिसमें नीची भूमि और एक पठार सम्मिलित है—पठार ४,००० से १०,००० फीट ऊँचा है। दक्षिणी भाग में ही सब फसलें पैदा होती हैं। खेती प्रधान धंधा है। कहवा, मक्का, गेहूँ, चाय, चीनी और नारियल मुख्य उपज है। कीनिया की खेती में कुछ बाधाएँ अवश्य हैं। (१) उपजाऊ प्रदेश अधिकतर समुद्रतट से दूर हैं। वस्तुओं को इधर-उधर लाने ले जाने में अधिकतम व्यय होता है क्योंकि सभी वस्तुएं मंडियों में पहुँचाने के स्वेज नहर के मार्ग से आती जाती हैं। इस मार्ग में कर (Tax) अधिक पड़ता है। यहाँ की सभी आवश्यकताएं यहीं से पूर्ण हो जाती हैं और आसपास के देशों को कुछ वस्तुओं का निर्यात भी किया जाता है। डेरी की वस्तुएं यूरोप को भेजी जाती हैं :

नैरोबी—राजधानी है। **मोम्बासा**—प्रसिद्ध बन्दरगाह है।

टैंगानीका—यह देश प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व जर्मनी के अधिकार में था और जर्मन पूर्वी अफ्रीका कहलाता था। अफ्रीका का यह एक बहुत प्राचीन देश है। इस देश का क्षेत्रफल जर्मनी, डेनमार्क, हालैंड, बैल्जियम और ग्रेट ब्रिटेन के संयुक्त क्षेत्रफल से भी अधिक है। यहाँ का मुख्य धंधा और आय का मुख्य साधन खेती है। पशु भी पाले जाते हैं। यूरोपीय और यहाँ के निवासी सभी इन दोनों धंधों को करते हैं। सीसल पटुआ, कहवा, चाय, तम्बाकू, नारियल, गेहूँ और जौ की खेती होती है। टैंगानीका के असली निवासियों का पशुपालन भी विशेष उद्यम है। अभ्रक, टीन, कोयला, मैंगनीज और हीरे भी यहाँ पाये जाते हैं। यहाँ से निर्यात की मुख्य वस्तु सीसल पटुआ है। इसके बाद मूल्य में हीरों का नम्बर है। यहां की हीरे की खान दुनिया भर में सबसे बड़ी है। १९४७ में यहाँ पर १० लाख पौंड के मूल्य के हीरे निकाले गए थे।

यहाँ यातायात के साधनों की कमी है। केवल दो ही रेलें हैं—(१) केन्द्रीय रेल मार्ग, टैंगानीका झील से दारस्सलाम तक और (२) एक छोटी लाइन मोशी से टोंगा बन्दरगाह तक कहवा तथा सीसल पहुँचाने के लिए।

दारस्सलाम प्रसिद्ध बन्दरगाह और राजधानी है।

जैंजीबार और पैम्बा—ये दोनों द्वीप टैंगानीका से कुछ दूर समुद्र में हैं। दोनों ही द्वीप समतल हैं। जलवायु उष्ण होते हुए भी यूरोपियनों के लिए अस्वास्थ्यकर नहीं है। निर्यात के लिए खेती की उपज केवल लौंग और नारियल हैं। इन द्वीपों में आवागमन सड़कों और जलमार्गों द्वारा होता है। रेलें यहाँ नहीं हैं। पहले जैंजीबार पूर्वी किनारे का प्रसिद्ध बन्दरगाह था। परन्तु मोम्बासा और दारस्लाम की उन्नति के साथ-साथ इसके व्यापार में कमी होती जा रही है।

न्यासालैंड और रोडीशिया राष्ट्र संघ

यह चारों ओर से स्थलखंड द्वारा घिरा हुआ संघ राष्ट्र है जो ब्रिटिश संसद के एक विधान द्वारा सन् १९५३ में बना। इस संघ के अन्तर्गत रोडीशिया और न्यासालैंड शामिल है तथा इसका क्षेत्रफल ४७८००० वर्गमील है। यहाँ पर ७० लाख व्यक्ति निवास करते हैं। यद्यपि यह संघ उष्ण कटिबंध में स्थित है इसका अधिकतर भाग समुद्र तल से ३००० से ५००० फीट तक की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार यहाँ पर उपलब्ध खनिज पदार्थ हैं। ताँबा, एसबेस्टोस, सोना, जस्ता, सीसा, कोयला और क्रोम यहाँ के प्रमुख खनिज हैं। यहाँ का विदेश व्यापार प्रधानतया संयुक्त राज्य, संयुक्त राष्ट्र अमरीका और दक्षिणी अफ्रीका से है।

न्यासालैण्ड—यह एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ पर गोरे और काले लोगों का मुख्य धंधा खेती ही है। यहाँ की मुख्य उपज तम्बाकू, चाय, सीसल, कपास, कहवा और रबर है। देश में सोना, ताँबा, लोहा, अभ्रक, कोयला और मैंगनीज आदि खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। यहाँ की जलवायु यूरोपियनों के लिए उत्तम है। यह उपनिवेश किनारे से १३० मील दूर है।

जोम्बा—यहां की राजधानी है।

उत्तरी रोडेशिया—यह एक विस्तृत अंग्रेजी राज्य है। यह कांगो और जैम्बीसी नदी के जलविभाजक स्थान पर स्थिति है। इस देश में अधिकतर अफ्रीका के ऊँचे पठार सम्मिलित हैं परन्तु जैम्बीसी, काफू और लोंगवा नदियों की घाटियाँ भी इसी में सम्मिलित हैं। यहाँ के पठारों पर भी अधिक गर्मी पड़ती है और यहाँ यूरोपियन लोगों के लिए उपयुक्त जलवायु नहीं है। यहाँ पर यूरोपियन लोग स्थायी रूप से रहते हैं और व्यापार इत्यादि काम करते हैं। यहाँ पर खेती और पशु-पालन के सुन्दर साधन हैं। यहाँ की मुख्य फसलें कपास, मक्का, गेहूँ और तम्बाकू हैं। यहाँ के भिन्न भागों में सुअर, भेड़, बकरियाँ और चौपाये पाले जाते है। खानें खोदने का कार्य अभी प्रारम्भिक दशा में है। यहाँ पर कोयला, ताँबा, सोना, जस्ता और टीन निकाले जाते हैं।

पैम्बा और लसाका—ये दोनों ही नगर व्यापार के केन्द्र हैं।

दक्षिणी रोडेशिया—उत्तरी रोडेशिया की अपेक्षा अधिक उन्नत है। यह अधिकतर एक ऊँचा पठार है और यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है। यहाँ पर खनिज पदार्थों की प्रचुरता है। इन्हीं खनिज पदार्थों के कारण यहाँ लोग बस गए हैं। सोना सबसे अधिक और अनेक स्थानों में पाया जाता है। क्रोमियम भी व्यापक रूप में पाया जाता है और इसके उत्पादन में रोडेशिया का स्थान बहुत ऊँचा है। चाँदी, सीसा, लोहा, ताँबा, कोयला और टीन भी यहाँ निकाले जाते हैं। यह देश कृषि और पशुपालन के लिए बड़ा उपयुक्त है। तम्बाकू, मक्का और कपास यहाँ की मुख्य फसलें हैं। पशुपालन का धंधा कृषि से भी अधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ

के सुन्दर घास के मैदानों में सभी जगह पशु पाले जाते हैं। यहाँ पर ग्रेट ब्रिटेन से उत्तम जाति के पशु मँगाकर पशुओं की नस्ल सुधारने में उल्लेखनीय कार्य हो रहा है।

बुलावेयो और सेलिसबरी यहाँ के प्रसिद्ध नगर हैं।

ब्रिटिश सोमालीलैंड—यह एक छोटा सा देश है जो ऐरीट्रिया और इटालियन सोमालीलैंड के मध्य लाल सागर पर स्थित है। इनका अधिक महत्त्व तो कुछ नहीं है परन्तु राजनैतिक दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अपनी स्थिति के कारण यह लाल सागर पर अधिकार किए हुए है। यहाँ की स्थानीय आवश्यकना के लिए जौ और मक्का आदि फसलें पैदा की जाती हैं। यहाँ के लोगों का मुख्य धन भेड़ें और पशु ही हैं।

बरबरा तथा जेला—यहां के मुख्य नगर हैं।

सूडान—सन् १९५३ से सूडान में स्वायत्त शासन स्थाई हो गया है। ब्रिटिश और मिश्री सरकारों ने एक समझौते द्वारा यह तय किया है कि सन् १९५७ तक सूडान को स्वतंत्र कर दिया जाय। दिसम्बर सन् १९५५ में नये चुनाव द्वारा नियुक्त संसद ने स्वतंत्र होने का निश्चय कर लिया और अब सूडान एक स्वतंत्र राष्ट्र है। यहाँ का क्षेत्रफल ९६७,५०० वर्गमील है और ८९ लाख लोग रहते हैं। देश का उत्तरी आधा भाग घास का मैदान और रेगिस्तान है। वहाँ केवल सिंचाई की सहायता से ही खेती हो सकती है। सूडान के दक्षिणी आधे भाग में काफी वर्षा होती है और वहाँ पर जंगल तथा दलदल पाये जाते हैं। यहाँ की जलवायु भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न प्रकार की होने से यहाँ की उपज भी अनेक प्रकार की है। सबसे मुख्य उपज कपास की है। यहां से निर्यात की वस्तुओं में ७९ प्र. श. भाग कपास ही होती है। कपास की खेती नीली और सफेद नील के बीच के उपजाऊ प्रदेश में जिसे जजीरा (Gazeira) कहते हैं सबसे अधिक होती है। इस प्रदेश में हाल ही में नीली नील के सैनर स्थान पर बाँध बनाकर सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। नील की घाटी के खार्तुम के उत्तरी भाग में भी कपास उत्पन्न होती है। दक्षिणी भाग में रबर और बहुमूल्य लकड़ी के विशाल वन हैं। यहां से संसार को गोंद प्राप्त होती है और सन् १९४९ में ३४,००० टन गोंद बाहर भेजी गई। सूडान का मध्य भाग एक विस्तृत घास का मैदान है जिसमें कृषि और पशुपालन का धंधा होता है। मध्य भाग से रबर, कहवा और गोंद भी प्राप्त होते हैं। व्यापार का प्रसिद्ध मार्ग नील नदी है। रेल मार्ग हैफा से आबू हमीद होता हुआ खार्तुम तक गया है। खार्तुम से एक लाइन लाल सागर स्थित पोर्ट-सूडान तक गई है। सूडान में चीनी, मशीनें, धातु, सूती कपड़े, गाड़ियाँ तेल और गेहूं का आयात किया जाता है। कपास, गोंद और नमक निर्यात की मुख्य वस्तुएं हैं। सन् १९४९ में आयात और निर्यात का ब्योरा इस प्रकार था—

आयात—

प्रदेश से	प्रतिशतांश
ग्रेट ब्रिटेन	३३
मिश्र	१६
भारत-पाकिस्तान	१५

निर्यात—

प्रदेश को	प्रतिशतांश
ग्रेट ब्रिटेन	६६
मिश्र	१३
भारत-पाकिस्ता.	१२

खार्तुम तथा अलश्रोवेद प्रसिद्ध नगर हैं।

दक्षिण अफ्रीकी संघ

विस्तार तथा निवासी—इस संघ में केप आफ गुड होप, नैटाल, ओरेंज फ्री स्टेट तथा ट्रांसवाल सम्मिलित हैं। इसका सम्पूर्ण क्षेत्रफल ४,७२,४९४ वर्गमील और १९५१ के अनुसार आबादी १ करोड़ १६ लाख है। इसमें २६ लाख गोरे, ७० लाख काले, सवा चार लाख इन्डियन और ३४,००० मलाया निवासी हैं। मलाया के निवासी उन दासों की सन्तान हैं जो कि १७ वीं शताब्दी में यहाँ मलाया से लाये गये थे।

यहाँ की जलवायु गोरे लोगों के लिए स्वास्थ्यप्रद है। गोरे लोगों के यहाँ बस जाने से रंग-भेद की समस्या उत्पन्न हो गई है, क्योंकि अन्य जातियाँ यहाँ पहले ही से बसी हुई हैं। दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका जो पहले जर्मनी के अधिकार में था अब संघ के ही शासन में है।

सोने और हीरे की खानें—अफ्रीका के इस ब्रिटिश राज्य की आर्थिक उन्नति का कारण यहाँ के खनिज पदार्थ हैं। यह भाग खनिज पदार्थों का अपार भंडार है—

दक्षिणी अफ्रीकी संघ में खनिज उत्पादन
(१९५२)

सोना	११८ लाख औंस
चाँदी	१२ लाख औंस
प्लेटिनम	२ लाख औंस
कच्चा लोहा	१२ लाख टन
मैंगनीज	१० लाख टन
कोयला	३१० लाख टन
जवाहरात	२३ लाख कैरट

यहाँ पर अधिकतर सोना और हीरे पाए जाते हैं। हीरों का तो दक्षिण अफ्रीका ही एकमात्र भंडार है और संसार का आधा सोना भी यहीं से प्राप्त होता

है। अभी तक यहां के आर्थिक ढाँचे का आधार विशेष रूप से सोना ही रहा है परन्तु भविष्य में इसके उत्पादन की कमी से यही आधार डाँवाडोल हो सकता है। अब धीरे-धीरे और उद्योग-धन्धों को नया आधार बनाया जा रहा है परन्तु यदि सोने की खानें शीघ्र ही समाप्त हो गईं तो ये नवीन आधार आर्थिक भार उठाने में सफल सिद्ध नहीं होंगे। यही गम्भीर समस्या आजकल अफ्रीकी संघ के सामने है। हीरों का सबसे प्रसिद्ध क्षेत्र किम्बरले, केप प्रान्त में है। दक्षिणी अफ्रीका में मैंगनीज बहुत मिलता है। मैंगनीज की बड़ी खानें भी केप प्रान्त में ही हैं। मछली व्यवसाय भी अफ्रीका की आय का एक सम्भावित साधन हो सकता है। परन्तु अभी तक इसका पूर्ण विकास नहीं हो सका है।

दक्षिणी अफ्रीकी संघ में करीब २१५० लाख एकड़ भूमि पर खेती होती है। खेती की प्रधान उपज गेहूँ, जौ, जई, आलू और काफिर अनाज है। अन्य उपज तम्बाकू, चाय और गन्ना है।

सन् १९५२ में संघ में करीब १३,३९४ मील लम्बा रेल मार्ग था। बहुत-सी अच्छी सड़कें हैं जिन पर मोटर चलाई जा सकती हैं। यहाँ पर आन्तरिक हवाई यातायात की भी व्यवस्था है। लारेन्स, मारक्वेस, पूर्वी अफ्रीका और रोडेशिया के लिए प्रादेशिक हवाई उड़ानें भी होती हैं। जोहेन्सवर्ग महत्त्वपूर्ण हवाई बन्दरगाह है।

केप आफ गुड होप प्रान्त—यहाँ पर चरागाहों की अधिकता है। मजदूरों और जाति भेद की समस्या, खेती में कठिनाई तथा यातायात की असुविधाओं के कारण यहाँ पर आर्थिक उन्नति नहीं हो सकती है। यहाँ कोई प्राकृतिक पोताश्रय नहीं है और नदियों द्वारा व्यापार नहीं हो सकता। इसके दक्षिण-पश्चिम भागों की भूमध्यसागरीय जलवायु में फल उगाए जाते हैं। यहाँ खनिज पदार्थों विशेषकर हीरों की प्रचुरता है। संसार के ९० प्र० श० हीरे किम्बरले में प्राप्त होते हैं। गेहूँ, जई, राई, तम्बाकू और बाजरा खेती की मुख्य उपज हैं।

केप टाउन—कोयले का बन्दरगाह और राजधानी है। यह रेलों का केन्द्र है और भिन्न-भिन्न समुद्री व्यापारिक मार्गों का मिलन-स्थान है। यहाँ की ४८ लाख आबादी में ९,३६,००० गोरे लोग हैं। टेबल खाड़ी जहाजों के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान करती है और पृष्ठ-प्रदेश फलों से पूर्ण है।

नेटाल—यह देश सदा हरा-भरा रहता है। और इसीलिए इसको दक्षिणी अफ्रीका का बगीचा कहते हैं। नेटाल प्रान्त का क्षेत्रफल ३५०,००० वर्गमील और जनसंख्या २४ लाख है। यहाँ की जलवायु उपोष्णीय है परन्तु केवल किनारे वाले भागों में। अन्दर जाने पर ठंडक बढ़ जाती है। इस कारण यहाँ पर यूरोपियन लोगों के बसने की सुविधा है। यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा खेती करना है। यहाँ पर गन्ना, चाय, तम्बाकू, मक्का, कहवा, कपास, चावल और केले की व्यापक खेती होती है। कोयला यहाँ का मुख्य खनिज पदार्थ है। यह सर्वोत्तम श्रेणी का होता है। यहाँ पर भारतीयों की आबादी काफी है गोरों की कम। १८६० में

दास प्रथा का अन्त हो जाने से पहले-पहल भारतीय कुली नेटाल में मजदूरों की कमी के कारण बुलाए गए थे।

डरबन—एक व्यापारिक केन्द्र तथा मुख्य बन्दर है।

पीटरमेरिट्सबर्ग—राजधानी है।

ट्रांसवाल—इस प्रान्त का क्षेत्रफल ११०,००० वर्गमील है और यहाँ की जनसंख्या ४८ लाख है। यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा खान खोदना है। सोना, कोयला, लोहा, हीरे, प्लेटिनम, सीसा, चाँदी, टीन और ताँबा यहाँ के मुख्य खनिज पदार्थ हैं। **जोहन्सबर्ग के पश्चिम स्थित विटवाटर्स रैंड अपनी सोने की विशाल राशि के कारण आजकल बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। यहाँ की चट्टानें सोने के जर्रों से भरी हुई हैं। सस्ते देसी मजदूरों और कोयले की समीपता के कारण इस रैंड प्रदेश में सुवर्ण उद्योग में महत्वपूर्ण उन्नति हुई है।** १९५० में दुनिया भर के सोने का ३५ प्र० श० भाग यहीं से प्राप्त हुआ था। यहाँ कोयला उत्तम श्रेणी का नहीं है फिर भी देश की औद्योगिक उन्नति में इससे बड़ी सहायता मिली है। हीरे की खान प्रीटोरिया के समीप है। गन्ना, कपास और तम्बाकू प्रधान उपज की वस्तुएँ हैं। ऊँचे वैल्ड में जहाँ भेड़-बकरियां असंख्य हैं, पशुपालन का धन्धा होता है।

प्रीटोरिया—राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या २३५,००० है और ४,५०० फीट की ऊँचाई पर बसा है। औसतन नमी अधिक रहती है। हाल में इस्पात का उद्योग उन्नति कर गया है।

जोहन्सबर्ग—दक्षिणी अफ्रीका का सबसे बड़ा नगर और सुवर्ण उद्योग का केन्द्र है।

ऑरेंज फ्री स्टेट—यहाँ की जलवायु शीतोष्ण है और देश चरागाह प्रधान है। ऊँचे वैल्ड और प्रान्त के पूर्वी भागों के घास के मैदानों में चौपाये और भेड़ें पाली जाती हैं। यहाँ पर दुग्धशाला उद्योग भी होता है। अब कृषि पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। दक्षिण-पूर्वी भागों में केलेडन नदी के बेसिन में गेहूँ खूब पैदा होता है और इस भाग को 'दक्षिण-अफ्रीका का अन्न भण्डार' कहते हैं। यहाँ मक्का और मोटा अनाज भी उत्पन्न होते हैं। खनिज पदार्थों की कमी है। यहाँ की आबादी ८४,००० है।

ब्लोमफोन्टेन—राजधानी, प्रधान व्यापारिक नगर और रेलों का प्रसिद्ध केन्द्र है।

दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका—१९१८ तक यह जर्मनी के अधिकार में था। इस प्रदेश में पशुपालन का धंधा प्रसिद्ध है। **बसूटोलैंड**—पहाड़ी प्रदेश है। यहां की जलवायु खेती और पशुपालन दोनों ही धंधों के अनुकूल है। बेचुआनालैंड में सारी आबादी देसी लोगों की है। इस प्रदेश का मुख्य धन चौपाये, भेड़ें और बकरियाँ हैं।

मिस्र देश

व्यापार के दृष्टिकोण से इस देश की स्थिति बड़ी अनुकूल है। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक राजमार्ग अर्थात् स्वेज नहर मार्ग के सिरे पर बसा हुआ है, जिसके

द्वारा यूरोप और एशिया के बीच व्यापार होता है । इसलिए मिश्र देश को पुर्ननिर्यात व्यापार के विकास के लिए पर्याप्त सुयोग प्राप्त है । भौगोलिक दृष्टिकोण से यह पूर्व और पश्चिम के बीच द्वार का काम करता है । इसके जरिये होकर बहुत-से राष्ट्रों की उपज व धन सम्पत्ति जाती रही है । इसके धनी व समृद्ध नगरों में सुदूरपूर्व ईरान, ईराक, अदन, सोमालीलैण्ड और सूडान तथा यूनान, रोम, अफ्रीका, स्पन आदि की वस्तुओं का क्रय, विक्रय और हेरफेर होता है ।

नील की महत्ता—भूमध्यसागरीय जलवायु वाले उत्तरी डेल्टा प्रदेश को छाड़कर मिश्र की जलवायु विशेषकर मरुस्थलीय है । मिश्र का ९७ प्र.श. क्षेत्रफल मरुस्थल है । यदि नील नदी न होती तो सारा-का-सारा मिश्र सहारा की भाँति बंजर देश होता । मिश्र का कुल क्षेत्रफल ३८६,१९८ वर्गमील है परन्तु केवल ६० लाख एकड़ भूमि पर ही सिंचाई द्वारा खेती हो सकती ह । यह सिंचित प्रदेश नील की घाटी में है । मिश्र की सम्पूर्ण जन संख्या १९० लाख व्यक्ति इसी सिंचित प्रदेश में निवास करते हैं । इसी कारण जनसंख्या का घनत्व यहां सबसे अधिक है । प्रतिवर्ग मील में १६०० व्यक्तियों का औसत पड़ता है । मिश्र में जनसंख्या की बढ़ती की दर भी बहुत अधिक है ।

मिश्र की खेती—मिश्र की जलवायु ऐसी है कि सिंचाई की सहायता से यहां सारे साल की खेती ही सकती है । यहां के खेती के ढंग पुराने और नवीन ढंगों के मिले-जुले हैं । पुरानी दरांती (हंसिया), लकड़ी के हल, रहट (Water wheel) इत्यादि सिंचाई के नवीन साधनों, हलों, ट्रैक्टरों इत्यादि के साथ-साथ प्रयोग में लाये जाते हैं । यहां पर सस्ते मजदूरों की घनी संख्या है और खेतों के छोटे होने के कारण नवीनतम मशीनों का अधिक प्रयोग नहीं हो सकता । कपास, ईख, चावल, मक्का और गेहूं यहां की मुख्य उपज है । यहां की सबसे महत्त्वपूर्ण उपज कपास है जिस पर देश की आय निर्भर है । देश के निर्यात व्यापार का ७५ प्रतिशत अंश कपास होती है । कपास की सम्पूर्ण मात्रा मिश्र के दक्षिणी भाग से प्राप्त होती है । यहां सिंचाई की योजना विशेष विकसित है । यहां की कपास भारत की कपास की अपेक्षा कहीं अच्छी होती है । सरकार ने अस्वान के समीप एक बांध बनाने की दस वर्षीय योजना तैयार की है । इसके बन जाने पर खेतिहर भूमि ६० लाख एकड़ से बढ़कर ८० लाख एकड़ हो जायेगी । इससे प्रति एकड़ उपज भी बढ़ जायगी और ऊपरी मिश्र में सात लाख एकड़ भूमि पर जिस पर केवल एक फसल उगाई जाती है लगातार सिंचाई की जा सकेगी । इस बांध को साद एल अली या ऊँचा बांध कहा जायेगा ।

प्रमुख खेतिहर फसलें (१९५२)

	हजार एकड़	उपज (हजार टन
कपास	२०४२	४२३
मक्का	१५२५	१४६७
गेहूं	१४५५	११०९

चावल	५०७	६२०
ज्वार-बाजरा	३३१	२३२

खनिज पदार्थ—मिश्र के खनिज पदार्थ रेगिस्तान में प्राप्त होते हैं। यहां पर पैट्रोलियम और फासफेट्स प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। लाल सागर के तट पर खनिज तेल के उत्पादन में वृद्धि हो रही है। तेल का प्रमुख क्षेत्र रास गरीब है जिससे १३,००,००० टन खनिज तेल प्रतिवर्ष निकलता है। ऐस्फाल्ट भी यहां काफी मिलता है। फिर भी मिश्र काफी मात्रा में तेल (विशेषकर मिट्टी का तेल) बाहर से मंगाता है। यहां पर भोजन पकाने और जलाने में ४ लाख टन तेल व्यय होता है, परन्तु यहां पर केवल ७५,००० टन तेल निकलता है। हाल ही में लाल सागर के दूसरे तट पर राससद्र में एक नई खान का पता लगा है। यहां पर केवल एक ही कुआं है जिससे ४० टन शुद्ध तेल प्रति दिन निकलता है। यह खोज बड़ी महत्व-पूर्ण हुई है। इसके बाद फासफेट नमक का स्थान आता है जो कि लाल सागर के उत्तरी-पूर्वी किनारे पर निकाला जाता है। अधिकांश फासफेट आस्ट्रेलिया और दक्षिणी अफ्रीका को निर्यात कर दिया जाता है। इसके आलावा नमक, मामूली श्रेणी का कच्चा मैंगनीज-टाल्क और इमारती पत्थर भी निकाले जाते हैं।

मिश्र के मुख्य शिल्प उद्योग कपड़ा, भोजन और रसायन निर्माण से सम्बन्धित है। सूती कपड़े के उत्पादन के दृष्टिकोण से देश आत्मनिर्भर हो चुका है। चीनी साफ करने और शराब बनाने का धंधा भी बहुत उन्नत है। इसके अलावा सिगरेट बनाने और सीमेन्ट तैयार करने का धंधा भी देश में महत्वपूर्ण है। ये सभी उद्योग-धंधे उत्तर में काहिरा और सिकन्दरिया में केन्द्रित हैं।

नील नदी का मार्ग—नील नदी एक उत्तम जलमार्ग भी बनाती है। मिश्र में से बहने वाली प्रधान नदी सफेद और नीली नील से मिलकर बनती है। सफेद नील विक्टोरिया झील से निकलकर उत्तर की ओर एक समतल प्रदेश में को बहती है। इस नदी में सारे साल ही पानी रहता है। नीली नील एबीसीनिया के पहाड़ों से निकलती है। गर्मियों में इस नदी में बाढ़ आया करती है। दोनों नदियाँ खार्तुम में मिल जाती हैं और मिश्र में बहती हुई भूमध्यसागर में जा गिरती हैं। इस नदी में असवान बांध तक बिना रुकावट के जहाज आ सकते हैं। सन् १९०२ में नील नदी के आरपार असवान स्थान पर एक बाँध बनाया गया ताकि इसके पानी को सिचाई के लिए इकट्ठा किया जा सके। सन् १९०७ में इन जलाशयों की ग्रहण शक्ति को २२५० टन तक बढ़ा दिया गया ताकि सिंचाई के लिए बढ़ती हुई माँग को पूरा किया जा सके। सन् १९२७ में यह बांध २७ फीट और ऊंचा कर दिया गया। नील नदी पर सेवार नामक स्थान पर एक दूसरा बांध बनाया गया जो नदी के मुहाने से २००० मील दूर है और इससे सूडान प्रदेश में सिंचाई होती है। यह बांध सन् १९२६ में बनकर तैयार हुआ। इससे ३ लाख एकड़ भूमि पर सिंचाई होती है और मरुस्थली प्रदेश में कपास के लहलहाते हुए खेत दिखाई पड़ते हैं।

की व्यवस्था को और पक्का करने की योजना है। चूंकि नील का चार-पंचमांश जल ऐबोसीनिया के प्रदेश से आता है जहाँ अगस्त के महीने में बाढ़ और अप्रेल के महीने में सूखा पड़ जाता है इसलिए इस स्रोत को काम में लाने के लिए टाना झील पर बांध बनाने की योजना है।

मिश्र की रेलें—रेलों का काम सरकार के अधिकार में है। मुख्य रेल की लाइन सिकन्दरिया से अस्वान तक जाती हैं। काहिरा से एक लाइन दक्षिण को जाती है और सूडान रेल से जा मिलती है। स्वेज नहर मिश्री राज्य में ही है। इस नहर के कारण मिश्र की स्थिति सैनिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। कपास ही यहां से निर्यात की प्रमुख वस्तु है जिसका मूल्य कुल निर्यात का ८५ प्र.श. से भी अधिक होता है। इसके सिवा बिनोले, अनाज और तरकारियां भी बाहर भेजी जाती हैं।

काहिरा—मिश्र की राजधानी और अफ्रीका का सबसे बड़ा नगर है। यह नगर नील के पूर्वी किनारे पर डेल्टा के शिखर पर स्थित है। हाल में यह यूरोप और एशिया के हवाई मार्ग का प्रधान केन्द्र हो गया है। यहाँ की आबादी २० लाख है।

सिकन्दरिया—वैदेशिक व्यापार का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ से देश का ८० प्र० श० व्यापार होता है।

सैयद बन्दर—स्वेज नहर के उत्तरी सिरे पर कोयले का बन्दरगाह है। यह एक पुर्ननिर्यात केन्द्र है।

मिश्र वास्तव में अंग्रेजों के अधिकार में पिछली शताब्दियों में आया था। १९१४ में यह अंग्रेजों की संरक्षकता में आ गया। १९३६ में अंग्रेजों ने इसे एक स्वतन्त्र देश स्वीकार कर लिया परन्तु कुछ विशेष बातों में अभी तक इस पर अंग्रेजों का प्रभुत्व है।

ऐबीसीनिया और इरीटीरिया

साधारण परिचय—सन् १९५२ में इरीटीरिया और इथोपिया मिलकर एक संघ बन गये। इरीटीरिया इथोपिया का संघ उत्तरी-पूर्वी अफ्रीका में स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३९५००० वर्गमील है और जनसंख्या १६० लाख है। दोनों राज्यों में इथोपिया बड़ा है और इसकी आबादी १५० लाख तथा क्षेत्रफल ३५०,००० वर्गमील है। अधिकतर लोग मुसलमान और ईसाई धर्म के अनुयायी हैं। सम्पूर्ण देश ज्वालामुखी विस्फोट से बना पठार है और इसकी जलवायु स्वास्थ्यवर्धक है। देश में खनिज, खेतिहर तथा पशुपालन के साधनों के होने पर भी देश पिछड़ा हुआ है। इसका अपना कोई समुद्रतट नहीं है और अपने विदेश व्यापार के लिए यह फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड के बन्दरगाह जिबूती पर निर्भर रहता है।

यह देश आगे चलकर कपास का प्रधान देश हो सकता है। यहाँ की मुख्य उपज कहवा, गेहूँ, कपास, जौ और मिर्च हैं। यहाँ की ऊवड़-खावड़ पहाड़ियों और घाटियों में खनिज सम्पत्ति बताई जाती है परन्तु यातायात के साधनों का अभाव है। रेलों और नदियों द्वारा चीजों का लाना-ले जाना बड़ा कठिन है। आर्थिक विकास की आशा और वर्तमान अवनत दशा के कारण इटली वाले अपने देश से यहाँ आकर

बस गये। यहाँ पर लोहे, ताँबे, कोयले और गन्धक की खानें हैं जिनका व्यापारिक अथवा औद्योगिक विकास नहीं हो सका है। यहाँ पर कुशल कारीगरों, पूँजी और यातायात के साधनों की बड़ी कमी है।

चमड़ा, खाल, कहवा, अनाज, मोम, सोना और कपास यहाँ से निर्यात की मुख्य वस्तुएँ हैं। फ्रांसीसी सोमालीलैण्ड, अदन और सूडान से नमक, संयुक्तराज्य, संयुक्तराष्ट्र अमरीका और भारत से सूती कपड़े तथा अन्य देशों से चीनी, सीसा, मोटरगाड़ियाँ और पेट्रोल आयात किया जाता है।

अदीस अबाबा—राजधानी है। यह ८००० फीट की ऊंचाई पर बसा हुआ है। अडोवा तथा गोन्डर अन्य व्यापारिक केन्द्र हैं। **असमारा** इरीटीरिया की राजधानी है और **मसावा** यहाँ का प्रमुख बन्दर है। अदोवा और गोन्डर अन्य व्यापारिक केन्द्र हैं।

अल्जीरिया तथा ट्यूनिस—उत्तरी अफ्रीका की सबसे महत्वपूर्ण रियासतें हैं। इनमें किनारे की पट्टी शामिल हैं। लोगों का प्रधान धन्धा खेती है। पाताल-तोड़ कुओं से भूमि को सींचकर अंगूर की बेल, अनाज और तम्बाकू उगाया जाता है। पशु-पालन का धन्धा भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। निर्यात की वस्तुएँ शराब, अनाज, जैतून का तेल, लोहा, जस्ता और सीसा है। आयात की वस्तुएँ सूती वस्त्र, मशीनें तथा धातु के बर्तन हैं।

ट्रिपोली—ट्यूनिस की राजधानी है। यहाँ की आबादी बहुत कम है।

ऐल्जीयर्स—अल्जीरिया की राजधानी है। कोयले का प्रसिद्ध वन्दरगाह है। ये दोनों रियासतें फ्रांस के अधिकार में हैं।

अल्जीरिया का क्षेत्रफल ८४७,५०० वर्गमील है और यहाँ ८८ लाख व्यक्ति निवास करते हैं। ट्यूनिशिया की कुल आबादी ३० लाख है और इसमें से ढाई लाख यूरोपियन लोग हैं। यहाँ का क्षेत्रफल ४८,१९५ वर्गमील है।

प्रश्नावली

१. एक मानचित्र पर अफ्रीका के प्रदेशों को दिखलाइए।

२. खनिज सम्पत्ति और पशुपालन व्यवसाय के दृष्टिकोण से दक्षिणी अफ्रीका की वर्तमान आर्थिक दशा का निरूपण कीजिए।

३. भूमध्यरेखीय अफ्रीका में ब्रिटिश अधिकृत भागों के आर्थिक साधनों का वर्णन कीजिए। इन साधनों को उन्नत व विकसित बनाने की क्या सम्भावनाएँ हैं? इनके विकास से भारत के व्यापार पर क्या असर पड़ेगा?

४. "मिश्र नील नदी का वरदान है।" इस उक्ति पर अपने विचार स्पष्ट करिए।

५. विश्व व्यापारिक मार्गों की दृष्टि से मिश्र की स्थिति का क्या महत्त्व है?

६. दक्षिणी अफ्रीका में सिंचाई के लिए अभी हाल में क्या कुछ किया गया? भविष्य में इस ओर क्या सम्भावनाएँ हैं?

७. भूमध्यरेखीय अफ्रीका के पिछड़े होने के क्या कारण हैं ?

८. अफ्रीका पर अपना आधिपत्य रखने में ब्रिटेन का क्या आर्थिक मतलब था ?

९. नील की घाटी की स्थिति बतलाइए, इसका भौगोलिक वर्णन दीजिए और इसके महत्व, विकास व उन्नति के भौगोलिक कारण बतलाइए।

१०. "सोने की खान दक्षिणी अफ्रीका का आधार है।" इस कथन पर विचार प्रगट कीजिए।

११. दक्षिणी अफ्रीका में ुद्ध के फलस्वरूप होने वाली आर्थिक उन्नति का विवरण दीजिए। दक्षिणी अफ्रीका उपयोगी सामग्री के लिए भारत पर कहाँ तक निर्भर है ? इन वस्तुओं को प्राप्त करने के वैकल्पिक सूत्र उपस्थित हैं या नहीं ?

१२. अबीसीनिया के आर्थिक विकास और वर्तमान दशा का वर्णन कीजिए।

अध्याय : : चौदह

आस्ट्रेलिया

स्थिति—आस्ट्रेलिया संसार का सबसे छोटा महाद्वीप परन्तु सबसे बड़ा द्वीप है। यह सारा-का-सारा ही दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है और संसार के प्रमुख व्यापारिक मार्गों से दूर पड़ता है। इसका ४० प्र. श. क्षेत्रफल उष्ण कटिबन्ध में तथा शेष भाग शीतोष्ण कटिबन्ध में स्थित है।

धरातल—साधारणतया इसका धरातल समतल है। इसमें विस्तृत मैदान और पठार सम्मिलित हैं। इसके पूर्वी भाग में एक पर्वतमाला उत्तर से दक्षिण तक २००० मील से भी अधिक लम्बी है। इस श्रेणी का नाम "डिवाइडिंग रेंज" है। इस श्रेणी की समुद्र से दूरी २५ से १२० मील तक है। इसके तटीय मैदान बड़े उपजाऊ हैं। पूर्वी पर्वत-माला तथा पश्चिमी पठारों के बीच में नीचे मैदान हैं। इस प्रकार आस्ट्रेलिया खीर की तश्तरी के समान मालूम पड़ती है—इसका बीच का गहरा भाग रेगिस्तान है और किनारा उपजाऊ भूमि है।

तटरेखा तथा जलवृष्टि—इस महाद्वीप की तटरेखा लगभग सपाट ही है। केवल पूर्वी और उत्तर पश्चिमी भाग में कुछ कटान हैं। पूर्वी तट पर वर्षा अधिक होती है। उत्तरी आस्ट्रेलिया के मानसूनी भागों में भी गर्मी में काफी वृष्टि होती है। आस्ट्रेलिया के मध्य-भाग और पश्चिमी तटीय भाग साल भर सूखे रहते हैं इसीलिए इन भाग को "आस्ट्रेलिया का जीवन-हीन हृदय" कहते हैं। वास्तव में आस्ट्रेलिया के दो-तिहाई भागों में २० इञ्च से भी कम वर्षा होती है।

इस महाद्वीप को दो भाग में बाँटा जा सकता है—खाली आस्ट्रेलिया और सम्पन्न आस्ट्रेलिया। इन दोनों भागों को अलग करने वाली रेखा पश्चिमी आस्ट्रेलिया के गेरानडटन से कालगूर्ली, पोर्ट आगस्टा, ब्रोकिन हिल से होती हुई कारपेन्टारिया की खाड़ी तक जाती है। इस रेखा के उत्तर-पश्चिम में स्थित प्रदेश शुष्क है और उसमें या तो रेगिस्तान पाया जाता है या ऊँचा-नीचा चरागाह। इसके दक्षिण और पूर्व में खेतिहर प्रदेश है जो उत्तरी क्वीन्सलैण्ड के काक टाउन से न्यू साउथ वेल्स, विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया के तटीय भागों से होता हुआ फावलर की खाड़ी तक फैला है। आस्ट्रेलिया की ५५ प्रतिशत भूमि पशुचारण में प्रयोग की जाती है, ४० प्र. श. बेकार पड़ी हुई है, २ प्र. श. वनों से ढकी है और केवल ३ प्र. श. पर खेती की जाती है। यदि सिंचाई का उचित प्रबन्ध हो जाये तो इसका $\frac{1}{4}$ भाग खेती के काम में लाया जा सकता है।

इस महाद्वीप का क्षेत्रफल ३० लाख वर्गमील है तथा आबादी ८० लाख के लगभग है। यहाँ की अधिकतर आबादी एक पतली पट्टी पर रहती है, जोकि सिडनी के ऊपर से आरम्भ होकर ऐडीलेड के चारों ओर फैली है और कुछ आबादी

दक्षिण-पश्चिमी कोने में है। यहाँ की आवादी का औसत २ व्यक्ति प्रति वर्गमील पड़ता है।

१९५० के अनुसार आस्ट्रेलिया की आबादी और क्षेत्रफल

	क्षेत्रफल (वर्ग मील)	आवादी	प्रति १०० वर्ग-मील आवादी
न्यूसाउथ वेल्स	३,०९,४३३	३२,२५,२४२	१,०४२
विक्टोरिया	८७,८८४	२२,०२,८६९	२,५०७
क्वीन्सलैण्ड	६,७०,५००	११,८३,७९२	१७७
दक्षिणी आस्ट्रेलिया	३,८०,०७०	७,००,२५७	१८४
पश्चिमी आस्ट्रेलिया	९,७५,९२०	५,५७,९१८	५७
तस्मानिया	२६,२५५	२,७९,३८६	१,०६६
उत्तरी राज्य	५,२३,६२०	१५,३०३	३
आस्ट्रेलिया का केपिटल प्रदेश	९३९	२०,७७२	२,२१२
	२९,७४,५८१	८१,८५,५३९	२५७

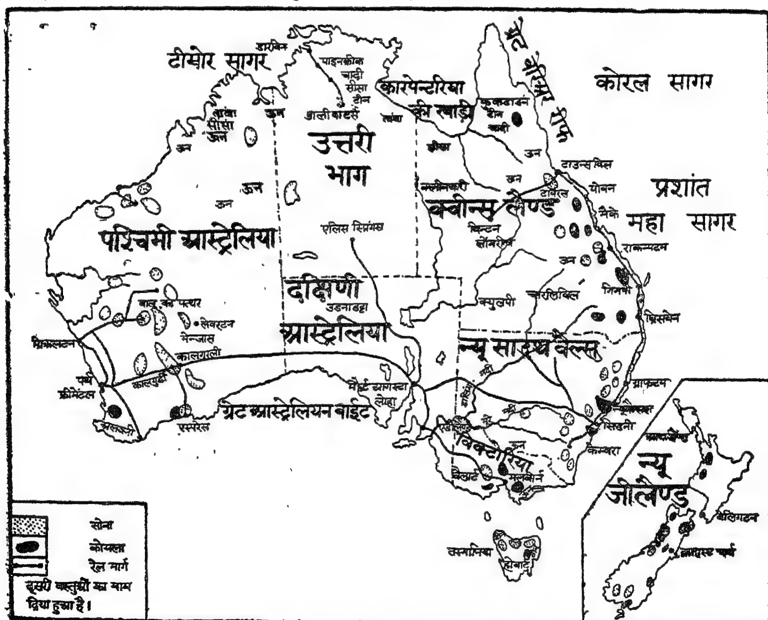
आबादी—आस्ट्रेलिया की आबादी वाहर से आने वालों के कारण बहुत बढ़ गई है यद्यपि वर्तमान काल में यहाँ की आवादी प्राकृतिक रूप से ही अधिक बढ़ी है। १८५२-६१ से पूर्व आस्ट्रेलिया की आबादी में ७६ प्र. श. वृद्धि वाहर से आये लोगों के कारण हुई थी। परन्तु फिर बाहर से लोगों का आना कम हो गया और १९२२-३१ में बाहर से आये लोगों के कारण आवादी में २६ प्र. श. ही वृद्धि हुई। अब तो यहाँ की आबादी प्राकृतिक वृद्धि ही पर निर्भर है।

आबादी का घनत्व विक्टोरिया के अतिरिक्त और कहीं भी अधिक नहीं है। जलवायु तथा अन्य कारणों से आस्ट्रेलिया के पूर्वी और दक्षिणी भाग निश्चित रूप से आबादी के केन्द्र हो गये हैं। मध्य और पश्चिमी जलहीन भागों में लोगों को बसने के लिए कोई आकर्षण ही नहीं है। परन्तु क्वीन्सलैण्ड, न्यूसाउथवेल्स, विक्टोरिया और दक्षिणी आस्ट्रेलिया में बसने के लिए काफी सुविधाएँ हैं। अतः यहाँ की आवादी के कई गुनी बढ़ जाने की सम्भावना हो सकती है।

मजदूरों का अभाव—श्वेत नीति—मजदूरों की कमी के कारण यहाँ के उद्योग-धन्धों का विकास नहीं हुआ है। यद्यपि आस्ट्रेलिया का उत्तरी भाग उपजाऊ है और यहाँ पर चावल, चीनी और कपास पैदा हो सकती है परन्तु यहाँ पर गर्मी अधिक पड़ती है और गोरों के रहने के लिए उपयुक्त नहीं है। आस्ट्रेलिया में एशियाई मजदूरों को जाने की इजाजत नहीं है। आस्ट्रेलिया की आवास नीति का उल्लेख करना यहाँ ठीक ही होगा। आस्ट्रेलिया की 'श्वेत नीति' के दो पक्ष हैं। (१) आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से योग्य व्यक्तियों को आकर्षित करना तथा (२) अनिच्छित अथवा अयोग्य व्यक्तियों के आने पर रोक लगाना।

श्वेत नीति के दो दृष्टिकोण—इस नीति के दो आधार हैं: सामाजिक तथा आर्थिक। सामाजिक दृष्टिकोण तो उन लोगों की रोक के लिए है जो यहाँ

पर मिल-जुल कर एक नहीं हो सकते। इनमें सभी एशियाई और दक्षिणी तथा पूर्वी यूरोप के निवासी भी सम्मिलित हैं। आर्थिक दृष्टिकोण का कारण यह है कि मजदूरी में कमी के कारण बाहर से आने वालों से यहाँ के निवासियों का जीवन-स्तर नीचा हो जाने का भय है। प्रत्यक्ष रूप से तो इस नीति में जाति अथवा रंग-भेद की गंध नहीं है परन्तु इस श्वेत नीति के कारण उत्तरी आस्ट्रेलिया का विकास तब तक संभव नहीं जब तक कि गोरे लोग उष्ण कटिबन्धीय रोगों और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त न कर लें। इस नीति के कारण एशिया के घने बसे हुए देशों में कटुता की भावना उत्पन्न हो रही है। इसके दो कारण हैं। दूसरे महायुद्ध तक आस्ट्रेलिया को एशिया महाद्वीप का भाग नहीं समझा जाता था, इसका कारण यह था कि यहाँ के अधिकतर लोग यूरोपियन हैं। दूसरी बात यह थी कि दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देश स्वतन्त्रता संग्राम में लगे हुए थे। इसलिए उन्हें इस ओर ध्यान देने का अवकाश न था परन्तु अब जब वे काफी दशा में स्वतंत्र हो चुके हैं, वहाँ के लोग आस्ट्रेलिया की इस नीति से बहुत नाराज हैं।



चित्र ७४—आस्ट्रेलिया की आर्थिक उपज। यहाँ के कोयला क्षेत्र अधिकतर पूर्वी भाग में हैं। सोने की खानें पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम में हैं।

यातायात के साधन—आस्ट्रेलिया में जलमार्गों का अभाव है। यहां की नदियाँ छोटी और तेज बहने वाली हैं। सबसे प्रसिद्ध नदी मरे दक्षिण में है। डार्लिंग और मुरम्बिजी इसकी सहायक नदियां हैं। मरे १३०० मील लम्बी है पर नाव चलाने योग्य नहीं है। बरसात में मरे स्थित अलबरी और डार्लिंग स्थित बोर्क

नगरों के बीच स्टीमर चलते हैं। रेलों का विकास धीरे-धीरे हो रहा है। रेल व्यवस्था में सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि भिन्न-भिन्न राज्यों में भिन्न-भिन्न चौड़ाई की पटरियों का प्रयोग होता ह। यहां पर २७,००० मील लम्बा रेल मार्ग है। एक रेल की लाइन पर्थ से आगस्टा तक १४२५ मील लम्बी है जो महाद्वीप के आर-पार चलती है। हवाई मार्गों की यहां बड़ी सुविधा है। यहाँ की जलवायु और देश की बनावट इसके अनुकूल है। १९५१ में यहां ६८,००० मील लम्बा हवाई मार्ग था।

आस्ट्रेलिया की भौगोलिक स्थिति और दशाओं का यहाँ के आर्थिक विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। यूरोप और अमरीका से यह देश दूर पड़ता है इसलिए आबादी घनी नहीं हो सकी। यदि यहाँ सोने की खोज न हुई होती तो यहाँ की प्रगति और भी मन्द होती। यहाँ की खनिज सम्पत्ति के कारण लोग यहाँ आकर बसे और उन्होंने अपनी पूँजी भी लगाई जिससे यहाँ के विकास में सहायता मिली। जब आस्ट्रेलिया के पूर्वी भाग में सोने के उत्पादन में कमी हो गई तो लोग यहीं बस गये और खेती और पशु-पालन में लग गए।

खेती की उपज—गेहूँ—आस्ट्रेलिया में खेती बहुत बड़े भाग में नहीं होती। १९५१-५२ के अनुसार यहां पर कुल २ करोड़ एकड़ भूमि पर खेती होती थी।

फसलों का क्षेत्रफल और उपज (१९५२-५३)

	हजार एकड़	हजार बुशल
गेहूँ	१०,२०९	१९५,२०८
जई	२,७६४	४३,६२३
जौ	१३३०	३४०००
मक्का	१७४	५०००
गन्ना	२८०	६९६७

खेती योग्य आधी से अधिक भूमि पर गेहूँ की खेती होती है। आस्ट्रेलिया में गेहूँ जाड़े की फसल है और गर्मियों के आरम्भ में ही काट ली जाती है। गेहूँ की पैदावार के मुख्य प्रदेश मरे नदी के उपजाऊ मैदान और भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेश हैं। यहाँ का अधिकतर गेहूँ संयुक्त राज्य (U. K.) को और थोड़ा-बहुत चीन तथा जापान को जाता है। आस्ट्रेलिया से सर्वप्रथम गेहूँ का निर्यात १८९७ में हुआ था। गेहूँ के निर्यात का मुख्य केन्द्र ऐडीलेड है।

चावल की उपज—गेहूँ के अतिरिक्त अधिकतर भूमि पर जौ, ईख, जई और चावल की खेती की जाती है। व्यापारिक दृष्टिकोण से यहाँ पर पहले-पहल १९२५ में न्यूसाउथवेल्स के सिंचाई वाले भागों में चावल बोया गया था और तभी से यह एक महत्त्वपूर्ण उपज रही है। १९३० तक यहां के चावल से घरेलू आवश्यकता की पूर्ति होकर थोड़ा बहुत निर्यात होता था परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध में दक्षिण-पूर्वी एशिया के चावल प्रधान देशों पर जापान का अधिकार हो जाने से आस्ट्रेलिया के चावल की मांग बहुत बढ़ गई। १९४४ में न्यू साउथवेल्स में चावल उत्पादन का एक नया क्षेत्रफल तैयार किया गया।

भूमि के उपभोग के दृष्टिकोण से आस्ट्रेलिया खेती की अपेक्षा पशुचारण के लिए अधिक उपयुक्त है। देश का तीन-चौथाई भाग खेती के धंधे के लिए बहुत गर्म और शुष्क है। परन्तु इस शुष्क गर्म प्रदेश के बहुत अधिक भाग में पशु चराये जा सकते हैं।

पशु संख्या (१९५१)

	(हजार में)
भेड़	१२३०७२
गाय बैल	१५२४७
सूअर	९९३

भेड़ें तथा अन्य पशु—आस्ट्रेलिया में भेड़ों का पालना बहुत ही महत्त्वपूर्ण उद्योग है। यहां पर केवल रूस को छोड़कर संसार के अन्य सभी देशों से अधिक भेड़ें पाली जाती हैं। न्यू साउथवेल्स, क्वीन्सलैंड, विक्टोरिया, पश्चिमी तथा दक्षिणी आस्ट्रेलिया में भेड़ें ऊन के लिए पाली जाती हैं। **परन्तु आस्ट्रेलिया में ऊन का उत्पादन विशेष रूप से निर्यात के लिए होता है** और देश में इसका प्रयोग वस्त्र अथवा अन्य कोई वस्तु बनाने में बहुत कम होता है। आस्ट्रेलिया की ३० प्रतिशत से अधिक ऊन संयुक्त राज्य (U. K.) को जाती है। फ्राँस, जापान, बैल्जियम और जर्मनी भी यहाँ की ऊन मंगाते हैं। आस्ट्रेलिया के लगभग सभी देशों में मांस और दूध की वस्तुओं के लिए मवेशी पाले जाते हैं।

खनिज सम्पत्ति—आस्ट्रेलिया में खनिज सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में है। १९५० में खानों में दस लाख व्यक्ति काम करते थे। प्रारम्भ में सोने की खानों के कारण विक्टोरिया और न्यू साउथवेल्स में बाहर के लोगों का तांता लग गया। आजकल भी आस्ट्रेलिया में संसार का ४ प्रतिशत से अधिक सोना प्राप्त होता है। सोना यहां पर महत्त्वपूर्ण खनिज पदार्थ है। विक्टोरिया में बैलाराट और बेंडिगो सोने की प्रसिद्ध खानें हैं। न्यू साउथवेल्स अब सोने के लिए प्रसिद्ध नहीं रहा। क्वींसलैंड में सोने की प्रसिद्ध खान राक हैम्पटन में है। आजकल आस्ट्रेलिया का आधे से भी अधिक सोना पश्चिमी आस्ट्रेलिया में निकलता है जहाँ पर कालगूर्ली और कूलगार्डी सोने की प्रसिद्ध खानें हैं। सन् १९५१ में ८९६,००० औंस सोना निकाला गया।

कोयला तथा अन्य खनिज पदार्थ—आस्ट्रेलिया में दूसरा महत्त्वपूर्ण खनिज पदार्थ कोयला है। यह न्यूसाउथवेल्स, क्वीन्सलैंड, तस्मानिया, दक्षिणी-पश्चिमी तथा दक्षिण-पूर्वी आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। सन् १९५३ में कोयले का उत्पादन २०० लाख टन था। **कच्चा लोहा** दक्षिणी आस्ट्रेलिया में मिलता है। चाँदी महाद्वीप में कई स्थानों पर मिलती है। परन्तु चाँदी की सबसे प्रसिद्ध खान न्यूसाउथवेल्स के ब्रोकन हिल प्रान्त में है। इन्हीं खानों में चाँदी के साथ-साथ सीसा और जस्ता भी मिलता है। टीन और ताँबे की भी अधिकता है, परन्तु अभी ठीक तरह निकाले नहीं जाते। ताँबे की सबसे प्रसिद्ध खानें उत्तरी क्वीन्सलैंड और दक्षिणी आस्ट्रेलिया

म हैं। यहाँ पर हीरे और अन्य बहुमूल्य पत्थर भी मिलते हैं।

इस समय आस्ट्रेलिया में संसार का सबसे बड़ा जल-विद्युत केन्द्र बनाया जा रहा है। इसके पूरा हो जाने पर महाद्वीप में शक्ति का उत्पादन दुगुना हो जाएगा और इसके द्वारा खाद्यान्नों की उपज भी बहुत अधिक बढ़ जायेगी। केन्द्रीय सरकार बर्फीले पहाड़ों के जल को जल-विद्युत व सिंचाई के लिए प्रयोग में लायेगी और इसमें करीब २००० लाख पौंड खर्च होगा तथा २५ वर्ष में पूरी होगी। इससे ४००,००० एकड़ जल क्षेत्र बन जावेगा। जिससे २,६२०,००० किलोवाट बिजली तैयार की जायेगी। पूरी हो जाने पर यह योजना संयुक्त राष्ट्र की टी. वी. ए. के मुकाबले की हो जावेगी। परन्तु इसके बनने में करीब २५ वर्ष लगेंगे। पर्वतीय बांधों पर से गिराया हुआ जल इतनी अधिक बिजली उत्पन्न करेगा जितनी कि आजकल सब कहीं आस्ट्रेलिया में भाप के द्वारा तैयार की जाती है। बिजली तैयार करने के बाद पानी से सिंचाई की जावेगी।

आस्ट्रेलिया के शिल्प-उद्योग—आस्ट्रेलिया के शिल्प-उद्योग अभी तक प्रारम्भिक दशा में हैं। यहाँ की बिखरी हुई और अल्प जनसंख्या, रेलों और सड़कों की कमी तथा यहाँ के निवासियों का खेती और खानों की ओर अधिक झुकाव होने के कारण शिल्प-उद्योगों का अधिक विकास नहीं हो सका। उद्योग-धन्धे अधिकतर नगरों में ही केन्द्रित हैं। वहाँ मजदूरों की सुविधा है। यहाँ आटा पीसने, ऊन कातने और बुनने, फर्नीचर बनाने तथा लोहे और स्टील की वस्तुएँ तैयार करने के कारखाने हैं। पिछले कुछ वर्षों से आस्ट्रेलिया सरकार की आयात नियंत्रण, संरक्षण और स्थानीय उद्योग-धन्धों को माली सहायता की नीति से यहां के उद्योग-धन्धे प्रगतिशील हो गये हैं। दूसरे महायुद्ध से भी यहाँ के उद्योग धन्धों को बड़ा प्रोत्साहन मिला।

फलतः इस समय आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा धन्धा शिल्प-उद्योग हो गया है। खेती, पशुचारण तथा खान खोदने के धंधे को मिलाकर भी जितने व्यक्ति काम करते हैं उससे कहीं अधिक अकेले शिल्प उद्योग में लगे हुए हैं। महायुद्ध के पश्चात के प्रथम तीन वर्षों में आस्ट्रेलिया में ८४४५ नये कारखाने खोले गये और कारखानों में काम करने वालों की संख्या एक लाख अधिक हो गई। सब उद्योग धन्धों में इन्जीनियरिंग और धातु उद्योग विशेष प्रगति कर गया है। इस उद्योग में ३२०,९४८ मजदूर काम करते हैं और यह संख्या सन् १९३९ की अपेक्षा ८०·७ प्रतिशत अधिक है।

नए उद्योगों में मोटरों, ट्रैक्टरों, जमीन खोदने के यन्त्रों, ~~छपाई का काम~~ और नकली रेशम के वस्त्र बनाना प्रमुख है। आटा पीसना, ऊन का धागा बनाना और ऊन का कपड़ा बुनना, मेज कुर्सी बनाना तथा लोहा व इस्पात निर्माण यहां के मुख्य उद्योग हैं। लोहा व इस्पात निर्माण का भविष्य बड़ा ही उज्ज्वल है क्योंकि यहाँ का इस्पात काफी सस्ता पड़ता है।

निर्यात की वस्तुएँ—आस्ट्रेलिया का व्यापार संतुलन सदा उसके पक्ष में रहा

है। सन् १९५२-५३ में आयात का मूल्य ५१४० लाख पौंड और निर्यात का मूल्य ८७१० लाख पौंड था। आस्ट्रेलिया से बाहर जाने वाली वस्तुएँ ऊन, गेहूँ, सोना खालें और चमड़ा, मक्खन, आटा, चीनी, जमा हुआ मांस, फल, शराब और पनीर हैं। ऊन फ्रांस, जापान, जर्मनी, इटली, बैल्जियम, संयुक्त राष्ट्र और रूस को और गेहूं भारत, ग्रेट ब्रिटेन और दक्षिणी अफ्रीका को भेजा जाता है। समस्त निर्यात का आधा माल संयुक्त राज्य (U. K.) को जाता है।

आयात की वस्तुएँ—यहाँ पर धातु तथा धातु का सामान, बुना हुआ और बना हुआ कपड़ा, खाने-पीने की वस्तुएं, दवाएं, रासायनिक पदार्थ और कागज बाहर से आते हैं। ५० प्रतिशत से भी अधिक वस्तुएं संयुक्त राज्य (U. K.) से आती हैं।

प्रसिद्ध नगर—मैल्बोर्न—विक्टोरिया की राजधानी है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह और औद्योगिक नगर भी है।

सिडनी—न्यूसाउथवेल्स की राजधानी है। पोर्ट जैक्सन के दक्षिण में स्थित है। इसका आदर्श पोताश्रय है। औद्योगिक तथा राजनैतिक केन्द्र होने के अतिरिक्त जहाजी बेड़े का केन्द्र भी है।

ब्रिसबेन—क्वीन्सलैंड की राजधानी है। यह प्रसिद्ध बन्दरगाह और औद्योगिक केन्द्र भी है। यहाँ से ऊन, जमा हुआ गोश्त, मक्खन, सुअर का मांस, चर्बी, खाल और चमड़ा बाहर जाता है।

ऐडीलेड—दक्षिणी आस्ट्रेलिया की राजधानी है। इसका बन्दरगाह पोर्ट ऐडीलेड है। यहाँ से लकड़ी, गेहूं, आटा, ताँबा, खाल, जमा हुआ गोश्त, फल और शराब बाहर भेजे जाते हैं।

पर्थ—पश्चिमी आस्ट्रेलिया की राजधानी, व्यापारिक नगर और औद्योगिक केन्द्र है। फ्रीमेन्टल इसका बन्दरगाह है। यहां से ऊन, सोना और इमारती लकड़ी बाहर जाती है।

होबर्ट—तस्मानिया की राजधानी और रेलों का केन्द्र है। इसका पोताश्रय बड़ा उत्तम है। और इसका व्यापार अधिकतर सिडनी के साथ होता है। यहाँ से ऊन, सोना, टीन, चाँदी लकड़ी, फल, अनाज बाहर जाते हैं।

न्यूजीलैंड

विस्तार तथा आबादी—न्यूजीलैंड के राज्य में उत्तरी द्वीप, दक्षिणी द्वीप, स्टूअर्ट द्वीप तथा अन्य छोटे-छोटे द्वीपसमूह सम्मिलित हैं जो कि आस-पास के समुद्र में १५० से ३५० मील तक फैले हुए हैं। इसका क्षेत्रफल १,०३,७२९ वर्गमील तथा आबादी १८ लाख है। ९३ प्रतिशत आबादी गोरे लोगों की है। १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यहां गोरों की संख्या एक हजार से कम थी, परन्तु उपनिवेशों की स्थापना और सोने के लालच में यहाँ पर अनेकों लोग आकर बस गए हैं। अधिकतर लोग ग्रेट ब्रिटेन से आये। अब तो आबादी में प्राकृतिक रूप से वृद्धि हो रही

हैं। असली मावरी लोग (मूल निवासी) तो अब केवल ४ प्रतिशत ही रह गए हैं। ऐंग्लो मावरी २·५ प्रतिशत और अन्य लोग केवल ५ प्रतिशत ही हैं।

दक्षिण का ग्रेट ब्रिटेन—उत्तरी और दक्षिणी द्वीप क्षेत्रफल में बहुत बड़े हैं और इस राज्य का अधिकतर भाग इन्हीं से बनता है। **न्यूजीलैंड को कभी कभी "दक्षिण का चमकदार ब्रिटेन"** (Brighter Britain of the South) कहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य का केवल यही भाग है जहाँ के निवासियों के रहन-सहन का ढंग और आदतें, यहाँ के दृश्य, तापक्रम और बनावट ग्रेट ब्रिटेन से मिलते-जुलते हैं। यहाँ के मूल निवासी मावरी लोग है। यद्यपि वर्तमान काल में उनकी आबादी कुल २ प्रतिशत ही है। ब्रिटेन से आये हुए लोग अब यहां पर स्थायी रूप से बस गये हैं और १५ प्रतिशत आबादी उन्हीं लोगों की है।

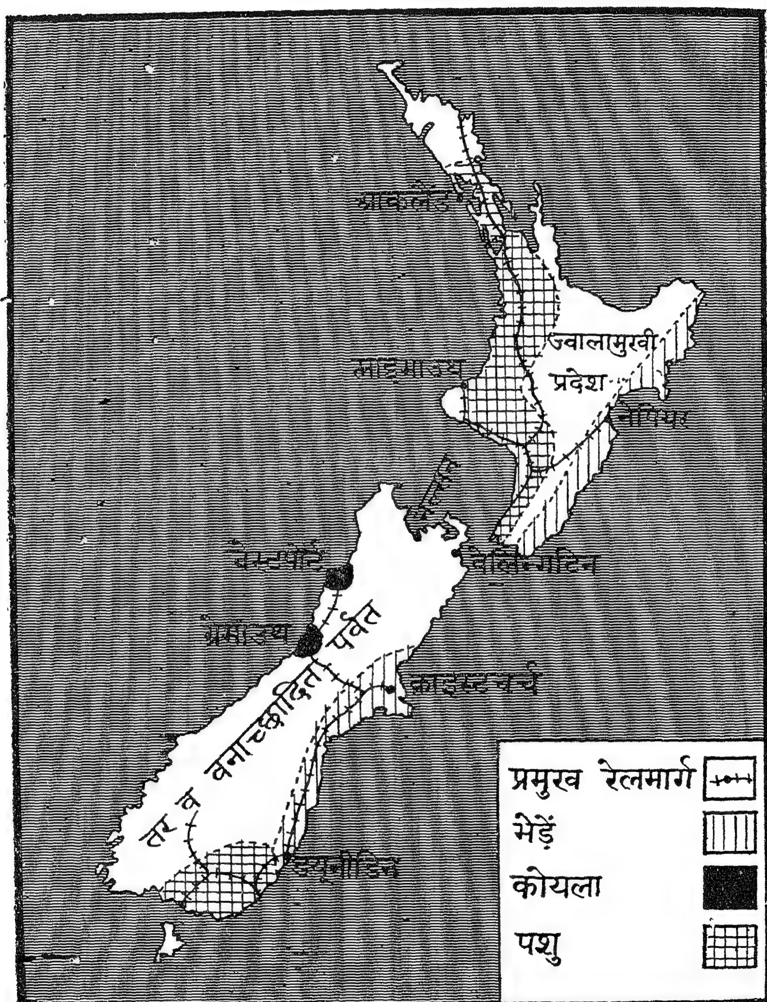
जलवायु—न्यूजीलैंड का अधिकतर भाग समुद्र के प्रभाव में है और यहां के तापक्रम और जल-वृष्टि पर समुद्र का प्रभाव पड़ता है। यहाँ गर्मियों में अधिक गर्मी और सर्दियों में अधिक सर्दी नहीं पड़ती।

भू-रचना—यहां का धरातल विशेष रूप से पहाड़ी है। दक्षिणी द्वीप में पश्चिम की ओर दक्षिण से उत्तर तक एक पर्वत श्रेणी है। इस श्रेणी को दक्षिणी आल्प्स (Southern Alps) कहते हैं। इस पर सदैव बर्फ जमी रहती है। न्यूजीलैंड में सबसे व्यापक मैदान कैन्टरबरी मैदान कहलाते है। ये मैदान दक्षिणी द्वीप में पूर्व की ओर बीच के भाग में हैं। **न्यूजीलैंड विशेषकर चरागाहों का देश है और इसके ९६ प्रतिशत भाग पर पशुपालन सम्बन्धी उद्योग होते हैं।** यहाँ पर पशु-पालन, डेरी के काम और भेड़ों के पालने के लिए चारे की फसलें अधिकतर उगाई जाती हैं।

भेड़ तथा पशुपालन सम्बन्धी धंधे—सन् १९५३ मे यहां ३६० लाख भेड़, ५० लाख पशु और ५ लाख सुअर थे। यहाँ का बेताज का बादशाह भेड़ है। न्यूजीलैंड में भेड़ों की संख्या प्रति वर्गमील के विचार से संसार के अन्य किसी भी देश से अधिक है। यहां की नम आबहवा, रसदार घास के मैदान, ठंड पैदा करने वाले यन्त्रों का प्रचार और गौण उपज का पूरा पूरा लाभ उठाये जाने के कारण भेड़ों के पालने में बड़ी सफलता मिली है। न्यूजीलैंड के सभी मैदानों में भेड़ें ऊन और मांस के लिए व्यापक रूप से पाली जाती है। कैन्टरबरी के मैदान और आस-पास के निचले भाग भेड़ों के लिए सबसे प्रसिद्ध प्रदेश हैं। इन्हीं भागों में देश की भेड़ों का एक-पंचमांश से अधिक भाग पाला जाता है। मांस और डेरी की उपज के लिए पशु-पालन एक महत्त्वपूर्ण उद्योग होता जा रहा है। न्यूजीलैंड में डेरी का धंधा सहकारी आधार पर प्रचलित है। सरकार इस पर कड़ा निरीक्षण रखती है। यहां से किसी ऐसी वस्तु का निर्यात नहीं किया जाता जिसके कारण न्यूजीलैंड की उपज के शुभ नाम पर किसी प्रकार का कलंक लगे।

खेती तथा खनिज पदार्थ—यहां पर १९५२ में २० लाख एकड़ से कुछ अधिक भूमि पर खेती होती थी। गेहूं, जौ, जई, आलू तथा फल यहाँ की मुख्य

फसलें हैं। सभी खनिज पदार्थ थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वहां पाये जाते हैं। लिगनाइट, चांदी, सोना, कोयला और पैट्रोलियम मिलते हैं। इनमें से कोयले के सिवाय अन्य पदार्थों का विकास नहीं हुआ है।



चित्र ७५—न्यूजीलैंड की आर्थिक उपज और यातायात

सन् १९५२-५३ में विभिन्न खनिज पदार्थों का उत्पादन इस प्रकार था—

सोना	६०,००० औंस
चाँदी	५१,००० औंस
टंगस्टन	५७ टन
कोयला	३० लाख टन
खनिज तेल	१८६,००० गै०
कच्चा लोहा	१८२३ टन

शिल्प-उद्योगों का विकास—बहुत अधिक मात्रा में न्यूजीलैंड बना हुआ सामान प्रायः विदेश से ही मंगाता है। दूसरे महायुद्ध से घरेलू उद्योग-धन्धों के विकास के लिए खतरा भी उत्पन्न हो गया और साथ-साथ प्रोत्साहन भी मिला। आयात के घट जाने से माल को जहाज द्वारा लाने-ले जाने की असुविधा के कारण तथा घरेलू माँग के बढ़ जाने से उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन मिला। इस प्रकार युद्ध के काल में यहाँ के उद्योग-धन्धों का विकास तो हुआ परन्तु साथ साथ पूंजी की कमी, लोहा व इस्पात प्राप्त करने में कठिनाई तथा मशीनों व कल-पुर्जों के अभाव के कारण बहुत अधिक विकास न हो सका। शिल्प-उद्योग अधिकतर यहाँ की मुख्य पैदावार पर ही निर्भर हैं। बिखरी आबादी तथा संसार के मुख्य व्यापारिक मार्गों से दूर होने के कारण न्यूजीलैंड एक महान् औद्योगिक देश नहीं हो सका है। चमड़े की वस्तुएं बनाने, ऊनी और सती वस्त्रों के बुनने, फलों को डिब्बों में भरने, फर्नीचर बनाने, डेरी सम्बन्धी उपज तैयार करने के यहाँ पर अनेक कारखाने हैं। सन् १९५२-५३ में यहाँ पर शिल्प-उद्योगों में १५०,००० व्यक्ति काम करते थे।

न्यूजीलैंड में नदियाँ तो बहुत हैं, परन्तु इनमें अधिकतर नाव्य नहीं हैं। न्यजीलैंड में ३५०० मील से भी अधिक लम्बे रेलमार्ग हैं जिनकी दिशाओं पर भू-प्रकृति का बड़ा प्रभाव पड़ा है। पहाड़ी देश होने के कारण अधिकतर मार्गों के लिए बड़ा धन व्यय करके लगातार सुरंगें बनानी पड़ी हैं। न्यूजीलैंड में सड़कों का शीघ्रतापूर्वक विकास हो रहा है।

आयात तथा निर्यात—इस देश में पशु-पालन सम्बन्धी उद्योगों का कितना विकास हुआ है, यहाँ से निर्यात की वस्तुओं से ही इस बात का अनुमान सहज हो सकता है। ऊन, मक्खन, जमा हुआ मांस, पनीर, खाल, चमड़ा इत्यादि वस्तुएँ कुल निर्यात के ९० प्रतिशत मूल्य की होती हैं। मोटरकार, तेल, इमारती लकड़ी, सिगरेट, लोहे और स्टील की चादरें, सूती वस्त्र और बाड़ों के तार आयात की मुख्य वस्तुएं हैं। यहाँ का सबसे अधिक व्यापार ग्रेट ब्रिटेन से होता है। संयुक्त राष्ट्र, फ्रांस, जर्मनी आदि से भी इसका व्यापारिक सम्बन्ध है।

प्रमुख नगर—वैलिंगटन, आकलैंड, डूनेडिन, क्राइस्टचर्च, नेल्सन और इन्वरकार्गिल प्रमुख व्यापारिक केन्द्र हैं।

वैलिंगटन—उत्तरी द्वीप में पोर्ट निकल्सन पर स्थित न्यूजीलैंड की राजधानी

है। यह नगर सबसे प्रसिद्ध वितरक तथा सहायक केन्द्र है। यहाँ पर तटीय व्यापार भी अधिक होता है।

आकलैंड—न्यूजीलड का सबसे बड़ा नगर है। उत्तरी द्वीप के एक तंग जल संयोजक पर स्थित होने से यह समुद्री व्यापार का केन्द्र हो गया है। यहाँ से डेरी की उपज का निर्यात होता है। सोना निकालने और गोंद इकट्ठा करने का भी यह एक प्रसिद्ध केन्द्र है।

डूनेडिन—दक्षिणी द्वीप का प्रमुख नगर है।

इन्वरकार्गिल—यह भी दक्षिणी द्वीप का एक प्रसिद्ध नगर है।

क्राइस्टचर्च—दक्षिणी द्वीप के केन्टरबरी मैदान का एक प्रसिद्ध नगर है।

प्रश्नावली

१. आस्ट्रेलिया के आर्थिक विकास व उन्नति के भौगोलिक कारणों का विस्तार से निरूपण करिए।

२. आस्ट्रेलिया में भेड़ पालने का व्यवसाय इतना उन्नत है और ऊन खूब होता है परन्तु ऊनी कपड़े का व्यवसाय बिल्कुल नहीं के बराबर है। इसका क्या कारण है, समझाकर लिखिए।

३. आस्ट्रेलिया के प्रमुख उद्योग-धन्धों व खेती का वर्णन कीजिए।

४. आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की प्रमुख निर्यात वस्तुएं कौन-कौन सी हैं? भारत और इन देशों के बीच इन वस्तुओं के व्यापार की भविष्य में क्या संभावनाएं है?

५. आस्ट्रेलिया के पूर्वी और पश्चिमी तटीय प्रदेशों की आर्थिक उन्नति का विवरण दीजिए और बतलाइए कि जलवायु का क्या और कहाँ तक प्रभाव पड़ा है।

६. "आस्ट्रेलिया के विकास में मुख्य बाधाएं यहां की अकेली स्थिति और कम जनसंख्या हैं" इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिए।

७. आस्ट्रेलिया के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में जनसंख्या के घनत्व के कारण बतलाइए।

८. आस्ट्रेलिया में जनसंख्या का वितरण समझाइए।

[**संकेत**—आस्ट्रेलिया में जनसंख्या का औसत घनत्व दो मनुष्य प्रति वर्गमील है। इस प्रकार यह महाद्वीप संसार में सबसे कम आबाद सभ्य देश है। इस देश की जनसंख्या का ५० प्रतिशत भाग ब्रिसबेन, सिडनी, मेलबोर्न, एडीलेड, पर्थ और होवर्ट आदि बड़े-बड़े नगरों में निवास करता है।

इस महाद्वीप में जनसंख्या का वितरण, वर्षा, तापक्रम, सिंचाई की सुविधाओं, खनिज पदार्थों और यातायात के साधनों से प्रभावित हुआ है। पश्चिम का रेगिस्तानी भाग जहां वर्षा की मात्रा १० इंच से भी कम है, वह प्रायः ऊजड़-सा है। प्रत्येक आठ वर्गमील में १ मनुष्य निवास करता है। उत्तर में सवाना घास के मैदानों में उच्च

तापक्रम के कारण प्रत्येक वर्गमील में केवल एक मनुष्य का औसत पड़ता है । [विक्टो-रिया और न्यूसाउथवेल्स आस्ट्रेलिया के सबसे अधिक आबाद प्रदेश हैं । इन प्रदेशों में २०"-३०" तक वर्षा होती है और पूर्वी तटीय प्रदेशों में बहुत बड़े-बड़े शहर हैं जो सब बन्दरगाह भी हैं । इसीलिए अबादी घनी है । मरे नदी की निचली तलहटी में सिंचाई के साधनों की सुविधा होने की वजह से आबादी घनी है । पश्चिमी आस्ट्रेलिया में सोने की खानों के पता लग जाने से कुछ प्रदेशों में आबादी का घनत्व बढ़ गया है ।]

९. आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में लकड़ी का उपयोग किस प्रकार किया जाता है ?

१०. पिछले कुछ सालों में दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया ने वाणिज्य और व्यापार में बड़ी प्रगति की है । यह किस प्रकार सम्भव हो सका है ?

११. आस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली खनिज वस्तुओं और धातुओं का नाम लिखिए । यह भी बतलाइए कि यहां की खनिज सम्पत्ति ने किस प्रकार आर्थिक उन्नति में सहायता दी है ?

अध्याय :: पन्द्रह

एशिया

सामान्य परिचय—क्षेत्रफल और आबादी के विचार से एशिया सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह महाद्वीप समस्त भूमंडल के एक-तिहाई भाग पर फैला है। इसकी आबादी भी दुनिया की आधी है। अधिकतर आबादी दक्षिण-पूर्वी भाग अर्थात् भारत, चीन, जावा और जापान में है। इसका क्षेत्रफल १७० लाख वर्गमील है और वह आर्कटिक वृत्त से लेकर भूमध्यरेखीय वृत्त तक फैला हुआ है। इसम २० राष्ट्र सम्मिलित हैं जिनकी कुल आबादी १२,२४० लाख है।

व्यापार की कठिनाइयां—पहाड़ों और मरुस्थलों की बाधाएं—एशिया में व्यापार के विकास के लिए कुछ भौतिक असुविधाएं हैं। (१) **एशिया का विस्तार तथा भूमि की बनावट**—विशाल विस्तार होने के कारण एशिया के भीतरी भाग खुश्क हैं। यहां तक समुद्री हवायें नही पहुँच सकतीं। अधिक विस्तार के ही कारण ये भाग अन्य देशों से दूर पड़ते हैं और अवनत दशा में हैं क्योंकि थल मार्गों द्वारा जल मार्गों की अपेक्षा व्यापार में कठिनता होती है। एशिया की प्राकृतिक बनावट के कारण भी व्यापार में बाधा पड़ती है। इसके मध्य भाग में पामीर के प्लेटो से चारों ओर को फैली हुई पर्वतमालाएं उत्तर और दक्षिण भाग को एक दूसरे से अलग करती हैं। पामीर से हिमालय, काराकोरम, थियानशान और अल्टाई की श्रेणियां पूर्व की ओर हिन्दुकुश और सुलैमान की श्रेणियां पश्चिम की ओर को फैली हुई हैं। इसके अतिरिक्त पूर्वी और पश्चिमी भाग भी पहाड़ों और मरुस्थलों के बीच में आ जाने से एक-दूसरे से अलग हो गये हैं। इस प्रकार उत्तरी और दक्षिणी भागों तथा पूर्वी और पश्चिमी भागों के बीच यातायात कठिन ही नहीं वरन् कहीं-कहीं तो असम्भव हो गया है।

(२) **हानिकर जलवायु**—एशिया के विस्तार, आकार और बनावट के कारण ही यहां की जलवायु में बिषमता और विभिन्नता आ गई है। इसके उत्तरी भागों में, जो कि एशिया के आधे से भी अधिक भाग को घेरे हुए है, खेती और मनुष्यों के रहने के लिए अनुकूल जलवायु नहीं है। मध्य के मरुस्थल बिल्कुल बंजर हैं। एशिया के केवल दक्षिणी-पूर्वी भाग ही ऐसे प्रदेश हैं जहां की मानसूनी और भूमध्यरेखीय जलवायु खेती और उद्योग-धन्धों के लिए अनुकूल हैं।

एशिया के भिन्न-भिन्न देशों के निवासी भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के हैं और उनकी भाषा भी भिन्न है।

एशिया की भिन्न-भिन्न जातियां—एशिया में ऐसी सभी प्रकार की जातियां पाई जाती हैं जो विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हैं। यहां के तीन-पंचमांश निवासी मंगोलियन जाति के हैं। ये लोग साइबेरिया, जापान, कोरिया, मंचूकुओ, मंगोलिया, चीन, इन्डोचीन, ब्रह्मा, इन्डोनेशिया, मलाया प्रायद्वीप, फारमोसा और

हिमालय की ढालों पर बसे हुए हैं। काकेशस जाति के लोग ऊपरी और मध्य गंगा, सिन्ध के मैदानों, ईरान, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक और अरब में पाये जाते हैं। नीग्रो (हब्शी) जाति के लोग मलाया प्रायद्वीप, अन्डमान द्वीप और दक्षिणी भारत में मिलते हैं।

एशिया की आबादी—आबादी का औसत घनत्व ७० व्यक्ति प्रति वर्गमील है परन्तु एशिया के सभी स्थानों में जनसंख्या का वितरण समान रूप में नहीं है। गंगा, सिन्ध के मैदानों, चीन के तटीय प्रदेशों, जापान और जावा में प्रति वर्गमील १०० से भी अधिक मनुष्य पाये जाते हैं। मध्य एशिया के पठारों, अरब और एशियाई रूस के उत्तरी ठंडे प्रदेशों में आबादी बहुत कम है। चीन, भारत, जापान, कोरिया तथा दक्षिण-पूर्वी कुछ भागों में आबादी बहुत घनी है। मृत्यु संख्या का औसत अधिक होते हुए भी प्राकृतिक रूप से जनसंख्या में प्रतिवर्ष बड़ी वृद्धि होती रहती है। यूरोप के अतिरिक्त निवासी तो १९ वीं शताब्दी में अमरीका महाद्वीप में चले गये थे, परन्तु एशिया के अतिरिक्त निवासियों ने बाहर के देशों में प्रवास नहीं किया। एशिया के देशों में प्रति वर्गमील आबादी के घनत्व का औसत इस प्रकार है—भारतवर्ष में १६८, श्रीलंका में १६६, चीन में १५५, जावा और मदुरा में ६१०, जापान में ३२५ और कोरिया में २००। यह घनत्व औद्योगिक देशों की अपेक्षा बहुत ऊंचा है। उदाहरण के लिए १९४७ के अनुसार प्रति वर्गमील आबादी का औसत रूस में १५, संयुक्तराष्ट्र में ३० और फ्रांस में ११८ ही था। खेती के योग्य भूमि के विचार से एशिया में आबादी का घनत्व और भी उँचा है, उदाहरणार्थ भारत में ३४५, पाकिस्तान में ४०८, जापान में १३००, कोरिया में ६२९, जावा और मदुरा में ४५२, चीन में ४४४, श्रीलंका में ४२५ और ब्रह्मा में २४० हैं।

एशिया में खेती की उपज—चावल, ज्वार, बाजरा, चाय, तिलहन, गन्ना, कपास, तम्बाकू, सिनकोना, रेशम और सोयाबीन के उत्पादन में संसार के महाद्वीपों में एशिया का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। चावल के समस्त विश्वव्यापी उत्पादन का ९५ प्रतिशत भाग एशिया से ही प्राप्त होता है। सन् १९५३-५४ में एशिया की लगभग १६८ लाख एकड़ भूमि पर चावल की खेती होती थी और चावल का उत्पादन १५६० लाख मीट्रिक टन था। चाय, पटसन, बगीचों का रबड़ और सोयाबीन के उत्पादन में एशिया का एकाधिपत्य है। गन्ने की चीनी का एक-तिहाई अंश एशिया के देशों से ही प्राप्त होता है। कपास के उत्पादन में संसार के महाद्वीपों में एशिया का दूसरा स्थान है। सन् १९५२-५३ में करीब १४ लाख मीट्रिक टन कपास उत्पन्न की गई जब कि विश्व का उत्पादन ६८ लाख मीट्रिक टन था।

दक्षिणी-पूर्वी एशिया में खेतिहर उत्पादन का सबसे अधिक महत्व है। विभिन्न देशों में खेती में लगे व्यक्तियों की प्रतिशत संख्या इस प्रकार है—

जापान	५२ प्र.श.
भारत	६७ प्र.श.
थैलैण्ड	८९ प्र.श.

कोरिया	७३ प्र.श.
बर्मा	७० प्र.श.
फिलीपाइन	६९ प्र.श.
मलाया	६१ प्र.श.

एशियाई देशों में खेती की यह प्रधानता ब्रिटेन, संयुक्तराष्ट्र, जर्मनी और फ्रांस के बिल्कुल विपरीत है जहां पर खेती में लगे व्यक्तियों की संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम है। दूसरे, एशिया के बहुत-से देशों में फसलों की विविधता बहुत कम है। निम्नलिखित तीन देशों में ७० प्रतिशत से अधिक भूमि पर चावल की खेती होती है—

थैलैण्ड	९४ प्रतिशत
हिन्दचीन	८३ प्रतिशत
बर्मा	७२ प्रतिशत

दक्षिणी पूर्वी एशिया में अधिक तर भूमि पर उन फसलों को उगाया जाता है, जिन्हें निर्यात किया जाता है जैसे चाय, गन्ना, पटसन, अबाका और रबड़। एशिया के इस भाग में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है और यह बड़ी तेजी से आत्म-निर्भर होता जा रहा है।

एशिया का व्यापार—अधिक विस्तार के कारण एशिया के वैदेशिक व्यापार में बाधा नहीं पड़ी। एशिया में यूरोपीय लोगों के आगमन के कई शताब्दी पूर्व भारत, फारस तथा पश्चिमी एशिया का वैदेशिक व्यापार बहुत उन्नत दशा में था। उस समय अरब के निवासी यहाँ की बनी वस्तुएं ले जाकर इटली वालों के हाथ बेचते थे। इसी व्यापार को हड़पने के लिए पुर्तगाली, अंग्रेज और फ्रांसीसी व्यापारी भारत में आये। स्वेज मार्ग के खुलने और यूरोप वालों का एशिया पर राजनैतिक अधिकार हो जाने के कारण उस व्यापार की रूप-रेखा ही बदल गई। संसार के सभी देशों को एशिया से कच्चा माल और भोजन सामग्री प्राप्त होती है तथा पश्चिमी देशों की बनी हुई वस्तुओं की खपत भी अधिकतर यहीं होती है।

एशिया के तीन विभाग—एशिया को कुछ लोगों ने (अ) सूदूर-पूर्व (ब) मध्य-पूर्व और (स) निकट-पूर्व इन तीन भागों में बांटा है। सुदूर-पूर्व में साधारणतया भारतीय संघ, पाकिस्तान, चीन, मलाया, थाइलैंड, इन्डोचीन, इन्डोनेशिया तथा जापान सम्मिलित हैं। मध्यपूर्व में अफगानिस्तान, अरब, ईरान, ईराक और इजाज शामिल हैं। सुदूरपूर्व अर्थात् भारत, पाकिस्तान, चीन और जापान बहुत उन्नत दशा में हैं। चावल, कपास, जूट, तम्बाकू, गन्ना (ईख), अफीम, रेशम, इमारती लकड़ी, खनिज तेल, चाय, कहवा इत्यादि यहां व्यापक रूप में पैदा होते हैं। इन प्रदेशों में व्यापारिक उन्नति भी बहुत हुई है। मध्यपूर्व को आर्थिक विकास के लिए सुन्दर सुअवसर प्राप्त हैं। यहां पर खनिज तेल, सोना, गेहूँ, कहवा, कपास, खालें और चमड़ा व्यापक रूप में पाया जाता है। इस समय यातायात की असुविधा और राजनैतिक अव्यवस्था इसकी उन्नति में बाधक हैं।

इस महाद्वीप के लिए कोलम्बो योजना का विशेष महत्व है। इसका उद्देश्य दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया की सहकारी रीति से आर्थिक उन्नति करना है। कामनवेल्थ देशों के द्वारा चालू की गई यह योजना वास्तव में दक्षिणी और दक्षिणी-पूर्वी एशिया की आर्थिक स्थिति और समृद्धि में एक नया युग खोल देगी। इसका प्रधान लक्ष्य इस प्रदेश की आर्थिक दशा को इस प्रकार सुधारना है कि लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो जाये और इसका आधार आपस के देशों में सहयोग ही है। इस सहकारी योजना में कामनवेल्थ से बाहर के देश भी भाग ले सकते हैं।

सन् १९५० में विभिन्न कामनवेल्थ देशों के विदेश-मंत्रियों का सम्मेलन हुआ यहाँ उन्होंने यह तय किया कि दक्षिणी-पूर्वी एशिया के देशों की आर्थिक उन्नति के लिए मिल-जुलकर काम करना बहुत जरूरी है। इस देश की कमी और गरीबी को दूर करने के लिए एक ६ वर्षीय योजना तैयार की गई और दूसरी आपस में टेकनिकल सहायता देने के प्रवन्ध का निश्चय किया गया। सितम्बर में इसके दूसरे अधिवेशन में प्रत्येक देश की आर्थिक उन्नति के लिए विस्तृत योजना पर विशेष रूप से विचार किया गया। धीरे-धीरे कामनवेल्थ के बाहर के देश भी इस योजना में दिलचस्पी लेने लगे हैं।

टेकनीकल सहयोग मिशन द्वारा संयुक्तराष्ट्र अमरीका की सरकार भी एशिया के अविकसित देशों को उन्नत करने में सहायता दे रही है। इस दृष्टिकोण से कोलम्बो योजना का भी बड़ा महत्व है।

एशिया की यातायात व्यवस्था अभी भी अविकसित दशा में है क्योंकि उद्योग धन्धों का विकास धीरे २ हुआ है और विभिन्न देशों के आर्थिक जीवन में ग्राम्य जीवन की प्रधानता है।

यातायात की प्रगति (१९५२)

देश	रेलमार्गों की लम्बाई	सड़कें (हजार मील)	हवाई मार्ग (हजार मील)
भारत	३४,३००	२६८,०००	१०,५५८
जापान	१५,१८७	५९४,०००	—
चीन	१३,२८०	७८,५८०	१९,१९४
पाकिस्तान	६९६८	७१,२०९	२,३२७
इन्डोनीशिया	४५५६	४३,६८२	५,३५५
हिन्द चीन	२०९५	३७,०००	—
बर्मा	२,२६६	१०,५३०	—
थैलैंड	२,०६०	४,१६६	६,५८३
लंका	—	१७,५२३	१,४०४

जापान

जापान की उन्नति के कारण—इस देश में गत साठ वर्षों में बड़ी औद्योगिक उन्नति हुई है। इस आश्चर्यजनक उन्नति के कुछ भौगोलिक कारण हैं। प्रथम तो

चीन तथा अन्य पूर्वीय देश इसके पास ही स्थित हैं जहाँ से इसे कच्चा माल सुविधा-पूर्वक प्राप्त हो सकता है और तैयार माल आसानी से बिक सकता है। यहाँ की सरकार ने भी औद्योगिक विकास में सक्रिय सहायता पहुँचाई है। जापान की सरकार ने आरम्भ ही से देश में कारखाने स्थापित किये, विदेशों से विशेषज्ञ बुलवाये, बैंक खोले और संसार के अन्य उद्योग प्रधान देशों के ढंग ही अपने देश में प्रचलित किये। दूसरे, यहाँ की उत्तम जलवायु के कारण जापान में रेशम इत्यादि अनेक कच्ची धातुएं उत्पन्न होतीं हैं। तीसरे, यहाँ पर मजदूर सस्ते और काफी संख्या में मिलते हैं। चौथे, यहाँ के लोग मितव्ययितापूर्वक रहते हैं। पाँचवें, अपने देश को स्वतंत्र तथा सम्मानित बनाने की प्रवल इच्छा से प्रेरित होकर जापानियों ने अपने देश में औद्योगिक विकास के लिए भगीरथ प्रयत्न किया।)

ग्रेट ब्रिटेन से समानता—जापान तथा ग्रेट ब्रिटेन में अनेक बातें बिल्कुल ही समान हैं। दोनों ही अनेक द्वीपों से मिलकर बने हैं और दोनों की जलवायु भी शीतोष्ण है। दोनों के पास महान् जहाजी बेड़े हैं और दोनों ही संसार की बड़ी शक्तियों में गिने जाते हैं। जापान भी ग्रेट ब्रिटेन की भाँति सभ्यता तथा धार्मिक विचारों की सुविधा के दृष्टिकोण से एशिया के समीप और अपनी राजनैतिक स्वतंत्रता के निर्वाह के लिए महाद्वीप से काफी दूर है।

ब्रिटेन की तरह जापान भी महाद्वीप के समीप है और उसके धर्म व सभ्यता का इस पर असर पड़ा है, परन्तु फिर भी इसने अपनी निजी विशेषतायें कायम रखी हैं। दोनों ही देशों का विस्तृत साम्राज्य है जिससे कि इन के माल के लिए मंडियाँ तैयार मिलती हैं।

जापानी साम्राज्य

	क्षेत्रफल (हजार)	जनसंख्या (हजार)
जापान प्रधान	१४८.८	६९,२५४
फारमोसा	१३.९	५,२१३
काराफूटो	१३.३	३३२
कोरिया	८५.५	२२,८९९
क्वान्टग	१.३	१,१४५
दक्षिणी मंचूरिया	०.१	५२३
प्रशांत महासागरीय द्वीप	०.८	१०३
जापानी साम्राज्य	२६३.४	९९,४६९

— दूसरे महायुद्ध के बाद जापानी साम्राज्य भंग हो गया। कोरिया स्वतन्त्र है। मंचूरिया और तैवान को चीन को वापस कर दिया गया है। सन् १९४५ में याल्टा समझौते के अनुसार दक्षिणी सखालीन तथा क्यूराइल रूस के आधिपत्य में आ गये हैं। सैनफ्रांसिस्का सन्धि के अनुसार रियूकू द्वीप अमरीका के पास चले गये हैं।

क्षेत्रफल और जनसंख्या के दृष्टिकोण से जापान ग्रेट ब्रिटेन से बड़ा है। ग्रेट ब्रिटेन का क्षेत्रफल १२१,००० वर्गमील और जनसंख्या ४८० लाख है। इसके विपरीत जापान का क्षेत्रफल १५९,००० वर्गमील और जनसंख्या ६९० लाख है।

जापान की रचना तथा जलवायु—जापान खास की आकृति केले की फली के समान है इसमें होकेडू, होन्शू, कियूशियू और शिकोकू चार बड़े-बड़े द्वीप हैं। देश पहाड़ी है और उसमें भूकम्प प्रायः आया करते हैं। एक दिन में चार बार का औसत रहता है परन्तु बड़े-बड़े भूचाल वर्षों में कभी-कभी आ जाते हैं। यहाँ की जलवायु में महाद्वीपी और समुद्री का सम्मिश्रण है। गर्मी में वर्षा और जाड़ों में सूखा रहता है। यहां की जलवायु पर अक्षांशों और समुद्री धाराओं का बड़ा प्रभाव पड़ता है। उत्तर-पश्चिमी मानसून और वेरिंग धारा के प्रभाव से कठिन जाड़ा पड़ता है। गर्मियों में उत्तरी जापान का तापक्रम ८०° फा० तक हो जाता है और पहाड़ों के कारण इसका पश्चिमी भाग पूर्वी भाग की अपेक्षा अधिक शुष्क रहता है। अतः पूर्वी जापान में जाड़ा हल्का रहता है। केवल वही भाग ठंडे रहते हैं जहाँ ठंडी धाराओं का प्रभाव पड़ता है। सितम्बर में प्रायः टाइफून आया करते हैं, जिनके कारण तटों पर बड़ी हानि होती है। जापान की जलवायु में बड़ी विषमता पाई जाती है। सबसे उत्तर के द्वीप में उपध्रुवीय दशायें पाई जाती हैं जबकि सबसे दक्षिणी द्वीप में उपोष्णीय दशायें मिलती हैं। जाड़े में साइबेरिया पर बहने वाली ठंडी व शुष्क उत्तर-पश्चिमी हवाएं जापान सागर पार करने पर जलवाष्प ग्रहण कर लेती हैं और जापान के पश्चिमी भाग में तुषारपात करती हैं। इसके प्रशान्तसागरीय तट प्रदेश में मौसम खुला व साफ रहता है।

जापान की तटरेखा, बन्दरगाह और नदियां—जापान की तट रेखा बड़ी लम्बी है। इसकी लम्बाई १७००० मील है। यहाँ की ९ वर्गमील भूमि पर एक मील तट का औसत पड़ता है। (अधिक उपज और आबादी वाले मैदान समुद्र तट के समीप हैं। इसी कारण यहां के निवासी अधिकतर नाविक और व्यापारी हो गये हैं) दुर्भाग्य की बात यही है कि उत्तम पोताश्रय वाले गहरे कटानों पर, पृष्ठ-प्रदेशों की भूमि ऊंची-नीची होने के कारण, बड़े-बड़े बन्दरगाहों का विकास नहीं हो सका है। उपजाऊ मैदानों के तटों के समीप समुद्र छिछला है। नदियों के चौड़े मुहानों पर रेत जम जाती है और ड्रामों द्वारा उसको लगातार गहरा किया जाता है जिससे कि समुद्री जहाज नदियों में प्रवेश कर सकें। जापान में नदियां कम हैं और जो हैं भी वे छोटी और तेज बहने वाली हैं। फिर भी वे सिंचाई और जलशक्ति के लिए बड़ी उपयोगी हैं।

जापान की खेती और उपज की वस्तुएं—(देश अधिकतर पहाड़ी है और इसी कारण उपजाऊ मैदान कम हैं। इसकी भूमि के केवल छठे भाग पर ही खेती हो सकती है जो कि सयत्न ढंग से की जाती है।)

सन् १९५२ में खेतिहर भूमि का अनुपात १६ प्रतिशत था। लगभग ३८० लाख लोग खेती पर बिल्कुल निर्भर रहते हैं। (खेत छोटे-छोटे तथा इधर-उधर फैले हुए हैं।

इसलिए खेती की मशीनों का उपयोग असम्भव है। परन्तु हाथ की कुशल तथा अधिकाधिक मेहनत तथा खाद के अधिक प्रयोग के कारण प्रति एकड़ उपज बहुत अधिक है। चावल की खेती सब से अधिक क्षेत्रफल में होती है और जापान चावल उत्पादन में विशेष कुशलता प्राप्त किये हुये है। सन् १९५२ में कुल खेती के क्षेत्र फल के ५६ प्रतिशत भाग पर चावल उगाया जाता था। कुल उत्पादन १२४ लाख टन था। प्रति एकड़ ३५०० पौंड है जो एशिया में सबसे अधिक तथा संसार में केवल आस्ट्रेलिया (४५०० पौंड) से कम है। दक्षिणी और मध्य भाग की उपोष्ण-कटिबन्धीय जलवायु, गर्मियों में अधिक जल-वृष्टि और नदियों द्वारा लाई हुई मिट्टी के उपजाऊ मैदानों में सिंचाई की सुविधा के कारण जापान देश चावल के उत्पादन में सर्वप्रधान हो गया है। चावल के अतिरिक्त यहां पर गेहूं, चाय, जौ, मोटे अनाज और दालें भी पैदा होती हैं। भोजन सम्बन्धी वस्तुओं में जापान पूर्णतया आत्मनिर्भर है। यहाँ की भोजन की आत्मनिर्भरता अन्य औद्योगिक देशों से ९५ प्रतिशत बढ़ी हुई है।

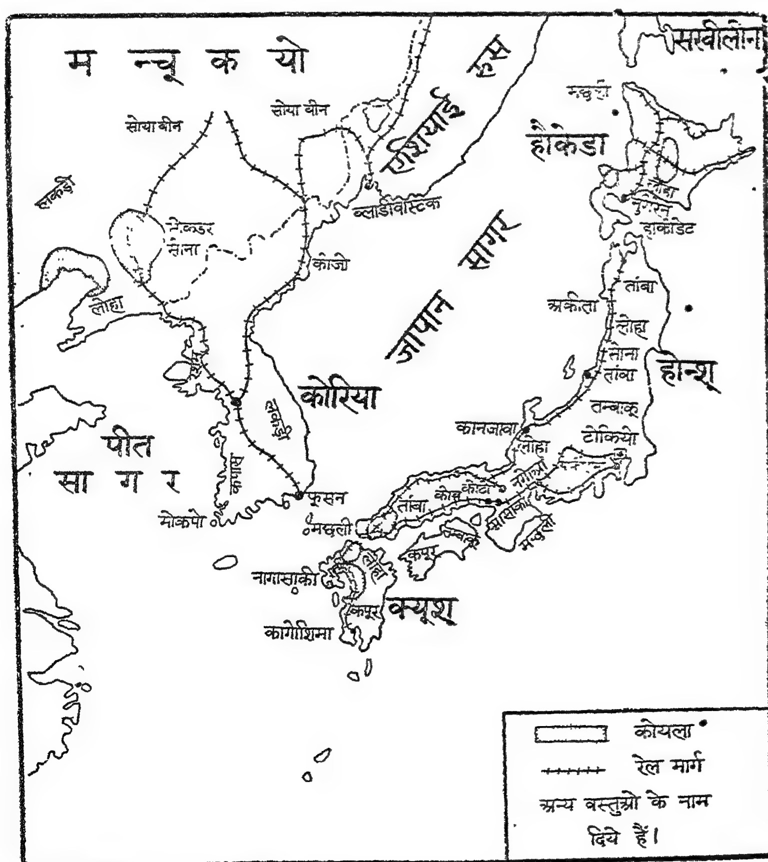
जापान की वन-सम्पत्ति—वन-सम्पत्ति और उससे लाभ उठाने में जापान कनाडा और स्केंडिनेविया से पीछे नहीं है। जापान के ५५ प्र० श० भाग पर वन फैले हुए हैं। वनों से जापान को आर्थिक लाभ यह है कि उनसे बहुमूल्य लकड़ी, लकड़ी का कोयला, ईंधन, काष्ठमन्ड और खाने की चीजें अखरोट और फल इत्यादि सभी प्रचुर मात्रा में मिलती हैं। वन सम्बन्धी समस्त उपज का ५४ प्रतिशत भाग बहुमूल्य लकड़ी और २४ प्रतिशत लकड़ी का कोयला होता है। बहुमूल्य लकड़ी की प्राप्ति कोणधारी और चौड़ी पत्ती वाले पाइन, ओक और मेपिल वृक्षों से होती है। जापान के वनों में बहुमूल्य बाँस, काफूर के वृक्ष, मोम, शहतूत और वार्निश की वस्तुओं के वृक्ष भी बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। सन् १९५२ में व्यापारिक लकड़ी का उत्पादन ५१८ लाख घन मीटर था।

पशु-पालन सम्बन्धी बाधाएं—वातावरण सम्बन्धी और आर्थिक बाधाओं के कारण जापान में पशु सम्बन्धी धन्धों का विकास नहीं हो सका। यहाँ के पहाड़ों का ढाल इतना अधिक है कि उन पर पशु नहीं चर सकते। यहाँ की उपोष्णकटिबंधीय जलवायु चारा उगाने के उपयुक्त नहीं है। पहाड़ी भागों की घासें कठिन, मोटी और पशुओं के अयोग्य होती हैं। डेरी की उपज की ओर लोगों की विशेष रुचि नहीं है इसी कारण इनकी बिक्री के लिए बाजार भी सीमित हैं। लम्बी गर्म और तर गर्मी की ऋतु भेड़ों के लिए अच्छी नहीं होती। अतः भेड़ें भी नहीं पाली जा सकतीं। यहाँ के निवासियों को ऊन, दूध, मक्खन और पनीर आदि वस्तुओं के लिए विदेशों का मुँह ताकना पड़ता है।

मछली का धंधा—जापान की आय का असाधारण साधन मछली व्यवसाय है। मछली के धंधे में जापान दुनिया भर में सबसे बढ़कर है और यहाँ की वार्षिक पकड़ मछलियों की संख्या संसार की मछलियों की २५ प्रतिशत के लगभग रहती है। यहाँ के ९० प्रतिशत मछुये किनारे की मछलियों को पकड़ने में लगे रहते हैं। किनारे की मछलियों में सारडीन, हैरिंग, मैकरेल, ट्राउट, काड, डाग, सालमन,

यलोटेल, फ्लैट फिश और शैलफिश अधिकतर होती हैं। अब गहरे समुद्र की मछलियों का धंधा भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है। मछली का धंधा कोरिया, फारमोसा और सखालीन में होता है। सन् १९५२ में ४६ लाख मीट्रिक टन मछलियाँ पकड़ी गईं।

जापान में जनसंख्या की समस्या और उसका उपाय—जापान की जनसंख्या तेजी के साथ बढ़ रही है। १९५२ में जापान खास की आबादी ८ करोड़ ५० लाख से कुछ ऊपर थी। तब से यहाँ पर ८ लाख की वार्षिक वृद्धि हो रही है। यहाँ पर जनसंख्या का औसत घनत्व ५८८ व्यक्ति प्रति वर्गमील है। यह बढ़ती हुई जनसंख्या जापान के लिए गम्भीर समस्या का रूप धारण करती जा रही है। इस समस्या को हल करने के लिए यहाँ की सरकार खेती की उन्नति, बंजर भूमि के सुधार, कारखानों के विकास और वैदेशिक व्यापार की बढ़ोतरी की ओर विशेष ध्यान दे रही



चित्र ७६—जापान की आर्थिक सम्पत्ति

है। अकेली खेती से ही इस बढ़ती हुई आबादी का निर्वाह नहीं हो सकता। इसके लिए जापान की वर्तमान भूमि से चौगुनी से भी अधिक भूमि और चाहिए। जापान में कृषि योग्य भूमि के प्रति वर्ग मील पर ३७७४ मनुष्यों का औसत है जबकि यह ब्रिटेन में २१७०, बेल्जियम में १७०९, जर्मनी में ८०६, इटली में ८१९ और फ्रांस में ४६७ औसत पड़ता है। इस समय समस्त भूमि का १५ प्रतिशत भाग ही कृषि योग्य है और अधिक से अधिक प्रयत्न करने पर भी ५० लाख एकड़ नई भूमि को सुधारा जा सकता है। जापान की सरकार यहाँ के लोगों को ब्राजील, पीरू तथा अर्जेन्टाइना इत्यादि देशों में प्रवास के लिए भी प्रोत्साहित करती है परन्तु इस प्रवास से ही जापान की जनसंख्या की समस्या के हल होने में सन्देह है। इस समस्या का वास्तविक हल तो व्यापार और कारखानों की उन्नति और यहाँ के निवासियों के एशिया के कम बसे हुए भागों जैसे होकेडो, काराफूटो, कोरिया, फारमोसा, मन्चूरिया में प्रवास द्वारा ही हो सकता है।

आवागमन के साधन—जापान एक पहाड़ी देश है इसी कारण यहाँ के आवागमन के साधनों की प्रगति मन्द रही है। इस समय जापान में रेल मार्गों की लम्बाई १०,००० मील से कुछ अधिक है। थल मार्गों के आवागमन की बाधाओं और थल मार्ग की सुविधाओं के कारण जापान के व्यापारिक जहाजों के विकास को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है।

खनिज पदार्थों की स्थिति—जापान के कारखानों की उन्नति में एक विशेष बाधा यह पड़ती है कि **जापान खनिज सम्पत्ति में समृद्ध नहीं है**। अधिकतर खनिज पदार्थ यहाँ नहीं पाए जाते। यहाँ कोयला, सोना, ताँबा और गन्धक ही विशेष मिलते हैं।

जापान में खनिज उत्पादन (१९५२-५३)
(हजार मीट्रिक टन)

एसबेस्टास	३०००
ताँबा	५४,०००
सोना (किलोस)	७,०९६
मैगनीज	७६,०००
गन्धक	१७९,०००
चाँदी	२५०
टंगस्टन	२८८
खनिज तेल	३१०,८००
कोयला	४३,३५९,०००
कच्चा लोहा	१०७१,६५५
जस्ता	८७,०००

जापान में कोयले का उत्पादन—जापान का सबसे प्रमुख खनिज पदार्थ कोयला है। समस्त खनिज पदार्थों के ६० प्र.श. मूल्य का लोहा यहाँ प्राप्त होता है।

जापान के कोयला क्षेत्र साखालीन से फारमोसा तक सभी द्वीपों में बिखरे हुए हैं। सबसे अधिक कोयला उत्पन्न करने वाली उत्तरी कियूशियु की चिकूहो खान समुद्र के समीप है और इस क्षेत्र में घनी आबादी है। होकेडू में कोयले के समस्त उत्पादन का १७ प्रतिशत भाग निकाला जाता है। यातायात की असुविधाओं और आबादी की कमी के कारण अधिक मात्रा में कोयला नहीं निकाला जा सकता।

सोना—कोयले के पश्चात् सबसे महत्वपूर्ण खनिज पदार्थ सोना है। सोना उत्तरी होन्शू और दक्षिणी कियूशियू में ही निकलता है। खनिज सोना अधिकतर ताँबे और चाँदी के साथ मिला रहता है।

तांबा—सोने के बाद तांबे का नम्बर है। जापान की कुल खनिज वस्तुओं का १३ प्र.श. भाग तांबा होता है। तांबा सभी द्वीपों में निकलता है। परन्तु आशिओ, बैशी, कोशाका, सिटाची और सगनोसेकी इन पाँचों खानों से ही जापान का ७५ प्रतिशत से भी अधिक तांबा प्राप्त होता है। तांबे के उत्पादन में जापान का दुनिया में चौथा नम्बर है। केवल कनाडा, चिली और संयुक्तराष्ट्र इससे बढ़कर हैं।

खनिज तेल—चौथा प्रमुख खनिज पदार्थ पेट्रोल है। जापान में खनिज तेल का वार्षिक उत्पादन ३ लाख टन है परन्तु उसकी वार्षिक मांग ३०.लाख टन है। इस उत्पादन का विश्व महत्व कुछ भी नहीं है क्योंकि जापान का तेल उत्पादक देशों में १८वां स्थान है। तेल क्षेत्र पश्चिमी होन्शू में पाए जाते हैं। होकैडो में कई छोटे-छोटे तेल-क्षेत्र पाये जाते हैं। गंधक यहाँ पर प्रचुर मात्रा में मिलती है क्योंकि ये द्वीप ज्वालामुखी निर्मित हैं। गंधक की आवश्यकता खाद बनाने में पड़ती है। स्थानीय माँग से बहुत अधिक मात्रा में गन्धक बचती है और निर्यात कर दी जाती है।

लोहा—खनिज लोहा यहाँ बहुत कम होता है। लोहे की खानें हैं:—एक तो होन्शू के पूर्वी तट पर सैंडी में और दूसरी होकेडू के मुरोरान में है। जापान में सोना, चाँदी, जस्ता, टीन, मैंगनीज और सुरमा भी मिलता है।

जलशक्ति—जलशक्ति में जापान बड़ा भाग्यवान् है। यहाँ की कुल जल-शक्ति के ६० प्र.श. भाग का विकास भी हो चुका है। यहाँ का विषम धरातल, तेज धाराएँ और भारी वर्षा जल-विद्युत के विकास के लिए आदर्श दशाएं हैं। जल विद्युत की नवीन योजनाएं अधिकतर मध्य होन्शू के पूर्वी तथा दक्षिणी ढाल पर स्थित हैं। जापान में सबसे प्रथम जल-विद्युत का कारखाना बीवा झील की एक धारा पर क्यूटो में १८९२ में खोला गया था। **जलशक्ति का प्रयोग**—जापान में जल-शक्ति का अधिकतर प्रयोग कारखाने चलाने, नागरिक यातायात और मकानों में रोशनी करने में किया जाता है। ९१ प्र.श. मकानों और कारखानों में बिजली से काम लेने के लिए तार लगे हुए हैं जबकि संयुक्त राष्ट्र जैसे उद्योग-प्रधान देशों में भी केवल ७५ प्र.श. मकानों में ही बिजली से काम लिया जाता है

जापान में जल-शक्ति उत्पादन

	१९५२	१९५३	१९५४
कोयला (हजार मीट्रिक टन)	४३३५६	४६५२४	३५४३४
खनिज तेल (किलोमिटर)	—	—	११७९७६२ (जनवरी से जून तक)
बिजली (लाख किलोवाट)	४४०१६०	४६७०४०	३७४२१०

सन् १९५० में जापान में जल-विद्युत का उपभोग ३२,५४२ किलोवाट था। इसका प्रधान उपभोग उद्योग-धन्धों, शहरी यातायात और घरेलू रोशनी में होता हैं। रहने वाली तथा उद्योग-धन्धों वाली ९१ प्रतिशत इमारतों में बिजली लगी है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका जैसे उद्योग-प्रधान देश में भी केवल ७५ प्र.श. इमारतों में ही बिजली लगी हुई है।

शिल्प-उद्योग—जापान के औद्योगिक विकास व उन्नति के पीछे उसकी वह नीति रही है जिसके द्वारा वह अपने साम्राज्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहता था। इसके अलावा जापानियों ने दूसरे उद्योग-प्रधान देशों के अनुभव—उनकी सफलता और गलतियों—से पूरा फायदा उठाया है और फलस्वरूप कुशल कारीगर हो गए हैं। वहाँ के उद्योग-धन्धों को सहायता या धन की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है। सरकार केवल आयात नियन्त्रण द्वारा ही उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देती है। कानून द्वारा जापानी सरकार अपने देश के उद्योग-धन्धों की प्रगति संचालित करती है। जापान में अनेक महत्वपूर्ण शिल्प-उद्योग किए जाते हैं जिनमें लाखों आदमी काम करते हैं—जैसे रेशम के कारखानों में ४,१०,०००; कपड़ा बुनने में २,०५-०००; सूत कातने में १,६५,०००; जहाज बनाने में १००,०००; शराब खींचने में ९०,०००; रेशम कातने में ८८,०००; पुस्तकें आदि छापने में ७०,०००; ऊनी कपड़ा बुनने में ४५,०००; रंगने में ५०,०००; मशीनों के काम में ४४,०००।

जापान की औद्योगिक दशा की विशेषता गृह उद्योग है और एक विशेष प्रकार के कार्य में कुछ परिवारों का आधिपत्य रहता है। युद्ध से पहले १५ परिवारों ने ७० प्रतिशत उद्योग-धंधों और पूँजी पर आधिपत्य जमा रखा था। चार परिवार जापान के एक-तिहाई उद्योग पर कब्जा रखते थे और इनके हाथ जापान के ६० प्रतिशत शेयर थे।

कपड़ा बुनना—कपड़ा बुनने में जापान में उल्लेखनीय उन्नति हुई है। जापान की औद्योगिक उन्नति का अनुमान सूती वस्त्रों के कारखानों की बढ़ती हुई संख्या से लगाया जा सकता है। इस उद्योग के लिए यहाँ पर अनेक सुविधाएँ हैं—जैसे सस्ती मजदूरी, कोयले की समीपता, चीन, जापान, भारत तथा संयुक्तराष्ट्र आदि देशों से माल मँगाने की सुविधा और साथ ही साथ तैयार माल की खपत के लिए चीन का बाजार आदि। सूती वस्त्रों के केन्द्र हैं—ओसाका, कोबे,

नागोया और टोकियो। ओसाका को जापान का मानचेस्टर कहते हैं। बीस वर्षों में ही ओसाका की इतनी उन्नति हुई है कि यह जापान का सबसे बड़ा नगर हो गया है और इसकी जनसंख्या २२,५९,००० हो गई है। यह नगर समुद्र के समीप स्थित है। (नहरों और नदियों द्वारा • जहाजों में माल मिल के क्षेत्र में आ सकता है। सारे जापान के १० प्र० श० तकुवे यहीं पर लगे हैं। यहाँ पर रुई बाहर से आती है और प्रायः सबसे अधिक मात्रा में रुई का ही आयात होता है।) इस उद्योग में और धन्धों के सभी मनुष्यों को मिलाकर भी अधिक मनुष्य काम करते हैं। जापान का बुना हुआ कपड़ा जापान के निर्यात व्यापार का सबसे प्रमुख आधार है।

(सूती वस्त्र उद्योग जापान के आर्थिक जीवन में बड़ा महत्व रखता है। जापान के कुल निर्यात का $\frac{1}{3}$ सूती कपड़े होते हैं।) सन् १९५२ में ७,४५२,००० तकुवे और ३०८,००० करघे थे। सन् १९५४ का उत्पादन इस प्रकार था—

सूत (हजार पौंड)	८५४,८२४
सूती वस्त्र (हजार वर्ग गज)	२,६४३,९४१

सूती वस्त्र उद्योग के उत्पादन का निर्यात प्रायः पाकिस्तान, इण्डोनेशिया आस्ट्रेलिया, हांगकांग, संयुक्तराज्य और थैलैण्ड को होता है।

निर्यात (लाख येन)

	सूत	सूती वस्त्र
१९५१	११७,५००	११,४८,४७०
१९५२	१०२,२७०	६,४९,४००
१९५३	५७,२७०	६,४५,१२०

(ऊनी वस्त्र भी बनाए जाते हैं पर केवल घरेलू उपयोग के ही लिए। सन् १९५२ में १५१० लाख पौंड ऊन तथा १५०० लाख वर्ग गज ऊनी कपड़ा तैयार किया गया (कृत्रिम रेशम के उत्पादन में जापान का महत्वपूर्ण स्थान है। सन् १९३७ में कृत्रिम रेशम का उत्पादन १५२,४०० मीट्रिक टन था।) युद्ध पश्चात इस उद्योग का पुनर्गठन धीरे-धीरे हो सका है। आजकल कृत्रिम रेशम के लिए लुग्दी कनाडा से आयात की जाती है। स्वीडन, फिनलैंड, और नार्वे से भी लुग्दी मंगाई जाती है।

कृत्रिम रेशम का उत्पादन
(मीट्रिक टन)

	धागा	कपड़ा
१९३७	१५२४००	१४८४४०
१९५२	६४,४४०	११८९२०
१९५३	७४०४०	१६१,६४०

सन् १९५४ में कच्चे रेशम तथा उससे बने वस्त्र का उत्पादन इस प्रकार था—

.. .. रेशम	२०६७०३ गाँठें
रेशमी धागा	३२०००००० पौंड
रेशमी वस्त्र	११४७७८००० वर्ग गज

(रेशम के तागों को लपेटना जापान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण उद्योग है। रेशम उत्पादन और रेशम के निर्यात में जापान दुनिया भर में सबसे आगे है।) परन्तु आश्चर्य तो यह है कि जापान में रेशमी कपड़ा बुनने का विकास नहीं हुआ है। देश में तैयार किया हुआ ८० प्र० श० से भी अधिक रेशम कच्चे रूप में ही बाहरी देशों को निर्यात किया जाता है।

लोहे और स्टील का धंधा—(जापान में लोहे और स्टील के कारखानों की बड़ी कमी है। औद्योगिक विकास तथा राष्ट्रीय संरक्षण में महत्वपूर्ण होने के कारण जापानी सरकार लोहे और स्टील के उद्योग को बड़ा प्रोत्साहन दे रही है। कियूशियू के यावाता नगर में लोहे और स्टील का एक बहुत बड़ा कारखाना खोला गया है—कुल मिलाकर लोहे व इस्पात के ३१ कारखाने हैं जिनमें से ५ पिग आयरन से इस्पात तैयार करते हैं। खुली भट्टी में ८० लाख टन तक इस्पात तैयार किया जा जा सकता है। और सबसे बड़े कारखाने में २० लाख टन पिग आयरन तैयार होता है। नागासाकी और कोबे में जहाज बनाये जाते हैं। (इसका इस्पात उद्योग आयात किए हुये लोहे व कोयले पर निर्भर रहता है। कच्चा लोहा संयुक्तराष्ट्र, मलाया, फिलीपाइन, भारत, गोआ, कनाडा, हांगकांग और चीन से आता है तथा बढ़िया कोयला संयुक्तराष्ट्र, कनाडा, भारत और चीन से मंगाया जाता है।) इस्पात का उत्पादन व निर्यात इस प्रकार था—

उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)

	१९५२	१९५३	१९५४
कच्चा लोहा	१०३२	१११४	—
पिग आयरन	३५८८	४६५६	४२३०
इस्पात	६९९६	७६६८	५०६७

निर्यात (लाख येन में)

१९५२	१९५३
९४७२८०	५०२३६०

अन्य उद्योग—(यहाँ पर दियासलाई, छाते, खिलौने और कागज बनाने के भी बड़े-बड़े कारखाने हैं। रबर के कारखानों की भी उन्नति हो रही है। रासायनिक पदार्थ भी बनाये जाने लगे हैं। जापान में बड़े सुन्दर बर्तन बनाये जाते हैं और दुनिया में इनकी बड़ी मांग है।)

वस्त्र उद्योग को छोड़कर अन्य सभी उद्योग सन् १९५४ तक युद्ध पूर्व के स्तर तक पहुँच गये थे। यदि सन् १९५० के उत्पादन को १०० मान लिया जाय तो बढ़ोत्तरी इस प्रकार थी—

१९५२	१४६·५
१९५३	१७०·७

वैदेशिक व्यापार—जापान के वैदेशिक व्यापार में अब बड़ी उन्नति हो गई है। किसी देश की उन्नति कच्चे माल के मँगाने, तैयार माल को बेचने और व्यापार को अपने लिए लाभकारी बनाने की योग्यता पर निर्भर होती है। अपने औद्योगिक विकास के प्रारम्भ से ही जापान ने अपने निर्यात और आयात व्यापार में संतुलन रखने के लिए कठोर प्रयत्न किया है।

सन् १९५३ में आयात-निर्यात व्यापार का मूल्य इस प्रकार था—

आयात	८६७,४७३,०८९,०००
निर्यात	४५८,९४३,४०८,०६०

इनका विस्तृत विवरण निम्न तालिकाओं से स्पष्ट हो जायेगा।

आयात (१९५३-५४)

(लाख येन)

भोज्य और पेय पदार्थ	२२५,०१४०
चावल	७७३११०
जौ	२१८०१०
गेहूँ	५०,५०३०
चीनी	४३,७२८०
वस्त्र के पदार्थ	२४५,७५९०
कृत्रिम रेशम की लुग्दी	६०२१०
ऊन	७६०५४०
कच्ची कपास	१४२७४००
अन्य रेशे	८७६२०
धातुएँ	६२४०४०
कच्चा लोहा	२२०६२०
अन्य धातु	८५९२०
अन्य खनिज	२४८८८०
फासफेट	६४४२०
नमक	४६६४०
खनिज ईंधन	१०३९७३०
कोयला	३२३२९०
खनिज तेल	६९१५००
अन्य सामान	८२४६१०
खालें	११०३००
सोयाबीन	२००२९०
रबड़	१६५७८०
लकड़ी	१६०२९०
रसायन	२४९०००
मशीनें	५७८६८०
यात्री गाड़ियाँ	१२७८४०
जहाज	४७४६०
विविध	४०२०२०
कुल योग	८६७४६९

निर्यात (१९५३)

(लाख यन)

भोज्य और पेय पदार्थ	४७३०२०
मछली	२१८५५०
चाय	३१५९०
कपड़े के सामान	१६५७२१०
कच्चा रेशम	१५४१८०
रेशमी वस्त्र	३१३१०
सूत	५७२७०
सूती कपड़े	६४५०२०
कृत्रिम रेशम का धागा	३६४२०
कृत्रिम रेशमी कपड़ा	१५५९३०
कृत्रिम रेशम	४६३६०
कृत्रिम रेशम के धागे की वस्तयें	१०५२१०
कपड़े	१३५१८०
रसायन	२२४१७०
खनिज से निर्मित वस्तुएँ	२०७९२०
सीमेन्ट	६१२५०
चीनी मिट्टी की वस्तुएँ	१०१९५०
धातुएं	६७१४८०
इस्पात की वस्तुएँ	५०२३६०
अलौह धातुएँ	६१५५०
ढाली हुई धातु की चीजें	१०७५५०
मशीनें	६७९३६०
कपड़े की मशीनें	५९५१०
सिलाई की मशीनें	७३२५०
जहाज	३४४६४०
लकड़ी	४७८७०
खिलौने	८२५७०
विविध	६७६२७०
कुल योग	४५८९४३०

व्यापार संतुलन प्रतिकूल है।

युद्ध पूर्व का वैदेशिक व्यापार—द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व जापान का अधिक व्यापार संयुक्तराष्ट्र के साथ होता था। जापान में २५ प्र० श० माल संयुक्तराष्ट्र से आता था और १७ प्र० श० माल वहाँ जाता था। इसके अतिरिक्त

एक-तिहाई के लगभग आयात और निर्यात व्यापार जापान अपने आधीन देशों से करता था।

जापान के विदेशी व्यापार की दिशा
(प्र० श०)

निर्यात		आयात	
एशिया	६२	एशिया	४९
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	१७	संयुक्तराष्ट्र अमरीका	२५
अन्य	२१	अन्य	२६

अब इसके निर्यात का ५० प्र० श० भाग एशियाई देशों में ही खप जाता है और उनमें भारत का स्थान सर्वप्रथम है। इसके ३५ प्र० श० आयात संयुक्तराष्ट्र अमरीका से आते हैं।

महाद्वीपों के अनुसार व्यापार की दिशा (१९५२-५३)
(दस लाख यन में)

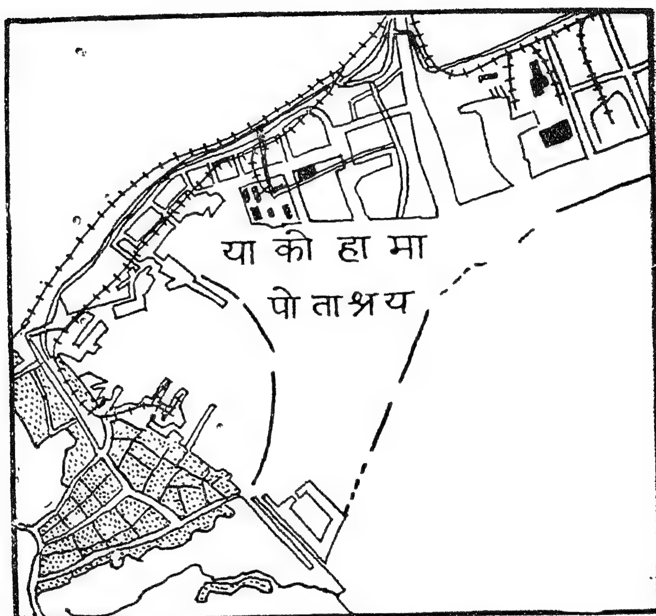
	निर्यात	आयात
एशिया	२३६,२३७	२२८,२७६
उत्तरी अमरीका	९४,३८२	३६२,०६८
दक्षिणी अमरीका	१३,२०५	१५,८४१
यूरोप	६४,३८१	४९,५३०
अफ्रीका	३४,००३	१९,०९१
आस्ट्रेलिया	१६,०३५	५५,५३४

जापान के व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह

जापान के मुख्य नगरों और व्यापारिक केन्द्रों के नाम ये हैं—टोकियो, ओसाका नागोया, कोबे, योकोहामा तथा क्योटो। ये सभी नगर एक-दूसरे के समीप हैं और समुद्र से भी अधिक दूरी पर नहीं हैं।

ओसाका—यह जापान का एक औद्योगिक केन्द्र है। इसे प्रायः 'धुएँ का नगर' कहते हैं। यहाँ कल-कारखानों की अधिकता के कारण सारे साल शहर में धुआँ छाया रहता है। यह नगर सूती वस्त्रों के लिए विशेषकर प्रसिद्ध ह। यह ओसाका की खाड़ी पर बसा हुआ है और जल मार्गों द्वारा जापान के सभी भागों और विदेशों से सम्बन्धित है। इस नगर में उत्तम जल-मार्गों की सभी सुविधाएँ हैं इसी क्रारण इसे 'जापान का वेनिस' भी कहते हैं। परन्तु इसके पृष्ठ प्रदेश में कच्चे माल की कमी है। इस नगर में सूत कातना, पुस्तकें छापना, जिल्द बाँधना, लोहे और स्टील की वस्तुएँ तथा मशीनें बनाना, कागज की वस्तुएं बनाना और जहाज बनाना आदि उद्योग होते हैं। नगर के भीतर और बाहर जलमार्गों की सुविधा, समतल और विस्तृत भूमि की अधिकता, कच्चे माल, ईंधन और मजदूरों की सुलभता और पूँजी की प्रचुरता के कारण औद्योगिक विकास में ओसाका जापान के अन्य सभी नगरों से बढ़ गया है।

कोबे—ओसाका से केवल २० मील के अन्तर पर एक बन्दरगाह है। इसका पोताश्रय प्राकृतिक तथा गहरा है। समुद्र तट की एक पतली पट्टी पर स्थित होने के कारण यहाँ पर औद्योगिक विकास के लिए स्थान ही नहीं है। कोबे को ऊँची पर्वतमाला घेरे हुए है, इसी कारण यह नगर केवल दो मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। यहाँ पर दियासलाई, रबर की वस्तुएँ और जहाज बनाने के उद्योग होते हैं।



चित्र ७७—योकोहामा का बन्दरगाह

टोकियो—राजधानी है। यह नगर हान्शू के पूर्वी तट पर स्थित है। संसार का यह तीसरे नम्बर का महान् नगर है। याकोहामा और टोकियो इसके दो बन्दरगाह हैं। याकोहामा जापान के सर्वोत्तम पोताश्रयों में से है। यह पोताश्रय गहरा, विस्तृत और सुरक्षित है। टोकियो छिछला है और इसमें बड़े-बड़े जहाज नहीं आ सकते। टोकियो के प्रमुख उद्योग पुस्तकें छापना, जिल्द बाँधना, बिजली का सामान बनाना, धातु के बर्तन, और रबर और शीशे की वस्तुएँ बनाना हैं। यहाँ पर भूचाल अधिक आते हैं जिनसे कारखानों और मकानों को बड़ी हानि होती है।

नागोया—यह नगर ओसाका और टोकियो के बीच होन्शू के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ है। इसका पोताश्रय कृत्रिम होने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। वायु-यान बनाने वाला प्रसिद्ध मित्सुबीशी (Mitsubishi) कारखाना इसी नगर में है। कच्चे रेशम की रीलें बनाना यहां का प्रमुख धंधा है। यहाँ पर मिट्टी और चीनी

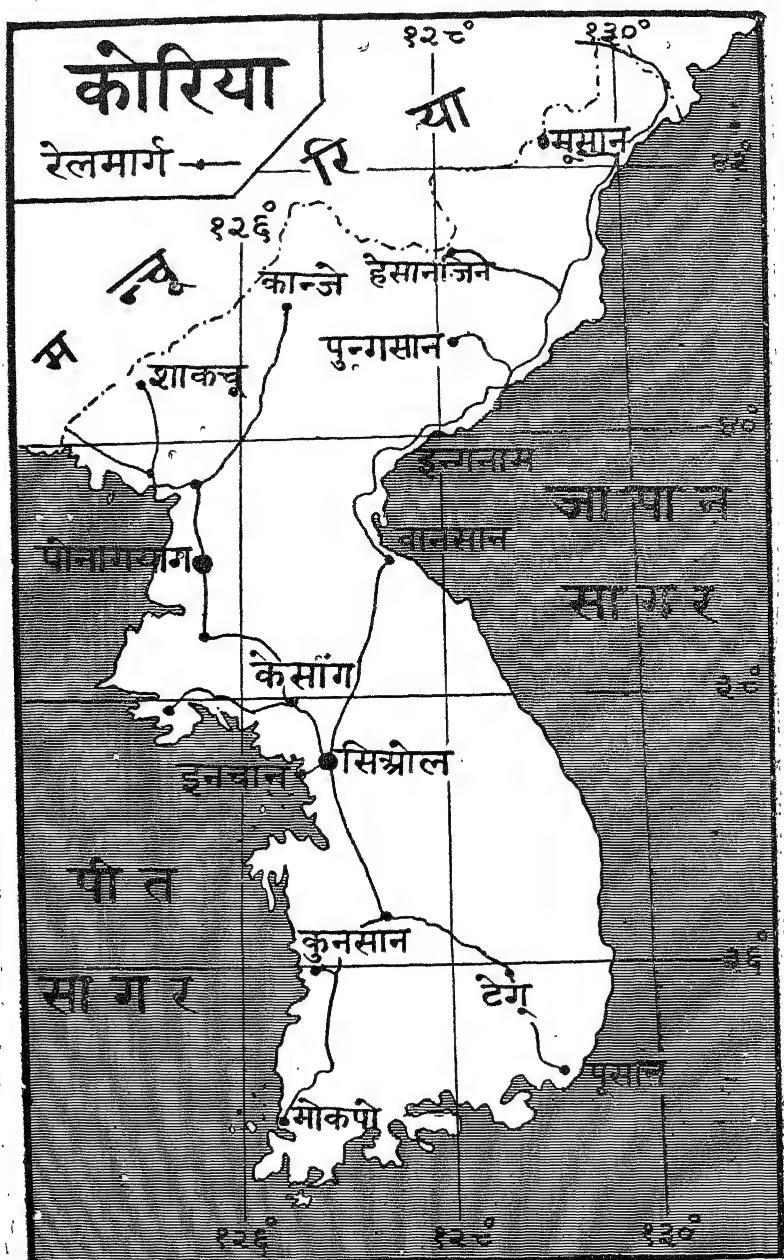
के बर्तन और सूती वस्त्र भी बनाये जाते हैं। **क्योटू** जापान का प्राचीन औद्योगिक नगर है। जापानी साम्राज्य का यह संस्कृति केन्द्र भी है। **याकोयामा** ओसाका से ४० मील दक्षिण की ओर एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है।

कोरिया (चोसन)

कोरिया चीन की पूर्वी सीमा पर स्थित है। यह प्रायद्वीप मुख्य भू-खंड से पर्वतीय दीवार द्वारा अलग हो जाता है। कोरिया का कुल क्षेत्रफल ८५,२२६ वर्ग मील है और आवादी २५० लाख से कुछ अधिक है। चीन, जापान और रूस से घिरे होने के कारण कोरिया की स्वतंत्रता हमेशा अनिश्चित रही है।

सन् १९४५ में जापान की पराजय के वाद कोरिया को दो भागों में बाँट दिया गया। बाँटने की सीमा ३८° अक्षांश रेखा थी। इस रेखा से उत्तर का भाग या उत्तरी कोरिया का क्षेत्रफल ४८००० वर्गमील है और इसकी आबादी ८० लाख है। दक्षिणी कोरिया का क्षेत्रफल ३७००० वर्गमील तथा आवादी २०० लाख है। उत्तरी कोरिया में रूस का आधिपत्य रहा और दक्षिणी कोरिया अमरीकी नियन्त्रण व संरक्षण में आगया। यह व्यवस्था १९५० तक चलनी थी और इसके वाद सम्पूर्ण कोरिया को स्वतन्त्र करने की योजना थी। अपने-अपने भागों में रूसी व अमरीकी सेनाओं ने अपनी जैसी सरकारें स्थापित कीं और जब दिसम्बर सन् १९४८ में रूसी सेनाओं ने उत्तरी कोरिया छोड़ दिया तो उत्तरी कोरिया ने अपने को जनतंत्र घोषित कर दिया। अगस्त सन् १९४८ में दक्षिणी कोरिया भी गणतंत्र घोषित कर दिया गया। परन्तु अभी तक दोनों भागों का एकीकरण नहीं हो सका है और ३८° समानान्तर रेखा के आधार पर कृत्रिम विभाजन चल रहा है। परन्तु इससे कोरिया के लोगों और उनकी संस्कृति को कदापि बदला नहीं जा सकता। भाषा और संस्कृति के दृष्टिकोण से कोरिया के लोग चीनी और जापानी लोगों से भिन्न हैं।

कोरिया और विशेषकर इसके उत्तरी व पूर्वी भाग पहाड़ी हैं। देश की अधिकतर खेतिहर भूमि पश्चिम और दक्षिण में पाई जाती है। सम्पूर्ण देश का ७६ प्रतिशत भाग वनों से घिरा हुआ है। परन्तु बेतरतीब कटाई और बृक्षारोपण के प्रति प्रवृत्ति न होने से वन सम्पत्ति बड़ी ही हीन दशा में है। दक्षिण के पर्वतीय ढाल बिल्कुल ही वृक्षहीन हो गये हैं। उत्तर के पर्वतीय वन प्रदेशों में पर्वतीय ढालों पर खेती की जाती है। किसान जंगलों को जलाकर खेत बना लेते हैं और काला गेहूँ व बाजरे की खेती करते हैं। जब उपज कम होने लगती है तो किसान दूसरे पर्वतीय ढाल पर जाकर इसी प्रकार खेत बना लेते हैं। फलस्वरूप काफी वन समाप्त हो चुके हैं और भूमि कटाव की समस्या विकट हो गई है। पूर्वी तटीय पट्टी सँकरी है और इसलिए उसका खेती के लिए तनिक भी महत्व नहीं है। खेती का धंधा पश्चिमी कोरिया के मैदानों तक सीमित है। कुल क्षेत्रफल के २१ प्र० श० भाग में फसलें उगाई जाती हैं। चावल, ज्वार, बाजरा, तम्बाकू, फलियाँ, कपास, पटुवा और अन्य मानसूनी जलवायु की फसलें होती हैं। चावल सबसे महत्व-


कोरिया
रेलमार्ग
१२८°
१३०°
१२६°
मूसान
कान्जे
हेसानाजिने
पुन्गसान
शाकचू
जापान सागर
केसांग
सिओल
पीत सागर
कुनसान
टेगू
पूसान
मोकपो

चित्र ७८

पूर्ण अनाज है और कुल खेतिहर भूमि के २७ प्रतिशत भाग पर चावल की खेती की जाती है। उत्तरी कोरिया में गर्मी के मौसम में जौ और गेहूँ उगाया जाता है। जापानियों ने कपास की खेती को भी प्रोत्साहन दिया।

दक्षिणी कोरिया का खेतिहर उत्पादन
(हजार मीट्रिक टन)

	१९५३	१९५४
चावल	१९९०	२१६०
गेहूँ और जौ	१००२	६५९
सोयाबीन	१६५	१८५
आलू	२१३	१८५

कोरिया खनिज पदार्थों में भी धनी है। यहाँ पर उपलब्ध मुख्य खनिज सोना, कोयला और लोहा है। इनका विकास भी जापानियों ने ही किया। सोना तो अधिकतर दक्षिणी कोरिया में निकाला जाता है।

दक्षिणी कोरिया का खनिज उत्पादन (१९५४)

कोयला	८९१०००	मीट्रिक टन
टंगस्टन	३९४८	,,
ग्रेफाइट	१३२१२	टन
सोना	१६३२	किलोग्राम

परन्तु लोहा और कोयला उत्तरी कोरिया में खूब पाया जाता है। यहाँ पर उपलब्ध कोयला निम्न कोटि का होता है। फिर भी कच्चे लोहे का वार्षिक उत्पादन ३ लाख टन है। कोयला अधिकतर मुलायम व एन्थ्रासाइट है। इसका वार्षिक उत्पादन ६० लाख टन है। अन्य खनिज जस्ता, सीसा और अभ्रक हैं।

कोरिया के विभाजन से देश के ८० प्रतिशत भारी उद्योग, ७५ प्रतिशत जल-विद्युत् केन्द्र तथा ८० प्रतिशत खनिज क्षेत्र उत्तरी कोरिया के क्षेत्र में आये। यहाँ कोयला, ग्रेफाइट, टंगस्टन, लोहा, तांबा, जस्ता, सोना, चांदी, एसबेस्टास, मालीब्डेनम, मैगनेसाइट, पाइराइट और कावलिन पाये जाते हैं। युद्ध के कारण ७३ प्र० श० कोयला खानें तहस-नहस हो गईं। उनका पुर्ननिर्माण किया जा रहा है। सन् १९५४ में कोयले का उत्पादन युद्धपूर्व का ३६ प्रतिशत था जो कि सन् १९५३ के उत्पादन से १५० प्रतिशत अधिक था।

उत्तरी कोरिया में उद्योग-धंधों का काफी विकास हुआ है। सूती कपड़े, जल-विद्युत्, रसायन उद्योग, सीमेन्ट तथा तेल साफ करने के कारखाने सब उत्तरी कोरिया में ही हैं। औद्योगिक विकास के साथ-साथ उत्तरी कोरिया भोजन में भी आत्मनिर्भर है। करीब २ लाख व्यक्ति उद्योग-धंधों में काम करते हैं। शिल्प-उद्योग के प्रधान केन्द्र पूसान, केनजिहो, और भुन्सान हैं। केनजिहो में इस्पात का कारखाना है।

कोरिया में ३५०० मील लम्बा रेल मार्ग है। सिओल, दक्षिणी कोरिया

की राजधानी है और मुकडेन से रेल द्वारा सम्बन्धित है।

फारमोसा

इसे ताइवान भी कहते हैं। यह द्वीप पश्चिमी प्रशान्त महासागर में स्थित है। फारमोसा का जलडमरूमध्य इसे चीन से अलग करता है। यह चीन का ही एक प्रान्त है। परन्तु इस पर नेशनलिस्ट सरकार का आधिपत्य है। जापान की ओर दक्षिण से पहुँचने की दृष्टि से इसकी स्थिति विशेष सैनिक महत्व की है। इसकी लम्बाई २५० मील और औसत चौड़ाई ८० मील है यहाँ का क्षेत्रफल १४,००० वर्गमील है। यहाँ की आबादी ९० लाख है। यह द्वीप भी पहाड़ी है और इसकी जलवायु उष्ण कटिबन्धीय देशों के समान है। आबादी अधिकतर पश्चिमी और उत्तरी मैदानों में है। मैदानों में चीनी लोग रहते हैं और पहाड़ी ढालों पर मलाया के लोग बस गये हैं।

खेती का उत्पादन (१९५४)
(हजार टन में)

चावल	१७००
शकरकन्द	२३२०
गेहूँ	१५
चीनी	७२२

मछली पकड़ने का धन्धा भी महत्वपूर्ण है। इसका तेजी से विकास किया जा रहा है।

मछली का उत्पादन
(हजार मीट्रिक टन)

१९५३	१३०·६
१९५४	१५३

फारमोसा की ७५ प्र० श० भूमि पर वन फैले हैं। उष्ण कटिबन्धीय मैदानी जंगल तो चीनी लोगों ने काट डाले हैं, इसीलिए लकड़ी इत्यादि की प्राप्ति केवल पहाड़ी कोणधारी वनों से हा होती है। यहाँ के पहाड़ी वनों से भिन्न-भिन्न उपज की प्राप्ति होती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण वस्तु कपूर है। यहाँ की भूमि तथा जलवायु खेती के योग्य है और यहाँ की मुख्य फसलें चावल, चाय और ईख हैं। यहाँ के प्रमुख खनिज पदार्थ कोयला और खनिज तेल हैं, यद्यपि उत्पादन बहुत थोड़ा होता है।

खनिज उत्पादन
(हजार मीट्रिक टन)

	१९५२
कोयला	२२९०
अल्यूमिनियम	३·८५

कपड़ा बनाने तथा सीमेन्ट तैयार करने के कुछ कारखाने भी स्थापित हो गये हैं।

कौलिंग—यहाँ का मुख्य व्यापारिक केन्द्र व बन्दरगाह है।

चीन

स्थिति, सीमा, विस्तार—चीन का देश एशिया का एक-चौथाई क्षेत्रफल घेरे हुए है और एशिया की आधी आवादी भी यहीं रहती है। चीन का क्षेत्रफल ४० लाख वर्गमील से कुछ अधिक और आवादी कोई ५००० लाख है। क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से रूस के बाद चीन ही संसार का दूसरा बड़ा राष्ट्र है। इसकी आबादी सबसे अधिक है।

चीन की सीमा कोरिया, साइबेरिया, रूसी तुर्किस्तान, अफगानिस्तान भारत, बर्मा और हिन्दचीन से मिलती है। एशिया के किनारे प्रशान्त महासागर से लगी हुई चीन की स्थिति विशेष सैनिक महत्व की है। स्थिति के कारण यह एशिया के पूर्वी तट पर ही नहीं बल्कि पश्चिमी प्रशान्त महासागर पर भी नियन्त्रण रख सकता है।

चीन गणतन्त्र के २९ प्रान्त मिलकर दक्षिणी-पूर्वी एशिया के सबसे बड़े राज्य का निर्माण करते हैं। चीन की पूर्वी, उत्तरी तथा पश्चिमी सीमाएं रूस से मिलती हैं। उसका एक सिरा अफगानिस्तान से भी मिलता है। दक्षिण में सीक्यांग का प्रान्त भारत की सीमा से मिलता हुआ है और इसका यूनान प्रान्त बर्मा तथा हिन्द चीन की सीमा से मिला हुआ है। क्वांगसी और क्वांगटंग के प्रान्त भी हिन्दचीन की सीमा के साथ-साथ ही स्थित हैं।

भौगोलिक दृष्टिकोण से चीन को निम्नलिखित प्रदेशों में बाँटा जा सकता है—

(१) **मध्य और दक्षिणी-पूर्वी चीन** जिसके अन्तर्गत यांगटीसीक्यांग और सीक्यांग नदियों की घाटी सम्मिलित है। यही वास्तविक चीन है। यहाँ पर नदियों की बहुलता है और नदी घाटियों में खेती का धन्धा होता है। यांगटीसीक्यांग की घाटी और तटीय क्षेत्रों से चावल, रेशम, कपास और चीनी की फसलें प्राप्त की जाती हैं। यह प्रधानतः चावल उत्पादक प्रदेश है। दक्षिणी-पूर्वी प्रदेश में—क्वांगटंग, फूकीन और चीक्यांग के तटवर्ती प्रान्तों में दक्षिणी पूर्वी पहाड़ियाँ हैं जहाँ पर चाय की विस्तृत खेती होती है।

(२) **उत्तरी चीन के मैदान** को प्रथम प्रदेश से शिनलिंगशान की श्रेणी अलग करती है। इसके बीच से होकर ह्वांगहो नदी वहती है और यहाँ पर शुष्क खेती के अनाज गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, काला गेहूँ, मक्का आदि उगाये जाते हैं। इसके उत्तर में खेतों के स्थान पर घास के मैदान तथा अन्त में गोबी का रेगिस्तान आता है।

(३) **मन्चूरिया के मैदानों** में मानसूनी हवाओं से वर्षा होती है और इनकी विशेषताएं तटवर्ती प्रदेशों के ही समान हैं।

(४) तारिय बेसिन में सिनक्यांग प्रान्त है और यह कुनलन तथा टीनशान पर्वत श्रेणियों के बीच में स्थित है।

(५) दक्षिण-पश्चिम का ऊँचा पठार सबसे कम उन्नत है और वहाँ पर पशु चराये जाते हैं।

चीन की तीनों नदियों के बेसिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार की भू-रचना, मिट्टी, जलवायु तथा उपज पाई जाती है जिनका वर्णन नीचे की तालिका में दिया गया है।

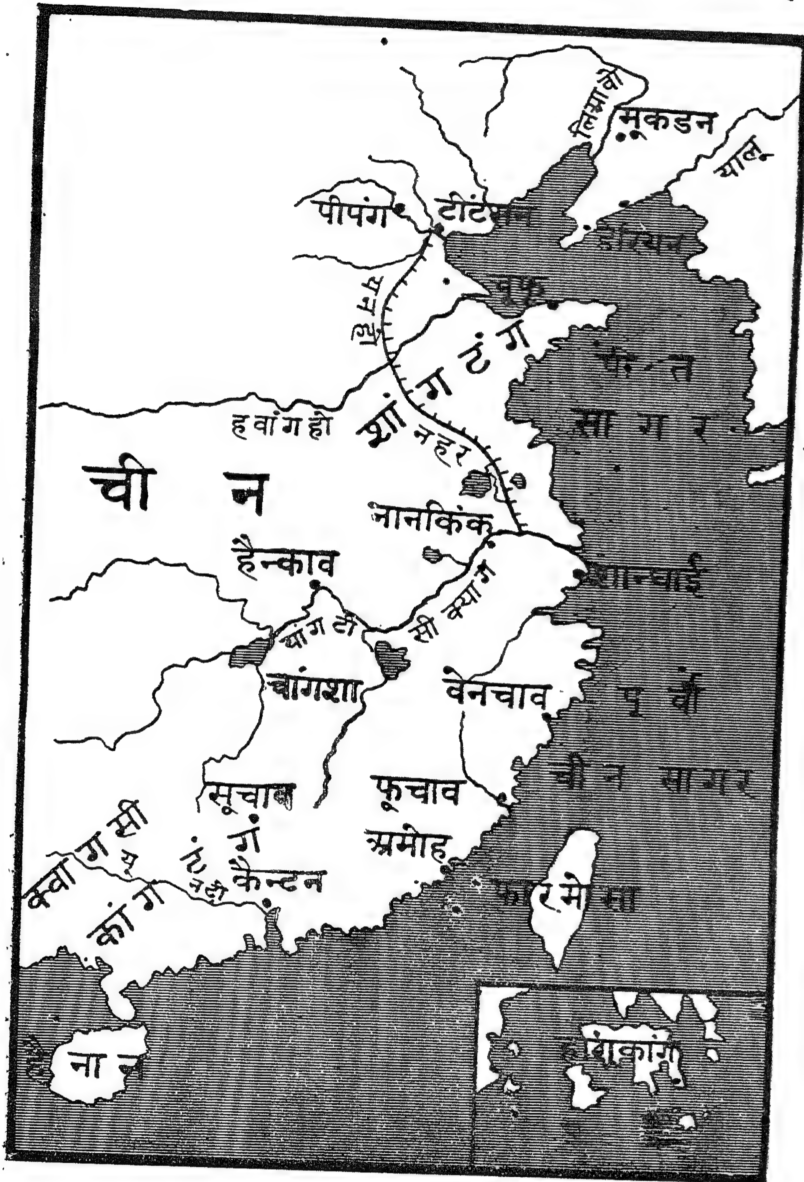
नदियों के बेसिन	जलवायु	भूमि की प्रकृति	उपज
(१) ह्वांगहो (उत्तरी चीन)	शीतोष्ण मानसनी, जाड़ों में कड़ा जाड़ा और शुष्क गर्मी में गर्म अर वर्षायक्त	(अ) पी-हो की घाटी (ब) लोयस मिट्टी का मैदान (स) बाढ़ का मदान	गेहूं, जौ, बाजरा और सोयाबीन
(२) याँगटसी-क्यांग (मध्यचीन)	उपोष्णकटिबन्धीय मानसूनी, सभी ऋतुओं में वर्षा होती है	(अ) लाल नदी का बेसिन (ब) ईचांग की तंग घाटियाँ (स) मध्य के मैदान (द) डेल्टा प्रदेश	चावल, चाय, कपास, रेशम कोयला और लोहा
(३) सीक्यांग (दक्षिणी चीन)	उष्णकटिबन्धीय मानसूनी, सभी ऋतुओं में गर्मी तथा वर्षा	(अ) पश्चिम में यन्नान का उच्च पठार (ब) डेल्टा प्रदेश	चावल, कपास, रेशम

इसकी जलवायु अलग-अलग प्रदेश में अलग-अलग है। परन्तु मानसूनी हवाओं का प्रभाव सार्वभौमिक है। उत्तर में सर्दी बहुत अधिक पड़ती है, यहाँ तक कि साल के अधिकतर महीनों में तापक्रम हिमांक से नीचे रहता है परन्तु दक्षिणी प्रदेश काफी गर्म है और तापक्रम ६०° से नीचे नहीं जाता। वर्षा की मात्रा दक्षिणी-पूर्वी भाग में ६० इंच प्रतिवर्ष तथा उत्तरी भाग में १५-१८ इन्च है। मध्य भाग में ४० इंच के करीब वर्षा होती है। गोबी का रेगिस्तान बिल्कुल शुष्क रहता है।

चीन की तट रेखा लियोकिंग में यालू नदी के मुहाने से लेकर दक्षिण-पश्चिम में क्वांटूंग के थुंगिंग तक ५४३० मील लम्बी है। इसके उत्तरी तट पर छिछले रेतीले किनारे हैं, जिनमें से नदियों ने काटकर मार्ग बना लिए हैं और

इन्हीं मार्गों द्वारा गमनागमन हो सकता है।

राजनीतिक दृष्टिकोण से चीन के ३० प्रान्त और १२ नगरपालिकायें हैं।



चित्र ७९—चीन के बन्दरगाह और नदियाँ

इसमें मन्चूरिया और आन्तरिक मंगोलिया सम्मिलित हैं। चीन को अक्सर चीन प्रधान और चीन महान् भी कहते है। चीन प्रधान के अन्तर्गत तो विशाल दीवार के दक्षिण में स्थित मूल १८ प्रान्त शामिल हैं। चीन महान् में इनके साथ-साथ मन्चूरिया, मंगोलिया, सिनक्यांग और तिब्बत भी सम्मिलित हैं। सन् १९४९ में साम्यवादी शक्तियों का विजय के उपरान्त जब महाद्वीप पर स्थित चीन उनके नियन्त्रण में आ गया तो वहाँ जनतन्त्र की स्थापना की गई।

चीन एक विशाल देश है। यह कृषि, खनिज और वन-सम्पत्ति से सम्पन्न है। यहाँ की भूमि उपजाऊ है और नदियों द्वारा सिंचाई हो सकती है। इतने साधनों के होते हुए भी **चीन एक पिछड़ा हुआ देश है। विश्व व्यापार में इसका स्थान नगण्य है।** अनेक भौगोलिक कारणों से यह देश आर्थिक उन्नति नहीं कर सका था। इसके पूर्वी भाग को छोड़कर सारा देश पहाड़ों और रेगिस्तानों से भरा हुआ है। इसी कारण पृथ्वी के अन्य भागों से इसका सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका है। इसी पृथकता के कारण यहाँ के निवासी निर्धन, अशिक्षित तथा अन्य देशों की घटनाओं से अनभिज्ञ रह गये। यूरोप और अमरीका से चीन के सम्पर्क को अभी १०० वर्ष भी नहीं हुए हैं। चीन का पूर्वी भाग ही समुद्र से सम्बन्धित है। चीन के पश्चिमी भागों की उपज लम्बी दूरी और मार्गों की असुविधा के कारण पूर्वी तट पर आसानी से नहीं लाइ जा सकती। नाना प्रकार की जलवायु और उपज होने के कारण यहाँ वैदेशिक व्यापार की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। एक प्रदेश में भोजन की वस्तुओं की कमी पड़ने पर दूसरे भागों से उनकी पूर्ति हो जाती है। रेलें केवल उत्तरी भाग में ही हैं। दक्षिणी भाग में रेलों की कमी है।

चीन इतना साधन-सम्पन्न और घना बसा हुआ देश है कि भविष्य में यह एक महान् औद्योगिक देश और संसार की मंडी हो सकता है। यहाँ के अधिकतर निवासी बड़े मेहनती, विनम्र, हँसमुख तथा काम पर अड़ने वाले हैं।

खेती—चीन के निवासियों का मुख्य धन्धा खेती है। यहाँ की मानसूनी जलवायु और उपजाऊ भूमि खेती के अनुकूल है। ह्वांगहो, यांगटीसीक्यांग और सीक्यांग नदियों के बेसिनों में खेती की सभी सुविधाएँ हैं। वास्तव में चीन संसार का सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश है और प्रति वर्ष १६४० लाख टन अनाज उत्पन्न करता है। होवे, शान्सी शाण्टन और होनान प्रदेशों में ज्वार, बाजरा और गेंहूँ की खेती की जाती है। चावल की खेती प्रायः सारे ही देश में होती है। यांगटीसीक्यांग के समस्त बेसिन में अन्हवी से लेकर सेजवान के बाहरी भाग तक सभी जगह चावल उगाया जाता है। यहाँ पर चावल का वार्षिक उत्पादन ५०० लाख टन है और संसार की समस्त उपज का एक-तिहाई भाग यहीं से प्राप्त होता है। यहाँ की प्रति एकड़ चावल की उपज का औसत १९०० पौंड है। इस देश के किसान मेहनती हैं, खूब खाद डालते हैं और भूमि उपजाऊ है इसीलिए उपज भी अधिक होती है। चीन की प्रधान फसलें चावल, गेंहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, सोरघम, चीनी, चाय,

तम्वाकू, नील, पटसन, महुवा, कपास और रेण्डी का बीज हैं।) इसके अलावा विस्तृत प्रदेश में पशु-चारण भी होता है। फसलों का वितरण इस प्रकार है—

चीनी, चावल और नील	:	दक्षिण के भाग में,
अनाज	:	उत्तरी भाग में और मध्य भाग में
सोयाबीन	:	मंचूरिया
कपास	:	यांगटीसी की घाटी, शागंटना और छिदली
चाय	:	दक्षिण और पश्चिमी भाग में

सन् १९५३ का खेतिहर उत्पादन १९४९ का दुगना था। सन् १९५४ में सन् १९५३ की अपेक्षा ३ प्र० श० या १३०० लाख टन अधिक अनाज उगाया गया। चीन की वर्तमान सरकार उत्पादन के आँकड़े न देकर केवल बढ़ोतरी का प्रतिशत देना पसन्द करती है। सन् १९५२ में चीन ने २२० लाख मीट्रिक टन गेहूँ और ४८० लाख मीट्रिक टन चावल उत्पन्न किया। चीन को साधारणतया २४० लाख टन गेहूँ और ४८० लाख मीट्रिक टन चावल की प्रति वर्ष जरूरत होती है। हाल में सरकार ने एक नई योजना कार्यान्वित की है जिसके अनुसार अपने खेतों के सुधार के लिए किसानों को सरकार से माली सहायता मिल सकती है। भूमि का राष्ट्रीयकरण तो १९४९ में ही कर दिया गया था।

(कपास की खेती उत्तर-पूर्वी तटीय भागों विशेषकर क्यांगसू, शुण्टुंग और होपिआई (Hopei) में होती है। यांगटीसी और पीली नदी घाटियों में कपास की खेती विस्तार से होती है और कपास के उत्पादन में संयुक्तराष्ट्र और भारत के बाद इसका तीसरा स्थान है।) क्यांगसी और फुकीन (दक्षिण-पूर्व में) चाय के लिये प्रसिद्ध हैं। (तम्बाकू अनेक प्रान्तों में होता है और इसका घरेलू उपयोग और निर्यात भी काफी होता है। इनके अतिरिक्त रेशम, सोयाबीन, ईख और अनेक प्रकार के पौधे भी यहाँ उगाये जाते हैं।)

खेती में सुधार योजना—चीन में खाद्यान्नों की कमी है। इसी कारण यहाँ की सरकार खेती की उपज, विशेषकर खाद्यान्नों की उपज को बढ़ाने में प्रयत्नशील है। चीन के विप्लव के बाद से खेती की भी बहुत उन्नति हुई है। चीन के विशाल देहाती क्षेत्र में जमींदारी प्रथा समाप्त होगई है और किसान अपनी जमीन के आप मालिक हो गए हैं। खेती की उपज बहुत बढ़ गई है। खेती की उपज और उसकी सहायक पैदावार का कुल मूल्य यदि सन् १९४९ में १०० मान लिया जाय तो वह सन् १९५२ में १४८·५ हो गया। कृषि सहकारी समितियों के प्रसार तथा खेती के नये ढंग के औजारों और उन्नत तरीकों के प्रयोग को बढ़ावा देने से खेती की प्रति हैक्टर उपज भी बढ़ गई है। सन् १९५७ तक खेती की उपज के मूल्य में २३.३ प्रतिशत की वृद्धि होने की आशा है। इस पंचसाला योजना में ९१ सरकारी खेत तथा १९४ नये ट्रैक्टर केन्द्रों को बनाने की योजना है। इसमें भी सोवियत संघ के विशेषज्ञ चीन की सहायता कर रहे हैं।

——र की ओर से ह्वांगहो और ह्वाइ नदियों के जल-संरक्षण की योजना पर

काम हो रहा है। इन बाँधों और नहरों से बाढ़ को रोका जा सकेगा, बंजर भूमि के रूप में पड़े ६५ लाख हैक्टर क्षेत्र को खेती के योग्य बनाया जा सकेगा और वर्तमान खेतिहर भूमि का अधिकाधिक उपभोग हो सकेगा।

हवा द्वारा उड़ाकर लाई हुई मिट्टी से घिरे प्रदेश में वन लगाकर खेती योग्य बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। पूर्वी आन्तरिक मंगोलिया से लेकर चीन के उत्तारी-पूर्वी प्रान्तों तक कोई ७०० मील लम्बी और १८० मील चौड़ी पट्टी में वन लगाने का काम सन् १९६७ तक पूरा हो जायेगा। इसके पूरा होने पर ४२० लाख एकड़ भूमि पर खेती व पशु-पालन हा सकेगा। पिछले चार वर्षों में कोई ५,५०,००० एकड़ वन लगाया जा चुका है।

उत्तारी शुष्क भागों में घोड़े और खच्चर माल ढोने के काम आते हैं। चौपाये देश के सभी भागों में पाये जाते हैं। उत्तरी और पश्चिमी भागों में असंख्य भेड़ें हैं। पश्चिम के शैचवान (Szechwan), उत्तार-पूर्व के शाण्टुंग, होपे (Ho-pei) और अन्हवे (Anhwei) और दक्षिण-पूर्व के क्वाण्टुंग प्रदेशों में सूअर पाले जाते हैं।

चीन में अपार वन सम्पत्ति है। यहाँ पर लगभग ५००० किस्म के विविध वृक्ष उगते हैं। उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार, शीतोष्ण कटिबन्धीय सदाबहार तथा पत-झड़ वाले सभी प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। चीन के वनों से प्राप्य सामग्री भी विविध प्रकार की है। संसार के कुल टग तेल का ७० प्रतिशत चीन से ही प्राप्त होता है। कपूर, तारपीन, लाख, मोम और गोंद भी काफी मात्रा में उपलब्ध हैं। उनकी कोटि भी बड़ी उच्च होती है। प्रत्येक प्रकार के उपयोग के लिए बढ़िया व्यापारिक लकड़ी भी खूब मिलती है।

परन्तु धीरे-धीरे चीन की वन सम्पत्ति का ह्रास होता आ रहा है। उन १४ वर्षों में जब चीन का उत्तरी-पूर्वी भाग जापानियों के कब्जे में था, उन्होंने १३१० लाख घन गज लकड़ी को काट डाला और सैनिक कार्यवाही की सुविधा के लिए न जाने कितने विस्तृत वनों में आग लगा दी। गृहयुद्ध और विप्लव के दिनों में भी वनों की बहुत बरबादी हुई। वनों के नाश से न केवल लकड़ी का नुकसान हुआ बल्कि और बहुत-सी मुसीबतें आने लगीं। जमीन कमजोर हो गई, बाढ़ आने लगी और सूखा पड़ने लगा।

चीन की नई सरकार वन-सम्पत्ति का संरक्षण कर रही है। इसलिए सर-कार ने योजना बनाकर नये वन लगाने शुरू कर दिये हैं। बहुत-से प्रदेशों में ये नवीन वन लगाये जा रहे हैं और इन नवीन पेटियों की एक दीवार-सी बन गई है। सन् १९५४ के मध्य तक होनान, पश्चिमी होपी, उत्तरी-पूर्वी और उत्तरी-पश्चिमी चीन में कोई १६२५००० एकड़ भूमि पर वनारोपण हो चुका था। सरकार का लक्ष्य कोई ५२० लाख एकड़ भूमि पर वन लगाना है।

सरकार ने देश के वनों की पैमाइश, निरीक्षण और वर्गीकरण का काम भी शुरू कर दिया है।

चीन की खनिज सम्पत्ति—चीन में खनिज सम्पत्ति पर्याप्त मात्रा में है। ऐसा अनुमान है कि चीन में कोयले का भण्डार संयुक्तराष्ट्र अमरीका को छोड़कर संसार में सबसे अधिक है। यहाँ का कोयला भंडार २४० अरब टन या संयुक्त राष्ट्र के भंडार का एक-सप्तमांश है। यहाँ पर कोयले की बड़ी-बड़ी खानों के निम्नलिखित प्रदेश हैं:—(१) शुण्टुंग पर्वत, (२) शांसी प्रान्त, (३) शैचवान (Szechwan) और (४) यन्नान। इनके अतिरिक्त छोटी-छोटी खानें देश भर में बिखरी हुई हैं। कोयले की प्रधान खानें फूशुन, कैलन तथा फूशिन में हैं। शान्सी प्रान्त की तीन खानों में करीब एक लाख टन कोयला निहित है। इन कोयला क्षेत्रों का क्षेत्रफल ११,९०० वर्ग किलोमीटर है। चीन में निकाले गये कोयले का ८२ प्रतिशत उच्च कोटि का अन्थ्रासाइट होता है। लिगनाइट अपेक्षाकृत बहुत कम मिलता है। बढ़िया कोक के लिये उपयुक्त कोयले का भंडार ५०,००० लाख मीट्रिक टन के लगभग है। खनिज पदार्थ का सबसे महत्वपूर्ण प्रदेश शेचवान और यन्नान के मध्य का भाग है जिसमें सभी खनिज पदार्थ मिलते हैं। **टंगस्टन धातु, जिसको मिलाकर स्टील और बिजली के बल्बों के न जलने वाले तार बनाये जाते हैं, चीन में इतनी अधिक पाई जाती है कि संसार की मंडी पर चीन का ही अधिकार है।** यह धातु क्यांगसी, हुनान और क्वाण्टुंग में पाई जाती है। चीनी टंगस्टन का प्रधान ग्राहक जर्मनी है। लोहा भी कई स्थानों पर मिलता है, परन्तु बहुत ही कम और निम्न श्रेणी का होता है। चीन में लोहे का बड़ा अभाव है। लोहे का मुख्य क्षेत्र यांगटीसीक्यांग की घाटी में है। **सुरमे** में चीन का संसार पर एकाधिकार है। इस धातु का प्रयोग सीसे को कठोर बनाने और टाइप के लिए उपयुक्त धातु बनाने में होता है। सुरमा सबसे अधिक हुनान (Hunan) में मिलता है। क्वाण्टुंग, यन्नान, क्यांगसी और क्वीचाऊ में भी थोड़ा-बहुत पाया जाता है। चीन में टीन भी बहुमूल्य खनिज पदार्थ है। यह अधिकतर दक्षिणी-पश्चिमी चीन के उस प्रदेश में पाया जाता है जो कि मलाया में से होता हुआ इंडोनेशिया तक चला गया है। इस प्रदेश में अधिकतर टीन यन्नान, क्यांगसी और हुनान प्रान्तों में मिलता है। सन् १९५२ में टीन का उत्पादन ६००० टन था और विश्व उत्पादन १७४० लाख टन था। अधिकांश धातु को हांगकांग और हेपहांग साफ करने के लिए भेज दिया जाता है। इन धातुओं के अतिरिक्त चीन में सोना, तांबा, ऐस्बस्टोस, जिप्सम तथा ग्रेफाइट भी पाये जाते हैं। चीन में खनिज तेल की कमी है। अनुमान है कि देश में ७७९० लाख टन खनिज तेल का भंडार है। सन् १९५४ में कच्चे तेल का उत्पादन सन् १९५३ का दुगना था और बढ़ोतरी इस प्रकार थी—

कच्चा तेल	६ प्रतिशत
पेट्रोल	९ प्रतिशत
मिट्टी का तेल	१५ प्रतिशत
डीजल तेल	८ प्रतिशत
चिकनाने का तेल	४ प्रतिशत

शेन्सी में यनचांग स्थान पर रूस की सहायता से सबसे बड़ा तेल क्षेत्र विकसित किया जा रहा है। फूशुन में मिट्टी का तेल बनाने की योजना है।

चीन की प्रमुख खानें देश के भीतरी भागों में स्थित हैं, इसी कारण उनका भली भाँति और पूरा-पूरा उपयोग नहीं किया जा सकता है। यहाँ पर यातायात के साधनों का अभाव है और खनिज क्षेत्रों से बन्दरगाह बहुत दूर पड़ते हैं। लोहा और कोयला पास-पास नहीं मिलते। यहाँ के खनिज उद्योग के विकास में यही बड़ी-बड़ी बाधाएँ हैं।

उद्योग-धंधे—चीन के प्रधान उद्योग-धन्धे खान खोदना, इस्पात तैयार करना, वस्त्र बनाना और रेशम तैयार करना हैं। शिल्प उद्योगों का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है।

देश में राजनीतिक गड़बड़ी के कारण चीन का औद्योगिक उत्पादन बहुत वर्षों तक अस्त-व्यस्त रहा। सन् १९४९ में गृह युद्ध की समाप्ति पर एक नये औद्योगिक युग का सूत्रपात हुआ। चीन में निर्माण उद्योग का सतत विकास हो रहा है और भारी उद्योग सरकारी नियत्रंण में है। चीन के शिल्प-उद्योग की प्रमुख वस्तुयें रेशमी, सूती और ऊनी कपड़े, सिगरेट, वनस्पति तेल, चीनी मिट्टी के बर्तन तथा लाख की वस्तुयें हैं। इधर सरकार का ध्यान लोहे व इस्पात के निर्माण की ओर गया है। हैन्काव के समीप हैनयांग में इस्पात का बहुत बड़ा कारखाना स्थापित किया गया है। शन्घाई में जहाज बनाना शुरू हो गया है। क्याँगसी और शांनटंग में चमड़ा साफ करने और सीमेन्ट के कारखाने हैं।

स्वतंत्र होने के केवल तीन वर्ष बाद ही चीन ने अपनी पहली पंचवर्षीय योजना आरम्भ करदी। प्रथम योजना का सूत्रपात सन् १९५३ में हुआ परन्तु इस पर पूरी तरह से काम सन् १९५५ से होना शुरू हुआ है। चीनी जनता की लगन और मेहनत की बदौलत नया चीन उद्योगीकरण की ओर बढ़ रहा है। सोवियत रूस के प्रभाव के फलस्वरूप चीनी उद्योगीकरण का मुख्य रूप समाजवादी है। इसका सबसे महत्वपूर्ण अंग भारी उद्योग का विकास है और सन् १९५७ तक इसका ध्येय भारी उद्योग के उत्पादन में ९८.३ प्रतिशत की वृद्धि कर देना है। इस समय योजना का उद्देश्य कोयले और इस्पात के वार्षिक उत्पादन को बढ़ाकर क्रमशः ११३० लाख और ४,१२०,००० टन कर देना है। सन् १९५२ के उत्पादन को यदि १०० मान लिया जाय तो १९५४ में उत्पादन की स्थिति इस प्रकार थी—

ढलवां लोहा	१५६
इस्पात	१६५
बिजली	१५१
कोयला	१२६
तेल	१८४.१
एमोनियम सल्फेट	१६४.७
सीमेन्ट	१६१

मूल्य की दृष्टि से मशीनों का उत्पादन सन् १९५४ में सन् १९५२ की अपेक्षा दुगना रहा।

सन् १९५०-५१ से ही सोवियत रूस की सहायता से और दोनों देशों के सहयोग से भारी उद्योग का सूत्रपात हुआ। इस समय चीन के औद्योगिक पुनरुत्थान के लिए कोई ६९४ योजनाओं पर काम हो रहा है। इनमें से १५६ प्रमुख हैं, जिन पर सोवियत संघ का सहयोग प्राप्त है।

(चीन का भारी उद्योग और इस्पात निर्माण कार्य के प्रमुख केन्द्र अन्शान, वूहन और पावटो हैं। अन्शान में इस समय ४८ योजनाओं पर कार्य चल रहा है) जो सन् १९६० तक जाकर पूरी होंगी। उस समय तक लोहे के विभिन्न प्रकारों का वार्षिक उत्पादन निम्नलिखित दशा को प्राप्त हो चुकेगा—

ढोके का लोहा	२५ लाख टन
इस्पात	३२२ लाख टन
ढलवाँ लोहा	२४८ लाख टन

इस पांच सालाना योजना में ३१ कोयला उत्पादक क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है। इनमें से प्रत्येक का उत्पादन १० लाख टन प्रति वर्ष होगा। (इसी प्रकार लारी और ट्रैक्टर तथा कल-कारखाने के निर्माण करने वाली योजनाओं पर भी काम हो रहा है। इसी अवधि में कोई ३१ सूती कपड़ा मिलें भी बन कर तैयार हो जायेंगी।) रोजाना जरूरत की चीजों के निर्माण में भी चीन आत्मनिर्भर होने की आशा रखता है और उस का लक्ष्य इस प्रकार के माल के उत्पादन में ७९.७ प्रतिशत की वृद्धि करना है।

अधिकतर कारखाने सन् १९५९ तक तैयार हो जायेंगे। १७ योजनायें तो अभी ही पूरी हो चुकी हैं। इनमें अन्शान का इस्पात कारखाना तथा फूशीन की कोयले की खान विशेष उल्लेखनीय हैं।

चीन का औद्योगिक उत्पादन

	१९५४	१९४९ की अपेक्षा बढ़ोतरी
विद्युत शक्ति	१०८००० लाख किलोवाट	०.४ गुना
कोयला	८१,९९०००० टन	२.६ गुना
पिग आयरन	३,०३०,००० टन	१२.४ गुना
इस्पात	२,१७०,००० टन	१३.७ गुना
धातु गलाने व सामान बनाने की मशीनें	१३,५१३ टन	८.५ गुना
सीमेन्ट	४,७३०,००० टन	७.२ गुना
सूती धागा	४,६००,००० गाँठ	२.६ गुना
कागज	४८०,००० टन	४.५ गुना

आवागमन के साधन—चीन देश का धरातल अधिकतर पहाड़ी और पठारी है इसलिए सड़कों, रेलों और नदियों द्वारा आवागमन बड़ा कठिन है।

सन् १९५२ में चीन के रेलमार्गों की लम्बाई २४,२३२ किलोमीटर थी। उसके बाद से निम्नलिखित भागों का निर्माण हो चुका है—

(१) चेंगटू—चुगकिंग रेलमार्ग

(२) लेपिंग—चेनाकवन ,,

(३) टीनशुइ—लानचाव ,,

अभी निम्नलिखित मार्गों पर काम जारी है—

(१) लानचाव--सिनक्यांग—रूस रेल मार्ग—इसकी लम्बाई २८०० किलोमीटर है जिसमें से सन् १९५५ तक ३४७ किलोमीटर बनकर तैयार हो गई है।

(२) चेन्गटू--पावकी मार्ग-- यह ८०० किलोमीटर लम्बी होगी।

(३) चेन्गटू--कनमिंग--यह ८१० किलोमीटर लम्बी होगी।

इन तीनों मार्गों के बन जाने पर उत्तरी वीटनाम के हैनोई से लेकर रूस तक का सीधा रेलमार्ग बन जायेगा।

(४) लानआव—पावटी शाखा।

इन सबके पूरा हो जाने पर चीन के रेलमार्गों की लम्बाई १०००० किलोमीटर अधिक हो जायगी।

सन् १९५० में प्रमुख सड़कों की कुल लम्बाई ८६००० मील थी। व्यापारिक महत्व की मुख्य सड़कें निम्नलिखित हैं—

(१) कनमिंग से लाशिओ तक ७०० मील।

(२) सेजवान से सिनक्यिांग तक २५०० मील।

प्रथम सड़क को बर्मा सड़क भी कहते हैं और चुंगकिंग तथा सेफू से मिली हुई है। बर्मा सड़क का उत्तरी भाग लेडो सड़क द्वारा आसाम से मिला हुआ है। इसे स्टिलवेल सड़क भी कहते हैं। यह उत्तरी बर्मा से होकर गुजरती है। किरघिजिया और लाहसा के बीच एक नई सड़क बनाई जा रही है। लशान से सीचांग और सीचांग से ह्स्यानगन तक दो अन्य सड़कें बनाई जा रही हैं।

चीन की प्रधान सड़कें

(१) बर्मा रोड	कनिमग सेलाशियो तक	७२० मील
(३) चुंगकिंग सड़क	रूस की सीमा तक	२५०० मील
(३) उत्तरी दक्षिणी सड़क	— — —	—
(४) सीक्यांग—तिब्बत सड़क	तिब्बत से चीन के आन्तरिक भाग तक	२२५५ किलोमीटर

इसके अलावा कोई १५ और सड़कों पर काम हो रहा है, जिनकी लम्बाई १०००० किलोमीटर होगी।

चीन की नदियाँ और उनके मार्ग—चीन की नदियाँ सिंचाई और माल ढोने दोनों ही दृष्टियों से बड़ी महत्वपूर्ण हैं। यहाँ की प्रधान नदियां यांगटीसीक्यांग,

ह्वांगहो, सीक्यांग तथा पीहो हैं। मध्य चीन से व्यापार, उद्योग और आवागमन सम्बन्धी प्रमुख मार्ग यांगटीसीक्यांग है। इसीके द्वारा चीन के अनेक भाग वैदेशिक व्यापार के लिए खुल गये हैं। चीन की दूसरी बड़ी नदी ह्वांगहो या पीला नदी है। इस नदी की बाढ़ के कारण लाखों जानों और असंख्य धन की हानि हुई है। यह नदी २७०० मील लम्बी है। परन्तु इसमें नावें नहीं चल सकतीं। इसकी धारा तेज है, कहीं-कहीं झरने हैं या नदी के पेटे में रेत भर जाने से बहुत छिछली हो गई है, जिससे इसमें छोटी-छोटी नावें ही चल सकती हैं। होनान के कुछ भाग में और अपने मुहाने से केवल २५ मील तक ही इसमें धुवांकश चल सकते हैं। सीक्यांग नदी यन्नान के पहाड़ों से निकली है और पूर्व की ओर बहती है। इस नदी में सर्वत्र ही नावें चलाई जा सकती हैं।

चीन में करीब ५६० नदियाँ हैं और नाव्य जलमार्गों की लम्बाई ९० हजार किलोमीटर है। इसमे से २००० किलोमीटर की दूरी तक भाप से चलने वाले जहाज आ-जा सकते हैं। यांगटीसीक्यांग पर समुद्रतट से हैंकाव तक करीब १००० किलोमीटर अन्दर तक १० हजार टन भार वाले जहाज आ सकते हैं। छोटे-छोटे जहाज तो तट से २८०० किलोमीटर अन्दर चुंगकिंग तक आ सकते हैं। ग्रांड नहर १००० किलोमीटर लम्बी है और यांगटीसी के दक्षिण से उत्तर में पीकिंग तक जाती है। एक नई नहर (People's Victory Canal) भी बनाई गई है और जल संरक्षण योजनाओं के पूरा होने पर चीन की आन्तरिक जलमार्ग व्यवस्था और भी अच्छी हो जायेगी।

चीन में आबादी का वितरण—चीन में कभी जनगणना नहीं हुई, इसीलिए यहाँ की जनसंख्या के विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न अनुमान हैं। नवीनतम सूचना के अनुसार यहाँ की आबादी तिब्बत, मंगोलिया और समुद्र पार स्थित चीनियों को मिलाकर ४५ करोड़ ९० लाख है।

चीन की आबादी का वितरण बड़ा ही विषम है। सबसे अधिक आबादी के प्रदेश निम्नलिखित हैं:—(अ) तटीय मैदान, जो उत्तर में मंचूरिया की सीमा से दक्षिण में हैनान द्वीप तक फैला है; (ब) ह्वांगहो, यांगटीसीक्यांग तथा सीक्यांग नदियों के मैदान और (स) पी-हो की घाटी।

नदियों की लाई हुई मिट्टी, पर्याप्त जल-वृष्टि और गर्मियों के उच्च तापक्रम के कारण यह सभी प्रदेश खेती के योग्य हैं। चीन की अधिकतर आबादी का निर्वाह खेती पर है। तीनों बड़ी नदियों के निचले बेसिनों की आबादी का प्रति वर्गमील औसत ५००० मनुष्यों से भी अधिक पड़ता है। तिब्बत, सिनक्यांग और मंगोलिया मरुस्थलीय पठार हैं, अतः यहाँ आबादी भी कम है। इन प्रदेशों में आबादी का औसत कहीं भी १६ व्यक्ति प्रति वर्गमील से अधिक नहीं है। यन्नान, यद्यपि एक पठार है परन्तु इसमें कई उपजाऊ घाटियाँ और बहुमूल्य खनिज पदार्थ पाये जाते हैं, इसीलिए इस प्रदेश में घनी आबादी है।

वैदेशिक व्यापार—वैदेशिक व्यापार में चीन बहुत ही पीछे है। रेशम, कपास

चाय, कोयला और लोभिया ही चीन की व्यापारिक उपज है। इसीलिए चीन विदेशों को कच्चा माल अधिकतर भेजता है। यहाँ के व्यापार का अभी श्रीगणेश ही हुआ है और यहाँ के व्यापार में भावी उन्नति की बड़ी आशा है। चीन का विदेशी व्यापार रूस, फिनलैंड, भारत, बर्मा, इन्डोनीशिया, लंका, पाकिस्तान और ग्रेट ब्रिटेन के साथ है। निर्यात की प्रधान वस्तुयें रेशम, चाय, डिब्बे में बन्द फल, तम्बाकू, कोयला ऊन, नमक, लोहा और मशीनें हैं। आयात का ८७ प्रतिशत अंश इस्पात, धातुयें, खाद, रसायन, कपास तथा मशीनें हैं। केवल १३ प्रतिशत दैनिक उपभोग की वस्तुयें होती हैं।

सन् १९५३ में रूस और पूर्वी यूरोपीय देशों के साथ चीन ने ६७२० लाख डालर मूल्य का व्यापार किया। इसी वर्ष चीन और संयुक्त राज्य के बीच व्यापार का व्योरा इस प्रकार था—

संयुक्त राज्य से निर्यात	१०,२२२,१८२	पौंड
,, में आयात	६,२६६,६०८	,,

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—चीन के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं—टीन्टसिन, शंघाई, हैंग्चाऊ (Hongchow), कैन्टन, नानकिंग, हैंकाऊ और फ्यूचो।

शंघाई—चीन का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। चीन का ४० प्र० श० से भी अधिक वैदेशिक व्यापार इसीके द्वारा होता है। यह यांगटीसीक्यांग नदी के मुहाने के समीप एक ज्वारयुक्त कटान पर स्थित है। यहाँ पर रेशमी और सूती वस्त्रों के कारखाने हैं। आधुनिक चीन का यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है और यांगटीसीक्यांग का प्राकृतिक मार्ग है। इसका पोताश्रय कम गहरा है, इसी कारण बड़े-बड़े जहाजों को तट से दूर लंगर डालना पड़ता है।

हैंकाऊ—यांगटसीक्यांग और हान नदियों के संगम पर स्थित है। यह एक प्रसिद्ध नदी-बन्दर है और यहाँ पर रेशमी और सूती वस्त्रों और स्टील बनाने के कारखाने हैं।

टीन्टसिन—यह पीपिंग का बन्दरगाह है और उत्तरी चीन की उपज के लिए प्रमुख द्वार है।

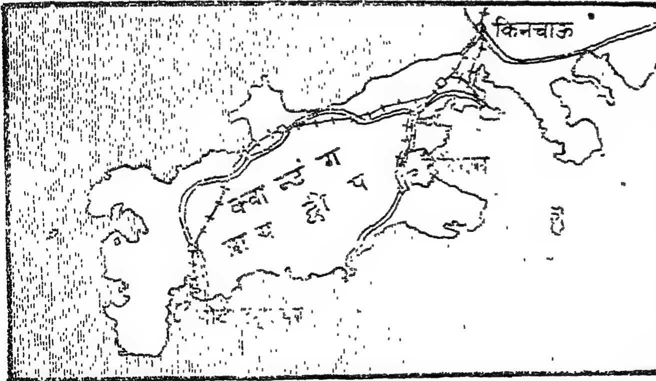
नानकिंग—चीन की राजधानी है, यहाँ रेशमी और सूती वस्त्रों के कारखाने हैं।

हांगकांग—दक्षिणी चीन में सीक्यांग के मुहाने के समीप एक द्वीप पर स्थित बन्दरगाह है। यह अंग्रेजों के अधिकार में है, परन्तु व्यापार के लिए सभी देशों को आजादी है। इसका पोताश्रय बड़ा ही उत्तम और आदर्श रूप है। आस्ट्रेलिया भारत और संयुक्त राज्य (U. K.) के बीच यह बन्दरगाह एक पर्नानिर्यात केन्द्र का काम करता है।

विक्टोरिया—यह भी द्वीप स्थित एक नगर है और दक्षिणी चीन की उपज के लिए व्यापार का द्वार है।

स्थिति, विस्तार तथा उपज—पहले इसे मंचूरिया कहते थे। वैसे तो यह देश स्वाधीन है परन्तु जापान के आर्थिक प्रभाव के क्षेत्र में है। यह देश मंगोलिया के पठार के पूर्व में स्थित है, इसका क्षेत्रफल ४,६०,००० वर्गमील है। सारा का सारा ही देश मैदान है और उसके उत्तरी भाग में आमूर नदी बहती है। यद्यपि यहाँ के लोग खेती पर ही निर्भर हैं, परन्तु यहाँ केवल १४ प्र० श० भूमि ही खेती के योग्य है। शेष भागों पर जंगल, चरागाह अथवा बंजरभूमि है। सोयाबीन, गेहूँ, बाजरा, मक्का, जौ और चावल यहाँ की खेती की प्रधान उपज हैं। यहाँ खेती योग्य भूमि के एक-चौथाई भाग पर सोयाबीन बोया जाता है और संसार भर की आधी सोयाबीन यहीं उत्पन्न होती है। इसीलिए मंचूकुओ 'संसार का सोयाबीन प्रदेश' कहलाता है। यहाँ की सबसे प्रधान उपज सोयाबीन है। इससे चटनी, मुरब्बे या शाक-भाजी बनती है। इससे तेल भी निकाला जाता है जो छतरियाँ, वार्निश, बरसाती, साबुन और स्याही बनाने में काम आता है।

खनिज पदार्थ—मंचूकुओ में खनिज पदार्थों की कमी नहीं है। सोना, कोयला और लोहा यहाँ पर निकाला जाने लगा है। खेती की उपज और खनिज सम्पत्ति के कारण यहाँ पर कारखानों का विकास भी आरम्भ हो गया है और विशेषकर दक्षिणी भागों में। यहाँ के कारखाने जापानियों के प्रबन्ध में हैं।



चित्र ८०—पोर्ट आर्थर और डेरियन

यातायात के साधनों की कमी—यातायात के साधनों की सुविधाएँ न होने के कारण देश की उन्नति में बाधा पड़ती है। सड़कें कीचड़ से भरी रहती हैं। रेलों के विकास होने पर देश में उन्नति सम्भव होगी। **मुकडन**—यहाँ की राजधानी है।

टीन्टसिन और पोर्ट आर्थर से इसका सम्बन्ध है। न्युच्वाँग और डेरियन यहाँ के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

मंचूकुश्रो की महत्ता—इसके विस्तृत क्षेत्रफल में और जनसंख्या बसाई जा सकती है। खेती और खनिज उत्पादन के दृष्टिकोण से यह विशेष धनी है। इसकी जलवायु भी मानवी क्रिया-कलाष के अनुकूल है। मंचूकुओ की आर्थिक सम्पत्ति तथा भौगोलिक स्थिति के कारण इसके तीनों पड़ोसी देश अर्थात् चीन, जापान और रूस इसकी ओर सदैव आर्कषित रहते हैं। रूस यहाँ के हिमयुक्त बन्दरगाहों पर सदा आँखें लगाये रहा। चीन ने अपनी अतिरिक्त जनसंख्या के लिए इसे अपना उपनिवेश बनाना चाहा। परन्तु दूरपूर्व का यह बहुमूल्य उपहार जापान को प्राप्त हुआ और १९४५ तक इस पर जापान का ही राजनैतिक और आर्थिक प्रभाव रहा।

जापान मंचूकुओ को प्राप्त करने के लिए जी-जान से लगा था। इसके कई कारण थे—(१) जापान और रूस के युद्ध के समय मंचूकुओ प्रथम रक्षापंक्ति का काम देता था, (२) मंचूकुओ की कृषि, पशु तथा खनिज सम्पत्ति से जापान को अपने कारखानों के लिए कच्चे माल की प्राप्ति होती थी, (३) जापान में आबादी बहुत बढ़ गई थी और देश पर भारस्वरूप थी। मंचूकुओ में कम आबादी के कारण जापानी लोग मंचूकुओ में प्रवास कर सकते थे, (४) जापानी तैयार माल की मंचूकुओ में बड़ी खपत होती थी।

फिलीपाइन द्वीपसमूह, इण्डोचीन और इण्डोनेशिया

मलाया प्रायद्वीप, थाईलैंड तथा इन्डोचीन की जलवायु मानसूनी है। इन्डोनेशिया और मलाया प्रायद्वीप के कुछ भागों की जलवायु भूमध्यरेखीय है।

फिलीपाइन द्वीपसमूह

१९४६ से पूर्व फिलीपाइन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आधीन था। इसके पश्चात् जुलाई १९४६ में यह प्रदेश प्रजातन्त्र राज्य बन गया। इसमें ७१०० द्वीप सम्मिलित हैं।

विस्तार, आबादी तथा खेती—इस देश का कुल क्षेत्रफल १,१५,००० वर्गमील तथा आबादी १,९०,००,००० है। जन संख्या का घनत्व प्रति वर्गमील पर १६४ व्यक्ति है। यहाँ की अधिकतर आबादी लूजोन, सीबू द्वीप और बोहोल तथा पनय और नेग्रोस (Paney and Negros) के कुछ भागों में सीमित है। मिंडानाऊ, पालावान, मिंडोरो, बसीलान तथा समर द्वीपों में आबादी बहुत कम है। यहाँ आबादी का औसत घनत्व १६४ व्यक्ति प्रति वर्गमील है। **इस प्रकार फिलीपाइन में आबादी की समस्या संख्या सम्बन्धी नहीं परन्तु अनुचित वितरण सम्बन्धी है।** इस समस्या का हल यह हो सकता ह कि घने बसे हुए प्रदेशों से मनुष्यों को अविकसित परन्तु साधन-सम्पन्न मिंडानाऊ के द्वीप में प्रवास करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाय। यहाँ की समस्त भूमि के केवल १४ प्र० श० भाग पर ही खेती होती है। ३५ लाख मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर हैं। चावल, ईख, मक्का, नारियल,

तम्बाकू और मनीला पटुआ यहाँ की प्रधान उपज हैं। यहां के निवासी अधिकतर चावल खाते हैं। भोजन की वस्तुओं के विचार से यह देश आत्मनिर्भर नहीं है। १९३८ में यहाँ की सरकार ने समीपवर्ती देशों से चावल मंगाने के लिए एक "राष्ट्रीय चावल तथा अनाज" संघ की स्थापना की। जब ये द्वीप जापान के अधिकार में थे तब यहाँ पर अनाज, मीठे आलू और अन्य खाद्य पदार्थों के उत्पादन को प्रोत्साहन दिया गया जिससे बाहर से आये हुए अनाज पर निर्भरता कम हो जाए। यहाँ खेती की ६० प्र० श० भूमि पर चावल और मक्का की उपज होती है।

सन् १९५४ में फिलीपाइन में ६८३१००० हेक्टर भूमि पर खेती की गई। यहां की प्रधान फसलें चावल, गन्ना, नारियल, मनीला पटुआ, तम्बाकू, शकरकन्द, मक्का और याम हैं।

खेतिहर उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)

	१९५३	१९५४
चावल	३१४४	३२२६
मक्का	८९७	९५७
जमीन के नीचे होने वाली फसलें	११२८	१३५४
मछली	३०६	२६१
मांस और अंडे	२६३	२७९
चीनी	१११४	१४०२
नारियल की गिरी	८६९	९५६
अबाका	११३	१२५
तम्बाकू की पत्ती	२२	२६
नारियल का तेल	१४१	१४५

सन् १९५३ से यह देश भोजन के मामल में आत्म निर्भर हो गया और चावल का आयात बन्द कर दिया गया।

चीनी का उत्पादन निर्यात के लिए होता है। साधारण दिनों में चीनी का निर्यात मूल्य यहाँ की समस्त निर्यात का एक-तिहाई से भी अधिक होता है। यहाँ प्रति वर्ष दस लाख टन चीनी का उत्पादन होता है। परन्तु स्थानीय उपभोग में १,१५,००० टन से अधिक चीनी नहीं लगती। इसी कारण पर्याप्त मात्रा में चीनी बाहर भेजी जाती है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रोत्साहन में इस देश में उद्योग-धन्धे खोले जा रहे हैं। परन्तु उद्योग का मुख्य उत्पादन घरेलू उपभोग की वस्तुयें हैं। सिगरेट, सिगार, चीनी, जूते, और चावल के कारखाने सर्व प्रधान हैं। नारियल तथा उससे बनी हुई वस्तुओं का भी यहाँ से अधिक निर्यात होता है और इस काम में यह क ४० लाख व्यक्तियों का निर्वाह होता है। यहाँ पर २ लाख मीट्रिक टन वजन का मनीला पटुआ पैदा होता है जो संयुक्तराष्ट्र और संयुक्तराज्य को भेज दिया जाता है। तम्बाकू के सिगार बनते हैं और ८८ प्र० श० संयुक्तराष्ट्र को भेज दये जाते हैं।

इस काम में यहाँ ६ लाख मनुष्य लगे हैं। जापानियों ने तम्बाकू उत्पादन को बड़ा प्रोत्साहन दिया है। यहां पर सिगरेट, रस्से, चमकदार बटन और टोप बनते हैं। कपड़ों पर कशीदा काढ़ा जाता है और फलों को डिब्बों में भरा जाता है।

यहां की ६० प्रतिशत भूमि पर वन खड़े हुये हैं। इन वनों के ९७ प्रतिशत भाग पर सरकार का अधिकार है। सन् १९५४ में ११७,३०९,६०० फीट व्यापारिक लकड़ी प्राप्त हुई। वनों से बहुत-सी गौण उपज भी प्राप्त होती है।

मछली पकड़ने का धंधा भी बड़ा ही महत्वपूर्ण है। सन् १९५४ में २६१००० मीट्रिक टन मछली पकड़ी गई।

खनिज पदार्थों का विकास भी हो रहा है। सोना पिछले दस वर्षों से खूब निकाला जा रहा है।

यहां पर सोना, चांदी, लोहा, ताँबा, मैंगनीज, क्रोम, कोयला, सीसा और जस्ता निकाला जाता है। सन् १९५४ के प्रथम ६ महीनों में खनिज उत्पादन इस प्रकार था।

	मात्रा (हजार)	मूल्य (लाख पिसोस)
सोना (औंस)	२०७.९	२१८
चाँदी (औंस)	२७५.९	४
सीसा (मीट्रिक टन)	·९	५
ताँबा ,,	७.३	९५
मैंगनीज ,,	७२	४
लोहा ,,	७२८.०	१२७
कोयला ,,	४७.९	१३

निर्यात तथा आयात—फिलिपाइन से चीनी, नारियल का तेल, गोले की गरी, तम्बाकू, कढ़े हुए वस्त्र और इमारती लकड़ी का बाहर के देशों को निर्यात किया जाता है। सूती वस्त्र, लोहे और स्टील की वस्तुएं, गाड़ियाँ, रेशमी वस्त्र, कागज, भोजन की वस्तुएं, सिगरेट, खनिज तेल, रासायनिक पदार्थ, दवाइयाँ, खाद और यातायात की मशीनें बाहर से मंगाई जाती हैं। सूती वस्त्र, लोहे और स्टील की वस्तुएं और भोजन सामग्री अधिक मात्रा में आती है। निर्यात और आयात व्यापार अधिकतर संयुक्तराष्ट्र से होता है। वहाँ ७५ प्र.श. वस्तुएं भेजी जाती हैं और ६२ प्र.श. आयात वहीं से किया जाता है।

आयात-निर्यात व्यापार (१९५३)

	आयात का मूल्य (लाख पेसोस)	निर्यात का मूल्य (लाख पेसोस)
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	६६६७	५४४४
इण्डोनीशिया	३९८	८
जापान	४५८	९३८
कनाडा	२५२	४२

संयुक्त राज्य	१२५	१२०
जर्मनी	११५	१०२
डेनमार्क	७	१४९
बेल्जियम	९०	१२९
हालैण्ड	१५१	३१५
अन्य	५३७	७६०

थाईलैंड (स्याम)

विस्तार तथा आबादी—इस देश का क्षेत्रफल २,००,००० वर्गमील से कम है। देश ब्रह्मा से भी छोटा है यहाँ की आबादी १,५०,०००,०० (डेढ़ करोड़) है। अधिकतर आबादी नदियों की घाटियों और मैदानों में सीमित है, जहाँ चावल की उपज हो सकती है। मध्य थाईलैण्ड के मीनम और मीकाग नदियों के मैदानों में सबसे घनी आबादी है। उत्तरी थाईलैण्ड में आबादी बहुत कम है। अधिकतर निवासी थाई जाति के हैं जोकि यन्नान से यहाँ आए थे। यहाँ पर चीनियों की संख्या २५ लाख है। ये लोग खानों और बगीचों में काम करते हैं। मध्य का मैदान जिसमें मीनम नदी बहती है सबसे अधिक उपजाऊ है। थाईलैण्ड के ऊपरी भाग में अनेक पहाड़ी श्रेणियाँ हैं।

खेती, खनिज तथा वन-सम्पत्ति—थैलैण्ड कृषि-प्रधान देश है। देश के ९१ प्रतिशत लोग खेती और मछली पकड़ने के उद्यम में लगे हुए हैं। २.३ प्रतिशत उद्योग-धन्धों में लगे हैं। यहाँ के प्रधान उद्योग-धन्धे वही हैं जो कृषि और मछली पकड़ने की उपज को मण्डियों के लिए ठीक करते हैं। देश में मछली तथा फल को डिब्बों में भरने, चावल साफ करने, शराब बनाने, कपास साफ करने तथा तम्बाकू और चीनी तैयार करने के कारखाने पाये जाते हैं। देश के उद्योग-धन्धों को विकसित करने का प्रयत्न होरहा है और सन् १९५३ में इसके लिए एक योजना भी बनाई गई है।

चावल यहाँ की प्रधान उपज है। विश्व में यह प्रधान उत्पादक देश है। सन् १९५३ में खेतिहर उत्पादन इस प्रकार था—

	(हजार मीट्रिक टन)
चावल	५,११४,७०८
गन्ना	१८१९
नारियल	८.३०
कपास, तम्बाकू, मक्का	८१.७
सोयाबीन	२०.२
मूँगफली	७७.९
तिल	८.५

नारियल, तम्बाकू, मिर्च, कपास, रबर और सागौन की लकड़ी यहाँ का उपज की अन्य वस्तुएँ हैं। यहाँ पर खेती योग्य भूमि के ९४ प्र. श. भाग पर

बोया जाता है जिसके लिए सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। थाईलैण्ड के थोड़े ही भाग पर चावल की खेती योग्य (७० इंच के लगभग) वर्षा होती है। बाढ़ के पानी को खेतों तक ले जाने के लिए नहरें और खाइयाँ बनाई गई हैं। सन् १९५०-५१ में यहाँ पर ६६ लाख टन चावल उत्पन्न हुआ। मध्य के मैदान में २० लाख एकड़ भूमि पर चावल की खेती करने की योजना है। चावल के साथ मछली भी यहाँ के लोगों का प्रधान भोजन है। यहाँ के समुद्रतट तथा नदियों में मछलियाँ खूब पकड़ी जाती हैं।

मछली का उत्पादन (हजार मीट्रिक टन)

	कुल	**ताजी**	**नमक लगाई हुई**
१९५१	४६.१७	२७.४७	२२.७०
१९५२	३२.८७	२६.५६	६.३१

देश का ६७ प्रतिशत भाग वनों से घिरा हुआ है और रबर तथा सागौन प्रधान उपज है। सन् १९५३ में ४४४०० टन सागौन तथा ९५५७४ टन रबर यहाँ से बाहर गया। यहाँ पर अनेक खनिज पदार्थ मिलते है परन्तु टीन के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का विकास अभी तक नहीं हो सका है। इस देश में वोल्फ्राम, सुरमा कोयला, तांबा, सोना, मैंगनीज, हीरे, चांदी, जस्ता और ज़िरकन (Zircon) की खानें हैं।

टीन यहाँ का प्रधान खनिज है और सन् १९५३ में १३६८० टन टीन यहाँ से बाहर भेजा गया। टीन का उत्पादन सन् १९५३ में १०२०० मीट्रिक टन था। वोल्फ्रम तथा सुरमा भी निकाला जाता है। कोयला, लोहा, सोना, चांदी मैंगनीज, लालमणि आदि यहाँ के अन्य खनिज हैं।

थैलैण्ड में खनिज उत्पादन (१९५३)

(हजार मीट्रिक टन)

टीन	१०.८
जिप्सम	१.३
सुरमा	२.३
लोहा	२.९
वोल्फ्राम (००० पिकल)	२..९
सीसा (००० पिकल)	४०.७

निर्यात तथा आयात वस्तुएं—यहाँ से भेजी जाने वाली वस्तुएं हैं—चावल, टीन, रबर और सागौन। यहाँ से चावल और सागौन की लकड़ी भारतवर्ष को जाती है। सन् १९५३ में यहाँ से १३ लाख मीट्रिक टन चावल बाहर भेजा गया। यहाँ पर बाहर के देशों से कपड़ा, धातु का सामान और मशीनें आदि आती हैं। भारतवर्ष से यहाँ पर सबसे अधिक बोरे और इसके अतिरिक्त सूती वस्त्र, सूत तथा अफीम मँगाई जाती है। थाईलैंड में पहले सूती वस्त्र जापान से आता था परन्तु

जापान का एकाधिकार समाप्त हो जाने से भारत को सूती वस्त्र के बदले में चावल मंगाने का सुयोग प्राप्त है।

प्रमुख देशों के साथ व्यापार (१९५३)

(प्रतिशत)

	आयात	निर्यात
संयुक्त राष्ट्र और कनाडा	१९	२१
मलाया	११	२९
जापान	१७	२५
हांगकांग	१२	१५
संयुक्त राज्य	१३	१

यहाँ की सरकार का कर्त्तव्य यह है कि यहाँ के उद्योग-धन्धों को विदेशियों के हाथों से निकाल ले। यहाँ के खनिज-उद्योग अंग्रेजों और आस्ट्रेलियन के हाथों में, टीक के कारखाने अंग्रेजों के और चावल के कारखाने चीनी लोगों के हाथ में हैं। यहाँ की सरकार अब चावल के साथ-साथ कपास, तम्बाकू और सोयाबीन की खेती को प्रोत्साहन दे रही है।

प्रसिद्ध नगर—बैंकाक—मीनम नदी पर स्थित है। यह राजधानी और प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इस नगर में बहुत-सी नहरें बहती हैं, इसी कारण इसे 'पूर्व का वेनिस' कहते हैं। यहाँ की आबादी दस लाख है।

मलाया

मलाया के तीन राजनैतिक विभाग हैं और यह देश ब्रिटिश प्रभाव-क्षेत्र के अन्तर्गत है। राजनैतिक विभाग ये हैं—(१) स्ट्रेट सैटिलमैंट, (२) मलाया राज्य संघ और (३) देसी राज्य। सन् १९४८ में **मलाया राष्ट्र-संघ** बना और इसमें वे ही भाग शामिल हैं जो पहले उपनिवेश में थे। मलाया प्रायद्वीप के नौ राज्य और पेनांग तथा मलक्का नामक ब्रिटिश उपनिवेश मिलकर मलाया राष्ट्र संघ बनाते हैं। सिंगापुर अब अलग राज्य है।

मलाया की भौगोलिक स्थिति बड़े ही महत्व की है। भारत और चीन के बीच में स्थित होने के कारण यह प्रदेश राजनीति का केन्द्र रहा है। १९वीं सदी में सुदूर-पूर्व के व्यापार में लगे यूरोपियन देशों के बीच मलाया पर अपना सिक्का जमाए रखने के लिए बड़ी स्पर्धा रही।

मलाया का अधिकांश भाग वनों से घिरा हुआ है। इसके ५१००० वर्गमील क्षेत्रफल का केवल दो-पंचमांश भाग ही बसा हुआ है। शेष $\frac{3}{5}$ भाग सदाबहार वनों से ढका है। जनसंख्या के वितरण और विन्यास की कई विशेषताएँ हैं। देश के पश्चिमी भाग में उत्तर से दक्षिण तक ४० मील चौड़ी पट्टी में अधिकतर लोग निवास करते हैं। प्रायद्वीप के इस भाग में उद्यान-कृषि और खान खोदने का काम होता है। पूर्वी भाग में जनसंख्या बहुत छितरी हुई है और अधिकतर प्रदेश वनों से घिरा है।

मलाया की कुल जनसंख्या के ४५ प्र.श. लोग वहाँ के आदि निवासी हैं। शेष, चीनी, भारतीय और यूरोपियन हैं। चीनियों का अनुपात ३५ प्रतिशत है और जनसंख्या के १० प्रतिशत भारतीय हैं।

खनिज पदार्थ—मलाया दुनिया भर में सबसे अधिक टीन उत्पादक देश है। टीन यहाँ का विशेष खनिज पदार्थ है और कभी-कभी तो दुनिया भर का ४० प्र.श. टीन यहाँ निकाला जाता है। टीन पर निर्यात-कर यहाँ की राजकीय आय का एक विशेष साधन है। इस देश में बाक्साइट, वोल्फाम, लोहा, मैंगनीज, चूना, कोयला, सोना, चाँदी, चीनी मिट्टी और संखिया आदि विषमय खनिज पदार्थ भी मिलते हैं। यहाँ पर टंगस्टन धातु का वार्षिक उत्पादन १३७३ टन है और वह सब-का-सब परेक प्रदेश की क्रामन पुलाई नामक स्थान पर निकाला जाता है। केदा और क्रेन्जाम् में वोल्फ्राम प्राप्त किया जाता है। सेलान्जर में कोयले की खानें हैं। मलाया में टीन का भण्डार संसार में सबसे बड़ा है और केवल किराये पर दिए हुए भागों में अनुमानतः १५ लाख टन टीन निहित है। अन्य भागों की पैमायश का कोई भी प्रयत्न नहीं किया गया है। सन् १९५२ में यहाँ पर ५६,८३६ टन टीन निकाला गया जो संसार के कुल उत्पादन का ३५ प्र.श. था।

खनिज उत्पादन

	१९४०	१९५२	१९५३
टीन(टन)	१२६,३४८	६२,८३२	६२४१२
लोहा (हजार टन)	१९६२.४	१०५५.५	१०६२.७
कोयला (हजार टन)	७८१.५	३१४.९	२८६.४
बाक्साइट (हजार टन)	६२.८	२१.८	१५२.२
सोना (ट्राय औंस)	३५६८९	९८०७	१८२८३

उपज की वस्तुएँ—मलाया की विशेष उपज की वस्तुएँ रबर, नारियल, चावल ताड़ का तेल, अनन्नास हैं। कहवा, चाय, तम्बाकू, केला आदि भी यहाँ उत्पन्न होते हैं। समस्त भूमि के ६५ प्र.श. भाग पर रबर की खेती होती है और १४ प्र.श. भाग पर चावल उत्पन्न होता है, जो घरेलू उपभोग में ही लग जाता है। यहाँ का चावल यहाँ के लिए पर्याप्त नहीं होता।

चावल का उत्पादन (टन में)

	एकड़	धान	चावल
१९५१-५२	८३१,०५०	३४१,०२०	९८७०
१९५२-५३	८३४,०१०	४४१,०००	१०,२६०
१९५३-५४	८७९,८९०	७००,०८३	—

रबर का उत्पादन व निर्यात

(हजार टन)

	उत्पादन	निर्यात
१९५२	५८४.८	५७१.६
१९५३	५७८.४	५६९.७

निर्यात तथा आयात की वस्तुएं—रबर, टीन, गोले की गिरी और डिब्बों में बन्द अनन्नास यहाँ से बाहर भेजा जाता है। यहाँ के निर्यात में ६० प्र. श. भाग टीन और रबर का होता है। कुल निर्यात का ३ प्र.श. भाग भारत में आता है जिसमें गन्ना, गोंद, लाख, कपड़ा और चमड़ा रँगने का सामान होता है। मलाया विदेशों से चावल, चीनी, दूध, तम्बाकू, लोहा और स्टील, गाड़ियाँ, मशीन तथा खनिज तेल मँगाता है। ६० प्र.श. चावल और सारा-का-सारा दूध बाहर से आता है। भारत से कोयला और कोक, सूती वस्त्र, अनाज, चमड़ा, खालें और जूट का सामान यहाँ आता है।

उद्योग-धन्धे—रबर तथा टीन उद्योग में अंग्रेजों की पूँजी लगी हुई है, शेष वस्तुओं पर चीनी लोगों की। यह देश उद्योग प्रधान नहीं है। टीन गलाने क अतिरिक्त यहाँ पर शराब, रबर की वस्तुएँ, साबुन, दियासलाई, सिगार, बिस्कुट, चाय और अनन्नास को डिब्बों में भरने के छोटे-छोटे उद्योग-धंधे किए जाते हैं।

भावी आर्थिक उन्नति—मलाया की आर्थिक उन्नति दो बातों पर निर्भर है। पहली तो इसको उपज के लिए विदेशों की लगातार माँग और दूसरा यह कि देश में एक ऐसे ढाँचे की स्थापना की जाय जो उन वस्तुओं की उपज पर निर्भर न हो जिनकी कीमतें बार-बार बदलती रहती हैं। कृत्रिम रबर के संयुक्तराष्ट्र में अधिक प्रयोग में आने से यहाँ के रबर का भविष्य तो अनिश्चित है। इसमें लाभ तभी हो सकता है जबकि रबर का उत्पादन कृत्रिम रबर की अपेक्षा सस्ता पड़े। यहाँ पर रबर का भण्डार रबर के पेड़ों के रूप में है जिनकी वार्षिक उत्पादन शक्ति ७५०,००० टन तक हो सकती है।

सिंगापुर—सन् १९४६ से सिंगापुर एक अलग उपनिवेश बन गया है इस उपनिवेशमें सिंगापुर द्वीप तथा पास के छोटे-छोटे टापू और हिन्द महासागर में स्थित क्रिस्टमस द्वीप तथा कोकास कीलिंग द्वीप सम्मिलित हैं। सिंगापुर द्वीप मलाया प्रायद्वीप के सबसे अन्तिमबिन्दु पर स्थित है और इसका क्षेत्रफल २२५ वर्गमील है। जलवायु उष्ण कटिबंधीय है। इसकी आबादी १२ लाख है और यह सुदूर पूर्व का अत्यन्त महत्वपूर्ण समुद्री बन्दर है। इसका पुनर्निर्यात व्यापार बहुत काफी है। मलाया से रबर, टीन और नारियल की गिरी को इकट्ठा करके संयुक्तराष्ट्र अमरीका, संयुक्त राज्य तथा जर्मान को भेजा जाता है। यहाँ से अनन्नास, मसाले और कच्चा लोहा भी बाहर भेजा जाता है।

हिन्दचीन

सामान्य विवरण—हिन्द-चीन में तीन सम्मिलित राष्ट्र वीटनाम, कम्बोडिया और लावस हैं। ये तीनों ही स्वतन्त्र राष्ट्र हैं। वीटनाम के अन्तर्गत टान्किग, अनाम और कोचीन चीन शामिल हैं। इनको क्रमशः उत्तरी, मध्य और दक्षिणी वीटनाम कहते हैं। इण्डोचीन के उस भाग को जहाँ अनामी लोगों की बहुलता है वीयटनाम कहते हैं। इस प्रजातन्त्र राज्य की नींव १९४५ के आरम्भ में पड़ी थी। इन्डोचीन की आबादी में वितरण की बड़ी विषमता है। यहाँ के मैदानों की आबादी बहुत घनी और पहाड़ी प्रदेशों की बड़ी बिखरी है। यहाँ की आबादी का ७८ प्रतिशत भाग यहां की भूमि के केवल १३ प्रतिशत भाग पर ही बसा हुआ है। यहाँ के मैदानों में भी आबादी सर्वत्र एक समान नहीं हैं और न वे समान रूप से विकसित हुए हैं। लाल नदी (Red River) के उपजाऊ मैदानों की आबादी बहुत घनी है परन्तु कम्बोडिया के मैदान इतने घने बसे हुए और उपजाऊ नहीं हैं। इस अन्तर का विशेष कारण यह है कि लाल नदी (Red River) के मैदानों में रहने वाले अनामी लोग इन्डोचीन में सबसे बुद्धिमान और मेहनती हैं, परन्तु कम्बोडिया के निवासी अधिकतर उदासीन हैं।

हिन्दचीन के अन्तर्गत वनाच्छादित खनिज प्रधान पर्वत और उपजाऊ नदी घाटी मैदान शामिल हैं। नदी घाटी मैदानों में निम्नलिखित चार प्रदेश सर्व-प्रधान हैं—(१) टार्नकिग जिसका केन्द्र हैनोई है, (२) लाल नदी की घाटी जो उत्तर में है, (३) कोचीन चीन और दक्षिणी कम्बोडिया जो सैगौन के चारों ओर फैला है, (४) मीकाँग की निचली घाटी जो दक्षिण में है। उत्तरी लावस का अधिकतर भाग पहाड़ी है।

कुल क्षेत्रफल ७२४७०० वर्ग किलोमीटर और कुल जनसंख्या ३०० लाख है जो कि इस प्रकार वितरित है—

	क्षेत्रफल	जनसंख्या
वीटनाम	३२९७०० वर्ग किलोमीटर	२५००००००
कम्बोडिया	१८१००० वर्ग किलोमीटर	३५०००००
लावस	२१४००० वर्ग किलोमीटर	१५०००००

वीटनाम—इसके अन्तर्गत लाल नदी और मीकांग नदी की घाटी शामिल है। लाल नदी उत्तरी वीटनाम में है और मीकांग दक्षिणी वीटनाम में। हैनोई और सैगोन क्रमशः प्रसिद्ध नगर हैं। वीटनाम के तीन भाग हैं जिनका क्षेत्रफल और आबादी इस प्रकार है—

	क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	जनसंख्या (लाख)
उत्तरी वीटनाम	११५७००	९६
मध्य वीटनाम	१४७०००	६२
दक्षिणी वीटनाम	६७०००	

चीन
बर्मा
टान्किंग
(उत्तरी वीटनाम)
हनोई
नामडिंग
लांग प्रबांग
थाईलैण्ड
(स्याम)
कानटम
स्टंग ट्रेंग
कम्बोडिया
फामपेन्ह
कोचीन चीन
(दक्षिणी वीटनाम)
सैगोन
कामाव
नामकान

हिन्दचीन
रेलमार्ग
सड़कें

चित्र—८१

यह कृषि-प्रधान प्रदेश है। यद्यपि वन काटना, मछली पकड़ना तथा खान खोदना वहाँ के अन्य धंधे हैं। खेती की मुख्य फसलें चावल, रबर, गन्ना और तम्बाकू है।

खेती की फसलें (१९५४)

	क्षेत्रफल (एकड़)	उत्पादन (टन)	
चावल (धान)	४,२०१,८६०		२१००,०००
रबर	१२३५५०		५१,०२६
चीनी	—	साफ बनी हुई	५८५
		भूरी चीनी	२९५२
तम्बाकू	—		८३४ मीट्रिक टन

खान खोदने के साथ-साथ कुछ शिल्प-उद्योग भी विकसित हो गये हैं। सन् १९५४ में उत्पादन के आँकड़े इस प्रकार थे—

औद्योगिक उत्पादन

	(मीट्रिक टन)
कोयला	९७३,२००
सूत	२०६८
सीमेन्ट (टन)	२५२,३००
तम्बाकू (टन)	६२८३
नमक (टन)	११२५६०
बिजली (लाख किलोवाट)	३२३५२
शीशा	३९१३

कपास का आयात पाकिस्तान और संयुक्तराष्ट्र से किया जाता है। प्रतिशत सीमेन्ट, ८६ प्रतिशत नमक और ५० प्रतिशत सूत निर्यात कर दिया जा है।

यातायात की व्यवस्था कोई विशेष अच्छी नहीं है। देश में २१८५ किलोटर लम्बा रेलमार्ग है, जिसमें से केवल १००० किलोमीटर को ही अभी प्रयोग किया जा सकता है। कोई २५००० किलोमीटर लम्बी सड़कें हैं जिनमें करीब १९००० मील पर सभी मौसमों में मोटरें चलाई जा सकती हैं। आन्तरिक जलमार्गों की लम्बाई १२९८० किलोमीटर है। लाल नदी और मीकांग नदी प्रधान नाव्य नदियाँ हैं परन्तु इनके अलावा दक्षिणी वीटनाम में कोई २००० मील लम्बी नहरें भी हैं।

प्रदेश और क्षेत्रफल	उपज	बन्दरगाह और व्यापार केन्द्र
उत्तरी वीटनाम (टानकिंग) ११५,७०० वर्ग किलोमीटर	चावल, मक्का, गन्ना, चाय, तम्बाकू, अरारोट	हेपहाँग (बन्दरगाह)
मध्य वीटनाम (अनाम) ५९९७३ वर्ग किलोमीटर	चावल, कपास, मक्का, लकड़ी, बाँस, सोना, तांबा, जस्ता	ह्यू (राजधानी) तूरैन (बन्दरगाह)
दक्षिणी वीटनाम (कोचीन चीन) २६,४७६ वर्ग किलोमीटर	चावल, रबर, गन्ना, तम्बाकू	नैंगौन (बन्दरगाह)

कम्बोडिया का प्रधान धंधा खेती करना है। वन-सम्पत्ति और खनिज सम्पत्ति भी हैं पर इनका सम्यक प्रयोग नहीं किया जाता। पशु भी चराये जाते हैं। थोड़ी-बहुत मछलियाँ भी पकड़ी जाती हैं। देश की सबसे प्रधान फसल चावल है जिसकी खेती २४ लाख हेक्टर भूमि पर की जाती है। सन् १९५३ में चावल का कुल उत्पादन १४६३००० टन था। इसके बाद रबड़ का स्थान आता है। सन् १९५३ में रबड़ का उत्पादन १९७३६ टन था और इसके बगीचे २२५५६ एकड़ भूमि पर पाये जाते हैं।

फोनफेन्ह यहाँ का प्रधान नगर है जहाँ पर चावल की मिलें पाई जाती। कोलम्बो योजना के अन्तर्गत इसके उद्योग-धंधों का विकास किया जा रहा है।

यहाँ का रेलमार्ग ३८५ किलोमीटर लम्बा है और थैलैंड के रेलमार्ग से सम्बन्धित है। सड़कों की कुल लम्बाई ६९०० किलोमीटर है परन्तु केवल ९५५ किलोमीटर सड़कें ही पक्की हैं। आन्तरिक जलमार्ग व्यवस्था मौसमी है। वर्षा के मौसम में जलमार्गों की नाव्य दूरी १४०० किलोमीटर हो जाती है और शुष्क मौसम में केवल ६०० किलोमीटर रहती है। मीकांग नदी नाव्य है। बड़ी झीलों पर भी नावों द्वारा आया-जाया जा सकता है।

यहाँ पर कपड़े, औषधियाँ, अफीम, खनिज तेल की वस्तुएँ, भोज्य-पदार्थ, भवन-निर्माण की सामग्री और रसायन आयात किये जाते हैं। निर्यात की प्रधान वस्तुएँ चावल, मक्का, तम्बाकू, मिर्च, रबड़, कपास, ताड़, चीनी, मछली, खाल आदि हैं।

लावस के प्रधान उद्यम खेती और पशुपालन हैं। चावल यहाँ की प्रधान फसल है और इसका वार्षिक उत्पादन ५ लाख टन से अधिक है।

खेती का क्षेत्रफल और उत्पादन (१९५४)

	हेक्टर	टन
चावल	८००,०००	५२०,०००
आलू	१००	७००
तम्बाकू	१५००	६००
कहवा	२०००	—

पौधे के रोगोंके कारण कहवा की फसल को बहुत हानि पहुँची है। वनों को काटकर सागौन लकड़ी के लट्ठों को मीकांग नदी से बहा दिया जाता है। बाँस हाँ की अन्य वन उपज है। पशु-पालन भी एक महत्वपूर्ण धंधा है।

(पशु-संख्या १९५३)

गाय-बैल	२४६,३००
भैंस	१७७,४००
सुअर	१७७,४००
मुर्गियाँ	९००,०००

देश में ख... जाते हैं। टीन और सोना प्रधान है। सन् १९५३ में ५२० टन टीन तथा ५०० किलोग्राम सोना उत्पन्न हुआ था।

देश में रेलों का अभाव है। एक रेलमार्ग बन रहा था पर उस पर काम रोक दिया गया है। सड़कों की लम्बाई ४१०० किलोमीटर है। मीकांग नदी पर बड़ी-बड़ी नावें चलाई जा सकती हैं। १००० किलोमीटर तक यह हर मौसम में नाव्य रहती है।

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशिया गणतन्त्र राज्य में कोई २००० द्वीप सम्मिलित हैं जिनमें जावा, सुमात्रा, बोर्नियो और सेलीबीज सबसे बड़े हैं।

इस गणतन्त्र का उद्घाटन जनवरी १९५० में हुआ था। इसका क्षेत्रफल ७३५००० वर्गमील है और १९५० की जनगणना के अनुसार यहाँ की आबादी ७८० लाख है। इस देश का विस्तार पूर्व से पश्चिम तक ३००० मील है। सामान्यतः इस देश की जलवायु उष्ण-कटिबन्धीय है। साल में मानसूनी हवाओं का जोर रहता है और उसीके अनुसार शुष्क तथा तर मौसम होते हैं।

यद्यपि अधिकतर द्वीप पहाड़ी है, उनके बीच की घाटियाँ उपजाऊ तथा जलपूर्ण है।

इण्डोनेशिया का क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा घनत्व

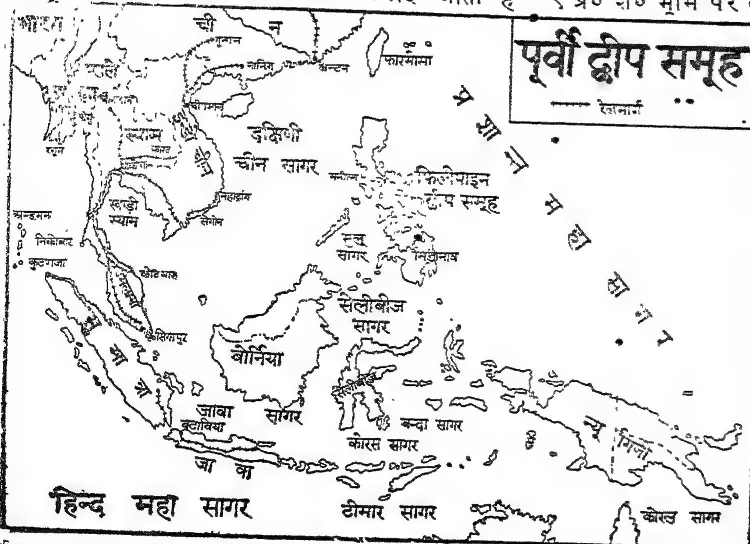
द्वीप के नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या
जावा और मदूरा	५१०३५	४१,७१८,३६४
सुमात्रा	१८२,८६७	८,२५४,८४३
बोर्नियो	२०८,२९५	२,१६८,६६१
अन्य द्वीप	२९०,८०४	१८,३४३,४९४
इण्डोनेशिया	७३५,०००	७८,०००,०००

इण्डोनेशिया की जनसंख्या के ९७·४ प्रतिशत लोग इण्डोनीशी हैं। यूरोपियन और चीनी लोग केवल २·५ प्रतिशत हैं। ८० प्रतिशत यूरोपियन जावा में रहते हैं और शेष के आधे लोग सुमात्रा में रहते हैं।

जनसंख्या का वितरण

द्वीपों का नाम	यूरोपियन	चीनी	अन्य एशियाई	इण्डोनेशियाई
जावा और मदूरा	१९७,५७१	५८२,४३१	५२,२६९	४०,८९१,०९३
अन्य द्वीप	४७,८४६	६५०,७८३	६३,२६६	१८,२४६,९७४

इण्डोनेशिया में कृषि के दो प्रकार हैं, खेती और उद्यान कृषि। खेती का धंधा इण्डोनीशियाई लोगों के हाथ में है, जो घरेलू उपभोग के लिए खाद्यान्न उगाते हैं। चावल यहाँ की मुख्य फसल है और इसकी खेती ४५ प्रतिशत खेतिहर भूमि पर की जाती है। २३ प्रतिशत भूमि पर मक्का उगाया जाता है, १४ प्र० श० भूमि पर जमीन के नीचे उगने वाली फसलें उगाई जाती हैं ९ प्र० श० भूमि पर दालें



चित्र ८२—इन्डोनेशिया के संयुक्त राज्य पूर्व से पश्चिम तक ६००० मील में फैले हैं।

उगाई जाती हैं और २ प्रतिशत भूमि पर तम्बाकू की खेती होती है। **उद्यान कृषि** का विकास डच लोगों ने किया था। इसकी प्रधान फसल रबड़, गन्ना, कहवा, चाय, तिलहन वाले पाम, सिनकोना और तम्बाकू है।

खेती का उत्पादन (१९५३)

	(हजार टन)		(हजार टन)
रबड़	३०७	चीनी	६२०
चाय	३७	पाम का तेल	१६१
कहवा	२२	पाम की गुठली	४२
सिनकोना	१	कठोर रेशे	२७
कोको	१		

इण्डोनेशिया के उत्पादन का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि संसार का अधिकतर सिनकोना, मिर्च और पाम तेल यहीं से प्राप्त होता है। यहाँ से रबड़, सीमल पटुवा और नारियल की वस्तुएँ भी काफी मात्रा में प्राप्त होती हैं। यह देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्म-निर्भर है।

इण्डोनेशिया में खेतिहर भूमि को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है—

(१) विदेशियों के आधिपत्य में बड़े-बड़े खेत जिन पर निर्यात की फसलें उगाई जाती है। इनमें रबड़, चीनी, कोको, चाय, कहवा और नारियल प्रमुख हैं। ये खेत प्रायः यूरोपीय या चीनी लोगों के अधिकार में हैं।

(२) देशी लोगों के छोटे-छोटे खेत जिनमें निर्यात की फसलें उगाई जाती हैं।

(३) यहाँ के आदि लोगों द्वारा जोते गये छोटे-छोटे खेत जिन पर खाद्यान्न उगाये जाते हैं। परन्तु खाद्यान्नों में लगी भूमि निर्यात की या व्यवसायिक फसलों के खेतों की तिगुनी है। ९५ प्रतिशत भूमि इस प्रकार ६ फसलों में लगी है—चावल ४७%; मक्का २२½%; कहवा १६%; सोयाबीन ५%, मूंगफली ३%; शकरकन्द २½%।

निर्यात की फसलों का उत्पादन और निर्यात निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जायेगा—

व्यवसायिक फसलें (१९५४)

	उत्पादन	निर्यात
रबड़	७४५३०० टन	६८६२०० टन
चीनी	७२०००० मीट्रिक टन	२१३००० मीट्रिक टन
कोको	११३१ टन	२२९·५ टन

खनिज सम्पत्ति में टीन, कोयला, बाक्साइट और कच्चा तेल प्रधान है। इनका उत्पादन इस प्रकार है—

खनिज उत्पादन

	कच्चा तेल (हजार मीट्रिक टन)	टीन (टन)	कोयला (हजार मीट्रिक टन)	बाक्साइट (हजार मीट्रिक टन)
१९३९	७९४९	२७०००	१७८१	२३१
१९५१	७३७५	३२०००	८६२	६४४
१९५२	८५२०	३५००३	९५९	३४४
१९५३	१०,१५२	३३०००	९०१	१६८

इण्डोनेशिया में यातायात व्यवस्था अभी तक अवनत है। सड़कों की कुल लम्बाई ४४००० मील है। और रेलमार्ग ४००० मील लम्बा है। इण्डोनीशी हवाई सर्विस के जहाज जकार्ता और सिंगापुर, मनीला तथा बैंगकाक के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

विदेशी व्यापार की दिशा (१९५३)

(प्रतिशत)

	निर्यात	आयात
मलाया और सिंगापुर	२४	१
नेदरलैंड	२३	१२
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	२१	१८
संयुक्त राज्य	२	७
जर्मनी	५	७
जापान	५	१७
भारत	—	३

इण्डोनेशिया का सबसे उन्नत व समृद्धिशाली द्वीप जावा है और यहाँ का चीनी उद्योग पूर्व के देशों में सबसे अधिक सुसंगठित है। यहाँ के प्रधान व्यापार केन्द्र बटाविया और सुराबया हैं। जकार्ता, बटाविया का नया नाम है और यहाँ की राजधानी है। इसका पोताश्रय उच्च कोटि का है। बानडुंग और बोगोर अन्य महत्त्वपूर्ण नगर है।

निकट तथा मध्यपूर्व के देश

पाँच समुद्रों के देश—तुर्की, सीरिया, ईराक, अरब, अफगानिस्तान, ईरान और फिलस्तीन आदि देश प्रायः **पांच समुद्रों के देश** कहे जाते हैं। पश्चिमी एशिया के इस भाग में कैस्पियन सागर, काला सागर, लाल सागर, भूमध्य सागर तथा ईरान की खाड़ी हैं। आर्थिक दृष्टि से अरब, ईरान तथा अफगानिस्तान महत्वपूर्ण देश हैं। मध्य पूर्व के अधिकतर देशों में प्राकृतिक सम्पत्ति (साधनों) का अभाव है। इन देशों के औद्योगिक विकास में बहुत समय लगेगा। इन देशों को अपनी आवश्यक वस्तुएं पश्चिमी अथवा पूर्वी देशों से मँगानी ही पड़ेंगी। थोड़े-बहुत औद्योगिक विकास के लिए भी इन देशों को खेती, जलविद्युत तथा सिंचाई के विकास के लिए भारी-भारी यन्त्रों को विदेशों से ही मंगाना पड़ेगा।

सीरिया

सीरिया स्वतन्त्र गणतंत्र राज्य है। इसके उत्तर में तुर्की, पश्चिम में लेबनान और भूमध्यसागर, दक्षिण में इजराइल तथा दक्षिण-पूर्व में ईराक है। अधिकतर स्थलखंड समुद्रतल से ७०० फीट ऊँचा है। सीरिया का क्षेत्रफल ६६ हजार वर्गमील है तथा आबादी ३२ लाख है। कुल क्षेत्रफल का एक-तिहाई रेगिस्तान या स्टेपी है। राष्ट्रीय आय का प्रधान साधन खेती है। जहाँ भूमध्यसागरीय जलवायु है। फल, अंगूर, गेहूँ, कपास और जौ पैदा होते हैं। (यहाँ की गेहूँ और जौ की अतिरिक्त उपज से भारत को लाभ होता है, यदि उचित मूल्य पर इस देश से समझौता हो जाय)। इसके मध्य तथा पूर्वी भागों में पशुओं के लिए चरागाह है। दमि-

श्कर और बगदाद के बीच रेगिस्तान में से होकर सड़क गई है। इसके अतिरिक्त बेरुत, दमिश्क, ट्रिपोली तथा लेबनान के अन्य नगरोंके बीच उत्तम सड़कें हैं। इस देश के औद्योगिक विकास में सुदृढ़ उन्नति होती जा रही है। यहाँ पर ऊनी और सूती कपड़ों के कई कारखाने खुल गये हैं। सीमेंट, साबुन, रेशम, दियासलाई, सिगरेट और फलों को डिब्बों में बन्द करके भेजने के उद्योग में अच्छी उन्नति हुई है। यह खनिज पदार्थों म सम्पन्न तो नहीं है परन्तु यहाँ पर तेल, लोहा, सीसा, ताँबा तथा अन्य धातुओं का पता लगा है। संगमरमर और इमारती पत्थर यहाँ पर खूब मिलते हैं।

ट्रिपोली, **बेरुत** और **सईद** यहाँ के प्रमुख बन्दरगाह हैं।

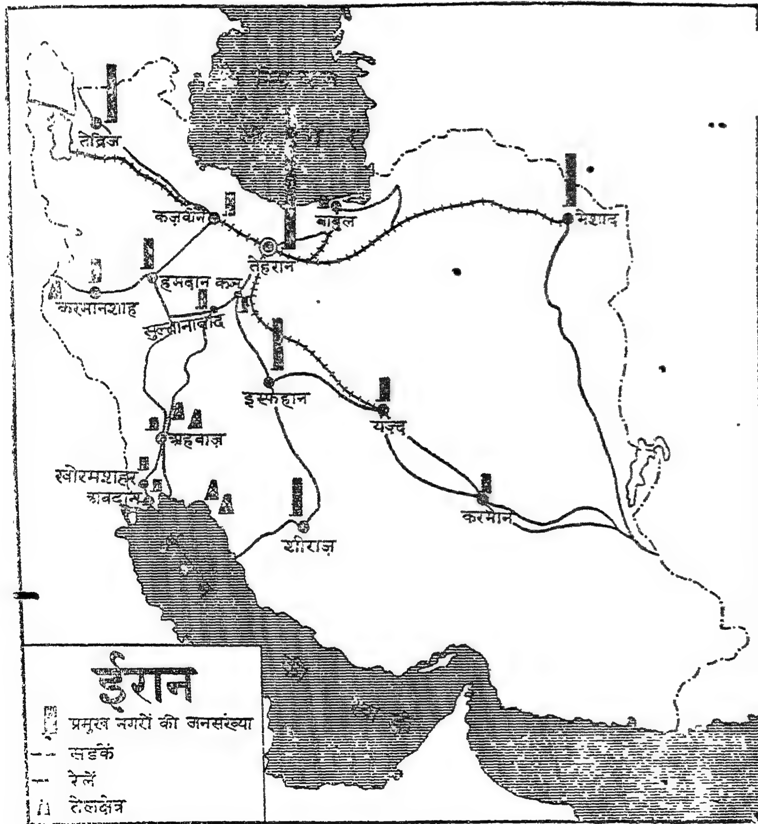
अलीपो तथा **दमिश्क** प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर हैं।

ईरान

ईरान देश का क्षेत्रफल ६ लाख वर्गमील से अधिक और आबादी दो करोड़ के लगभग है। सोवियत रूस की सीमा पर इसकी स्थिति बड़े राजनीतिक महत्व की है। रूस के दृष्टिकोण से ईरान से होकर समुद्र तक पहुँचने का मार्ग विशेष महत्व का है। परन्तु उत्तर से दक्षिण को रेलमार्ग का निर्माण अंग्रेजों के हित में नहीं है। ब्रिटिश दृष्टिकोण से ईरान का महत्व इस बात में है कि यह देश ईराक, फारस की खाड़ी, अरबसागर और बलूचिस्तान की तरफ रूस के प्रसार को रोकता है। इस समय कैस्पियन सागर की तरफ से दक्षिण की ओर कोई यातायात व्यवस्था न होने से इसकी अन्तरिम स्थिति बड़े ही राजनीतिक प्रभाव से पूर्ण है। यदि उत्तर से दक्षिण तक रेलमार्ग का निर्माण हो जाय तो रूस के प्रभाव के बढ़ने में आसानी होगी। इसके विपरीत फारस, ईराक और बलूचिस्तान के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है। यदि पूर्व से पश्चिम तक एक रेलमार्ग बना दिया जाय तो भारत, पाकिस्तान, बलूचिस्तान, ईराक आदि सभी देशों का हित होगा। ईरान में यह रेलमार्ग बनने से भारत और यूरोप के बीच सम्भावित रेलमार्ग में बड़ी सहायता मिलेगी। यदि यह रेलमार्ग दक्षिणी फारस से होकर बनाया जाय तो सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी ठीक रहेगा।

इसका भीतरी भाग पहाड़ी है। मध्य तथा पूर्वी भाग रेगिस्तानी हैं, परन्तु दक्षिण-पश्चिमी और कुछ उत्तरी भाग उपजाऊ हैं। यहाँ पर फल, गेहूँ, चावल, कपास और तम्बाकू सिंचाई द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं। ईरान में सभी प्रकार की जलवायु पाई जाती है। फारस की खाड़ी के तटीय भाग अत्यन्त गर्म और एल्बुर्ज पहाड़ के उच्च प्रदेश अत्यन्त ठंडे होते हैं। जलवायु के विचार से इसके तीन भाग हैं—(अ) कैस्पियन सागरीय भाग, (ब) मध्य का पठार और (स) फारस की खाड़ी का प्रदेश। मध्य प्रदेश में कड़ी सर्दी पड़ती है। ईरान की भूप्रकृति और जल की उपलब्धता पर यहाँ की आबादी का वितरण निर्भर रहता है। करीब २० लाख आदमी बड़े-बड़े शहरों में रहते हैं, २० लाख से कुछ अधिक संख्या

खानाबदोश हैं और अन्य लोग गाँवों में रहते हैं जो पर्वती ढालों की तलैटियों में स्थित हैं और जहाँ जल व जानवरों के लिए चारा आसानी से मिल जाता है। कैस्पियन सागर के तटवर्ती जिलान और मजानजैम में जनसंख्या का घनत्व १०० है। ईरान में खनिज तेल, कोयला और लोहा पाया जाता है। परन्तु तेल के अतिरिक्त अन्य पदार्थ निकाले नहीं जाते। देश के दक्षिण-पश्चिमी भाग में २५ वर्गमील के लगभग क्षेत्रफल में तेल क्षेत्रों से एक ब्रिटिश कम्पनी तेल निकालने का कार्य करती है। इन तेल क्षेत्रों को १४५ मील लम्बी नलों की दुहरी लाइन जो कि दारे-खजीना और अहवाज में से जाती है, अबादान (Abadan) के तेल शोधक कार-खानों से मिलाती है। तेल उत्पादन में ईरान का दुनिया भर में चौथा नम्बर है।



चित्र ८३

तेल की स्थिति—ईरान में, अबदान के उत्तर पश्चिम में स्थित एंग्लो इरानियन कम्पनी के तेलक्षेत्र ने सन् १९५० में ३२,०००,००० टन तेल उत्पन्न

किये गये तेल अबादान में साफ किया जाता है और टैंकर जहाजों द्वारा बाहर भेज दिया जाता है और दक्षिण में फारस की खाड़ी में स्थित बहरीन का उत्पादन प ने शिखर पर पहुँच चुका है पर अब घट रहा है। ऊपर लिखी तेल कम्पनी में ब्रिटिश सरकार के ५२.५५ प्रतिशत हिस्से हैं और इसीलिए उसकी इसमें विशेष दिलचस्पी है। तेल कम्पनी में लगभग ७५००० लोग काम करते हैं।

बहरीन द्वीप के बिल्कुल सामने फारस की खाड़ी के किनारे पर धाहरन का नया तेल क्षेत्र विकसित हो रहा है। इसका तेल रेस तनूरा के कारखाने में साफ किया जाता है।

कुवैत का तेल क्षेत्र फारस की खाड़ी पर स्थित कुवैत से तीस मील दक्षिण में है। इस पर उत्पादन हो रहा है और समुद्र में पाइप लगा दिये गये है जिनसे टैंकर जहाज भरे जाते हैं।

मार्च सन् १९५१ में ईरान की सरकार ने तेल उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना किया। इस नीति के चालू होते ही जून १९५१ में तेल का निर्यात बिल्कुल बन्द हो गया और अगस्त १९५१ में तेल क्षेत्र तथा अबादान का कारखाना दोनों ही बन्द हो गये।

सन् १९५४ में नया बन्दोबस्त हो गया है, जिसके अनुसार अगले तीन साल में ईरान का तेल उत्पादन ६८० लाख टन हो जायेगा और ईरान को १५०० लाख पौंड की आय होगी।

खेती—ईरान की भूमि के बारहवें भाग पर खेती होती है। यहाँ पर मुख्य उपज की वस्तुएँ—गेहूँ, जौ, चावल और कपास हैं। चावल, ईख और तम्बाकू भी पैदा होते हैं। सरकार ने यहाँ पर सिंचाई की योजना बनाई है और यह आशा की जाती है कि देश की उपज में शीघ्र ही वृद्धि होगी।

(खेती का उत्पादन (१९५२)

(हजार हेक्टर और हजार मीट्रिक टन)

	क्षेत्रफल	**उपज**
गेहूं	२२४२	२६८२
जौ	१०००	१००८
चावल	३००	४१०
चुकन्दर	४५	५३०
कपास	१८०	३३

उद्योग-धंधे—ईरान में वर्तमान ढंग के अनेक कारखाने खुल गये हैं। कराज-कहरीजाक (Kahrizak) और शाहाबाद में बड़े-बड़े चीनी के कारखाने हैं। शाही तबरेज, तेहरान और युज्द में सूती कपड़े के, तबरेज और इस्फहान में ऊनी कपड़े के और चालूस में रेशमी कपड़े के कारखाने हैं। यहाँ पर सिगरेट, साबुन, शीशे का सामान भी बनाया जाता है और चमड़ा रंगने और डिब्बों में फल भरने का धंधा भी किया जाता है।

आवागमन के साधन—ईरान में आवागमन के साधनों की कमी के कारण बड़ी कठिनाई पड़ती है। यहाँ पर केवल एक ही रेल की लाइन है जो केस्पियन तट को फारिस की खाड़ी के प्रदेशों से मिलाती है। यह रेलमार्ग तेहरान से होकर जाता है। इस रेलमार्ग से द्वितीय महायुद्ध में रूस को माल भेजने में बड़ी सहायता मिलती थी। तबरेज को काजरीन से और कूम को यज्द से मिलाने के लिए रेल की शाखें बनाई जा रही हैं। तेहरान को पाकिस्तान सीमा स्थित जाहिदान से मिलने के लिए भी एक योजना विचाराधीन है। इस प्रकार भविष्य में ईरान से पाकिस्तान होकर भारत में आने का सीधा मार्ग हो जाने की पूरी संभावना है। ईरान में सड़कें बहुत महत्वपूर्ण हैं। यहाँ पर १५,००० मील लम्बी मोटर योग्य सड़कें हैं। भीतरी व्यापार इन्हीं सड़कों पर निर्भर है। यहां के वायुमार्ग सरकार के अधिकार में हैं और तेहरान, तबरेज, मेशद और इस्फहान में उत्तम हवाई अड्डे बने हुए हैं।

ईरान से पैट्रोलियम, कालीन, गलीचे, सूखे फल (मेवे), पशु, अफीम, ऊन, चावल और गोंद का निर्यात होता है। सूती वस्त्र, चीनी, चाय तथा मशीनें बाहर से मँगाई जाती हैं। भारत ईरान से कालीन, रेशम, ऊन, गोंद, मेवे और पैट्रोल इत्यादि चीजें मँगाता है। ईरान भारत से चाय, चीनी और कपड़ा मँगाता है।

विदेशी व्यापार की दिशा (१९५०)

(प्रतिशत)

	आयात	**निर्यात**
संयुक्त राज्य	२८	१९
संयुक्त राष्ट्र अमरीका	२५	११
शेष यूरोप	२३	४३
भारत, लंका और पाकिस्तान	१०	७

व्यापारिक केन्द्र तथा बन्दरगाह—**तेहरान**—यह नगर ऐल्बुर्ज पर्वत की तलहटी में स्थित है। यह देश शताब्दियों से (सन् १७८८ से) ईरान का राजनैतिक केन्द्र रहा है। यहाँ की आबादी १०,१०,००० है। यह नगर कलापूर्ण बुनाई के कामों जैसे दरियों, गलीचों और साथ ही साथ मदिरा के लिए भी प्रसिद्ध रहा है।

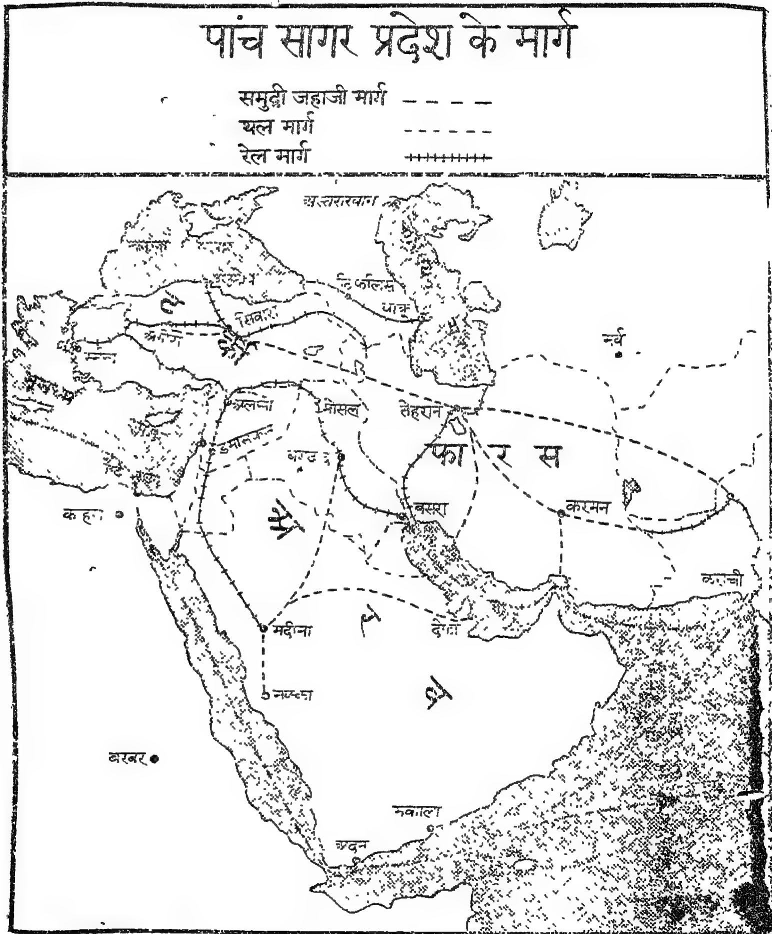
शीराज—फारिस की खाड़ी से १२० मील पूर्व की ओर ४५०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ की स्वादिष्ट मदिरा, गुलाब का अर्क और गुलाब का इत्र प्रसिद्ध है।

तबरेज—ईरान की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित है। इसकी ऊंचाई ५००० फीट तथा आबादी ३ लाख है। यह एक प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र है। इसके समीप की उपजाऊ भूमि में बड़ी मात्रा में अंगूर और फल उत्पन्न होते हैं।

बन्दर अब्बास तथा बूशहर—फारिस की खाड़ी पर प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ पर कुहरे और आँधी की बाधायें न होने से हवाई उड़ान के लिए आदर्श दशाएँ है। इन दोनों बन्दरगाहों द्वारा भारत और पाकिस्तान से महत्वपूर्ण व्यापार होता है।

इसराइल

सामान्य परिचय—मई सन् १९४८ में इसका विभाजन हुआ और यहूदियों [illegible] एक नये राज्य का निर्माण हुआ और इस ही का नाम इसराइल राज्य है। इसमें गैलिली से लेकर गाजा की नोक तक सारा तटीय भाग सम्मिलित है। इसका क्षेत्रफल ८००० वर्गमील है। सन् १९५१ में यहाँ की आबादी १६ लाख थी।



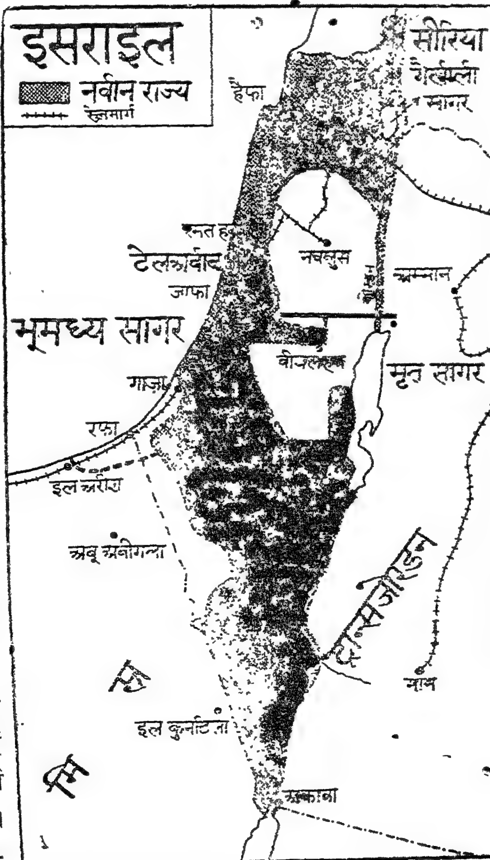
चित्र ८४

परन्तु सन् १९४९ में यह ८७०,००० ही थी। वास्तव में सन् '५१ में १७४,००० आदमी बाहर गए। इस देश की आबादी में अधिकतर यूरोपीय प्रवासी लोग, विशेषकर रूसी, जर्मन, आस्ट्रेलियन तथा स्पेन के निवासी शामिल हैं। इन लोगों देश के आर्थिक ढाँचे को बिल्कुल ही बदल दिया है। इन्होंने यहाँ की प्राकृतिक

सम्पत्ति का विकास किया, खेती तथा औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि की और उत्पादन तथा वितरण के उन्नत साधनों की स्थापना की। अन्य पूर्वी देशों की भाँति यहाँ के उद्योग धंधे सरकार के अधिकार में नहीं हैं। परन्तु जनता की प्रेरणा और उत्साह से उन्नति कर रहे हैं।

इसराइल के प्रमुख भौगोलिक विभाग तीन हैं, मैदान, पहाड़, और नेगेप। मैदानी विभाग के अन्तर्गत जेजरील की घाटी, हूलेह और जारडान की घाटियाँ सम्मिलित हैं। यहाँ पर फल और विशेषकर अंगूर की विस्तृत खेती होती है। पहाड़ गैलीली और समारिया को घेरे हुए हैं और फल की उपज के लिए प्रसिद्ध हैं। नेगेष प्रदेश अभी तक अविकसित है।

यद्यपि यह राज्य कोयले में निर्धन है परन्तु यहां पोटाश और बोजाइन जैसे खनिज खूब पाये जाते हैं। यहां से रसीले फल, फलों के सत्त, शराब, पोटाश, रसायन और मिट्टी के दांत बाहर भेजे जाते हैं।



चित्र ८५

खेती के धन्धे में बड़ी ही प्रगति हुई है। झगड़े के दिनों में अरबों द्वारा छोड़ी गई भूमि को और युद्धकाल के बाद से छोड़े गये अन्य खेतों को तथा नयी खेती योग्य भूमि का बन्दोबस्त करके खेती के उत्पादन में वृद्धि की जा रही है। प्रति एकड़ उपज में भी काफी बढ़ोतरी हो गई है। यहाँ की विकास योजना के अनुसार सन् १९५३ तक खेतिहर भूमि को बढ़कर ५ लाख हेक्टर हो जाना था। परन्तु सन् १९५३ में लगभग ४ हैक्टर पर खेती हुई। इस भूमि पर वर्षा और सिंचाई दोनों ही की सहायता से अनेक फसलें उगाई जाती हैं। खेती की प्रमुख उपज रसदार फल, सब्जी, आलू और

अनाज है। परन्तु अभी भी इसे रोटी वाले अनाजों का ८५ प्रतिशत बाहर से ही मँगाना पड़ता है। सन् १९५० में ९७ हजार व्यक्ति खेती में लगे थे।

सन् १९४८ से सन् १९५० तक औद्योगिक विकास भी हुआ है। सन् १९५० से विभिन्न शिल्प-उद्योगों में १८७,००० व्यक्ति लगे हुए थे। साबुन बनाना यहाँ का प्रमुख उद्योग है, विभिन्न धन्धों की स्थिति इस प्रकार है—

औद्योगिक उत्पादन

	१९४८	१९५०
बिजली (लाख किलोवाट)	२,६१०	४,६४०
साबुन (मीट्रिक टन)	२,६००	९,२००
सिगरेट ,,	१,०६३	१,५६१
दियासलाई (ग्रूस बक्स)	२३१,०००	२९२,०००
जौ की शराब (गैलन)	१,७९,७२,०००	१,२२,८८,०००
शराब (गैलन)	७५,११,०००	३०,७८,०००

नगर—यहाँ के प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों के नाम—जाफा, हैफा, और तेल अवीव हैं।

हैफा—देश का प्राकृतिक द्वार है। यह बन्दरगाह और रेलों का केन्द्र भी है। साबुन बनाना यहां का मुख्य उद्योग है। यहाँ साबुन, अनाज और फल मुख्यतः निर्यात किये जाते हैं।

ईराक

रचना, विस्तार तथा आबादी—वर्तमान ईराक का राज्य प्रथम विश्वयुद्ध की सन्तान है। इसका पोषण ब्रिटिश अधिकारियों के प्रयत्नों और उदारता के फलस्वरूप हुआ। यह देश अरब और फारिस के पठारों के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल १,१७,००० वर्गमील है। इस देश का अधिकतर भाग मैदान है जिसमें फरात और दजला नाम की नदियां बहती हैं। ईराक का उत्तरी भाग सीरिया के मरुस्थल का ही भाग है। इस भाग में पानी की कमी है और वह भाग खेती के अनुकूल नहीं है। यहाँ की जनसंख्या ४० लाख है जिसमें ३० लाख अरबी मुसलमान शामिल हैं।

सिंचाई और खेती—ईराक के केवल ८ प्र० श० भाग पर खेती होती है। यहाँ के ८ प्र० श० से भी अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती द्वारा होता है। यहां की प्रमुख उपज खजूर, तम्बाकू, कपास और गेहूँ हैं। दक्षिणी भाग में जोकि नदियों का मैदान है, खेती होती है। यहां सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। इसमें फरात और दजला नदियां और उनसे निकली हुई अनेक नहरें और नालियाँ बहती हैं। इस मैदान के दक्षिणी भाग सदैव बाढ़ का भय रहता है विशेषकर वसन्त ऋतु में जबकि कुर्दिस्तान और अनातूलिया के पर्वतों पर बर्फ पिघलता है। खजूर यहां की सर्वप्रधान उपज रही है। संसार की ८० प्र० श० खजूर यहीं होती है।

खजूर अधिकतर बसरा-क्षेत्र में उत्पन्न होती है, डिब्बों में बन्द की जाती है और प्रायः यूरोप और संयुक्तराष्ट्र अमरीका को भेज दी जाती है। चीनी, चाय और कहवे के सिवाय अन्य सभी खाद्य पदार्थों के विचार से ईराक आत्म-निर्भर है।

खेती और उद्योग-धंधों की कठिनाइयाँ—खेती के उन्नत तरीकों, सिंचाई के व्यापक साधनों, अधिक पूँजी और आवागमन की सुविधाओं के प्राप्त होने पर ईराक में कई गुनी अधिक जनसंख्या निर्वाह कर सकेगी। ईराक में उद्योग-धंधों का भी अधिक विकास नहीं हुआ है। यहाँ पर कपड़ा बुनने, साबुन, वनस्पति घी, सिगरेट और सीमेंट बनाने के कारखाने हैं। कुशल मजदूरों की कमी और दूर-स्थित देशों से मशीनों को मँगाने की कठिनाइयों के कारण यहाँ के उद्योग-धंधों का गला घुटा हुआ है। हाल में सरकार ने एक विकास परिषद बनाया है जिसका उद्देश्य तेल से प्राप्त आय की सहायता से देश का औद्योगीकरण करना है।

खनिज पदार्थ (पेट्रोलियम)—खनिज तेल के अतिरिक्त यहाँ पर कोई खनिज वस्तु महत्वपूर्ण नहीं है। तेलक्षेत्र उत्तर पूर्वी भागों में स्थित है। यहां से भूमध्य-सागर स्थित हैफा और ट्रिपोली तक १२०० मील लम्बी नलों की एक लाइन जाती है। ईराक पैट्रोलियम कंम्पनी क बड़ी सुविधाएँ प्राप्त हैं। इसका क्षेत्र ईराक फिलस्तीन, ट्रांसजोर्डन, सीरिया और लेबनान तक फैला हुआ है। इसकी बड़ी उन्नति हो रही है।

इसके किरकुक तेल क्षेत्र से तेल दो पाइप लाइनों द्वारा भूमध्यसागरीय तट पर स्थित ट्रिपौली और हैफा तक पहुंचाया जाता है। ट्रिपौली में तेल साफ करने के कारखाने न होने के कारण तेल को टैन्कर जहाजों द्वारा हैफा पहुंचाया जाता है। इस तेल क्षेत्र से ईराक का अधिकतर तेल उत्पादन प्राप्त होता है। मोसल के उत्तर-पश्चिम में स्थित एन जलाह नामक स्थान तथा दक्षिणी ईराक में भी तेल पाया जाता है। ईरान के बिल्कुल समीप ही खानाक्विन नामक स्थान पर एक तेल क्षेत्र का विकास हो रहा है।

निर्यात तथा आयात—ईराक से निर्यात की प्रमुख वस्तुएं अनाज, दालें और [illegible], खजूर और घोड़े हैं। यहाँ पर लोहे और स्टील की चीजें, सूती वस्त्र, चीनी, चाय, रसायनिक पदार्थ, रेशम की चीजें, खालें और चमड़ा बाहर से मंगाया जाता है।

बसरा, बगदाद, मोसल तथा किर्कुक व्यापारिक केन्द्र हैं।

बसरा दजला नदी के पश्चिमी किनारे पर फारस की खाड़ी से ५९ मील दूर बसा हुआ है। यहां तक नदी में बड़े-बड़े जहाज आ-जा सकते हैं। यह यहां का प्रधान बन्दरगाह है और ईरान, अरब और फारस की खाड़ी के सन्निकट स्थित होने के कारण यह बड़ा भारी व्यापारिक केन्द्र हो गया है। यहां से खजूर, जौ, गेहूँ, चावल, ऊन और गलीचे बाहर भेजे जाते हैं।

अफगानिस्तान

सामान्य परिचय—अफगानिस्तान का क्षेत्रफल २५०००० वर्गमील है और यह देश उत्तर से दक्षिण तक ४०० मील लम्बा तथा पूर्व से पश्चिम तक ६०० मील

चौड़ा है। यहां की कुल आबादी १५० लाख है। कुछ समय पूर्व तक अफगानिस्तान में प्रवेश करना प्राय: असम्भव समझा जाता था। यह देश पहाड़ी और बंजर है। खेती केवल नदियों की घाटियों में सिंचाई द्वारा की जाती है। गेहूं, जौ और तम्बाकू यहां खेती की प्रमुख उपज हैं। यहाँ पर फल व्यापक रूप से उगाये जाते हैं और फलों का व्यापार होता है। अफगानिस्तान में कई प्रकार की खनिज वस्तुएं मिलती हैं। मध्य अफगानिस्तान के पहाड़ों में लोहा और कोयला बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं। यहां पर पशु मांस और ऊन के लिए पाले जाते हैं। यातायात की असुविधा, पूँजी के अभाव और जलवायु की कठोरता के कारण व्यापार और वाणिज्य में बड़ी बाधा पड़ती है। अफगानिस्तान भोजन के मामले में आत्मनिर्भर है। फल और भेड़ का गोश्त यहां के लोगों का प्रधान भोजन है। यहां पर बहुत-से खनिज पदार्थ पाये ज्ञाते हैं, परन्तु खान खोदने का उद्यम अभी पूर्णतया विकसित नहीं है। तांबा, लोहा, शीशा और खनिज तेल का यहां विस्तृत भंडार है। परन्तु पूँजी की कमी और विशेषज्ञों की कमी यहाँ की प्रधान समस्या है। ऊनी-सूती कपड़े बनाने, चमड़ा तैयार करने, दियासलाई बनाने तथा चीनी साफ करने के कई कारखाने हैं।

देश में रेलों का अभाव है। अफगानिस्तान को केवल खैबर, गोमल या कुर्रम दर्रों द्वारा पहुँचा जा सकता है। यहाँ का अधिकतर व्यापार सीमान्त है जो कि पाकिस्तान, ईरान और तुर्किस्तान के साथ होता है। यहाँ से निर्यात की मुख्य वस्तुएं ऊन, फल और रेशम हैं। सूती कपड़े, धातुएं, चमड़ा तथा गोला-बारूद यहाँ बाहर से आता है।

काबुल, कन्धार तथा हिरात यहाँ के मुख्य व्यापारिक केन्द्र हैं।

अफगानी लोग बड़े वीर और निर्भीक होते हैं। अतिथियों की रक्षा में अपने प्राण तक दे देते हैं। अब इस देश में व्यापार और उद्योग-धन्धों की पर्याप्त उन्नति हो रही है।

साउदी अरब एक स्वतंत्र राज्य है, जहाँ पर एकतंत्र शासन पाया जाता है। इसका क्षेत्रफल ५९७००० वर्गमील है और आबादी ६० लाख है। देश का अधिकतर भाग रेगिस्तान है। इस्लाम धर्म के तीर्थ-स्थान इसी राज्य में स्थित हैं। यहाँ का सबसे बड़ा आधार यहाँ पर उपलब्ध खनिज तेल है जिस पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका का आधिपत्य है। तेल के कुएँ आबक्विक, एनदार और दमन में पाये जाते हैं। सन् १९५३ में कच्चे तेल का उत्पादन ४१५ लाख मीट्रिक टन था। तेल से प्राप्त धन ही सरकार की आय का सबसे बड़ा साधन है। यहाँ से बाहर जाने वाली प्रमुख वस्तुयें खजूर, घोड़े और तेल हैं। रियाद यहाँ की राजधानी है।

अरब

विस्तार, प्राकृतिक दशा, व्यापार की स्थिति—अरब का देश अनेक स्वतन्त्र रियासतों में विभाजित है, यद्यपि इसके कुछ भाग अंग्रेजों के संरक्षण में हैं। ये रियासतें साउदी अरब, येमन, मस्कट और ओमन हैं। अदन, बहरीन, कुवैत और

कतर अंग्रेजों के संरक्षण में हैं। अरब का बहुत बड़ा भाग समुद्र से घिरा हुआ है और यहाँ से समुद्र में प्रवेश करने की बड़ी सुविधा है। अरब का क्षेत्रफल १२ लाख वर्गमील है और यहाँ की आबादी ६० लाख है। यह देश एक मरुस्थल है। इसमें कोई झील अथवा नाव्य नदी नहीं है। इसका अधिकतर भाग पहाड़ी है, केवल समुद्र के समीप ही निम्न भूमियाँ हैं। अरबी घोड़े प्रसिद्ध होते ह। समुद्र के समीप की निम्न भूमि में खेती होती है। यहाँ का प्रसिद्ध 'मोका कहवा' यमन में उत्पन्न होता है। फारिस की खाड़ी से मोती निकाले जाते हैं। मरुस्थलीय जलवायु, यातायात की असुविधाएं और निवासियों के अस्थायी रहन-सहन के ढंग के कारण देश के व्यापार में बड़ी बाधा पड़ती है। कहवा, खजूर, मोती और सूखे फल (मेवे) निर्यात की वस्तुएं हैं और वस्त्र, अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद, चीनी तथा चावल आयात की वस्तुएं हैं।

मक्का, मदीना, जिद्दा और मस्कत यहाँ के मुख्य नगर हैं।

राजनीतिक विभाग	क्षेत्रफल (वर्गमील)	जनसंख्या (हजार)	प्रमुख आर्थिक उपज
मस्कट और ओमन	८२०००	५५०	खजूर, मछली, नीबू और अखरोट
कुवैत	३६५०	२०५	खनिज तेल (सन् १९५३ में ३७० लाख टन)
कतर	८०००	१८	खनिज तेल (१९५२ में ३२ लाख टन)
बहरीन	२१३	११०	मोती और खनिज तेल (सन् १९५३ में खनिज तेल का उत्पादन १५ लाख टन था)

अदन—अरब के दक्षिण-पश्चिम में लाल सागर के प्रवेश द्वार से १०० मील ऊपर की ओर एक अंग्रेजी उपनिवेश है। यह हवाई और समुद्री बेड़े के लिए महत्त्वपूर्ण सैनिक स्थान है। यहां नमक तैयार किया जाता है और सिगरेट बनाई जाती हैं। यहाँ से सूती कपड़े, कहवा, चीनी और तम्बाकू का पुनर्निर्यात व्यापार होता है।

एशियाई तुर्की अथवा अनातूलिया

सीमायें तथा विस्तार—इस देश का क्षेत्रफल २,९०,००० वर्गमील और आबादी १ करोड़ ५० लाख है। एशिया यूरोप अफ्रीका के मिलन स्थान के समीप स्थित होने से इस देश के राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस देश के चारों ओर प्राकृतिक सीमायें हैं। इसके पश्चिम में ईजियन सागर, दक्षिण में भूमध्यसागर और ईराक और पूर्व में पहाड़ स्थित ह।

स्वेज मार्ग के खुलने से पूर्व यूरोप और एशिया के बीच आने-जाने वाले कारवाँ मार्ग पर तुर्की का अधिकार था। भारत और यूरोप के मध्य का रेल मार्ग भी तुर्की ही में होकर सम्भव हो सकता है।

औद्योगिक विकास की सम्भावना—परम्परागत रूढ़ियों की दासता, धार्मिक कट्टरता और लोहे और कोयले के अभाव के कारण इस देश के राजनैतिक और औद्योगिक विकास में बाधाएं पड़ती रही हैं। स्वनामधन्य अतातुर्क की प्रगतिशील नीति के कारण अब इस देश को बहुमुखी उन्नति का सुयोग प्राप्त हुआ है।

भौगोलिक विभाग—भौगोलिक दृष्टिकोण से इस देश को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।—(अ) दक्षिणी तथा पश्चिमी तट के भूमध्यसागरीय प्रदेश, (ब) उत्तरी तटीय प्रदेश तथा (स) मध्य के पठार जहां की जलवायु अत्यन्त विषम है।

खेती—यहाँ के लोगों का मुख्य धन्धा खेती है और यहाँ के ८० प्रतिशत मनुष्यों का निर्वाह खेती से ही होता है। रसदार फल, जैतून, अंगूर और तम्बाकू की खेती भूमध्यसागरीय तट प्रदेशों पर होती है। गेहूँ, जौ और कपास भी यहाँ पर उत्पन्न होते हैं।

पशु—यहाँ पर भेड़ों की संख्या १ करोड़ २० लाख के लगभग है। भेड़ों के ऊन से दरियाँ और गलीचे बनाये जाते हैं। बकरियों के बालों से मोहेर नाम का महीन वस्त्र बनाया जाता है।

खनिज पदार्थ—इस देश में अनेक खनिज पदार्थ मिलते हैं। कोयला, सीसा, ताँबा, क्रोमियम, बोरासाइट तथा एमरी (Emery) यहाँ पर पाये जाते हैं परन्तु खनिज पदार्थों का पूरा-पूरा लाभ नहीं उठाया जाता है। संसार के क्रोमियम एक छठा भाग यहीं मिलता है। इसकी खानें समस्त एशिया माइनर तथा दक्षिण में भूमध्यसागरीय तट पर छिटकी हुई हैं। इस देश में अपार वनस्पति तथा पर्याप्त जलशक्ति भी है जिसका उपयोग नहीं किया जा रहा है। कल-कारखानों की अपेक्षा घरेलू उद्योग धन्धे ही अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ की बनी हुई प्रमुख वस्तुएं दरी, कालीन, सिगरेट, चीनी तथा सूती कपड़े हैं।

खनिज उत्पादन १९५२-५३

(हजार मीट्रिक टन)

कोयला	४८४६
लिगनाइट	१३८७
ताँबा	२३
क्रोम	८०३
सुरमा	२
तेल	२१
मैंगनीज	८०

यातायात के साधन—इस देश में यातायात की सुविधाओं की कमी है।

देश भर में ५००० मील लम्बा रेल मार्ग है। वर्तमान काल में यहाँ के वैदेशिक व्यापार में भी उन्नति हो गई है। यहाँ से तम्बाकू, मुनक्का, ऊन तथा रुई का निर्यात और यहाँ पर लोहे और स्टील की वस्तुएं, वस्त्र तथा चीनी का आयात होता है।

इस देश में बड़े-बड़े नगरों की संख्या अधिक नहीं है। **अंकारा,** अनातूलिया के भीतरी भाग में स्थित है और राजधानी है। **इज्मीर, अदाना, कोनिया तथा बुरसा** अन्य बड़े नगर हैं।

प्रश्नावली

१. दक्षिणी-पूर्वी एशिया में चावल के उत्पादन का वर्णन कीजिए।

२. जापान के लोगों के भोजन में गोश्त की अपेक्षा मछली का अधिक महत्त्व है। क्यों ? इसका पूरा विवरण दीजिए।

३. ईराक में खजूर का उत्पादन किन भौगोलिक व आर्थिक दशाओं के अधीन है ?

४. मीकांग नदी की घाटी का वर्णन कीजिए और उसका आर्थिक महत्त्व बतलाइए।

५. रंगून के विकास व उन्नति के भौगोलिक व आर्थिक कारण बतलाइए।

६. "चीन की खनिज सम्पत्ति तो बहुत है पर उसके उद्योग-धन्धे अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।" इसका क्या कारण है ?

७. जापान के महत्त्व और आर्थिक विकास में होकैडो और क्यूशू का क्या भाग रहा है ?

८. एशिया में टीन निकालने के व्यवसाय का महत्त्व बतलाइए।

९. "अरब में उन्नति व विकास की बड़ी सम्भावनाएं हैं।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? उदाहरण देते हुए समझाइए।

१०. कोरिया को ३८° अक्षांश से दो भागों में बाँटने के विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं ? इस प्रकार के विभाजन का कोरिया के साधनों पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? संक्षेप में लिखिए।

११. ईराक या जावा का भौगोलिक विवरण दीजिए और हाल में हुए परिवर्तनों का विशेष रूप से हवाला दीजिए।

१२. जापान में रेशम के कीड़ों को पालने के व्यवसाय का वर्णन कीजिए।

१३. "चीन की कृषि बागबानी है न कि हमारी ऐसी खेती।" इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिए और बतलाइए कि किन प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण ऐसा है ?

१४. 'प्रमुख कच्चा माल प्राप्त न होने पर भी जापान एक प्रमुख औद्योगिक देश बन गया है।' इस उक्ति पर अपने विचार प्रगट कीजिए।

१५. "मंचूरिया की प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण विभिन्न राष्ट्रों में बड़ी लाग-डाट रही है और इसी कारण इसका नाम 'सुदूर-पूर्व का युद्ध-क्षेत्र' पड़ गया।

इस कथन पर अपने विचार प्रगट कीजिए ।

१६. निम्नलिखित का वर्णन कीजिए-

(अ) जापान का रेओन व्यवसाय ।

(ब) चीन का रुई व्यवसाय ।

१७. जापान की कृषि का वर्णन करिए ।

१८. उत्तरी चीन के बड़े मैदान का भौगोलिक वर्णन करिए ।

१९. चीन के प्राकृतिक साधनों व आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि इनके विकास की क्या सम्भावनाएं हैं ।

२०. दूसरे महायुद्ध से पहिले जापान के प्रमुख उद्योग-धन्धे कौन-कौन से थे ? वे कहां पर केन्द्रित थे और विभिन्न उद्योगों के लिए कच्चा माल कहां से प्राप्त होता था ?

२१. दूसरे महायुद्ध से पहले जापान के रेशम व्यवसाय व चीनी मिट्टी उद्योग की क्या दशा थी ? यूरोप की स्पर्धा में इसकी क्या परिस्थिति थी ?

२२. व्हाँगहो नदी के बहाव का क्षेत्र बतलाइए और बतलाइए कि इसका उत्तरी चीन के आर्थिक जीवन में क्या महत्त्व है ?

२३. व्यापार में जापान ने इतनी उन्नति किस प्रकार की ? अपनी भौगोलिक असुविधाओं का सामना करके उन पर विजय किस प्रकार पाई ? उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिए ।

२४. जापान की प्राकृतिक वनस्पति का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि देश के विभिन्न भागों में इसका उपयोग किस प्रकार होता है ?

२५. चीन के जेचवान बेसिन का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि दूसरे महायुद्ध में इसका विकास कैसे हुआ ?

२६. चीन में कृषि के पिछड़े होने के क्या कारण हैं ? भारतीय किसानों की अपेक्षा चीनी किसान किस माने में आगे बढ़े हुए हैं । चीन की खेती को और अधिक समृद्धिशाली बनाने के तरीके बतलाइए ।

२७. चीन में अकाल-ग्रस्त भाग कौन-से हैं और वहाँ पर अकाल पड़ने के भौगोलिक कारण क्या हैं ?

२८. जंगलों को काटने से आप क्या समझते हैं ? इससे जापान के आर्थिक जीवन पर क्या असर पड़ा है ? इनके प्रभावों को दूर करने के लिए क्या कुछ किया जा रहा है ?

२९. जापान के औद्योगीकरण का विवरण लिखिए और बतलाइए कि किस र भौगोलिक दशाओं के आधार पर उद्योग-धन्धों का स्थानीयकरण हुआ है ?

३०. में उद्योग-धन्धों के विकास का वर्णन कीजिए ।

३१. जापान को जलवायु सम्बन्धी विभागों में बाँटकर प्रत्येक का वर्णन करिये ।

३२. चीन को प्राकृतिक भागों में बाँटिए और किन्हीं दो भागों का भौगोलिक विवरण दीजिए।

३३. चीन में आर्थिक विकास व उन्नति की सम्भावनाओं पर एक छोटा-सा लेख लिखिए।

३४. एशिया महाद्वीप के साथ जापान के बढ़ते हुए व्यापार का कारण बतलाइए।

३५. जापान की प्रमुख उपज चावल, चाय और कच्चा रेशम है। इन वस्तुओं के उत्पादन का वितरण बतलाइए और बतलाइए कि जापान में इन वस्तुओं की सफल खेती के लिए क्या कुछ किया गया है ?

३५. जापान की प्रमुख उपज चावल, चाय और कच्चा रेशम है। इन वस्तुओं की सफल खेती के लिए क्या कुछ किया गया है ?

३६. व्हांगहो और यांगटीसीक्याँग घाटियों की खेती की उपज व मानव व्यवसायों में इतना अन्तर होने का क्या कारण है ? विस्तार से उत्तर दीजिए।

३७. चीन में जापान की तरह राजनैतिक व सामाजिक उथल-पुथल न होने का क्या कारण है ? समझा कर लिखिए।

३८. जापान का रेशम व्यवसाय किन भौगोलिक परिस्थितियों पर आधारित है ? जापान की ये भौगोलिक परिस्थितियां दक्षिणी यूरोप की दशाओं से किस प्रकार भिन्न हैं ?

३९. चीन की खनिज सम्पत्ति का वर्णन कीजिए और बतलाइए कि उसके उपभोग के लिए कौन-सी सुविधाएं या बाधाएं प्रकृति ने प्रस्तुत की हैं ?

४०, जापान द्वीपसमूह की भौगोलिक दशाओं व परिस्थितियों का वहाँ के लोगों के व्यवसाय या उद्यम पर क्या असर पड़ा है ? विस्तार से उदाहरण देते हुए उत्तर दीजिए।

कुछ परिभाषायें—(British Association Glossary Committee के आधार पर)

कृषि (Agriculture)—भूमि पर फसलें उगाने की रीति व धन्धे को कृषि कहते हैं। इसके अन्तर्गत पशु पालन भी सम्मिलित है।

कृषियोग्य भूमि (Arable Land)—खेती की वह सब भूमि जिसको फसलें उगाने के लिए तैयार किया जा सकता है। इसके अन्तर्गत जोते हुए खेत, उद्यान, अंगूर के बगीचे, थोड़े समय के लिए छोड़ी हुई भूमि व घास के मैदान आदि आते हैं।

मिश्रित कृषि (Mixed Farming)—खेती की वह प्रणाली जिसमें फसलें उगाना और पशुओं का पालना समान रूप से महत्त्वपूर्ण होता है।

मिली-जुली खेती (Mixed Cultivation)—मिली-जुली खेती में एक ही खेत या भूमि के टुकड़े से दो या अधिक फसलें उगाई जाती हैं। बहुधा वृक्षों और छोटे पौधों या जड़दार फसलों को साथ-साथ उगाया जाता है।

अध्यस्थ फसल—(Catch crop) (१) वह फसल जो साल के उस छोटे-से काल के भीतर तयार की जाती है जब भूमि पर मुख्य फसलें नहीं होतीं। (२) छोटे-छोटे पौधों या जड़दार वस्तुओं की वह फसल जो वृक्षों या झाड़ियों की मुख्य फसल के पकने के पहले उगाई जाती है।

धन्धा (Industry)—(१) आर्थिक लाभ के लिए किया गया उद्यम। (२) साधारणतया इसका अर्थ केवल खानों का खोदना, शिल्प-उद्योग और दस्तकारी होता है। ये धन्धे खेती, वाणिज्य और निजी नौकरी से भिन्न हैं।

उद्योग-धन्धे (Industries)—कुछ विशेष कार्य में संलग्न मिलें व फैक्टरी तथा मिलों का समूह।

मुख्य धन्धे (Primary Industry)—प्रकृति द्वारा दी हुई सामग्री को एकत्रित करने से सम्बन्ध रखने वाला उद्यम जैसे खेती करना, मछली मारना, लकड़ी काटना, शिकार करना व खान खोदना।

गौण धन्धे (Secondry Industry)—प्राथमिक उद्यम से उपलब्ध सामग्री से मनुष्योपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना जैसे शिल्प-उद्योग, वस्तु-निर्माण और शक्ति उत्पादन।

व्यवसायिक धन्धे (Tertiary Industry)—मुख्य अथवा गौण धन्धों के आधार पर स्थित, परन्तु उनसे भिन्न प्रकार के व्यवसाय जो मुख्य व गौण-धन्धों के कार्य संचालन में सहायता पहुंचाते हैं जैसे—यातायात, व्यापार, मुद्रा विनिमय, पूंजी, संदेशवाहन, शासन, विभिन्न नौकरियाँ तथा वकालत, डाक्टरी आदि।

भारी उद्योग (Heavy Industry)—वे गौण उद्यम जिनमें भारी वस्तुओं का निर्माण होता है। इसके चार आधार हैं—(१) कच्चे माल का भारीपन, (२) निर्माणित वस्तु का गुरुत्व, (३) वस्तुओं के मूल्य व तोल का सम्बन्ध, (४) काम में लगे हुए मजदूरों में आदमियों की संख्या, (५) हयशक्ति की मात्रा।

छोटे-मोटे उद्योग (Light Industry)—वे गौण उद्यम जो भारी उद्योगों की श्रेणी में नहीं आते।

आधारभूत उद्योग (Basic Industry)—गौणउद्यमं के अर्तगत वे भारी उद्योग जो राष्ट्रीय आर्थिक महत्त्व के होते हैं या जिनकी उत्पादित वस्तुओं का अन्य उद्योगों में उपयोग किया जाता है।

उद्योग की स्थिति (Location of Idustry)—किसी देश की औद्योगिक क्रियाओं का भौगोलिक वितरण।

उद्योग का स्थानीयकरण (Localization of Industry)—किसी उद्योग या व्यापार का कुछ विशेष जिलों या प्रदेशों में केन्द्रित होना।

प्राकृतिक साधन (Natural Resources)—प्रकृति द्वारा दी गई वे वस्तुएं व परिस्थितियां जिन्हें देश की आर्थिक उन्नति के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

व्यापार सतुलन (Balance of Trade)—किसी देश के निर्यात व आयात के मूल्यों का परस्पर सम्बन्ध।

मण्डियाँ (Markets)—(१) बेनहम के अनुसार वे क्षेत्र जहाँ किसी वस्तु के उत्पादक व उपभोगी इस प्रकार फैले हों कि एक प्रदेश के मूल्य का दूसरे प्रदेश के मूल्य पर भी असर पड़े। (२) साधारणतया वह प्रदेश जहाँ किसी वस्तु की उपभोगी जनता निवास करती है। और फलतः उस वस्तु की माँग वहाँ अधिक होती है।

कच्चा माल (Raw Materials)—वे सभी वस्तुएं जिनसे एक विशेष उद्योग अथवा विभिन्न रीतियों द्वारा अन्य वस्तुओं का निर्माण या उत्पादन हो सके। कभी-कभी इसके अन्तर्गत शक्ति उत्पादन के स्रोतों को भी ले लेते हैं पर यह ठीक नहीं।